जिल्द 1

अल्लाह वालों की बातें

ALLAH WALON KI BATEN JILD 1 (HINDI)

-: मुअल्लिफ़ :-

इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عليه رحمة الله الكافي
(अल मुतवफ़्फ़ा 430 हिजरी)

شعبہ تراجم کتب
शो'बए तराजिमे कुतुब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

*तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल-आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इ़ल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

अल्लाह वालों की बातें (जिल्द : 1)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस '**अल मदीनतुल इल्मिय्या**' ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

किताब के हिन्दी लीपियांतर में क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबित़ा करने की इजाज़त नहीं।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के फ़ज़ाइल, अक़्वाल
और ज़ोह्दो तक़्वा का बयान

حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاءِ وَ طَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاءِ

तर्जमा ब नाम

अल्लाह वालों की बातें

(जिल्द 1)

-: मुअल्लिफ़ :-
इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى
(अल मुतवफ़्फ़ा 430 हिजरी)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए तराजिमे कुतुब

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, देहली- 6

www.dawateislami.net

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلٰی اٰلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء

तर्जमा बनाम : **अल्लाह वालों की बातें (जिल्द 1)**

मुअल्लिफ़ : इमाम अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى

मुतर्जिम : **मदनी उ़लमा** (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने तृबाअ़त : मुहर्रमुल ह़राम, सिने 1438 हिजरी, ऑक्टोबर, सिने 2016 ईसवी

क़ीमत :

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 10 रजबुल मुरज्जब, **1430** हि. — **ह़वाला नम्बर : 155**

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلٰوۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ واصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء''(उर्दू) के तर्जमे

''अल्लाह वालों की बातें (जिल्द 1)''

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
04-07-2013

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إن شاءالله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी

उनवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إن شآءالله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी

उनवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

Tip1:Click on any heading, it will send you to the required page.
Tip2:at inner pages, Click on the Name of the book to get back(here) to contents.

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	21	औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ख़ल्वत व जल्वत	64
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	22	हुक़ूक़े इलाही की अदाएगी में जल्दी	65
पहले इसे पढ़ लीजिये !	24	**तसव्वुफ़ की तह़क़ीक़**	66
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	34	तसव्वुफ़ के पहले मा'ना की तह़क़ीक़	66
हिल्यतुल औलिया और अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या	38	तसव्वुफ़ के दूसरे मा'ना की तह़क़ीक़	67
ख़ुत़बतुल किताब	45	तसव्वुफ़ के तीसरे मा'ना की तह़क़ीक़	68
किताब लिखने की वज्ह !	46	तसव्वुफ़ के चौथे मा'ना की तह़क़ीक़	71
औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की दुश्मनी से बचो !	47	सुन्नी और सूफ़ी की ता'रीफ़	71
औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सिफ़ात व अ़लामात	48	अ़क़्लमन्द कौन है ?	71
अम्बिया व शुहदा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी रश्क करेंगे	48	अ़क़्ल के 3 हिस्से	72
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाता है / फ़ित्नों से आ़फ़िय्यत	49	सूफ़ी और तसव्वुफ़ के मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाल	73
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़सम पूरी फ़रमाता है	50	तसव्वुफ़ के 10 मआ़नी	73
औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के तसर्रुफ़ात	51	सूफ़ी, ह़क़ाइक़ से पर्दा उठाता है	73
दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी	55	आ़रिफ़ और सूफ़ी की अ़लामात व सिफ़ात	74
औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की निराली ज़ेबो ज़ीनत	56	कलामे सूफ़िया की 3 अक़्साम	76
अब्दाल कौन हैं ?	58	तसव्वुफ़ के बुन्यादी अरकान	77
अह़कामाते इलाही की पाबन्दी	60	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा लोग	78
रुश्दो हिदायत के चराग़	62	चुने हुवे लोग/क़ाबिले रश्क मोमिन	78
सायए रह़मत की त़रफ़ सब्क़त करने वाले	63	**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सफ़ीर**	80

www.dawateislami.net

ईमान की मिठास	81	अच्छे आ'माल की तरग़ीब	95
मुश्किल अह़वाल और पाकीज़ा अख़्लाक़ का नाम तसव्वुफ़ है	81	ख़ैर से ख़ाली 4 चीजें	96
अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	83	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की नसीह़तें	97
		औलाद की तरबिय्यत	97
सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दर्से तौह़ीद	84	**अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ**	100
दीन पर इस्तिक़ामत	85		
आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ुरआन फ़ेह्मी	86	फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की शुजाअ़त व बहादुरी	101
आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़िक्रे आख़िरत	86	ईमान नहीं छुपाऊंगा	103
आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तक़्वा	87	फ़ारूक़ का लक़ब कैसे मिला ?	103
आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़श्क़े रसूल	88	इस्लाम के लिये मसाइब बरदाश्त किये	105
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा	89	ह़क़गोई व सिलए रेह़मी	106
सदक़ा करने में सब से आगे	90	जंगे बद्र में ख़ास किरदार	107
अपनी जान आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान	90	आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राए पर नुज़ूले आयात	109
अपना माल आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान	91	हर मुआ़मले में इत्तिबाए़ रसूल	111
ज़बान की ह़िफ़ाज़त	91	छोटी बड़ी आस्तीनों वाली क़मीस	112
मज़बूत़ व मुत़मइन दिल के मालिक	92	शैत़ानी बोल की मज़म्मत	113
सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़या	92	फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की एक ख़स्लत	113
दुन्या के बारे में नसीह़त	93	ह़म्दो ना'त सुनना जाइज़ है	114
ख़लीफ़ए अव्वल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ुत़बात	93	मिसाली शख़्सिय्यत	115
बादशाहों का अन्जाम	93	आ़जिज़ी व इन्किसारी	116
क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी	94	रिआ़या की ख़बर गीरी	116

www.dawateislami.net

ऐ़शो इ़शरत से पाक ज़िन्दगी	117
नफ़्स पर सख़्तियां	117
लज़ीज़ और उ़म्दा ग़िज़ाओं से परहेज़	118
दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लो	120
नेकी की दा'वत के मक्तूब	120
फ़रामीने फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ	121
ताइबीन की सोह़बत में बैठो	121
सब्रो शुक्र इख़्तियार करो	122
सर्दी का मौसिम ग़नीमत है	123
फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की गिर्या व ज़ारी	123
ह़िसाबे आख़िरत का ख़ौफ़	123
ब वक़्ते शहादत आ़जिज़ी व इन्किसारी	124
ख़लीफ़ए वक़्त की चादर में 12 पैवन्द	125
एह़सासे ज़िम्मेदारी	125
रह़मते इलाही की उम्मीद	125
फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की दुआ़एं	126
फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का जन्नत में मह़ल	127
नज़रे फ़ारूक़ी में दोस्ती का मे'यार	128
ह़क़ का बोल बाला करने वाले	129
अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رضی اللہ تعالٰی عنہ	130
उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہ के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका	130
उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ की शर्मो ह़या	131
उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ की इ़बादात	132
उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ के सब्र का बयान	133
चेहरे का रंग बदलता रहा	134
उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہ की 2 ख़ुसूसी फ़ज़ीलतें	135
राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना	135
राहे ख़ुदा में 300 ऊंट पेश किये	136
लिबास में सादगी	138
ग़ुलाम के साथ ह़ुस्ने सुलूक	139
ख़त़ाओं को मिटाने वाला कलिमा	140
अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم)	141
ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عزوجل व ﷺ के मह़बूब	141
अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ से मह़ब्बत करो	143
सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ के फ़ज़ाइलो मनाक़िब	144
मोमिनीन के सरदार	144
सय्यिदुना अ़ली رضی اللہ عنہ का इ़ल्म, ह़िक्मत और दानाई	145
इमामे ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ का ख़ुत़बा	146
निगाहे फ़ारूक़ी में मक़ामे अ़ली	146
बारगाहे इलाही में मक़ामे अ़ली	147

www.dawateislami.net

अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) और हिफ़ाज़ते कुरआन	147	सय्यिदुना अ़ली رضی اللہ عنہ के रिक़्क़त अंगेज़ बयानात	163
बिन मांगे अ़ता फ़रमाने वाले	149	नौफ़ बिकाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی को नसीह़त	166
70 वसिय्यतें	149	आ़लिम, त़ालिबे इ़ल्म और जाहिल	166
तस्बीहे़ फ़ाति़मा के फ़ज़ाइल	150	सय्यिदुना अ़ली رضی اللہ عنہ की मुबारक ज़िन्दगी	168
खाने का ह़क़	152	सारा माल तक़्सीम फ़रमा दिया	168
कसबे ह़लाल के लिये मेह़नत व मज़्दूरी	154	"फ़ालूदा" से ख़ित़ाब	169
शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ की दुन्या से बे रग़बती	155	खजूर और घी का ह़ल्वा	170
दुन्या की मज़म्मत	155	मोहर लगा हुवा सत्तू का थैला	170
निगाहे अ़ली में दुन्या की ह़क़ीक़त	156	ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ का लिबास	171
मा'रिफ़ते इलाही	156	अमीरे मुआ़विया और शाने अ़ली رضی اللہ عنہ	174
तौह़ीदे बारी तआ़ला पर शानदार गुफ़्तगू	156	3 मुश्किल अ़मल	175
अहले ईमान से मह़ब्बत	158	इस्लाम में निफ़ाक़ की गुन्जाइश नहीं	176
सब्र, यक़ीन, जिहाद और अ़द्ल के शो'बे	158	पेट पर पथ्थर बांधते	176
मौत, इन्सान की मुहा़फ़िज़	160	मुहि़ब्बे मौला अ़ली की पहचान	176
फ़रामीने मौला मुश्किल कुशा	160	मुहि़ब्बाने अहले बैत की अ़लामात	177
अस्ल भलाई क्या है ?	160	**ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ عنہ**	177
5 उ़म्दा बातें	161	राहे ख़ुदा में 70 ज़ख़्म खाए	177
लम्बी उम्मीदों का नुक़्सान	161	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़हद पूरा करने वाले	178
सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सुब्ह़ो शाम	162	ज़िन्दगी में मन्नतें पूरी कर लीं	178
गुमनाम बन्दों के लिये ख़ुश ख़बरी	162	ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رضی اللہ عنہ की सख़ावत	179
कामिल फ़क़ीह कौन ?	163	4 लाख दिरहम का सदक़ा	179

www.dawateislami.net

बिन मांगे माल बांटते	179	तहफ़्फ़ुज़े नामूसे सहाबा	190
सारी रात परेशान रहे	180	झूटी औरत अन्धी हो कर मर गई	191
हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رضی اللہ عنہ	180	बालिश्त भर ज़मीन पर क़ब्ज़े का अ़ज़ाब	192
दीन पर इस्तिक़ामत	181	सहाबी की बे अदबी की सज़ा	192
आप رضی اللہ عنہ का इश्क़े रसूल	181	**हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** رضی اللہ عنہ	194
जिस्म पर ज़ख़्मों के निशान	182	आस्मानो ज़मीन वालों के अमीन	194
सय्यिदुना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ की मन्क़बत	182	सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رضی اللہ عنہ की सख़ावत	195
दुन्या व दौलत से बे रग़बती	183	700 ऊंट मअ़ सामान सदक़ा कर दिये	195
अल्लाह عزوجل नासिरो मददगार है	183	नहरे सल्सबील से सैराबी की दुआ़	195
फिर तो येह मुआ़मला बहुत सख़्त है	185	बारगाहे इलाही में क़र्ज़े ह़सना पेश करो	196
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ عنہ	186	अ़ज़ीमुश्शान सख़ावत	197
साबिक़ुल ईमान	186	खाना देख कर रो पड़े	197
दरख़्तों के पत्ते खाते	186	जन्नती ने'मतें दुन्या में मिलने का डर	198
दुआ़ए मुस्त़फ़ा	187	आंखों के बजाए दिल रोता है	198
एक टुकड़े पर गुज़ारा	187	**हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رضی اللہ عنہ	199
एक चादर के 2 हिस्से कर लिये	187	अमीने उम्मत	199
ख़ुशहाली के फ़ितने का ख़ौफ़ ज़ियादा है	188	काफ़िर बाप का सर क़लम कर दिया	199
वुरसा को परेशानी से बचाओ	188	मैं उस की खाल का कोई हिस्सा होता !	200
तक़्वा व ग़ना वाले अल्लाह عزوجل को पसन्द हैं	189	कजावे की चटाई और पालान का तक्या	200
आंखों और ज़बान वाली तल्वार	189	अनोखी व निराली तमन्ना	201
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ	190	सय्यिदुना अबू उ़बैदा رضی اللہ عنہ की नसीहतें	202

www.dawateislami.net

मोमिन का दिल	202	पहला इस्लामी परचम	213
हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رضی اللہ عنہ	202	शहादत की दुआ़	213
इस्लामी भाइयों से इज़्हारे हमदर्दी	203	**हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फुहैरा** رضی اللہ عنہ	214
दूसरी आंख भी तक्लीफ़ की मुश्ताक़	203	आक़ा ﷺ की रफ़ाक़त मिली	215
अश्आ़र	204	लाशा आस्मान की त़रफ़ उठा लिया गया	215
उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رضی اللہ عنہ का विसाले बा कमाल	206	फ़िरिश्तों ने दफ़्न किया	216
ऐसों को ऐसी जज़ा	206	**हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित** رضی اللہ عنہ	217
बेहतरीन हम नशीं	206	शहद की मख्खियों के ज़रीए़ हिफ़ाज़त	217
ख़ालिस व कामिल ईमान	207	मुशरिकीन से नफ़रत	218
दुन्या से बे रग़बती	207	**हज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी** رضی اللہ عنہ	220
पैवन्द दार पुरानी चादर	207	बेहतरीन क़ैदी और ग़ैबी रिज़्क़	220
रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बोसा दिया	208	शहादत से क़ब्ल नमाज़	222
मह़ब्बते ख़ुदा व मुस्त़फ़ा काफ़ी	208	सय्यिदुना ख़ुबैब رضی اللہ عنہ के पुरसोज़ अश्आ़र	223
विसाल पर अहलिया के अश्आ़र	209	**हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब** رضی اللہ عنہ	224
हज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर दारी رضی اللہ عنہ	210	नजाशी के दरबार में ए'लाने ह़क़	224
तब्लीग़े दीन के लिये कोशिशें	210	दरबारे शाही में ईमान अफ़रोज़ बयान	226
मदीनए मुनव्वरा में तब्लीग़ की इब्तिदा	211	दरबारे नजाशी में ता'ज़ीमो तौक़ीर	228
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किया अ़हद सच्चा कर दिया	211	तिलावत सुन कर रोने लगे	229
शुहदा, सलाम का जवाब देते हैं	212	मसाकीन की ख़ैर ख़्वाही	229
दुम्बे की खाल का लिबास	212	सय्यिदुना जा'फ़र رضی اللہ عنہ की शहादत के मुतअ़ल्लिक़ रिवायात	230
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رضی اللہ عنہ	213	70 से ज़ाइद ज़ख़्म	230

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा अन्सारी رضی اللہ عنہ	231	तक्या व मिस्वाक वाले	247
पुल सिरात़ से गुज़रने का ख़ौफ़	231	इस्लाम क़बूल करने में सब्क़त	247
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया	232	मुक़र्रबे बारगाहे इलाही	248
रोने पर तम्बीह	234	उहुद पहाड़ से भी ज़ियादा वज़्नी	248
नफ़्स को नसीह़तें	235	क़बूलिय्यते दुआ़ की बिशारत	249
ग़ैबों पर ख़बरदार आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	236	सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 14 रुफ़क़ा	250
जन्नती ख़ैमा	236	आप رضی اللہ عنہ का इ़ल्मी मक़ाम	251
ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رضی اللہ عنہ	237	इरशादाते इब्ने मसऊ़द رضی اللہ عنہ	253
मुझे जन्नत की ख़ुश्बू आ रही है	237	ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को कैसा होना चाहिये ?	253
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رضی اللہ عنہ	239	जब "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا" सुनो	254
सय्यिदे आ़लम ﷺ ने क़ब्र में उतारा	239	शैत़ान को भगाने का क़ुरआनी नुस्ख़ा	254
या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू इस से राज़ी हो जा	239	आ़लिम और जाहिल दोनों के लिये हलाकत	255
काश ! इन की जगह मैं होता	240	इ़स्यान से निस्यान	256
बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का ज़िक्रे ख़ैर	241	मुसलमान के लिये तोह़्फ़ा	256
70 क़ुर्रा सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم की शहादत	241	ह़लावते ईमान से मह़रूमी के अस्बाब	257
हर रोज़ कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ दुआ़	242	ह़िसाबो किताब का ख़ौफ़	258
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ	243	ख़ौफ़े ख़ुदा की एक झलक	259
इब्ने मसऊ़द رضی اللہ عنہ की त़रह़ तिलावत किया करो	244	आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़ोह्द	259
रह़मते आ़लम ﷺ से 70 सूरतें याद कीं	245	सफ़रे आख़िरत की तय्यारी का दर्स	260
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ की ख़ुसूसिय्यात	247	कलिमाते नाफ़ेआ़	261
घर में दाख़िले की ख़ुसूसी इजाज़त	247	कुफ़्फ़ार की ख़ुशह़ालियां क़ाबिले फ़ख़्र नहीं !	262

www.dawateislami.net

हिफ़ाज़ते ज़बान की नसीहत	263	रिज़ाए इलाही के मुतलाशी	276
सब से ज़ियादा ज़ोहद वाले	263	**हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رضی اللہ عنہ**	276
मोमिन का आराम व सुकून	264	राहे खुदा के मुसाफ़िरों की तकालीफ़	277
फ़ितनों का दौर दौरा	264	मौत की तमन्ना करना कैसा ?	278
नेकियां छुपाओ	264	मसाकीन सहाबा علیہم الرضوان की शान में कुरआनी आयात	281
दीन में पैरवी का मे'यार	265	कूफ़ा में तदफ़ीन की वसिय्यत	283
4 बातों का हल्फ़िया बयान	266	**हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह رضی اللہ عنہ**	284
हर दिन में 12 साअ़तें	266	मुअज़्ज़िनीन के सरदार	284
दुन्या की ख़ातिर आख़िरत को नुक़्सान न पहुंचाओ	267	सय्यिदुना बिलाल رضی اللہ عنہ की इस्तिक़ामत	284
41 सुन्हरे फ़रामीने आ़लीशान	268	फ़क़्र की अहम्मिय्यत व तरग़ीब का बयान	288
हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رضی اللہ عنہ	269	**हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رضی اللہ عنہ**	291
ईमाने कामिल की बिशारत	270	परवानए शम्ए़ रिसालत	291
जन्नत की खुश ख़बरी	270	सय्यिदुना सुहैब رضی اللہ عنہ की शान	291
इस्लाम के अव्वलीन मुबल्लिग़ीन	271	ग़ैबी ख़बर	292
पाकीज़ा शख़्स	272	3 बातों पर ए'तिराज़	295
कामिलुल ईमान बनाने वाले आ'माल	272	खाने में हैरत अंगेज़ बरकत	296
ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा की सादगी	273	क़र्ज़ का चोर	296
हक़ीक़ी हिजरत करने वाले	273	मैं क्यूं मुस्कुराया ?	297
नबिय्ये ग़ैबदान صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की ग़ैबी ख़बर	273	3 दिन में 70 हज़ार अमवात	297
रिज़ाए इलाही के लिये लड़ने वाले	274	दीदारे इलाही	298
जन्नत 4 सहाबए किराम की मुश्ताक़ है	275	उड़ कर जन्नत में जाने वाले	299

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رضی اللہ عنہ	301	**हज़रते सय्यिदुना उतबा बिन ग़ज़वान** رضی اللہ عنہ	324
सय्यिदुना अबू ज़र رضی اللہ عنہ का जज़्बए इबादत	301	हक़ीक़ते दुन्या को बे नक़ाब करने वाला बयान	324
सय्यिदुना अबू ज़र رضی اللہ عنہ का क़बूले इस्लाम	302	दरख़्तों के पत्ते खा कर गुज़ारा कर लेते	325
इज़्हारे इस्लाम का वाक़िआ	303	**हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद** رضی اللہ عنہ	326
सय्यिदुना अबू ज़र رضی اللہ عنہ का जज़्बए ईमानी	304	लोहे का लिबास और तपती ज़मीन	326
इज़्हारे इस्लाम पर तकालीफ़ का सामना	305	आक़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم के प्यारे	326
सय्यिदुना अबू ज़र رضی اللہ عنہ की खुसूसिय्यात	305	जां निसाराने मुस्तफ़ा	327
6 बातों की नसीहत	306	सरकार ﷺ के मेहमान	328
नफ़ाज़े हुक्मे रसूल का जज़्बा	306	दिल बदलता रहता है	331
दुन्या से नफ़रत	307	रफ़ाक़ते मुस्तफ़ा की तड़प	331
ब क़दरे किफ़ायत अस्बाब पर क़नाअत	309	अमीरे लश्कर से मुआफ़ी मंगवाई	333
मुझे अमीर बनने की ख़्वाहिश नहीं	310	**हज़रते सय्यिदुना सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा** رضی اللہ عنہ	334
आग का अंगारा	311	महब्बते इलाही से सरशार	335
हर माल में 3 हिस्सेदार हैं	312	नमाज़ी व रोज़ादार भी अज़ाबे नार में गिरिफ़्तार !	335
एक चादर के हिसाब का डर	312	**हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन रबीआ** رضی اللہ عنہ	336
काश मैं दरख़्त होता !	313	दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल	339
फ़रामीने अबू ज़र गिफ़ारी	314	**हज़रते सय्यिदुना सौबान** رضی اللہ عنہ	340
फ़िक्रे आख़िरत	314	बिला ज़रूरत सुवाल करना	340
आप رضی اللہ عنہ का नसीहत भरा बयान	315	ज़कात अदा न करने वालों का अन्जाम	342
27 सुवालात व जवाबात	316	दुन्या की महब्बत का वबाल	343
आप رضی اللہ عنہ का विसाले पुर मलाल	323	कौन सा माल बेहतर है ?	343

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رضی اللہ عنہ	345	सरकार ﷺ से किये अ़हद ने रुला दिया	365
मख़्मूमुल क़ल्ब का मफ़्हूम	345	रन्जो मलाल की वज्ह !	366
हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ अस्लम رضی اللہ عنہ	346	टोकरियां बनाने वाला हाकिम	367
सदक़ात में ख़ियानत करने वालों की सज़ा	346	लौंडी से निकाह़	367
तमन्नाए फ़क़्र	346	मह़ब्बत और नफ़रत का राज़	368
हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ	348	क़ियामत की भूक	369
सब्क़त ले जाने वाले 4 अफ़राद	348	आप رضی اللہ عنہ की सादगी	370
सुन्नते निकाह़ में शरीअ़त की पासदारी	348	बुख़्ल व ह़िर्स की मज़म्मत	370
निकाह़ नेक औ़रत से किया जाए	350	दा'वत के खाने का एक मस्अला	371
निगाहे अ़ली में आप رضی اللہ عنہ का मक़ाम	351	बीमारों की ख़ैर ख़्वाही	371
सलमान رضی اللہ عنہ अहले बैत से हैं	351	अपने हाथ की कमाई पसन्द है	372
सरकार ﷺ ने इ़ल्म की ता'रीफ़ फ़रमाई	352	कमज़ोर के साथ रह़मते ख़ुदावन्दी होती है	372
आ'माल में मियाना रवी का दर्स	352	ख़ादिम पर नर्मी	373
इनफ़िरादी कोशिश का दिलनशीन अन्दाज़	353	सलाम भी हदिय्या है	373
कुफ़्फ़ार से जंग में सुन्नत त़रीक़ा	354	ह़िक्मत भरा फ़ैसला	374
इ़शा के बा'द लोग 3 क़िस्म के हो जाते हैं	355	दिल की बात	375
मह़ब्बते ख़ुदावन्दी की बिशारत	356	क़ियामत की तारीकियां	376
जन्नत भी मुश्ताक़ है	356	सब से बड़ा गुनहगार	376
मज़हबे ह़क़ की तलाश	356	बद गुमानी से इजतिनाब	376
सय्यिदुना सलमान رضی اللہ عنہ की वफ़ात के नसीह़त आमोज़ वाक़िआ़त	364	मेहमान नवाज़ी ईमान का ह़िस्सा है	377
माले दुन्या ने रुला दिया	364	ज़ाहिरी इस्लाह़ का राज़	378

www.dawateislami.net

बुत की अदना सी ता'ज़ीम जहन्नम में ले गई	378	दुश्मन से दर गुज़र	389
ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत	378	जाहिल व बे अ़मल के लिये हलाकत	390
बे हयाई की आफ़ात	379	आ़लिम की निशानी	391
सलाम आ़म करो !	379	आ़लिम व जाहिल की इ़बादत में फ़र्क़	391
ख़त़ के ज़रीए़ इनफ़िरादी कोशिश	380	भलाई किस में है ?	392
दिल और जिस्म की मिसाल	381	ज़िन्दगी को पसन्द करने की वज्ह	392
फ़िरिश्ते परों से ढांप लेते	381	दीन सीखने और सिखाने वाला अज्र में बराबर हैं	393
शेर सजदा करते	382	इ़ल्म के ए'तिबार से लोगों की अक़्साम	393
ह़िक्मत की बात	382	अहले दिमश्क़ को वा'ज़ो नसीह़त	393
नमाज़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश	382	तक़्वा बिग़ैर इ़ल्म और इ़ल्म बिग़ैर अ़मल के कामिल नहीं	394
मोमिन व काफ़िर की आज़माइश में फ़र्क़	383	सब से ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा करने वाली बात	395
मोमिन की मिसाल	383	ख़त़ के ज़रीए़ नेकी की दा'वत	395
3 चीज़ें रुलाती और 3 हंसाती हैं	384	बिन्ते अबू दरदा (رضی اللہ تعالٰی عنہما) का निकाह़	397
वस्वसों से छुटकारे की अनोखी तरकीब	384	तन्हाई में गुनाह करने की दुन्यावी सज़ा	397
विसाले पुर मलाल	385	दोस्त और दोस्ती के आदाब	398
ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ	386	क़ब्रो ह़श्र का ख़ौफ़	398
आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की फ़िक्रे आख़िरत	386	ईमान का आ'ला दरजा	399
आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की नसीह़त	387	दोस्त पर इनफ़िरादी कोशिश	399
जज़्बए इ़बादत व तर्के तिजारत	387	अहले क़ुबरुस की शानो शौकत कहां गई ?	399
बे मिसाल जन्नती ने'मतें	388	मरज़े मौत की गुफ़्तगू	400
अ़मल में सुस्ती का एक सबब	389	माल जम्अ़ करने वाले के लिये हलाकत	400

www.dawateislami.net

नसीहत के लिये मौत ही काफ़ी है	401	कामिल इन्सान की 3 निशानियां	410
3 महबूब चीज़ें	401	प्याले वाला वाक़िआ	411
क़ौमे आद का हाल	401	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बोलने वाली हंडिया	411
मालदारों को नसीहत	402	बारगाहे इलाही में इल्तिजा	411
वीरान इमारतों से इब्रत	402	जन्नत में भी साथ रहने की दुआ	412
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दुआ	403	गुनाहगार से नहीं, गुनाह से नफ़रत करो	412
हंसता हुवा जन्नत में जाएगा	404	सब से ज़ियादा मुफ़ीद चीज़	413
ज़िक्रुल्लाह, सदक़ा करने से अफ़्ज़ल है	404	दुश्वार गुज़ार घाटी	414
सब से अच्छा अमल	404	आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी 6 अहादीस	414
मोमिन और काफ़िर की ज़बान	405	**हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ	416
सालेहीन के साथ मरने की दुआ	405	आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के मनाक़िब	416
बुरे कामों से हिफ़ाज़त की दुआ	405	इमाम कौन होता है ?	418
यतीम और मज़्लूम की बद दुआ से बचो	406	मर्जए सहाबा	419
रहमते इलाही से दूरी	407	फ़ितनों की ख़बर	422
भलाई की तलाश में रहो	407	ए'तिदाल का दर्स	423
नफ़्अ बख़्श बातें	407	आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की मुनाजात	424
बुख़ार में भी फ़िक्रे आख़िरत	408	बेटे को नसीहत	424
मेहमानों को दर्से आख़िरत	408	इल्मे दीन की महब्बत ने रुला दिया	425
अहले दिमश्क़ से ख़िताब	408	इन्साफ़ की उम्दा व ला जवाब मिसाल	425
लोगों में बद तरीन शख़्स	409	ज़िक्रुल्लाह जिहाद से अफ़्ज़ल है	426
उलमा की ना पसन्दीदगी से बचो	410	तर्के सुन्नत गुमराही का सबब	426

www.dawateislami.net

फ़िक्रे आख़िरत पर मब्नी बयान	428	सय्यिदुना उबय बिन का'ब رضی اللہ عنہ का मक़ामो मर्तबा	450
औरतों का फ़ितना	428	सब से ज़ियादा अ़ज़मत वाली आयत	450
नफ़रत के अस्बाब	429	महब्बते इलाही	450
अमीरुल मोमिनीन को नसीहत	430	ख़शिय्यते इलाही से रोने की फ़ज़ीलत	453
इल्म के फ़ज़ाइलो बरकात	431	दुन्या की मिसाल	455
मरहबा ऐ मौत ! मरहबा	432	सय्यिदुना उबय बिन का'ब رضی اللہ عنہ के इरशादात	456
ताऊन **अल्लाह** عزوجل की रहमत है	433	मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत	456
औलाद के लिये ताऊन की दुआ	433	मोमिन के ख़साइल व फ़ज़ाइल	456
सफ़रे यमन के वक़्त नसीहतें	434	सोने का पहाड़	457
बद तरीन लोग	437	बुख़ार की फ़ज़ीलत	458
सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم का ता'ज़ियती मक्तूब	437	रियाकारी की तबाहकारी	458
मज़्कूरा रिवायत पर मुसन्निफ़ का तब्सेरा	438	**हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री** رضی اللہ عنہ	459
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आमिर رضی اللہ عنہ	439	अ़ज़मते कुरआन	461
घर अम्न का गहवारा कैसे बना ?	439	ग़ैबी आवाज़	464
अहले हिम्स की 4 शिकायात	440	पैकरे शर्मो हया	465
बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला	442	माल का वबाल	465
हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द رضی اللہ عنہ	444	रोने का अ़ज़ाब	466
हिम्स के गवर्नर का तक़र्रुर	444	खुदाए सत्तार की शाने सत्तारी	467
एक ग़लत अ़क़ीदे की तरदीद	448	नेक व बद का अन्जाम	467
मुसन्निफ़े किताब का तबसेरा	449	क़ब्र की 2 हालतें	468
हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رضی اللہ عنہ	450	रोटी वाला इबादत गुज़ार	469

www.dawateislami.net

दिल की मिसाल	470	फ़ितनों में मुब्तला होने की पहचान	483
दुगना अज्रो सवाब	470	गुनाहों की नुहूसत	484
हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رضی اللہ عنہ	470	फ़ितनों के आने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़	484
जहन्नम का ख़ौफ़	471	फ़ितनों से बचो !	485
आख़िरत के बेटे बनो	471	फ़ितना अ़क्ल को बिगाड़ देता है	486
साहिबे इल्मो हिल्म	471	फ़ितने का वबाल किस पर ?	486
फ़क़ीहुल उम्मत	472	ज़िन्दों में मुर्दा कौन ?	486
कभी फ़ुज़ूल बात नहीं की	473	दिल 4 क़िस्म के होते हैं	488
एक जामेअ़ दुआ़	473	फ़क्रो फ़ाक़ा आंखों की ठन्डक	489
अ़क्लमन्द व बे वुक़ूफ़ की पहचान	475	सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी	490
इमाम ज़ोहरी की रिवायत	476	ख़ुशामद से बचो	490
ह़दीस याद आने पर अश्क बारी	476	आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल	491
शिर्के ख़फ़ी और ख़ुफ़्या शहवत	477	मक़ामे महमूद	492
शिर्के ख़फ़ी पर इल्मी मुकालमा	478	"اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر" तर्क करने का वबाल	493
2 अम्न और 2 ख़ौफ़	479	आख़िरत की तय्यारी का दर्स	496
हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضی اللہ عنہ	480	जन्नत से महरूमी	497
फ़ितनों का सैलाब	480	आ़लिम की निशानी और झूटे की पहचान	497
दिल 2 क़िस्म के हो जाएंगे	480	हराम की नुहूसत	497
अमानत उठ जाएगी	481	न ख़ुशूअ़ रहेगा न नमाज़ों का जज़्बा	498
गूंगे बहरे फ़ितने	482	मुनाफ़िक़ कौन है ?	498
फ़ितने के वक़्त क्या करें ?	483	सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ की वफ़ात के वाक़िआ़त	498

www.dawateislami.net

क़ीमती कफ़न ख़रीद ने से मन्अ़ फ़रमा दिया	499	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर देने की फ़ज़ीलत	512
300 दिरहम का कफ़न	500	सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की सख़ावत	513
शिद्दते ह़िसाब	500	जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ 2 रिवायात	514
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُ	501	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ	515
जज़्बए इ़बादत व शौक़े तिलावत	502	ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को जवाब	516
ख़्वाब में इ़ल्म की बिशारत	505	सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की नज़र में	518
अफ़्ज़ल अ़मल	506	सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की नज़र में	518
जन्नत में ले जाने वाले आ'माल	506	सदक़ात व ख़ैरात के वाक़िआ़त	518
अदाए रसूल	507	मन पसन्द ऊंटनी ख़ैरात कर दी	519
3 बुराइयां और 3 भलाइयां	507	पसन्दीदा लौंडी आज़ाद कर दी	519
बद कलाम पर जन्नत ह़राम है	508	30 हज़ार दिरहम का सदक़ा	520
मुसलमान को पानी पिलाने की फ़ज़ीलत	508	एक हज़ार ग़ुलाम आज़ाद फ़रमाए	521
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ना पसन्द बन्दे	508	100 ऊंटनियों का वक़्फ़	521
बुराई का गढ़ा	509	एक साल में एक लाख दिरहम सदक़ा	522
आग की आवाज़	510	एक रात में 10 हज़ार दिरहम की ख़ैरात	522
सब्र की तल्क़ीन	510	मसाकीन से मह़ब्बत	524
सब्र का उख़रवी इन्आ़म	510	कभी सैर हो कर खाना नहीं खाया	525
रूहों को रिज़्क़ दिया जाता है	511	यतीमों पर शफ़्क़त	526
गिर्या व ज़ारी	511	साइल को ख़ाली न फेरते	527
फ़ज्र के वक़्त ख़ुसूसी रह़मत का नुज़ूल	512	ग़ुलामों पर शफ़्क़त	530
ज़ाइद पानी मत बेचो	512	कैसा लिबास पहनूं ?	531

www.dawateislami.net

इबादत के वाक़िआत	533	मैं तो मग़फ़िरत चाहता हूं	544
जमाअ़त छूटने पर रात भर इबादत	533	इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہ और इत्तिबाए़ सुन्नत का जज़्बा	545
सूरए इख़्लास का सवाब	533	लोग दीवाना समझते	545
ज़ोहर ता अ़स्र इबादत	534	फ़क़त़ सलाम करने बाज़ार जाते	546
आप رضی اللہ عنہ की दुआ़एं	534	उ़म्र, अ़क़्ल और जिस्म में कमी	546
सुब्ह़ की दुआ़	535	सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का ईमान	547
आप رضی اللہ عنہ का ख़ौफ़े ख़ुदा	535	वुज़ू और नमाज़ में कमी करने वाले	547
तिलावत करते करते रोने लगे	535	धोके में न रहना	548
रोते रोते हिचकियां बंध जातीं	536	ईमान की ह़लावत पाने का ज़रीआ़	549
इत्तिबाए़ सह़ाबा का दर्स	537	अ़क़्लमन्द मुसलमान की पहचान	550
ह़ासिद और मुतकब्बिर आ़लिम नहीं हो सकता	538	दुन्यावी इ़ज़्ज़त बाइ़से नजात नहीं	550
मश्वरा करने की तरग़ीब	538	**ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رضی اللہ عنہما	552
शराब से नफ़रत	539	मदनी आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم ने दुआ़ओं से नवाज़ा	553
ज़बान की ह़िफ़ाज़त का दर्स	540	इ़ल्म व फ़ेह्म में तरक़्क़ी की दुआ़	553
किसी पर ला'नत नहीं भेजते थे	540	ह़िक्मत व दानाई की दुआ़	553
आप رضی اللہ عنہ की आ़जिज़ी	540	इ़ल्मो ह़िक्मत की दुआ़	554
ह़ज के वाक़िआ़त	541	बरकत की दुआ़	554
मुक़द्दस मक़ामात पर मांगी हुई दुआ़	541	आप رضی اللہ عنہ का इ़ल्मी मक़ाम	555
ह़जरे अस्वद का बोसा लेते तो येह पढ़ते	542	सय्यिदुल मलाइका علیہ السلام की पेशीन गोई	555
बोसए ह़जरे अस्वद का जज़्बा	542	सरकार صلی اللہ علیہ وسلم के दस्ते अक़्दस और दुआ़ की बरकत	555
मदीने की ह़ाज़िरी	543	उम्मत के बड़े आ़लिम	556

www.dawateislami.net

इब्ने अ़ब्बास ﷺ और तफ़्सीरे क़ुरआन	556	एक सालेह़ व ख़ाइफ़ नौजवान	573
इल्मे तफ़्सीर में आप ﷺ का मक़ाम	558	ज़बान की ह़िफ़ाज़त	574
3 बातों की नसीह़त	558	मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा	575
ख़ारिजियों को मुंह तोड़ जवाबात	559	दिरहमो दीनार बनने पर शैत़ान की ख़ुशी	575
3 सुवालात के जवाबात	562	गिर्या व ज़ारी	576
इल्म सीखने वालों की भीड़	563	सफ़ेद परन्दा कफ़न में दाख़िल हो गया	576
इब्ने अ़ब्बास ﷺ की सख़ावत	564	**ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ**	577
गाली देने वाले पर नर्मी	565	रह़मते आ़लम का बा बरकत ख़ून	577
आप ﷺ के इरशादात	565	यज़ीद पलीद की बैअ़त से खुला इन्कार	579
कसरते अमवात का एक सबब	565	यज़ीद पलीद का ख़त़ फेंक दिया	580
बादशाह का ख़ौफ़ हो तो क्या पढ़ा जाए ?	565	आप ﷺ की बे मिस्ल शहादत	580
मुख़्तलिफ़ अज़्कार की बरकात	566	पैदा होते ही बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी	584
अनार की एक ख़ुसूसिय्यत	566	ह़ज्जाज व मुख़्तार सक़फ़ी के बारे में पेशीन गोई	585
टिड्डी की अ़जीब ह़िकायत	567	नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का आ़लम	587
चन्द आयात की तफ़्सीर	567	मस्जिद का कबूतर	587
एक गुनाह कई गुनाहों का सबब होता है	569	गुनाह बख़्शे जाते हैं	588
तक़्दीर में झगड़ने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश	570	नसीह़त नामा	588
मुन्किरे तक़्दीर पर ग़ज़ब	571	माल की ह़िर्स कभी ख़त्म नहीं होती	590
तकालीफ़ कैसे दूर होती हैं ?	571	**सुफ़्फ़ा वालों का बयान**	591
रिज़्क़ में कमी का एक सबब	572	मुख़्तसर तआ़रुफ़	591
एक क़दरी की तौबा का अ़जीब वाक़िआ़	572	क़ुरआने करीम और अहले सुफ़्फ़ा	592

www.dawateislami.net

सुफ़्फ़ा वालों की भूक का आलम	593	हज़रते सय्यिदुना जुऐल बिन सुराक़ा ज़मरी رضی اللہ عنہ	618
अहले सुफ़्फ़ा की ता'दाद और हालात	595	हज़रते सय्यिदुना जारिया बिन हुमैल رضی اللہ عنہ	619
फ़ज़ाइले कुरआन	596	हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضی اللہ عنہ	619
हज़रते सय्यिदुना औस बिन औस सक़फ़ी رضی اللہ عنہ	608	गुलामों पर शफ़्क़त	620
हज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन हारिसा رضی اللہ عنہ	610	**हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद** رضی اللہ عنہ	621
आशूरा के रोज़े की अहम्मिय्यत	610	क़ियामत की 10 बड़ी निशानियां	621
हज़रते सय्यिदुना अग़र्र मुज़नी رضی اللہ عنہ	610	कुरआने हकीम और अहले बैत	622
हर रोज़ 100 बार इस्तिग़फ़ार	611	**हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन ज़ैद** رضی اللہ عنہ	622
हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह رضی اللہ عنہ	611	आप رضی اللہ عنہ की इस्तिक़ामत व शहादत	622
सर्दी गर्मी में बदल गई	612	आप رضی اللہ عنہ की वालिदा का ज़िक्रे ख़ैर	623
हज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رضی اللہ عنہ	612	**हज़रते सय्यिदुना हारिसा बिन नो'मान** رضی اللہ عنہ	623
हज़रते सय्यिदुना सौबान رضی اللہ عنہ	613	मां से हुस्ने सुलूक का सिला	623
यहूदी आलिम, बारगाहे रिसालत में	614	सदक़ा बुरी मौत से बचाता है	624
सब से अफ़्ज़ल माल	614	**हज़रते सय्यिदुना हाज़िम बिन हर्मला** رضی اللہ عنہ	624
हज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह्हाक رضی اللہ عنہ	614	जन्नत का ख़ज़ाना	624
मुसलमान पर कुफ़्र की तोहमत उस के क़त्ल की तरह है	615	**हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन अबी आमिर** رضی اللہ عنہ	624
हज़रते सय्यिदुना साबित बिन वदीआ رضی اللہ عنہ	616	"ग़सीलुल मलाइका" कहने की वज्ह	625
हज़रते सय्यिदुना सक़ीफ़ बिन अम्र رضی اللہ عنہ	616	**हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन अम्र** رضی اللہ عنہ	625
हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رضی اللہ عنہ	616	**हज़रते सय्यिदुना हकम बिन उमैर** رضی اللہ عنہ	626
लेटने का शैतानी तरीक़ा	617	दीन में नाक़िस कौन ?	626
हज़रते सय्यिदुना जरहद बिन ख़ुवैलिद رضی اللہ عنہ	618	कामिल हया	626

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना हर्मला बिन इयास	627	**हज़रते सय्यिदुना अबू रुज़ैन**	640
हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत	628	ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत	640
उम्मत के हक़ में 3 दुआएं	629	70 हज़ार फ़िरिश्तों की दुआ हासिल करने का अ़मल	641
हज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सह्मी	631	**हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब**	642
हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद	632	2 भाइयों का शौक़े शहादत	642
मुत्तक़ी व ग़ैरे मुत्तक़ी की इबादत में फ़र्क़	632	**हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी**	642
मुख़्तसर और जामेअ़ नसीहत	633	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करने की फ़ज़ीलत	643
70 हज़ार का बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला	633	**हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास**	643
हज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक	634	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दे	644
ग़ैबी आवाज़ ने इस्लाम की दा'वत दी	634	**हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर**	644
पाइंचे टख़्नों से नीचे लटकाना ममनूअ़ है	635	**हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान सफ़ीना**	644
हज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन औस	635	ज़िन्दगी भर सोहबते सरकार की ख़्वाहिश	644
निगाहे मुस्तफ़ा का कमाल और सहाबी की सादगी	635	तेरे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही	645
ना'त सुनना सुन्नत है	636	ग़ुलामे मुस्तफ़ा की जानवर भी ता'ज़ीम करते हैं	645
हज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन यसाफ़	637	आक़ा ﷺ दा'वत से लौट आए	646
हज़रते सय्यिदुना दुकैन बिन सईद	637	**हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक**	647
एक मो'जिज़े का बयान	638	सब्र की अहम्मिय्यत का बयान	647
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन	638	मुसीबत हस्बे फ़ज़ीलत आती है	648
अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से ज़ुल बिजादैन कैसे हुवे ?	639	**हज़रते सय्यिदुना सालिम**	648
हज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा रिफ़ाआ़	639	ख़ुश इल्हान क़ारिये क़ुरआन	649
जुमुआ़ की अ़ज़्मतों का बयान	639	**हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद अश्जई**	649

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ की अफ़्ज़लिय्यत	649	सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ की भूक का ज़िक्र	660
हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़मैर رضی اللہ عنہ	651	अहादीस याद करने का शौक़	662
आप رضی اللہ عنہ की शान	651	ख़ुशहाली में ख़स्ता हाली की याद	662
हज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद رضی اللہ عنہ	651	बेटी को सोना न पहनने की नसीहत	664
अहले मदीना की शाने अ़ज़्मत निशान	651	गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया	665
हज़रते सय्यिदुना शुक़रान رضی اللہ عنہ	652	बे मिसाल हाफ़िज़ा	665
हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन उसैद رضی اللہ عنہ	652	आप رضی اللہ عنہ का इ़ल्मे ह़दीस	666
आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की एक ख़ुसूसिय्यत	652	ठन्डी ग़नीमत	666
हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رضی اللہ عنہ	653	हर महीने 3 रोज़े / सारा साल रोज़ों का सवाब	667
2 नबियों عليهما الصلوٰة والسلام की दुआ़	653	नफ़्ल रोज़े की निय्यत	668
हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन बैज़ा رضی اللہ عنہ	653	रोज़ाना 12 हज़ार बार इस्तिग़्फ़ार	669
हज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा बिन क़ैस رضی اللہ عنہ	654	हज़ार गिरहों वाला धागा	669
पेट के बल लेटना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं	654	ब वक़्ते वफ़ात रोने की वज्ह / मस्जिद में नक़्शो निगार	669
हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन अ़म्र رضی اللہ عنہ	655	मौत एक खुली नसीह़त है	670
माल की फ़िरावानी की ख़बर	655	ख़ुत़बए अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ / 15 खजूरों पर 2 दिन गुज़ारा	671
हज़रते सय्यिदुना त़ुफ़ावी दौसी رضی اللہ عنہ	656	लौंडी को आज़ाद फ़रमा दिया	672
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ	656	मौत ख़ालिस सोने से भी ज़ियादा महबूब होगी	672
अच्छाई और बुराई का मदार	657	6 चीज़ों के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना	672
इ़ल्म की अहम्मिय्यत	657	अपना काम ख़ुद करते/घर के बाहर क्या लिखवाऊं	673
हर क़दम के बारे में सुवाल होगा	657	इजमाली फ़ेहरिस्त	674
त़लबे इ़ल्म में नौ दिन का सफ़र	657	मुबल्लिग़ीन के लिये फ़ेहरिस्त	679
हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ	658	माख़ज़ो मराजेअ़	685
इस्लाम के मेहमान	659	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	690

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"हमें सहाबए किराम से प्यार है" (उर्दू) के 21 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "21 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। ﴾14﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। ﴾15﴿ औलिया की सिफ़ात अपनाऊंगा। ﴾16﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾17﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴿موطا امام مالک ج۲ص۴۰۷ حدیث ۱۷۳۱﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। ﴾19﴿ अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर किया करूंगा और हर इस्लामी माह की दस तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा और ﴾20﴿ आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा। ﴾21﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही़ कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज[1]

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना

---

1 .....तादमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

.....मदनी इन्क़िलाब......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** से "**मदनी इन्आ़मात**" नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिए। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें । اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर "**मदनी इन्क़िलाब**" बरपा होता देखेंगे ।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ **दा'वते इस्लामी** तेरी धूम मची हो !*

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आ़जिज़ बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदना गुलाम हैं यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत के क़रीब होते जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात तमाम जहानों के पालने वाले ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُهٗ की इत़ाअ़त और मोमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ (پ٥، النساء:٦٩)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं।*

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस आयते मुबारका की तफ़्सीर का खुलासा बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान सह़ीह़ मा'ना में **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلَّم की इत़ाअ़त करेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ पर कारबन्द होगा, उस की मन्अ़ की हुई चीज़ों से बचेगा और रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नतों का मुत्तबेअ़ (या'नी पैरूकार) होगा वोह कल क़ियामत और जन्नत में या क़ब्रो ह़श्र व जन्नत में नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अबू बक्र सिद्दीक़, उ़मर व उ़स्मान व अ़ली और तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबा (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) के साथ होगा, (और) साथ रहेगा कि उसे हर वक़्त इन मह़बूबों के जमाल की ज़ियारत, इन की मुलाक़ात, इन से गुफ़्तगू मुयस्सर रहेगी और येह दीनो दुन्या में बड़े अच्छे नर्म, नफ़्अ़ पहुंचाने वाले साथी हैं कि इन की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला इन के साथियों पर भी मेहरबानी फ़रमा देता है। येह मह़बूबों की हमराही, इन का क़ुर्ब **अल्लाह** तआ़ला का ख़ास फ़ज़्ल है जो उस के करम से ही मिलता है। **अल्लाह** तआ़ला अ़लीमो ख़बीर है वोह जानता है कि कौन इन बुज़ुर्गों की सोह़बत के लाइक़ है कौन नहीं।"(1)

---

1 ......تفسیر نعیمی،سورۃ النساء، تحت الآیۃ:٦٩، ج٥، ص٢٠٨.

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा आयते मुबारका और इस की तफ़्सीर वाज़ेह़ कर रही है कि **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की इताअ़त करने वाले अहले ईमान को ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिह़ीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की रफ़ाक़त मिलेगी मगर चूंकि इताअ़त व मा'सिय्यत का इन्सान को इख़्तियार दिया गया है और साथ ही नफ़्सो शैत़ान को उसे बहकाने की क़ुदरत भी दी गई है। लिहाज़ा जब उसे दुन्यवी राह़तें और फ़ानी आसाइशें मिलती हैं तो उसे राहे रास्त से हटा कर गुमराही, सरकशी और ना फ़रमानी की राह पर डाल देती हैं और नफ़्सानी व शैत़ानी ख़्वाहिशात उस के नूरे ईमान को बुझाने की सरतोड़ कोशिशें करती हैं। और वोह आ़लीशान मह़ल्लात और उ़म्दा व पुख़्ता मकानात की ता'मीर और अहलो इयाल की दुन्यावी राह़तों की ख़ात़िर हर जाइज़ व नाजाइज़ त़रीक़ों से माल कमाने में दिन रात मसरूफ़ रह कर अपनी आख़िरत को भूल जाता है। और नफ़्सो शैत़ान की ह़ीला साज़ियों का शिकार हो कर गुनाहों का ऐसा आ़दी हो जाता है कि इन्हें छोड़ने पर आमादा नहीं होता।

गोया जब दुन्या में हर त़रफ़ से ख़ुशियों, राह़तों, ने'मतों, आसाइशों और मालो दौलत की फ़िरावानी की ठन्डी, महकी महकी मगर आ़रिज़ी हवाएं चलती हैं तो इन्सान इस दुन्या को दाइमी समझ बैठता है। तो ऐसे में बयान कर्दा नजात के त़रीक़े या'नी ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُه की इताअ़त और मोमिनीन पर रह़्मो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ पर इस्तिक़ामत पाने के लिये सह़ाबए किराम और सलफ़े सालिह़ीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के ह़ालात व वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ करना अज़ ह़द ज़रूरी है। यक़ीनन उन ह़ज़रात ने अपनी ज़िन्दगियां ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُه की इताअ़त और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में गुज़ारीं। उन का ज़ोह्दो तक़्वा बे मिसाल था। वोह माल में रग़बत रखते न दुन्या से मह़ब्बत। जज़्बए इ़बादत, शौक़े तिलावत और फ़क्रो फ़ाक़ा गोया उन का लुबादा था। ख़ौफ़े ख़ुदा ऐसा कि उन्हें ख़शिय्यते इलाही में रोता देख कर लोग भी रोने लगते। इ़श्क़े मुस्त़फ़ा ऐसा कि अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े रौशन की एक झलक देखने के लिये हर वक़्त बे ताब रहते। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या नजात पाने के लिये अपने ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ में लगे रहे और अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दुन्या भर के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त ह़त्तल मक़्दूर दूसरों पर भी इनफ़िरादी कोशिशें करते रहे। नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र कर के न सिर्फ़ अपने माल की क़ुरबानियां दीं बल्कि इस अ़ज़ीम काम के लिये अपनी जानें तक क़ुरबान कर दीं। इन्हें डराया गया, धमकाया गया, मारा गया, सख़्त गर्मियों की कड़कती धूप में तपती रैत पर लिटाया गया, भूका प्यासा रखा गया, क़ैद किया गया, सूली पर चढ़ाया गया और गले में रस्सियां डाल कर गलियों में

www.dawateislami.net

घसीटा गया अल ग़रज़ हर त़रह़ से अज़िय्यत व तक्लीफ़ पहुंचाई गई लेकिन इस के बा वुजूद वोह दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त से पीछे न हटे और इस राह में अपना तन, मन, धन सब क़ुरबान कर दिया गोया वोह इन अश्आ़र के ह़क़ीक़ी मिस्दाक़ थे :

इरादे जिन के पुख़्ता हों नज़र जिन की ख़ुदा पर हो तलातुम ख़ैज़ मौजों से वोह घबराया नहीं करते
गुलामाने मुह़म्मद जान देने से नहीं डरते येह सर कट जाए या रह जाए वोह परवाह नहीं करते
ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

अल ग़रज़ इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी की ख़ात़िर क़ुरबानियां दीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें दुन्या व आख़िरत में इ़ज़्ज़त व करामत से सरफ़राज़ फ़रमाया। बिल ख़ुसूस, ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن और इन की अ़ज़मतो शान के क्या कहने ! मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से जा बजा इन की अ़ज़मतो शान बयान फ़रमाई। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सह़ाबा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) को नबियों और रसूलों (عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के इ़लावा तमाम जहानों पर फ़ज़ीलत दी है।"(1)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن से अ़दावत व बुराई दोनों जहां में ख़सारे का बाइ़स है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो मेरे सह़ाबा (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) में से किसी को भी बुरा कहे उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।"(2)

एक ह़दीसे पाक में येह मज़्मून भी मौजूद है : "जिस ने मेरे सह़ाबा को सताया उस ने मुझे सताया और जिस ने मुझे सताया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी तो क़रीब है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (दुन्या या आख़िरत में) उस की पकड़ फ़रमाए।"(3)

---

1 ......مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی اصحاب رسول اللّٰہ، الحدیث: ۱۶۳۸۳، ج۹، ص۷۳۶.

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث ۱۸۴۶، ج۱، ص۵۰۰.

3 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، الفصل الثانی، الحدیث: ۶۰۱۴، ج۲، ص۴۱۴.

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इस की शर्ह़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह फ़रमान नक़्ल फ़रमाया कि "सह़ाबा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) को बुरा कहने का येह अ़मल अ़दावते रसूल की दलील है।" (मिर्क़ात) इस के बा'द फ़रमाते हैं : "और अ़दावते रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अ़दावते रब (عَزَّوَجَلَّ) है। ऐसा मर्दूद दोज़ख़ ही का मुस्तह़िक़ है।"(1)

इन्ही नुफ़ूसे क़ुदसिय्या में से एक गुरौह "अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा" कहलाता है। येह ह़ज़रात हर वक़्त मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे दौलत पर ह़ाज़िर रहते थे। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वोह मह़बूब व पसन्दीदा बन्दे हैं कि जब इन से नफ़रत करते हुवे उ़यैना बिन ह़सीन और अक़रअ़ बिन ह़ाबिस वग़ैरा ने बारगाहे रिसालत में इन्हें दूर करने की अ़र्ज़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ (پ۱۵، الکھف:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ो शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें।*

जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे और सुफ़्फ़ा वालों को तलाश करने लगे ह़त्ता कि उन्हें मस्जिद की पिछली जानिब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल पाया तो फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे उस वक़्त तक वफ़ात नहीं दी जब तक मुझे अपनी उम्मत के कुछ लोगों के साथ अपनी जान को मानूस रखने (या'नी उन के पास बैठने) का हुक्म न दे दिया। लिहाज़ा मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ ही है।"(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

देखा आप ने ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का मक़ाम **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के हां किस क़दर बुलन्द है। पस ईमान व ईक़ान का तक़ाज़ा है कि हमारे दिल सह़ाबए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की अ़ज़मत व मह़ब्बत और उल्फ़त व चाहत से लबरेज़ हों और येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ इयां है कि किसी से मह़ब्बत उस की इत़ाअ़त व इत्तिबाअ़ पर उभारती है। यक़ीनन ह़ज़राते

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 343 मुलख़्ख़सन।

2 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث:۱۰۴۹۴، ج۷، ص۳۳۶.

www.dawateislami.net

सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की महब्बत व अक़ीदत में डूब कर उन की सीरते पाक के मुख़्तलिफ़ हालात व वाक़िआत का मुतालआ करना और इस से हासिल होने वाले मदनी फूलों के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारना ऐन सआदत है और क्यूं न हो कि इन के तक़्वा व परहेज़गारी की गवाही खुद क़ुरआने करीम दे रहा है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا (پ٢٦،الفتح:٢٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अहल थे।

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस (या'नी परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "कि येह कलिमए तक़्वा या'नी ईमान व इख़्लास उन से जुदा हो सकता ही नहीं, इस में उन सब के हुस्ने ख़ातिमा की यक़ीनी ख़बर है कि उन सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) से दुन्या में वफ़ात के वक़्त, क़ब्र में, हश्र में तक़्वा जुदा न हो सकेगा।" और आख़िरी हिस्सा (या'नी और (वोह) इस के अहल थे) के तहत फ़रमाते हैं : "क्यूंकि रब तआला ने उन बुज़ुर्गों को अपने महबूब की सोहबत, क़ुरआने करीम की ख़िदमत, दीन की हिफ़ाज़त के लिये चुना है, अगर उन में कुछ भी नुक़्सान होता तो उन पाकों के सरदार महबूब की हमराही के लिये उन का चुनाव न होता। मोती हर डिबिया में नहीं रखा जाता इस के लिये ख़ास क़ीमती डिब्बा होता है। ख़याल रहे कि यहां कलिमए तक़्वा से मुराद या कलिमए तय्यिबा है या वफ़ादारी या हर क़िस्म की ज़ाहिरी व बातिनी परहेज़गारी। وَهُوَالظَّاهِر इस से मा'लूम हुवा कि कोई सहाबी फ़ासिक़ नहीं तमाम मुत्तक़ी व आदिल हैं जो उन्हें फ़ासिक़ कहे वोह इस आयत का मुन्किर है रब तआला जिस के साथ तक़्वा व परहेज़गारी लाज़िम कर दे उसे जुदा करने वाला कौन ?"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अन्दाज़ा कीजिये ! जिन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के ज़ोह्दो तक़्वा की गवाही क़ुरआने मजीद दे रहा है और जिन्हों ने मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत में रह कर बराहे रास्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तरबिय्यत हासिल की हो उन के फ़ज़ाइल व कमालात और ज़ोह्दो तक़्वा का क्या आलम होगा !

अल्लाह अल्लाह वोह क्या लोग थे जिन लोगों ने
चलते फिरते मेरे आक़ा की ज़ियारत की है
आस्मानों पे ज़मीनों पे हुकूमत की है
जिस ने मेरे आक़ा की इताअ़त की है

1.....तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह 26, अल फ़त्ह, तहतुल आयत : 26।

www.dawateislami.net

और जो खुश नसीब भलाई के साथ इन नुफ़ूसे कुदसिय्या की पैरवी करता है वोह भी रिज़ाए रब्बुल अनाम पाने में कामयाब हो जाता है। इरशादे बारी तआला है :

وَالَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍۙ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ (پ۱۱، التوبۃ: ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो भलाई के साथ उन के पैरू हुवे **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी।*

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "या'नी क़ियामत तक के तमाम वोह मुसलमान जो मुहाजिरीन व अन्सार (सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) की इताअत व पैरवी करने वाले हैं या बाक़ी सहाबा, उन सब से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) राज़ी है मगर अगले, इमाम (या'नी पेशवा) हैं और पिछले मुक़्तदी (या'नी पैरवी करने वाले) इस से तीन मस्अले मा'लूम हुवे **एक** येह कि क़ियामत तक वोही मुसलमान हक़ पर हैं जो तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के पैरूकार हैं लिहाज़ा रवाफ़िज़ व ख़वारिज बातिल पर हैं। **दूसरे** येह कि हर मुत्तक़ी सुन्नी मुसलमान को "رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم" कह सकते हैं। येह अल्फ़ाज़ सिर्फ़ सहाबा के लिये ख़ास नहीं। **तीसरे** येह कि जब रब तआला सहाबा के गुलामों से राज़ी है तो खुद सहाबा से कितना राज़ी होगा।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

आइये ! हम अपने कुलूबो अज़्हान (या'नी दिलो दिमाग़) में **अल्लाह** वालों बिल खुसूस सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की अज़्मतो शान और उन से महब्बत की ऐसी शम्अ रौशन करें कि इस का फ़ैज़ान हमारी आइन्दा नस्लों को भी हासिल हो। सच्ची बात है कि शबो रोज़ सरकारे दो जहां, रहमते आलमियां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर हाज़िर रहने और तरबिय्यत पाने वाली इन अज़ीमुश्शान हस्तियों की मुबारक व पाकीज़ा ज़िन्दगियों और इन के मुबारक हालात का मुतालआ कर के हर एक ख़्वाह वोह ज़िन्दगी के किसी भी शो'बे से तअल्लुक़ रखता हो, भरपूर राहनुमाई हासिल कर सकता है। ज़ेरे नज़र किताब "अल्लाह वालों की बातें" हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मुतवफ़्फ़ा 430 हिजरी) की अल्लाह वालों से महब्बत में डूब कर लिखी हुई शोहरए आफ़ाक़ मुबारक किताब "حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء" की पहली जिल्द का तर्जमा है। येह किताब हज़राते खुलफ़ाए राशिदीन, इन के इलावा अशरए मुबश्शरा में शामिल सहाबए किराम, मुहाजिर सहाबए

---

(1).....तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह 10, अत्तौबह, तहतुल आयत : 100।

www.dawateislami.net

किराम, अहले सुफ़्फ़ा, साकिनीने मस्जिदे नबवी, सहाबिय्यात, ताबेईन, तब्ए ताबेईन, मशरिक़ी औलियाए किराम, सरदाराने सूफ़िया, इराक़ी आरिफ़ीन, बग़दादी औलियाए किराम और मुसन्निफ़ के हम अ़स्र औलियाए उ़ज़्ज़ाम (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) के ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा, फ़ज़ाइल व कमालात, सीरत व किरदार, सिफ़ात व आ़दात व अख़्लाक़िय्यात, आ'माल व अक़्वाल, अफ़्आ़ल व अह़्वाल, ज़ोह्दो तक़्वा और ह़ालात व वाक़िआ़त पर मुश्तमिल है। इब्तिदा में ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अह़ादीसे मुबारका की रौशनी में औलियाए किराम की शान, मक़ामो मर्तबा और तसव्वुफ़ को बयान फ़रमाया है जिस से इस्लाम में तसव्वुफ़ की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा होता है। इस किताब की इफ़ादिय्यत के पेशे नज़र क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने "**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को इस के उर्दू तर्जमा करने की त़रफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के शो'बए तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू) के मदनी उ़लमा کَثَّرَہُمُ اللہُ تَعَالٰی ने "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मुसलसल कोशिशों और अन्थक काविशों से इस किताब का उर्दू तर्जमा करने की सआ़दत ह़ासिल की। इस की पहली जिल्द का उर्दू तर्जमा बनाम "**अल्लाह वालों की बातें**" आप के हाथों में है। **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमांबरदारी पर इस्तिक़ामत पाने, फ़ैज़ाने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को आ़म करने और अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का मुक़द्दस जज़्बा उजागर करने के लिये ख़ुद भी इस किताब का मुत़ालआ़ करें और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त मक्तबतुल मदीना से ख़रीद कर दूसरों को बत़ौरे तोह़फ़ा पेश करें।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

﴾1﴿.....तर्जमे के लिये दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या (बैरूत, लुबनान) का नुस्ख़ा (मत़बूआ़ 1418 हिजरी/ 1997 ईसवी) इस्ति'माल किया गया है।

﴾2﴿.....चूंकि हमारे पास इस किताब का एक ही नुस्ख़ा है और इस के अ़रबी मतन में बहुत जगह ग़लत़ियां हैं जिस की वज्ह से काफ़ी मुश्किलात का सामना करना पड़ा। मगर दीगर कुतुब से तलाश कर के ह़त्तल इमकान दुरुस्ती की कोशिश की गई है। ताहम फिर भी आप ग़लत़ी पाएं तो तह़रीरी त़ौर पर मजलिस को मुत्तलअ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....सलीस और बा मुहा़वरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी अच्छी त़रह़ समझ सकें।

﴾4﴿.....आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन कन्जुल ईमान से लिया गया है।

﴾5﴿.....आयाते मुबारका के ह़वाले का भी एहतिमाम किया गया है और ह़त्तल मक्दूर अह़ादीसे त़य्यिबा और अक्वाले सह़ाबा व ताबेईन वगै़रा की तख़रीज भी की गई है।

﴾6﴿.....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद ह़वाशी और अकाबिरीने अहले सुन्नत की तह़क़ीक़ को दर्ज कर दिया है।

﴾7﴿.....सह़ाबए किराम, रावियों رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और शहरों के नामों पर ए'राब का एहतिमाम किया गया है।

﴾8﴿.....कई मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (brackets) में लिख दिये गए हैं।

﴾9﴿.....तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये मुश्किल व गै़र मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब का इल्तिज़ाम किया गया है।

﴾10﴿..... मौक़अ़ की मुनासबत से जगह ब जगह उ़नवानात क़ाइम किये गए हैं।

﴾11﴿.....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का भी भरपूर ख़याल रखा गया है।

इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, सह़ाबए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की इनायतों और क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का समरा हैं और जो ख़ामियां हैं वोह हमारी कम फ़ेह्मी के सबब हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **''मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

इस **किताब की पहली जिल्द में जिन** 89 **सहाबए किराम** رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का ज़िक्रे ख़ैर है उन के अस्माए गिरामी दर्जे ज़ैल हैं :

﴾1﴿......**हज़राते ख़ुलफ़ाए राशिदीन :** (1) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (2) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ (3) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और (4) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ।

﴾2﴿......**हज़राते अ़शरए मुबश्शरा**[1] **:** चार ख़ुलफ़ाए राशिदीन के इलावा बाक़ी छे हज़रात के अस्माए शरीफ़ा येह हैं : (1) हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (2) हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (3) हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास (4) हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद (5) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और (6) हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ।

﴾3﴿......**हज़राते मुहाजिरीन सहाबए किराम :** (1) हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न (2) हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर (3) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श (4) हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा (5) हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित (6) हज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी (7) हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (8) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (9) हज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र (10) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन (11) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (12) हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर (13) हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत (14) हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ (15) हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान (16) हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी (17) हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान (18) हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद (19) हज़रते सय्यिदुना सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा (20) हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ (21) हज़रते सय्यिदुना सौबान अबुल बही राफ़ेअ़ (22) हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ अस्लम (23) हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी (24) हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा (25) हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल (26) हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर (27) हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द (28) हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब (29) हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री (30) हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस

1...**फ़तावा रज़विय्या** में है कि "वोह दस सह़ाबी जिन के क़त़ई जन्नती होने की बिशारत व ख़ुश ख़बरी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ज़िन्दगी ही में सुना दी थी वोह अ़शरए मुबश्शरा कहलाते हैं।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 363)

www.dawateislami.net

(31) ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान (32) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (33) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ताब (34) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (35) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

﴾4﴿......**ह़ज़राते अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा :** (1) ह़ज़रते सय्यिदुना औस बिन औस (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन ह़ारिसा (3) ह़ज़रते सय्यिदुना अग़र्र मुज़नी (4) ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक (5) ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह़्ह़ाक (6) ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन वदीआ़ (7) ह़ज़रते सय्यिदुना सक़ीफ़ बिन अ़म्र (8) ह़ज़रते सय्यिदुना जरहद बिन ख़ुवैलद (9) ह़ज़रते सय्यिदुना जुऐ़ल बिन सुराक़ा (10) ह़ज़रते सय्यिदुना जारिया बिन ह़मील (11) ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद (12) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन ज़ैद (13) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन नो'मान (14) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाज़िम बिन ह़र्मला (15) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला बिन अबी आ़मिर (16) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ज्जाज बिन अ़म्र (17) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन उ़मैर (18) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़र्मला बिन इयास (19) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत (20) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा (21) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन ज़ैद (22) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक (23) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन औस (24) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन यसाफ़ (25) ह़ज़रते सय्यिदुना दुकैन बिन सईद (26) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन (27) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा अन्सारी (28) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रुज़ैन (29) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब (30) ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना (31) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी (32) ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा (33) ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद (34) ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़मैर (35) ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद (36) ह़ज़रते सय्यिदुना शुक़रान (37) ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन उसैद (38) ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान (39) ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन बैज़ा (40) ह़ज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा बिन क़ैस (41) ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन अ़म्र (42) ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ावी दौसी (43) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और (44) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब :

आप का नाम मुबारक ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन इस्ह़ाक़ बिन मूसा बिन मेहरान मेहरानी अस्बहानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی है। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अजदाद में से सब से पहले मेहरान ने इस्लाम क़बूल किया जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ुलाम थे। ह़ाफ़िज़ साह़िब رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नाना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी पाए के आ़लिमे दीन, वलिय्ये कामिल और आ़बिदो ज़ाहिद थे।

पैदाइश और ता'लीमो तरबिय्यत :

आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रजबुल मुरज्जब सिने 336 हिजरी को ईरान के उस मश्हूर शहर अस्बहान में पैदा हुवे जिस की सरज़मीन ने कई मश्हूरो मा'रूफ़ अकाबिर उ़लमा व हुफ़्फ़ाज़ को जनम दिया। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इल्मो उ़लमा के दरमियान परवरिश पाई। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد अस्बहान के उ़लमा व मुह़द्दिसीन में से एक थे, गोया शहरे अस्बहान उ़लमा व मुह़द्दिसीन से इक्तिसाबे फ़ैज़ करने वालों से भरा हुवा था। इस लिये आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इल्मी महारत ह़ासिल करने के कसीर मवाक़ेअ़ मुयस्सर हुवे और येह चीज़ आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की उ़म्दा सलाह़िय्यत और इल्मी रग़बत के मुवाफ़िक़ साबित हुई। पस आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने हम अ़स्र उ़लमा व हुफ़्फ़ाज़ से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया और अस्बहान के नामवर उ़लमा में से हुवे।

त़लबे इल्म के लिये सफ़र :

त़लबे इल्म के लिये आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का त़रीक़ए कार वोही था जो बाक़ी उ़लमा व हुफ़्फ़ाज़ का रहा। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बग़दादे मुअ़ल्ला, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा, कूफ़ा और नैशापुर का सफ़र किया। बग़दाद में अबू अ़ली सव्वाफ़, मक्का में अबू बक्र आजुर्री, बसरा में फ़ारूक़ बिन अ़ब्दुल करीम ख़त्त़ाबी, कूफ़ा में अबू अ़ब्दुल्लाह बिन यह़्या, और नैशापुर में अबू अह़मद ह़ाकिम (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) वग़ैरा से इल्म ह़ासिल किया। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने हम अ़स्र हुफ़्फ़ाज़ से इल्म ह़ासिल करने के बा'द जब अस्बहान में इक़ामत इख़्तियार की तो मुख़्तलिफ़ मक़ामात से लोग आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इक्तिसाबे इल्म करने के लिये अस्बहान आने लगे।

www.dawateislami.net

मशाइख़ :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जिन मुहद्दिसीन से अहादीस सुनीं उन में से बा'ज़ के नाम येह हैं : अबू अ़ली मुहम्मद बिन अहमद बिन हसन अल मा'रूफ़ बि इब्ने सव्वाफ़, अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन इस्हाक़ अस्बहानी, अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन यह्या मुज़क्की, अबू अहमद अ़स्साल मुहम्मद बिन अहमद बिन इब्राहीम, अबू हफ़्स फ़ारूक़ बिन अ़ब्दुल करीम ख़त्ताबी, अबू बक्र अ़त्तार अहमद बिन यूसुफ़ बिन ख़ल्लाद, अबू क़ासिम क़ज़्ज़ार हबीब बिन हसन बिन दावूद, अबू क़ासिम सुलैमान बिन अहमद तबरानी, अबू बक्र मुहम्मद बिन जा'फ़र बग़दादी, अबू शैख़ बिन हय्यान, अहमद बिन बुन्दार शआ़र वग़ैरा।

तलामिज़ा :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तलामिज़ा की ता'दाद बे शुमार है, जिन में से चन्द मश्हूर के नाम येह हैं : अबू बक्र ख़तीब अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन साबित बिन अहमद बिन महदी साहिब तारीख़े बग़दाद, अ़ब्दुल वाहिद बिन मुहम्मद बिन अहमद सब्बाअ़ अस्बहानी, हसन बिन अहमद बिन हसन हद्दाद अस्बहानी, यूसुफ़ बिन हसन बिन मुहम्मद ज़न्जानी तफ़क्कुरी, अबू बक्र मुहम्मद बिन इब्राहीम अ़त्तार, हिबतुल्लाह बिन मुहम्मद शीराज़ी वग़ैरा।

ता'रीफ़ी कलिमात :

ख़तीब बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू नुऐम और सय्यिदुना अबू हाज़िम अ़ब्दवी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) के इलावा मैं ने कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा जिसे "हाफ़िज़ुल हदीस" कहा जा सके।"

इमाम सुब्की عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू नुऐम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इमामे जलील, हाफ़िज़, सूफ़ी, फ़िक़्ह व तसव्वुफ़ का मजमूआ़, हिफ़्ज़ो ज़ब्त की इन्तिहा और उन नुमायां लोगों में से एक थे कि जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रिवायत व दियारत में बुलन्दी और इन्तिहाई दरजा अ़ता फ़रमाया।"

www.dawateislami.net

इमाम ज़हबी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : ''आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत बड़े हाफ़िज़ुल ह़दीस, मुह़द्दिसे ज़माना और ह़क़ीक़ी सूफ़ी थे।'' और ''सियरो आ'लामिन्नुबला'' में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को शैख़ुल इस्लाम के लक़ब से याद फ़रमाया।

इमाम ज़हबी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : ''मुह़द्दिसीन की अ़ज़ीम जमाअ़त ने इन्हें रिवायते ह़दीस की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई क्यूंकि आप दुन्या में मुन्फ़रिद मक़ाम रखते हैं जैसा कि मख़्लूक़ में से समाए ह़दीस में मुन्फ़रिद मक़ाम रखते हैं।

इब्ने ख़ल्कान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ''सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू नुऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मश्हूर अकाबिर व सिक़्क़ा हुफ़्फ़ाज़ और जलीलुल क़द्र मुह़द्दिसीन में से थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जय्यिद उ़लमा से इ़ल्म ह़ासिल किया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्दों का शुमार भी जय्यिद उ़लमा में होता था।''

तसानीफ़ :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़िन्दगी दर्सो तदरीस और तस्नीफ़ो तालीफ़ में गुज़री। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन मर्दविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू नुऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वक़्त के मरजउ़ल ख़लाइक़ थे। दुन्या में आप से ज़ियादा मुस्तनद हाफ़िज़ुल ह़दीस कोई न था जितने भी हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस होते आप की बारगाह में ह़ाज़िर रहते। रोज़ाना एक जमाअ़त ज़ोहर के वक़्त तक पढ़ती और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब घर की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते तो लोग रास्ते में भी उन से कुछ न कुछ पढ़ लिया करते लेकिन फिर भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उक्ताहट व परेशानी मह़सूस न करते। समाए ह़दीस और तस्नीफ़ो तालीफ़ से इस क़दर लगाव था कि गोया येह उन की ग़िज़ा में शामिल हो। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बहुत सी कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। जिन में से चन्द के नाम येह हैं :

www.dawateislami.net

(1)اَلْاَجْزَاءُ الْوَخْشِيَّات (2)اَحَادِيْثُ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ بْن جَعْفَرِ الْجَابِرِى (3)اَحَادِيْثُ مَشَايِخِ اَبِى الْقَاسِمِ عَبْدِالرَّحْمٰنِ بْنِ الْعَبَّاس اَلْبَزَّار الاَصَم (4)اَرْبَعُوْنَ حَدِيْثًا مُنْتَقَاةً (5)الاَرْبَعِيْن عَلٰى مَذْهَبِ الْمُتَحَقِّقِيْن (6)اَطْرَافُ الصَّحِيْحَيْن (7)كِتَابُ الْاِمَامَة (8)اَلْاَمْوَال (9)اَلْاِيْجَازُ وَجَوَامِعُ الْكَلِم (10)تَارِيْخُ اَصْبِهَان (11)تَثْبِيْتُ الرُّؤْيَا لِلّٰه (12)تَسْمِيَةُ الرُّوَاةِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ مَنْصُوْرٍ عَالِيًا (13)تَسْمِيَةُ مَاانْتَهٰى اِلَيْنَا مِنَ الرُّوَاةِ عَنْ اَبِىْ نُعَيْمِ الْفَضْلِ بْنِ دُكَيْن (14)جُزْءُ صَنَمٍ جَاهِلِىٍّ يُقَالُ لَهُ قَرَاص (15)حُرْمَةُ الْمَسَاجِد (16)حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء (17)دَلَائِلُ النُّبُوَّة (18)ذِكْرُ مَنْ اِسْمُهٗ شُعْبَة (19)رِيَاضَةُ الْاَبْدَان (20)رِيَاضَةُ الْمُتَعَلِّمِيْن (21)اَلرِّيَاضَةُ وَالْاَدَب (22)اَلشُّعَرَاء (23)صِفَةُ الْجَنَّة (24)صِفَةُ النِّفَاقِ وَنَعْتُ الْمُنَافِقِيْن (25)اَلطِّبُّ النَّبَوِى (26)طَبَقَاتُ الْمُحَدِّثِيْن وَالرُّوَاة (27)طَرِيْقُ حَدِيْث (اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ اِسْمًا) (28)طَرِيْقُ حَدِيْث (زُرْغِبًّاتَزْدَدْحُبًّا) (29)عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَة (30)فَضَائِلُ الْخُلَفَاءِ الْاَرْبَعَة (31)فَضَائِلُ الصَّحَابَة (32)فَضْلُ السِّوَاك (33)فَضْلُ سُوْرَةِ الْاِخْلَاص (34)فَضْلُ الْعَالِمِ الْعَفِيْف (35)فَضْلُ الْعِلْم (36)فَضِيْلَةُ الْعَادِلِيْن مِنَ الْوُلَاةِ وَمَنْ اَنْعَمَ النَّظْرَ فِى حَالِ الْعُمَّالِ وَالْبُغَاة (37)مَاانْتَقٰى اَبُوْبَكْرِ بْن مَرْدُوْيَّة عَلَى الطَّبْرَانِى (38)مُسْتَخْرَج اَبِىْ نُعَيْم عَلَى التَّوْحِيْدِ لِابْنِ خُزَيْمَة (39)اَلْمُسْتَخْرَجُ عَلَى الْبُخَارِى (40)اَلْمُسْتَخْرَجُ عَلٰى كِتَابِ عُلُوْمِ الْحَدِيْثِ لِلْحَاكِم (41)اَلْمُسْتَخْرَجُ عَلٰى مُسْلِم (42)مُسَلْسَلَاتُ اَبِىْ نُعَيْم (43)اَلْمُعْتَقَد (44)مُعْجَمُ الشُّيُوْخ (45)مُعْجَمُ الصَّحَابَة (46)مَعْرِفَةُ الصَّحَابَة (47)مُنْتَخَبٌ مِّنْ حَدِيْثِ يُوْنُسَ بْنِ عُبَيْدَة (48)اَلْمَهْدِى (49)مُسْنَد (50)كِرَاسْتَانُ فِى الْحَدِيْث وغيره۔

विसाले पुर मलाल :

इल्मो अ़मल का येह बह़्‌रे ज़ख़्ख़ार इल्म के प्यासों को सैराब करता हुवा सह़ीह़ क़ौल के मुताबिक़ 94 साल की उ़म्र में 20 मुह़र्रमुल ह़राम 430 हिजरी को इस फ़ानी दुन्या से बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी की त़रफ़ कूच कर गया। लेकिन अहले इस्लाम के दिलों में हमेशा हमेशा के लिये अपनी यादें नक़्श कर गया। (اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّآاِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ) (ماخوذ ازمعرفة الصحابةو حلية الاولياء ودلائل النبوة وغيره)

ہرگز نمیرد آں کہ دِلَش زِندَہ شُد بَعِشق

ثَبت اَست بَر جَرِیدَۂ عَالَم دَوَام مَا

(ह़ाफ़िज़ शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى)

तर्जमा : जिन के दिल इ़श्क़े इलाही में ज़िन्दा हैं वोह कभी नहीं मरते उन का नाम हमेशा के लिये सह़ीफ़ए काइनात पर नक़्श हो जाता है।

www.dawateislami.net

हिल्यतुल औलिया और अल मदीनतुल इल्मिय्या

﴾1﴿.....काम करने वालों का इन्तिख़ाब :

किसी भी काम को ब हुस्ने ख़ूबी पायए तक्मील तक पहुंचाने के लिये मुतअ़ल्लिक़ा काम के माहिरीन दरकार होते हैं, ज़ेरे नज़र किताब के तर्जमे का काम किस क़दर अहम्मिय्यत का ह़ामिल है इस का अन्दाज़ा इसे पढ़ कर ही किया जा सकता है। इस किताब की इफ़ादिय्यत के पेशे नज़र दुन्याए इस्लाम की अ़ज़ीम हस्ती सय्यिदी व मुर्शिदी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने बारहा इस ख़्वाहिश का इज़्हार फ़रमाया कि حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء का तर्जमा होना चाहिये। चुनान्चे, मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने इस अ़ज़ीमुल मनाफ़ेअ़ किताब के तर्जमे की ज़िम्मेदारी शो'बए तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू) को सोंपी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के इस शो'बे में मौजूद मदनी उ़लमाए किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء के तर्जमे का काम शुरूअ़ कर दिया। जिस का नतीजा पहली जिल्द के तर्जमे ब नाम "**अल्लाह वालों की बातें**" की सूरत में आप के सामने है। दूसरी और तीसरी जिल्द के तर्जमे का काम जारी है। اِنْ شَآءَاللّٰه अपने वक़्त पर वोह भी आप के पेशे नज़र होगा।

﴾2﴿......तर्जमा और काम का अन्दाज़ :

इस अ़ज़ीमुश्शान, कसीरुल मनाफ़ेअ़ किताब में उ़लमा व त़लबा की दिलचस्पी और किताब की इफ़ादिय्यत के पेशे नज़र अ़ज़्म किया गया कि "मुकर्ररात के इ़लावा अज़ अव्वल ता आख़िर पूरी किताब का तर्जमा किया जाएगा।" फिर इस अन्दाज़ पर काम शुरूअ़ कर दिया गया। इब्तिदाई त़ौर पर येह तै पाया था कि इस किताब को क़िस्त़ वार शाएअ़ किया जाए और इस की पहली क़िस्त़ बनाम "**तज़्किरए ख़ुलफ़ाए राशिदीन**" शाएअ़ भी की गई। इस त़रह़ 10 जिल्दों पर मुश्तमिल इस किताब की तक़रीबन 40 अक़्सात़ होतीं। फिर फ़ैसला किया गया कि एक जिल्द का तर्जमा एक ही जिल्द में शाएअ़ किया जाए। अब इसी नहज पर तर्जमा किया जा रहा है। अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कोशिश होती है कि तर्जमा ह़त्तल मक़्दूर आसान और आ़म फ़ेह्म किया जाए नीज़ इसे उर्दू के क़ालिब में ढालते वक़्त उर्दू के मुहावरात वग़ैरा का ख़ूब ख़याल रखा जाए ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें। पेशे नज़र किताब में भी इस की भरपूर कोशिश की गई है।

www.dawateislami.net

﴾3﴿......तर्जमए आयाते कु़रआनी

किताब में मौजूद कुरआने करीम की आयाते मुक़द्दसा का तर्जमा खुसूसिय्यत के साथ, मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) के शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए कु़रआन "कन्ज़ुल ईमान" से लिया गया है। नीज़ किताब की इ़बारत में अगर कहीं कु़रआनी आयाते मुबारका से इक़्तिबास[1] किया गया है तो इस का तर्जमा करते वक़्त भी "कन्ज़ुल ईमान" के तर्जमे को पूरे तौ़र पर मल्हू़ज़ रखा गया है।

﴾4﴿.....शुरूहा़त और तराजुम से मुराजअ़त :

तर्जमा करते वक़्त येह कोशिश रही है कि शुरूहा़त और अकाबिरीने अहले सुन्नत دَامَتْ فُيُوْضُهُمْ के तराजुम के आईने में तर्जमा किया जाए। जिन शुरूहा़त व तराजुम को मद्दे नज़र रखा गया, वोह येह हैं : (1) फ़त्हुल बारी शर्हुस्सह़ीहि़ल बुख़ारी (2) उ़मदतुल क़ारी शर्हुस्सह़ीहि़ल बुख़ारी (3) नुज़्हतुल क़ारी शर्हुस्सह़ीहि़ल बुख़ारी (उर्दू) (4) फ़ुयूज़ुल बारी शर्हुस्सह़ीहि़ल बुख़ारी (उर्दू) (5) शर्हु सह़ीह़ मुस्लिम लिन्नववी (6) फ़ैज़ुल क़दीर शर्हुल जामेइ़स्सग़ीर (7) मिर्क़ातुल मफ़ातीह़ शर्हु मिश्कातिल मसाबीह़ (8) मिरआतुल मनाजीह़ शर्हु मिश्कातिल मसाबीह़ (उर्दू) (9) अशिअ़्अ़तुल्लमआ़त (10) अश्शिफ़ा (11) अल मवाहिबुल्लदुन्निय्यह (12) अर्रौज़ुल उनुफ़ (13) अल ख़सा़इसुल कुब्रा (14) मदारिजुन्नुबुव्वह (15) हु़ज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन वग़ैरा।

बुन्यादी तौ़र पर येह किताब तसव्वुफ़ व त़रीक़त से तअ़ल्लुक़ रखती है, इस में जा बजा तसव्वुफ़ और सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मुबारक तज़्किरा है, इन मज़ामीन व इ़बारात का तर्जमा करते वक़्त तसव्वुफ़ की दर्जे ज़ैल कुतुब को भी पेशे नज़र रखा गया : (1) इह़याउल उ़लूमिद्दीन (2) इत्तिहा़फ़ुस्सादतिल मुत्तक़ीन (3) अर्रिसालतुल कुशैरिय्यह (4) अल फ़ुतूहा़तुल मक्किय्यह (5) रौज़ुर्रियाही़न (6) अत्त़बक़ातुल कुब्रा लिश्शा'रानी (7) अल इबरीज़ (8) कश्फ़ुल मह़जूब (9) अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़ (10) जामेउ़ करामातिल औलिया वग़ैरा।

---

[1].....इक़्तिबास अस्ल में वोह कलाम है जो कु़रआनो ह़दीस के कुछ अल्फ़ाज़ को अपने ज़िम्न में लिये हुवे हो लेकिन इस से येह मुराद नहीं कि येह कलाम कु़रआनो ह़दीस का ही एक जुज़्व है। जैसा कि उ़लमाए इल्मुल बदीअ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "(बतौ़रे इक़्तिबास) अल्फ़ाज़ में तब्दीली या कमी नुक़्सान नहीं देती।"

www.dawateislami.net

﴾5﴿......उ़नवानात व बन्दसाज़ी

मुत़ालआ़ करने वालों की दिलचस्पी बर क़रार रखने और ज़ौक़ बढ़ाने की ग़रज़ से मुतअ़ल्लिक़ा मज़्मून के मुत़ाबिक़ उ़नवानात (दरमियानी व बग़ली सुर्ख़ियों) का एहतिमाम किया गया है और एक मज़्मून की तक्मील के बा'द दूसरा मज़्मून नए पेरे और नई सत़्र से शुरूअ़ किया गया है क्यूंकि उ़नवानात व बन्दसाज़ी (या'नी पेरेग्राफ़िंग), किसी भी किताब के हुस्ने सूरी की अ़क्कासी करते हैं।

﴾6﴿......मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी व ए'राब :

इस बात का एहतिमाम किया गया है कि तर्जमे में जहां कहीं अ़रबी इ़बारात या मुश्किल अल्फ़ाज़ आए हैं उन पर ए'राब भी लगाया गया है और हिलालैन "(.....)" में मुरादी मआ़नी भी लिख दिये गए हैं ताकि पढ़ने वालों को आसानी रहे।

﴾7﴿......आयाते मुबारका की पेस्टिंग :

येह एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि कम्प्यूटर (COMPUTER) ने इन्सानी तरक़्क़ी में बड़ा अहम किरदार अदा किया है। इसी कम्प्यूटर की ब दौलत अब किताबों की हाथ से किताबत के कठिन, जां सोज़ और वक़्त त़लब मर्ह़ले से नजात मिल गई और अब किताबों को इनपेज (INPAGE) या माइक्रो सॉफ़्ट ऑफ़िस वर्ड (MICROSOFT OFFICE WORD) से कम्पोज़ कर लिया जाता है मगर इस का एक नुक़्सान (SIDE EFFECT) येह हुवा कि किताबत की ग़लत़ियां उर्दू कुतुब का मुक़द्दर बन कर रह गईं जो कि हाथ से किताबत के मुक़ाबले में ज़ियादा होती हैं क्यूंकि येह तजरिबे से साबित है कि हाथ से किताबत में ग़लत़ियां बहुत कम होती हैं। मस्अला सिर्फ़ आ़म जुम्लों का नहीं बल्कि अ़क़ाइद और फ़िक़्ही मसाइल का है कि इन में "नाजाइज़" का "जाइज़" और "जाइज़" से "नाजाइज़" हो जाता है। इसी त़रह़ क़ुरआनी आयाते मुबारका का मस्अला था कि कम्पोज़िंग की सूरत में इस में भी कहीं कोई ह़र्फ़ रह जाता और कहीं कोई ह़रकत (या'नी ज़बर, ज़ेर वग़ैरा) छूट जाती है। हमारी ख़ुश क़िस्मती कि कुछ अ़र्से क़ब्ल दा'वते इस्लामी को एक दर्दमन्द इस्लामी भाई ने तीन लाख रूपे की मालिय्यत का Q.P.S (क़ुरआन पब्लिशिंग सॉफ़्ट वेर) और इस की डीवाइस (DEVICE) ख़रीद कर हदिय्या (DONATE) किया जिस की मदद से क़ुरआने करीम का मुसव्वदा तय्यार किया गया। **क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دامت بركاتهم العاليه की ख़्वाहिश थी कि अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब में भी इस सॉफ़्टवेर से आयात पेस्ट की जाएं। चुनान्चे, इ़ल्मिय्या में मौजूद कम्प्यूटर के

www.dawateislami.net

माहिर एक मदनी आ़लिम مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने इस सोफ़्टवेर से मुख़्तलिफ़ साइज़ की P.D.F फ़ाइल्ज़ बना लीं और अब उस की मदद से "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की कुतुब में आयाते मुबारका पेस्ट (PASTE) की जाती हैं। क्यूंकि क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की ख़्वाहिश के एह़तिराम में (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या) की मजलिस ने येह उसूल बना लिया है कि आयाते क़ुरआनिय्या की कम्पोज़िंग के बजाए हर आयते त़य्यिबा को पेस्ट किया जाएगा जिस के बिग़ैर वोह किताब ना मुकम्मल तसव्वुर की जाएगी। पेशे नज़र किताब में भी तक़रीबन तमाम आयाते मुबारका पेस्ट की गई हैं।

﴾8﴿......ह़वाशी अज़ इ़ल्मिय्या :

मुतअ़द्दिद मक़ामात पर तौज़ीह़, तत़बीक़, तशरीह़ और तस्हील की ग़रज़ से "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की त़रफ़ से ह़वाशी दिये गए हैं।

﴾9﴿......अ़लामाते तरक़ीम :

तह़रीर के मे'यार, ज़ाहिरी हुस्न और इस की तफ़्हीम में आसानी के लिये तक़रीबन हर ज़बान में कुछ न कुछ अ़लामात ज़रूर इस्ति'माल होती हैं ताकि बयान कर्दा मआ़नी व मफ़ाहीम समझने में दुश्वारी न हो। इसी त़रह़ उर्दू जो एक आ़लमगीर ज़बान है इस की अ़लामात भी अहले ज़बान ने मुक़र्रर कीं जिन्हें "अ़लामाते तरक़ीम" या "रुमूज़े औक़ाफ़" कहा जाता है जैसे कोमा (,) और फ़ुल स्टोप (।) वग़ैरा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की तक़रीबन तमाम कुतुब में ह़त्तल मक़्दूर इस का एहतिमाम किया जाता है। "حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء" के इस तर्जमे बनाम "**अल्लाह वालों की बातें**" में भी इस का इल्तिज़ाम किया गया है।

﴾10﴿.....तख़्रीज का एह़तिमाम :

तख़्रीज का मत़लब येह होता है कि अह़ादीस, अक़्वाल या ह़िकायात को उन कुतुब की त़रफ़ मन्सूब किया जाए जिन में वोह इब्तिदाअन बयान हुई हों। जिस से मा'लूम होता है कि उस ह़दीस, क़ौल या ह़िकायत को किन अइम्मए फ़न ने अपनी किताबों में किन मक़ामात पर बयान किया है। इ़ल्मिय्या की कुतुब में ह़त्तल मक़्दूर कोशिश की जाती है कि रिवायात को उन के अस्ल माख़ज़ से तलाश कर के उस का ह़वाला दर्ज किया जाए और जब मक़्दूर भर कोशिश के बा वुजूद अस्ल माख़ज़ से न मिले तो दीगर मुस्तनद व मो'तबर कुतुब से ह़वाला लिखा जाता है। चुनान्चे, ज़ेरे नज़र किताब में भी अह़ादीसे मुबारका, अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन के ह़वाला जात, किताब, बाब, फ़स्ल, जिल्द और सफ़ह़ा नम्बर की क़ैद के साथ दर्ज किये गए हैं।

www.dawateislami.net

(صحیح البخاری، کتاب العلم،باب من یرداللّٰہ بہ خیرایفقھہ فی الدین ،الحدیث:۷۱،ج۱،ص۴۲ (मसलन :

और हर किताब का मत्बूआ़ ह़वाले में दर्ज करने के बजाए आख़िर में माख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त, मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों और उन के सिने वफ़ात के साथ बयान कर दिया गया है। नीज़ आख़िर में "**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल की फ़ेहरिस्त भी दी गई है।

﴾11﴿......फ़ेहरिस्ते किताब :

किसी भी किताब की अहम्मिय्यत और येह जानने के लिये कि इस में क्या बयान हुवा है, फ़ेहरिस्त बुन्यादी ह़ैसिय्यत रखती है। और इस की मदद से मुत़ालआ़ और तह़क़ीक़ी काम करने वाले अपने मत़्लूब तक जल्द रसाई ह़ासिल कर लेते हैं। इस चीज़ का ख़याल रखते हुवे कमो बेश इ़ल्मिय्या की तमाम कुतुब में फ़ेहरिस्त का एहतिमाम होता है। लिहाज़ा किताब में दिये गए उ़नवानात व मौज़ूआ़त की मुफ़स्सल फ़ेहरिस्त शुरूअ़ में बना दी गई है।

﴾12﴿......मुबल्लिग़ीन के लिये फ़ेहरिस्त :

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का हुक्म कुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका में ब कसरत वारिद है और बयानात इस का एक अहम ज़रीआ़ हैं। उ़लमाए किराम, वाइ़ज़ीन व ख़ुत़बा और मुबल्लिग़ीन इस्लामी भाई ब कसरत इस ज़रीए़ से नेकी की दा'वत देने की सआ़दत पाते हैं। इस बात के पेशे नज़र एक फ़ेहरिस्त मज़ीद बनाई गई है जिस की मदद से इस्लाही़ मौज़ूआ़त के लिये बा आसानी मवाद लिया जा सकता है और मौज़ूअ़ से मुनासबत रखने वाली अह़ादीसे त़य्यिबा, अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन और वाक़िआ़त को कम से कम वक़्त में ह़ासिल किया जा सकता है।

﴾13﴿......अस्मा की फ़ेहरिस्त :

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के नामों की एक फ़ेहरिस्त अ़लाह़िदा से दी गई है।

जो इस अन्दाज़ में है कि फ़ुलां सह़ाबी का तज़्किरा सफ़्ह़ा नम्बर फ़ुलां से शुरूअ़ हो रहा है (मसलन : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सफ़्ह़ा नम्बर 269) ताकि अगर किसी ख़ास सह़ाबी का तज़्किरा पढ़ना हो तो उस तक आसानी से पहुंचा जा सके।

﴾14﴿......शो'बए तराजिमे कुतुब :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" की मुतअ़द्दिद मजालिस में से एक "मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" भी है जिस ने ख़ालिस

www.dawateislami.net

इल्मी, तह्क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के शो'बाजात में से एक "शो'बए तराजिमे कुतुब" भी है। जिस की ज़िम्मेदारी अपने अकाबिरीन उ़लमाए इस्लाम की अ़रबी में लिखी गई कुतुब और रसाइल के उर्दू ज़बान में तराजुम करना है। मह्ज़ लफ़्ज़ी तर्जमा नहीं बल्कि तह्क़ीक़ी व बा मुहा़वरा तर्जमा किया जाता है। शो'बए तराजिम में बित्तरतीब होने वाले कामों की तफ़्सील येह है : (1)......सलीस और बा मुहा़वरा तर्जमा (2).....ह़त्तल इमकान आसान व आ़म फ़ेह्म अल्फ़ाज़ का इस्ति'माल (3)..... तर्जमे की कम्पोज़िंग (4).....तर्जमे का तक़ाबुल (5).....नज़्रे सानी ब लिहाज़े उर्दू अदब (6).....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का एहतिमाम (7).....प्रुफ़ रीडिंग। कम अज़ कम दो बार (ख़ुसूसन आयाते क़ुरआनिय्या की तीन बार) (8).....ज़रूरी व मुफ़ीद ह़वाशी का एहतिमाम (9).....फ़ोरमेशन (बड़ी व ज़ैली सुर्ख़ियों और अ़रबी व उर्दू इबारात के लिये जुदा जुदा फ़ोन्ट का इस्ति'माल वग़ैरा) (10).....शरई तफ़्तीश (11).....बयान कर्दा तफ़्सीरी इबारात, अह़ादीसे मुबारका, अक़्वाल और वाक़िआ़त की तख़्रीज का ह़त्तल मक्दूर एहतिमाम (12).....तख़ारीज की कम्पोज़िंग, तफ़्तीश और पेस्टिंग वग़ैरा वग़ैरा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ शुक्र कि अब तक शो'बए तराजिमे कुतुब के मदनी उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मुसलसल काविशों और अन्थक कोशिशों से सलफ़े सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की बीसियों कुतुबो रसाइल ज़ेवरे तर्जमा से आरास्ता हो कर त़ब्अ़ हो चुके हैं। 6 कुतुबो रसाइल का तर्जमा त़बाअ़त के लिये प्रेस में मौजूद है और पेशे नज़र किताब इन के इलावा है। नीज़ 7 कुतुबो रसाइल पर काम जारी है और मुस्तक़्बिल के अहदाफ़ इन के इलावा हैं। فَالْحَمْدُلِلّٰهِ عَلٰی ذَالِک

﴾15﴿......शरई तफ़्तीश :

"शो'बए तराजिमे कुतुब" जब अपने ह़िस्से का काम मुकम्मल कर लेता है तो फिर "तर्जमे" को "मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल" से मुतअ़ल्लिक़ा दारुल इफ़्ता के मदनी उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के सिपुर्द कर देता है और वोह इस तर्जमे को अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल, और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक्दूर भर मुलाह़ज़ा फ़रमाते हैं। आप के हाथों में मौजूद "ह़िल्यतुल औलिया" का तर्जमा बनाम "अल्लाह वालों की बातें" (जिल्द अव्वल) भी इस मर्ह़ले से हो कर आप तक पहुंचा है।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن आज इस किताब की पहली जिल्द ज़ेवरे तर्जमा से आरास्ता हो कर आप के हाथों में है और मज़ीद काम जारी है। इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ेह्मी का दख़्ल है।

इ़ल्मे दीन और तक़्वा के ह़ुसूल और अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी पर इस्तिक़ामत पाने और **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** का मुक़द्दस जज़्बा उजागर करने के लिये ख़ुद भी इस किताब का मुत़ालआ़ कीजिये और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त **"दा'वते इस्लामी"** के इशाअ़ती इदारे **"मक्तबतुल मदीना"** से हदिय्यतन ह़ासिल कर के दूसरे इस्लामी भाइयों बिल ख़ुसूस मुफ़्तियाने किराम और उ़लमाए अहले सुन्नत دَامَتْ فُيُوْضُهُم की ख़िदमत में बत़ौरे तोह़्फ़ा पेश कीजिये।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो

(اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم)

शो'बए तराजिमे कुतुब
(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग
हम न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे
اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ख़ुत्बतुल किताब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُحْدِثِ الْاَكْوَانِ وَالْاَعْيَان ۞ وَ مُبْدِعِ الْاَرْكَانِ وَ الْاَزْمَان ۞ وَ مُنْشِيءِ الْاَلْبَابِ وَالْاَبْدَان ۞ مُنْتَخِبِ الْاَحْبَابِ وَ الْخُلَّان ۞ مُنَوِّرِ اَسْرَارِ الْاَبْرَارِ بِمَا اَوْدَعَهَا مِنَ الْبَرَاهِيْنِ وَالْعِرْفَان ۞ وَمُكَدِّرِ جِنَانِ الْاَشْرَارِ بِمَا حَرَمَهُمْ مِنَ الْبَصِيْرَةِ وَالْاِيْقَان ۞ اَلْمُعَبِّرِ عَنْ مَعْرِفَتِهِ الْمَنْطِقِ وَاللِّسَان ۞ وَالْمُتَرْجِمِ عَنْ بَرَاهِيْنِهِ الْاَكُفِّ وَالْبَنَان ۞ بِالْمُوَافِقِ لِلتَّنْزِيْلِ وَ الْفُرْقَان ۞ وَالْمُطَابِقِ لِلدَّلِيْلِ وَاللِّسَان ۞ فَاَلْزَمَهُمُ الْحُجَّةَ بِالْقَادَةِ مِنَ الْمُرْسَلِيْن ۞ وَاَبْهَجَ الْمِنْهَجَ بِالسَّادَةِ مِنَ الْمُحَقِّقِيْن ۞ اَلَّذِيْنَ جَعَلَهُمْ خُلَفَاءَ الْاَنْبِيَاء ۞ وَعُرَفَاءَ الْاَصْفِيَاءِ الْمُقَرَّبِيْنَ اِلَى الرُّتَبِ الرَّفِيْعَة ۞ وَالْمُنَزَّهِيْنَ عَنِ النَّسَبِ الْوَضِيْعَة ۞ وَالْمُؤَيَّدِيْنَ بِالْمَعْرِفَةِ وَ التَّحْقِيْق ۞ وَالْمُقَوَّمِيْنَ بِالْمُتَابَعَةِ وَالتَّصْدِيْق ۞ مَعْرِفَةً تَعْقُبُ لِمَعْرِفَتِهِمْ مُوَافَقَة ۞ وَتُوْجِبُ لِحُكْمِ نُفُوْسِهِمْ مُفَارَقَة ۞ وَتَلْزَمُ لِخِدْمَةٍ مَشْهُوْرَةٍ مُعَانَقَة ۞ وَتَحَقَّقَ لِشَرِيْعَةِ رَسُوْلِهِمْ مُرَافَقَة ۞ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى مَنْ عَنْهُ بَلَّغَ وَ شَرَعَ ۞ وَ بِاَمْرِهٖ قَامَ وَ صَدَعَ ۞ وَ لِمُتَّبِعِيْهِ غَرَسَ وَزَرَعَ ۞ مُحَمَّدِ الْمُصْطَفَى الْمُصْطَنَع ۞ وَعَلٰى اِخْوَانِهٖ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْن ۞ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ صَحَابَتِهِ الْمُنْتَخَبِيْنَ وَسَلَّم ۞

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तमाम मौजूदात और तमाम अश्या को तख़्लीक़ फ़रमाया। हर शै की हक़ीक़त और ज़माना व मुद्दत को ईजाद किया। जवाहिर व अब्दान पैदा फ़रमाए। बन्दों में से अपने दोस्तों और महबूबों को मुन्तख़ब फ़रमाया। नेक बन्दों के दिलों में पोशीदा राज़ों को दलाइल व मा'रिफ़त से रौशन फ़रमाया। बदकारों को बसीरत व यक़ीन से महरूम कर के उन के दिलों को परेशानी में मुब्तला फ़रमाया। अपनी मा'रिफ़त को कलाम से ज़ाहिर फ़रमाया। कुरआने हकीम से मुवाफ़िक़त, अ़रबी ज़बान व लुग़त से मुताबक़त रखने वाले दलाइल को हथेलियों और पोरों की त़रह वाज़ेह फ़रमाया। मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमा कर अपनी हुज्जत को तमाम फ़रमाया। अइम्मए मुहक़्क़िक़ीन को लोगों का राहनुमा बना कर राहे हक़ को ख़ुशनुमा बनाया। इन्हें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ख़लीफ़ा व नाइब और अपने मुख़्लिसीन का जा नशीन किया। घटया नसब से पाक साफ़ रखा, बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ अपने मुक़र्रबीन में शामिल फ़रमाया। तह़क़ीक़ व मा'रिफ़त से उन की ताईद फ़रमाई। इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से उन्हें राहे रास्त पर गामज़न फ़रमाया। उन्हें मा'रिफ़त दर मा'रिफ़त अ़त़ा फ़रमाई। जिस ने हर जान के लिये मुफ़ारक़त (या'नी मौत) का फ़ैसला फ़रमाया।

www.dawateislami.net

दीने इस्लाम की ख़िदमत के लिये बग़ल गीर होने को लाज़िम ठहराया। रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त का साथ देने का पाबन्द बनाया।

और दुरूदो सलाम हो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से दीन व शरीअ़त की तब्लीग़ फ़रमाई और हुक्मे इलाही से ह़क़ का ए'लान फ़रमाया। अपने इत़ाअ़त गुज़ार उम्मतियों के लिये ख़ैरो बरकत के दरख़्त लगाए और दीगर अम्बियाए किराम व मुर्सलीने उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल और जां निसार सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर भी रह़मत व सलामती हो।

(اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم)

किताब लिखने की वज्ह !

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे नेकी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन) मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब करते हुवे तेरी इस ख़्वाहिश को क़बूल कर लिया कि मैं एक ऐसी किताब लिखूं जो सूफ़ियाए किराम और अइम्मए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अह़वालो अक़्वाल पर मुश्तमिल हो और उन के त़बक़ात की तरतीब ज़ोह्दो तक़्वा के ए'तिबार से हो। पहले सह़ाबए किराम फिर ताबेई़न, फिर तबए़ ताबेई़न رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن फिर उन के बा'द आने वाली बरगुज़ीदा हस्तियों का ज़िक्रे ख़ैर हो। उन बर गुज़ीदा हस्तियों ने दलाइलो ह़क़ाइक़ को पहचाना, ह़ालात का मुक़ाबला किया और राहे ह़क़ पर गामज़न रहे और जन्नत के बाग़ात के ह़क़दार क़रार पाए, दुन्यवी झन्झटों और तअ़ल्लुक़ात से जुदा रहे, त़ा'न करने वालों, बुलन्दो बांग दा'वे करने वालों, काहिलों, हौसला शिकनों, सिर्फ़ लिबास व कलाम में मुशाबहत इख़्तियार करने और अ़क़ीदा व अ़मल में मुख़ालफ़त करने वालों से बेज़ार हुवे।

इस किताब **"ह़िल्यतुल औलिया"** की तालीफ़ का सबब येह है कि जब फ़ासिक़ो फ़ाजिर और बे दीन व काफ़िर अपने फ़ासिद ख़यालात को उन बरगुज़ीदा हस्तियों की त़रफ़ मन्सूब करने लगे अगर्चे वोह झूट व बात़िल के ज़रीए़ उन नेक लोगों की शान में कोई ऐ़ब नहीं लगा सकते और न ही उन के दरजात में कमी कर सकते हैं। लिहाज़ा उन झूटों और बद बात़िनों से इज़्हारे बराअत कर के सादिक़ीन और मुह़क़्क़िक़ीन की शान को बुलन्द किया जाए अगर्चे हम अहले बात़िल लोगों की ग़लत़ियों को पूरी त़रह़ ज़ाहिर नहीं कर सकते लेकिन अपनी कोशिश के मुत़ाबिक़ ह़िफ़ाज़त के लिये उन को ज़ाहिर करना और उन की इशाअ़त करना ज़रूरी है क्यूंकि हमारे अस्लाफ़ तसव्वुफ़ में नुमायां दरजा और शोहरत के ह़ामिल हैं। मेरे नाना ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन

www.dawateislami.net

यूसुफ़ बिना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ भी उन्ही बरगुज़ीदा हस्तियों में से एक हैं जिन्हों ने रिज़ाए इलाही के लिये हर चीज़ से जुदाई इख़्तियार की और बहुत से लोगों के अह्वाल की इस्लाह़ का सबब बने।

औलियाए किराम की दुश्मनी से बचो !

हम औलियाउल्लाह رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم की तन्क़ीस (या'नी शान घटाना) कैसे गवारा करें जब कि उन को ईज़ा देने वाले, **अल्लाह** عزوجل के साथ ए'लाने जंग करते हैं जैसा कि अह़ादीसे मुबारका में आया है। चुनान्चे,

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عزوجل इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने किसी वली को अज़िय्यत दी मैं उस से ए'लाने जंग करता हूं और बन्दा मेरा क़ुर्ब सब से ज़ियादा फ़राइज़ के ज़रीए ह़ासिल करता है और नवाफ़िल के ज़रीए मुसलसल क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से मह़ब्बत करने लगता हूं। जब मैं बन्दे को मह़बूब बना लेता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है। उस की आंख बन जाता हूं जिस से वोह देखता है। उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वोह पकड़ता है और उस के पाउं बन जाता हूं जिस से वोह चलता है। फिर वोह मुझ से सुवाल करे तो मैं उसे अ़ता करता हूं। मेरी पनाह चाहे तो पनाह देता हूं और मैं किसी काम के करने में कभी इस त़रह़ तरद्दुद नहीं करता जिस त़रह़ जाने मोमिन क़ब्ज़ करते वक़्त तरद्दुद करता हूं कि वोह मोत को ना पसन्द करता है और मैं उस के मकरूह समझने को बुरा जानता हूं।"[(1)]

﴾2﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عزوجل इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने मेरे किसी वली को अज़िय्यत दी उस ने अपने लिये मेरी जंग ह़लाल ठहरा ली।"[(2)]

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رضی اللہ تعالٰی عنہما) बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ تعالٰی عنہ को हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के रौज़ए अन्वर के पास बैठ कर रोते

---

❶.....صحيح البخاری ، كتاب الرقاق ،باب التواضع ،الحديث:٦٥٠٢،ص٥٤٥.

❷.....الزهدالكبيرللبيهقی،فصل فی قصرالامل والمبادرة بالعمل......الحديث:٦٩٩،ص٢٧٠.

www.dawateislami.net

हुवे देख कर सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताया कि मुझे उस बात ने रुलाया है जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है कि "थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी की उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया।"(1)

औलियाए किराम की सिफ़ात व अ़लामात

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "जान लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों की कुछ ज़ाहिरी सिफ़ात और मश्हूर अ़लामात हैं।"

अम्बिया व शुहदा भी रश्क करेंगे :

(1)......अ़क्लमन्द नेक लोग औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की दोस्ती के सबब उन के मुतीअ़ व फ़रमां बरदार होते हैं (क़ियामत के दिन) अम्बियाए किराम व शुहदाए उ़ज़्ज़ाम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी उन के मर्तबे पर रश्क करेंगे। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। चुनान्चे,

﴾4﴿.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि न वोह नबी हैं, न शहीद लेकिन क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से उन को मिलने वाले रुत्बे पर अम्बिया व शुहदा भी रश्क करेंगे।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "हमें उन के आ'माल के बारे में बताएं ताकि हम भी उन से मह़ब्बत करें !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह वोह लोग हैं जो बिग़ैर किसी रिश्तेदारी और लैन दैन के मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करेंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन के चेहरे रौशन होंगे और वोह नूर के मिम्बरों पर जल्वागर होंगे। जब लोग ख़ौफ़ में मुब्तला होंगे तो उन्हें ख़ौफ़ न होगा और जब लोग ग़मगीन होंगे तो उन्हें कोई ग़म न होगा फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

1......سنن ابن ماجه ،ابواب الفتن،باب من ترجی له السلامة من الفتن، الحديث:٣٩٨٩،ص٢٧١٦.

www.dawateislami.net

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﳚ (پ۱۱، یونس:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म ।" (1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाता है :

(2).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام अपने हम नशीनों को कामिल ज़िक्र और दोस्तों को नेकी की राह पर लगा देते हैं (और उन्हें देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाता है) । चुनान्चे,

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरे औलिया और महबूब बन्दे वोह हैं जो मेरा ज़िक्र करते हैं और मैं उन का चरचा करता हूं ।"(2)

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "औलियाउल्लाह कौन लोग हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "औलियाउल्लाह वोह हैं जिन्हें देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए ।"(3)

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें बेहतरीन लोगों के बारे में न बताऊं ?" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं !" तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(तुम में बेहतरीन लोग) वोह हैं जिन्हें देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए ।"(4)

फ़ितनों से आ़फ़िय्यत :

(3).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़ितनों से मह़फ़ूज़ और दुन्यावी मशक़्क़तों से बचे रहते हैं । चुनान्चे,

---

❶......سنن ابی داؤد، کتاب الاجارۃ، باب فی الرھن، الحدیث:۳۵۲۷، ص۱۴۸۵۔
التمھید لابن عبدالبر، عبداللّٰہ بن عبدالرحمٰن بن معمر، تحت الحدیث:۴۶۰، ج۷، ص۱۹۰.

❷......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عمرو بن الجموح، الحدیث:۱۵۵۴۹، ج۵، ص۲۹۳.

❸......موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب الاولیاء، الحدیث:۱۵، ج۲، ص۳۹۰.

❹......الادب المفرد للبخاری، باب النمام، الحدیث:۳۲۶، ص۱۰۱.

www.dawateislami.net

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ ख़ास बन्दे ऐसे हैं जिन्हें वोह अपनी रह़मत से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है। ज़िन्दगी में ह़िफ़्ज़ो अमान और बा'दे विसाल जन्नत अ़ता फ़रमाता है। येह वोह लोग हैं जिन पर फ़ितने रात की तारीकी की त़रह़ छा जाते हैं, लेकिन वोह इन से आ़फ़िय्यत में रहते हैं।"[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़सम पूरी फ़रमाता है :

(4)......औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام खाने और लिबास के मुआ़मले में ख़स्ता ह़ाल होते हैं मसाइबो ह़ादिसात में (अगर वोह किसी मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम पूरी फ़रमा देता है। चुनान्चे,

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत से ज़ईफ़, कमज़ोर, बोसीदा लिबास वाले ऐसे होते हैं कि अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम को पूरा फ़रमा देता है और बरा बिन मालिक (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) भी उन्ही में से हैं।"

रावी कहते हैं : इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुशरिकीन के ख़िलाफ़ एक लड़ाई में शरीक हुवे। उस जंग में मुशरिकीन ने मुसलमानों को बहुत ज़ियादा नुक़्सान पहुंचाया तो मुसलमानों ने ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : "ऐ बरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि अगर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाओ तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी क़सम को पूरा फ़रमाएगा पस आप (मुशरिकीन के ख़िलाफ़) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लीजिये !" ह़ज़रते सय्यिदुना बरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि हमें मुशरिकीन पर ग़लबा अ़ता फ़रमा।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह दुआ़ क़बूल हुई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को मुशरिकीन पर ग़लबा अ़ता फ़रमा दिया। फिर एक मरतबा "सोस" के पुल पर मुसलमानों का कुफ़्फ़ार से आमना सामना हुवा तो कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया, मुसलमानों ने कहा : "ऐ बरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाइये !"

[1]......موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الاولیاء، الحدیث:۲، ج۲، ص۳۸۵.

www.dawateislami.net

उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि हमें कुफ़्फ़ार पर ग़लबा अ़ता फ़रमा और मुझे अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मिला दे (या'नी शहादत अ़ता फ़रमा) ।'' हज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की येह दुआ़ भी क़बूल हुई और मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब हुई और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه शहीद हो गए ।(1)

﴾10﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बहुत से परागन्दा ह़ाल, बोसीदा लिबास वाले ऐसे होते हैं कि लोग उन से नज़रें फेर लेते हैं (लेकिन उन की शान येह होती है कि) अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम को ज़रूर पूरा फ़रमा देता है ।''(2)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के तसर्रुफ़ात :

(5).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के यक़ीन की त़ाक़त से चट्टानें शक़ हो जाती हैं और इन के इशारे से समन्दर फट जाते (या'नी रास्ता दे देते) हैं । चुनान्चे,

﴾11﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि उन्हों ने तक्लीफ़ में मुब्तला एक शख़्स के कान में कुछ पढ़ा तो वोह ठीक हो गया । सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम ने उस के कान में क्या पढ़ा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं ने येह आयाते मुबारका तिलावत की हैं :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ (پ۱۸،المؤمنون:۱۱۵تا۱۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के इ़ज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे जिस की उस के पास कोई सनद नहीं तो उस का ह़िसाब उस के रब के यहां है बेशक काफ़िरों का छुटकारा नहीं और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे और रह़्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह़्म करने वाला ।*

---

1 ......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب ذكر شهادة البراء بن مالك،الحديث:٥٣٢٥،ج٤،ص٣٤٠.

2 ......المستدرك،كتاب الرقاق،باب قلب الشيخ شاب......الخ،الحديث:٨٠٠٢،ج٥،ص٤٦٧.

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स इन आयात को यक़ीन के साथ पहाड़ पर पढ़े तो वोह भी अपनी जगह से हट जाए।"(1)

﴾12﴿.....हज़रते सय्यिदुना सह्म बिन मिन्जाब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : "हम ने हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन हज़रमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ जिहाद में शिर्कत की। जब हम चलते चलते "दारैन" के मक़ाम पर पहुंचे जहां हमारे और दुश्मन के दरमियान समन्दर हाइल था तो हज़रते सय्यिदुना अ़ला رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह दुआ़ मांगी :

يَاعَلِيْمُ يَاحَلِيْمُ يَا عَلِيُّ يَاعَظِيْمُ اِنَّاعَبِيْدُكَ وَفِيْ سَبِيْلِكَ نُقَاتِلُ عَدُوَّكَ،اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْ لَنَااِلَيْهِمْ سَبِيْلًافَتَقَحَّمَ بِنَاالْبَحْرَ

तर्जमा : ऐ इ़ल्म वाले, ऐ हि़ल्म वाले, ऐ बुलन्दो बरतर, ऐ अ़ज़मत वाले मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे बन्दे हैं और तेरी राह में तेरे दुश्मन से जिहाद करने निकले हैं। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये उन तक पहुंचने का रास्ता बना, हमें समन्दर के उस पार लगा।" हज़रते सय्यिदुना सह्म बिन मिन्जाब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "फिर हम घोड़ों पर सुवार समन्दर में कूद गए और पानी हमारे घोड़ों की ज़ीन तक भी न पहुंचा कि हम दुश्मनों तक पहुंच गए।"(2)

﴾13﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन हज़रमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه में तीन आ़दतें देखी हैं। उन में से हर आ़दत दूसरी से अ़जीब तर थी एक दफ़्आ़ हम किसी सफ़र पर रवाना हुवे और "बह़रैन" तक जा पहुंचे। फिर सफ़र जारी रखा यहां तक कि हम समन्दर के किनारे पहुंच गए। हज़रते सय्यिदुना अ़ला رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "चलते रहो। येह कह कर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अपनी सुवारी समेत समन्दर में उतर गए और चल दिये हम भी उन के पीछे समन्दर में उतरे और चलने लगे। और समन्दर का पानी हमारी सुवारियों के घुटनों तक भी न पहुंच सका। जब "किसरा" के एक गवर्नर इब्ने मुका'बर ने हमें देखा तो उस ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम उन का मुक़ाबला नहीं कर सकते फिर वोह अपनी कश्ती में बैठ कर फ़ारस (ईरान) चला गया।"

---

❶......المسندلابی یعلی الموصلی،مسندعبداللّٰہ بن مسعود،الحدیث:۵۰۲۳،ج۴،ص۳۴۵.

❷......موسوعۃ لابن ابی الدنیا،کتاب مجابی الدعوۃ،الرقم۴۰،ج۲،ص۳۳۳.

www.dawateislami.net

(6).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام हर ज़माने में दूसरे तमाम लोगों से (नेकियों के मुआ़मले में) आगे होते हैं इन्ही के इख़्लास के सबब बारिश बरस्ती और लोगों की मदद की जाती है। चुनान्चे,

﴾14﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर दौर में मेरी उम्मत के कुछ लोग साबिक़ीन (या'नी नेकियों में सब्क़त ले जाने वाले) होंगे।"(1)

﴾15﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "40 अबदाल और 500 बेहतरीन लोग मेरी उम्मत में हमेशा रहते हैं। न 500 में कमी आती है न 40 में। जब भी उन 40 में से किसी का विसाल होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ 500 में से एक को उस के मक़ामो मर्तबे पर फ़ाइज़ फ़रमा देता है और यूं 40 में कमी पूरी फ़रमा देता है।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें उन के आ'माल इरशाद फ़रमाइये !" फ़रमाया : "जो उन पर ज़ुल्म करे वोह उसे मुआ़फ़ कर देते हैं, जो उन से बुराई करे वोह उस से भलाई करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ उन्हें अ़त़ा फ़रमाया उस से लोगों की ग़म ख़्वारी करते हैं।"(2)

﴾16﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मख़्लूक़ में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के 30 बन्दे ऐसे हैं जिन के दिल ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के दिल पर हैं। 40 के दिल ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के दिल पर। 7 के दिल ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के दिल पर। 5 के दिल ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) के दिल पर और 3 अफ़राद के दिल ह़ज़रते मीकाईल (عَلَیْہِ السَّلَام) के दिल पर हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में से एक बन्दए ख़ास का दिल ह़ज़रते इस्राफ़ील (عَلَیْہِ السَّلَام) के दिल पर है। जब उस बन्दए ख़ास का इन्तिक़ाल होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन 3 में से एक को उस की जगह मुक़र्रर फ़रमा देता है और जब उन 3 में से किसी का इन्तिक़ाल होता है तो उस की जगह उन 5 में से एक को मुक़र्रर फ़रमा

1 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب الفاء، الحدیث: ٤٧٨٥، ج٢، ص١٢٥.

2 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب الخاء، الحدیث: ٢٦٩٣، ج١، ص٣٦٤.

www.dawateislami.net

देता है जब 5 में से किसी का विसाल होता है तो 7 में से किसी एक को उस की जगह मुक़र्रर कर देता है। जब उन 7 में से किसी का इन्तिक़ाल होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ 40 में से एक को उस की जगह दे देता है। जब उन 40 में से कोई इस दुन्या से रुख़्सत होता है तो 300 में से किसी के ज़रीए उस ख़ला को पुर फ़रमा देता है। जब उन 300 में से किसी का विसाल होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ़म लोगों में से किसी को उस की जगह मुक़र्रर फ़रमा देता है। पस उन्ही औलिया की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों को ज़िन्दगी और मौत अ़ता फ़रमाता, उन्ही के तुफ़ैल बारिश होती, फ़स्लें उगती और उन्हीं की बदौलत मुसीबतें दूर होती हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "उन के सबब लोगों को ज़िन्दगी और मौत कैसे मिलती है ?" फ़रमाया : इस लिये कि "वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कसरते उम्मत का सुवाल करते हैं तो इस में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है और ज़ालिमों के ख़िलाफ़ दुआ़ करते हैं तो उन को नेस्तो नाबूद कर दिया जाता है। बारिश त़लब करते हैं तो बारिश बरसा दी जाती है। नबातात के उगने का सुवाल करते हैं तो उन के लिये ज़मीन फ़स्लें उगा देती है। वोह दुआ़ करते हैं तो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मसाइब उन की दुआ़ की वज्ह से दूर कर दिये जाते हैं।"(1)

﴾17﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ हुज़ैफ़ा ! मेरी उम्मत के हर गुरौह में से चन्द लोग ऐसे होंगे जो परागन्दा ह़ाल और गर्द आलूद होंगे वोह मेरी इत्तिबाअ़ और मेरा ही इरादा करेंगे और अह़कामे ख़ुदावन्दी की पाबन्दी करेंगे वोह मुझ से हैं और मैं उन से हूं अगर्चे उन्हों ने मुझे न देखा हो।"(2)

﴾18﴿.....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मेरे मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करे या मुझे देखना चाहे तो वोह परागन्दा ह़ाल, लाग़र और मेह़नती शख़्स को देख ले जिस ने न तो ईंट पर ईंट रखी हो और न ही बांस पर बांस रखा (या'नी कोई इमारत न बनाई) हो जब उस के लिये जिहाद का अ़लम (झन्डा) बुलन्द किया जाए तो वोह उस की त़रफ़ चला जाए। आज तय्यारी का दिन है और कल सब्क़त ले जाने का दिन और इन्तिहा जन्नत है या जहन्नम।"(3)

1 ......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر،باب ان بالشام یکون الابدال الذین......الخ،ج۱،ص۳۰۳.
2 ......الفردوس بماثور الخطاب للدیلمی،باب الیاء،الحدیث:۸۵۳۷،ج۵،ص۳۹۵.
3 ......المعجم الاوسط ،الحدیث:۳۲۴۱،ج۲،ص۲۶۶.

www.dawateislami.net

दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी :

(7)......औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने दुन्या के बातिन की त़रफ़ देखा तो इस का इन्कार कर दिया और इस की ज़ाहिरी चमक दमक को देखा तो इसे अपनी नज़र से गिरा दिया। चुनान्चे,

﴾19﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़वारियों (या'नी साथियों) ने अ़र्ज़ की : "ऐ ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया कौन लोग हैं जिन पर न कुछ ख़ौफ़ होगा और न कुछ ग़म ?" आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जिन्हों ने दुन्या के बातिन को देखा जब और लोगों ने दुन्या के ज़ाहिर को देखा और दुन्या के अन्जाम को देखा जब और लोगों ने दुन्या की रंगीनियों को देखा। इन्हों ने उन चीज़ों को छोड़ दिया जिन के बारे में अन्देशा था कि वोह ऐबदार करेंगी और उन को भी तर्क कर दिया जिन के मुतअ़ल्लिक़ यक़ीन था कि वोह बहुत जल्द इन से छूट जाएंगी। इन्हें दुन्या की ज़ियादती की ख़्वाहिश नहीं होती। इन्हों ने दुन्या का ज़िक्र किया तो उस का फ़ानी होना बताया। दुन्या का ग़म मिला तो ख़ुश हुवे। दुन्या की जो चीज़ इन के सामने आई उसे ठुकरा दिया। दुन्यावी नाह़क़ रिफ़्अ़त व अ़ज़मत को ह़क़ीर जाना। इन के नज़दीक दुन्या पुरानी हो चुकी है अब वोह उस की तजदीद नहीं चाहते। इन के घर वीरान हो गए लेकिन इन्हों ने आबाद न किये। ख़्वाहिशों ने इन के सीनों में घुट घुट कर दम तोड़ दिया लेकिन इन्हों ने दोबारा उन्हें बेदार न किया बल्कि दुन्यावी ख़्वाहिशात को तह्स नह्स कर के इस के बदले अपनी आख़िरत की तय्यारी की। और दुन्या को बेच कर इस के इवज़ वोह चीज़ (या'नी आख़िरत) ख़रीदी जो इन के लिये हमेशा रहेगी। इन्हों ने ख़ुशी ख़ुशी दुन्या को ठुकरा दिया। इन्हों ने दुन्यादारों को दुन्या पर औंधे मुंह गिरे देखा जिस की वज्ह से इन पर मुसीबतें नाज़िल हुईं तो तज़्किरए मौत को जिला बख़्शी और तज़्किरए ह़यात को मात दी। वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते। उस के ज़िक्र को पसन्द करते और उस के नूर से रौशन हो कर दुन्या को रौशन करते हैं। उन्हें ह़ैरत अंगेज़ ख़ैरो भलाई अ़त़ा की गई। तअ़ज्जुब ख़ैज़ इल्म अ़त़ा किया गया। उन की बदौलत किताबुल्लाह की बक़ा है तो किताबुल्लाह के सबब उन की बक़ा। किताबुल्लाह ने उन का ज़िक्र किया तो उन्हों ने किताबुल्लाह को आ़म किया। उन्हीं से किताबुल्लाह को सीखा जाता है और वोह किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हैं। उन्हें जो अ़त़ा कर दिया जाए उसी पर इक्तिफ़ा करते और मज़ीद अ़त़िय्ये की

www.dawateislami.net

ख़्वाहिश नहीं करते। वोह किसी की अमान पर भरोसा नहीं करते बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखते हैं। वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और से नहीं डरते।"(1)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की निराली ज़ेबो ज़ीनत :

(8)......औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام धोका देने वाली आंख से दुन्या को देखते रहने से परहेज़ करते और अपने महबूब की बनाई हुई चीज़ों को निगाहे फ़िक्रो इब्रत से देखते हैं। चुनान्चे,

﴾20﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा व हज़रते सय्यिदुना हारून علی نبینا وعلیهما الصلوٰة والسلام को फ़िरऔन की तरफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : "जो लिबास मैं ने उसे पहनाया है वोह तुम्हें धोके में न डाल दे क्यूंकि उस की पेशानी मेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। वोह मेरी इजाज़त के बिग़ैर न बोल सकता है और न ही पलक झपक सकता है। और तुम्हें उस की दुन्यावी नाजाइज़ ज़ेबो ज़ीनत भी धोके में मुब्तला न कर दे इस लिये कि अगर मैं दुन्यावी ज़ीनत के साथ तुम्हें मुज़य्यन करना चाहता तो फ़िरऔन जान लेता कि वोह ऐसी ज़ीनत इख़्तियार करने से आजिज़ है और तुम्हारी येह हालत इस वज्ह से नहीं कि तुम्हारी मेरे नज़दीक कोई वक़्अत नहीं लेकिन मैं तुम्हें बुज़ुर्गी का लिबास पहनाना चाहता हूं जो तुम्हारा नसीब है ताकि दुन्या तुम्हारे आख़िरत के हिस्से में कुछ कमी न कर सके। मैं अपने औलिया को दुन्या से इस तरह बचाता हूं जिस तरह चरवाहा अपने तन्दुरुस्त ऊंटों को ख़ारिशी ऊंटों के बाड़े में जाने से बचाता है और उन्हें दुन्या की तरो ताज़गी से इसी तरह दूर रखता हूं जिस तरह चरवाहा अपने ऊंटों को हलाक कर देने वाले चरागाह से दूर रखता है और मैं इस के ज़रीए उन के मरातिब को मुनव्वर करने (बढ़ाने) और उन के दिलों को दुन्या से पाक रखने का इरादा रखता हूं। इन्ही निशानियों के ज़रीए वोह पहचाने जाते और इसी चीज़ के सबब फ़ख़्र करते हैं। ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) जान लो ! जिस ने मेरे किसी वली को डराया उस ने मेरे साथ ए'लाने जंग किया और बरोज़े क़ियामत मैं अपने औलिया का इन्तिक़ाम लेने वाला हूं।"(2)

﴾21﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुस्समद बिन मा'क़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़रमाते हुवे सुना : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते

---

(1)......موسوعة لابن ابی الدنیا ،کتاب الاولیاء،الحدیث:۱۸،ج۲،ص۳۹۱.

(2)......الزهد للامام احمد بن حنبل،اخبار موسیٰ،الحدیث:۳۴۱،ص۹۹.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : ''तुम्हें उस की दुन्यावी ज़ेबो ज़ीनत और लुत़्फ़ अन्दोज़ होने की चीज़ें तअ़ज्जुब में न डालें और न तुम उन चीज़ों की त़रफ़ तवज्जोह देना क्यूंकि वोह दुन्या दारों और सरमाया दारों की ज़ीनत है। अगर मैं दुन्यावी ज़ीनत के साथ तुम्हें मुज़य्यन करना चाहता तो फ़िरऔ़न उसे देख कर जान लेता कि इस क़िस्म की ज़ीनत उस के बस में नहीं तो मैं ऐसा कर सकता हूं लेकिन मैं तुम्हें दुन्या से बचाना और दुन्या को तुम से दूर रखना चाहता हूं। और मैं अपने वलियों के साथ ऐसा ही करता हूं और पहले भी मैं ने उन के लिये इसे पसन्द नहीं किया बल्कि उन्हें दुन्या की ने'मतों और आसाइशों से इस त़रह़ बचाता हूं जिस त़रह़ मेहरबान चरवाहा अपनी बकरियों को हलाक कर देने वाली चरागाह से बचाता है और मैं उन्हें दुन्या की रंगीनियों और ऐ़शो इ़शरत से इस त़रह़ दूर रखता हूं जिस त़रह़ मेहरबान चरवाहा अपने ऊंटों को ख़ारिश ज़दा ऊंटों से दूर रखता है और येह इस वज्ह से नहीं कि उन की मेरे नज़दीक कोई वक़्अ़त नहीं बल्कि इस वज्ह से करता हूं कि वोह मेरी करामत से पूरा पूरा ह़िस्सा वुसूल करें और इस में न दुन्या कोई कमी ला सके और न ही ख़्वाहिशात कोई कमी कर सके। और जान लो ! बन्दों के लिये मेरे नज़दीक तर्के दुन्या से बढ़ कर कोई ज़ीनत नहीं क्यूंकि येह (तर्के दुन्या) मुत्तक़ीन की ज़ीनत है और उन पर ऐसा लिबास होता है जिस के साथ उन का सुकून व ख़ुशूअ़ पहचाना जाता है। उन की अ़लामत उन के चेहरों में सजदों के निशान हैं। येही मेरे सच्चे दोस्त हैं। जब तुम उन से मिलो तो उन के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करो और दिल व ज़बान को उन के ताबेअ़ बना दो।

और जान लो ! जिस ने मेरे किसी दोस्त की इहानत की या उसे ख़ौफ़ज़दा किया उस ने मुझ से ए'लाने जंग किया, मेरे साथ दुश्मनी की, अपने आप को मेरे मुक़ाबिल पेश किया और मुझे लड़ाई की त़रफ़ बुलाया। मैं अपने दोस्तों की मदद करने में जल्दी करता हूं तो जिस ने मुझे जंग के लिये बुलाया क्या उस का ख़याल है कि वोह मेरे सामने ठहर सकेगा ? जिस ने मुझ से दुश्मनी की क्या वोह समझता है कि मुझे आ़जिज़ कर देगा ? जिस ने मुझ से ए'लाने जंग किया वोह समझता है कि मुझ से बढ़ जाएगा या बच जाएगा ? येह क्यूंकर मुमकिन होगा जब कि मैं अपने दोस्तों का दुन्या व आख़िरत में ख़ुद इन्तिक़ाम लेता हूं। उन की मदद किसी के सिपुर्द नहीं करता।''(1)

---

(1)......موسوعة لابن ابی الدنیا ، کتاب الاولیاء،الحدیث:۱۵۵،ج۲،ص۴۲۳۔
الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارموسیٰ،الحدیث:۳۴۲،ص۹۹۔تفصیلاً.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन ईसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत कर्दा हदीस में इतना ज़ाइद है कि "ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام)! जान लो ! बेशक मेरे औलिया वोह हैं जिन के दिल मेरे ख़ौफ़ से कांपते हैं और वोह ख़ौफ़ उन के लिबास में और जिस्मों पर इयां है। वोह ऐसी कोशिश करते हैं जिस के सबब वोह क़ियामत के दिन कामयाब हों। वोह लोग अपनी मौत को याद रखते और अपनी निशानियों से पहचाने जाते हैं पस जब तुम उन से मिलो तो उन के सामने आ़जिज़ी इख़्तियार करो।"

अब्दाल कौन हैं ?

﴾22﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुल मलिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल बारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی ने फ़रमाया : मैं ने हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से अ़र्ज़ की : "मुझे अब्दाल की सिफ़ात बताइये !" उन्हों ने फ़रमाया : "तुम ने मुझ से शदीद तारीकियों के बारे में पूछा है। लेकिन ऐ अ़ब्दुल बारी ! मैं तेरे सामने ज़रूर उन से पर्दा हटाऊंगा। (चुनान्चे, सुनो !) अब्दाल वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत व जलाल की मा'रिफ़त रखते, दिल से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम और उस का ज़िक्र करते हैं। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ पर उस की हुज्जतें हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी महब्बत के नूरे सातेअ़ (चमकते नूर) का लिबास उन्हें पहनाया। नीज़ उन के लिये हिदायत के अ़लम बुलन्द फ़रमाए। अपनी चाहत के लिये उन्हें बहादुरों के मक़ाम पर खड़ा किया और अपनी मुख़ालफ़त से बचने के लिये उन्हें सब्र अ़ता फ़रमाया। अपने मुराक़बे के साथ उन के जिस्मों को पाक किया। अच्छाई करने वालों के साथ उन्हें अच्छा किया। उन्हें अपनी महब्बत के बने हुवे हुल्ले पहनाए और उन के सरों पर अपनी मसर्रत के ताज सजाए फिर उन के दिलों में ग़ैब के ख़ज़ाने वदीअ़त फ़रमाए। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने के लिये हर दम बेताब हैं। उन के रंजो ग़म का महवर वोही है और उन की आंखें उसे ग़ैब से देखती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपने क़ुर्ब से अपनी ज़ात के मुशाहदे के दरवाज़े पर ठहराया। उन्हें अहले मा'रिफ़त के अतिब्बा के मन्सब पर फ़ाइज़ फ़रमाया।"

फिर फ़रमाया : "अगर मेरे ग़म में मुब्तला कोई बीमार तुम्हारे पास आए तो उस को दवा दो। मेरे फ़िराक़ का मरीज़ आए तो उस का इ़लाज करो। मुझ से डरने वाला आए तो उसे अम्न की उम्मीद दिलाओ। कोई मुझ से बे ख़ौफ़ आए तो उसे मेरी ज़ात से डराओ। कोई मेरे विसाल का ख़्वाहिश मन्द आए तो उसे मुबारक बाद दो। कोई मुझ से बिछड़ा हुवा आए तो उसे मेरी त़रफ़ लौटा दो। कोई मेरी राह में लड़ने से बुज़दिली दिखाने वाला आए तो उसे बहादुर व दिलेर बना दो।

www.dawateislami.net

कोई मेरे फ़ज़्लो करम से मायूस आए तो उसे मेरा वा'दा याद दिलाओ। कोई मेरे एह्सान का उम्मीदवार आए तो उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ। कोई मेरे साथ हुस्ने ज़न रखे तो उस का दिल बढ़ाओ। मुझ से महब्बत करने वाला आए तो उसे मेरी महब्बत पर मज़ीद उक्साओ। कोई मेरी ता'ज़ीम करने वाला आए तो उस की ता'ज़ीम करो। कोई मेरी राह का मुतलाशी आए तो उस की मेरी त़रफ़ रहनुमाई करो। कोई नेकी के बा'द बुराई करने वाला आए तो उसे इ़ताब करो। जो शख़्स मेरे लिये तुम से मुलाक़ात का ख़्वाहिश मन्द हो तो उस से मुलाक़ात करो। जो तुम से ग़ाइब हो उस की ख़बरगीरी करो। जो तुम से ज़ियादती करे उसे बरदाश्त करो। जो तुम्हारी ह़क़ तलफ़ी करे उसे मुआ़फ़ कर दो। जो ग़लती कर बैठे उसे नसीह़त करो। मेरे दोस्तों में से जो बीमार हो उस की इ़यादत करो। जो ग़मज़दा हो उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ और अगर कोई मज़लूम तुम से पनाह मांगे तो उसे पनाह अ़त़ा करो।

ऐ मेरे औलिया ! मैं तुम्हारे लिये ही किसी पर इ़ताब करता और तुम्हें ही मह़बूब रखता हूं। तुम से इत़ाअ़त त़लब करता और तुम्हारे लिये ही दूसरों को मुन्तख़ब करता हूं। तुम से अपनी (या'नी दीन की) ख़िदमत चाहता और तुम्हें अपने लिये ख़ास करता हूं क्यूंकि मैं सरकशों से ख़िदमत लेना पसन्द नहीं करता, न तकब्बुर करने वालों से मुलाक़ात को पसन्द करता हूं, न ही (ह़क़ व बात़िल को) ख़ल्त़ मल्त़ करने वालों से तअ़ल्लुक़ रखना चाहता हूं, न धोका देही करने वालों से कलाम करना, न ही ग़ुरूर करने वालों से क़ुर्ब रखना चाहता हूं, न बात़िल लोगों की हम नशीनी और न ही शर पसन्दों से तअ़ल्लुक़ रखना चाहता हूं।

ऐ मेरे औलिया ! मेरे पास तुम्हारे लिये बेहतरीन बदला है। मेरी अ़त़ा तुम्हारे लिये उ़म्दा तरीन अ़त़ा होगी। मेरा ख़र्च तुम्हारे लिये अफ़्ज़ल तरीन ख़र्च होगा। मेरा फ़ज़्ल तुम पर सब से ज़ियादा होगा। मेरा मुआ़मला तुम्हारे लिये पूरा पूरा होगा और मेरा मुत़ालबा तुम्हारे लिये शदीद तरीन होगा। मैं दिलों का इन्तिख़ाब करने वाला, तमाम ग़ैबों को जानने वाला, तमाम ह़रकात को देखने वाला, तमाम लम्ह़ात को मुलाह़ज़ा फ़रमाने वाला, दिलों को देखने वाला और मैदाने फ़िक्र से बा ख़बर हूं पस तुम मेरी त़रफ़ बुलाने वाले बन जाओ ! मेरे सिवा कोई भी बादशाह तुम्हारे लिये घबराहट का बाइ़स न बने। लिहाज़ा जो तुम से दुश्मनी रखेगा मैं उस से अ़दावत रखूंगा। जो तुम से दोस्ती रखेगा मैं उसे दोस्त रखूंगा। जो तुम्हें तक्लीफ़ देगा मैं उसे हलाक कर दूंगा। जो तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं उसे उस का सिला अ़त़ा करूंगा और जो तुम्हें छोड़ देगा मैं उसे मोह़ताज कर दूंगा।"(1)

---

❶......تاریخ بغداد، الرقم٤٤٩٧ ذوالنون بن ابراهیم، ج٨، ص٣٩١، مختصرًا بتغیر.

www.dawateislami.net

अहकामाते इलाही की पाबन्दी :

(9).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात और उस की महब्बत में मुस्तग्रक़ रहते और उस के हुक्म की पाबन्दी करते हैं।

﴾23﴿.....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मख़्लूक़ में तेरे नज़दीक सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला कौन है ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "वोह शख़्स जो मेरी रिज़ा हासिल करने के लिये इस त़रह़ तेज़ी करता है जिस त़रह़ गिध अपनी ख़्वाहिश की त़रफ़ तेज़ी करता है। जो मेरे नेक बन्दों से इस त़रह़ महब्बत करता है जिस त़रह़ बच्चा लोगों से महब्बत करता है और वोह जो मेरे अहकामात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पर इस त़रह़ ग़ज़बनाक होता है जिस त़रह़ चीता अपने लिये ग़ज़बनाक होता है कि जब चीता ग़ुस्से में आता है तो लोगों के क़लील व कसीर होने की परवाह नहीं करता।"(1)

﴾24﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में बा'ज़ उस के बर्गुज़ीदा और नेक बन्दे हैं। पूछा गया : "ऐ अबू फ़ैज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! उन की अ़लामत क्या है ?" फ़रमाया : "जब बन्दा राह़त को तर्क कर के ताअ़त व इ़बादत में भरपूर कोशिश करे और क़द्रो मन्ज़िलत के न होने को पसन्द करे। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह अश्आ़र पढ़े :

مَنَعَ الْقُرْاٰنُ بِوَعْدِهٖ وَوَعِيْدِهٖ ۔ مَقِيْلَ الْعُيُوْنِ بِلَيْلِهَا اَنْ تَهْجَعَا

فَهِمُوْا عَنِ الْمَلِكِ الْكَرِيْمِ كَلَامَهٗ ۔ فَهْمًا تَذِلُّ لَهُ الرِّقَابُ وَتَخْضَعَا

तर्जमा : (1).....क़ुरआन ने अपने वा'दा व वई़द के साथ हर बुराई से रोक दिया। रात को आंखों की नींद ग़ाइब हो गई।

(2).....उन्हों ने करीम बादशाह के कलाम को इस त़रह़ समझा कि इस के आगे उन की गर्दनें झुक गईं।

हाज़िरीन में से किसी ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू फ़ैज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! येह कौन लोग हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुझ पर अफ़्सोस है ! येह

---

(1)......المعجم الاوسط، الحدیث:١٨٣٩، ج١، ص٤٩٨.

www.dawateislami.net

वोह लोग हैं जिन्हों ने सुवारियों को पेशानी का तक्या और मिट्टी को पहलूओं का बिछौना बना लिया। कुरआने पाक इन के गोश्त व ख़ून में ऐसा बस गया कि इन्हें बीवियों से दूर कर के सारी रात सफ़र में रखा। इन्हों ने कुरआने पाक को अपने दिलों पर रखा तो वोह नर्म हो गए। सीनों से लगाया तो वोह कुशादा हो गए। इस की बरकत से इन की परेशानियों और ग़मों के बादल छट गए। इन्हों ने कुरआने पाक को अपनी तारीकियों के लिये चराग़, और (कुरआने पाक की तिलावत को इस त़रह़ अपने लिये लाज़िम कर लिया जिस त़रह़) सोने के लिये बिछौना लाज़िम है। अपने रास्ते के लिये रहनुमा और अपनी हुज्जत के लिये कामयाबी बना लिया। लोग ख़ुशियां मनाते हैं जब कि येह ग़मगीन रहा करते हैं। लोग सो रहे होते हैं लेकिन येह बेदार रहते हैं। लोग खाते पीते हैं और येह रोज़े रखते हैं। लोग (क़ब्रो ह़श्र से ग़ाफ़िल होते और) बे ख़ौफ़ रहते हैं जब कि येह (क़ब्रो ह़श्र के मुआ़मलात से) ख़ौफ़ज़दा रहते हैं। येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते और उस की ना फ़रमानियों से बचते, घबराए रहते और नेक आ'माल में ख़ूब मशक़्क़त उठाते हैं। अ़मल के फ़ौत हो जाने के डर से इसे जल्द ही अदा कर लेते और हर दम मौत के लिये तय्यार रहते हैं। इन के नज़्दीक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दर्दनाक अ़ज़ाब के ख़ौफ़ और वा'दा किये गए अ़ज़ीमुश्शान सवाब की वज्ह से मौत कोई छोटा मुआ़मला नहीं है। येह कुरआने ह़कीम के रास्तों पर गामज़न और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये कुरबानी पेश करने के मुआ़मले में मुख़्लिस हैं। येह रह़मान عَزَّوَجَلَّ के नूर से मुनव्वर और इस बात के मुन्तज़िर हैं कि कुरआने करीम इन के साथ किये हुवे वा'दों और अ़ह्दों को पूरा करे, अपनी सआ़दत के मक़ाम में इन्हें ठहराए और अपनी वई़दों से इन्हें अम्न बख़्शे। चुनान्चे, येह लोग कुरआने पाक के ज़रीए अपनी ख़्वाहिशात और ख़ूब सूरत हूरों को पा कर हलाकतों और बुरे अन्जाम से मामून हो गए क्यूंकि इन्हों ने दुन्या की रौनक़ों को ग़ज़बनाक निगाहों से तर्क कर के रिज़ामन्दी वाली आंखों से आख़िरत के सवाब की त़रफ़ देखा। नीज़ फ़ना होने वाली (दुन्या) के बदले हमेशा रहने वाली (आख़िरत) को ख़रीद लिया। इन्हों ने कितनी अच्छी तिजारत की, कि दोनों जहां में नफ़्अ़ पाया और दुन्या व आख़िरत की भलाइयां जम्अ़ कीं। कामिल त़ौर से फ़ज़ीलतों को पाने में कामयाब हुवे। कुछ दिन सब्र कर के अपनी मन्ज़िलों तक पहुंच गए। अ़ज़ाब वाले दिन के ख़ौफ़ से कम मालो ज़र पर ही क़नाअ़त कर के ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ार दिये। मोहलत के दिनों में भलाई की त़रफ़ जल्दी की। ह़वादिसे ज़माना के ख़ौफ़ से नेकियों में तेज़ी दिखाई। अपनी ज़िन्दगी खेल कूद में गंवाने के बजाए बाक़ी रहने वाली नेकियों के हुसूल के लिये मशक़्क़तें उठाईं।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इबादत की थकावट ने उन की कुव्वत कमज़ोर कर दी और मशक़्क़त ने उन की रंगत बदल डाली। उन्हों ने भड़कने वाली (जहन्नम की) आग को याद रखा, नेकियों की त़रफ़ जल्दी की और लह्वो लइब से दूर रहे। शक और बद कलामी से बरी हो गए वोह फ़सीहुल्लिसान गूंगे और देखने वाले अन्धे हैं उन की सिफ़ात बयान करने से ज़बान क़ासिर है। उन की बदौलत मुसीबतें टलतीं और बरकतें उतरती हैं। वोह ज़बान व ज़ौक़ में सब से मीठे और अ़हदो पैमान को सब से ज़ियादा पूरा करने वाले होते हैं। मख़्लूक़ के लिये चराग़, शहरों के मनारे, तारीकियों में रौशनी का मम्बअ़, रह़मत की कानें, ह़िक्मत के चश्मे और उम्मत के सुतून हैं, बिस्तरों से उन के पहलू जुदा रहते हैं। वोह लोगों की मा'ज़िरत को सब से ज़ियादा क़बूल करने वाले, सब से ज़ियादा मुआ़फ़ करने वाले और सब से ज़ियादा सख़ावत करने वाले होते हैं। पस उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सवाब की त़रफ़ मुश्ताक़ दिलों से टिकटिकी बांधी। आंखों और मुवाफ़क़त करने वाले आ'माल से देखा। उन की सुवारियां दुन्या से दूर हो गईं। उन्हों ने दुन्या से अपनी उम्मीदों को ख़त्म कर लिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ ने उन के मालों में उन की कोई रग़बत व ख़्वाहिश न छोड़ी लिहाज़ा तू देखेगा कि उन्हें न तो माल जम्अ़ करने की ख़्वाहिश होती है और न ही ऊन वग़ैरा के रेशमी लिबास की तमन्ना करते हैं। न तो उ़म्दा सुवारियों के दिलदादह होते हैं और न ही मह़ल्लात को पुख़्ता करने का शौक़ रखते हैं। जी हां ! उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से देखा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ इल्हाम फ़रमाया। उन की मा'रिफ़त ने उन्हें सब्र पर आमादा किया। उन्हों ने अपने जिस्मों को मह़रमात के इर्तिकाब और अपने हाथों को अन्वाओ़ अक़्साम के खानों से बाज़ रखा। अपने आप को गुनाहों से बचा कर सीधे रास्ते पर गामज़न और हिदायत के लिये आमादा रहे और दुन्या वालों के साथ उन की आख़िरत बेहतर बनाने के लिये शरीक हुवे। मुसीबतों पर सब्र किया। उम्मीदों का गला घोंटा। मौत और उस की सख़्तियों और तक्लीफ़ों से डर गए। क़ब्र और उस की तंगी, मुन्कर नकीर और उन की डांट डपट, सुवाल व जवाब से ख़ौफ़ज़दा रहे और अपने मालिक रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े होने से डरते रहे।"

रुश्दो हिदायत के चराग़ :

(10).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام तारीकियों के लिये चराग़, रुश्दो हिदायत के चराग़, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास राज़दार और हर तसन्नोअ़ व बनावट से पाक मुख़्लिस बन्दे हैं। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

﴾25﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُما से रिवायत है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे और उन्हें रोता हुवा देख कर वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई तो उन्हों ने अर्ज़ की : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब तरीन बन्दे वोह हैं जो मुत्तक़ी व परहेज़गार और ऐसे गुमनाम हैं कि जब लोगों में मौजूद न हों तो उन्हें तलाश न किया जाए और अगर मौजूद हों तो पहचाना न जाए। येही लोग हिदायत के इमाम और इल्म के चराग़ हैं।"(1)

﴾26﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मैं एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर था आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इख़्लास वालों के लिये बिशारत हो, येही लोग चराग़े हिदायत और इन्ही की बदौलत तारीक फ़ितने छट जाते हैं।"(2)

सायए रहमत की त़रफ़ सब्क़त करने वाले :

(11).....औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रस्सी को थामने वाले, उस के फ़ज़्ल के मुतलाशी और अद्ल के साथ फ़ैसला करने वाले हैं। चुनान्चे,

﴾27﴿.....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सायए रहमत की त़रफ़ सब्क़त ले जाने वाले कौन लोग हैं ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अर्ज़ की : "अल्लाह और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह लोग जिन्हें ह़क़ बात कही जाए तो क़बूल करते, जब उन से सुवाल किया जाए तो ख़र्च करते और लोगों के लिये वोही फ़ैसला करते हैं जो अपने लिये पसन्द करते हैं।"(3)

---

1 ......المعجم الاوسط،الحديث: ٤٩٥٠،ج٣،ص٤٠٣.

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى اخلاص العمل لله وترك الرياء،الحديث:٦٨٦١،ج٥،ص٣٤٣۔
فردوس الاخبار للديلمى، باب الطاء ، الحديث:٣٧٤٩،ج٢،ص٤٧.

3 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندالسيدة عائشة،الحديث:٢٤٤٣٣،ج٩،ص٣٣٦.

www.dawateislami.net

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ख़ल्वत व जल्वत :

(12).....औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام जल्वत (या'नी महाफ़िल) में खुश व खुर्रम और ख़ल्वत में अफ़्सुर्दा रहते हैं, इश्तियाक़े मुलाक़ात उन की रूह की खुशी बढ़ाता और हिज्रो फ़िराक़ का डर उन्हें अफ़्सुर्दा कर देता है। चुनान्चे,

﴾28﴿.....हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "मुझे बुलन्द दरजात में मलाइकए मुक़र्रबीन ने बताया कि मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वोह हैं जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की वुस्अ़ते रह़मत पर ए'लानिय्या खुशी का इज़्हार करते और रब عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब की शिद्दत के ख़ौफ़ से पोशीदा तौर पर रोते हैं। वोह उस के पाकीज़ा घरों में सुब्हो शाम अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते अपनी ज़बानों के साथ उम्मीद व डर की हालत में उसे पुकारते हैं। अपने हाथों को बुलन्द व पस्त कर के उस से सुवाल करते हैं। अपने दिलों के साथ अव्वल व आख़िर उसी के मुश्ताक़ रहते हैं। उन का बोझ लोगों के नज़्दीक तो हल्का लेकिन उन के अपने नज़्दीक भारी है। वोह ज़मीन पर नंगे पाउं च्यूंटी की त़रह़ आ़जिज़ी व इन्किसारी से पुर सुकून अन्दाज़ से चलते हैं। वसीले के ज़रीए क़ुर्बे इलाही पाते, बोसीदा कपड़े पहनते, ह़क़ की इत्तिबाअ़ करते, क़ुरआने मजीद की तिलावत करते और क़ुरबानियां पेश करते हैं। उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से गवाह व निगहबान फ़िरिश्ते मुक़र्रर होते और उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें ज़ाहिर होती हैं वोह लोग नूरे फ़िरासत से बन्दों को जान लेते और दुन्या में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं। उन के जिस्म ज़मीन पर तो आंखें आस्मान में, पाउं ज़मीन पर तो दिल आस्मान में, नफ़्स ज़मीन पर तो दिल अ़र्श के पास होते हैं। उन की रूहें दुन्या में होती हैं जब कि अ़क़्लें फ़िक्रे आख़िरत में मसरूफ़ रहती हैं। चुनान्चे,

उन के लिये वोही कुछ है जिस की वोह उम्मीद व ख़्वाहिश करते हैं। उन की क़ब्रें दुन्या में लेकिन उन का मक़ाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है। फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَ خَافَ وَعِیْدِ ﴿۱۴﴾

(پ۱۳،ابراھیم:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह उस के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे।*(1)

---

1 ......المستدرك، كتاب الهجرة، باب وصف اهل الصفة، الحديث: ٤٣٥٠، ج٣، ص ٥٥٤.

www.dawateislami.net

हुक़ूक़े इलाही की अदाएगी में जल्दी :

(13) औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام न तो हुक़ूक़ की अदाएगी में ताख़ीर करते हैं और न ही त़ाआ़त बजा लाने में कोताही करते हैं। चुनान्चे,

﴾29﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दे पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तीन हुक़ूक़ हैं। **पहला ह़क़** येह है कि जब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कोई ह़क़ अपने ऊपर आता देखे तो उस की अदाएगी कल पर न छोड़े क्यूंकि उसे ख़बर नहीं कि वोह कल तक ज़िन्दा रहेगा या नहीं। **दूसरा ह़क़** येह है कि बन्दा ए'लानिय्या किये जाने वाले नेक अ़मल को उन लोगों के सामने करे जो उसे पोशीदा त़ौर पर (या'नी लोगों से छुप कर) करते हैं और **तीसरा ह़क़** येह है कि अपने अ़मल के साथ साथ अपनी नेक उम्मीदों के हुसूल की कोशिश जारी रखे।"

इस के बा'द हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से तीन का इशारा करते हुवे फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली ऐसा होता है।"(1)

﴾30﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ ख़ास बन्दे ऐसे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत के बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा और वोह लोगों में सब से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द हैं। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह लोग सब से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द कैसे हैं ? फ़रमाया : "वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब्क़त ले जाने की कोशिश करते और उन आ'माल को बजा लाने में जल्दी करते हैं जो रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का बाइस हैं वोह दुन्याए फ़ानी, उस की सरदारी और (दुन्यावी) ने'मतों से बे रग़बती करते हैं। दुन्या उन के नज़्दीक ज़लीलो ह़क़ीर है। पस वोह लोग थोड़ी मशक़्क़त बरदाश्त कर के त़वील आराम ह़ासिल करते हैं।"(2)

---

1 ......المعجم الاوسط، الحدیث:٦١٣٧، ج٤، ص٣٢٩.

2 ......مسندالحارث، کتاب الادب، باب ماجاء فی العقل، الحدیث:٨٤٤، ج٢، ص٨١٤.

www.dawateislami.net

तसव्वुफ़ की तह्क़ीक़

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : "हम ने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के चन्द मनाक़िब और अस्फ़िया के कुछ मरातिब बयान कर दिये हैं। और जहां तक तसव्वुफ़ का तअ़ल्लुक़ है तो मोहक़्क़िक़ीन व मुदक़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं कि "तसव्वुफ़ "صَفَاء" और "وَفَاء" से मुश्तक़ है और लुग़वी ह़क़ाइक़ के ए'तिबार से चार चीज़ों में से किसी एक से मुश्तक़ है (1) तसव्वुफ़ صُوْفَانَة से मुश्तक़ है जिस के मा'ना सब्ज़ी और गर्दो गुबार के हैं या (2) صُوْفَة से मुश्तक़ है। पहले ज़माने में صوفة नामी एक क़बीला था जो हाजियों की देख भाल करता और का'बतुल्लाह زَادَهَا اللّٰهُ تَعْظِيْمًا وَّ تَكْرِيْمًا की ख़िदमात सर अन्जाम देता था। या (3) येह صُوْفَةُ الْقَفَا से मुश्तक़ है। जिस का मा'ना गुद्दी पर उगने वाले बाल हैं। या फिर (4) तसव्वुफ़ صُوْف से बना है जिस के मा'ना भेड़ की ऊन के हैं।

तसव्वुफ़ के पहले मा'ना की तह्क़ीक़ :

अगर तसव्वुफ़ को "صُوْفَانَة" से माख़ूज़ माना जाए जिस के मा'ना सब्ज़ी के हैं तो इस का मत़लब येह होगा कि लोगों का इस चीज़ (या'नी सब्ज़ी वग़ैरा) पर इक्तिफ़ा करना कि जिसे एक ही ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया है और जिस में दूसरी मख़्लूक़ को तक्लीफ़ दिये बिग़ैर अपनी ज़रूरत पूरी कर ली जाती है। पस उन्हों ने उस सब्ज़ी पर जो लोगों के खाने के लिये पैदा की गई है इस त़रह़ क़नाअ़त की जिस त़रह़ पाकीज़ा व पारसा लोग क़नाअ़त करते हैं और जिस त़रह़ तमाम मुहाजिरीन ने अपने इब्तिदाई अह़वाल में क़नाअ़त इख़्तियार की। जैसा कि ह़दीसे पाक में है। चुनान्चे,

﴾31﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी हाज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़रमाते हुवे सुना : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अहले अ़रब में सब से पहले जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में तीर चलाया वोह मैं हूं और बिलाशुबा हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद में शिर्कत किया करते थे और ह़ालत येह होती थी कि हमारे पास अंगूर और बेरी के पत्तों के सिवा खाने के लिये कुछ नहीं होता था यहां तक कि पत्ते खा खा कर हमारी बाछें ज़ख़्मी हो जातीं और हम इस त़रह़ पाख़ाना करते जिस त़रह़ बकरी मेंगनियां करती है।"(1)

1.....صحیح مسلم، کتاب الزھد،باب الدنیا سجن للمؤمن و جنۃ للکافر،الحدیث:۷۴۳۳/۷۴۳۵،ص۱۱۹۲۔
صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب کیف کان عیش...... الخ، الحدیث:۶۴۵۳،ص۵۴۲.

www.dawateislami.net

तसव्वुफ़ के दूसरे मा'ना की तहक़ीक़ :

और अगर तसव्वुफ़ को "صُوفَةٌ" से मुश्तक़ माना जाए जो कि (हाजियों और हरम शरीफ़ की ख़िदमत पर मामूर एक) क़बीला है तो इस सूरत में "**सूफ़ी**" से मुराद वोह होगा जो दुन्या के रन्जो ग़म से छुटकारा हासिल कर के अपने माल से फ़ाइदा उठा कर उसे अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लेता है। दुन्या में रहते हुवे हिदायत पर होने की वज्ह से हलाकतों से महफ़ूज़ रहता, नेकियों में कोशिश करता, अपनी ज़िन्दगी के लम्हात को ग़नीमत जान कर उस में अपनी आख़िरत के लिये अच्छे आ'माल का ज़ादे राह इकठ्ठा कर लेता और अपने औक़ात की हिफ़ाज़त करता है और यूं वोह बरगुज़ीदा लोगों के रास्ते पर चल कर मौत की सख़्तियों और हलाकतों से नजात पा लेता है। चुनान्चे,

﴾32﴿.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! जब लोग नेकी के दरवाज़ों के ज़रीए अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब हासिल करें तो तुम अ़क़्ल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब हासिल करो कि इस तरह तुम लोगों से दरजात में बढ़ जाओगे और येह दुन्या में लोगों के नज़्दीक बुलन्द मर्तबा और आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब का बाइस है।[(1)]

﴾33﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लिया में हाज़िर था। मैं ने इस्तिफ़्सार किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सहीफ़ों में क्या था ?" आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस में हर क़िस्म की मिसालें थीं उन में येह भी था कि अ़मल करने वाला जब तक अ़क़्ल के मुआ़मले में मग़लूब न हो उस पर लाज़िम है कि वोह अपने औक़ात को इस तरह तक़्सीम करे कि एक वक़्त में अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करे। एक वक़्त में अपने नफ़्स का मुहासबा करे, एक वक़्त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में ग़ौरो फ़िक्र करे और एक वक़्त में अपने खाने पीने की हाजात को पूरा करे।"[(2)]

---

❶.....الترغيب فی فضائل الأعمال وثواب ذلك...... الخ،الحديث:٢٥٦،ج١،ص٢٨٦.

❷.....الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،كتاب البر والاحسان،الحديث:٣٦٢،ج١، ص٢٨٨،بتغير.

www.dawateislami.net

तसव्वुफ़ के तीसरे मा'ना की तहक़ीक़ :

अगर तसव्वुफ़ "صُوْفَةُ الْقَفَا" (जिस का मा'ना गुद्दी के बाल है) से मुश्तक़ हो तो इस के मा'ना येह होंगे कि सूफ़ी ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होता और मख़्लूक़ से मुंह मोड़ लेता है नीज़ वोह मख़्लूक़ से न तो कोई बदला चाहता है और न ही ह़क़ से फिरने का इरादा रखता है। चुनान्चे,

﴾34﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब आग के दिन ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को आग के पास लाया गया तो आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने आग की त़रफ़ देख कर "حَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل" पढ़ा।" या'नी हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है और वोह कितना अच्छा कारसाज़ है।"[1]

﴾35﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को आग में डाला गया तो आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने "حَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل" पढ़ा या'नी मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है और वोह कितना अच्छा कारसाज़ है।"[2]

﴾36﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को आग में डाला गया तो आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने कहा :

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ وَاحِدٌ فِی السَّمَآءِ وَاَنَا فِی الْاَرْضِ وَاحِدٌ اَعْبُدُکَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरी आस्मान पर हुकूमत है और मैं ज़मीन में अकेला तेरी इ़बादत करने वाला हूं।[3]

﴾37﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नौफ़ बिकाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! ज़मीन में मेरे सिवा कोई तेरी इ़बादत करने वाला नहीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतारे और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने तीन दिन तक उन फ़िरिश्तों की इमामत फ़रमाई।"[4]

---

1 ......معجم شیوخ أبی بکر الإسماعیلی،باب العین،الحدیث:٣٢٧،ج١،ص٤٩٥.

2 ......تاریخ بغداد،الرقم٤٧٢٨سهل بن سورین المدائنی،ج٩،ص١١٩.

3 ......تاریخ بغداد ،الرقم٥٤٨٥عبید اللّٰه بن عبد اللّٰه بن محمد ،ج١٠،ص٣٤٤.

4 ......الزهدللامام احمدبن حنبل ، زهد ابراهیم الخلیل،الحدیث:٤١٦، ص ١١٤.

www.dawateislami.net

﴾38﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला जाने लगा तो सारी मख़्लूक़ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरा ख़लील आग में डाला जा रहा है हमें आग बुझाने की इजाज़त अ़ता फ़रमा !'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''वोह मेरा ख़लील है और इस वक़्त ज़मीन में उस के सिवा मेरा कोई ख़लील नहीं। मैं उस का रब हूं और मेरे सिवा उस का कोई रब नहीं है। अगर वोह तुम से मदद चाहते हैं तो तुम उस की मदद करो वरना उसे उस के ह़ाल पर छोड़ दो।'' फिर बारिश पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरा ख़लील आग में डाला जा रहा है मुझे इजाज़त अ़ता फ़रमा कि मैं बारिश के ज़रीए़ आग को बुझा दूं !'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''वोह मेरा ख़लील है और इस वक़्त ज़मीन में उस के सिवा मेरा कोई ख़लील नहीं और मैं उस का रब हूं और मेरे सिवा उस का कोई रब नहीं अगर वोह तुझ से मदद चाहते हैं तो उस की मदद करो वरना उसे उस के ह़ाल पर छोड़ दो। चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला जाने लगा तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आग को हुक्म इरशाद फ़रमाया :

يٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ ﴿٦٩﴾
(پ۱۷،الانبیاء:٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।*

तो उस दिन मशरिक़ व मग़रिब के तमाम लोगों पर आग ठन्डी हो गई और उस से बकरी का एक पाया भी न पक सका।(1)

﴾39﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुक़ातिल व सईद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डालने के लिये लाया गया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام के कपड़े उतार लिये गए और रस्सी से बांध कर मिन्जनीक़ में डाला गया तो आस्मान, ज़मीन, पहाड़, सूरज, चांद, अ़र्श, कुरसी, बादल, हवा और फ़िरिश्ते रो दिये और सब ने मिल कर अ़र्ज़ की : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे बन्दए ख़ास को आग में डाला जा रहा है हमें उस की मदद करने की इजाज़त अ़ता फ़रमा। आग ने रोते हुवे अ़र्ज़ की : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे बनी आदम के लिये मुसख़्ख़र किया और तेरा बन्दए ख़ास मेरे ज़रीए़ जलाया जा रहा है।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन सब से इरशाद

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل، زھد ابراھیم الخلیل،الحدیث:٤١٧،ص١١٥.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "मेरे बन्दे ने मेरी इबादत की और मेरी ही वज्ह से उसे तक्लीफ़ दी जा रही है अगर वोह मुझ से दुआ करे तो मैं उस की दुआ क़बूल करूंगा और अगर वोह तुम से मदद त़लब करे तो तुम उस की मदद कर सकते हो।" चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग की त़रफ़ फेंका गया तो मिन्जनीक़ और आग के दरमियान ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ! आप पर सलाम हो मैं जिब्रील हूं, क्या आप عَلَیْہِ السَّلَام को कोई ह़ाजत है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "है, मगर तुम से नहीं। मुझे तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ह़ाजत है।" फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाल दिया गया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام आग तक पहुंचें इस से पहले ही ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام पहुंच गए और आग को रस्सियों पर मुसल्लत़ कर दिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आग को हुक्म दिया :

يٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ ﴿۶۹﴾
(پ۱۷،الانبیاء:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।*

हुक्मे ख़ुदावन्दी पाते ही वोह आग ठन्डी हो गई और ऐसी ठन्डी हुई कि अगर उस के साथ "وَسَلٰمًا" लफ़्ज़ न फ़रमाया जाता तो सख़्त सर्दी की वज्ह से आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आ'ज़ाए मुबारका सुकड़ जाते।"(1)

﴾40﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मिन्हाल बिन अ़म्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे येह ख़बर पहुंची है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला गया तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उस आग में रहे और मैं येह नहीं जानता कि चालीस दिन रहे या पचास दिन, अलबत्ता आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : "जब मैं आग में था (तो इस में इतने अच्छे दिन गुज़रे कि) मुझे ज़िन्दगी में उन से बढ़ कर अच्छे दिन-रात मुयस्सर नहीं आए मैं चाहता था कि मेरी सारी ज़िन्दगी उसी आग में गुज़र जाए।"(2)

---

(1)......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر،ابراھیم،ج۶،ص۱۸۲۔
(2)......المرجع السابق،ص۱۹۱۔

www.dawateislami.net

तसव्वुफ़ के चौथे मा'ना की तह्क़ीक़ :

अगर तसव्वुफ़ को मा'रूफ़ लफ़्ज़ "صُوْف" जिस का मा'ना ऊन है, से मुश्तक़ माना जाए तो फिर सूफ़िया को सूफ़ी कहने की वज्ह येह होगी कि वोह ऊन का लिबास पहनते हैं क्यूंकि इस को बनाने में इन्सान को कोई मशक़्क़त नहीं होती और सरकश नफ़्स ऊन का लिबास पहनने से फ़रमां बरदार हो जाता है और ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना होने से उस का ग़ुरूर व तकब्बुर टूट जाता है और इन्सान क़नाअ़त का आ़दी बन जाता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : "हम ने अपनी किताब "लुबुसुस्सूफ़" में इस की मिसालें अह़सन अन्दाज़ से ज़िक्र कर दी हैं और तसव्वुफ़ के मुतअ़ल्लिक़ मुह़क़्क़िक़ीन के कई मसाइल को हम ने एक और किताब में बयान किया है और अ़न क़रीब यहां भी उन में से बा'ज़ को ज़िक्र करेंगे।"

सुन्नी और सूफ़ी की ता'रीफ़ :

﴾41﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र बिन मुह़म्मद सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّازِق फ़रमाते हैं : "जो शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी अह़वाल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे वोह सुन्नी (या'नी सुन्नत का पैरूकार) है और जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बातिनी अह़वाल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे वोह सूफ़ी है।" और बातिनी ज़िन्दगी से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुराद रह़मते आ़लम, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा अख़्लाक़ और आख़िरत को इख़्तियार करना है। पस जो शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा से अपने आप को मुज़य्यन करे और जिस चीज़ को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इख़्तियार फ़रमाया उसे इख़्तियार करे, जिस चीज़ में रग़बत रखी उस में रग़बत रखे, जिन चीज़ों से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इजतिनाब फ़रमाया उन से इजतिनाब करता रहे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन कामों की तरग़ीब दिलाई उन्हें थाम ले तो बेशक वोह गन्दगी से पाको साफ़ हो कर ग़ैर से नजात पा गया और जो शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रास्ते से हट कर अपने नफ़्स की पैरवी करने और अपने पेट व शर्मगाह की ख़्वाहिशात को पूरा करने में मश्ग़ूल रहा तो ऐसा शख़्स तसव्वुफ़ से आ़री, नादानी में कोशां और आने वाले ख़तरनाक अह़वाल से ग़ाफ़िल है।

अ़क़्लमन्द कौन है ?

﴾42﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुवैद बिन ग़फ़ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बाहर तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर नबिय्ये दो जहान, सरवरे कौनो मकान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात हुई।

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किस चीज़ के साथ मबऊ़स किया गया ?" इरशाद फ़रमाया : अ़क़्ल के साथ । अ़र्ज़ की : "हम किस त़रह़ अ़क़्ल इख़्तियार कर सकते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "बेशक अ़क़्ल की कोई इन्तिहा नहीं लेकिन जिस शख़्स ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़लाल को ह़लाल जाना और उस के ह़राम को ह़राम समझा उसे अ़क़्लमन्द कहा जाता है अगर वोह इस के बा'द मज़ीद राहे ख़ुदा में कोशिश करे तो उसे आ़बिद कहा जाता है इस के बा'द मज़ीद कोशिश करे तो उसे जव्वाद कहा जाता है मगर जो शख़्स इबादत में कोशिश करे और नेकी की राह में तकालीफ़ पर सब्र करे लेकिन अ़क़्ल का सहारा न ले जो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की इत्तिबाअ़ की त़रफ़ रहनुमाई करे और उस की मन्अ़ कर्दा अश्या से बाज़ रखे तो येही लोग हैं जो बदतरीन आ'माल वाले हैं जिन की दुन्या में की गई कोशिशें बेकार गईं ह़ालांकि अपने गुमान में वोह अच्छे आ'माल करने वाले थे ।"(1)

अ़क़्ल के 3 हिस्से :

﴾43﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़क़्ल को 3 ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमाया है जिस शख़्स में वोह तीनों ह़िस्से हों वोह कामिल अ़क़्ल वाला है और जिस शख़्स में कोई ह़िस्सा न हो उस में कुछ अ़क़्ल नहीं (वोह तीन ह़िस्से येह हैं)

(1).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़ुस्ने मा'रिफ़त

(2).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़ुस्ने त़ाअ़त और

(3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम पर ह़ुस्ने सब्र ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "ऐसे शख़्स को तसव्वुफ़ की त़रफ़ कैसे मन्सूब किया जाए कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़ते ह़क़ीक़ी से उस का वासित़ा पड़े तो वोह इस में दूसरी बातें मिला दे और जब उस से त़ाअ़ते इलाही के लवाज़िमात का मुत़ालबा किया जाए तो वोह उन से जाहिल हो और दूसरे को पागल बना दे और जब ऐसी मशक़्क़त में मुब्तला हो जिस पर सब्र करना ज़रूरी है तो बे सब्री का मुज़ाहरा करे ।"

---

1 ......مسند الحارث، کتاب الادب، باب ماجاء فی العقل، الحدیث: ۸۳۲، ج۲، ص ۸۱۰.

2 ......مسند الحارث، کتاب الادب، باب ماجاء فی العقل، الحدیث: ۸۱۰، ج۲، ص ۸۰۰.

www.dawateislami.net

सूफ़ी और तसव्वुफ़ के मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाल

उ़लमाए तसव्वुफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने तसव्वुफ़ के बारे में कलाम किया है और इस की हुदूद, मआ़नी, अक़्साम व मबानी के बारे में वज़ाह़त की है। चुनान्चे,

तसव्वुफ़ के 10 मआ़नी :

﴾44﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अज़्दियार बिन सुलैमान फ़ारसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد से तसव्वुफ़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : तसव्वुफ़ एक ऐसा नाम है जो 10 मआ़नी पर मुश्तमिल है :

(1).....दुन्या की हर शै में कसरत की बजाए क़िल्लत पर इक्तिफ़ा करना।

(2).....अस्बाब पर भरोसा करने की बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर दिल से ए'तिमाद रखना।

(3).....सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती में नफ़्ली इ़बादात में रग़्बत रखना।

(4).....दुन्या छूट जाने पर भीक मांगने और शिक्वा व शिकायत करने के बजाए सब्र करना।

(5).....किसी चीज़ के पाए जाने के बा वुजूद इस्ति'माल के वक़्त तमीज़ रखना।

(6).....सारी मश्ग़ूलियात तर्क कर के ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल रहना।

(7).....तमाम अज़्कार के मुक़ाबले में ज़िक्रे ख़फ़ी करना।

(8).....वसाविस के बा वुजूद इख़्लास पर साबित क़दम रहना।

(9).....शक के बा वुजूद यक़ीन को मुतज़लज़िल न होने देना।

(10)....इज़्तिराब व वह़शत के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर सुकून ह़ासिल करना।

पस जिस शख़्स में येह सिफ़ात पाई जाएं वोह सूफ़ी कहलाने का मुस्तह़िक़ है वरना वोह झूटा है।

सूफ़ी, ह़क़ाइक़ से पर्दा उठाता है :

﴾45﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन मैमून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से सूफ़ी के बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"सूफ़ी वोह है कि जब गुफ़्तगू करे तो हक़ाइक़ से पर्दा उठाए अगर ख़ामोश हो तो उस के आ'ज़ा दुन्या से तर्के तअ़ल्लुक़ की गवाही दें।"(1)

﴾46﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सन मुज़य्यन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "तसव्वुफ़ ऐसी क़मीस है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लोगों को पहनाई है अगर वोह उस पर शुक्र अदा करें तो ठीक वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बारे में मुवाख़ज़ा फ़रमाएगा।"

﴾47﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب से सुवाल हुवा कि तसव्वुफ़ क्या है ? फ़रमाया : "येह एक ऐसा नाम है जिस की आड़ ले कर इन्सान आ़म लोगों से ओझल हो जाता है सिवाए अहले मा'रिफ़त के और येह बहुत थोड़े लोग हैं।"

﴾48﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुसाफ़िफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد से तसव्वुफ़ के बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "हर बुरी आ़दत को तर्क कर देना और हर अच्छी आ़दत को अपना लेना तसव्वुफ़ है।"(2)

आ़रिफ़ और सूफ़ी की अ़लामात व सिफ़ात :

﴾49﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सन फ़रग़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى से आ़रिफ़ की अ़लामत दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "आ़रिफ़ का सीना खुला होता है, दिल ज़ख़्मी और जिस्म बे ह़ाल होता है।" फिर मैं ने पूछा : "येह तो आ़रिफ़ की अ़लामत है, लेकिन आ़रिफ़ कौन है ?" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "आ़रिफ़ वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की मुराद को पहचान कर उस के अह़कामात पर अ़मल करे, जिस चीज़ से उस ने मन्अ़ फ़रमाया उस से रुक जाए और उस के बन्दों को उस की त़रफ़ बुलाए।" अबू ह़सन फ़रग़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "मैं ने फिर पूछा : "सूफ़ी कौन है ?" फ़रमाया : "जिस ने अपने दिल की सफ़ाई की हो और उस का दिल साफ़ हो गया हो और ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम पर चला, दुन्या को अपने पीछे फेंका और ख़्वाहिशात को जफ़ा का मज़ा चखाया।"

---

1 ......تاريخ بغداد ،الرقم٥٢٢٨عبد الله بن محمد بن ميمون ،ج١٠،ص١٠٦.

2 ......الرسالة القشيرية ،باب التصوف ،ص٣١٢.

www.dawateislami.net

मैं ने अ़र्ज़ की : "येह सूफ़ी है तो फिर तसव्वुफ़ क्या है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार करना और तकल्लुफ़ से बचना।" मैं ने पूछा : "इस से बेहतर तसव्वुफ़ क्या है ? फ़रमाया : "दिल के साफ़ करने का मुआमला अ़ल्लामुल गुयूब عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करना।" मैं ने अ़र्ज़ की : "इस से बेहतर तसव्वुफ़ क्या है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ता'ज़ीम करना और उस के बन्दों पर मेहरबानी करना।" मैं ने पूछा : "इस से बेहतर सूफ़ी की क्या सिफ़ात हैं ?" फ़रमाया : "जो गन्दगी से पाक हो कर और बुख़्ल से नजात पा कर फ़िक्रे इलाही से भर गया हो और उस के नज़्दीक सोने और मिट्टी की हैसिय्यत बराबर हो।"(1)

﴿50﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना नस्र बिन अबी नस्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुहम्मद मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی को फ़रमाते हुवे सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से पूछा गया : "तसव्वुफ़ क्या है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "तसव्वुफ़ ऐसे अख़्लाक़े करीमा (या'नी अच्छी आ़दात व सिफ़ात) का नाम है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों को अ़त़ा फ़रमाता है।"(2)

﴿51﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुजीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُجِيْب से सूफ़ी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया : तो फ़रमाया : "सूफ़ी अपने नफ़्स को ज़ब्ह़ करने वाला, अपनी ख़्वाहिशात को रुस्वा करने वाला, अपने दुश्मन (शैत़ान) को नुक़्सान पहुंचाने वाला, मख़्लूक़ को नसीह़त करने और हमेशा ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला होता है। अ़मल को ठीक त़ौर पर अन्जाम देता और उम्मीदों से दूर रहता है, बिगाड़ दूर करता और लग़्ज़िशों से दर गुज़र करता है। उस का उ़ज़्र सरमाया, उस का हुनर ग़म, उस की ज़िन्दगी सरापा क़नाअ़त, ह़क़ को पहचानने वाला, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर डेरा जमाने वाला, हर चीज़ से बे नियाज़ रहने वाला, नेकी की काश्त करने वाला, मह़ब्बत का दरख़्त लगाने वाला और अपने वा'दे की ह़िफ़ाज़त करने वाला होता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانِی फ़रमाते हैं : "मैं ने इस किताब के इ़लावा दूसरी किताब में मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के तसव्वुफ़ के मुतअ़ल्लिक़ कसीर जवाबात और मुख़्तलिफ़ इ़बारतों को ज़िक्र कर दिया है जिन में से हर एक ने तसव्वुफ़ को अपने ह़ाल के मुत़ाबिक़ बयान किया है।

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، الرقم۳۰۳۷ـ الشبلی دُلَف بن جَحدر، ج۱۲، ص۵۰ـ
الزھد الکبیر للبیھقی، فصل فی قصر الامل و المبادرۃ......الخ، الحدیث: ۷۵۶ / ۷۵۷، ص ۲۸۹، مختصرًا۔

2 ......الرسالة القشیریة، باب التصوف، ص۳۱۳، بتغیرٍ۔

www.dawateislami.net

कलामे सूफ़िया की तीन अक़्साम

सूफ़िया का कलाम तीन अक़्साम पर मुश्तमिल होता है :

(1).....तौह़ीद की दा'वत देना।

(2).....मुराद व मरातिब के बारे में कलाम करना।

(3)......मुरीद और उस के अह़्वाल के बारे में कलाम करना।

फिर हर क़िस्म बे शुमार मसाइल व फ़ुरूआ़त पर मुश्तमिल है लिहाज़ा सूफ़िया का सब से पहला उसूल **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का इरफ़ान ह़ासिल करना है और फिर उस के अह़काम पर अपने आप को साबित क़दम रखना और उस पर हमेशगी इख़्तियार करना है। चुनान्चे,

﴾52﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को यमन की त़रफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : "तुम अहले किताब की त़रफ़ जा रहे हो लिहाज़ा सब से पहले तुम उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की दा'वत देना, जब उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरफ़ान ह़ासिल हो जाए तो फिर उन्हें बताना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर दिन रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं और जब वोह नमाज़ों की पाबन्दी करने वाले बन जाएं तो फिर उन्हें येह ख़बर देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ फ़रमाई है जो उन के अग़निया के अमवाल से ले कर उन्ही के फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दी जाएगी।"[1]

﴾53﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मिस्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बयान फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे नादिर उ़लूम में से कुछ सिखा दीजिये !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने अस्ल इ़ल्म में क्या सीखा है जो नादिर उ़लूम त़लब कर रहे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "अस्ल इ़ल्म क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल कर ली है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "फिर तुम ने उस का कितना ह़क़ अदा किया है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जितना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा उतना अदा किया है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الدعاء الی الشهادتين و شرائع الاسلام، الحديث:١٢٣، ص٦٨٤.

www.dawateislami.net

इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम ने मौत को पहचान लिया है ?'' उस ने जवाब दिया : ''जी हां !'' फ़रमाया : ''तुम ने उस के लिये किस क़दर तय्यारी की ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जितनी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाही उतनी मैं ने मौत की तय्यारी कर ली है।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जाओ पहले इन चीज़ों को पुख़्ता करो फिर आना मैं तुम्हें नादिर उ़लूम सिखा दूंगा।''(1)

तसव्वुफ़ के बुन्यादी अरकान

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''ह़क़ीक़ी तसव्वुफ़ की बुन्याद चार अरकान पर है : (1).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के अस्मा, सिफ़ात व अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त। (2).....नफ़्स, इस की बुराइयों और इन बुराइयों की त़रफ़ ले जाने वाले अस्बाब की मा'रिफ़त नीज़ दुश्मन (या'नी शैत़ान) के वसाविस, मक्रो फ़रेब और गुमराहियों की मा'रिफ़त। (3).....दुन्या की मा'रिफ़त, और इस बात की मा'रिफ़त कि दुन्या एक धोका है, दुन्या फ़ानी है, इस की रंगीनियां आ़रिज़ी हैं नीज़ इस से बचने और दूर रहने के त़रीक़ों की मा'रिफ़त। (4).....इन की मा'रिफ़त के बा'द अपने नफ़्स को हमेशा मुजाहदा और सख़्त मशक़्क़त का आ़दी बनाए, अपने औक़ात की ह़िफ़ाज़त करे, त़ाअ़त को ग़नीमत समझे, राह़त व आराम और लज़्ज़ात से किनाराकशी इख़्तियार करे, करामात की ह़िफ़ाज़त करे लेकिन मुआ़मलात से नात़ा न तोड़े और न बेजा तावीलात की त़रफ़ माइल हो बल्कि दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात से बे रग़बत हो कर हर चीज़ से ए'राज़ कर ले और तमाम ग़मों को एक ही ग़म गुमान करे, मालो मताअ़ में इज़ाफ़े से दामन छुड़ाए, मुहाजिरीन व अन्सार की पैरवी करे, ज़मीन व जाईदाद से किनाराकशी इख़्तियार करे, राहे ख़ुदा में ख़र्च व ईसार करने को तरजीह दे, अपने दीन की ह़िफ़ाज़त की ग़रज़ से पहाड़ों और जंगलों की त़रफ़ निकल जाए, बिला ज़रूरत निगाहें उठाए इधर उधर देखने से इजतिनाब करे कि इस की वज्ह से इस की त़रफ़ उंगलियां उठें क्यूंकि येह चीज़ अन्वारो बरकात से दूरी का बाइ़स है। पस इन्हीं सिफ़ात से मुत्तसिफ़ लोग मुत्तक़ी, गोशा नशीन, अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये भागने वाले और आ'ला किरदार के मालिक होते हैं इन का अ़क़ीदा दुरुस्त और बात़िन मह़फ़ूज़ होता है। चुनान्चे,

﴾54﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

(1) ......الزهد لوكيع،باب الاستعداد للموت ، الحديث:١٢ ،ج ١،ص ١٧.

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुत्तक़ी, सख़ी दिल और मख़्फ़ी (या'नी गुमनाम) बन्दे से महब्बत फ़रमाता है।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा लोग :

﴾55﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा लोग ग़ुरबा हैं। अ़र्ज़ की गई : "ग़ुरबा कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "अपने दीन की हि़फ़ाज़त के लिये भागने वाले। बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें ह़ज़रते ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) के साथ उठाएगा।"(2)

चुने हुवे लोग :

﴾56﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से महब्बत फ़रमाता है तो उसे अपने लिये चुन लेता और उसे अहलो इ़याल में मशग़ूल नहीं होने देता।" नीज़ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि किसी मुसलमान का दीन सलामत नहीं रहेगा सिवाए उस के जो अपने दीन की हि़फ़ाज़त के लिये एक बस्ती से दूसरी बस्ती, एक घाटी से दूसरी घाटी और एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ की त़रफ़ भागेगा।"(3)

क़ाबिले रश्क मोमिन :

﴾57﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हमारे दोस्तों में सब से ज़ियादा क़ाबिले रश्क वोह मोमिन है जो थोड़े माल वाला, नमाज़ रोज़े का पाबन्द, अपने रब عَزَّوَجَلَّ की अच्छे त़रीक़े से इ़बादत करने वाला और तन्हाई में भी उस की त़ाअ़त करने वाला हो और लोगों में इस क़दर गुमनाम हो कि उंगलियों से उस की त़रफ़ इशारा न किया जाए, ब क़दरे

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الزهد، باب الدنيا سجن للمؤمن و جنة للكافر، الحديث: ٧٤٣٢، ص ١١٩٢.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عمران بن الحصين، الحديث: ٨٠٩، ص ١٧٢.

3 ......الزهد الكبير للبيهقي، فصل في ترك الدنيا......الخ، الحديث: ٤٣٩، ص ١٨٣، بتغيرقليلٍ.

www.dawateislami.net

किफ़ायत रोज़ी मुयस्सर आने पर सब्र करे, जब उस की मौत क़रीब आ जाए तो उस पर रोने वालों की ता'दाद कम हो और उस का तर्का भी बहुत थोड़ा हो।"(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام अच्छी सिफ़ात और उम्दा आदात के मालिक होते हैं। उन का मक़ाम बुलन्द और सुवाल क़ाबिले रश्क होता है।"

﴾58﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! क्या मैं तुम पर बख़्शिश न करूं ? क्या मैं तुम को न दूं ? क्या मैं तुम को अ़ता न करूं ?" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान हों।" फ़रमाते हैं : मैं ने समझा कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कुछ माल अ़ता फ़रमाएंगे लेकिन आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर दिन रात में 4 रक्अ़त वाली एक नमाज़ है। जिस में सूरए फ़ातिहा और सूरत पढ़ने के बा'द 15 मरतबा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر" कहो फिर रुकूअ़ करो और रुकूअ़ में (तस्बीह़ के बा'द) 10 मरतबा पढ़ो फिर रुकूअ़ से उठो तो سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه कहने के बा'द) 10 मरतबा, फिर नमाज़ की हर रक्अ़त में इसी त़रह़ पढ़ो जब फ़ारिग़ हो जाओ तो तशह्हुद के बा'द और सलाम से पहले येह पढ़ो :

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسْأَلُکَ تَوْفِیْقَ أَهْلِ الْهُدٰی وَاَعْمَالَ أَهْلِ الْیَقِیْنِ وَمُنَاصَحَةَ اَهْلِ التَّوْبَةِ وَعَزْمَ اَهْلِ الصَّبْرِ وَجِدَّ اَهْلِ الْخَشْیَةِ وَطَلْبَةَ اَهْلِ الرَّغْبَةِ وَتَعَبُّدَ اَهْلِ الْوَرَعِ وَعِرْفَانَ اَهْلِ الْعِلْمِ حَتّٰی اَخَافَکَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسْأَلُکَ مَخَافَةً تَحْجُزُنِیۡ عَنْ مَعَاصِیْکَ وَحَتّٰی اَعْمَلَ بِطَاعَتِکَ عَمَلًا اَسْتَحِقُّ بِهٖ رِضَاکَ وَحَتّٰی اُنَاصِحَکَ فِی التَّوْبَةِ خَوْفًا مِّنْکَ وَحَتّٰی اُخْلِصَ لَکَ النَّصِیْحَةَ حُبًّا لَکَ وَحَتّٰی اَتَوَکَّلَ عَلَیْکَ فِی الْاُمُوْرِ حُسْنَ الظَّنِّ بِکَ سُبْحٰنَ خَالِقِ النُّوْرِ"

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से हिदायत याफ़्ता लोगों की तौफ़ीक़, अहले यक़ीन के आ'माल, तव्वाबीन के ख़ुलूस, साबिरीन के अ़ज़्म, अहले ख़शिय्यत की कोशिश, अहले शौक़ की त़लब, मुत्तक़ीन की सी इबादत, इल्म वालों की मा'रिफ़त का सुवाल करता हूं कि मैं तुझ से डरूं और ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से ऐसे ख़ौफ़ का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी ना फ़रमानियों से बाज़ रखे हत्ता कि मैं ऐसा अ़मल बजा लाऊं कि तेरी रिज़ा का मुस्तहिक़ बन जाऊं और तुझ से

(1).....المعجم الكبير، الحديث: ٧٨٦٠، ج٨، ص٢١٣.

www.dawateislami.net

डरते हुवे सच्ची तौबा कर लूं और तेरी महब्बत के बाइस तेरे लिये खुलूस इख़्तियार करूं और तुझ से हुस्ने ज़न रखते हुवे तमाम उमूर में तुझ पर भरोसा करूं। पाकी है नूर के ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ को।) (फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया) ऐ इब्ने अब्बास ! जब तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे छोटे और बड़े, नए और पुराने, छुपे और ज़ाहिर भूल कर किये और जो जान बूझ कर किये तमाम गुनाह बख़्श देगा।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सफ़ीर

हज़राते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام मख़्लूक़ की तरफ़ रब عَزَّوَجَلَّ के सफ़ीर और ख़ुद हक़ तबारक व तआला جَلَّ جَلَالُهٗ के असीर होते हैं। हिज्रो फ़िराक़ ने उन्हें परेशान और बे क़रारी ने परागन्दा हाल किया होता है। चुनान्चे,

﴾59-60﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआज़ ! बेशक मोमिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का असीर होता है और जानता है कि इस पर और उस के कान, आंख, ज़बान, हाथ पाउं, पेट, शर्मगाह पर निगहबान मुक़र्रर है जो उस को उंगली के साथ मिट्टी से खेलते, सुर्मा लगाते और तमाम आ'माल करते हत्ता कि हर लम्हे उसे देख रहा है। बेशक मोमिन का दिल न तो अम्न में होता है और न ही उस का ख़ौफ़ व इज़्तिराब जाता है। उसे सुब्हो शाम मौत का इन्तिज़ार रहता है। तक़्वा उस का दोस्त, क़ुरआन उस की दलील, ख़ौफ़ उस की हुज्जत, शराफ़त उस की सुवारी, एहतियात उस का हमनशीं, ख़शिय्यते इलाही उस का शिआर, नमाज़ उस की जाए पनाह, रोज़ा उस की ढाल, सदक़ा उस की आज़ादी का परवाना, सिद्क़ उस का वज़ीर, हया उस की अमीर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात इन तमाम पर निगहबान है।

ऐ मुआज़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! क़ुरआन मोमिन को बहुत सी नफ़्सानी ख़्वाहिशात व शहवात से रोक देता है और (क़ुरआने करीम) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से बन्दे और ख़्वाहिशात व शहवात के दरमियान हाइल हो जाता है।

ऐ मुआज़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! मैं तेरे लिये भी वोही पसन्द करता हूं जो अपने लिये पसन्द करता हूं और मैं तुम्हें उन चीज़ों से मन्अ करता हूं जिन चीज़ों से हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे रोका है। पस क़ियामत के दिन तुम मुझे इस हाल में मिलोगे कि तुम से ज़ियादा कोई सआदत मन्द नहीं होगा।"(2)

---

(1)......المعجم الاوسط، الحديث:٢٣١٨، ج٢، ص١١.

(2)......تفسیرابن ابی حاتم، سورة الفجر، تحت الآیة ١٤، ج١٢، ص٢٠٤، مختصرًا.

www.dawateislami.net

ईमान की मिठास

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की महब्बत हक़ तआला के लिये होती है और वोह हक़ तआला की राह में ही जीते और मरते हैं। हक़ तआला के सिवा सारी मख़्लूक़ उन का क़ुर्ब पाती और अपने ग़म भूल जाती है।

﴾61﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "3 बातें जिस में होंगी वोह ईमान की मिठास को पा लेगा : (1).....उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर चीज़ से ज़ियादा महबूब हों। (2).....उसे आग में डाला जाना कुफ़्र की तरफ़ लौटने से ज़ियादा पसन्द हो जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे आग से बचा लिया हो और (3).....वोह किसी शख़्स से महज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर महब्बत करे।"(1)

﴾62﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स में तीन ख़स्लतें होंगी वोह ईमान की मिठास को पा लेगा : (1).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे तमाम चीज़ों से ज़ियादा महबूब हों। (2).....महज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर किसी से महब्बत करे। (3)....कुफ़्र से नजात मिलने के बा'द दोबारा उस में लौट जाने को इस तरह ना पसन्द करे जिस तरह आग में डाले जाने को ना पसन्द करता है।"(2)

मुश्किल अह़वाल और पाकीज़ा अख़्लाक़ का नाम तसव्वुफ़ है

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हदीस और इस के इलावा रिवायात से साबित होता है कि तसव्वुफ़ मुश्किल अहवाल और पाकीज़ा अख़्लाक़ का नाम है और अहवाल, सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को मग़लूब कर के असीर बना लेते हैं। सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

❶......المسندلابی داوٗد الطیالسی،ما اسند انس بن مالك ، الحدیث:١٩٥٩،ص٢٦٣.

❷......المسندللامام احمد بن حنبل،مسند انس بن مالك،الحدیث:١٢٠٠٢،ج٤،ص٢٠٦.

www.dawateislami.net

जब अख़्लाक़ का इल्म ह़ासिल करते हैं तो वोह उन के सामने बिल्कुल ज़ाहिर हो कर उन्हें हक़ तआ़ला की ख़ालिस इबादत से आरास्ता करते हैं। लिहाज़ा वोह हैरत के रास्तों से बचते और ह़क़ तआ़ला से तअ़ल्लुक़ टूट जाने से मह़फ़ूज़ रहते हैं। वोह ह़क़ तआ़ला से ही मानूस होते और उसी से राह़त व आराम पाते हैं। पस वोह ऐसे दिलों के मालिक हैं जो अपने नूरे फ़िरासत से उमूरे ग़ैबिय्या को जान लेते और अपने मह़बूब का मुराक़बा करते हैं। ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ शख़्स को छोड़ देते और ह़क़ ही के लिये जंग करते हैं। वोह सह़ाबए किराम व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नक़्शे क़दम पर चलते हैं। वोह जो लोगों में से फटे पुराने लिबास में मलबूस बक़ा व फ़ना को जानने वाले, इख़्लास व रिया में तमीज़ करने वाले, वस्वसों और अ़ज़ीमत व निय्यत को जानने वाले, बात़िनी उ़यूब का मुह़ासबा करने वाले, राज़ों की मुह़ाफ़ज़त करने वाले, नफ़्स की मुख़ालफ़त करने वाले और हर वक़्त ग़ौरो फ़िक्र और ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रहने के ज़रीए शैत़ानी वस्वसों से बचने वाले हैं। लोग इन सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का क़ुर्ब चाहते हुवे और सुस्ती व कोताही से जान छुड़ाते हुवे इन की पैरवी करते हैं, इन की ख़िदमत को ह़क़ीर वोही समझेगा जो बे दीन हो चुका हो और इन के अह़वाल का दा'वा बे वुक़ूफ़ शख़्स ही कर सकता है। इन के अ़क़ीदे का मो'तक़िद आ़ली हिम्मत और बहुत ख़्वाहिश मन्द ही इन से तअ़ल्लुक़ रखने का मुश्ताक़ होता है। येह लोग आफ़ाक़ के सूरज हैं। इन की झलक देखने के लिये गर्दनें उठती हैं हम इन्ही नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की पैरवी करते और मरते दम तक इन्ही से अपनी दोस्ती का दम भरते हैं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : ''हम इस किताब में हर उस सह़ाबी का ज़िक्र करेंगे जो किसी वाक़िए की वज्ह से मश्हूर हुवे, जिन के अच्छे अफ़्आ़ल मह़फ़ूज़ कर लिये गए, जो फ़ुतूर और सुस्ती से मुबर्रा, जिन के साथ अच्छी यादें वाबस्ता हैं और थकावट व मलाल उन्हें राहे ख़ुदा से मुन्ह़रिफ़ न कर सका। मुहाजिरीन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का तज़्किरा किया जाता है।

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह सहाबी हैं जिन्हों ने सब से पहले ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की तस्दीक़ की। बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़तीक़ का लक़ब पाया। तौफ़ीक़े इलाही की ताईद इन्हें हासिल रही, सफ़रो हज़र में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़, ज़िन्दगी के हर मोड़ पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्लिस दोस्त और बा'दे विसाल भी रौज़ए अन्वर में (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के) साथ आराम फ़रमा रहे हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ुरआने मजीद में फ़ख़्र के साथ ज़िक्र फ़रमाया जिस की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम चुने हुवे लोगों से बढ़ गए और रहती दुन्या तक आप की बुज़ुर्गी व शरफ़ बाक़ी रहेगा, कोई साहिबे ताक़त व बसारत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बुलन्द रुत्बे तक नहीं पहुंच सकता क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ (پ۱۰،التوبہ:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे।*

इस के इलावा बहुत सी आयात व अहादीस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में वारिद हुई हैं जिन में रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर साहिबे फ़ज़्ल से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले और हर मुक़ाबिल से बरतरी ले जाने वाले हैं। नीज़ येह आयते मुबारका भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में नाज़िल हुई हैं। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَا یَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ (پ۲۷،الحدید:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया।*

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम हालात में अपनी इनफ़िरादिय्यत क़ाइम रखी और जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्लाम की दा'वत दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन इसे क़बूल कर लिया और मालो इ़ज़्ज़त ह़त्ता कि हर चीज़ राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दी। तौह़ीदे इलाही को क़ाइम करना ही आप का मक़्सद व मुद्दआ़ था इसी बिना पर परेशानियों और मुसीबतों का निशाना बने और इस्लाम की ख़ातिर हर

www.dawateislami.net

चीज़ तर्क कर दी और मख़्लूक़ से मुंह मोड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह इख़्तियार की। मन्कूल भी येही है कि रास्तों के इख़्तिलाफ़ के वक़्त हक़ाइक़ को थामे रखना ही तसव्वुफ़ है।

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दर्से तौहीद :

﴾63﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हुवा तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर तशरीफ़ लाए और देखा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों से कलाम फ़रमा रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! बैठ जाइये ! लेकिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (शिद्दते जज़्बात) की वज्ह से न बैठे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर फ़रमाया : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! बैठ जाइये ! (अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठ गए) तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा दिया और हम्दो सलात के बा'द इरशाद फ़रमाया : तुम में से जो शख़्स हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इबादत करता था वोह सुन ले कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा चुके हैं और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता था तो वोह जान ले कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा है और उसे कभी मौत नहीं आएगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ (پ٤،ال عمران:١٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुहम्मद तो एक रसूल हैं उन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पाउं फिर जाओगे।*

रावी बयान करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसा लगता था गोया लोग जानते ही न थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयत को नाज़िल फ़रमाया हत्ता कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आयत तिलावत की तो लोगों ने सुन कर इसे याद कर लिया फिर इस के बा'द हम लोगों को इस की तिलावत करते सुना।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस आयते मुबारका की तिलावत करते सुना तो मैं कांपने लगा ह़त्ता कि मेरे पाउं सुन हो गए और मैं घुटनों के बल ज़मीन पर गिर पड़ा और येह आयत सुन कर मुझे यक़ीन हुवा कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा चुके हैं।"(1)

दीन पर इस्तिक़ामत :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कामिल वफ़ादारी की बदौलत आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ हुवे। और कहा गया है कि तसव्वुफ़ भी येही है कि इन्सान अल्लाह وحدہٗ لاشریک के लिये गोशा नशीनी इख़्तियार कर ले।

﴾64﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब इब्ने दग़िना ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी ज़िम्मेदारी में लिया और क़ुरैश ने क़बूल कर लिया तो उन्हों ने इब्ने दग़िना से कहा कि अबू बक्र से कहो कि अपने रब की इ़बादत अपने घर में किया करें, घर में जितनी चाहें नमाज़ें पढ़ें और जितना चाहें क़ुरआन पढ़ें, हमें इस से कोई तक्लीफ़ नहीं होगी लेकिन वोह अपने घर से बाहर खुल्लम खुल्ला नमाज़ न पढ़ें। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस पर अ़मल किया और अपने घर के सेह़न को जाए नमाज़ बना लिया, उसी जगह नमाज़ पढ़ते और क़ुरआने मजीद की तिलावत करते लेकिन यहां भी मुशरिकीन की औ़रतों और बच्चों का इज़्दिहाम लगा रहता वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख देख कर ह़ैरत व तअ़ज्जुब करते क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह ह़ाल था कि जब क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते तो अपने आंसूओं पर क़ाबू न रख पाते और ख़ूब आंसू बहाते।

इस बात से सरदाराने क़ुरैश बहुत परेशान थे (कि कहीं इन की औ़रतें और बच्चे इस्लाम की त़रफ़ माइल न हो जाएं) चुनान्चे, उन्हों ने इब्ने दग़िना को बुला कर अपनी तशवीश का इज़्हार किया तो इब्ने दग़िना अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और कहा : "ऐ अबू बक्र ! जिस बात पर मैं ने आप की ज़िम्मेदारी क़बूल की है वोह आप को मा'लूम है लिहाज़ा आप इसी पर क़ाइम रहें या मेरा ज़िम्मा छोड़ दें क्यूंकि मुझे येह पसन्द नहीं

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب الدخول علی المیت......الخ، الحدیث: ۱۲۴۲، ص۹۷۔
صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی و وفاتہ، الحدیث: ۴۴۵۴، ص۳۶۵۔

www.dawateislami.net

कि कुरैश मेरे बारे में येह सुनें कि मैं ने अपने ज़िम्मे की हिफ़ाज़त नहीं की।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं तेरा ज़िम्मा तुझे लौटाता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे पर राज़ी होता हूं।" उन दिनों रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का ही में तशरीफ़ फ़रमा थे।(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ुरआन फ़ेहमी :

﴾65﴿.....हज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन हिलाल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : इन दो आयतों के बारे में तुम क्या कहते हो ?

اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا

(پ٢٦،الاحقاف:١٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर साबित क़दम रहे।

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ

(پ٧،الانعام:٨٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ की आमेज़िश न की।

रुफ़क़ा ने अ़र्ज़ की : رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا से मुराद येह है कि उन्हों ने दूसरा दीन इख़्तियार नहीं किया और وَلَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ का मत़लब येह है कि उन्हों ने अपने ईमान में गुनाह कर के नाहक़ की आमेज़िश नहीं की। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "तुम ने इन आयतों का मेह़मिल दुरुस्त बयान नहीं किया।" फिर इरशाद फ़रमाया : رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا से मुराद येह है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह ही नहीं हुवे और وَلَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ का मत़लब येह है कि उन्हों ने अपने ईमान में शिर्क की आमेज़िश नहीं की।(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़िक्रे आख़िरत :

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दुन्या से किनाराकशी इख़्तियार करने और फ़िक्रे आख़िरत में मगन रहने वाले थे।

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب الکفالۃ،باب جوار ابی بکر......الخ،الحدیث:٢٢٩٧،ص١٧٩.

2 ......المستدرک،کتاب التفسیر،تفسیر سورۃ حٰمٓ السجدۃ،باب ان اول من یتکلم یوم القیامۃ......الخ،الحدیث:٣٧٠٠، ج٣،ص٢٢٩،"فلم یدینوا"بدلہ"فلم یلتفتوا".

www.dawateislami.net

और सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "तसव्वुफ़ दुन्या को छोड़ कर इस के मालो मताअ़ से मुंह मोड़ने को कहते हैं।"

﴾66﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पीने के लिये पानी त़लब फ़रमाया तो एक कटोरे में पानी और शहद पेश किया गया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे मुंह के क़रीब किया तो रो पड़े और ह़ाज़िरीन को भी रुला दिया फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तो ख़ामोश हो गए लेकिन लोग रोते रहे। (उन की येह ह़ालत देख कर) आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दोबारा रोने लगे यहां तक कि ह़ाज़िरीन को गुमान हुवा कि वोह अब रोने का सबब भी दरयाफ़्त नहीं कर सकेंगे फिर कुछ देर के बा'द जब इफ़ाक़ा हुवा तो लोगों ने अ़र्ज़ की : "किस चीज़ ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इस क़दर रुलाया ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : मैं एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने आप से किसी चीज़ को दूर करते हुवे फ़रमा रहे थे : मुझ से दूर हो जा, मुझ से दूर हो जा, लेकिन मुझे आप के पास कोई चीज़ दिखाई नहीं दे रही थी। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी चीज़ को अपने आप से दूर फ़रमा रहे हैं जब कि मुझे आप के पास कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही ?" सरकारे दो जहान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह दुन्या थी, जो बन संवर कर मेरे सामने आई तो मैं ने उस से कहा : "मुझ से दूर हो जा तो वोह हट गई।" उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो मुझ से बच गए लेकिन आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द आने वाले न बच सकेंगे।" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि दुन्या मुझ से चिमट गई है। बस इसी बात ने मुझे रुला दिया।"(1)

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का तक़्वा :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه राहे ख़ुदा में अपनी कोशिश को कम नहीं करते थे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़दों से आगे नहीं बढ़ते थे। जैसा कि सूफ़ियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام तसव्वुफ़ का मा'ना बयान फ़रमाते हैं कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाने की कोशिश में लगे रहने का नाम तसव्वुफ़ है।"

---

1 ......المستدرك، كتاب الرقاق، باب اذا مرض المؤمن......الخ، الحديث:٧٩٢٦، ج٥، ص٤٣٩، بتغيرقليل.

www.dawateislami.net

﴾67﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक ग़ुलाम था जो कमा कर लाया करता था। एक रात जब वोह खाना लाया तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अभी उस में से एक ही लुक़्मा तनावुल फ़रमाया था कि ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर रात मुझ से दरयाफ़्त किया करते थे कि खाना कहां से आया है लेकिन क्या बात है आज आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुवाल क्यूं नहीं किया ?" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे सख़्त भूक लगी थी इस वज्ह से न पूछ सका अब बताओ कहां से लाए हो ?" ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में मन्तर पढ़ कर किसी का इलाज किया था और उन्हों ने मुझे कुछ देने का वा'दा किया था, आज जब मैं उन के पास से गुज़रा तो उन के हां शादी थी उन्हों ने उस खाने में से मुझे भी दे दिया।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर देता।" येह कह कर उंगली मुंह में डाली और क़ै करने लगे, लेकिन खाना न निकला, किसी ने कहा : "येह पानी के बिग़ैर नहीं निकलेगा।" तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पानी मंगवाया और उसे पी कर क़ै करते रहे यहां तक कि उस खाने को पेट से बाहर निकाल दिया। किसी ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रह़्म फ़रमाए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक लुक़्मे की वज्ह से इतनी मशक़्क़त क्यूं उठाई ?" फ़रमाया : अगर येह लुक़्मा मेरी जान ले कर निकलता तब भी इसे निकाल कर रहता क्यूंकि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि "जो जिस्म ह़राम से पला बढ़ा वोह आग के ज़ियादा लाइक़ है।"(1) पस मुझे ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा कि कहीं इस लुक़्मे से मेरे जिस्म की कुछ नश्वो नुमा न हो जाए।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इश्क़े रसूल :

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तकालीफ़ को बरदाश्त करने में सब से आगे होते थे क्यूंकि इस में बुलन्दिये दरजात की ज़ियादा उम्मीद होती है। जैसा कि अहले तसव्वुफ़, तसव्वुफ़ का एक मा'ना येह बयान फ़रमाते हैं कि महबूब के दीदार के लिये जलने, तड़पने और बे क़रार रहने में राहत व आराम महसूस करना तसव्वुफ़ कहलाता है।

(1) ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی المطاعم و المشارب،الحدیث:۵۷۶۰،ج۵،ص۵۶.

www.dawateislami.net

﴾68﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि एक फ़रयादी आले अबू बक्र के पास आया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "अपने रफ़ीक़ की ख़बर लो !" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन हमारे पास से तशरीफ़ ले गए और ह़ालत येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाल चार हिस्सों में तक़्सीम थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह कहते हुवे मस्जिद में दाख़िल हुवे : तुम्हारी हलाकत हो, क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है कि मेरा रब **अल्लाह** है और बेशक वोह तुम्हारे रब की त़रफ़ से रौशन निशानियां तुम्हारे पास लाए। पस वोह लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर झपट पड़े। ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाती हैं जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस घर तशरीफ़ लाए तो ह़ालत येह थी कि सर के जिस हिस्से पर भी हाथ फेरते तो बाल हाथ में आ जाते और इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह पढ़ रहे थे تَبَارَکْتَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام या'नी : ऐ बुज़ुर्गी व करामत वाले रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी ज़ात बा बरकत है।[1]

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़ी चीज़ (या'नी आख़िरत) के बदले में ह़क़ीर चीज़ (या'नी दुन्या) को क़ुरबान कर देते थे। जैसा कि सूफ़ियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام तसव्वुफ़ का एक मा'ना बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "अपनी तमाम तर कोशिशों को ने'मतें अ़त़ा करने वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के लिये वक़्फ़ कर देने का नाम तसव्वुफ़ है।

﴾69﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सदक़ा ले कर ह़ाज़िर हुवे और उसे छुपाते हुवे अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह मेरी त़रफ़ से सदक़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर और भी ह़क़ है।" कुछ देर बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में सदक़ा लाए और उसे ज़ाहिर करते हुवे अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह मेरी त़रफ़ से सदक़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां मेरे लिये इस का बदला है।" ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे

[1] ......المسندلابی یعلی الموصلی ،مسند ابی بکر الصدیق ،الحدیث:٤٨،ج١،ص٤٢.

www.dawateislami.net

मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! तुम ने बिग़ैर धागे के कमान पर तीर चढ़ाने की कोशिश की है और तुम दोनों के सदक़े में ऐसा ही फ़र्क़ है जैसा कि तुम्हारे कलाम में है।"(1)

सदक़ा करने में सब से आगे :

﴾70﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को सदक़ा देने का हुक्म दिया, इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त मेरे पास माल मौजूद था, मैं ने (दिल में) कहा : "अगर मैं किसी दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ सकता हूं तो वोह आज का दिन है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं अपना आधा माल ले कर बारगाहे नबुव्वत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो गया।" हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "घर वालों के लिये क्या छोड़ा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आधा माल घर वालों के लिये छोड़ आया हूं।" इतने में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना सारा माल ले कर हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : "घर वालों के लिये क्या छोड़ा है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काफ़ी हैं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने (दिल में) कहा : "मैं कभी भी किसी मुआ़मले में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से आगे नहीं बढ़ सकता।"(2)

अपनी जान आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सच्चे दोस्त और भाई चारगी को निभाते थे। जैसा कि उ़लमाए तसव्वुफ़ رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत में दरपेश मुश्किलात को खुश दिली से सीने लगाने और तमाम उमूर को दिलों की सफ़ाई पर सर्फ़ करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

---

(1)......الفردوس بماثور الخطاب للدیلمی، باب الیاء، الحدیث:۸۲۸۳، ج۵، ص۳۱۰.

(2)......سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب الرخصۃ فی ذلک، الحدیث:۱۶۷۸، ص۱۳۴۸.

www.dawateislami.net

﴾71﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ग़ारे सौर वाली रात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे आप पहले ग़ार में दाख़िल होने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं ताकि अगर कोई सांप या मूज़ी चीज़ हो तो पहले मुझे नुक़्सान पहुंचाए।" मोमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी तो आ़शिक़े अक्बर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर दाख़िल हुवे और अपने हाथों से सूराख़ तलाश करते और जो भी सूराख़ मिलता अपना कपड़ा फाड़ कर उसे बन्द कर देते, यहां तक कि कपड़ा ख़त्म हो गया मगर एक सूराख़ अभी बाक़ी था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पर अपने पाउं की ऐड़ी रख दी फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ार में दाख़िल हुवे। सुब्ह़ हुई तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तुम्हारा कपड़ा कहां है ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अपने हाथों को बुलन्द फ़रमाया और येह दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ اَبَا بَکْرٍ مَعِیَ فِیْ دَرَجَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क़ियामत के दिन अबू बक्र को जन्नत में मेरे साथ जगह अ़त़ा फ़रमा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "बेशक तुम्हारे रब ने तुम्हारी दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है।"(1)

अपना माल आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान :

﴾72﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाती हैं : "जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का माल नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तसर्रुफ़ में था।"

ज़बान की ह़िफ़ाज़त :

﴾73﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ......صفة الصفوة، ابو بکر الصدیق، سیاق افعالہ الجمیلة، ج۱، ص۱۲۵.

www.dawateislami.net

अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो देखा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अपनी ज़बान पकड़ कर खींच रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की बख़्शिश फ़रमाए। इसे छोड़ दीजिये !" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "इस ने मुझे हलाकत में डाल दिया।"(1)

﴾74﴿.....हज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "उस शख़्स के लिये बिशारत है जो "نَأْنَاة" में फ़ौत हुवा !" अ़र्ज़ की गई : "येह "نَأْنَاة" क्या है ?" फ़रमाया : "इब्तिदाए इस्लाम (या'नी जब इस्लाम कमज़ोर था और उस के लिये मददगार कम थे।)"(2)

मज़बूत़ व मुत़मइन दिल के मालिक :

﴾75﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू सालेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में अहले यमन का एक वफ़्द हाज़िर हुवा जब उन्हों ने क़ुरआन सुना तो रोने लगे। अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "पहले हमारी भी येही ह़ालत थी लेकिन अब दिल सख़्त हो गए हैं।"(3)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमान "दिल सख़्त हो गए" से मुराद येह है कि दिल मज़बूत़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त से मुत़मइन हो गए।"

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ह़या :

﴾76﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों को ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जब मैं खुली फ़ज़ा में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जाता हूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या की वज्ह से अपने ऊपर कपड़ा डाल लेता हूं।"(4)

---

1 ......الموطاللامام مالك، كتاب الكلام، باب ماجاء فيما يخاف من اللسان ، الحديث:١٩٠٦، ج٢، ص٤٦٦.

2 ......الزهد لابن المبارك ،باب الاعتبار والتفكر ، الحديث:٢٨١، ص٩٥.

3 ......المصنف لابن ابی شيبة ،كتاب الزهد ،باب ما قالوا فی......الخ،الحديث:٣، ج٨، ص٢٩٦.

4 ......الزهدلابن المبارك،باب الهرب من الخطاياوالذنوب،الحديث:٣١٦، ص١٠٧.

www.dawateislami.net

﴾77﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू सफ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हुवे तो लोग आप की इयादत के लिये हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "क्या हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये किसी त़बीब को न बुला लाएं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : त़बीब मुझे देख चुका है। लोगों ने इस्तिफ़्सार किया कि उस ने क्या कहा : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस ने कहा कि मैं जो चाहता हूं करता हूं ।" (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने त़बीबे ह़क़ीक़ी या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में येह बात कही)[1]

दुन्या के बारे में नसीह़त :

﴾78﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मरज़ुल मौत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा और सलाम अ़र्ज़ किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब देने के बा'द फ़रमाया : "मैं देख रहा हूं कि दुन्या हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो चुकी है लेकिन अभी पूरी त़रह़ नहीं बल्कि आने ही वाली है। बहुत जल्द तुम रेशम के पर्दे और दीबाज के तक्ये अपनाओगे और ऊनी बिस्तरों पर इस त़रह़ तक्लीफ़ मह़सूस करोगे जिस त़रह़ "सा'दान" के कांटों पर मह़सूस करते हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम में से कोई इस दुन्या की त़रफ़ लपके और उस की नाह़क़ गर्दन मार दी जाए तो येह इस से बेहतर है कि वोह दुन्या की तारीकियों में भटकता फिरे।"[2]

ख़लीफ़ए अव्वल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ुत़बात

बादशाहों का अन्जाम :

﴾79﴿.....हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबू कसीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ख़ुत़बे में अकसर येह फ़रमाया करते थे : "कहां हैं ख़ूब सूरत चेहरों वाले ! जिन्हें अपनी जवानियों पे नाज़ था ? और कहां हैं वोह बादशाह !

---

1 .....الزھدللامام احمد بن حنبل ،زھد ابی بکرالصدیق،الحدیث:٥٨٧،ص١٤٢۔
الطبقات الکبریٰ لابن سعد،الرقم٤٦ابو بکر الصدیق ،ذکر وصیۃ ابی بکر ،ج٣،ص١٤٨.

2 .....المعجم الکبیر، الحدیث:٤٣،ج١،ص٦٢.

www.dawateislami.net

जिन्हों ने शहर बनाए और इन की हिफ़ाज़त के लिये फ़सीलें (बुलन्द व मज़बूत दीवारें) ता'मीर करवाईं ? कहां हैं वोह फ़ातिहीन ! जंगों में कामयाबी जिन के क़दम चूमती थी ? ज़माने ने उन का नामो निशान तक मिटा डाला, अब वोह क़ब्र के अन्धेरों में पड़े हैं। जल्दी करो जल्दी ! नजात हासिल करो नजात !"(1)

क़ब्रो हश्र की तय्यारी :

﴾80﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَکِیْم से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें खुत़्बा दिया और हम्दो सलात के बा'द इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं और तुम्हें ताकीद करता हूं कि उस की हम्दो सना इस त़रह़ करो जिस त़रह़ करने का ह़क़ है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ कसरत से दुआ़ किया करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन के घर वालों की ता'रीफ़ करते हुवे फ़रमाया :

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝۹۰
(پ۱۷،الانبیاء:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़ गिड़ाते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! जान लो बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़क़ के इवज़ तुम्हारी जानों को गिरवी रखा है और इस पर तुम से पुख़्ता वा'दा लिया है और तुम से क़लील व फ़ानी ज़िन्दगी को हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी के बदले में ख़रीद लिया है और तुम्हारे पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब है जिस के अ़जाइबात कभी ख़त्म नहीं हो सकते और न ही उस का नूर बुझाया जा सकता है। उस की आयात की तस्दीक़ करो और इस से नसीह़त ह़ासिल करो नीज़ तारीकी वाले दिन के लिये उस से रौशनी ह़ासिल करो बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया और तुम पर किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों) को मुक़र्रर फ़रमाया है और जो तुम करते हो वोह उसे जानते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! जान लो तुम एक मुक़र्ररा वक़्त (या'नी मौत आने) तक सुब्हो शाम कर रहे हो जिस का इ़ल्म तुम्हें नहीं दिया गया है। अगर तुम अपनी ज़िन्दगी रिज़ाए रब्बुल

1......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهدوقصرالامل، الحدیث: ۱۰۵۹۵،ج۷، ص۳۶٤.

www.dawateislami.net

अनाम عَزَّوَجَلَّ वाले कामों में फ़ना कर सको तो ऐसा ही करो मगर येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ के बिग़ैर मुमकिन नहीं लिहाज़ा अपनी ज़िन्दगी की मोहलत से फ़ाइदा उठाओ और एक दूसरे पर आ'माल में सबक़त ले जाओ इस से पहले की मौत आए और तुम्हें तुम्हारे बुरे आ'माल की त़रफ़ लौटा दे। क्यूंकि बहुत सी क़ौमों ने अपनी उ़म्रें ग़ैरों के लिये सर्फ़ कर डालीं और अपने आप को भूल गए। इस लिये मैं तुम्हें रोकता हूं कि तुम उन जैसे न बन जाना। जल्दी करो जल्दी ! नजात ह़ासिल करो नजात ! बेशक मौत तुम्हारे तआ़क़ुब में है और इस का मुआ़मला बहुत जल्दी है।"(1)

अच्छे आ'माल की तरग़ीब :

﴾81﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा देते हुवे फ़रमाया : "मैं तुम्हें वसिय्यत करता हूं कि फ़क्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और उस की इस त़रह़ ह़म्दो सना करो जिस त़रह़ करने का ह़क़ है और अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते रहो बेशक वोह बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला है।"

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रिवायत की मिस्ल बयान किया। अलबत्ता इस रिवायत में इतना ज़ाइद बयान किया कि "जान लो ! जब तुम ने ख़ालिसतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल किया तो तुम ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और अपने ह़क़ की ह़िफ़ाज़त की। पस तुम अपने बक़िय्या दिनों में अच्छे आ'माल कर के उन्हें अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लो ताकि जब तुम्हें उन की ह़ाजत पड़े तो तुम्हें उन का पूरा पूरा बदला दिया जाए। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! फिर तुम अपने अस्लाफ़ के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करो कि वोह कल कहां थे और आज कहां हैं ? कहां हैं वोह बादशाह जिन्हों ने ज़मीन को आबाद किया ? लोग उन्हें भूल चुके और उन का ज़िक्र भुला दिया गया। आज वोह यूं हैं गोया कभी थे ही नहीं :

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ
(پ۱۹،النمل:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो येह हैं उन के घर ढे पड़े बदला उन के ज़ुल्म का।

और वोह क़ब्र की तारीकियों में पड़े हैं :

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام بی بکر الصدیق، الحدیث:۱، ج۸، ص۱٤٤.

www.dawateislami.net

هَلۡ تُحِسُّ مِنۡهُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ اَوۡ تَسۡمَعُ لَهُمۡ رِكۡزًا ﴿۹۸﴾ (پ۱۶،مریم:۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम उन में किसी को देखते हो या उन की भिनक सुनते हो।

कहां हैं तुम्हारे जानने पहचानने वाले दोस्त और भाई ? जो उन्हों ने आगे भेजा वोह उस तक पहुंच गए। कोई सआदत मन्दी को पाने में कामयाब हुवा तो कोई बद बख़्ती के गढ़े में जा गिरा। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की मख़्लूक़ के दरमियान कोई ऐसी क़राबत दारी नहीं है जिस की वज्ह से वोह उसे भलाई अ़ता करे और उस से बुराई को दूर कर दे। हां जो उस की इताअ़त करे और उस के हुक्म की पैरवी करे तो वोह भलाई को पाने का ह़क़दार है। बेशक वोह नेकी नेकी नहीं जिस के बा'द जहन्नम में दाख़िल होना पड़े और वोह बुराई बुराई नहीं जिस के मुर्तकिब को जन्नत नसीब हो। पस मुझे तुम से येही कहना था और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने और तुम्हारे लिये बख़्शिश का सुवाल करता हूं।[1]

ख़ैर से ख़ाली चार चीज़ें :

﴾82﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐम बिन नमिह़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने खुत़बा देते हुवे फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम है कि तुम एक मुक़र्ररा मुद्दत के अन्दर सुब्ह़ो शाम कर रहे हो ?"

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐम बिन नमिह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत की मिस्ल बयान फ़रमाया। अलबत्ता इस रिवायत में इतना ज़ाइद है कि (1)....उस बात में कोई भलाई नहीं जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी मक़्सूद न हो (2).....उस माल में कोई भलाई नहीं जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च न किया जाए (3)....उस शख़्स में ख़ैर नहीं जिस की जहालत उस की बुर्दबारी पर ग़ालिब आ जाए और (4)....उस शख़्स में भलाई नहीं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत से डर जाए।"[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1......المعجم الكبير،الحديث:٣٩،ج١،ص٦٠، ٦١، مختصراً.

2......المعجم الكبير،الحديث:٣٩،ج١،ص٦٠.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को नसीहतें :

﴾83﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन साबित् علیہ رحمۃ اللہ الواحد से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को बुलाया और फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! अल्लाह عزوجل से डरो और जान लो ! अल्लाह عزوجل ने जिस अ़मल को दिन में अदा करने का हुक्म दिया अगर उसे रात में किया गया तो वोह उसे क़बूल नहीं फ़रमाएगा और जिस अ़मल को रात में करने का हुक्म है अगर किसी ने उसे दिन में किया तो अल्लाह عزوجل उसे भी क़बूल न फ़रमाएगा और नफ़्ल क़बूल नहीं फ़रमाता जब तक फ़राइज़ अदा न कर लिये जाएं और जिन्हों ने दुन्या में ह़क़ की पैरवी की क़ियामत के दिन उन की नेकियों का पल्ला भारी होगा और मीज़ान पर लाज़िम है कि जब उस में ह़क़ रखा जाए तो वोह (नेकियों से) भारी हो जाए और जिन्हों ने दुन्या में बात़िल की पैरवी की बरोज़े क़ियामत उन की नेकियों का पल्ला हल्का होगा। और मीज़ान पर लाज़िम है कि जब उस में बात़िल रखा जाए तो वोह हल्का हो जाए। बेशक अल्लाह عزوجل ने अहले जन्नत का ज़िक्र अच्छे आ'माल से किया और उन की बुराइयों से दर गुज़र फ़रमाया है। पस जब मैं उन्हें याद करता हूं तो डरता हूं कि उन में दाख़िल होने से महरूम न हो जाऊं और अल्लाह عزوجل ने जहन्नमियों का ज़िक्र उन के बुरे आ'माल के साथ फ़रमाया और उन की नेकियां उन के मुंह पर मार दीं। पस जब मैं उन्हें याद करता हूं तो अल्लाह عزوجل से उम्मीद रखता हूं कि मेरा अन्जाम उन के साथ नहीं होगा और बन्दे को चाहिये कि वोह उम्मीद और डर के दरमियान रहे और अल्लाह عزوجل पर बेजा उम्मीदें बांधने से बाज़ रहे और उस की रहमत से ना उम्मीद भी न हो अगर तुम ने इन बातों को याद रखा तो आने वाली मौत से ज़ियादा कोई चीज़ तुम्हें महबूब न होगी। अगर मेरी वसिय्यत को ज़ाएअ़ कर दिया तो मौत से ज़ियादा कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द न होगी हालांकि तुम मौत से छुटकारा नहीं पा सकते।"(1)

औलाद की तरबिय्यत :

﴾84﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़लक़मा رضی اللہ تعالٰی عنہ की वालिदा رضی اللہ تعالٰی عنہا से मरवी है, फ़रमाती हैं : उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने फ़रमाया : एक मरतबा जब मैं

(1)......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب المغازی، باب ماجاء فی......الخ، الحدیث: ۱، ج۸، ص۵۷٤، بتغیرٍ قلیلٍ.

www.dawateislami.net

ने कपड़े पहने और घर में आते जाते अपने दामन को देखने लगी और इस त़रह़ मेरी तवज्जोह कपड़ों की त़रफ़ हो गई तो मेरे वालिदे गिरामी, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! क्या तुम्हें मा'लूम है ? कि अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से अपनी नज़्रे रह़मत हटा लेगा !"(1)

﴾85﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : एक मरतबा मैं ने अपनी एक नई चादर ज़ेबे तन की और उस की त़रफ़ देख कर ख़ुश होने लगी तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या देख रही हो ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी त़रफ़ नज़्रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह क्यूं ?" तो फ़रमाया : "क्या तुझे मा'लूम नहीं कि जब किसी बन्दे के दिल में दुन्यावी ज़ेबो ज़ीनत के बाइ़स उ़जुब (या'नी ख़ुद पसन्दी) पैदा हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ हो जाता है। यहां तक कि वोह उस ज़ीनत को तर्क कर दे।" उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने वोह चादर उतार कर राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उम्मीद है कि अब येह अ़मल तेरे लिये कफ़्फ़ारा बन जाए।"

﴾86﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़बीब बिन ज़मरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक बेटा अपने मरज़ुल मौत में बार बार तक्ये की त़रफ़ देखता था। जब उस का इन्तिक़ाल हो चुका तो लोगों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि "हम ने आप के बेटे को देखा कि वोह बार बार तक्ये की त़रफ़ देखता था ?" जब लोगों ने उस तक्ये को उठाया तो उस के नीचे 5 या 6 दीनार पड़े थे। येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने हाथ पर हाथ मारा और اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ पढ़ कर फ़रमाया : "मैं नहीं समझता कि तेरी जिल्द इस की सज़ा बरदाश्त कर सकेगी।"(2)

﴾87﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुह़म्मद अन्सारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा गया :

---

1 ......الزهد لابن المبارك، باب فى التواضع، الحديث:٣٩٨، ص١٣٤، بتغير.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد ابى بكر الصديق، الحديث:٥٨٩، ص١٤٢.

www.dawateislami.net

"ऐ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा ! आप अहले बद्र को आ़मिल (या'नी गवर्नर) क्यूं मुक़र्रर नहीं फ़रमाते ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं उन की क़द्रो मन्ज़िलत जानता हूं लेकिन मुझे येह पसन्द नहीं कि मैं उन्हें दुन्या की आलूदगियों में मुलव्विस कर दूं।"(1)

﴾88﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को 5 ऊक़िया(2) सोना दे कर ख़रीदा। उन्हें पथ्थरों के साथ मारा जाता था तो फ़रोख़्त करने वालों ने कहा : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऊक़िया पर ठहर जाते तो हम उसे एक ऊक़िया में ही फ़रोख़्त कर देते।" तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर तुम 100 ऊक़िया से कम पर राज़ी न होते तो फिर भी मैं इतने सोने के इवज़ ख़रीद लेता।"(3)

ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग

हम न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلّ

1.....تاریخ الخلفاء للسیوطی،ابو بکر الصدیق،فصل،ص۱۰۶.

2.....इस की मिक़्दार एक औंस 1/12 पाउन्ड है। (अल क़ामूस)

3.....المصنف لابن ابی شیبة ،کتاب المغازی ،باب اسلام ابی بکر،الحدیث:۷،ج۸،ص۴٤۸.

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

मुसलमानों में दूसरे अ़ज़ीमुश्शान इन्सान अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जो पसन्दीदा और बुलन्द मक़ामो मर्तबे पर फ़ाइज़ थे। इन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सादिक़ो मस्दूक़ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते (तौह़ीद) के ग़ल्बे और ह़क़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ करने का ज़रीआ़ बनाया। इन्ही के ज़रीए हादिये बर ह़क़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये तौह़ीद के मैदान हमवार फ़रमाए, मसाइब के मुंह बन्द किये, जिस से दा'वते इस्लाम फैल गई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलिमा मज़बूत़ हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़स्करी शानो शौकत अ़त़ा फ़रमाई जिस की बदौलत दुन्या में इस्लामी ह़ुकूमत राइज हुई। चुनान्चे, तौह़ीद के साथ मुसलमानों की पस्त आवाज़ें बुलन्द हो गईं और अपने कमज़ोर ह़ाल होने के बा'द साबित क़दम हो गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में ह़क़्क़ुल यक़ीन ईमान रासिख़ फ़रमाया। जिस की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुशरिकीन के तमाम मन्सूबों पर ग़ालिब आ गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी कुफ़्फ़ार की कसरत व त़ाक़त की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं हुवे। उन की रोक टोक की कभी परवाह न की। बल्कि उस पर भरोसा किया जो सब को पैदा करने वाला सब के लिये काफ़ी और उस से मदद ह़ासिल की जो मुसीबत को रफ़्अ़ करने वाला और शाफ़ी है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस बोझ को उठाया जो ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उठाया था और मसाइबो तकालीफ़ पर सब्र किया क्यूंकि इसी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात की उम्मीद की जाती है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर ऐशो इ़शरत इख़्तियार करने वाले से दूर रहे और हर उस शख़्स को गले लगाया जो दीन की मदद व नुस्रत के लिये तय्यार होता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बातिल परस्तों से मुक़ाबला करने में तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से सब्क़त ले जाते और अह़काम में (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए) रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ के मुवाफ़िक़ होती। सकीना व इत़मीनान आप की ज़बान पर गुफ़्तगू करता और ह़िक्मत व दानाई आप के बयान से ज़ाहिर होती। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ की त़रफ़ माइल, ह़क़ की ख़ातिर लड़ने वाले और मुश्किलात को बरदाश्त करने वाले थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी से नहीं डरते थे। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "तसव्वुफ़ बड़े बड़े मसाइब और मशक़्क़तों को बरदाश्त करने का नाम है।"

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शुजाअ़त व बहादुरी :

﴾89﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ग़ज़्वए उहुद के दिन अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब (इन्हों ने फ़त्ह़े मक्का के वक़्त इस्लाम क़बूल किया) मुसलमानों की त़रफ़ आया और पूछा : "क्या तुम्हारे दरमियान मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मौजूद हैं ?" तो हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को उस का जवाब देने से मन्अ़ फ़रमाया। उस ने फिर सुवाल किया : "क्या यहां मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हैं ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने उसे कोई जवाब न दिया। उस ने तीसरी बार फिर येही सुवाल किया लेकिन अब की बार भी उसे कोई जवाब न मिला। फिर अबू सुफ़्यान ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में तीन मरतबा पूछा कि "क्या तुम्हारे दरमियान अबू क़ह़ाफ़ा का बेटा मौजूद है ?" मुसलमानों की त़रफ़ से इस सुवाल का भी कोई जवाब न पा कर फिर उस ने तीन मरतबा येह दरयाफ़्त किया कि "क्या तुम में उ़मर बिन ख़त़्त़ाब है ?" अब भी किसी ने कोई जवाब न दिया तो अबू सुफ़्यान ने कहा : "शायद तुम उन की त़रफ़ से किफ़ायत कर चुके हो (या'नी वोह शहीद हो गए)।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तू झूट बकता है, येह हैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और येह हैं अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! हम सब ज़िन्दा हैं और हमारी त़रफ़ से तुम्हें एक बुरा दिन देखना होगा।" अबू सुफ़्यान ने कहा : "येह दिन बद्र वाले दिन का बदला है और जंग डोल की त़रह़ है (या'नी कभी फ़त्ह़ और कभी शिकस्त)।" फिर उस ने कहा : " हुबल (बुत का नाम) आ'ला है। हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसे जवाब दो।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम इसे क्या जवाब दें ?" फ़रमाया : "तुम कहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बुलन्दो बाला है।" अबू सुफ़्यान ने कहा : "हमारे पास उ़ज़्ज़ा (बुत का नाम) है और तुम्हारे पास नहीं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे जवाब दो।" अ़र्ज़ की गई :

www.dawateislami.net

"या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम क्या जवाब दें ?" फ़रमाया : "तुम कहो : اَللّٰہُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰی لَکُم या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा मददगार है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।"(1)

﴾90﴿.....हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब अबू सुफ़्यान बिन हर्ब ने "हुबल आ'ला है" कहा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "कहो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ'ला व बरतर है।" अबू सुफ़्यान ने कहा : "हमारा हामी उ़ज़्ज़ा है जब कि तुम्हारा हामी उ़ज़्ज़ा नहीं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "कहो हमारा मददगार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है जब कि काफ़िरों का कोई मददगार नहीं।"(2)

﴾91﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं : "उहुद के दिन अबू सुफ़्यान ने "हुबल आ'ला है" का ना'रा लगाया और अपने बातिल मा'बूदों पर फ़ख़्र करने लगा तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनें, येह दुश्मने ख़ुदा क्या कह रहा है ?" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम भी उसे पुकार कर जवाब दो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही आ'ला व बरतर है।"(3)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐ़म अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जवाब देने और दुश्मन को ललकारने के लिये इस लिये मुन्तख़ब फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम्ला करने और बहादुरी के जोहर दिखाने में अपनी मिसाल आप थे और ईमान के मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़्ती मश्हूर थी। इसी वज्ह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करने से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मन्अ़ नहीं फ़रमाया।"

---

1 ......مسند ابی داوٗد الطیالسی،البراء بن عازب ،الحدیث: ۷۲۵، ص ۹۹۔
صحیح البخاری ، کتاب الجھاد ،باب ما یکرہ من التنازع......الخ ،الحدیث:۳۰۳۹، ص ۲۴۴ .
2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، مسندعبداللّٰہ بن مسعود ،الحدیث:۴۴۱۴،ج۲، ص ۱۹۱ .
3 ......دلائل النبوۃ للبیھقی،باب سیاق قصۃ خروج النبی الی احد......الخ،ج۳،ص ۲۱۳ .

www.dawateislami.net

ईमान नहीं छुपाऊंगा :

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीन का ए'लानिय्या इज़्हार फ़रमाते और नेक आ'माल को पोशीदा रखते थे। जैसा कि कहा गया है : "तसव्वुफ़ छुपे हक़ को ज़ाहिर करने का नाम है।"

﴾92﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे इस्लाम लाने की इब्तिदा कुछ यूं हुई कि मेरी हमशीरा दर्दे ज़ेह में मुब्तला थीं तो मैं सख़्त तारीक रात में घर से निकला और बैतुल्लाह शरीफ़ पहुंचा और ग़िलाफ़े का'बा को थाम लिया। इसी दौरान हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और हजरे अस्वद के पास पहुंचे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ना'लैन शरीफ़ पहने हुवे थे, जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ में मसरूफ़ रहे फिर वापस तशरीफ़ ले गए। इस के बा'द मैं ने एक ऐसी आवाज़ सुनी जो इस से पहले नहीं सुनी थी तो मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चलने लगा। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "कौन ?" मैं ने कहा : "उ़मर।" फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! तू मुझे दिन में छोड़ता है न रात को।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : येह सुन कर मैं डर गया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये बद दुआ़ न फ़रमा दें तो मैं ने फ़ौरन कहा : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّکَ رَسُوْلُ اللّٰہِ या'नी मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं।" येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! इसे (या'नी ईमान को) छुपाए रखना।" लेकिन मैं ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! मैं इस का इसी त़रह ए'लान करूंगा जिस त़रह शिर्क का ए'लानिय्या इरतिकाब करता था।"(1)

फ़ारूक़ का लक़ब कैसे मिला ?

﴾93﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ारूक़ क्यूं कहा जाता है ?" फ़रमाया : मुझ से 3 दिन पहले हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल किया

(1)......المصنف لابن ابی شیبۃ ، کتاب المغازی ،باب اسلام عمر بن الخطاب ،الحدیث:١ ،ج٨،ص٤٥٢ .

www.dawateislami.net

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा सीना इस्लाम के लिये खोल दिया तो मैं ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, तमाम अच्छे नाम उसी के लाइक़ हैं, पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर होना मुझे रूए ज़मीन में सब से ज़ियादा महबूब था। मैं ने पूछा : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ फ़रमा हैं ?" मेरी बहन ने कहा : "वोह सफ़ा के पास दारे अरक़म में हैं।" मैं सीधा वहां पहुंचा तो हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) दीगर सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) के साथ वहां मौजूद थे और ताजदारे दो आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुजरे में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं ने दरवाज़ा खट खटाया तो तमाम सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) जम्अ़ हो गए। हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "क्या हुवा ?" तो सब ने कहा : "उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) आए हैं।"

येह सुन कर हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और मेरे कपड़ों को खींच कर छोड़ दिया मुझ पर इस क़दर हैबत त़ारी हुई कि मैं घुटनों के बल गिर पड़ा, फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! क्या बाज़ नहीं आओगे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने फ़ौरन पढ़ा : اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ तो दारे अरक़म में मौजूद सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने इस ज़ोर से "اَللّٰہُ اَکْبَر" का ना'रा लगाया कि मस्जिद वालों ने सुना, मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम ज़िन्दा रहें या मरें क्या हक़ पर नहीं हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां क्यूं नहीं ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर्चे तुम ज़िन्दा रहो या वफ़ात पाओ हक़ पर हो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "तो फिर छुपें क्यूं ? क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! आप ज़रूर निकलेंगे।" पस हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें दो सफ़ों में निकलने का हुक्म दिया, एक में हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरी में, मैं था। भीड़ की वज्ह से हम आटे की त़रह पिस रहे थे यहां तक कि हम मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए, जब क़ुरैश ने मुझे और हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा तो उन्हें ऐसी तक्लीफ़ पहुंची जो पहले कभी न पहुंची थी पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस वज्ह से मुझे "फ़ारूक़" का लक़ब दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हक़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ फ़रमा दिया।(1)

---

(1) صفة الصفوة،عمربن الخطاب، ج۱،ص۱٤۱،تاريخ الخلفاء،عمربن الخطاب، ص۱۱۳ ۔

www.dawateislami.net

﴾94﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने देखा कि अभी तक हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ 39 अफ़राद मुसलमान हुवे थे और मैं चालीसवां मुसलमान था, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने दीन को ग़लबा अ़ता फ़रमाया और अपने नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मदद फ़रमाई और इस्लाम को इ़ज़्ज़त बख़्शी।''(1)

इस्लाम के लिये मसाइब बरदाश्त किये :

﴾95﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हम से फ़रमाया : ''क्या तुम पसन्द करते हो कि मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए इस्लाम का वाक़िआ़ बताऊं ?'' हम ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' तो फ़रमाया : मैं लोगों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुश्मनी में सब से ज़ियादा सख़्त था, एक मरतबा सफ़ा के पास एक घर में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गया, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी क़मीस खींची और फ़रमाया : ''ऐ इब्ने ख़त़्त़ाब ! इस्लाम ले आ ! फिर दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे हिदायत अ़ता फ़रमा।'' अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं ने पढ़ा : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاَشْھَدُ اَنَّکَ رَسُوْلُ اللہِ मुसलमानों ने इस ज़ोर से ''اَللہُ اَکْبَر'' का ना'रा लगाया कि मक्का की गलियां गूंज उठीं, उस वक़्त ह़ालत येह थी कि मुसलमान अपना ईमान पोशीदा रखते थे। और जब कोई मुसलमान हो जाता तो कुफ़्फ़ार उस के दर पे हो जाते। वोह इसे मारते और येह उन्हें मारता। मैं अपने मामूं के पास आया और सारी सूरते ह़ाल बताई उस ने घर में घुस कर दरवाज़ा बन्द कर लिया फिर मैं क़ुरैश के एक बड़े सरदार के पास गया उसे अपने इस्लाम के बारे में बताया लेकिन वोह भी घर में घुस गया मैं ने अपने दिल में कहा : ''येह तो कोई बात न हुई लोग तो मुसलमानों को मारते हैं लेकिन मुझे क्यूं नहीं कोई मारता ?'' फिर एक शख़्स ने कहा : ''क्या तुम सब पर अपने इस्लाम को ज़ाहिर करना चाहते हो ?'' मैं ने कहा : ''हां।'' उस ने कहा : ''जब लोग ह़जरे अस्वद के पास जम्अ़ हो जाएं तो फ़ुलां के पास जा कर उसे अपने बारे में बता देना क्यूंकि वोह शख़्स राज़ के मुआ़मले में हल्का है।'' अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मैं उस के पास गया और उसे बताया कि मैं ने तुम्हारा दीन छोड़ दिया है।'' उस ने फ़ौरन बुलन्द आवाज़ से ए'लान किया : ''इब्ने ख़त़्त़ाब बे दीन हो गया है।''

---

(1)......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر ،الرقم۵۲۰٦ عمر بن الخطاب ،ج٤٤،ص٣٩.

www.dawateislami.net

इस का येह कहना ही था कि कुफ़्फ़ार मुझे मारने लगे और मैं भी उन्हें मारने लगा इसी दौरान मेरे मामूं ने आ कर ए'लान किया : "ऐ लोगो ! मैं अपने भांजे को पनाह दे चुका हूं। लिहाज़ा अब कोई इसे छूने की जुरअत न करे।" सब लोग मुझ से दूर हो गए मगर मैं नहीं चाहता था। मैं ने कहा : "दूसरे मुसलमानों को ज़दो कोब किया जाता है। लेकिन मुझे नहीं मारा जाता।" जब लोग बैतुल्लाह शरीफ़ में जम्अ़ हुवे तो मैं अपने मामूं के पास आया और कहा : "तुम सुन रहे हो ?" उस ने कहा : "मैं ने नहीं सुना, तुम ने क्या कहा ?" मैं ने कहा : "मैं तुम्हारी पनाह तुम्हें लौटाता हूं।" मेरे मामूं ने कहा : "ऐसा न करो !" लेकिन मैं ने उस की पनाह लेने से इन्कार कर दिया। उस ने कहा : "जैसे तुम्हारी मरज़ी है।" फिर मेरी मार पीट होती रही यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को ग़लबा अ़ता फ़रमा दिया।"[1]

हक़गोई व सिलए रेह़्मी :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गुफ़्त्गू सुकून व इत्मीनान, सन्जीदगी और वक़ार के साथ होती और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़ए रेह़्मी और फ़िराक़ से इजतिनाब फ़रमाते, अह़कामे ख़ुदावन्दी को फैलाते और मज़्बूत़ी के साथ नाफ़िज़ करवाते थे।

उ़लमाए तसव्वुफ़ رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि "**तसव्वुफ़**, ह़क़ की मुवाफ़िक़त और मख़्लूक़ से दूर रहने का नाम है।"

﴾96﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : हम आपस में कहा करते थे कि "कोई फ़िरिश्ता है जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर बोलता है।"[2]

﴾97﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : "हम इस बात को बिल्कुल बईद नहीं समझते थे कि सकीना व इत्मीनान अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर बोलता है[3]।"[4]

1.....دلائل النبوة للبيهقى ،باب ذكر اسلام عمر......الخ ،ج٢، ص٢١٦تا ٢١٩ ،بتغيرٍ قليلٍ.

2.....المصنف لابن ابى شيبة ، كتاب الفضائل ،باب ماذكرفى فضل عمربن الخطاب،الحديث:١٤ ، ج٧، ص ٤٨٠ ،بتغيرٍ.

3.....या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कलाम उन की ज़बान में मुसलमानों के दिलों को चैन होता था या वोह फ़िरिश्ता जिसे सकीना कहते हैं वोह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर बोलता था। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 367)

4.....جامع معمر بن راشد مع مصنف عبد الرزاق ، باب اصحاب النبى،الحديث:٢٠٥٤٨،ج١٠، ص٢١٨

www.dawateislami.net

﴾98﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : "हम अस्हाबे रसूल कसीर ता'दाद में होने के बा वुजूद इस बात का इन्कार नहीं करते थे कि सकीना अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़बान पर बोलता है।"(1)

﴾99﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) की ज़बान और उन के दिल पर ह़क़ को जारी फ़रमा दिया है।"(2)

﴾100﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (कुरआने पाक में) तीन बातों में मेरी मुवाफ़िक़त फ़रमाई है : (1) मक़ामे इब्राहीम (2) पर्दा और (3) जंगे बद्र के क़ैदियों के बारे में।"(3)

जंगे बद्र में ख़ास किरदार :

﴾101﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान करते हैं कि मुझे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बताया कि जब बद्र के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुशरिकीन को शिकस्त से दो चार किया तो उन के 70 आदमी क़त्ल हुवे और 70 ही क़ैद हुवे तो हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن से मश्वरा त़लब फ़रमाया और पूछा : "ऐ ख़त्ताब के बेटे (उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) तुम्हारी इन क़ैदियों के मुतअ़ल्लिक़ क्या राए है ?" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं ने अ़र्ज़ की : मेरा ख़याल येह है कि आप मेरा फ़ुलां रिश्तेदार मेरे ह़वाले फ़रमाएं मैं उस की गर्दन उड़ाता हूं और औलादे अ़क़ील (या'नी हज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के चचा की औलाद) हज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़वाले की जाए वोह उन की गर्दन उड़ाएं और फ़ुलां हज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़वाले हो, वोह उसे क़त्ल करें ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़ाहिर फ़रमा दे कि हमारे दिलों में मुशरिकीन की कोई मह़ब्बत नहीं, येह लोग क़ुरैश के सरदार, अइम्मा और पेश्वा थे।" लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी राए पर

---

1 ......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم٥٢٠٦عمر بن الخطاب، ج٤٤، ص١١٠.

2 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب ان اللّٰہ جعل الحق علی لسان عمر وقلبه، الحدیث:٣٦٨٢، ص٢٠٣١.

3 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل عمر، الحدیث: ٦٢٠٦، ص١١٠٠.

www.dawateislami.net

अ़मल न फ़रमाया और मुशरिकीन से फ़िदया ले कर उन्हें छोड़ दिया जब दूसरे दिन मैं हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सिद्दीके़ अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को रोते हुवे देखा तो अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे बताइये ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के रफ़ीक़ (ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को किस चीज़ ने रुलाया ? अगर मुझे भी उस चीज़ की वज्ह से रोना आया तो रोऊंगा वरना आप दोनों के रोने की वज्ह से मैं रोने की कोशिश करूंगा।" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (दरख़्त की त़रफ़ इशारा करते हुवे) फ़रमाया : "कै़दियों से फ़िदया लेने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब इस दरख़्त से भी ज़ियादा क़रीब आ चुका था पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖۗ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۷﴾ لَوْ لَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۶۸﴾

(پ ۱۰، الانفال: ۶۷، ۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब न बहाए तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो और **अल्लाह** आख़िरत चाहता है और **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है अगर **अल्लाह** पहले एक बात लिख न चुका होता तो ऐ मुसलमानो ! तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उस में तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आता।*

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों के लिये ग़नीमत के अमवाल को ह़लाल फ़रमा दिया और आइन्दा साल जब उहुद का मा'रिका पेश आया तो मुसलमानों ने जो बद्र में फ़िदया वुसूल किया था उस के बदले में 70 मुसलमान शहीद हुवे। (फ़त्ह़ के बा'द दूसरे ह़म्ले में) सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن पस्पा हुवे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने के चार दन्दाने मुबारक (के बा'ज़ हिस्से) भी शहीद हुवे और ख़ौद (लोहे की जंगी टोपी) की कड़ियां सर में चुभ गईं और हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस पर ख़ून बहने लगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

www.dawateislami.net

أَوَلَمَّآ اَصَابَتۡکُمۡ مُّصِیۡبَۃٌ قَدۡ اَصَبۡتُمۡ مِّثۡلَیۡہَا ۙ قُلۡتُمۡ اَنّٰی ہٰذَا ؕ قُلۡ ہُوَ مِنۡ عِنۡدِ اَنۡفُسِکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۱۶۵﴾

(پ ٤، ال عمران:١٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे कि इस से दूनी तुम पहुंचा चुके हो तो कहने लगो कि येह कहां से आई तुम फ़रमा दो कि वोह तुम्हारी ही त़रफ़ से आई बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है ।* (1)

﴾102﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब बद्र के दिन कुफ़्फ़ार को कै़द कर लिया गया तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरा लिया । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "येह आप की क़ौम और ख़ानदान वाले हैं लिहाज़ा आप इन्हें आज़ाद फ़रमा दें ।" और जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरा लिया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें क़त्ल कर देने का मश्वरा अ़र्ज़ किया लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़िदया ले कर उन्हें छोड़ दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

مَا کَانَ لِنَبِیٍّ اَنۡ یَّکُوۡنَ لَہٗۤ اَسۡرٰی

(پ ١٠، الانفال:٦٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *किसी नबी के लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे ।*

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिले तो फ़रमाया : "क़रीब था कि तुम्हारी मुख़ालफ़त की वज्ह से अ़ज़ाब नाज़िल हो जाता ।"(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए पर नुज़ूले आयात :

﴾103﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इ़याश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि "मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना : जब (मुनाफ़िक़ों का सरदार) अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सलूल मर गया तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिये बुलाया गया, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस मुनाफ़िक़ की नमाज़े

❶......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عمر بن الخطاب ،الحدیث:٢٢١،ج١،ص٧٧.

❷......المستدرك ، کتاب التفسیر،سورۃ الانفال،الحدیث:٣٣٢٣،ج٣،ص٦١.

www.dawateislami.net

जनाज़ा के इरादे से खड़े हुवे तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन इब्ने अबी सलूल की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएंगे जिस ने फ़ुलां दिन यूं कहा और फ़ुलां दिन यूं कहा ?'' मैं उस की बुराई को शुमार करने लगा और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराते रहे यहां तक कि जब मैं ने बार बार येह बातें बयान कीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! मुझे छोड़ दो क्यूंकि मुझे नमाज़ पढ़ने या न पढ़ने का इख़्तियार दिया गया तो मैं ने पढ़ने को तरजीह़ दी चूंकि मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमाया गया है कि ''आप उन के लिये इस्तिग़फ़ार करें या न करें।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अगर मुझे मा'लूम होता कि 70 मरतबा से ज़ाइद इस्तिग़फ़ार करने में इस के लिये बख़्शिश मुमकिन है तो मैं इस्तिग़फ़ार में ज़ियादती कर लेता।'' फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उस के जनाज़े के साथ भी चले ह़त्ता कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के दफ़्न से फ़ारिग़ होने तक उस की क़ब्र पर खड़े रहे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं अब मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जुरअत आमेज़ कलाम पर तअ़ज्जुब होता है। ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी कुछ ही अ़र्सा गुज़रा था कि येह आयत नाज़िल हुई :

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ (پ۱۰، التوبة:۸٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना।*

इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी तक किसी मुनाफ़िक़ की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ाई।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से दूर रहने की भरपूर कोशिश की लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन की मुवाफ़िक़त में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से रोक दिया और साबिक़ा लिखे हुवे इ़ल्म की वज्ह से फ़िदया लेने के मुआ़मले में मुसलमानों से दर गुज़र फ़रमाया। येही उस शख़्स का रास्ता है जो फ़ितने में मुब्तला लोगों से फ़िराक़ का ए'तिक़ाद रखता और चाहता है कि अक्सर बातों में उस से इत्तिफ़ाक़ किया जाए और अपने अक्सर अह़वाल व अफ़्आ़ल में मुख़ालफ़त से मह़फ़ूज़ रहे।

1 ......جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب و من سورة التوبة، الحدیث:۳۰۹۷، ص۱۹٦٤.

www.dawateislami.net

हर मुआ़मले में इत्तिबाए़ रसूल :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी में साथ रहे तो वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द भी साथ हैं और वोह सोते जागते हर ह़ालत में ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले आ'ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करते रहे और तमाम अफ़्आ़ल में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत के पैकर रहे।

उ़लमा फ़रमाते हैं कि "सिराते़ मुस्तक़ीम पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करने और दुरुस्त मन्ज़िल तक पहुंचने का नाम तसव्वुफ़ है।"

﴾104﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं : मैं अपने वालिदे मोह़्तरम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि "मैं ने लोगों को आपस में एक बात करते देखा तो बेहतर समझा कि आप की बारगाह में अ़र्ज़ कर दूं, लोगों का ख़याल है कि आप (अपने बा'द) ख़िलाफ़त के लिये किसी को मुक़र्रर नहीं फ़रमा रहे ह़ालांकि आप का कोई ऊंटों या बकरियों का चरवाहा हो और वोह उन्हें छोड़ कर आप के पास चला आए तो आप ज़रूर समझेंगे कि उस ने जानवरों को हलाक कर दिया जब कि लोगों की ह़िफ़ाज़त व रिआ़यत जानवरों से बढ़ कर होनी चाहिये।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ देर के लिये सर झुकाया फिर सरे मुबारक उठा कर फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने दीन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। मैं किसी को अपना ख़लीफ़ा मुन्तख़ब नहीं करूंगा। बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी को ख़लीफ़ा नामज़द नहीं फ़रमाया और अगर मैं किसी को ख़लीफ़ा नामज़द करूं तो येह भी दुरुस्त है क्यूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र करने से मैं ने जान लिया कि आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में किसी की पैरवी नहीं करेंगे और किसी को ख़लीफ़ा नामज़द नहीं करेंगे।"(1)

﴾105﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ख़्वाब में ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

(1)......صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب الاستخلاف و ترکہ، الحدیث:٤٧١٤، ص١٠٠٥.

www.dawateislami.net

ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी त़रफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) नहीं फ़रमा रहे, मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझ से ऐसा कौन सा फ़े'ल सरज़द हुवा है जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी त़रफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमा रहे हैं ?" सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम रोज़े की ह़ालत में (अपनी ज़ौजा का) बोसा[1] नहीं लेते ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! मैं आइन्दा कभी भी रोज़े की ह़ालत में बोसा नहीं लूंगा।"[2]

छोटी बड़ी आस्तीनों वाली क़मीस :

﴾106﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने नई क़मीस ज़ेबे तन फ़रमाई फिर मुझे छुरी लाने को कहा और फ़रमाया : "ऐ बेटे ! मेरी आस्तीनों को खींचो और उंगलियों के पौरों से ज़ाइद ह़िस्सा काट दो।" मैं ने दोनों आस्तीनों का बढ़ा हुवा ह़िस्सा काटा तो आस्तीनें छोटी बड़ी हो गईं। मैं ने अ़र्ज़ की : "अब्बा जान ! आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इजाज़त दें तो मैं क़ैंची से दोनों को काट कर बराबर कर दूं ?" आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ बेटे ! रहने दो क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ देखा है।" वोह क़मीस अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ज़ेबे तन फ़रमाते रहे यहां तक कि फट गई और मैं अक्सर उस के धागे आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के क़दमों पर गिरते देखा करता था।"[3]

1.....येह अ़मल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के तक़्वा के ख़िलाफ़ था जिस पर ह़ुज़ूरे ग़ैबदान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तम्बीह फ़रमाई वरना रोज़े की ह़ालत में अगर इन्ज़ाल होने और जिमाअ़ में पड़ने का अन्देशा न हो तो बीवी का बोसा लेने में कोई ह़रज नहीं। जैसा कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब **फ़ैज़ाने रमज़ान** में **अह़कामे रोज़ा** के तह़त रद्दुल मुह़तार जि. 3, स. 396 के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : बीवी का बोसा लेना और गले लगाना और बदन को छूना मकरूह नहीं। हां अगर येह अन्देशा हो कि इन्ज़ाल हो जाएगा या जिमाअ़ में मुब्तला होगा (तो मकरूह है)।"

(फ़ैज़ाने सुन्नत, तख़रीज शुदा, जिल्द अव्वल, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, सफ़ह़ा 1057)

2.....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الایمان والرؤیا، باب ما عبّره عمر، الحدیث:٤، ج٧، ص٢٤١.

3.....المستدرك، کتاب اللباس، باب کان نبی الله یکره عشرة خصال، الحدیث:٧٤٩٨، ج٥، ص٢٧٥.

www.dawateislami.net

शैतानी बोल की मज़म्मत

﴾107﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में इराक़ से माल भेजा गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे तक़्सीम करना शुरूअ़ कर दिया, इतने में एक शख़्स खड़ा हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अगर कुछ माल दुश्मन या किसी नाज़िल होने वाली मुसीबत से बचाव के लिये बाक़ी रख लें तो बेहतर होगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हलाक करे ! तू शैतानी बोली बोल रहा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस माल के बारे में मुझे हुज्जत सिखाई है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आने वाले कल की ख़ातिर आज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं कर सकता, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता, मैं तो मुसलमानों के लिये वोही करूंगा जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये किया।"

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक ख़स्लत :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ व साबित बातों का ए'तिराफ़ करते और बे बुन्याद बातों से किनाराकश रहते और कहा गया है कि "तसव्वुफ़ खरे के लिये खोटे को छोड़ देने का नाम है।"

﴾108﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन सुरीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करता हूं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भी ता'रीफ़ करता हूं।" इरशाद फ़रमाया : "बेशक तेरा रब عَزَّوَجَلَّ ह़म्द को पसन्द फ़रमाता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अश्आ़र सुनाने लगा कि इतने में एक लम्बे क़द वाले शख़्स ने इजाज़त चाही तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़ामोश करा दिया। वोह शख़्स आया, कुछ देर बात चीत की और चला गया। उस के चले जाने के बा'द मैं ने दोबारा अश्आ़र कहने शुरूअ़ किये तो वोह फिर आ गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़ामोश करा दिया। कुछ देर गुफ़्तगू कर के वोह चला गया तो मैं ने फिर अश्आ़र कहे। ऐसा दो तीन मरतबा हुवा तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कौन था जिस के लिये

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ख़ामोश करा दिया करते थे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह उ़मर हैं जो बात़िल को पसन्द नहीं करते ।"(1)

﴾109﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते अस्वद तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अश्आ़र सुनाने में मसरूफ़ हो गया । फिर एक लम्बे क़द वाले शख़्स ने इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़ामोश करवा दिया । जब वोह चला गया तो रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सुनाओ ।" मैं फिर अश्आ़र सुनाने में मसरूफ़ हो गया । कुछ देर के बा'द वोह फिर आ गया तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़ामोश करा दिया, जब वोह चला गया तो रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सुनाओ ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह कौन शख़्स है ? जब आता है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ख़ामोश होने का हुक्म फ़रमाते हैं और जब चला जाता है तो दोबारा सुनाने का इरशाद फ़रमाते हैं : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं जो बात़िल से जुदा हैं ।"(2)

ह़म्दो ना'त सुनना जाइज़ है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "येह इस बात की दलील है कि ह़म्दो ना'त का सुनना जाइज़ और मुबाह़ है । क्यूंकि इन के अश्आ़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ व तौसीफ़ पर मुश्तमिल थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाना कि "उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) बात़िल को पसन्द नहीं करते" इस से वोह शख़्स मुराद है जो बादशाहों और मालदारों की मद्ह़ सराई को कमाई का ज़रीआ़ बना लेता है और माल की ह़िर्स व त़म्अ़ की वज्ह से ख़ुशामद पसन्द लोगों के आस पास घूमता रहता है और अपने झूट से वोह सारी मह़ाफ़िल व मजालिस को ऐ़बदार बना देता है क्यूंकि वोह किसी की ऐसी ता'रीफ़ भी कर गुज़रता है जिस का वोह मुस्तह़िक़ नहीं होता और अगर कोई अ़त़िय्या न दे तो रुत्बे

---

1. ......الادب المفرد للبخاری، باب من مدح فی الشعر، الحدیث:٣٤٥، ص١٠٦.
2. ......المعجم الاوسط، الحدیث:٥٧٩٤، ج٤، ص٢٢٤.

www.dawateislami.net

वाले शख़्स की शान कम करने की कोशिश करता है। तो इस क़िस्म की कमाई व पेशा बातिल है इसी लिये हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) बातिल को पसन्द नहीं करते" जब कि सहीह़ अश्आ़र हिक्मतों से भरपूर, ख़ूब सूरत ख़ज़ाना है जिस के कहने की सलाहिय्यत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ माहिर इल्मो फ़न को अ़ता फ़रमाता है और ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) भी अश्आ़र कहा करते थे।"

﴾110﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन सरीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अश्आ़र सुनाया करता था और मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा की पहचान न थी, एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में एक ऐसा शख़्स ह़ाज़िर हुवा जिस के शाने चौड़े और सर के अगले ह़िस्से पर बाल नहीं थे किसी ने दो बार मुझे ख़ामोश होने का कहा तो मैं ने कहा : "इस की मां इसे गुम करे ! येह कौन है जिस की वज्ह से मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अश्आ़र सुनाने से ख़ामोश हो जाऊं ?" किसी ने कहा : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं) फिर मैं समझ गया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह मुझे शे'र कहते हुवे सुन लें तो उन के लिये कोई मुश्किल नहीं कि कुछ कहे बिग़ैर मुझे पाउं से घसीटते हुवे बक़ीअ़ तक ले जाएं।"(1)

मिसाली शख़्सिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "शिर्क व इनाद से पाक और मा'रिफ़त व मह़ब्बत से लबरेज़ बन्दगाने ख़ुदा का येही रास्ता है कि कोई बातिल क़ौल या फ़े'ल उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल नहीं कर सकता और कोई ह़ालत उन्हें ह़क़ की जानिब मुतवज्जेह होने से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती, वोह हमेशा कामिलुल ह़ाल और मज़बूत़ दिल के साथ ह़क़ के रफ़ीक़ होते हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुश्किलात में भी अपने इ़ज़्ज़त व क़ुव्वत वाले रब عَزَّوَجَلَّ (की रिज़ा व ख़ुशनूदी) के त़ालिब रहते और अह़कामाते ख़ुदावन्दी की बजा आवरी में ख़ुशह़ाली व बदह़ाली की परवाह नहीं करते थे। और कहा गया है कि : "तसव्वुफ़ दुन्यावी मरातिब से मुंह मोड़ कर आख़िरत के अर्फ़अ़ व आ'ला मरातिब की त़रफ़ मुतवज्जेह होने का नाम है।"

(1)......المعجم الکبیر، الحدیث:٨١٩، ج١، ص٢٨٢.

www.dawateislami.net

आ़जिज़ी व इन्किसारी :

﴾111﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुल्के शाम की जानिब तशरीफ़ लाते हुवे रास्ते में एक दरयाई गुज़रगाह पर पहुंचे तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने ऊंट से उतरे, जूते हाथ में पकड़ कर ऊंट को साथ लिये पानी में उतर गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "आज आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अहले ज़मीन के नज़्दीक बहुत बड़ा काम किया (या'नी येह आप की शायाने शान नहीं) है।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : "ऐ अबू उ़बैदा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ! काश ! येह बात तुम्हारे इ़लावा कोई और कहता, बेशक तुम इन्सानों में से ज़लील तरीन लोग थे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने रसूल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ तुम को मुअ़ज़्ज़ज़ बना दिया लिहाज़ा जब भी तुम उसे छोड़ कर कहीं और इ़ज़्ज़त तलाश करोगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ज़िल्लत व ख़्वारी में मुब्तला फ़रमा देगा।"(1)

﴾112﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुल्के शाम तशरीफ़ लाए और लोग आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का इस्तिक़्बाल करने निकले तो उस वक़्त आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने ऊंट पर सुवार थे। लोगों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! चूंकि क़ौम के सरदार और अ़ज़ीम लोग भी आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुलाक़ात को आएंगे इस लिये बेहतर येह है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तुर्की घोड़े पर सुवार हो जाएं।" ख़लीफ़ए सानी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें वहां नहीं पाता।" येह कहने के बा'द आस्मान की त़रफ़ हाथ से इशारा किया और फ़रमाया : "बेशक अस्ल मुआ़मला तो वहां है इस लिये तुम मुझे मेरे ऊंट पर ही रहने दो।"(2)

रिआ़या की ख़बर गीरी :

﴾113﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अ़ब्दुल्लाह औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रात के अन्धेरे में अपने घर से निकल कर एक घर में दाख़िल हुवे फिर कुछ देर बा'द वहां से निकले और दूसरे घर में दाख़िल हुवे, ह़ज़रते

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی حسن الخلق،فصل فی التواضع، الحدیث: ۸۱۹۶، ج۶،ص۲۹۱.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام عمر بن الخطاب، الحدیث:۲،ج۸،ص۱۴۶.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सब देख रहे थे। चुनान्चे, सुब्ह़ जब ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस घर में जा कर देखा तो वहां एक नाबीना और अपाहज बुढ़िया को पाया और उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : "उस आदमी का क्या मुआ़मला है जो तुम्हारे पास आता है?" बुढ़िया ने जवाब दिया : "वोह इतने अ़र्से से मेरी ख़बरगीरी कर रहा है और मेरे घर के काम काज के इ़लावा मेरी गन्दगी भी साफ़ करता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (अपने आप को मुख़ात़ब कर के) कहने लगे : "ऐ त़लह़ा ! तेरी मां तुझ पर रोए, क्या तू अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नक़्शे क़दम पर नहीं चल सकता?"(1)

﴾114﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक कूड़ाख़ाने के पास से गुज़रे तो वहां रुक गए। रुफ़क़ा को उस की बद बू से अज़िय्यत हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी दुन्या है जिस की तुम ह़िर्स व लालच करते और इस के गुन गाते हो।"(2)

ऐ़शो इ़शरत से पाक ज़िन्दगी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐ़शो इ़शरत से कोसों दूर भागते और हमेशा रहने वाली आख़िरत की ज़िन्दगी की बेहतरी के ख़्वाहां रहते थे। हमेशा मशक़्क़त बरदाश्त करते और शहवात व ख़्वाहिशात से दूर रहते और कहा गया है कि "नफ़्स को सख़्तियां और मशक़्क़त बरदाश्त करने का आ़दी बनाने का नाम तसव्वुफ़ है" और येही उ़म्दा मक़ाम है।

नफ़्स पर सख़्तियां :

﴾115﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि कह़्त़साली के दिन थे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने नफ़्स को घी से रोक रखा था और सिर्फ़ ज़ैतून पर गुज़ारा किया करते थे जिस की वज्ह से एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पेट में तक्लीफ़

❶......صفة الصفوة،ابو حفص عمر بن الخطاب،ذکر اھتمامه برعیته،ج۱،ص۱٤٦.

❷......الزھد للامام احمد بن حنبل،زھد عمر بن الخطاب،الحدیث:٦١٦،ص١٤٦.

www.dawateislami.net

होने लगी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पेट पर उंगली मारी और कहा : "तुझे जितनी तक्लीफ़ होती है होती रहे, जब तक लोगों से फ़ाक़े की सख़्ती ख़त्म नहीं होती तेरे लिये मेरे पास येही कुछ है।"(1)

﴾116﴿.....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा बिन्ते उमर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अपने वालिद से अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नर्म कपड़ा ज़ेबे तन फ़रमाएं और अच्छा खाना तनावुल फ़रमाएं तो येह बेहतर है इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसीअ़ रिज़्क़ और कसीर माल अ़ता फ़रमाया है।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ बेटी ! मैं इस मुआ़मले में तेरी मुख़ालफ़त करूंगा, क्या तुझे याद नहीं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़िन्दगी में किस क़दर मुश्किलात का सामना करना पड़ा ?" फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हालाते ज़िन्दगी बयान करना शुरूअ़ किये यहां तक कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोने लगीं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो कुछ तुम ने कहा ऐसा ही है। लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस क़दर मुझ से हो सकता है मैं मुश्किलात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इत्तिबाअ़ करूंगा शायद मैं आख़िरत की राहत वाली ज़िन्दगी में उन का शरीक हो सकूं।"(2)

लज़ीज़ और उ़म्दा गिज़ाओं से परहेज़ :

﴾117﴿.....हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम से बेहतर लिबास पहन सकता हूं, अच्छा खाना खा सकता हूं और आसाइश वाली ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सीने के गोश्त, घी, आग पर भुने हुवे गोश्त, चटनी और चपातियों से नावाक़िफ़ नहीं हूं लेकिन (इस्ति'माल इस लिये नहीं करता कि) मैं ने सुना है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ने'मत व आसाइश पाने वाली क़ौम को आ़र दिलाई है। जैसा कि इरशादे ख़ुदावन्दी है :

---

❶......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عمر بن الخطاب،الحديث:٦٠٨،ص١٤٥.

❷......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عمر بن الخطاب،الحديث:٦٦٠،ص١٥٢.

www.dawateislami.net

اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا وَاسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا ۚ (پ٢٦،الاحقاف:٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके।* (1)

﴾118﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम भी ज़िन्दगी की लज़्ज़ात चाहते हैं कि हम हुक्म दें कि हमारे लिये छोटी बकरी भूनी जाए और मेदे की रोटी और मश्कीज़े में नबीज़ बनाई जाए यहां तक कि जब गोश्त चकोर (या'नी तीतर की मिस्ल पहाड़ी परन्दे के गोश्त) की त़रह़ (नर्म) हो जाए तो उसे खाएं और उस से पियें लेकिन हम येह चाहते हैं कि पाकीज़ा चीज़ों को आख़िरत के लिये बचा लें क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا (پ٢٦،الاحقاف٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके।*

﴾119﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि इराक़ी लोगों का एक वफ़्द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। खाने के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने देखा कि वोह जिस्मों को त़ाक़तवर बनाने के अन्दाज़ में खा रहे हैं तो इरशाद फ़रमाया : ऐ अहले इराक़ ! अगर मैं चाहूं तो तुम्हारी त़रह़ उ़म्दा खाने बनवा सकता हूं लेकिन हम दुन्या की उन ने'मतों को छोड़ देते हैं, जो हमें आख़िरत में मिलेंगी क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक क़ौम के बारे में येह फ़रमान नहीं सुना :

اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا (پ٢٦،الاحقاف٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके।* (2)

﴾120﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन अबू साबित رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ एक सह़ाबी से रिवायत करते हैं कि "अहले इराक़ का एक वफ़्द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ भी शामिल थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उन के सामने एक बड़ा थाल पेश किया जिस में रोटी और ज़ैतून के तेल का खाना बना हुवा था और फ़रमाया : "खाओ !" उन्हों ने बहुत कम

---

1 ......الزهد لابن المبارك ،باب ماجاء فى الفقر،الحديث:٥٧٩،ص٢٠٤،مختصرًا.

2 ......المصنف لابن ابى شيبة،كتاب الزهد،باب كلام عمربن الخطاب،الحديث:٣٠،ج٨،ص ١٥١ .

www.dawateislami.net

खाया, तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम येह खाना क्यूं नहीं खाते ? तुम किस चीज़ का इरादा रखते हो ? खट्टा, मीठा, ठन्डा, या गर्म ? फिर इसे पेट में डालोगे ?"(1)

दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लो :

﴾121﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन हौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने इस बात पर ग़ौर किया है कि जब दुन्या का इरादा करता हूं तो आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता हूं और जब आख़िरत का इरादा करता हूं तो दुन्या को नुक़्सान पहुंचता है लिहाज़ा जब मुआ़मला इस त़रह़ का है तो तुम (आख़िरत की बेहतरी की ख़ात़िर) फ़ानी दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लिया करो।"(2)

नेकी की दा'वत के मक्तूब :

﴾122﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू बुर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक ख़त़ लिखा जिस में ह़म्दो सलात के बा'द फ़रमाया : "ख़ुश बख़्त ह़ुक्मरान वोह है जिस की वज्ह से उस की रिआ़या ख़ुशह़ाल हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बद बख़्त ह़ुक्मरान वोह है जिस की वज्ह से उस की रिआ़या का बुरा ह़ाल हो। ख़ुशह़ाल ज़िन्दगी गुज़ारने से इजतिनाब करना वरना तुम्हारे मुक़र्रर कर्दा आ़मिल भी ख़ुशह़ाली को पसन्द करेंगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां तेरी मिसाल उस जानवर की त़रह़ होगी जो सब्ज़े को देखते ही उस पर टूट पड़ता है कि खा कर मोटा हो जाए और फिर उस का मोटा होना ही उस की मौत का बाइ़स बन जाए।" وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ(3)

﴾123﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ एक ख़त़ लिखा, उस में फ़रमाया : "जिस शख़्स की निय्यत दुरुस्त हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और लोगों के दरमियान मुआ़मलात के लिये काफ़ी हो जाता है और जो लोगों की ख़ात़िर ऐसी चीज़ से

---

1 ......الزهد لهناد بن السرى،باب الزهدفى الطعام،الحديث:٦٨٤،ج٢، ص ٣٦٠۔
المصنف لابن ابى شيبة ، كتاب الزهد ،باب كلام عمر بن الخطاب ،الحديث:٣٧،ج٨، ص ١٥٢، بتغيرقليل.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل ،زهد عمر بن الخطاب ،الحديث:٦٦٥،ص ١٥٢۔١٥٣ .

3 ......المصنف لابن ابى شيبة،كتاب الزهد،باب كلام عمربن الخطاب ، الحديث:٧، ج٨، ص ١٤٧ .

www.dawateislami.net

ज़ीनत हासिल करे जिस की हक़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कुछ और हो तो ऐसे शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रुस्वा कर देता है और तुम्हारा क्या ख़याल है जल्द हासिल होने वाले मा'मूली रिज़्क़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के ख़ज़ानों में से कौन सी चीज़ अफ़्ज़ल है ?'' وَالسَّلَام[1]

फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के अनमोल इरशादात व फ़रामीन उन के अह़वाल की ह़क़ीक़त पर दलालत करते हैं।

﴾124﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''हम ने सब्र को अपनी ज़िन्दगी की बेहतरीन चीज़ पाया।''[2]

﴾125﴿.....हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक मरतबा ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''तुम जानते हो कि लालच मोह़ताजी का बाइ़स है और लोगों से मायूस हो जाना मालदारी का सबब है और बिलाशुबा इन्सान जब किसी चीज़ से मायूस होता है तो उस से बे नियाज़ हो जाता है।''[3]

﴾126﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ़मिर शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरा दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मख्खन से भी ज़ियादा नर्म हो गया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पथ्थर से भी सख़्त तर हो गया (या'नी ज़ाती मुआ़मले में नर्म और हुदूदे इलाही के मुआ़मले में सख़्त हो गया)।''

ताइबीन की सोहबत में बैठो :

﴾127﴿.....हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़क्बा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''तौबा करने वालों की सोहबत में बैठो कि वोह सब से ज़ियादा नर्म दिल होते हैं।''[4]

---

1 ......الزهد لهناد بن السرى ،باب الرياء ،الحديث:٨٥٩،ج٢،ص٤٣٦.
2 ......صحيح البخارى ،كتاب الرقاق ،باب الصبر عن محارم الله،ص٥٤٣.
3 ......الزهد للامام احمد بن حنبل ،زهد عمر بن الخطاب ،الحديث:٦١٣،ص١٤٦.
4 ......المصنف لابن ابى شيبة ،كتاب الزهد ،باب كلام عمر بن الخطاب ،الحديث:٢٤،ج٨،ص١٥٠.

www.dawateislami.net

﴿128﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ख़ालिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कुरआने करीम को याद करने वाले और इल्म का सर चश्मा बन जाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आज के दिन का ही रिज़्क़ त़लब करो।"(1)

सब्रो शुक्र इख़्तियार करो :

﴿129﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को इस त़रह़ दुआ़ मांगते सुना : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे रास्ते में अपनी जानो माल ख़र्च करना चाहता हूं।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "तुम में से कोई ख़ामोश क्यूं नहीं होता कि अगर आज़माइश में डाला जाए तो सब्र करे और आ़फ़िय्यत पाए तो शुक्र बजा लाए।"(2)

﴿130﴾.....हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन जा'दा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर येह 3 चीज़ें या'नी (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशानी झुकाना (2) ऐसे इजतिमाआ़त में शिर्कत करना जिन में अच्छी बातें इस त़रह़ चुनने को मिलती हैं जिस त़रह़ उ़म्दा खजूरों को चुना जाता है और (3) राहे ख़ुदा में सफ़र करना न होता तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को और ज़ियादा पसन्द करता(3)।"(4)

---

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عمر بن الخطاب، الحديث:٦٣٢، ص١٤٨.

2 ......الزهد لهناد بن السرى، باب سؤال الله العافية، الحديث:٤٤٤، ج١، ص٢٥٦.

3 .....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सदक़े तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** को ता क़ियामत सलामत व आबाद रखे कि इस पुर फ़ितन दौर में 100 से ज़ाइद शो'बाजात में सुन्नतों की ख़िदमत कर रही है। जिन में से एक शो'बा "**मदनी क़ाफ़िला**" भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में बयान कर्दा तीनों बातों पर अ़मल करने का बा आसानी मौक़अ़ मिलता है। इस लिये हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **मदनी जदवल** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में 30 दिन और उ़म्र भर हर 30 दिन में कम अज़ कम **3 दिन** के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र को अपना मा'मूल बनाए। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

4 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عمر بن الخطاب، الحديث:٦٠٧، ص١٤٥.

www.dawateislami.net

सर्दी का मौसिम ग़नीमत है :

﴾131﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान हिन्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सर्दी का मौसिम इबादत गुज़ारों के लिये ग़नीमत है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गिर्या व ज़ारी :

﴾132﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरए अक़्दस पर बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी के सबब दो सियाह लकीरें पड़ गई थीं।"(2)

﴾133﴿.....हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब कुरआने करीम की कोई आयते करीमा तिलावत करते तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का सांस रुक जाता और इस क़दर रोते कि ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते फिर घर से बाहर तशरीफ़ न लाते यहां तक कि लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मरीज़ समझ कर इयादत के लिये आते।"(3)

﴾134﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे नमाज़ पढ़ी तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के रोने की आवाज़ तीन सफ़ों के पीछे तक सुनी।"(4)

हि़साबे आख़िरत का ख़ौफ़ :

﴾135﴿.....हज़रते सय्यिदुना साबित बिन ह़ज्जाज رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अपने (आ'माल का) वज़्न कर लो इस से पहले कि इन का वज़्न किया जाए और अपना मुह़ासबा कर लो इस से पहले कि तुम से हि़साब लिया जाए। बेशक येह तुम पर क़ियामत के दिन के हि़साब से आसान है और बड़ी पेशी के लिये तय्यार हो जाओ जिस के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

---

1 ......موسوعة لابن ابی الدنیا ، کتاب التھجد وقیام اللیل، الحدیث:٤٢١، ج١، ص٣٣٢.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عمر بن الخطاب، الحدیث:٦٣٨، ص١٤٩.

3 ......المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الزھد، باب کلام عمر بن الخطاب ، الحدیث:١٦، ج٨، ص١٤٩.

4 ......موسوعة لابن ابی الدنیا ، کتاب الرقة و البکاء ، الحدیث:٤١٦، ج٣، ص٢٥٣، بتغیرقلیلٍ.

www.dawateislami.net

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿۱۸﴾
(پ۲۹،الحاقة:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन तुम सब पेश होगे कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी ।[1]

﴾136﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का फ़रमान है : "ऐ काश ! मैं अपने घर वालों के लिये एक मेंढ़ा होता वोह एक अ़र्से तक मुझे खिला पिला कर मोटा ताज़ा करते ह़त्ता कि मैं ख़ूब फ़र्बा हो जाता और घर वालों के कुछ मेहमान आते तो वोह मेरा कुछ ह़िस्सा भून लेते और कुछ ह़िस्से का सालन बना लेते फिर मुझे खाते और पेट से निकाल देते (ऐ काश !) मैं इन्सान न होता ।"[2]

ब वक़्ते शहादत आ़जिज़ी व इन्किसारी :

﴾137﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का सर उन के मरज़ुल मौत में मेरी रान पर था । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझ से फ़रमाया : "मेरा सर ज़मीन पर रख दो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप क्यूं परेशान होते हैं सर मेरी रान पर रहे या ज़मीन पर ?" फ़रमाया : "इसे ज़मीन पर रख दो !" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का सर ज़मीन पर रख दिया । इस के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "हलाकत हो मेरी और मेरी मां के लिये अगर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़्म न फ़रमाए ।"[3]

﴾138﴿.....हज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को नेज़ा मारा गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मेरे पास ज़मीन के बराबर भी सोना होता तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब को देखने से क़ब्ल ही सारा सोना इस के इ़वज़ क़ुरबान कर देता ।"[4]

﴾139﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को नेज़ा मारा गया तो मैं आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! ख़ुश ख़बरी हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل ، زهد عمر بن الخطاب ،الحديث:٦٣٣،ص١٤٨ .
2 ......الزهدلهناد بن السرى،باب باب من قال،الحديث:٤٤٩، ج١، ص٢٥٨ .
3 ......مسند ابن الجعد ،شعبة بن عاصم بن عبيد الله ،الحديث:٨٧٠،ص١٣٦ .
4 ......صحيح البخارى،كتاب فضائل اصحاب النبى،باب مناقب عمر بن الخطاب ،الحديث:٣٦٩٢،ص٣٠٠ .

www.dawateislami.net

ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए शहर फ़त्ह करवाए, निफ़ाक़ का ख़ातिमा किया और रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास ! क्या आप हुकूमत से मुतअ़ल्लिक़ मेरी ता'रीफ़ कर रहे हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की, कि "इमारत के इलावा भी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं चाहता हूं कि ख़िलाफ़त से इस त़रह निकल जाऊं जिस त़रह इस में दाख़िल हुवा था और मेरे लिये इस पर कोई सवाब हो न अ़ज़ाब।"(1)

ख़लीफ़ए वक़्त की चादर में बारह पैवन्द :

﴾140﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि "एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में ख़ुत़बा दिया और उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो चादर पहनी हुई थी उस में बारह जगह पैवन्द लगे हुवे थे।"(2)

एह़सासे ज़िम्मेदारी :

﴾141﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर नहरे फ़ुरात के किनारे एक बकरी भी भूकी मर गई तो मुझे अन्देशा है कि बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से उस के बारे में बाज़पुर्स फ़रमाएगा।"

रह़मते इलाही की उम्मीद :

﴾142﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबी कसीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर कोई मुनादी आस्मान से निदा दे कि "**ऐ लोगो ! तुम सब जन्नत में जाओगे सिवाए एक शख़्स के**" तो मुझे ख़ौफ़ है कि वोह शख़्स कहीं मैं न होऊं और अगर कोई मुनादी निदा दे कि "**ऐ लोगो ! तुम सब जहन्नम में जाओगे सिवाए एक शख़्स के**" तो मुझे उम्मीद है कि वोह शख़्स मैं होऊंगा।

---

1 ......السنن الکبری للبیہقی، کتاب آداب القاضی، باب کراھیۃ الامارۃ......الخ، الحدیث:۲۲۸ ۱۰ ۲، ج۱۰، ص۱۶۶.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عمر بن الخطاب، الحدیث:۶۵۸، ص۱۵۲.

www.dawateislami.net

﴾143﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहि़बज़ादे (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की नेकी करने में कोई फ़र्क़ न होता था यहां तक कि कोई बात या अ़मल ऐसा न करते जिस से दोनों में इम्तियाज़ हो सके।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़एं

﴾144﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَکِیْم से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह दुआ़ मांगा करो اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ سَرِیْرَتِیْ خَیْرًا مِّنْ عَلَانِیَّتِیْ وَاجْعَلْ عَلَانِیَّتِیْ حَسَنَۃ "या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे बाति़न को मेरे ज़ाहिर से भी बेहतर बना दे और मेरे ज़ाहिर को और अच्छा कर दे।"(2)

﴾145﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन बिलाल मुह़ारबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा बने तो मिम्बर पर खड़े हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की फिर फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं दुआ़ मांगता हूं, तुम आमीन कहते जाओ ! फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह दुआ़ की : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं सख़्त हूं, मुझे नर्म कर दे। मैं बख़ील हूं, मुझे सख़ी बना दे। मैं कमज़ोर हूं, मुझे क़ुव्वत अ़ता फ़रमा।"(3)

﴾146﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यूं दुआ़ करते हुवे सुना : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी शहादत किसी ऐसे शख़्स के हाथों न हो जिस ने तुझे सजदा किया हो कि कहीं वोह इस वज्ह से बरोज़े क़ियामत मुझ से झगड़ा न करे।"(4)

﴾147﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह दुआ़ मांगते हुवे सुना :

1 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم٥٦عمربن الخطاب، باب ذکراستخلاف عمربن الخطاب،ج٣،ص٢٢١.

2 ......جامع الترمذی،کتاب الدعوات،باب دعاء:اللھم اجعل سریرتی خیرامن علانیتی، الحدیث:٣٥٨٦،ص٢٠٢١.

3 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد،رقم٥٦عمربن خطاب،باب ذکراستخلاف عمربن خطاب،ج٣،ص٢٠٨،بتغیر.

4 ......موطا للامام مالك،کتاب الجھاد، باب الشھداء فی سبیل اللّٰہ ،الحدیث:١٠٢٤،ج٢،ص٢٠.

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ قَتْلًا فِیْ سَبِیْلِکَ،وَوَفَاۃً فِیْ بَلَدِنَبِیِّکَ या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी राह में शहादत की मौत अ़ता फ़रमा और अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर में मरना नसीब फ़रमा।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''येह कैसे हो सकता है ?'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा तो ऐसा होगा।''(1)

﴾148﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वादिये बत़्हा में एक जगह अपने हाथों से मिट्टी हमवार की फिर उस पर अपनी चादर का एक हिस्सा बिछा कर उस पर चित लैट गए और अपने दोनों हाथ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर के दुआ़ मांगी : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं बूढ़ा हो चुका हूं मेरे आ'साब कमज़ोर पड़ गए, मेरी रिआ़या फैल चुकी है, पस मेरे ज़ाएअ़ करने और ज़ियादती करने से क़ब्ल तू मुझे अपने पास बुला ले।''(2)

﴾149﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन हन्ज़ला رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ़ मांगा करते थे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ تَاْخُذَنِیْ عَلٰی غِرَّۃٍ اَوْتَذَرَنِیْ فِیْ غَفْلَۃٍ اَوْتَجْعَلَنِیْ مِنَ الْغَافِلِیْنَ या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं अचानक मौत, ग़फ़्लत की मौत और ग़फ़्लत की ज़िन्दगी से तेरी पनाह मांगता हूं।(3)

﴾150﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ख़िरास رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़ुत़बे में येह दुआ़ मांगी : اَللّٰھُمَّ اعْصِمْنَابِحَبْلِکَ وَثَبِّتْنَا عَلٰی اَمْرِکَ ''या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रस्सी के साथ हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा और अपने दीन पर साबित क़दमी अ़ता फ़रमा।''(4)

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जन्नत में महल :

﴾151﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मुझे इस बात की बहुत ख़्वाहिश थी कि मुझे कोई अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में बताए। पस मैं ने ख़्वाब में एक महल देखा तो पूछा : ''येह महल किस का है ?'' फ़िरिश्तों ने मुझे बताया कि ''येह महल उ़मर बिन ख़त्ताब का है।'' इतने में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना

---

1 ......المعجم الاوسط ،الحديث:٢٧٩٥،ج٢،ص١٣٨.
2 ......موطا للامام مالك ،كتاب الحدود ، باب ماجاء فى الرجم ،الحديث:١٥٨٥،ج٢،ص٣٣٤.
3 ......المصنف لابن ابى شيبة،كتاب الزهد،كلام عمربن خطاب،الحديث:١١،ج٨،ص١٤٨.
4 ......شرح اصول اعتقاد اهل السنة والجماعة ،باب جماع الكلام فى الايمان،قول عمرو معاذ،الحديث:١٥٣٠،ج١،ص٧٢٦.

www.dawateislami.net

उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस मह़ल से इस ह़ाल में बाहर तशरीफ़ लाए कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एक चादर थी गोया अभी गुस्ल फ़रमाया है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "अगर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरी बख़्शिश न फ़रमाता तो क़रीब था कि मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "मुझे तुम से जुदा हुवे कितना अ़र्सा गुज़रा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "12 साल।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अब जा कर ह़िसाबो किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं।"(1)

﴾152﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पड़ोसी था मैं ने किसी को इन से अफ़्ज़ल नहीं पाया, इन की रात इ़बादत में गुज़रती तो दिन रोज़े और लोगों की ज़रूरिय्यात पूरी करने में। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि "मुझे ख़्वाब में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ियारत नसीब फ़रमा। पस मैं ने देखा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीने के बाज़ार की त़रफ़ से सर पर इ़मामा बांधे तशरीफ़ ला रहे हैं, मैं ने सलाम किया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरे सलाम का जवाब दिया फिर मैं ने पूछा : "आप कैसे हैं ?" फ़रमाया : "मैं ख़ैरिय्यत से हूं।" मैं ने पूछा : "आप के साथ क्या मुआ़मला हुवा ?" फ़रमाया : "अब ह़िसाबो किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं। अगर रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ मेरी बख़्शिश न फ़रमाता तो क़रीब था कि मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती।"(2)

नज़रे फ़ारूक़ी में दोस्ती का मे'यार :

﴾153﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन शिहाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَھَّاب से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बे फ़ाइदा कामों में मश्ग़ूल न होना, अपने दुश्मन से दूर रहना, दोस्ती के लिये सिर्फ़ अमानत दार शख़्स का इन्तिख़ाब करना क्यूंकि अमानत दार के बराबर क़ौम का कोई शख़्स नहीं होता, फ़ाजिर शख़्स की सोह़बत इख़्तियार करने से बचना वरना वोह तुम्हें गुनाह के रास्ते पर लगा देगा और उसे कभी भी अपना राज़ न बताना और अपने मुआ़मलात का मश्वरा ऐसे लोगों से करना जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हों।"(3)

---

(1)......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ٥٢٠٦عمر بن الخطاب ،ج٤٤،ص٤٨٣ بروایة عبداللّٰہ بن عمرو.

(2)......الطبقات الکبری لابن سعد ،رقم٥٦عمر بن خطاب،ج٣، ص٢٨٦،مختصرًا.

(3)......المصنف لابن ابی شیبة ،کتاب الزهد ،کلام عمر بن الخطاب ،الحدیث:٩،ج٨،ص١٤٧ .

www.dawateislami.net

हक़ का बोल बाला करने वाले :

﴾154﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो बाति़ल को छोड़ कर उसे मौत की नींद सुला देते और ह़क़ का बोल बाला कर के उसे जिला बख़्शते हैं। उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की त़रफ़ रग़बत दिलाई जाए तो ख़ुश होते और अ़ज़ाबे इलाही से डराया जाए तो डरने लगते हैं। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ौफ़ज़दा होने के बा'द दोबारा इत़मीनान की सांस नहीं लेते और बिन देखे ला ज़वाल यक़ीन से माला माल होते हैं। ख़ौफ़ ने उन को ऐसा ख़ुलूस बख़्शा कि बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी के मुक़ाबले में उन्हों ने हर चीज़ से जुदाई इख़्तियार कर ली। ज़िन्दगी उन के लिये ने'मत और मौत करामत है। हूरे ऐ़न से उन का निकाह़ होगा और हमेशा रहने वाले नौ उ़म्र लड़के उन की ख़िदमत पर मा'मूर होंगे।''

प्यारे इस्लामी भाइयो !

सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِم या'नी इ़ल्म का त़लब करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

(سنن ابن ماجه، الحديث ٢٢٤، ج ١، ص ١٤٦)

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رضی اللہ تعالٰی عنہ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ अल्लाह عزوجل के लिये कमाले इन्किसारी के साथ इज़्हारे बन्दगी करने वाले। ज़ुन्नूरैन[1] लक़ब पाने वाले। ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले। राहे ख़ुदा में दो मरतबा हिजरत करने वाले। दोनों क़िब्लों (बैतुल मुक़द्दस और ख़ानए का'बा) की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने का शरफ़ ह़ासिल करने वाले। मुसलमानों के तीसरे अ़ज़ीमुश्शान ख़लीफ़ा थे। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उन लोगों में से हैं जिन के बारे में अल्लाह عزوجل ने इरशाद फ़रमाया :

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ (پ۷، المائدۃ:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ का शुमार अल्लाह عزوجل के उन इ़बादत गुज़ार बन्दों में होता है जो सारी सारी रात अल्लाह عزوجل की बारगाह में सजदा व क़ियाम की ह़ालत में रहते। आख़िरत से डरते और अपने रब عزوجل की रह़मत की आस लगाए रखते हैं। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़ुसूसी सिफ़ात में सख़ावत व ह़या, ख़ौफ़े ख़ुदा और रह़मते ख़ुदावन्दी की हमेशा उम्मीद रखना शामिल हैं। दिन सख़ावत व रोज़े की ह़ालत में गुज़रता तो रात बारगाहे ख़ुदावन्दी में सजदा व क़ियाम में कट जाती। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को मुसीबतें आने और उन पर सब्र कर के जन्नत पाने की ख़ुश ख़बरी सुनाई गई। कहा गया है कि "तसव्वुफ़ राहे ह़क़ में मसरूफ़े अ़मल रह कर मन्ज़िल तक रसाई पाने का नाम है।"

उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका :

﴾155﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़ातिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से मरवी है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رضی اللہ تعالٰی عنہ का ज़िक्रे ख़ैर होने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رضی اللہ تعالٰی عنہما) ने फ़रमाया : "अभी अमीरुल मोमिनीन तशरीफ़ लाएंगे। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم

1.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ को ज़ुन्नूरैन (या'नी दो नूरों वाला) इस लिये कहा जाता है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की 2 शहज़ादियां ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या और ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम (رضی اللہ تعالٰی عنہما) यके बा'द दीगरे आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में आईं थीं। (आ़म्मह कुतुबे सीरत)

www.dawateislami.net

तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन खुश बख़्तों में से हैं जिन की शाने अ़ज़्मत निशान में रह़मान عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नाज़िल हुवा :

امَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

(پ۷،المائدۃ:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नेकियों को दोस्त रखता है।[1]

﴾156﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में है :

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّ قَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَ يَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ

(پ۲۳،الزمر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए।[2]

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शर्मो ह़या

﴾157﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा पैकरे शर्मो ह़या और मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान हैं।"[3]

﴾158﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा बा ह़या इन्सान उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान हैं।"[4]

﴾159﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन की शर्मो ह़या की शिद्दत बयान करते हुवे कहा कि "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......المصنف لابن ابی شیبة ،کتاب الفضائل ،ما ذکر فی فضل عثمان بن عفان ،الحدیث: ۳۸، ج۷،ص۴۹۳ .
2 ......صفة الصفوة ،ابوعبد اللّٰه عثمان بن عفان ،ذکر ثناء الناس علیه وارضاه،ج۱،ص۱۶۱ .
3 ......فردوس الاخبار للدیلمی ،باب الالف ،الحدیث:۱۷۹۰،ج۱،ص۲۵۰ .
4 ......المستدرك ،کتاب معرفة الصحابة ،باب حبر هذه الامة عبد اللّٰه بن عباس ،الحدیث:۶۳۳۵، ج۴،ص۶۸۹ .

www.dawateislami.net

किसी कमरे में होते और उस का दरवाज़ा भी बन्द होता तब भी नहाने के लिये कपड़े न उतारते और हया की वज्ह से कमर सीधी न करते थे।"(1)

﴾160﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "कुरैश के 3 शख़्सों का चेहरा सब से रौशन व प्यारा है। उन के अख़्लाक़ भी सब से अच्छे हैं और शर्मो हया में भी सब से बढ़ कर हैं। (वोह ऐसे हैं कि) अगर तुझ से बात करें तो झूट न बोलें और तुम उन से बात करो तो न झुटलाएं और वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान और अमीने उम्मत हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) हैं।"(2)

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इबादात

﴾161﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमेशा रोज़ा रखते और इब्तिदाई रात में कुछ आराम कर के फिर सारी रात इबादत में बसर करते।"(3)

﴾162﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मुझे एक बार मक़ामे इब्राहीम पर रात हो गई। मैं इशा की नमाज़ अदा कर के मक़ामे इब्राहीम पर पहुंचा यहां तक कि मैं उस में खड़ा हुवा तो इतने में एक शख़्स ने मेरे कन्धों के दरमियान हाथ रखा। मैं ने देखा तो वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। कुछ देर बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सूरए फ़ातिहा से कुरआने मजीद की तिलावत शुरूअ़ की यहां तक कि पूरा कुरआने मजीद ख़त्म कर लिया। फिर रुकूअ़ व सुजूद कर के नमाज़ ख़त्म की और अपने जूते ले कर चल दिये।" रावी फ़रमाते हैं : "मुझे नहीं मा'लूम कि इस से पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुछ नमाज़ पढ़ी थी या नहीं।"(4)

﴾163﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोहतरमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عثمان بن عفان ،الحدیث:٥٤٣،ج١،ص١٦٠.

2 ......المعجم الکبیر ،الحدیث:١٦،ج١،ص٥٦.

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ ،کتاب صلاۃ التطوع و الامامۃ، باب من کان یامر بقیام اللیل، الحدیث:٦،ج٢،ص١٧٣.

4 ......الزھد لابن المبارک،باب فضل ذکراللّٰہ ،الحدیث:١٢٧٦،ص٤٥٢،بتغیرقلیل.

www.dawateislami.net

"जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के इरादे से दुश्मनों ने घर को घेरा हुवा था आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त भी इस से बे नियाज़ थे कि लोग उन्हें शहीद कर दें या छोड़ दें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सारी रात इ़बादत करते और एक ही रक्अ़त में पूरा क़ुरआने मजीद ख़त्म कर लिया करते थे।"(1)

﴾164﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अश्तर से मिले तो पूछा : "क्या तू ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया है ?" उस ने कहा : "हां।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू ने रोज़ादार और इ़बादत गुज़ार शख़्स को शहीद किया है।"(2)

﴾165﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने क़ातिलों से फ़रमाया : "तुम ने उस शख़्स को शहीद किया जो सारी रात इ़बादत करता और एक रक्अ़त में क़ुरआने मजीद ख़त्म करता है।"(3)

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सब्र का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मसाइब व आज़माइश के आने और इन पर शिक्वा व शिकायत और बे सब्री से बचने की बिशारत पहले ही दे दी गई थी इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन ह़ालात में सब्र कर के बे सब्री से मह़फ़ूज़ रहे और शुक्र कर के आज़माइश में भी इत़ाअ़त करते रहे।" कहा गया है कि "तसव्वुफ़ आज़माइश की सख़्ती में सब्र कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात की ह़लावत ह़ासिल करने का नाम है।"

﴾166﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के एक बाग़ में ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था कि एक शख़्स आया उस ने दरवाज़ा खुलवाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस के लिये दरवाज़ा खोल दो और इस मुसीबत पर जो उस शख़्स को पहुंचेगी जन्नत की ख़ुश ख़बरी दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने दरवाज़ा

1......المعجم الكبير،الحديث: ١٣٠، ج١، ص٨٧.　2......المعجم الكبير،الحديث: ١١٤، ج١، ص٨١.

3......الزهد للامام احمد بن حنبل ،زهد عثمان بن عفان ،الحديث:٦٧٣، ص١٥٣.

www.dawateislami.net

खोला तो वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।" मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान की उन्हें ख़बर दी तो उन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मददगार है ।"(1)

﴾167﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़म्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के किसी बाग़ में थे । एक पस्त आवाज़ शख़्स ने आने की इजाज़त त़लब की, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्हें अन्दर आने दो और एक मुसीबत पर जो इन्हें पहुंचेगी जन्नत की ख़ुश ख़बरी दो ।" रावी फ़रमाते हैं : "वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । मैं ने उन्हें येह ख़बर दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा और क़रीब आ कर बैठ गए ।"(2)

﴾168﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अन्दर आने की इजाज़त त़लब की तो इरशाद फ़रमाया : "इन को आने की इजाज़त दो और एक मुसीबत पर जो इन को पहुंचेगी जन्नत की ख़ुश ख़बरी दो ।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुन कर फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सब्र का सुवाल करता हूं ।"(3)

चेहरे का रंग बदलता रहा :

﴾169﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सह्ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान किया कि जिस दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (को शहीद करने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के घर को घेरे में ले लिया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से एक वा'दा लिया था, मैं आज उस वा'दे के मुत़ाबिक़ सब्र करूंगा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उस वक़्त सह़ाबए किराम को उस दिन की ह़क़ीक़त का अन्दाज़ा हुवा कि जिस दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب فضائل اصحاب النبی،باب مناقب عمربن الخطاب ، الحدیث:۳۶۹۳،ص ۳۰۰.

2 ......مسند ابی داوٗدالطیالسی،الافراد عن عبد اللّٰہ بن عمرو،الحدیث:۲۲۸۷،ص ۳۰۲.

3 ......المعجم الاوسط ،الحدیث:۷۵۰۶،ج۵،ص ۳۳۳.

www.dawateislami.net

फ़रमाया था कि "मैं अपने एक सहाबी से राज़ो नियाज़ की बातें करना चाहता हूं।" अ़र्ज़ की गई : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बुला लाएं ?" फ़रमाया : "नहीं।" अ़र्ज़ की गई : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ?" फ़रमाया : "नहीं।" अ़र्ज़ की गई : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم को ?" फ़रमाया : "नहीं।" बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया गया तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें आहिस्ता से कुछ फ़रमाने लगे (जिसे सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे का रंग बदलता रहा।"(1)

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो ख़ुसूसी फ़ज़ीलतें :

﴾170﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दो ऐसी फ़ज़ीलतें ह़ासिल थीं, कि उन की मिस्ल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को भी ह़ासिल न थीं। (1) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सब्र करना यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ुल्मन शहीद कर दिया गया (2) तमाम लोगों को क़ुरआने मजीद की एक क़िराअत पर जम्अ़ करना।(2)

राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने माल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करते और उस के बन्दों पर माल ख़र्च करने में अपने दोस्तों से बढ़ जाते थे। जब कि अपने लिये थोड़े ही माल और मा'मूली लिबास पर क़नाअ़त फ़रमाते। और उ़लमाए किराम का एक फ़रमान येह भी है कि : "फ़ज़ीलत की इन्तिहा तक पहुंचने के लिये वसीला तलाश करना तसव्वुफ़ है।"

﴾171﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मरतबा जन्नत ख़रीदी, एक मरतबा जब बिअ्रे रूमह (पानी का कुंवां) ख़रीद कर मुसलमानों के लिये वक़्फ़ किया और दूसरी मरतबा जब ग़ज़वए तबूक के लिये सामाने जिहाद फ़राहम किया।(3)

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب فضل عثمان، الحديث:١١٣، ص٢٤٨٤، بتغيرقليلٍ.

2 ......المصاحف لابن أبي داؤد، باب اتفاق الناس مع عثمان......الخ، الحديث:٣٦، ج١، ص٤٨.

3 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب اشترى عثمان الجنة مرتين، الحديث:٤٦٢٦، ج٤، ص٦٨، بتغيرقليلٍ.

www.dawateislami.net

राहे ख़ुदा में 300 ऊंट पेश किये :

﴾172﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी ख़ुबाब सुलमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लोगों को राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने की तरग़ीब दिलाई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने 100 ऊंट ब मअ़ साज़ो सामान राहे ख़ुदा में दिये ।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा तरग़ीब दिलाई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मज़ीद 100 ऊंट सामान के साथ पेश करता हूं ।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीसरी बार फिर लोगों को तरग़ीब दिलाई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर अ़र्ज़ की : "मैं साज़ो सामान के साथ 100 ऊंट और राहे ख़ुदा में पेश करता हूं ।" रावी फ़रमाते हैं : "मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हाथ हिलाते हुवे इरशाद फ़रमा रहे हैं : "आज के बा'द उ़स्मान को कोई अ़मल नुक़्सान नहीं देगा[1]।"[2]

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 108 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**चन्दे के बारे में सुवाल जवाब**" के सफ़ह़ा 14 और 15 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने येह ह़दीसे पाक "سنن الترمذی، ج۵ص۳۹۱، حدیث:۳۷۲۰" से नक़्ल फ़रमाई है जिस में बित्तरतीब पहले 100 फिर 200 और फिर 300 ऊंटों का ज़िक्र है । इस के बा'द सफ़ह़ा 16 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : आज कल देखा गया है कि बा'ज़ लोग दूसरों के सामने जज़्बात में आ कर चन्दा लिखवा तो देते हैं मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड़ता है ह़त्ता कि कुछ तो देते भी नहीं, मगर क़ुरबान जाइये ! सय्यिदुल अस्ख़िया, उ़स्माने बा ह़या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जूदो सख़ा पर कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ए'लान से बहुत ज़ियादा चन्दा पेश किया । चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह तो उन का ए'लान था मगर ह़ाज़िर करने के वक़्त (आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने) नौ सौ पचास (950) ऊंट, पचास (50) घोड़े और एक हज़ार (1000) अशरफ़ियां पेश कीं फिर बा'द में दस हज़ार अशरफ़ियां (10,000) और पेश कीं, (मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहली बार में एक सौ (100) का ए'लान किया, दूसरी बार सौ के इलावा और दो सौ (200) का तीसरी बार और तीन सौ (300) का, कुल छे सौ (600) ऊंट (पेश करने) का ए'लान फ़रमाया । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 395)

2.....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبد الرحمن بن خباب السلمی، الحدیث:۱۶۶۹۶، ج۵، ص۶۰۳.

www.dawateislami.net

﴾173﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "जब सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जंगे तबूक के दिन तय्यारी के लिये भाग दौड़ करते देखा तो येह दुआ़ फ़रमाई : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के अगले पिछले, ज़ाहिर व छुपे सब गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा ।"(1)

﴾174﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समूरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं जंगे तबूक के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर था । अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक हज़ार दीनार लाए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर के चले गए, फिर दोबारा आए और मज़ीद एक हज़ार दीनार पेश किये और चले गए। रावी कहते हैं : मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन दीनारों को उलट पलट करते हुवे फ़रमा रहे हैं : "आज के बा'द उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को किसी अ़मल से नुक़्सान नहीं होगा ।"(2)

﴾175﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक की तय्यारी फ़रमाने लगे तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक हज़ार दीनार पेश किये फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को फ़रामोश न करना ।" फिर फ़रमाया : "आज के बा'द उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जो भी अ़मल करें उन पर कोई ह़रज नहीं ।"(3)

﴾176﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : "मैं ने जंगे तबूक के मौक़ए़ पर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि उन्हों ने एक हज़ार मुजाहिदीन को साज़ो सामान के साथ सुवारियां दीं, जिन में पचास घोड़े थे ।"(4)

---

1 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر ،الرقم٤٦١٩عثمان بن عفان ،ج٣٩،ص٥٧.

2 ......جامع الترمذى ،ابواب المناقب ،باب فى عد عثمان تسمية شهيدا ،الحديث: ٣٧٠١، ص ٢٠٣٣ ،بتغيرقليل.

3 ......فضائل الخلفاء الراشدين لأبى نعيم الأصبهانى ،فضيلة لذى النورين عثمان بن عفان ،الحديث: ٧،ص١١ .

4 ......الاستيعاب فى معرفة الصحابة ،الرقم١٧٩٧عثمان بن عفان ،ج٣،ص١٥٧ ،بتغير.

www.dawateislami.net

लिबास में सादगी :

﴾177﴿.....हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मस्जिद में एक कपड़े में लिपटे सोए देखा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आस पास कोई न था हा़लांकि उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन थे।"(1)

﴾178﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन शद्दाद علیہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जुमुआ़ के दिन मिम्बर पर इस हा़ल में देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे मुबारक पर एक मोटी अ़दनी (या'नी यमनी) चादर थी जिस की क़ीमत ब मुश्किल चार या पांच दिरहम होगी और एक कूफ़ी चादर थी।"(2)

﴾179﴿.....हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मस्जिद में क़ैलूला करने वालों के बारे में सुवाल हुवा तो फ़रमाया : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मस्जिद में क़ैलूला करते देखा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन दिनों ख़लीफ़ए वक़्त थे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू पर कंकरियों के निशान थे हा़लांकि येह उस वक़्त की बात है जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन थे।"(3)

﴾180﴿.....हज़रते सय्यिदुना शुर्हबील बिन मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते और खुद घर जा कर सिर्का और ज़ैतून के साथ खाना तनावुल फ़रमाते।(4)

﴾181﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मूसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चन्द ऐसे लोगों के बारे में बताया गया जो किसी बुरे काम में मसरूफ़ थे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां पहुंचे तो वोह लोग जा चुके थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

1 ......الزہد للامام احمد بن حنبل ، زھد عثمان بن عفان،الحدیث:٦٧٤، ص ١٥٤ .

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٩٢،ج١،ص٧٥.

3 ......السنن الکبری للبیھقی،کتاب الصلاۃ، باب المسلم یبیت فی المسجد، الحدیث:٤٣٤١،ج٢،ص٦٢٦.

4 ......الزہد للامام احمد بن حنبل ، زھد عثمان بن عفان،الحدیث:٦٨٤،ص١٥٥ .

www.dawateislami.net

वहां बुराई के आसार देखे तो इस बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया कि उन्हों ने बुराई होते नहीं देखी नीज़ इस के शुक्राने में एक गुलाम भी आज़ाद किया ।''(1)

गुलाम के साथ हुस्ने सुलूक :

﴾182﴿.....हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुझे हमदानी ने बताया कि ''उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को देखा कि एक ख़च्चर पर सुवार हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पीछे आप का गुलाम नाइल बैठा है और येह उस वक़्त की बात है जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه मुसलमानों के अमीर थे ।''(2)

﴾183﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''अगर मुझे जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान खड़ा किया जाए लेकिन मुझे येह पता न हो कि मुझे किस त़रफ़ जाने का हुक्म होगा तो मैं येह पसन्द करूंगा कि मिट्टी हो जाऊं, इस से पहले कि मुझे किसी त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाए ।''(3)

﴾184﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि (मुहा़सरे के दिन) हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने न तो ज़मानए जाहिलिय्यत में कभी ज़िना किया था और न ही इस्लाम क़बूल करने के बा'द । इस्लाम क़बूल करने के बा'द मेरी ह़या में मज़ीद इज़ाफ़ा हुवा ।''(4)

﴾185﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन सिहबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''मैं ने जब से इस्लाम क़बूल किया, कभी भी अपना सीधा हाथ अपनी शर्मगाह को नहीं लगाया ।''(5)

---

1 .....الزهد للامام احمد بن حنبل ، زهد عثمان بن عفان ،الحديث: ٦٩٠ ،ص١٥٦ .

2 .....الزهد للامام احمد بن حنبل ،زهد عثمان بن عفان ،الحديث: ٦٧٢ ،ص١٥٣ .

3 .....الزهد للامام احمد بن حنبل ،زهد عثمان بن عفان ،الحديث: ٦٨٦ ،ص١٥٥ .

4 .....سنن النسائى ،كتاب المحاربة ،باب ذكر ما يحل به دم المسلم ، الحديث: ٤٠٢٤ ،ص ٢٣٥١ ، مختصرًا.

5 .....سنن ابن ماجه ،ابواب الطهارة ،باب كراهة مس الذكر باليمين والاستنجاء باليمين ،الحديث: ٣١١ ،ص٢٤٩٦ ،بتغيرٍ.

www.dawateislami.net

﴾186﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम हानी फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते, तो इस क़दर रोते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रीश (या'नी दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो जाती ।"(1)

﴾187﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सिवाए ख़ाली रोटी के उ़म्दा खाने, मीठा पानी और सायादार घर इब्ने आदम के लिये ने'मत हैं और उस के लिये इस में कोई फ़ज़ीलत नहीं ।"(2)

ख़त़ाओं को मिटाने वाला कलिमा :

﴾188﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मश्जआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है : हम एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह एक मरीज़ की इ़यादत के लिये गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : कहो "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ" मरीज़ ने येह कलिमा पढ़ा ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उस शख़्स ने कलिमए त़य्यिबा के ज़रीए अपनी ख़त़ाओं को मिटा लिया ।" रावी कहते हैं : मैं ने इस्तिफ़्सार किया कि "येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद फ़रमा रहे हैं या नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है ?" फ़रमाया : "येह मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं कहा बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है ।" (जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया था) तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तो मरीज़ के लिये है, तन्दुरुस्त के लिये इस की क्या फ़ज़ीलत है ?" इरशाद फ़रमाया : "तन्दुरुस्त के लिये येह ज़ियादा गुनाहों को मिटाने वाला है ।"(3)

---

1 ......جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فظاعۃ......الخ،الحدیث:۲۳۰۸،ص۱۸۸٤ .

2 ......مسند ابی داوٗد الطیالسی ،الافراد ،الحدیث:۸۳،ص۱٤ .

3 ......کنز العمال،کتاب الصحبۃ قسم الافعال،حق عیادۃ المریض،الحدیث:۲۵٦۷۸،ج۹،ص۸۹ .

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم साहिबे सियादत, मुहि़ब्बे आखि़रत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, बाबे मदीनतुल इ़ल्म और शह सुवारे मैदाने खि़ताबत थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कु़रआनो सुन्नत से इशारतन साबित होने वाले मसाइल को निकालने की ख़ूब सलाहि़य्यत रखते थे। त़ालिबीने राहे हिदायत के लिये निशानी व अ़लामत की हैसिय्यत रखते थे। इत़ाअ़त गुज़ारों के लिये चराग़ और परहेज़गारों के दोस्त थे। अ़द्ल करने वालों के इमाम, (बच्चों में) सब से पहले हादिये बर ह़क़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वते ह़क़ को क़बूल कर के अल्लाह وحدہ لاشریک की वह़दानिय्यत और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत पर ईमान लाने वाले, पुख़्ता यक़ीन व ए'तिमाद के साथ दुरुस्त फ़ैसला फ़रमाने वाले, सब से बढ़ कर हि़ल्म और इ़ल्म वाले थे।

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अहले तक़्वा के पेश्वा और अहले मा'रिफ़त की ज़ीनत हैं। ह़क़ाइक़े तौह़ीद से आगाह करते, इ़ल्मे तौह़ीद के अन्वार की त़रफ़ इशारा फ़रमाते। बहुत दानिशमन्द बड़े समझदार दिल के मालिक थे, कसरत से सुवाल करने वाली ज़बान और मह़फ़ूज़ करने वाले कान रखते थे, वा'दा पूरा करते, मुसीबत व आज़माइश के अस्बाब से बचते थे। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़ह्द तोड़ने वालों को शिकस्त दी, इन्साफ़ का बोल बाला और दुश्मनाने दीन का डट कर मुक़ाबला किया और उन्हें नेस्तो नाबूद कर दिया। कहा जाता है कि "तसव्वुफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त बजा लाने और उस की मुक़र्रर कर्दा ह़दों को तोड़ने से बचने का नाम है।"

ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मह़बूब :

﴾189﴿.....हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर के दिन इरशाद फ़रमाया : "मैं येह झन्डा कल एक ऐसे शख़्स को दूंगा जिस के हाथ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाएगा वोह अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत करता है और अल्लाह और उस का रसूल उस से मह़ब्बत फ़रमाते हैं।" रावी कहते हैं : "सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने वोह रात बड़ी बे चैनी से गुज़ारी कि किस ख़ुश नसीब को सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم झन्डा अ़त़ा फ़रमाएंगे।" सुब्ह़ हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम,

www.dawateislami.net

नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "अ़ली बिन अबी त़ालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) कहां हैं ?" सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह आंखों की तक्लीफ़ में मुब्तला हैं।" इरशाद फ़रमाया : "उन्हें मेरे पास लाओ !" चुनान्चे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हाज़िरे ख़िदमत हुवे तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों पर अपना लुआ़बे दहन लगाया और उन के लिये दुआ़ फ़रमाई। इस की बरकत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखें फ़ौरन ठीक हो गईं और ऐसी ठीक हुईं गोया कि कभी तक्लीफ़ थी ही नहीं। फिर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें झन्डा अ़ता फ़रमाया, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं उन लोगों के साथ उस वक़्त तक लड़ूं जब तक कि वोह हमारी त़रह़ मुसलमान न हो जाएं ?" इरशाद फ़रमाया : "नर्मी से काम लो, उन के पास पहुंच कर पहले उन्हें इस्लाम की त़रफ़ बुलाओ फिर उन्हें बताओ कि इस्लाम क़बूल करने के बा'द उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क्या हुक़ूक़ हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम्हारी वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक आदमी को भी हिदायत अ़ता फ़रमा दे, तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर है।"(1)

﴾190﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को झन्डा दे कर क़ल्अ़ए ख़ैबर की त़रफ़ भेजा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोशिश के बा वुजूद क़ल्अ़ा फ़त्ह़ न कर सके और वापस लौट आए। दूसरे दिन सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को झन्डा दे कर भेजा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरी कोशिश की लेकिन क़ल्अ़ए ख़ैबर फ़त्ह़ न कर पाए और वापस चले आए तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं येह झन्डा कल ऐसे शख़्स को दूंगा जो **अल्लाह** और उस के रसूल से मह़ब्बत करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हाथ पर फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाएगा। वोह जब तक फ़त्ह़ न पाएगा वापस न आएगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

(1)......صحیح مسلم کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل علی بن ابی طالب، الحدیث:٦٢٢٣، ص١١٠١.

www.dawateislami.net

को बुलाया, उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आशोबे चश्म (या'नी आंखों के मरज़) में मुब्तला थे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों पर अपना लुआ़बे दहन लगाया और फ़रमाया : "येह झन्डा लो और लड़ते रहो यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे हाथों फ़त्ह़ अ़ता फ़रमा दे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم झन्डा ले कर निकले, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तेज़ तेज़ चलते रहे और मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे पीछे चलता रहा, यहां तक कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ल्ए़ के नीचे एक पथ्थर की चट्टान पर झन्डा नस्ब फ़रमाया, क़ल्ए़ के ऊपर से एक यहूदी ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "तुम कौन हो ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं अ़ली बिन अबी त़ालिब हूं।" तो उस यहूदी ने कहा : "अब तुम्हें फ़त्ह़ मिल जाएगी क्यूंकि हमारी किताब जो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई (या'नी तौरात शरीफ़) में इसी त़रह़ लिखा है।" चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم उस वक़्त लौटे जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़ता फ़रमा दी।"(1)

अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत करो :

﴾191-192﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे पास अ़रब के सरदार या'नी ह़ैदरे कर्रार को बुला लाओ।" उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रब के सरदार नहीं हैं ?" फ़रमाया : "मैं तो औलादे आदम (या'नी सारी काइनात) का सरदार हूं और अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) अ़रब के सरदार हैं।" चुनान्चे, जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ह़ाज़िर हुवे तो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अन्सार को बुलाने के लिये भेजा, जब अन्सार ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अन्सार के गुरौह ! क्या मैं तुम्हें वोह बात न बताऊं कि अगर तुम उस पर अ़मल करोगे तो इस के बा'द कभी भी राहे रास्त से न भटकोगे ?" अन्सार ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (ज़रूर इरशाद फ़रमाएं)।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

(1)......السيرة النبوية لابن هشام، شان علي يوم خيبر، ج٣/٤، ص٢٨٤.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : ''येह अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं, तुम मेरी मह़ब्बत के साथ साथ इन से भी मह़ब्बत रखो और मेरी इ़ज़्ज़त के साथ इन की भी इ़ज़्ज़त करो। (फिर इरशाद फ़रमाया) जिस बात का मैं ने तुम्हें हुक्म दिया है येह जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने ब ज़रीअ़ए वह़्य मुझे बताई है, येह हुक्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है।''(1)

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के फ़ज़ाइलो मनाक़िब

﴾193﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं ह़िक्मत का घर हूं और अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) इस का दरवाज़ा हैं।''(2)

मोमिनीन के सरदार :

﴾194﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में जहां भी : يٰۤاَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ऐ ईमान वालो। से ख़ित़ाब फ़रमाया है उस गुरौह के अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सरदार व अमीर हैं।''(3)

﴾195﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि लोगों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ की : ''क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ली को ख़लीफ़ा नहीं बनाएंगे ?'' इरशाद फ़रमाया : ''अगर तुम अ़ली को ख़िलाफ़त सिपुर्द करोगे तो उन्हें हिदायत याफ़्ता व हिदायत देने वाला पाओगे, जो तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाएगा।''(4)

﴾196-197﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर तुम अ़ली को ख़लीफ़ा बनाओगे तो उन्हें हिदायत

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۲۷۴۹، ج۳، ص۸۸.
2 ......جامع الترمذی،ابواب المناقب،باب حدیث غریب:انا دار الحکمة وعلی بابها ، الحدیث:۳۷۲۳،ص۲۰۳۵.
3 ......فضائل الصحابة للامام احمد بن حنبل ،فضائل علی ،الحدیث: ۱۱۱۴، ج۲،ص۶۵۴.
4 ......المستدرك ،کتاب معرفة الصحابة ،باب سؤال الناس......الخ،الحدیث:۴۴۹۱/۴۴۹۲،ج۴،ص۱۵-۱۶

www.dawateislami.net

याफ़्ता व हिदायत देने वाला पाओगे। वोह तुम्हें शरीअ़ते बैज़ा (या'नी रौशन व चमकदार वाज़ेह शरीअ़त) पर चलाएगा। लेकिन मैं नहीं समझता कि तुम ऐसा करोगे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का इ़ल्म, हि़क्मत और दानाई

﴾198﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खि़दमत में हाज़िर था कि किसी ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हि़क्मत व दानाई को 10 हि़स्सों में तक़्सीम किया गया, 9 हि़स्से हज़रते अ़ली को और एक हि़स्सा और लोगों को अ़त़ा किया गया।"(2)

﴾199﴿.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "मुझे नसीहृत फ़रमाइये !" इरशाद फ़रमाया : "قُلْ رَبِّيَ اللهُ ثُمَّ اسْتَقِمْ या'नी : कहो ! मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है। फिर उस पर क़ाइम रहो।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : اَللّٰهُ رَبِّيْ وَمَا تَوْفِيْقِيْ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْب या'नी : मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है और मेरी तौफ़ीक़ उसी की त़रफ़ से है। मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं। तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ह़सन (येह हज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की कुन्यत है) तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो। तुम ने इ़ल्म के समन्दर से पी पी कर ख़ूब प्यास बुझाई।"(3)

﴾200﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "बेशक क़ुरआने मजीद 7 ह़ुरूफ़ पर उतरा है और इन में से हर ह़र्फ़ का ज़ाहिर भी है और बात़िन भी और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ऐसे आ़लिम हैं जिन के पास ज़ाहिरो बात़िन दोनों का इ़ल्म है।"(4)

---

1 .....فضائل الخلفاء الراشدين لأبي نعيم الأصبهاني،خلافة امير المؤمنين على بن ابى طالب، الحديث: ٢٣٢،ص ٣٦٠.

2 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر ،الرقم٤٩٣٣ على بن ابى طالب،ج٤٢،ص ٣٨٤.

3 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر ، الرقم٤٩٣٣ على بن ابى طالب، ج٤٢،ص ٣٩١"ونهلته نهلا"بدله"وثاقبته ثقبا".

4 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر ،الرقم٤٩٣٣ على بن ابى طالب،ج٤٢،ص ٤٠٠.

www.dawateislami.net

इमाम हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुत़बा :

﴾201﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुबैरह बिन यरीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि (अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के विसाले ज़ाहिरी के एक दिन बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बड़े शहज़ादे) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने खड़े हो कर लोगों को ख़ुत़बा दिया और फ़रमाया : "ऐ लोगो ! गुज़श्ता कल तुम से एक ऐसा शख़्स जुदा हो गया है कि जिस का इल्मी मक़ामो मर्तबा ऐसा था कि न अगले वहां तक पहुंच सके और न पिछले उसे पा सकेंगे।

और वोह ऐसे थे कि जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें झन्डा अ़त़ा फ़रमा कर किसी मुहिम पर रवाना फ़रमाते तो वोह उस वक़्त तक न लौटते जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें फ़त्ह़ अ़त़ा न फ़रमा देता उन की दाईं जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام होते और बाईं जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे सख़ी थे कि ब वक़्ते विसाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माल में से सिर्फ़ सात सौ दिरहम बाक़ी थे, जिन से आप एक ग़ुलाम ख़रीदना चाहते थे।"[1]

निगाहे फ़ारूक़ी में मक़ामे अ़ली :

﴾202-203﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم हम में सब से बड़े क़ाज़ी और ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में सब से बड़े क़ारी हैं।"[2]

﴾204﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के कन्धों के दरमियान हाथ मारते हुवे फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! तुझे सात ऐसे फ़ज़ाइल ह़ासिल हैं कि जिन में बरोज़े क़ियामत तुम्हारे साथ कोई मुक़ाबला नहीं कर सकेगा : (1)......तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने में सब से पहले हो। (2).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ह्द को सब से ज़ियादा पूरा करने वाले। (3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म को सब से ज़ियादा क़ाइम करने वाले (4).....रिआ़या में अ़द्ल करने वाले। (5).....मसावात के साथ तक़्सीम करने वाले।

---

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم۳علی بن ابی طالب، ج۳، ص۲۸.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی المنذرابی بن کعب، الحدیث:۲۱۱۴۳، ج۸، ص۶.

www.dawateislami.net

(6).....फ़ैसला करने में सब से ज़ियादा साहिबे बसीरत हो और (7).....बरोज़े क़ियामत सब से बुलन्द मर्तबे में होगे।''[1]

﴾205﴿.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''मरह़बा ! ऐ मोमिनीन के सरदार और मुत्तक़ीन के इमाम !'' अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से अ़र्ज़ की गई : ''आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه किस चीज़ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हैं ?'' फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ मुझे अ़ता फ़रमाया मैं इस पर उस की ह़म्द करता, उस की ने'मतों पर शुक्र की तौफ़ीक़ मांगता और मज़ीद अ़ता का सुवाल करता हूं।''[2]

बारगाहे इलाही में मक़ामे अ़ली :

﴾206-207﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बुलाने के लिये भेजा (जब वोह हाज़िर हुवे तो मैं ने सुना कि) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें फ़रमाया : ''ऐ अबू बरज़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) के बारे में अ़हद लिया है कि अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) हिदायत के अ़लम (या'नी निशानी व अ़लामत), ईमान के मनारे, मेरे औलिया के इमाम और मेरे तमाम इताअ़त शिआ़र बन्दों का नूर हैं। (फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया) ऐ अबू बरज़ा ! अ़ली बिन अबी तालिब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) कल क़ियामत के दिन मेरे अमीन और मेरे अ़लम (या'नी झन्डे) को उठाने वाले होंगे और अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के ख़ज़ानों की कुन्जी हैं।''[3]

अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم और हिफ़ाज़ते क़ुरआन :

﴾208﴿.....अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ''जब रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया तो मैं ने क़सम उठाई कि क़ुरआने मजीद को जम्अ़ करने से पहले पीठ से चादर नहीं

---

1 ......الفردوس بماثور الخطاب للديلمی، باب الياء، الحديث:٨٣١٥، ج٥، ص٣٢٠.

2 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم٤٩٣٣علی بن ابی طالب، ج٤٢، ص٣٧٠.

3 ......الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم٢٠٥٣لاهز بن عبد الله، ج٨، ص٤٥٩ "رحمة رب" بدله "جنة ربی".

www.dawateislami.net

उतारूंगा । चुनान्चे, मैं ने ऐसा ही किया और कुरआने ह़कीम को जम्अ़ करने से पहले अपनी पीठ से चादर नहीं उतारी ।''(1)

﴾209﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رضی اللہ تعالٰی عنہ बयान करते हैं कि हम (या'नी चन्द सह़ाबए किराम رضوان اللہ تعالٰی علیہم اجمعین) हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के साथ चल रहे थे कि आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के ना'ले पाक का तस्मा टूट गया । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم ने उसे दुरुस्त किया तो कुछ देर चलने के बा'द आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! तुम में से एक शख़्स तावीले कुरआन पर इस त़रह़ क़िताल करेगा जिस त़रह़ मैं ने तन्ज़ीले कुरआन पर किया ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : ''मैं उन्हें येह खुश ख़बरी सुनाने के लिये निकला लेकिन उन्हें इस बात पर ज़ियादा खुश होते न पाया गोया उन्हों ने पहले से सुन रखा हो ।''(2)

﴾210﴿.....अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने मुझ से फ़रमाया : ''ऐ अ़ली (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ! मुझे **अल्लाह** عزوجل ने हुक्म दिया है कि मैं तुझे क़रीब करूं और इल्म सिखाऊं ताकि तू इसे याद रखे और येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई : وَتَعِیَهَاۤ اُذُنٌ وَّاعِیَةٌ ﴿۱۲﴾ (پ۲۹،الحاقہ:۱۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इसे मह़फ़ूज़ रखे वोह कान कि सुन कर मह़फ़ूज़ रखता हो । पस तेरे कान मेरे इल्म को मह़फ़ूज़ रखने वाले हैं ।''(3)

﴾211﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عزوجل की क़सम ! मैं कुरआने मजीद की हर आयत के बारे में जानता हूं कि वोह कब और कहां नाज़िल हुई ? बेशक मेरे रब عزوجل ने मुझे बहुत समझने वाला दिल और बहुत सुवाल करने वाली ज़बान अ़त़ा की है ।''(4)

---

1 ......سیر اعلام النبلاء ،الرقم۲۰۳۲محمد بن عثمان بن ابی شیبۃ ، ج۱۱، ص۱۲۱۔
المصاحف لابن أبی داود ،جمع علی بن أبی طالب القرآن فی المصحف ،الحدیث:۲۵،ج۱، ص۳۴،بتغیر.

2 ......فضائل الصحابۃ للامام احمد بن حنبل ،فضائل علی،الحدیث:۱۰۷۱،ج۲،ص۶۲۷

3 ......الفردوس بماثور الخطاب للدیلمی ،باب الیاء ،الحدیث:۸۳۳۸،ج۵،ص۳۲۹

4 ......الطبقات الکبری لابن سعد،ذکرمن کان یفتی بالمدینۃ......الخ،علی بن ابی طالب ،ج۲،ص۲۵۷،بتغیر.

www.dawateislami.net

बिन मांगे अ़त़ा फ़रमाने वाले :

﴾212﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्त़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से उन के अपने बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : ''जब मुझ से किसी ने कुछ मांगा तो मैं ने उसे दिया और जब न मांगा तो मैं ने बिन मांगे दिया ।''(1)

﴾213﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : ''मैं ने फ़ितने की आंख फोड़ी है और अगर मैं न होता तो फ़ुलां फ़ुलां न मारे जाते ।''(2)

﴾214﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि बा'ज़ लोगों ने ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की शिकायत की आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! अ़ली (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) के बारे में शिकायत न करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह सब से ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले हैं ।''(3)

﴾215﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन का'ब बिन उ़जरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अ़ली को बुरा भला न कहो, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में फ़ना हैं ।''(4)

70 वसिय्यतें :

﴾216﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ''हम आपस में गुफ़्तगू किया करते थे कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को 70 वसिय्यतें कीं जो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के इ़लावा किसी और को नहीं कीं ।''(5)

---

1 ......الكامل فى الضعفاء الرجال لابن عدى، الرقم ٧٧٥ سُلَيم مولى الشَعْبى كُوْفِى، ج٤، ص٣٣٣.

2 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الفتن، باب ماذكر فى عثمان، الحديث: ٨١، ج٨، ص٦٩٨.

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابى سعيد الخدرى، الحديث: ١١٨١٧، ج٤، ص١٧٢.

4 ......المعجم الكبير، الحديث: ٣٢٤، ج١٩، ص١٤٨. 5 ......المعجم الصغير للطبرانى، الحديث: ٩٥٣، ج٢، ص٦٩.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की शान थी और कुव्वत व ताक़त से इज़्हारे बराअत करना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ाम था।" एक क़ौल येह भी है कि "अपने तमाम पोशीदा मुआ़मलात, दिलों को फेरने वाले रब عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देने का नाम तसव्वुफ़ है।"

﴾217﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिदे माजिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तहज्जुद के वक़्त तशरीफ़ लाए जब कि मैं और फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) सो रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरवाज़े पर खड़े हो कर फ़रमाया : "क्या तुम नमाज़े (तहज्जुद) नहीं पढ़ते ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी जानें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ब्ज़े में हैं जब वोह चाहेगा तो हम उठ कर पढ़ लेंगे।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए और कोई बात न की और मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी रानों पर हाथ मारते जाते और इस आयत की तिलावत फ़रमाते :

وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا ﴿۵۴﴾
(پ۱۵،الکھف ۵٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर झगड़ालू है।*(1)

तस्बीहे फ़ातिमा के फ़ज़ाइल

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم औराद पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाने वाले और तोशए आख़िरत के लिये बहुत कोशिश करने वाले थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "तसव्वुफ़ मत़लूब को पाने के लिये महबूब की त़रफ़ रग़बत रखने का नाम है।"

﴾218﴿.....अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बहूरो

1.....المسند للامام احمد بن حنبل،مسندعلی بن ابی طالب،الحدیث:٥٧١،ج١،ص١٦٧.

www.dawateislami.net

बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ क़ैदी लाए गए तो मैं ने ह़ज़रते फ़ात़िमा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) से कहा कि "आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) अपने अब्बा जान, हु़ज़ूर रह़मते दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कोई ग़ुलाम मांग लाएं कि वोह काम काज में आप का हाथ बटा सके।" चुनान्चे, आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) शाम के वक़्त हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "बेटी क्या बात है ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सिर्फ़ इतना अ़र्ज़ किया कि "सलाम के लिये ह़ाज़िर हुई थी।" ह़या की वज्ह से मज़ीद कुछ न कह पाईं। जब घर लौट कर आईं तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने पूछा : "क्या हुवा ?" कहा : "मैं ह़या की वज्ह से हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ न कह सकी।" दूसरी शब फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में घर के काम काज में सहूलत के लिये एक ग़ुलाम मांगने भेजा लेकिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अब भी ह़या की वज्ह से सुवाल न कर सकीं।

(ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मज़ीद फ़रमाते हैं कि) जब तीसरी शाम आई तो हम दोनों हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें काम में दुश्वारी हुई तो हम ने चाहा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कोई ग़ुलाम मांग लाएं।" हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसा काम न बताऊं जो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सुब्ह़ो शाम 33 बार سُبْحٰنَ الله, 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰه और 34 बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहो, सुब्ह़ो शाम हज़ार नेकियां मिलेंगी।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने

www.dawateislami.net

इस को अपना मा'मूल बना लिया फिर कभी भी तर्क न किया, हां जंगे सिफ़्फ़ीन की रात मैं इसे पढ़ना भूल गया था लेकिन फिर आख़िर में मुझे याद आ गया तो मैं ने पढ़ लिया।"(1)

﴿219﴾.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और मेरे और फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) के दरमियान बैठ गए फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें सिखाया कि जब हम अपने बिस्तर पर लेटें तो 33 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰه और 34 मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَر कह लें, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने येह वज़ीफ़ा कभी तर्क नहीं किया।" किसी ने दरयाफ़्त किया कि "जंगे सिफ़्फ़ीन की रात भी इसे तर्क नहीं किया था ?" फ़रमाया : "हां, सिफ़्फ़ीन की रात भी इसे तर्क नहीं किया।"(2)

खाने का ह़क़ :

﴿220﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ'बुद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ इब्ने आ'बुद ! जानते हो खाने का ह़क़ क्या है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! आप इरशाद फ़रमाएं खाने का क्या ह़क़ है ?" फ़रमाया : "खाने का ह़क़ येह है कि खाना शुरूअ़ करने से पहले येह दुआ़ पढ़ी जाए بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْمَا رَزَقْتَنَا या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो तू ने हमें रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया उस में हमारे लिये बरकत दाख़िल फ़रमा।" रावी कहते हैं : फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "येह जानते हो कि खाना खाने के बा'द इस का शुक्र किस त़रह़ अदा करना चाहिये ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं या अमीरल मोमिनीन ! आप इरशाद फ़रमा दें कि किस त़रह़ इस का शुक्र अदा किया जाए ?" फ़रमाया : "खाने के बा'द येह पढ़ा जाए : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया।"

इस के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपनी ज़ौजए मोह़तरमा और जाने काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सब से लाडली

---

1 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلة، باب ثواب ذلک، الحدیث: ١٠٦٥٢، ج٦، ص ٢٠٤.

2 ......المرجع السابق، باب تسبیح والتحمید......الخ، الحدیث: ١٠٦٥١.

www.dawateislami.net

व प्यारी शहज़ादी, शहज़ादिये कौनैन, उम्मे ह़सनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की घरेलू ज़िन्दगी के मुतअ़ल्लिक़ बताते हुवे इरशाद फ़रमाया : "सुनो ! मेरी ज़ौजा बिन्ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथों में चक्की चलाने की वज्ह से छाले और मशक उठाने की वज्ह से बदन पर निशान पड़ जाते और घर में झाड़ू देने और चूल्हे में आग जलाने की वज्ह से कपड़े गुबार आलूद और मैले हो जाते थे। आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) को इन कामों की वज्ह से सख़्त तक्लीफ़ व मशक़्क़त का सामना करना पड़ता था। एक बार जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास चन्द क़ैदी लाए गए तो मैं ने फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) से कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जाओ और कोई ख़ादिम तुम भी मांग लाओ ताकि काम की मशक़्क़त से नजात पाओ[1]।"[2]

चुनान्चे, वोह शाम के वक़्त बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुईं तो सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "बेटी क्या बात है ?" फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ने सिर्फ़ इतना अ़र्ज़ किया कि "सलाम के लिये ह़ाज़िर हुई थी और ह़या की वज्ह से कुछ और न कह पाई।" जब घर लौट कर आईं तो मैं ने पूछा : "क्या हुवा ?" कहा : "मैं ह़या की वज्ह से हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ न कह सकी।" दूसरी शब फिर मैं ने उन्हें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में घर के काम काज में सहूलत के लिये एक नोकर मांगने भेजा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا अब भी ह़या की वज्ह से सुवाल न कर सकीं। (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم फ़रमाते हैं कि) जब तीसरी शाम आई तो हम दोनों नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें काम में दुश्वारी हुई तो हम ने चाहा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई ख़ादिम मांग लाएं, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसा काम न बताऊं जो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने

---

1 .....किताब में येह रिवायत यहीं तक नक़्ल कर के फ़रमाया "आगे साबिक़ा ह़दीस की मिस्ल है "लेकिन हम ने पढ़ने वालों के ज़ौक़ के लिये उस साबिक़ा रिवायत के बक़िय्या हिस्से को दोबारा दर्ज कर दिया है।

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند علی بن ابی طالب ، الحدیث:۱۳۱۲، ج۱، ص۳۲۲.

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : "जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सुब्हो शाम 33 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰہ, 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और 34 बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहो, हज़ार नेकियां सुब्हो शाम मिलेंगी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने इस को अपना मा'मूल बना लिया फिर कभी भी तर्क न किया हां जंगे सिफ़्फ़ीन की रात मैं इसे पढ़ना भूल गया था लेकिन फिर आख़िर में मुझे याद आ गया था और मैं ने पढ़ लिया था।"

कसबे हलाल के लिये मेहनत व मज़्दूरी :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने जब ज़िन्दगी में सख़्ती व जिद्दो जहद को लाज़िम कर लिया तो मख़्लूक़ से मुंह मोड़ कर कसबे ह़लाल और मेह़नत में मसरूफ़ हो गए।

कहा गया है कि "तसव्वुफ़ अस्बाब पर भरोसा न करने और तक़्दीर की त़रफ़ नज़र करने का नाम है।"

﴾221﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد बयान करते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इमामा बांधे हमारे पास तशरीफ़ लाए और बताने लगे कि "एक मरतबा मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में मुझे सख़्त भूक मह़सूस होने लगी तो मैं मज़्दूरी की तलाश में मदीने के गिर्दो नवाह़ की त़रफ़ निकल गया वहां मैं ने एक औ़रत देखी जिस ने मिट्टी का एक ढेर जम्अ़ किया हुवा था जिसे वोह पानी से तर करना चाहती थी मैं ने हर डोल के बदले एक खजूर मज़्दूरी तै की और सोलह डोल खींचे यहां तक कि मेरे हाथों में छाले पड़ गए मैं ने हाथ धोए फिर उस औ़रत के पास आया और कहा कि बस मुझे इतना काफ़ी है, तो उस औ़रत ने मुझे 16 खजूरें गिन कर दीं, मैं उन्हें ले कर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ बताया फिर मैं ने और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिल कर वोह खजूरें तनावुल फ़रमाईं।"(1)

एक रिवायत में है कि "मैं ने 16 या 17 डोल निकाले फिर अपने हाथ धोए और वोह खजूरें ले कर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये कलिमाते ख़ैर कहे और दुआ़ फ़रमाई।"

---

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند علی بن ابی طالب ،الحدیث:۱۱۳۵ ،ج۱ ،ص۲۸۶ .

www.dawateislami.net

﴾222﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : ''एक मरतबा मैं एक बाग़ में गया, उस के मालिक ने कहा कि हर डोल पर एक खजूर के बदले मेरे इस बाग़ को सैराब कर दो। मैं ने कुछ डोल निकाले और उस के बदले में खजूरें वुसूल कीं जिन से मेरी हथेली भर गई फिर मैं ने कुछ पानी पिया और खजूरें ले कर बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो गया और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मिल कर खजूरें तनावुल कीं।''(1)

शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की दुन्या से बे रग़बती

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم लोगों के दरमियान रहते हुवे भी नेकों और ज़ाहिदों की ज़ीनत से मुज़य्यन थे।

﴾223﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें ऐसी ज़ीनत से मुज़य्यन किया है कि इस से बढ़ कर पसन्दीदा ज़ीनत से उस ने किसी को आरास्ता नहीं किया येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां नेक लोगों की ज़ीनत है या'नी दुन्या से बे रग़बती पस अब दुन्या को तुझ से कोई मत़लब न तुम्हें इस से कोई सरोकार और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे मसाकीन की महब्बत अ़ता फ़रमाई लिहाज़ा तुम उन के पैरूकार और वोह तुम्हारे इमाम होने पर राज़ी हैं।''(2)

दुन्या की मज़म्मत :

﴾224﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : ''बरोज़े क़ियामत दुन्या हसीनो जमील सूरत में आएगी और अ़र्ज़ करेगी : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपना कोई वली अ़ता फ़रमा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : जा तेरी कोई ह़क़ीक़त नहीं और न ही मेरी बारगाह में कोई मक़ाम है कि मैं तुझे अपना कोई वली अ़ता करूं। चुनान्चे, उसे बोसीदा कपड़े की त़रह लपेट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।''

---

❶......الزھدللامام احمدبن حنبل،زھدامیرالمؤمنین علی بن ابی طالب،الحدیث:۷۰۱،ص۱۵۷.

❷......مجمع الزوائد ، کتاب المناقب،باب جامع فی مناقب علی ، الحدیث: ۱٤۷۰۳،ج۹،ص۱٦۱،بتغیر.

www.dawateislami.net

निगाहे अ़ली में दुन्या की ह़क़ीक़त :

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा, शहनशाहे औलिया ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم तारिके दुन्या थे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये दुन्या की ह़क़ीक़त से पर्दा उठ गया, हिदायत व बसारत नसीब हुई और ज़लालत व गुमराही से मह़फ़ूज़ रहे।

﴾225﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स दुन्या में ज़ोह्द इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इल्मे लदुन्नी से नवाज़ता और बिग़ैर किसी वासित़े के हिदायत अ़त़ा फ़रमाता है, नूरे बसीरत अ़त़ा फ़रमाता और ज़लालत व गुमराही से बचाता है।"

मा'रिफ़ते इलाही

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा, शहनशाहे औलिया ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मा'रिफ़ते इलाही के उ़लूम भी जानते थे और आप का सीना इरफ़ाने इलाही का गन्जीना था। मन्क़ूल है कि "तसव्वुफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से हिजाबात उठने का नाम है।"

﴾226﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ज़ैद बिन सूह़ान की त़रफ़ पैग़ाम भेजा तो उन्हों ने कहा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं येह नहीं जानता कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ज़ाते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के आ़लिम हैं लेकिन येह ज़रूर जानता हूं कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सीनए मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत ज़ियादा अ़ज़मत है।"

तौह़ीदे बारी तआ़ला पर शानदार गुफ़्तगू :

﴾227﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन सा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं दारुल अमारत कूफ़ा में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के घर में था कि नौफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह आए और अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ! दरवाज़े पर 40 अफ़राद पर मुश्तमिल यहूदियों का वफ़्द ह़ाज़िर है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें बुलवाया, जब वोह आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने बैठ गए तो अ़र्ज़ की : "ऐ अ़ली ! आस्मानों में जो तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ है हमें

www.dawateislami.net

उस के बारे में बताएं कि वोह कैसा है ? कैसा था ? कब से है ? और कहां पर है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सीधे हो कर बैठ गए और फ़रमाया : "ऐ यहूदियो ! सुनो ! और मुझे इस की परवाह नहीं कि तुम किसी और से सुवाल करोगे या नहीं, बेशक मेरा रब عَزَّوَجَلَّ वोह है जो अज़ल से है उस से पहले कुछ न था जिस से उस का आग़ाज़ होता, न वोह किसी शै से बना है, वोह हमारी अ़क़्लो फ़ेहम से बालातर है। उस का जिस्म नहीं जो किसी मकान को घेर सके, न वोह पर्दे में छुपा है कि उस का इह़ात़ा किया जा सके, वोह ह़ादिस भी नहीं है या'नी ऐसा नहीं कि वोह पहले नहीं था बा'द में हुवा बल्कि वोह तो इस से भी पाक है कि दीगर अश्या की त़रह़ उस की कैफ़िय्यत बयान की जाए कि वोह ऐसा था, बल्कि वोह हमेशा से है, हमेशा रहेगा, ज़माने की तब्दीली और हर आन के बा'द नई आन के वुजूद से उस की ज़ाते पाक पर कोई असर नहीं, ख़याली तसावीर से उस की सिफ़त क्यूंकर बयान हो सकती है और फ़सीह़ो बलीग़ ज़बानों से भी कमाह़क़्क़ुहू उस की ता'रीफ़ क्यूंकर मुमकिन हो सकती है ?

उस की शान येह नहीं कि चीज़ों के अन्दर पाया जाए कि कहना पड़े कि वोह सब चीज़ों से जुदा है और न ही वोह अश्या से जुदा है जो कहा जाए कि वोह उन चीज़ों में पाया जाता है। वोह अश्या से नहीं कि कहा जाए उन से जुदा हो गया, न ही वोह उन अश्या से बना है कि कहा जाए वोह बन गया बल्कि वोह कैफ़िय्यत से पाक है। शह रग से ज़ियादा क़रीब और वोह हर क़िस्म की मुशाबहत से बहुत बई़द है। उस के बन्दों का कोई लम्ह़ा, किसी लफ़्ज़ की बाज़गुश्त, हवा का कोई झोंका, किसी क़दम की आहट इन्तिहाई तारीक रात में भी उस से पोशीदा नहीं। चमकते चांद की रौशनी उस पर छा नहीं सकती, सूरज के रौशन हाले की कोई किरन उस से बाहर नहीं, न ही आने वाली रात का मुतवज्जेह होना और जाने वाले दिन का फिरना उस पर मख़्फ़ी है बल्कि वोह काइनात की हर शै का इह़ात़ा किये हुवे है। वोह हर मकान, हर घड़ी, हर लेह़ज़ा, हर इन्तिहा, हर मुद्दत से बा ख़बर है, इन्तिहाएं तो मख़्लूक़ के लिये होतीं हैं और ह़दें उस के ग़ैर की त़रफ़ मन्सूब हैं। अश्या ख़ुद ब ख़ुद पैदा नहीं होतीं और न पहले ज़माने के साथ मुत्तसिफ़ होती हैं कि इन के अव्वल वक़्त को इब्तिदा क़रार दिया जाए, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो चाहा पैदा फ़रमाया और उन को तख़्लीक़ व अफ़ज़ाइश बख़्श दी और जैसी चाही सूरत बख़्शी और क्या ही ह़सीन सूरतें बनाईं, वोह अपनी बुलन्दी व बुज़ुर्गी में यक्ता है और कोई शै उस के मुक़ाबिल नहीं और न ही मख़्लूक़ का इत़ाअ़त करना उस को नफ़्अ़ पहुंचा सकता है। वोह दुआ़ करने वालों की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है, ज़मीनो

www.dawateislami.net

आस्मान उस के इबादत गुज़ार फ़िरिश्तों से भरे पड़े हैं, मुर्दों और ज़िन्दों के बारे में भी इल्म रखता है, बुलन्द आस्मानों, सातों ज़मीन नीज़ हर चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ इल्म रखता है, कसीर आवाज़ों का जम्अ़ होना उसे मुतहय्यिर नहीं करता और न ही कसीर ज़बानों का सुनना उसे किसी एक से मश्ग़ूल करता है, वोह मुख़्तलिफ़ आवाज़ों को सुनने वाला और बिग़ैर आ'ज़ा व जवारेह़ उन्हें जवाब देने वाला, मुदब्बर, बसीर, तमाम उमूर का जानने वाला और ख़ुद ज़िन्दा औरों को क़ाइम रखने वाला है।

पाक है वोह जिस ने बिग़ैर आ'ज़ा व बिग़ैर होंट ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया और जो येह गुमान करता है कि हमारा ख़ुदा मह़दूद है पस वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़क़ीक़त से ना बलद है और जो येह कहे कि मकानात उस का इह़ात़ा किये हुवे हैं तो वोह फ़साद में है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो हर जगह को मुह़ीत़ है। पस अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी सिफ़ात बयान करने से बाज़ नहीं आता जो उस की शान के लाइक़ नहीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील عَلَیْہِمُ السَّلَام की तो सिफ़ात बयान कर के दिखा जो उस की मख़्लूक़ हैं ह़ालांकि तू उस से भी आ़जिज़ है तो फिर ख़ालिक़ व मा'बूद عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त का कैसे इदराक कर सकता है जिसे न ऊंघ आए न नींद ? ज़मीनो आस्मान पर उसी की बादशाहत है और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।"

﴾228﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़रज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "मुझे येह बात पसन्द नहीं कि मैं बचपन में मर जाऊं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं और बड़ा हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त न ह़ासिल कर पाऊं।"

अहले ईमान से महब्बत :

﴾229﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "लोगों का सब से बड़ा ख़ैर ख़्वाह और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा मा'रिफ़त रखने वाला वोह शख़्स है जो لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने वालों (या'नी मुसलमानों) से उन के ईमान की वज्ह से महब्बत रखता और उन की ता'ज़ीम करता है।

सब्र, यक़ीन, जिहाद और अ़द्ल के शो'बे :

﴾230﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जुलास बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि एक ख़ुज़ाई

www.dawateislami.net

शख़्स आया और अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! क्या आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से इस्लाम की ता'रीफ़ समाअ़त की है ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "हां ! मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि "(अ़मल के ए'तिबार से) इस्लाम की बुन्याद चार अरकान पर है। सब्र, यक़ीन, जिहाद और अ़द्ल। फिर सब्र के चार शो'बे हैं : (1) जन्नत का शौक़ (2) जहन्नम का ख़ौफ़ (3) दुन्या से बे रग़बती (4) मौत का इन्तिज़ार, लिहाज़ा जो जन्नत का मुश्ताक़ होता है वोह शहवात से ख़ुद को बचाता है और जिसे जहन्नम का डर होता है वोह ह़राम कामों से बाज़ रहता है, दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करने वाले के लिये मुसीबतों पर सब्र करना आसान होता है और जो शख़्स मौत का मुन्तज़िर होता है वोह नेकियों की त़रफ़ जल्दी करता है।

और यक़ीन के भी चार शो'बे हैं : (1) फ़ेह्मो फ़िरासत (2) इ़ल्मो मा'रिफ़त (3) इ़ब्रत व नसीह़त और (4) इत्तिबाए़ सुन्नत, तो जिस ने फ़ेह्मो फ़िरासत को पा लिया उस ने इ़ल्मो मा'रिफ़त को ह़ासिल कर लिया और जिस ने इ़ल्मो मा'रिफ़त को ह़ासिल कर लिया उस ने इ़ब्रत व नसीह़त से फ़ाइदा उठा लिया और जिस ने इ़ब्रत व नसीह़त पाई उस ने इत्तिबाए़ सुन्नत की और जिस ने सुन्नत की इत्तिबाअ़ की गोया कि वोह अव्वलीन में शामिल हो गया।

फिर फ़रमाया कि जिहाद के भी चार शो'बे हैं : (1) नेकी की दा'वत देना। (2) बुराई से मन्अ़ करना (3) हर ह़ाल में सच्चाई पर क़ाइम रहना और (4) ना फ़रमानों से नफ़रत करना। लिहाज़ा जिस ने नेकी का हुक्म दिया उस ने मोमिन की पीठ मज़बूत़ की, जिस ने बुराई से मन्अ़ किया उस ने मुनाफ़िक़ की नाक ख़ाक में मिला दी, जिस ने हर जगह सच बोला उस ने अपना फ़रीज़ा अदा कर दिया और अपने दीन की ह़िफ़ाज़त की और जिस ने ना फ़रमानों से नफ़रत की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ग़ुस्सा किया (या'नी उस की ना फ़रमानियों की वज्ह से उस ना फ़रमान व गुनहगार को छोड़े रखा) और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ग़ुस्सा किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस के लिये ग़ज़ब फ़रमाएगा।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "अ़द्ल के भी चार शो'बे हैं : (1) तह़क़ीक़ करना (2) ज़ेवरे इ़ल्म से ख़ुद को आरास्ता करना (3) अह़कामे शरअ़ को जानना और (4) बाग़े ह़िल्म में रहना, पस जिस ने तह़क़ीक़ से काम लिया उस ने ह़ुस्ने इ़ल्म को रौशन कर दिया, जिस ने बाग़े इ़ल्म को सैराब किया उस ने शरीअ़त के अह़काम जान लिये और जिस ने शरीअ़त के अह़काम मा'लूम कर लिये

www.dawateislami.net

वोह ह़िल्म व बुर्दबारी के बाग़ात में दाख़िल हो गया और जो शख़्स गुलिस्ताने ह़िल्म में दाख़िल होता है वोह किसी मुआ़मले में कोताही नहीं करता बल्कि लोगों में यूं ज़िन्दगी बसर करता है कि लोग इस से राह़त व आराम पाते और ख़ुश होते हैं।"(1)

मौत, इन्सान की मुह़ाफ़िज़ :

﴾231﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबी कसीर عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَبِيۡر से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم से अ़र्ज़ की गई : "क्या हम आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه की ह़िफ़ाज़त न करें ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान की मुह़ाफ़िज़ उस की मौत है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوۡرَانِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم से ऐसी और भी उ़म्दा बातें और बारीक व दिलचस्प निकात मन्क़ूल हैं जो मह़फ़ूज़ न रहे।"

फ़रामीने मौला मुश्किल कुशा

﴾232﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़मल से बढ़ कर उस की क़बूलिय्यत का एहतिमाम करो इस लिये कि तक़्वा के साथ किया गया थोड़ा अ़मल भी बहुत होता है और जो अ़मल मक़्बूल हो जाए वोह क्यूंकर थोड़ा होगा ?"(3)

अस्ल भलाई क्या है ?

﴾233﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दे ख़ैर رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने फ़रमाया : "भलाई येह नहीं कि तुझे कसीर माल व औलाद ह़ासिल हो जाए बल्कि भलाई येह है कि तेरा इ़ल्म कसीर हो और ह़िल्म भी अ़ज़ीम हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत इतनी ज़ियादा करे कि लोगों से सबक़त ले जाए। जब तू नेकी करने में कामयाब हो जाए तो इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाए और अगर गुनाह में पड़ जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस की बख़्शिश त़लब करे। और दुन्या में भलाई उस आदमी को

---

(1)......شرح اصول اعتقاداهل السنة والجماعة،باب جماع الکلام فی الایمان، الحدیث:٠٧٥، ج١،ص٧٤١.

(2)......جامع معمر بن راشد مع مصنف عبد الرزاق،کتاب الجامع،باب القدر، الحدیث:٢٠٢٦٥،ج١٠،ص١٥٤،مفهومًا

(3)......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر،الرقم٤٩٣٣علی بن ابی طالب، ج٤٢، ص٥١١۔
تاریخ الخلفاء للسیوطی،علی بن ابی طالب ،فصل فی نبذ من اخبار ...... الخ، ص١٨١ .

www.dawateislami.net

हासिल होती है जो गुनाह हो जाने की सूरत में तौबा कर के उस का तदारुक (इस्लाह) कर लेता है या वोह शख़्स जो नेकियां करने में जल्दी करता है और तक़्वा व परहेज़गारी से किया गया अ़मल भी क़लील नहीं होता और जो अ़मल मक़्बूल हो जाए वोह क्यूंकर क़लील होगा ?"(1)

5 उ़म्दा बातें :

﴾234﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़गल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "मेरी 5 बातें याद रखो (और येह ऐसी उ़म्दा व नायाब बातें हैं कि) अगर तुम ऊंटों पर सुवार हो कर इन्हें तलाश करने निकलोगे तो ऊंट थक जाएं लेकिन येह बातें न मिल पाएंगी : (1) बन्दा सिर्फ़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखे। (2) अपने गुनाहों की वज्ह से डरता रहे। (3) जाहिल इ़ल्म के बारे में सुवाल करने से न शरमाए। (4) और अगर आ़लिम को किसी मस्अले का इ़ल्म न हो तो (हरगिज़ न बताए और ला इ़ल्मी का इज़्हार और साफ़ इन्कार करते हुवे) وَاللّٰهُ اَعْلَم "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से ज़ियादा इ़ल्म वाला है।" कहने से न घबराए और (5) ईमान में सब्र की वोह हैसिय्यत है जैसी जिस्म में सर की, उस का ईमान (कामिल) नहीं जो बे सब्री का मुज़ाहरा करता है।"(2)

लम्बी उम्मीदों का नुक़्सान :

﴾235﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं दो चीज़ों से बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा रहता हूं (1) ख़्वाहिश की पैरवी और (2) लम्बी उम्मीदें। ख़्वाहिश की पैरवी से तो इस लिये ख़ौफ़ आता है कि येह ह़क़ क़बूल करने में रुकावट बन जाती और इस पर अ़मल करने से रोकती है और लम्बी उम्मीदों से ख़ौफ़ज़दा होने की वज्ह येह है कि येह आख़िरत भुला देती हैं। ख़बरदार ! दुन्या पीठ फेरे जा रही है और आख़िरत हमारा रुख़ किये हमारे क़रीब आ रही है। इन दोनों (दुन्या व आख़िरत) के अपने अपने बेटे (या'नी चाहने वाले) हैं लेकिन सुनो ! तुम आख़िरत के बेटे (या'नी चाहने वाले) बनो और दुन्या के बेटे (या'नी चाहने वाले) न बनो। इस लिये कि आज (या'नी दुन्या) अ़मल का दिन है, यहां ह़िसाब नहीं है और कल (या'नी आख़िरत) ह़िसाब का दिन है वहां अ़मल का मौक़अ़ नहीं मिलेगा।"(3)

---

1 ......الزهد الكبير للبيهقي، فصل في قصر الأمل و المبادرة العمل......الخ، الحديث:٧٠٨، ص٢٧٦، مختصرًا.

2 ......شعب الإيمان للبيهقي، باب في الصبر على المصائب، الحديث:٩٧١٨، ج٧، ص١٢٤، بتغيرٍ قليلٍ.

3 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد امير المؤمنين على بن ابى طالب، الحديث:٦٩٣، ص١٥٦۔
المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام على بن ابى طالب، الحديث:١، ج٨، ص١٥٥.

www.dawateislami.net

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सुब्हो शाम :

﴾236﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अराकह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم सुब्ह की नमाज़ अदा करने के बा'द आफ़्ताब के एक नेज़ा बुलन्द होने तक उसी जगह अफ़सुर्दा ह़ालत में तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर फ़रमाने लगे कि "मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब को देखा है, लेकिन तुम में से कोई भी उन के मुशाबेह नहीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह सुब्ह इस ह़ाल में करते कि बाल बिखरे होते, बदन गर्द आलूद और चेहरा ज़र्द होता था ऐसे लगता जैसे लोग उन के सामने ता'ज़ियत करने के लिये जम्अ़ हैं और रात तिलावते क़ुरआन करते हुवे कभी अपने क़दमों पर ज़ोर देते तो कभी अपनी पेशानियों पर। जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते तो इस त़रह़ झूमते जिस त़रह़ आंधी में दरख़्त झूमता है। फिर उन की आंखें इस क़दर आंसू बहातीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उन के कपड़े भीग जाया करते और अब तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! लोग ग़फ़्लत में रात गुज़ारते हैं।"(1)

गुमनाम बन्दों के लिये ख़ुश ख़बरी :

﴾237﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के गुमनाम बन्दों के लिये ख़ुश ख़बरी है ! वोह बन्दे जो ख़ुद तो लोगों को जानते हैं लेकिन लोग उन्हें नहीं पहचानते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (जन्नत पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते) हज़रते सय्यिदुना रिज़्वान عَلَيْهِ السَّلَام को उन की पहचान करा दी है। येही लोग हिदायत के रौशन चराग़ हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम तारीक फ़ितने इन पर ज़ाहिर फ़रमा दिये हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें अपनी रह़मत (से जन्नत) में दाख़िल फ़रमाएगा। येह शोहरत चाहते हैं न ज़ुल्म करते हैं और न ही रियाकारी में पड़ते हैं।"(2)

---

1 ......صفة الصفوة ،ابو الحسن علی بن ابی طالب ، ج۱،ص۱۷۳،بتغیرٍقلیلٍ.

2 ......الزھد لھناد بن السری ،باب الریاء ،الحدیث:۸۶۱،ج۲،ص۴۳۷۔
المصنف لابن ابی شیبۃ ، کتاب الزھد،کلام علی بن ابی طالب ،الحدیث:۳،ج۸،ص۱۵۵.

www.dawateislami.net

कामिल फ़क़ीह कौन ?

﴾238﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन ज़मरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "सुनो ! कामिल फ़क़ीह वोह है जो लोगों को रह़मते इलाही से मायूस न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ न होने दे, उस की ना फ़रमानी की रुख़्सत न दे और कुरआने ह़कीम छोड़ कर किसी और चीज़ में रग़बत न रखे बिग़ैर इ़ल्म के इ़बादत, बिग़ैर फ़ेह्म के इ़ल्म और बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र और तदब्बुर के तिलावते कुरआन में कोई भलाई नहीं।"(1)

﴾239﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! इ़ल्म के सर चश्मे, रात के चराग़ (या'नी रातों को जाग कर इ़बादते इलाही करने वाले), बोसीदा लिबास और पाकीज़ा दिल वाले बन जाओ इस के सबब आस्मानों में तुम्हारे चर्चे होंगे और ज़मीन में तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द होगा।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم के रिक़्क़त अंगेज़ बयानात

﴾240﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन ख़लीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम बछड़े की त़रह़ बे ताबी से आवाज़ें निकालो, कबूतर की त़रह़ पुकारो, राहिबों की त़रह़ गोशा नशीन हो जाओ, अपनी औलाद व माल छोड़ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां बुलन्द मर्तबे में उस का कुर्ब पाने या अपने गुनाहों को जिन्हें किरामन कातिबीन ने गिन रखा है बख़्शवाने के लिये चल पड़ो तो येह सब उस अ़ज़ीम व कसीर सवाब के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है जिस की मैं तुम्हारे लिये उम्मीद करता हूं। बहर ह़ाल मैं तुम्हें उस के दर्दनाक अ़ज़ाब से डराता हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम्हारी आंखें उस के ख़ौफ़ और उस से मुलाक़ात के शौक़ में आंसू बहाएं फिर तुम रहती दुन्या तक जियो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें ईमान की ने'मत से नवाज़ कर इस के सबब जो तुम्हारे लिये बड़े बड़े

---

1 ......سنن الدارمی، المقدمۃ، باب من قال:الخشیۃ و تقوی اللّٰہ، الحدیث:٢٩٧ / ٢٩٨، ج١، ص١٠١.

2 ......سنن الدارمی، المقدمۃ، باب العمل بالعلم......الخ، الحدیث:٢٥٦، ج١، ص٩٢، بتغیر، روی عبد اللّٰہ بن مسعود.

www.dawateislami.net

इन्आमात रखे उन के लिये तुम आ'माले सालेहा कर के, मशक़्क़तें सह सह के कोई कसर बाक़ी न छोड़ो और ता क़ियामत नेक आ'माल पर क़ाइम रहो फिर भी तुम अपने अ़मल की बदौलत जन्नत के ह़क़दार नहीं बन सकते। हां मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से तुम रह़्म किये जाओगे और तुम में इन्साफ़ करने वाले उस की जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें तौबा करने वाले इ़बादत गुज़ारों में शामिल फ़रमाए।"

﴾241﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم एक जनाज़े में शरीक हुवे, तदफ़ीन के बा'द मय्यित के वुरसा पर गिर्या त़ारी हो गया और वोह रोने लगे, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "तुम क्यूं रोते हो ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम उन अह़वाल का मुशाहदा कर लेते जिन का मुशाहदा मय्यित ने किया है तो तुम इस मुर्दे को भूल जाते (और अपने आप पर रोते) याद रखो ! मौत तुम्हारे पास आती रहेगी यहां तक कि तुम में कोई एक भी ज़िन्दा न रहेगा। इतना बयान करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم खड़े हो गए और फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं जिस ने तुम्हारे लिये बहुत सी मिसालें बयान फ़रमाईं और तुम्हारी मौत का वक़्त मुक़र्रर कर रखा है। उस ने तुम्हें ऐसे कान अ़त़ा किये हैं कि वोह जो सुन लेते हैं उसे याद कर लेते हैं और ऐसी आंखें बख़्शीं हैं कि जिस चीज़ को इन आंखों से देख लिया जाता है वोह वाज़ेह़ हो जाती है। उस ने तुम्हें ऐसे दिल भी दिये हैं जो मुआ़मलात को समझ लेते हैं बेशक उस ने तुम्हें बे मक़्सद पैदा नहीं फ़रमाया बल्कि कामिल ने'मतों और उ़म्दा अश्या के साथ तुम्हें इ़ज़्ज़त बख़्शी, तुम्हारे लिये हर चीज़ की मिक़्दार मुक़र्रर फ़रमाई और तुम्हारे आ'माल के मुत़ाबिक़ जज़ा मुक़र्रर फ़रमाई। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो ! उसे पाने की कोशिश करो ! ख़्वाहिशात का दम तोड़ने वाली मौत से हम किनार होने से पहले पहले (नेक) अ़मल के ज़रीए़ उस के लिये तय्यारी करो क्यूंकि दुन्या की ने'मतें आ़रिज़ी व फ़ानी हैं। उस की आफ़तों से न किसी मुतकब्बिर व मग़रूर का ग़ुरूर बचा सकता है तो न ही किसी अफ़्वाह साज़ की बात और न बात़िल व नाह़क़ की त़रफ़ मैलान रखने वाले किसी शख़्स का सहारा अम्न दे सकता है कि जो मुश्किल वक़्त में साथ छोड़ देता और हर वक़्त शहवत में बद मस्त हो कर ख़ुद फ़रेबी का शिकार रहता है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! आयात व अह़ादीस से इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डरो ! वा'ज़ो नसीह़त से

www.dawateislami.net

नफ़्अ़ हासिल करो ! मौत तुम में अपने पंजे गाड़ चुकी और तुम्हें मिट्टी के घर से मिला कर रहेगी फिर सूर फूंकने के साथ ही क़ब्रों से उठने, मैदाने महशर की त़रफ़ हांके जाने और हिसाब के लिये अल्लाह जब्बारो क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े होने वाले हौलनाक क़िस्म के उमूर पेश आने वाले हैं और येह वोह दिन है जब हर नफ़्स के साथ हांकने वाला होगा जो उसे मैदाने महशर की त़रफ़ ले जाएगा और एक गवाह होगा जो उस के आ'माल की गवाही देगा। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِایْٓءَ بِالنَّبِیّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۶۹﴾

(پ۲۴،الزمر:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन जगमगा उठेगी अपने रब के नूर से और रखी जाएगी किताब और लाए जाएंगे अम्बिया और येह नबी और इस की उम्मत के उन पर गवाह होंगे और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।*

उस दिन तमाम शहर थर्रा उठेंगे। मुनादी निदा देगा। वोह दिन मुलाक़ात का दिन होगा। पिन्डली से पर्दा उठ जाएगा। सूरज बे नूर हो जाएगा। दरिन्दे महशर में जम्अ़ किये जाएंगे। राज़ ज़ाहिर हो जाएंगे। बदकारों के लिये हलाकत का दिन होगा। दिल कांप उठेंगे। अहले जहन्नम के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फिटकार होगी। जहन्नम उन पर अपने आंकड़े और नाख़ुन निकाल लेगी और उन पर चीख़े चिल्लाएगी। उस की आग को हवा मज़ीद भड़काएगी। उस में रहने वाले सांस न ले सकेंगे न उन पर मौत त़ारी होगी और न उन की तक्लीफ़ें ख़त्म होंगी। उन के हमराह फ़िरिश्ते होंगे जो उन्हें जहन्नम में दाख़िले और खोलते पानी की ख़ुश ख़बरी सुनाएंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मह़रूम नीज़ उस के औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से दूर होंगे और जहन्नम की त़रफ़ हांके जाएंगे।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस शख़्स की त़रह़ डरो जो डरा और आ़जिज़ी इख़्तियार की। ख़ौफ़ज़दा हुवा और कूच के लिये चल पड़ा। मोहतात नज़रों से देखा तो कांप उठा। तलाश में निकला तो नजात के लिये भाग पड़ा। क़ियामत की तय्यारी के लिये ज़ादे राह कमर पर रख लिया और याद रखो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बदला लेने के लिये काफ़ी, हर अ़मल को देखने वाला, आ'माल नामा मज़बूत़ फ़रीक़ और हुज्जत के लिये काफ़ी, जन्नत सवाब देने में और जहन्नम अ़ज़ाब देने में काफ़ी है। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने और तुम्हारे लिये मग़फ़िरत त़लब करता हूं।"(1)

(1) صفة الصفوة،ابو الحسن علی بن ابی طالب ،کلمات منتخبة من کلامه و مواعظه ،ج۱، ص۱۷۱-۱۷۲،مختصرًا.

www.dawateislami.net

नौफ़ बिकाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِى को नसीहत :

﴾242﴿.....हज़रते सय्यिदुना नौफ़ बिकाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِى से मरवी है कि एक रात अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم बाहर निकले और सितारों की त़रफ़ देखने लगे फिर फ़रमाया : "ऐ नौफ़ ! सो रहे हो या जाग रहे हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! जाग रहा हूं।" फ़रमाया : "ऐ नौफ़ ! दुन्या में ज़ोहद इख़्तियार करने और आख़िरत में रग़बत रखने वालों के लिये खुश ख़बरी है। येही वोह लोग हैं जिन्हों ने (रहने के लिये बुलन्दो बाला मकानात ता'मीर करने के बजाए ख़ाली) ज़मीन को इख़्तियार किया, इस की ख़ाक को अपना बिछौना बना लिया और इस के पानी को खुश्बू तसव्वुर कर लिया, तिलावते क़ुरआने पाक और दुआ़ को अपनी पहचान और शिआ़र बना लिया, दुन्या से हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रह़ किनाराकशी इख़्तियार की।

ऐ नौफ़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "बनी इस्राईल को हुक्म फ़रमा दो कि वोह पाकीज़ा दिल, झुकी निगाह और (ज़ुल्म से) पाको साफ़ हाथ ले कर मेरे घर (या'नी मस्जिद) में दाख़िल हों इस लिये कि मैं उन में से किसी ऐसे की दुआ़ क़बूल नहीं करूंगा जिस ने मेरे किसी बन्दे पर ज़ुल्म किया होगा।

ऐ नौफ़ ! शाइ़र, निगरान, (ज़ालिम) पोलीस वाला, ख़िराज वुसूल करने वाला और (ज़ुल्मन) टेक्स लेने वाला न बनना। एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रात के किसी वक़्त में खड़े हुवे और फ़रमाया : "येह वोह घड़ी है जिस में बन्दा जो दुआ़ मांगता है क़बूल की जाती है ब शर्ते कि वोह निगरान, (ज़ालिम) पोलीस वाला, ख़िराज वुसूल करने वाला, (ज़ुल्मन) टेक्स लेने वाला, सितार (त़म्बूरे की क़िस्म का एक बाजा) और ढोल बजाने वाला न हो।"(1)

आ़लिम, त़ालिबे इ़ल्म और जाहिल :

﴾243﴿.....हज़रते सय्यिदुना कुमैल बिन ज़ियाद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِبَاد से मरवी है कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा, शहनशाहे औलिया हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم मेरा हाथ पकड़ कर एक क़ब्रिस्तान के किनारे चलने लगे यहां तक कि जब हम

---

1 ......تاریخ بغداد، الرقم۳۶۰۸ جعفر بن مبشر، ج۷،ص۱۷۳، مختصراً۔
تفسیرالقرطبی ، سورۃالبقرۃ ،تحت الآیۃ۱۸۶،ج۱،الجزء الثانی،ص۲۳۹۔۲۴۰

www.dawateislami.net

एक खुले मैदान में पहुंचे तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ एक जगह बैठ कर सांस लेने लगे। फिर कुछ देर बा'द फ़रमाने लगे : ऐ कुमैल बिन ज़ियाद ! दिल बरतनों की त़रह़ हैं और इन में बेहतरीन दिल वोह है जो बात को ज़ियादा याद रखे। येह बात याद रखो ! कि लोग तीन त़रह़ के होते हैं : (1) आ़लिमे रब्बानी (2) राहे नजात पर चलने वाला त़ालिबे इ़ल्मे दीन और (3)....वोह बे वुक़ूफ़ और जाहिल लोग जो हर सुनी सुनाई बात की पैरवी करने लग जाते हैं, हर हवा के साथ बदल जाते हैं, नूरे इ़ल्म से अपने क़ल्ब व बात़िन को रौशन करने से मह़रूम रहते और किसी मज़बूत़ सुतून को ज़रीअ़ए ह़िफ़ाज़त नहीं बनाते हैं।

इ़ल्म माल से बेहतर है। इ़ल्म तेरी ह़िफ़ाज़त करता है जब कि माल की तुझे ह़िफ़ाज़त करनी पड़ती है। इ़ल्म फैलाने से बढ़ता है जब कि माल ख़र्च करने से घटता है। आ़लिम से लोग मह़ब्बत करते हैं। आ़लिम, इ़ल्म की बदौलत अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त बजा लाता है। आ़लिम के मरने के बा'द भी उस का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रहता है जब कि माल का फ़ाइदा उस के ज़वाल के साथ ही ख़त्म हो जाता है और येही मुआ़मला मालदारों का है कि दुन्या में माल ख़त्म होते ही उन का नाम तक मिट जाता है इस के बर अ़क्स उ़लमा का नाम रहती दुन्या तक बाक़ी रहता है। मालदारों के नाम लेने वाले कहीं नज़र नहीं आते जब कि उ़लमाए दीन की इ़ज़्ज़त और मक़ाम हमेशा लोगों के दिलों में क़ाइम रहता है। हाए अफ़्सोस ! फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हाथ से अपने सीने की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : "यहां एक इ़ल्म है, काश ! तुम इसे इस के उठाने वालों तक पहुंचा दो, हां तुम इसे ज़हीन व फ़त़ीन को पहुंचा दोगे जिस पर इत़्मीनान नहीं रहा, दीन को दुन्या के लिये इस्ति'माल किया जा रहा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुज्जतों के ज़रीए़ उस की किताब पर और उस की ने'मतों के ज़रीए़ उस के बन्दों पर ग़लबा पा रहा है या फिर वोह अहले ह़क़ के सामने तो सरे तस्लीम ख़म किये हुवे है लेकिन उस में कोई बसीरत नहीं।

ऐसे इ़ल्म वाले के दिल में पहली ही दफ़्आ़ शक जगह बना लेता है न उसे कामयाबी मिलती है और न ही दूसरा कामयाब होता है जिसे येह इ़ल्म सिखाता है। वोह लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में मुन्हमिक रहता है। शहवात की ज़न्जीरों में जकड़ा होता है या मालो दौलत के जम्अ़ करने में लगा रहता है और येह दोनों शख़्स दीन की त़रफ़ बुलाने वाले नहीं इन दोनों की मिसाल तो चरने वाले जानवर की सी है। इस त़रह़ इ़ल्म भी ऐसे लोगों के साथ मर जाता है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

जानता है कि ज़मीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ को दलाइल के साथ क़ाइम करने वालों से कभी ख़ाली नहीं होती ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुज्जतें और उस के वाज़ेह़ दलाइल ज़ाएअ़ न हो जाएं। ऐसे नुफ़ूसे क़ुदसिया की ता'दाद बहुत कम होती है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इन की क़द्रो मन्ज़िलत बहुत ज़ियादा है। उन के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी हुज्जतों का दिफ़ाअ़ फ़रमाता है यहां तक कि फिर इन की मिस्ल लोग आ कर इन की जगह येह फ़रीज़ा अन्जाम देते हैं और वोह इन के दिलों में शजरे ह़क़ की आबयारी करते हैं फिर ह़क़ीक़ी इल्म इन के पास आता है जिस से ऐश परस्त लोग किनाराकशी करते हैं। जब कि येह लोग तेज़ी से उस की त़रफ़ माइल होते हैं और जिन चीज़ों से जाहिलों को वह़शत होती है इन्हें उस से उन्सिय्यत ह़ासिल होती है।

इन के जिस्म तो दुन्या में होते हैं लेकिन इन की रूहें आ'ला मनाज़िर के साथ मुअ़ल्लक़ होती हैं। येही लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के शहरों में उस के नाइब और उस के दीन की दा'वत देने वाले हैं। आह ! आह ! उन की ज़ियारत का किस क़दर शौक़ है ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी और तुम्हारी बख़्शिश का सुवाल करता हूं। अब अगर तुम चाहो तो खड़े हो जाओ।[1]

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की मुबारक ज़िन्दगी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से ज़ोह्दो क़नाअ़त नीज़ इ़बादत व ख़ौफ़ के मुतअ़ल्लिक़ जो मन्क़ूल व मश्हूर है इस का कुछ तज़्किरा किया जाता है।

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं कि "तसव्वुफ़ दुन्यावी साज़ो सामान से मुंह फेर कर ह़क़ीक़ी मक़्सद की त़रफ़ बढ़ने का नाम है।"

सारा माल तक़्सीम फ़रमा दिया :

﴾244﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन रबीअ़ वाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي से मरवी है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में इब्ने नब्बाज ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! इस वक़्त बैतुल माल सोने चांदी से भरा हुवा है।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने اللّٰه اكبر कहा और इब्ने नब्बाज के सहारे खड़े हो कर बैतुल माल तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया :

---

1 ......تاریخ بغداد، الرقم ٣٤١٣ اسحاق بن محمد بن احمد بن أبان، ج٦، ص٣٧٦، مختصراً۔
صفۃ الصفوۃ، ابو الحسن علی بن ابی طالب، کلمات منتخبۃ من کلامہ ومواعظہ، ج١، ص١٧٢۔١٧٣۔

www.dawateislami.net

هٰذَا جَنَایَ وَخِیَارُہٗ فِیْہِ   وَکُلُّ جَانٍ یَدُہٗ اِلٰی فِیْہِ

तर्जमा : येह मेरी ख़ता है और बेहतरीन माल इस में है और हर ख़ताकार का हाथ उस के मुंह में है।

फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने नब्बाज ! मेरे पास कूफ़ा वालों को लाओ।" लोगों में ए'लान कर दिया गया फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बैतुल माल का सारा माल लोगों में तक़्सीम फ़रमा दिया और ह़ालत येह थी कि हाथों से माल तक़्सीम फ़रमाते जाते और ज़बाने अक़्दस से येह कलिमात दोहराते जाते : "ऐ सोना ! ऐ चांदी ! मेरे पास से जा, हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! ह़त्ता कि कोई दिरहमो दीनार न बचा फिर बैतुल माल में पानी के छिड़काव का हुक्म दिया और उस जगह दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई।"(1)

﴾245﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजम्मिअ़ तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बैतुल माल की सफ़ाई कराते, फिर उस में इस उम्मीद पर नमाज़ अदा फ़रमाते कि बरोज़े क़ियामत येह जगह उन के ह़क़ में गवाही दे।"(2)

﴾246﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन अ़ला رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने लोगों को ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! तुम्हारे माल फ़ै (जो बिग़ैर जंग के ह़ासिल हो) में से मेरे पास इस के सिवा कुछ नहीं है येह कह कर अपनी आस्तीन से एक बोतल निकाली और फ़रमाया येह मेरे देहाती ग़ुलाम ने मुझे हिबा की (या'नी तोह़फ़े में दी) है।"(3)

"फ़ालूदा" से ख़ित़ाब :

﴾247﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शरीक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दादा से रिवायत करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को किसी ने फ़ालूदा पेश किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे सामने रख कर इरशाद फ़रमाया : "बेशक तेरी ख़ुश्बू

---

1 ......فضائل الصحابۃ للامام احمدبن حنبل،اخبارامیرالمؤمنین علی بن ابی طالب، الحدیث:۸۸٤،ج۱،ص۵۳۱.

2 ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب ،الرقم۱۸۷۵علی بن ابی طالب ،ج۳،ص۲۱۱،بتغیر.

3 ......الزھد للامام احمدبن حنبل ،زھدامیر المؤمنین علی بن ابی طالب ،الحدیث:٦۹٥،ص۱٥۷،بتغیر.

www.dawateislami.net

उ़म्दा, रंग अच्छा और ज़ाइक़ा लज़ीज़ है लेकिन मुझे येह पसन्द नहीं कि मैं अपने नफ़्स को उस चीज़ का आ़दी बनाऊं जिस का वोह आ़दी नहीं।"(1)

﴾248﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन साबित رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के सामने फ़ालूदा पेश किया गया लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे तनावुल न फ़रमाया।"(2)

खजूर और घी का ह़ल्वा :

﴾249﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन मलीह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के सामने खजूर और घी का ह़ल्वा पेश किया गया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे अपने रुफ़क़ा के सामने रख दिया, उन्हों ने उसे खाना शुरूअ़ कर दिया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "इस्लाम गुम शुदा ऊंट नहीं है लेकिन क़ुरैश ने येह चीज़ देखी तो इस पर टूट पड़े।"(3)

मोहर लगा हुवा सत्तू का थैला :

﴾250﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक सक़फ़ी शख़्स ने मुझे बताया कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने मुझे उ़कबरा (बग़दाद में एक अ़लाक़ा है) पर आ़मिल मुक़र्रर किया और फ़रमाया : "नमाज़ पढ़ने वाले रातों को आराम नहीं करते लिहाज़ा ज़ोहर के वक़्त मेरे पास आना। चुनान्चे, मैं ज़ोहर के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और दरवाज़े पर दरबान (या'नी चौकीदार) न होने की वज्ह से मैं सीधा अन्दर चला गया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ फ़रमा थे और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक प्याला और पानी का लोटा रखा हुवा था। कुछ देर के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना थैला मंगवाया। मेरे दिल में ख़याल आया कि मुझे कुछ जवाहिर अ़ता फ़रमाएंगे हालांकि मुझे नहीं मा'लूम था कि उस थैले में क्या है ? थैला बन्द था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने उस को खोल कर कुछ सत्तू निकाले और उन्हें

---

1 ......الزهد للامام احمدبن حنبل، زهدامیر المؤمنین علی بن ابی طالب ،الحدیث:۷۰۷،ص۱۵۸ .

2 ......الزهد للامام احمدبن حنبل، زهدامیر المؤمنین علی بن ابی طالب ،الحدیث:۷۰۰،ص۱۵۷ .

3 ......فضائل الصحابة للامام احمد بن حنبل، اخبار امیر المؤمنین علی بن ابی طالب،الحدیث:۸۹۵،ج۱،ص۵۳۷ .

www.dawateislami.net

प्याले में डाला और उस में पानी मिलाया फिर ख़ुद भी पिया और मुझे भी पिलाया। मुझ से रहा न गया तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! इराक़ में खाने की फ़रावानी (या'नी कसरत) है लेकिन इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इराक़ में ऐसा खाना क्यूं खाते हैं ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने कन्जूसी व बुख़्ल की वज्ह इसे थैले में बन्द कर के नहीं रखा बल्कि ज़रूरत के लिये जम्अ़ कर रखा है और थैले को इस डर से बन्द कर रखा है कि कहीं ऐसा न हो कि येह ज़ाएअ़ हो जाए और इस के इलावा किसी और चीज़ की मोह़ताजी हो। लिहाज़ा मैं ने इस की ह़िफ़ाज़त की ख़ातिर ऐसा किया है और मुझे येह पसन्द है कि मैं पाकीज़ा खाना ही खाऊं।"

﴾251﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के पास मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से कोई चीज़ आया करती थी जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुब्ह़ो शाम तनावुल फ़रमाया करते थे।"

﴾252﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हारून बिन अ़न्तरह رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ख़वर्नक़ के मक़ाम पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मा'मूली चादर ओढ़े हुवे थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कपकपी त़ारी थी। मैं ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप और आप के घर वालों के लिये इस माल से ह़िस्सा मुक़र्रर फ़रमाया है, इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह ह़ालत बना रखी है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने तुम्हारे माल से कोई चीज़ इस्ति'माल नहीं की येह चादर भी मैं अपने घर से या फ़रमाया मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से लाया था।"

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लिबास

﴾253﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक मरतबा अहले बसरा का वफ़्द अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा । उस वफ़्द में जा'द बिन ना'जह नामी एक ख़ारिजी शख़्स भी मौजूद था उस ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिबास के बारे में मलामत की तो

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरा लिबास मुतकब्बिराना नहीं और मुसलमानों को इस मुआ़मले में मेरी पैरवी करनी चाहिये।"(1)

﴾254﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से किसी ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लिबास में पैवन्द नहीं लगाते ?" फ़रमाया : "अस्ल तो येह है कि बन्दे के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ हो और मोमिन बन्दा उसी की पैरवी करता है।"(2)

﴾255﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद अज़दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बाज़ार में तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे कि "किसी के पास अच्छी क़मीस है जो तीन दिरहमों में फ़रोख़्त करता हो ?" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास है, फिर जा कर एक क़मीस लाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत पसन्द आई फ़रमाया : "येह तो तीन दिरहम से ज़ियादा की है। उस ने कहा : "नहीं, बल्कि इस की क़ीमत येही है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने थेली से तीन दिरहम निकाल कर उसे दिये फिर क़मीस ज़ेबे तन फ़रमाई तो उस की आस्तीनें लम्बी थीं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ाइद हिस्सा उतरवा दिया।"(3)

﴾256-257﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अरक़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر के वालिदे मोह़तरम फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को बाज़ार में तल्वार बेचते देखा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमा रहे थे : "येह तल्वार मुझ से कौन ख़रीदेगा ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस तल्वार ने कई बार हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस से तक्लीफ़ को दूर किया है। अगर मेरे पास तहबन्द के लिये रक़म होती तो मैं इसे कभी भी फ़रोख़्त न करता।"(4)

﴾258﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मिह़जन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं रह़बा के मक़ाम पर अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

(1)......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد امیر المؤمنین علی بن ابی طالب، الحدیث:٧٠٦، ص١٥٨.
(2)......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد امیر المؤمنین علی بن ابی طالب، الحدیث:٦٩٩، ص١٥٧.
(3)......فضائل الصحابة للامام احمد بن حنبل، اخبار امیر المؤمنین علی بن ابی طالب، الحدیث:٩١٢، ج١، ص٥٤٥.
(4)......المعجم الاوسط، الحدیث:٧١٩٨، ج٥، ص٢٤٠، بتغیر.

www.dawateislami.net

के साथ था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तल्वार मंगवाई और उसे फ़रोख़्त करने का ए'लान किया और फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मेरे पास तहबन्द के लिये रक़म होती तो मैं इसे कभी भी न बेचता।"(1)

﴾259﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तल्वार ले कर निकले और फ़रमाया : "इस तल्वार को कौन ख़रीदेगा ?" अगर मेरे पास तहबन्द की क़ीमत होती तो मैं इसे कभी फ़रोख़्त न करता।" अबू रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : "मैं ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं इसे ख़रीदता हूं और वज़ीफ़ा मिलने तक उधार करूंगा।"(2)

अबू उसामा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : अबू रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि "जब अ़तिय्यात मिले तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने वोह तल्वार मुझे दे दी।"

﴾260﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्बसा नह़वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि मैं हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बरगाह में ह़ाज़िर था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास क़बीला बनी नाजियह का एक आदमी आया, उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : ऐ अबू सईद ! हमें येह बात पहुंची है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने जो कुछ किया इस से बेहतर था कि वोह मदीने की सूखी खजूरें खा लेते।" हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! क्या मैं बातिल बात के ज़रीए किसी की जान बचाऊंगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! लोगों से एक पाकीज़ा तीर गुम हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन्हों ने कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का माल चोरी नहीं किया और न ही उस के हुक्म से रू गर्दानी की, उन्हों ने कुरआने पाक के तमाम हुक़ूक़ पूरे किये उस के ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जाना यहां तक कि इस बात ने उन्हें मीठे हौज़ों और उ़म्दा बाग़ों में पहुंचा दिया। ऐ बे वुक़ूफ़ शख़्स ! येह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की शान है।"

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد امیر المؤمنین علی بن ابی طالب، الحدیث:۷۰۲، ص۱۵۸ .

2 ......فضائل الصحابۃ للامام احمد بن حنبل ، ومن فضائل امیر المؤمنین علی، الحدیث:۹۲۵، ج۱، ص۵۴۹ .

www.dawateislami.net

अमीरे मुआ़विया और शाने अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہما

﴾261﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन ज़मरह कनानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन से फ़रमाया : "मेरे सामने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجھہ الکریم की शान बयान करो !" उन्हों ने (मा'ज़िरत करते हुवे) कहा : "या अमीरल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہ ! (मैं उन की शान कैसे बयान कर सकता हूं ?) क्या आप رضی اللہ تعالٰی عنہ मुझे इस से मुआ़फ़ नहीं रखते ?" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें उस वक़्त तक मुआ़फ़ नहीं करूंगा जब तक ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجھہ الکریم के औसाफ़ बयान नहीं करोगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन ज़मरह कनानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने कहा : चलें अगर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ मुझ पर लाज़िम क़रार देते हैं तो फिर सुनिये :

अल्लाह عزوجل की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجھہ الکریم ख़्वाहिशात से दूर रहने वाले और बहुत त़ाक़त वाले थे, फ़ैसला कुन गुफ़्तगू फ़रमाते, लोगों के फ़ैसलों में हमेशा अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से इ़ल्मो ह़िक्मत के चश्मे जारी होते, दुन्या और इस की आसाइशों से वह़शत मह़सूस करते और रात और इस के अन्धेरे से उन्सिय्यत ह़ासिल करते।

अल्लाह عزوجل की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجھہ الکریم हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मुतफ़क्किर रहते, अपना मुह़ासबा करते, पहनने और खाने के लिये जव और जैसा मुयस्सर आता उसी पर राज़ी रहते और इतने ही पर क़नाअ़त फ़रमाते।

अल्लाह عزوجل की क़सम ! जब उन की ख़िदमत में कोई जाता तो उस पर शफ़्क़त फ़रमाते अपने पास बिठाते, हर सुवाल का जवाब इ़नायत फ़रमाते, अपनी शफ़्क़त व मह़ब्बत, उल्फ़त व क़ुरबत के बा वुजूद भी हम आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के रो'ब व जलाल की वज्ह से बात न कर पाते, जब मुस्कुराते तो दांत पिरोए हुवे चमकते मोतियों की त़रह़ नज़र आते, अहले दीन को इ़ज़्ज़तो तकरीम से नवाज़ते, मसाकीन आते वोह भी मह़ब्बत की चाश्नी पाते, कोई त़ाक़तवर उन से बात़िल की उम्मीद लगाता तो मायूसी को गले लगाता और अ़द्लो इन्साफ़ ऐसा कि कमज़ोर लोग अपनी कमज़ोरी से न घबराते।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैं ने बा'ज़ दफ़्आ उन्हें देखा जब रात की तारीकी में सितारे छुप जाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेह्राब में तशरीफ़ ले जाते और अपनी रीश (दाढ़ी) मुबारक पकड़ कर मुज़्तरिब व ग़मज़दा शख़्स की त़रह आंसू बहाते गोया कि मैं अब भी उन की आवाज़ सुन रहा हूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कह रहे हैं "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ाते फिर दुन्या को ललकारते और फ़रमाते : "तू ने मुझे धोका देना चाहा मेरी त़रफ़ बन संवर कर आई, मुझ से दूर हो जा, दूर हो जा, किसी और को धोका देना मैं तुझे तीन त़लाक़ें दे चुका हूं, तेरी उ़म्र क़लील, तेरी मजलिस ह़क़ीर और तेरा ख़त़रा आसान है, हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! ज़ादे राह क़लील, सफ़र त़वील और रास्ता पुर ख़त़र है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन ज़मरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के औसाफ़ बयान करते रहे और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत येह थी कि आंसूओं से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारक तर हो गई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें अपनी आस्तीन से पोंछते रहे, ह़ाज़िरीन भी अपने ऊपर क़ाबू न रख सके और रोने लगे, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक अबू ह़सन अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ऐसे ही थे । ऐ ज़रार ! उन पर तुम्हारा ग़म कैसा है ?" अ़र्ज़ की : "उस औ़रत की त़रह जिस की गोद में उस के बेटे को ज़ब्ह़ कर दिया गया हो न तो उस के आंसू थमते हैं, न ही ग़म में कमी आती है ।"(1)

तीन मुश्किल अ़मल

﴾262﴿.....इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन इब्ने ह़ैदर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन अ़मल मुश्किल हैं : (1) अपनी जान का ह़क़ अदा करना (2) हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहना और (3) अपने ह़ाजत मन्द मुसलमान भाइयों से माली तआ़वुन करना ।"(2)

❶......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حرف العین،الرقم۱۸۷۵علی بن ابی طالب،ج۳، ص۲۰۹،مختصر.

❷......فردوس الاخبار للدیلمی ،باب السین، الحدیث:۳۲۹۳،ج۱،ص۴۴۲،"اشد الاعمال" بدلہ "سید الاعمال".

www.dawateislami.net

इस्लाम में निफ़ाक़ की गुन्जाइश नहीं :

﴾263﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहिद दिमश्क़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से मरवी है कि जंगे सिफ़्फ़ीन के दिन हौशब ख़ीरी ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को निदा दी : "ऐ इब्ने अबी त़ालिब ! हम आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा देते हैं कि जंग बन्द कर दें, हम आप के लिये इ़राक़ का रास्ता छोड़ देते हैं आप हमारे लिये शाम का रास्ता छोड़ दें, इस त़रह़ ख़ून रेज़ी का सिलसिला बन्द होगा और मुसलमानों की जानें बच जाएंगी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ उम्मे ज़ुलैम के बेटे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर दीन में मुदाहनत (مُ۔دَا۔ہَ۔نَت : या'नी निफ़ाक़) की गुन्जाइश होती तो मैं ऐसा ही करता और मेरे लिये भी आसान था लेकिन येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं है कि उस की ना फ़रमानी होती रहे और अहले इस्लाम मुदाहनत से काम लेते हुवे ख़ामोश रहें ।"(1)

पेट पर पथ्थर बांधते :

﴾264﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में भूक की शिद्दत से अपने पेट पर पथ्थर बांधा करता था और अब मेरा सदक़ा 40 हज़ार दीनार होता है ।"(2)

मुहिब्बे मौला अ़ली की पहचान :

﴾265﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से मरवी है कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मह़ब्बत करने वाले बुर्द बार, इ़ल्म वाले, ख़ुश्क होटों वाले, ऐसे नेकूकार होते हैं जो इ़बादत की वज्ह से गोशा नशीन मा'लूम होते हैं ।"(3)

﴾266-267﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "हम से मह़ब्बत करने वाले ख़ुश्क होटों वाले होते हैं और हम में से इमाम वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़ाअ़त व इ़बादत की त़रफ़ बुलाने वाला हो ।"

---

(1)......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب،حرف الحاء، الرقم ٥٩٩حوشب بن طخیۃ الحمیری ،ج١،ص٤٥٧.

(2)......الزھدللامام احمد بن حنبل،زھدامیرالمؤمنین علی بن ابی طالب،الحدیث ٧١١،ص١٥٩،بتغیر.

(3)......فضائل الصحابۃ للامام احمد بن حنبل ،باب ومن فضائل امیرالمؤمنین علی، الحدیث:١١٤٤،ج٢،ص٦٧١.

www.dawateislami.net

मुहिब्बाने अहले बैत की अ़लामात :

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "अहले बैते अत़हार के मुहिब्बीन ख़ुश्क होटों वाले होते हैं, वोह अपनी पेशानियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में झुकाए रखते और मौत को याद रखते हैं, दुन्यादार ज़ालिमों और मालदारों से किनारा कशी इख़्तियार करते हैं। येह वोह लोग हैं कि जिन्हों ने दुन्यवी राहतों और आसाइशों, लज़्ज़तों और शहवतों, अन्वाओ़ अक़्साम के खानों और लज़ीज़ शरबतों को तर्क कर दिया और रसूलों, वलियों और सिद्दीक़ों की राह पर गामज़न हुवे, फ़ना व ज़वाल पज़ीर होने वाली दुन्या के तारिक, हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत में राग़िब रहे बिल आख़िर इन्आ़मो इकराम, फ़ज़्लो एह़सान फ़रमाने वाले रब्बे ह़न्नानो मन्नान, रह़ीम व रह़मान عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर जा पहुंचे।"

हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार मशहूरो मा'रूफ़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में होता है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अच्छी आ़दात व उ़म्दा सिफ़ात के ह़ामिल थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ राहे ख़ुदा में अपना माल ख़र्च करते ह़त्ता कि जान भी क़ुरबान कर दी। अपनी मन्नतें पूरी फ़रमाते, अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उस की राह में ख़र्च करते, तंग दस्ती में मह़्ज़ अपने (और अपने घर वालों के) लिये माल ख़र्च करते और ख़ुशहा़ली में अपने माल से दीगर लोगों की भी ख़ैर ख़्वाही करते।

उ़लमाए तसव्वुफ़ رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "बुरी सिफ़ात से ख़ुद को साफ़ सुथरा रखने और दुन्या व आख़िरत में माल व गुनाह के बोझ से अपने आप को हल्का रखने का नाम तसव्वुफ़ है।"

राहे ख़ुदा में 70 ज़ख़्म खाए :

﴾268-269﴿.....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब जंगे उहुद के दिन को याद करते तो फ़रमाते : "वोह सारा दिन तो त़लह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का दिन था।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "उस दिन सब से पहले मैं हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे और अबू उ़बैदा बिन जर्राह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "अपने रफ़ीक़ (या'नी ह़ज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की ख़बर लो क्यूंकि वोह ज़ख़्मी हैं।" चुनान्चे, हम पहले तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत का शरफ़ ह़ासिल करते रहे फिर ह़ज़रते त़लह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास आए, देखा तो उन के जिस्म पर तीरों, तल्वारों और नेज़ों के कमो बेश 70 ज़ख़्म थे और एक उंगली भी कट गई थी। पस हम ने उन की ख़बर गीरी की।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़ह्द पूरा करने वाले :

﴾270﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब नूर के पैकर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए उहुद से वापस तशरीफ़ लाए तो मिम्बर पर जल्वा फ़रमा हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ (پ۲۱،الاحزاب:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुसलमानों में से कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द अल्लाह से किया था तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका।*

एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस से कौन लोग मुराद हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : इतने में, मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और उस वक़्त मेरे बदन पर दो सब्ज़ चादरें थीं। हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के उस सुवाल करने वाले से इरशाद फ़रमाया : "येह भी उन में से है।"(2)

ज़िन्दगी में मन्नतें पूरी कर लीं :

﴾271﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक मरतबा मैं अपने घर में बैठी हुई थी और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के साथ सेह़्न में तशरीफ़ फ़रमा थे कि इस दौरान ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल

(1)......مسند ابی داود الطیالسی، احادیث ابی بکر الصدیق، الحدیث:٦، ص٣.

(2)......المعجم الکبیر، الحدیث:٢١٧، ج١، ص١١٧.

www.dawateislami.net

उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी ऐसे ज़िन्दा शख़्स को देखना चाहता है जो अपनी मन्नतें पूरी कर चुका हो तो वोह त़लह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को देख ले।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत

4 लाख दिरहम का सदक़ा :

﴾272﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुतैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ परेशानी के आ़लम में मेरे पास तशरीफ़ लाए, मैं ने उन से दरयाफ़्त किया कि "आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) क्यूं परेशान हैं ? मुझे बताएं ताकि मैं आप की मदद कर सकूं।" फ़रमाया : "ऐसी कोई बात नहीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों के कितने अच्छे दोस्त हैं !" मैं ने पूछा : "मुआ़मला क्या है ?" फ़रमाया : "मेरे पास माल बहुत ज़ियादा हो गया है और इस ने मुझे परेशान कर रखा है।" ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुतैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं। मैं ने कहा : "येह भी कोई परेशानी वाली बात है ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसे (राहे ख़ुदा में) तक़्सीम फ़रमा दें।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारा माल लोगों में तक़्सीम फ़रमा दिया यहां तक कि एक दिरहम भी न छोड़ा।

ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान फ़रमाते हैं : मैं ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ज़ान्ची से माल की मिक़्दार मा'लूम की तो उस ने 4 लाख दिरहम बताई।(2)

बिन मांगे माल बांटते :

﴾273﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़बीसा बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत में रहा तो मैं ने उन से बढ़ कर किसी को नहीं देखा जो बिन मांगे लोगों में कसीर माल बांटता हो।(3)

---

❶......مسندابی یعلی الموصلی، مسندعائشۃ،الحدیث:٤٨٧٧،ج٤،ص٢٧٢.

❷......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم٤٧طلحۃ بن عبیداللّٰہ، ج٣، ص١٦٥،مفھومًا۔
المعجم الکبیر، الحدیث:١٩٥،ج١،ص١١٢

❸......المعجم الکبیر، الحدیث:١٩٤،ج١،ص١١١.

www.dawateislami.net

﴾274﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की यौमिया आमदनी पूरे एक हज़ार दिरहम थी।"[1]

﴾275﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना सो'दा बिन्ते औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की यौमिया आमदनी एक हज़ार दिरहम थी और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में "फ़य्याज़" (या'नी सख़ी) के नाम से मश्हूर थे।"[2]

﴾276﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा, ह़ज़रते सो'दा बिन्ते औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिन एक लाख दिरहम राहे ख़ुदा में सदक़ा किये और उस दिन इन्हें मस्जिद में जाने से सिर्फ़ येह बात मानेअ़ हुई कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कपड़े फटे हुवे थे।"[3]

सारी रात परेशान रहे :

﴾277﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ज़मीन 7 लाख दिरहम में फ़रोख़्त की और सारी रात उस माल की वज्ह से परेशान रहे, यहां तक कि सुब्ह़ हुई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह सारा माल लोगों में तक़्सीम फ़रमा दिया।"[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ साबित क़दम, बहादुर, मज़बूत़ राए वाले नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ़जिज़ी करने वाले और उसी से मदद के त़लबगार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों से लड़ने वाले और राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने वाले थे।

अहले तसव्वुफ़ के नज़्दीक वफ़ादारी, साबित क़दमी, राहे ख़ुदा में कोशिश करने और माल ख़र्च करने का नाम तसव्वुफ़ है।

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۹۶، ج۱، ص۱۱۲.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۹۸/۱۹۶، ص۱۱۲.

3 ......موسوعة لابن الدنیا، کتاب اِصْلاحِ المال، باب فضل المال، الحدیث:۹۷، ج۷، ص۴۲۴.

4 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار طلحة بن عبید اللہ، الحدیث:۷۸۳، ص۱۶۸.

www.dawateislami.net

दीन पर इस्तिक़ामत :

《278》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने 8 साल की उ़म्र में इस्लाम क़बूल किया और 18 साल की उ़म्र में हिजरत फ़रमाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का चचा उन्हें एक चटाई में लपेट कर आग से धुवां देता और कहता : "कुफ़्र की त़रफ़ लौट आओ।" लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते : "मैं कभी नहीं लौटूंगा।"(1)

《279》.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه 16 साल की उ़म्र में इस्लाम लाए और तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुवे।"(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का इ़श्क़े रसूल :

《280》.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि सब से पहले जिस शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हि़फ़ाज़त व हिमायत में तल्वार उठाने की सआ़दत पाई वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने शैत़ान की फैलाई हुई ख़बर सुनी कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद कर दिया गया है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه लोगों को तल्वार से हटाते हुवे हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ ज़ुबैर ! क्या हुवा ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ख़बर मिली थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद कर दिया गया है।" रावी कहते हैं कि "सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه और उन की तल्वार के लिये दुआ़ फ़रमाई।"(3)

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٢٣٩، ج١، ص١٢٢.

2 ......المعجم الكبير، الحديث:٢٤٤، ج١، ص١٢٢.

3 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الجهاد،باب ماذكرفى فضل الجهاد و الحث عليه، الحديث:٢١٦، ج٤، ص٥٩٤.

www.dawateislami.net

जिस्म पर ज़ख़्मों के निशान :

﴾281﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि मौसल के रहने वाले एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि मैं एक सफ़र में हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ था कि "क़ुफ़्र" के मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ुस्ल की ह़ाजत पेश आई, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पर्दे का इन्तिज़ाम करने का फ़रमाया तो मैं ने हुक्म की ता'मील की, अचानक मेरी उन के बदन पर निगाह पड़ी तो मैं ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के जिस्म पर तल्वार के ज़ख़्मों के कई निशानात देखे। मैं ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के जिस्म पर ज़ख़्मों के निशानात देखे हैं और मैं ने इतने निशानात कभी किसी के बदन पर नहीं देखे।" हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या वाक़ेई तुम ने ज़ख़्मों के निशानात देख लिये हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मैं ने देख लिये हैं।" तो हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बताया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह तमाम ज़ख़्म रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ राहे ख़ुदा में आए हैं।"(1)

﴾282﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को देखने वाले एक शख़्स ने मुझे बताया कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सीने पर नेज़ों और तीरों के ज़ख़्मों के बहुत से निशानात थे।"(2)

सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मन्क़बत :

﴾283﴿.....हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मजलिस के पास से गुज़रे उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शे'र सुना रहे थे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को देख कर हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप की ता'रीफ़ में येह अश्आ़र पढ़े :

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٢٢٩، ج١، ص١٢٠.

2 ......الزهدللامام احمد بن حنبل، زهد الزُّبَير بن العَوَام، الحديث:٧٧٧، ص١٦٧.

www.dawateislami.net

فَكَمْ كُرْبَةٍ ذَبَّ الزُّبَيْرُ بِسَيْفِهِ عَنِ الْمُصْطَفٰى وَاللّٰهُ يُعْطِي وَيُجْزِلُ
فَمَا مِثْلُهُ فِيهِمْ وَلَا كَانَ قَبْلَهُ وَلَيْسَ يَكُونُ الدَّهْرَ مَادَامَ يَذْبُلُ
ثَنَاءُكَ خَيْرٌ مِّنْ فِعَالِ مَعَاشِرٍ وَفِعْلُكَ يَا ابْنَ الْهَاشِمِيَّةِ اَفْضَلُ

तर्जमा : (1)....हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कितनी ही तकालीफ़ अपनी तल्वार के ज़रीए दूर कीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस का बहुत बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाएगा। (2)....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में और पहले भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मिस्ल कोई नहीं और न ही कभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा कोई होगा। (3)....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ कई क़बीलों के कारनामों से बेहतर है और ऐ इब्ने हाशिमिया ! आप के कारनामे सब से उ़म्दा हैं।(1)

दुन्या व दौलत से बे रग़बती :

﴾284﴿.....हज़रते सय्यिदुना वलीद बिन मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बयान करते सुना कि ''हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक हज़ार ख़ादिम थे जो लोगों से ख़िराज (या'नी टेक्स) वुसूल कर के आप तक पहुंचाया करते थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे रातों रात तक़्सीम फ़रमा देते फिर जब घर लौटते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास उस माल में से कुछ भी बाक़ी नहीं होता था।''(2)

﴾285﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुग़ीस बिन सुमय رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक हज़ार ख़ादिम थे जो लोगों से ख़िराज (या'नी टेक्स) वुसूल कर के आप तक पहुंचाया करते थे लेकिन जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर तशरीफ़ ले जाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक दिरहम भी न होता।''(3)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नासिरो मददगार है :

﴾286﴿.....हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : जंगे जमल के दिन मेरे वालिदे मोहतरम (हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपने क़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत

---

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب استماع ابن الزُّبَير......الخ، الحديث:٥٦١٣، ج٤، ص٤٤٠.
2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد الزُّبَير بن العَوَّام، الحديث: ٧٧٥، ص١٦٧.
3 ......الإِستِيْعَاب فى مَعرِفة الأصحاب، باب حرف الزاى، الرقم ٨١١، الزُّبَير بن العَوَّام، ج٢، ص٩٢.

www.dawateislami.net

करते हुवे फ़रमाया : "बेटा ! अगर तुम किसी क़र्ज़ की अदाएगी से आ़जिज़ आ जाओ तो मेरे मौला से इस पर मदद त़लब कर लेना।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं वालिदे मोह़तरम के कलाम की मुराद न समझ सका। इस लिये दोबारा अ़र्ज़ की : "अब्बाजान ! आप का मौला कौन है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ।" इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! क़र्ज़ की अदाएगी के मुआ़मले में जब भी मुझे मुसीबत का सामना हुवा तो मैं ने कहा : "ऐ ज़ुबैर के मौला ! इन के क़र्ज़ की अदाएगी को आसान फ़रमा दे।" पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़र्ज़ मुकम्मल त़ौर पर अदा हो गया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जामे शहादत नोश फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई दिरहमो दीनार न छोड़ा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तर्के में सिर्फ़ ग़ाबा की दो ज़मीनें और एक घर था। और दूसरी त़रफ़ क़र्ज़े का आ़लम येह था कि जब कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास अमानत रखने के लिये आता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : "अमानत नहीं, क़र्ज़ है। क्यूंकि मुझे इस अमानत के ज़ाएअ़ होने का अन्देशा है।" लिहाज़ा जब मैं ने उस का ह़िसाब लगाया तो वोह 20 लाख बना। पस मैं ने वोह क़र्ज़ अदा कर दिया।

इलावा अज़ीं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का त़रीक़ए कार येह था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 4 साल तक ह़ज के मौसिम में येह ए'लान करवाते रहे कि "जिस का ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़र्ज़ निकलता हो वोह आ कर ले जाए।" जब 4 साल का अ़र्सा गुज़र गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने बक़िय्या माल वुरसा में तक़्सीम कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वुरसा में 4 बीवियां थीं जिन में से हर एक के ह़िस्से में 12-12 लाख आए।"(1)

﴾287﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे जमल के दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के लश्कर को छोड़ कर वापस आ रहे थे कि रास्ते में आप के बेटे अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिले और बुज़दिली का त़ा'ना देने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ बेटे ! लोग जानते हैं मैं बुज़दिल नहीं हूं लेकिन अमीरुल

(1)......صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب برکۃ الغازی......الخ، الحدیث:٣١٢٩، ص٢٥٢.

www.dawateislami.net

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने मुझे ऐसी बात याद दिला दी है जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी थी पस मैं ने क़सम खाई है कि जंग में शरीक नहीं होऊंगा।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे ने अ़र्ज़ की : "आप अपने फ़ुलां ग़ुलाम को बुलवाइये मैं उस के ज़रीए आप की क़सम के कफ़्फ़ारे में 20 हज़ार अदा कर देता हूं।" इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जंग में शरीक न हुवे और येह कहते हुवे तशरीफ़ ले गए :

تَـرْكُ الْاُمُوْرِ الَّتِيْ اَخْشٰى عَوَاقِبَهَا　　　فِـي اللّٰهِ اَحْسَنُ فِي الدُّنْيَا وَفِي الدِّيْنِ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये उन कामों को छोड़ देना जिन की वज्ह से बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ हो, दीनो दुन्या के ए'तिबार से बेहतर है।(1)

फिर तो येह मुआ़मला बहुत सख़्त है :

﴾288﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾
(پ۲۳،الزمر:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे।*

तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हम दुन्या की त़रह़ वहां भी झगड़ेंगे ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! " ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! फिर तो येह मुआ़मला बहुत सख़्त है।"(2)

﴾289﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾
(پ۲۳،الزمر:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे।*

तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या दुन्या में हमारे दरमियान जिन चीज़ों का झगड़ा है हम क़ियामत के दिन भी उन के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ेंगे ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! " तो मैं ने कहा : "फिर तो मुआ़मला बहुत सख़्त है।"(3)

---

1 ......سیر الاعلام النبلاء، الرقم۸،الزُّبَیر بن العَوَّام بن خویلد، ج۳ص۳۷.

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل، مسند الزُّبَیربن العَوَّام،الحدیث: ۱۴۳۴، ج۱،ص۳۵۳،بتغیر.

3 ......جامع الترمذی ،ابواب التفسیر،باب ومن سورۃ الزمر، الحدیث:۳۲۳۶، ص۱۹۸۲.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाने और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तकालीफ़ उठाने में सब्क़त ले जाने वालों में पहले हैं और जब दिल में दीने इस्लाम की ह़लावत व मह़ब्बत पैदा हो जाए तो तकालीफ़ उठाना और दीन की ख़ातिर ख़ानदान वालों को भुलाना और माल क़ुरबान करना मुश्किल नहीं रहता । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात (या'नी जिस की हर दुआ क़बूल हो) थे और आ़जिज़ी व इन्किसारी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वस्फ़े ख़ास था नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुकूमत और सियासत भी अ़ता हुई, आप मुहा़फ़िज़त (निगहबानी) की आज़माइश से भी गुज़रे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के हाथ पर मुतअ़द्दद शहर फ़त्ह़ कराए और कसीर माले ग़नीमत भी अ़ता फ़रमाया फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुकूमत तर्क कर के गोशा नशीनी व तन्हाई इख़्तियार कर ली और बाक़ी सारी उ़म्र इबादतो रियाज़त में गुज़ार दी ह़त्ता कि हुक्मरानों के इमाम और गोशा नशीनों के लिये हु़ज्जत व दलील बन गए ।

साबिक़ुल ईमान :

﴾290﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जिस दिन मैं ने इस्लाम क़बूल करने का शरफ़ पाया उस दिन से सातवें दिन तक कोई और इस्लाम न लाया और मैं इस्लाम क़बूल करने में तीसरा हूं ।"(1)

दरख़्तों के पत्ते खाते :

﴾291﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी हा़ज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे याद है कि हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थे और दरख़्तों के पत्तों के सिवा हमारे पास खाने को कुछ न था और पत्ते खाने की वज्ह से हम बकरी की मेंगनियों की मानिन्द पाख़ाना करते थे ।"(2)

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۱۳۲، ص ۲٤۸۵.

2 ......مسند ابی داود الطیالسی، احادیث سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۲۱۲، ص ۲۹.

www.dawateislami.net

﴾292﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : ''ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को मुजर्रद (या'नी ग़ैर शादी शुदा) रहने की इजाज़त न दी अगर उन्हें इजाज़त मिल जाती तो हम भी इस पर अ़मल करते।''(1)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा :

﴾293﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये दुआ़ फ़रमाई : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की तीर अन्दाज़ी दुरुस्त कर दे और इस की दुआ़ क़बूल फ़रमा।''(2)

एक टुकड़े पर गुज़ारा :

﴾294﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मरवी है कि आले सा'द में से किसी ने कहा कि हम ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में बहुत तकालीफ़ व सख़्तियां बरदाश्त कीं और इन पर सब्र किया। मुझे याद है कि वहां क़ियाम के दौरान एक रात मैं क़ज़ाए ह़ाजत के लिये निकला तो अचानक मुझे किसी चीज़ की आवाज़ सुनाई दी, देखा तो ऊंट की खाल का एक टुकड़ा पाया, मैं ने उसे उठाया, फिर धो कर उसे पकाया और खा लिया और उस पर कुछ पानी पी कर मैं ने तीन दिन तक उसी ग़िज़ा पर गुज़ारा किया।''(3)

एक चादर के दो हिस्से कर लिये :

﴾295﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि बसरा में मिम्बर पर सब से पहले ख़ुत़बा देने वाले अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने एक मरतबा

---

1 ......المرجع السابق،الحديث:٢١٩،ص ٣٠.

2 ......السنة لابی عاصم ، باب ماذکر عن النبیصلی اللّٰہ علیہ وسلمفی فضل سعد ،الحديث:١٤٤٤،ص ٣٢١.

3 ......الزهد لهناد بن السری،باب معيشة اصحاب النبیصلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحديث:٧٥٦،ج٢،ص ٣٨٨۔
سير اعلام النبلاء،الرقم١٢ مصعب بن عمير بن هاشم ، ج٣،ص٩٣،مفهومًا.

www.dawateislami.net

खुत़्बा देते हुवे फ़रमाया : “मुझे याद है कि एक मरतबा 7 सह़ाबा नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे, इन में सातवां मैं था और हमारे पास दरख़्तों के पत्तों के सिवा खाने को कुछ नहीं था जिस की वज्ह से हमारी बाछें छिल गई थीं, फिर मुझे एक चादर मिल गई तो मैं ने उस के दो ह़िस्से कर के अपने और ह़ज़रते सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान तक़्सीम कर दिये। जब कि आज सूरते ह़ाल येह है कि हम में से हर शख़्स किसी न किसी शहर का अमीर है।”(1)

ख़ुशह़ाली के फ़ित्ने का ख़ौफ़ ज़ियादा है :

﴾296﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे तुम पर तंगदस्ती की आज़्माइश से ख़ुशह़ाली के फ़ित्ने का ज़ियादा ख़ौफ़ है, क्यूंकि तुम्हें मुसीबतों से आज़्माया गया तो तुम ने सब्र किया लेकिन दुन्या मीठी व सर सब्ज़ है (या'नी इस पर सब्र मुश्किल है)।”(2)

वुरसा को परेशानी से बचाओ :

﴾297﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह बात ना पसन्द थी कि वोह जिस जगह से हिजरत कर आए उन को उसी जगह मौत आए। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की सिर्फ़ एक बेटी थी। आप ने अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपना सारा माल राहे ख़ुदा में सदक़ा करने की वसिय्यत कर दूं ?” इरशाद फ़रमाया : “नहीं, एक तिहाई सदक़ा कर दो और येह बहुत है, हो सकता है तुम दुन्या से चले जाओ और दूसरे लोग तो तुम्हारे माल से फ़ाइदा उठाएं और तुम्हारे वुरसा को परेशानी का सामना हो।”(3)

---

1 ......صحیح مسلم ، کتاب الزھد، باب الدنیا سجن للمؤمن و جنۃ للکافر، الحدیث:۷۴۳۵،ص۱۱۹۲،مفھومًا.

2 ......مسند ابی یعلی الموصلی، مسند سعد بن ابی وقاص، الحدیث:۷۷٦،ج۱،ص۳۲۸.

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی اسحاق سعدبن ابی وقاص، الحدیث:۱۴۸۸، ج۱، ص۳٦٦.

www.dawateislami.net

तक़्वा व गुमनामी वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं :

﴾298﴿.....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ परहेज़गार, बे नियाज़ गोशा नशीन बन्दे से महब्बत करता है।"(1)

﴾299﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मेरे वालिदे गिरामी ने मुझे फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! क्या तुम मुझे फ़ितना परस्तों का सरदार बनाना चाहते हो ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक नहीं लड़ूंगा जब तक मुझे ऐसी (इन्साफ़ करने वाली) तल्वार न ला कर दी जाए जिस से मोमिन पर वार करूं तो रुक जाए और काफ़िर पर वार करूं तो उस का काम तमाम कर दे। बेशक मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ परहेज़गार, बे नियाज़ गुमनाम बन्दे को पसन्द फ़रमाता है।"(2)

﴾300﴿.....हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) जम्अ़ हुवे, फ़ितने की बात चली तो हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं तो फ़ितने में दाख़िल होने के बजाए घर बैठने को तरजीह दूंगा।"(3)

आंखों और ज़बान वाली तल्वार :

﴾301﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किसी ने दरयाफ़्त किया : "अहले शूरा में होने के बा वुजूद आप क़िताल से क्यूं गुरैज़ करते हैं हालांकि आप दूसरों से ज़ियादा इस के हक़दार हैं ?" फ़रमाया : "मैं उस वक़्त तक क़िताल नहीं करूंगा जब तक तुम दो आंखों, दो होंटों और एक ज़बान वाली तल्वार

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزھد،باب الدنیا سجن للمؤمن ......الخ ،الحدیث:۷۴۳۲،ص۱۱۹۲.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی اسحاق سَعْد بن ابی وقاص ، الحدیث:۱۵۲۹،ج۱،ص۳۷۴.

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ ، کتاب الفتن،باب من کرہ الخروج ......الخ، الحدیث: ۲۰۲،ج۸،ص۶۲۲،بتغیر.

www.dawateislami.net

न ला कर दो, जो मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ कर सके क्यूंकि मैं ने जिहाद किया है और मैं जानता हूं कि जिहाद में क्या होता है ?"(1)

﴾302﴿.....हज़रते सय्यिदुना तारिक़ बिन शिहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास और हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के दरमियान कोई मुआ़मला हो गया था। एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की बुराई करने लगा तो हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे मन्अ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "रुक जाओ ! हमारा मुआ़मला अभी दीन तक नहीं पहुंचा (या'नी ऐसा नहीं जिस से दीन में नुक़्सान का अन्देशा हो)।"(2)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हमेशा सच बोलते, राहे खुदा में माल ख़र्च करते, ख़्वाहिशात को पूरा करने से बचते, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी की परवाह न करते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه मुस्तजाबुद्दा'वात (या'नी जिस की हर दुआ़ क़बूल हो) भी थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से क़बूले इस्लाम का शरफ़ पाया। जंगे बद्र में भी शरीक हुवे, हुकूमती ओ़हदों से हमेशा इजतिनाब किया और आ़म लोगों की त़रह़ ज़िन्दगी बसर की। अपने नफ़्स पर ग़ालिब रहते, दुन्या से बे रग़बत, गुरूर व तकब्बुर और फ़ितना व फ़साद से किनारा कश रहते और उख़रवी सआ़दतों व ने'मतों के हुसूल में हर दम कोशां रहते। इ़बादत में मसरूफ़ रहते और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करते थे।

तह़फ़्फ़ुज़े नामूसे सह़ाबा :

﴾303﴿.....हज़रते सय्यिदुना रबाह़ बिन ह़ारिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जामेअ़ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के इर्द गिर्द कूफ़ा के कुछ लोग बैठे हुवे थे कि इस दौरान हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه तशरीफ़ लाए, हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन का इस्तिक़्बाल किया और अपने क़रीब तख़्त पर बिठाया, फिर अहले कूफ़ा में से एक शख़्स आया और हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه

❶......المعجم الكبير،الحديث:٣٢٢،ج١،ص١٤٤.

❷......موسوعة لابن ابى الدنيا،كتاب الصّمت وآداب اللسان،باب ذب المسلم......الخ،الحديث:٢٤٨،ج٧،ص١٦٤.

www.dawateislami.net

के सामने खड़े हो कर गाली देने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ मुग़ीरा ! येह किस को गाली दे रहा है ?" कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم को।" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन मरतबा पुकारा ऐ मुग़ीरा ! मैं सुन रहा हूं कि तुम्हारे सामने सह़ाबए किराम को गालियां दी जा रही हैं और फिर भी आप उसे मन्अ़ नहीं करते ? ह़ालांकि मैं गवाही देता हूं कि मेरे कानों ने सुना और दिल ने याद रखा और मैं ने कभी हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से झूटी ह़दीस बयान नहीं की, कि कल क़ियामत में जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात हो तो मुझ से इस के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाएं। बेशक हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान जन्नती हैं, अ़ली जन्नती हैं, त़लह़ा जन्नती हैं, ज़ुबैर जन्नती हैं, (अ़ब्दुर्रह़मान जन्नती हैं,) सा'द बिन मालिक जन्नती हैं और मोमिनीन में नवां भी जन्नती है।" फिर फ़रमाया : "अगर तुम चाहो तो मैं उस का नाम भी तुम्हें बताऊं ?" मस्जिद में मौजूद सब लोगों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा देते हुवे अ़र्ज़ की : "ऐ सह़ाबिये रसूल बताइये नवां शख़्स कौन है ?" फ़रमाया : "तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दिया है, सुनो ! अ़ज़मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नवां मैं हूं और दसवें ख़ुद मुख़बिरे सादिक़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" फिर क़सम उठा कर फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में जिस शख़्स का चेहरा गुबार आलूद हुवा उस का येह अ़मल तुम्हारे तमाम आ'माल से अफ़्ज़ल है अगर्चे तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जितनी उ़म्र दे दी जाए।"(1)

﴾304﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ालुम माज़नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मौक़अ़ पर यूं इरशाद फ़रमाया : "मैं 9 (सह़ाबए किराम) के बारे में गवाही देता हूं कि वोह जन्नती हैं और अगर मैं ने दसवें के बारे में गवाही दी तो गुनहगार न होऊंगा।"(2)

झूटी औ़रत अन्धी हो कर मर गई :

﴾305﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक मरतबा अरवा बिन्ते उवैस नामी एक औ़रत ने मरवान के हां ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند سعید بن زید بن عمرو بن نُفَیل، الحدیث:۱۶۲۹،ج۱، ص۳۹۷.

2 ......المرجع السابق،الحدیث:۱۶۴۴،ج۱، ص۴۰۰.

www.dawateislami.net

शिकायत की, कि "उन्हों ने मेरी ज़मीन का कुछ हिस्सा अपनी ज़मीन में शामिल कर लिया है।" हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं ? जब कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुन रखा है कि "जो किसी की एक बालिश्त ज़मीन पर नाहक़ क़ब्ज़ा करेगा बरोज़े क़ियामत उस की गर्दन में सातों ज़मीनों का तौक़ डाला जाएगा।" मरवान ने कहा : "अब मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कोई सुवाल नहीं करूंगा।" हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह औ़रत झूटी है तो इसे अन्धा कर दे और येह अपनी ज़मीन में ही मरे।" चुनान्चे, उस औ़रत की बीनाई चली गई और वोह अपनी ज़मीन के घड़े में गिर कर मर गई।(1)

बालिश्त भर ज़मीन पर क़ब्ज़े का अ़ज़ाब :

﴾306-307﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मरवान ने कुछ लोगों को हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ अरवा बिन्ते उवैस की शिकायत के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करने के लिये भेजा। हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : लोग समझते हैं कि मैं इस औ़रत पर ज़ुल्म करूंगा ? हालांकि मैं ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि "जिस ने किसी की एक बालिश्त ज़मीन पर भी नाहक़ क़ब्ज़ा किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे सात ज़मीनों का तौक़ पहनाएगा।" (फिर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह झूटी है तो इसे अन्धा कर के मार और इस का कुंवां ही इस की क़ब्र बन जाए। रावी फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह अन्धी हो कर मरी, हुवा यूं कि एक दिन वोह अपने घर में बड़ी एह़तियात़ से चल रही थी कि कुंवें में गिर कर मर गई और वोही उस की क़ब्र बन गया।"(2)

सह़ाबी की बे अदबी की सज़ा :

﴾308﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुह़म्मद बिन अ़म्र बिन ह़ज़्म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है, बयान करते हैं कि अरवा बिन्ते उवैस ने मरवान बिन ह़कम के हां हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ शिकायत की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़

1 ......المعجم الكبير ،الحديث:٣٤٢،ج١،ص١٤٩.

2 ......الإستيعاب فی معرفة الاصحاب،باب حرف السين ، الرقم ٩٨٧ سعيد بن زيد بن عمرو ، ج٢، ص ١٨٠.

www.dawateislami.net

की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह औ़रत गुमान करती है कि मैं ने इस पर ज़ुल्म किया है। अगर येह झूटी है तो इसे अन्धा कर दे और इसे इस के अपने ही कुंवें में मौत दे और मेरी सच्चाई मुसलमानों पर ज़ाहिर फ़रमा दे कि मैं ने इस पर ज़ुल्म नहीं किया।" रावी कहते हैं कि "अभी येह मुआ़मला चल ही रहा था कि अ़क़ीक़ की त़रफ़ से ऐसा सैलाब आया जो पहले कभी न आया था और इस ने वोह मुआ़मला ज़ाहिर कर दिया जिस में इख़्तिलाफ़ था। इस के बा'द एक महीने के अन्दर अन्दर वोह औ़रत अन्धी हो गई और घर में चलते हुवे अपने कुंवें में गिर कर हलाक हो गई।" रावी कहते हैं कि हम बचपन में सुना करते थे कि एक आदमी दूसरे से कहता : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इस त़रह़ अन्धा करे जिस त़रह़ अरवा बिन्ते उवैस को अन्धा किया।" और हमें मा'लूम था कि उसे येह सज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे अदबी की वज्ह से मिली थी।(1)

﴾309﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पड़ोसन अरवा बिन्ते उवैस ने मरवान बिन ह़कम के हां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इल्ज़ाम लगाया कि इन्हों ने मेरी ज़मीन पर नाह़क़ क़ब्ज़ा कर रखा है और मेरा ह़क़ छीन लिया है। उस ने आ़सिम बिन उ़मर को मुआ़मले की तस्दीक़ के लिये भेजा। जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ैरत से पूछा : क्या मैं ने अरवा का ह़क़ दबाया है? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर ऐसा है तो मैं अपनी 600 गज़ ज़मीन उसे देने के लिये तय्यार हूं इस लिये कि मैं ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि "जो किसी मुसलमान का ह़क़ ज़ुल्मन छीनेगा क़ियामत के दिन उस की गर्दन में सातों ज़मीनों का त़ौक़ डाला जाएगा।"

(इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अरवा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया) अरवा ! उठो और जिस ज़मीन को तुम अपना ह़क़ समझती हो वोह ले लो।" तो वोह उठी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़मीन को अपनी ज़मीन से मिला लिया। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर येह झूटी है तो इस को अन्धा कर दे और येह अपने ही कुंवें में गिर कर मर जाए।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस दुआ़ की क़बूलिय्यत ज़ाहिर हुई कि वोह अन्धी हो गई फिर अपने ही कुंवें में गिर कर मर गई।"(2)

---

1 ......الإصابة في تمييز الصحابة، الرقم ٣٢٧١ سعيد بن زيد، ج٣، ص٨٨.

2 ......المعجم الاوسط، الحديث: ٨٣٨٣، ج٦، ص١٦٦.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़राख़ दस्ती व मालदारी में भी सादा ज़िन्दगी बसर करते और अपना माल, माल अ़ता करने वाले रब्बे मन्नान عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर देते, माल की वज्ह से आने वाली आज़्माइश व सरकशी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते, ख़ुशी हो या ग़मी हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से ही लौ लगाए रखते, दोस्त अह़बाब की जुदाई का ख़ौफ़ रखते और हर ह़ाल में सच्चाई पर क़ाइम रहते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ल्बो निगाह के ज़रीए़ इ़ब्रत ह़ासिल करते रहते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास माल बहुत ज़ियादा था। ग़रीबों, मिस्कीनों पर एह़सान फ़रमाते उन्हें ख़ुद अपने हाथों से अ़त़िय्यात देते। नीज़ फ़क़ीरों और नादारों पर ख़र्च करने में मालदारों के लिये एक नमूने की ह़ैसिय्यत रखते हैं।

आस्मान व ज़मीन वालों के अमीन :

﴾310﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मजलिसे शूरा[1] से फ़रमाया : "मैं तो ख़िलाफ़त का अहल नहीं हूं तो क्या तुम इस पर राज़ी हो कि मैं तुम्हारे लिये ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करूं ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "सब से पहले मैं आप के फ़ैसले पर राज़ी हूं क्यूंकि मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाते सुना है कि "तुम आस्मान व ज़मीन वालों के अमीन हो।"[2]

1.....इस से मुराद छे जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं जिन को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मरज़े विसाल में अपने बा'द ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करने के लिये नाम ज़द फ़रमाया। इन के अस्माए गिरामी येह हैं :

(1).....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(2).....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(3).....ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ल्ह़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(4).....ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(5).....ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(6).....ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (इ़ल्मिय्या)

2.....الطبقات الکبرٰی لابن سعد، الرقم ۳۸،عبد الرحمٰن بن عوف ، ذکر تولیة عبد الرحمٰن......الخ،ج۳،ص۹۹.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत

700 ऊंट मअ़ सामान सदक़ा कर दिये :

﴾311﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा थीं कि अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक आवाज़ सुनी जिस से पूरा मदीना गूंज उठा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह कैसी आवाज़ है ?" लोगों ने बताया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का 700 ऊंटों पर मुश्तमिल क़ाफ़िला मुल्के शाम से आया है, येह आवाज़ उसी की है।" उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना है कि "मैं ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ को घिसटते हुवे जन्नत में दाख़िल होते देखा।" जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को गवाह बनाता हूं कि मैं ने येह तमाम सुवारियां मअ़ साज़ो सामान राहे ख़ुदा में सदक़ा कीं।"(1)

नहरे सल्सबील से सैराबी की दुआ़ :

﴾312﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी कुछ ज़मीन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को 40 हज़ार दीनार में फ़रोख़्त की और वोह सारे दीनार बनी ज़ोहरा, मुसलमान फ़ुक़रा और उम्महातुल मोमिनीन में तक़्सीम कर दिये। रावी कहते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे उस माल में से कुछ माल दे कर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में भेजा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना कि "मेरे बा'द तुम पर सालिह़ीन ही शफ़्क़तो मेहरबानी करेंगे।" इस के बा'द उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٢٦٤، ج١، ص١٢٩.

www.dawateislami.net

ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में यूं दुआ़ फ़रमाई कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ को जन्नत की नहरे सल्सबील से सैराब फ़रमाए।"(1)

(اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

﴾313﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "तुम्हें मेरे पास आने में किस वज्ह से ताख़ीर हुई ?" अ़र्ज़ की : "मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द माल का हि़साब करने लग गया और माल चूंकि ज़ियादा था जिस की वज्ह से मुझे ताख़ीर हो गई।" फिर अ़र्ज़ की : "येह 100 सुवारियां मिस्र से आई हैं। मैं इन सब को मदीने की बेवाओं पर सदक़ा करता हूं।"(2)

बारगाहे इलाही में क़र्ज़े ह़सना पेश करो :

﴾314﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिदे माजिद के बारे में बयान करते हैं कि सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : "ऐ इब्ने औ़फ़ ! बेशक तुम मालदारों में से हो और जन्नत में घिसटते हुवे दाखि़ल होंगे लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़र्ज़े ह़सना पेश करो ताकि वोह तुम्हारे क़दम आज़ाद फ़रमा दे।" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं क़र्ज़ में क्या पेश करूं ?" इरशाद फ़रमाया : "जिस पर तुम ने शाम की।" उन्हों ने फिर इस्तिफ़्सार किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह सारा माल जो मैं ने जम्अ़ किया है, वोह राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दूं ? फ़रमाया : "हां !" पस ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस इरादे से वहां से चले तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने हाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अ़ब्दुर्रह़मान को फ़रमाएं कि मेहमान नवाज़ी बजा लाएं, मसाकीन को खाना खिलाएं और साइल को मह़रूम न लौटाएं। जब वोह येह आ'माल बजा लाएंगे तो येह उन का कफ़्फ़ारा हो जाएंगे।"(3)

---

1 ......الطبقات الکبرٰی لابن سعد،الرقم۳۸عبد الرحمٰن بن عَوف،ج۳، ص۹۸، مفھومًا.

2 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار ،مسند عبد اللّٰہ بن ابی اوفٰی ، الحدیث: ۳۳۴۳، ج۸، ص۲۷۷،مفھومًا.

3 ......الطبقات الکبرٰی لابن سعد، الرقم۳۸عبد الرحمٰن بن عَوف،ذکر رخصۃ ......الخ،ج۳،ص۹۷،بتغیر.

www.dawateislami.net

अ़ज़ीमुश्शान सख़ावत

《315》.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ह्दे मुबारक में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने माल में से 4 हज़ार दीनार राहे ख़ुदा में सदक़ा किये फिर 40 हज़ार दीनार और चन्द दिनों के बा'द मज़ीद 40 हज़ार दीनार सदक़ा किये और फिर एक बार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 500 सुवारियां मअ़ साज़ो सामान राहे ख़ुदा में सदक़ा कीं । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को माल का ज़ियादा तर हिस्सा तिजारत से ह़ासिल होता था ।"[1]

《316》.....ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुरक़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 30 हज़ार बांदियां आज़ाद फ़रमाईं ।"[2]

खाना देख कर रो पड़े :

《317》.....ह़ज़रते सय्यिदुना नौफ़ल बिन इयास हुज़ली عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे कितने अच्छे हम नशीं थे ? एक दिन हम आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ उन के घर की त़रफ़ गए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर तशरीफ़ ले गए और ग़ुस्ल कर के हमारे पास तशरीफ़ लाए । हम एक प्लेट लाए जिस में गोश्त और रोटी थी । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे देख कर रो पड़े । हम ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुह़म्मद ! (येह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क्यूं रोए ?" फ़रमाया : "हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से इस ह़ाल में तशरीफ़ ले गए कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत ने कभी जव की रोटी भी पेट भर कर नहीं खाई थी और हमारा ख़याल नहीं कि जो कुछ हमारे लिये छोड़ दिया गया है वोह हमारे लिये बेहतर हो ?"[3]

---

1 ......المعجم الكبير ،الحديث:٢٦٥،ج١،ص١٢٩.

2 ......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،الحديث:٥٣٩٩،ج٤،ص٣٦٥.

3 ......الشمائل المحمدية للترمذى،باب ما جاء فى عيش......الخ،الحديث:٣٥٩،ص٢١٣.

www.dawateislami.net

जन्नती ने'मतें दुन्या में मिलने का डर :

﴾318﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परपोते ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये खाना लाया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मेरा ख़याल है कि आप का रोज़ा था।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا शहीद हुवे तो हमारे पास उन के कफ़न के लिये भी कपड़ा न था ह़ालांकि वोह मुझ से बेहतर हैं और हमें जो पहुंचना था वोह पहुंच गया।" या येह फ़रमाया कि "हमें जो मिलना था वोह मिल गया।" और इरशाद फ़रमाया : "मैं इस बात से डरता हूं कि कहीं जन्नत की ने'मतें हमें दुन्या ही में न दे दी जाएं।" ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : मेरे ख़याल में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह भी बयान फ़रमाया था कि "इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खाना न खाया।"(1)

आंखों के बजाए दिल रोता है :

﴾319﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा किसी ख़ुश इल्ह़ान क़ारी ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़लिया में क़ुरआने मजीद की तिलावत की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़लावा तमाम ह़ाज़िरीन रोने लगे। सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ की आंखें अगर्चे अश्कबार न हुईं मगर इन का दिल रो रहा है।"(2)

﴾320﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हम तंगी से आज़माए गए तो सब्र किया और ख़ुशह़ाली से आज़माए गए तो सब्र न कर पाए।"(3)

---

1 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند عبد الرحمٰن بن عوف، الحديث:١٠٠٩، ج٣، ص٢٢٢۔
صحيح البخارى، كتاب الجنائز، باب الكفن من جميع المال......الخ، الحديث: ١٢٧٤/ ١٢٧٥، ص٩٩.

2 ......المطالب العالية لابن حجر العسقلانى، كتاب المناقب، الحديث:٣٩٧٨، ج٨، ص٤٠٦

3 ......جامع الترمذى، ابواب صفة القيامة، باب احاديث ابتلينا......الخ، الحديث: ٢٤٦٤، ص١٩٠٠.

www.dawateislami.net

﴾321﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के दिन मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم को फ़रमाते हुवे सुना : "ऐ इब्ने औ़फ़ ! जाओ बेशक तुम ने साफ़ ज़िन्दगी को पा लिया और कदूरत से आगे निकल गए।"(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीन, हिदायत, ज़ोह्दो अ़मल जैसे औसाफ़ से मुत्तसिफ़ और **अमीनुल उम्मत** के लक़ब से मुलक़्क़ब थे। अजनबी व ना वाक़िफ़ मोमिनीन के लिये पैकरे उल्फ़त व मह़ब्बत और रिश्तेदार मुशरिकीन पर सख़्त थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शाने अ़ज़मत निशान में अल्लाह रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने येह फ़रमाने ज़ीशान नाज़िल फ़रमाया :

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
(پ۲۸،المجادلۃ:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की।*

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उ़म्र भर क़लील माल पर ही सब्रो क़नाअ़त इख़्तियार फ़रमाई।

अमीने उम्मत :

﴾322﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ हैं।"(2)

काफ़िर बाप का सर क़लम कर दिया :

﴾323﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने शौज़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वालिद जंगे बद्र के दौरान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आता।

---

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم۳۸عبد الرحمٰن بن عَوف ،ذکر وفاۃ عبد الرحمٰن......الخ، ج۳،ص۱۰۰.

2 ......جامع الترمذی ،ابواب المناقب ،باب مناقب معاذ بن جبل......الخ ، الحدیث: ۳۷۹۱،ص۲۰۴۱.

www.dawateislami.net

आप उस से अलग हो जाते। जब कई बार ऐसा हुवा कि वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आड़े आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का सर क़लम कर दिया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْؕ اُولٰٓىٕكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ (پ۲۸،المجادلة:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं* ***अल्लाह*** *और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में* ***अल्लाह*** *ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया।*(1)

मैं उस की खाल का कोई हिस्सा होता !

﴾324﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कोई गोरा हो या काला, आज़ाद हो या ग़ुलाम, अ़जमी हो या अ़रबी जिस के मुतअ़ल्लिक़ मुझे मा'लूम हो कि वोह तक़्वा व परहेज़गारी में मुझ से बढ़ कर है तो मैं येह पसन्द करता हूं कि मैं उस की खाल का कोई हिस्सा होता।"(2)

कजावे की चटाई और पालान का तक्या :

﴾325﴿.....हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए, उन्हें कजावे की चटाई पर पालान को तक्या बनाए लेटे देखा तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू उ़बैदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) तुम दूसरों की त़रह़ आराम देह बिस्तर पर क्यूं नहीं लैटते ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मुझे आराम के लिये येही काफ़ी है।"

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٣٦٠،ج١،ص١٥٤.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل،أخبارابی عبيدة بن الجراح،الحديث:١٠٢٧،ص٢٠٣.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम तशरीफ़ लाए तो वहां के ख़ासो आ़म तमाम लोगों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्तिक़्बाल किया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि "मेरा भाई कहां है ?" लोगों ने पूछा : "कौन ?" फ़रमाया : "अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "वोह अभी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंच जाएंगे ।" फिर जब हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुवारी से उतर कर उन्हें गले लगाया और उन के घर तशरीफ़ ले गए। तो उन के घर में तल्वार, तीरों का तरकश और कजावे के इ़लावा कुछ और न देखा । इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मज़्कूरा रिवायत बयान की ।"(1)

अनोखी व निराली तमन्ना :

﴾326﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : "किसी चीज़ की तमन्ना करो ।" एक शख़्स ने कहा : "ऐ काश ! येह घर सोने से भरा होता और मैं इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर देता ।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर फ़रमाया : "तमन्ना करो ।" एक शख़्स ने कहा : "ऐ काश ! येह घर मोतियों, ज़बर जद और जवाहिरात से भरा होता और मैं इसे राहे ख़ुदा में सदक़ा व ख़ैरात कर देता ।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर फ़रमाया : "तमन्ना करो ।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! हम नहीं जानते कि हम क्या तमन्ना करें ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं तमन्ना करता हूं कि काश ! येह घर हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जैसे लोगों से भरा होता ।"(2)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی عبیدۃ بن الجراح، الحدیث:۱، ج۸، ص۱۷۳۔
الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار ابی عبیدۃ بن الجراح، الحدیث:۱۰۲۹، ص۲۰۳۔

2 ......المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب لما قتل سالم قالوا ذھب ربع القرآن، الحدیث:۵۰۵۵، ج۴، ص۲۴۴۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू उ़बैदा رضی اللہ تعالیٰ عنہ की नसीहतें :

《327》.....ह़ज़रते सय्यिदुना निमरान बिन मिख़्मर رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने लश्कर के साथ चलते हुवे फ़रमाया : "सुनो बहुत से सफ़ेद लिबास वाले दीन के ए'तिबार से मेले होते हैं और बहुत से अपने आप को मुकर्रम समझने वाले ह़क़ीर होते हैं। ऐ लोगो ! नई नेकियां पुराने गुनाहों को मिटा देती हैं। अगर तुम में से किसी की बुराइयां ज़मीनो आस्मान को भर दें फिर वोह कोई नेकी करे तो हो सकता है कि वोह एक नेकी उन तमाम गुनाहों पर ग़ालिब आ जाए और उन को मिटा दे।"(1)

मोमिन का दिल :

《328》.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान علیہ رحمۃ الحنان से मरवी है कि अमीने उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया : "मोमिन का दिल चिड़या की त़रह़ दिन में कई बार उलट पलट होता है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رضی اللہ تعالیٰ عنہ

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अपनी ज़िन्दगी ज़ोह्द और सादगी से गुज़ारी। आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ अपनी आंख की वज्ह से मुसीबत व आज़्माइश में मुब्तला थे और 2 मरतबा हिजरत कर के ज़ुल हिजरतैन (या'नी 2 हिजरतों वाले) का अ़ज़ीम लक़ब पाया। अल्लाह عزّوجلّ के अह़कामात की बजा आवरी में पेश पेश रहते। इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत वाले औसाफ़ से अपने किरदार को ज़ीनत बख़्शी। इ़बादत व रियाज़त के नूर से अपने शबो रोज़ को मुनव्वर फ़रमाया। जंगों में हमेशा शुजाअ़त व बहादुरी और दिलैरी के जोहर दिखाए। दुन्या न तो आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ को कोई ऐ़ब व नक़्स पहुंचा सकी और न ही दीनी रिफ़्अ़तों से नीचे गिरा सकी। आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ जल्द ही अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عزّوجلّ से जा मिले और हर क़िस्म के ग़म से नजात पा ली।

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،أخبارابی عبیدۃ بن الجراح،الحدیث:۱۰۲۶،ص۲۰۳۔
المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد، کلام ابی عبیدۃ بن الجراح ،الحدیث:۳،ج۸،ص۱۷۳۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد،کلام ابی عبیدۃ بن الجراح،الحدیث:۵،ج۸،ص۱۷۴۔

www.dawateislami.net

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : गुनाहों से किनारा कश रहने वाले शख़्स का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ालिस महब्बत से अपने आप को आरास्ता करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

इस्लामी भाइयों से इज़्हारे हमदर्दी :

﴾329﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि जब हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने देखा कि मैं तो वलीद बिन मुग़ीरा की अमान पा कर राहतो आराम से अपने सुब्हो शाम गुज़ार रहा हूं लेकिन दीगर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن सख़्त तंगी व मुसीबत से दो चार हैं तो फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे ज़ेब नहीं देता कि मैं एक मुशरिक की अमान में रह कर राहतो आराम पाऊं और मेरे रुफ़क़ा इस्लामी भाई मुसीबत व मशक़्क़त उठाएं।" चुनान्चे, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه वलीद बिन मुग़ीरा के पास तशरीफ़ ले गए और उस से फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दे शम्स के बाप ! तेरी ज़िम्मेदारी पूरी हुई अब मैं तुझे तेरी अमान लौटाता हूं।" उस ने पूछा : "ऐ भतीजे ! क्या हुवा ? क्या मेरी क़ौम के किसी शख़्स ने तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाई है ?" हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "नहीं, बल्कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह पर राज़ी हूं और मुझे उस के इलावा किसी की पनाह पसन्द नहीं।" वलीद ने कहा : "तो फिर जिस त़रह़ मैं ने तुम्हें ए'लानिय्या अमान दी थी इसी त़रह़ ए'लानिय्या त़ौर पर लौटाओ।" फिर दोनों मस्जिद में पहुंचे तो वलीद ने सब को मुख़ात़ब कर के ए'लान किया : "उ़स्मान मेरी अमान लौटाने आया है।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "येह सच कहता है, येह अपनी अमान को पूरा करने वाला है लेकिन मुझे पसन्द नहीं कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी की अमान में रहूं इस लिये मैं इस की दी हुई अमान इसे वापस लौटाता हूं।"

दूसरी आंख भी तक्लीफ़ की मुश्ताक़ :

फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه वहां से तशरीफ़ ले गए और क़ुरैश की एक मजलिस में जा बैठे। वहां लबीद बिन रबीआ़ बिन मालिक, क़ुरैश को अश्आ़र सुना रहा था आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उस के पास बैठ गए तो उस ने येह शे'र पढ़ा :

www.dawateislami.net

اَلا كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلَا اللّٰهِ بَاطِلٌ **तर्जमा :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ बातिल है।

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तू ने सच कहा।" फिर उस ने कहा :

وَكُلُّ نَعِيْمٍ لَا مُحَالَةَ زَائِلٌ **तर्जमा :** और हर ने'मत यक़ीनन ज़ाइल व ख़त्म होने वाली है।

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तू ने झूट कहा क्यूंकि अहले जन्नत की ने'मतें तो कभी भी ख़त्म नहीं होंगी।" इस पर लबीद बिन रबीआ ने कहा : "ऐ गुरौहे क़ुरैश अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे कभी भी तुम से तक्लीफ़ नहीं पहुंची। येह कौन है जो मुझे अज़िय्यत देता है ?" एक शख़्स ने कहा : "तुम इस की बातों का बुरा न मनाओ। येह हमारी क़ौम के उन बे वुक़ूफ़ों में से है जिन्हों ने हमारा दीन छोड़ दिया है।" हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी उस को जवाब दिया यहां तक कि मुआ़मला बढ़ गया तो उस शख़्स ने उठ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को थप्पड़ दे मारा जिस से आप की आंख को नुक़्सान पहुंचा। वलीद बिन मुग़ीरा जो क़रीब ही खड़ा येह सब देख रहा था, कहने लगा : "ऐ भतीजे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तू मेरी अमान में रहता तो तुझे येह नुक़्सान न पहुंचता।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दे शम्स के बाप ! मेरी दूसरी आंख भी राहे ख़ुदा में पहुंचने वाली उस तक्लीफ़ की मुश्ताक़ है जो इस आंख को पहुंची और रही अमान की बात, तो मैं उस की अमान में हूं जो तुझ से ज़ियादा इ़ज़्ज़त व क़ुदरत वाला है।"(1)

अश्आ़र :

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आंख को नुक़्सान पहुंचने पर येह अश्आ़र पढ़े :

فَاِنْ تَكُ عَيْنِيْ فِيْ رِضَا الرَّبِّ نَالَهَا يَدَا مُلْحِدٍ فِي الدِّيْنِ لَيْسَ بِمُهْتَدِ
فَقَدْ عَوَّضَ الرَّحْمٰنُ مِنْهَا ثَوَابَهُ وَمَنْ يَّرْضَهُ الرَّحْمٰنُ يَا قَوْمِ يَسْعُدِ
فَاِنِّيْ وَاِنْ قُلْتُمْ غَوِيٌّ مُضَلِّلٌ سَفِيْهٌ عَلٰى دِيْنِ الرَّسُوْلِ مُحَمَّدِ
اُرِيْدُ بِذَاكَ اللّٰهَ وَالْحَقُّ دِيْنُنَا عَلٰى رَغْمِ مَنْ يَّبْغِيْ عَلَيْنَا وَيَعْتَدِيْ

तर्जमा : (1).....अगर रिज़ाए इलाही में किसी बे दीन के हाथ से मेरी आंख को तक्लीफ़ पहुंची है तो वोह हिदायत याफ़्ता नहीं हो सकता।

---

(1)......السيرة النبوية لابن هشام، قصة عثمان بن مَظْعُوْن فى رد جوارالوليد،ص١٤٦.

www.dawateislami.net

(2).....बिलाशुबा इस के बदले ख़ुदाए मेहरबान عَزَّوَجَلَّ मुझे अज्रे अ़ज़ीम से नवाज़ेगा और ऐ मेरी क़ौम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से राज़ी हो जाए वोह ख़ुश बख़्त है।

(3).....मैं दीने मुह़म्मदी علٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का पैरूकार हूं, अगर्चे तुम मुझे गुमराह, भटका हुवा और बे वुक़ूफ़ कहो।

(4)..... और दीने इस्लाम की इत्तिबाअ़ से मेरा मक़्सद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करना है, तुम्हारे ज़ुल्मो ज़ियादती के बा वुजूद हमारा दीन ह़क़ है।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم) ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की आंख को तक्लीफ़ पहुंचने पर येह अश्आ़र कहे :

اَمِنْ تَذَكُّرِ دَهْرٍ غَيْرِ مَامُوْنٍ ... اَصْبَحْتَ مُكْتَئِبًا تَبْكِيْ كَمَحْزُوْنٍ

اَمِنْ تَذَكُّرِ اَقْوَامٍ ذَوِيْ سَفَهٍ ... يَغْشُوْنَ بِالظُّلْمِ مَنْ يَّدْعُوْ اِلَى الدِّيْنِ

لَا يَنْتَهُوْنَ عَنِ الْفَحْشَآءِ مَا سَلِمُوْا ... وَالْغَدْرُ فِيْهِمْ سَبِيْلُ غَيْرِ مَأْمُوْنٍ

اَلَا تَرَوْنَ، اَقَلَّ اللّٰهُ خَيْرَهُمْ ... اِنَّا غَضِبْنَا لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنٍ

اِذْ يَلْطِمُوْنَ وَلَا يَخْشَوْنَ مَقْلَتَهٗ ... طَعْنًا دِرَاكًا وَضَرْبًا غَيْرَ مَافُوْنٍ

فَسَوْفَ يُجْزِيْهِمْ اِنْ لَّمْ يَمُتْ عِجْلًا ... كَيْلًا بِكَيْلٍ جَزَآءً غَيْرَ مَغْبُوْنٍ

तर्जमा : (1).....क्या तुम फ़ितने वाले ज़माने को याद कर के परेशान और ग़मज़दा शख़्स की त़रह रोते हो ?

(2).....और उन बे वुक़ूफ़ लोगों को देखते हो जिन का ह़ाल येह है कि वोह दीन की त़रफ़ दा'वत देने वाले पर ज़ुल्म करते हैं।

(3).....जो कभी बुराई से बाज़ नहीं आते और धोका देना जिन का वत़ीरा है।

(4).....क्या तुम नहीं देखते कि हम ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की तक्लीफ़ की वज्ह से ग़ज़बनाक हैं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अज़िय्यत देने वालों को भलाई से मह़रूम करे। (आमीन)

(5).....क्यूंकि येह लोग उन्हें थप्पड़ मारते और नेज़ों व तल्वारों के साथ हलाक करने से भी नहीं डरते।

(6).....अगर येह लोग जल्दी न भी मरे तो अ़न क़रीब इन्हें इन के ज़ुल्म का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

www.dawateislami.net

उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले बा कमाल

ऐसों को ऐसी जज़ा :

﴾330﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमारे घर में वफ़ात पाई। मैं रात को सोई तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये एक बहता चश्मा देखा। जब येह बात मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बयान की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उन का अ़मल ऐसा ही था।''(1)

﴾331﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि ''ह़बशा'' क़ुरैश की पुर अम्न तिजारत गाह थी जिस के ज़रीए़ वोह कसीर आमदनी ह़ासिल किया करते थे। जब मुसलमानों को जब्र व तशद्दुद का निशाना बनाया गया और उन्हें फ़ितने का ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को ह़बशा की जानिब हिजरत करने का हुक्म दिया। चुनान्चे, मुसलमान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रहनुमाई में मक्का से निकले और ह़बशा की सर ज़मीन में ठहरे रहे यहां तक कि ''सूरए नज्म'' नाज़िल हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के रुफ़क़ा वापसी पर कुफ़्फ़ार के बुग़्ज़ो इ़नाद की वज्ह से मक्का में दाख़िल न हो सके फिर वलीद बिन मुग़ीरा ने अमान दी तो मक्का में दाख़िल हुवे।(2)

बेहतरीन हम नशीं :

﴾332﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करते हैं कि जब ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहलिय्या ने कहा : बेहतरीन हम नशीं चला गया, बिलाशुबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहतरीन लोगों में से थे। क्यूंकि जब शहज़ादिये रसूल, ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल हुवा तो हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''हमारी साह़िब ज़ादी हमारे बेहतरीन हम नशीं उ़स्मान बिन मज़ऊ़न से जा मिली।''(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الشھادات،باب القرعة فی المشکلات،الحدیث:٢٦٨٧،ص٢١٣.

2 ......الدلائل النبوة للاصبھانی،فصل فی ذکرشھادة النجاشی،الرقم١٠٠،ص١٠٢۔
دلائل النبوة للبیھقی،باب الھجرة الاولی الی الحبشة،ج٢،ص٢٨٥تا٢٩١.

3 ......مسند ابی داؤدالطیالسی،یوسف بن مھران عن ابن عباس،الحدیث:٢٦٩٤،ص٣٥١.

www.dawateislami.net

ख़ालिस व कामिल ईमान :

﴾333﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि पैकरे हुस्नो जमाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात के वक़्त तशरीफ़ लाए और उन पर झुक गए फिर सर उठाया ह़त्ता कि तीन मरतबा ऐसा किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिस्कियां ले कर रो रहे थे। सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रोते देखा तो वोह भी रोने लगे। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ" पढ़ने लगे और फ़रमाया : "अबू साइब (या'नी उ़स्मान बिन मज़ऊ़न) इस दुन्या से इस ह़ाल में गए कि दुन्या से कुछ न लिया।"(1)

दुन्या से बे रग़बती :

﴾334﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दे रब्बिह बिन सईद मदनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात के वक़्त तशरीफ़ लाए और झुक कर उन का बोसा लिया फिर फ़रमाया : "ऐ उ़स्मान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! न तुम ने दुन्या से कुछ लिया और न ही दुन्या तुम से कुछ ले सकी।"(2)

पैवन्द दार पुरानी चादर :

﴾335﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक पुरानी चादर पहन कर मस्जिद में दाख़िल हुवे जिस पर चमड़े के पैवन्द लगे थे। उन्हें देख कर नबिय्ये मेहरबान, सरवरे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن रोने लगे फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ सहाबा ! तुम्हारी उस वक़्त क्या ह़ालत होगी जब तुम सुब्ह़ एक लिबास

---

1 ......الإستیعاب فی معرفۃ الاصحاب،الرقم ۱۷۹۸عثمان بن مَظْعُوْن،ج۳،ص۱۶۶ .

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،الحدیث:۶۱،ص۳۸ .

www.dawateislami.net

में होगे और शाम को दूसरा लिबास पहनोगे और तुम्हारे सामने (खाने का) एक के बा'द दूसरा प्याला रखा जाएगा और तुम्हारे घरों पर का'बतुल्लाह के पर्दों की त़रह़ पर्दे लटके होंगे ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम चाहते हैं कि ऐसा हो जाए क्यूंकि इस में हमारे लिये सहूलत व आराम है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसा ज़रूर होगा, ह़ालांकि आज तुम उस दिन से बेहतर हो।"(1)

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बोसा दिया :

﴾336﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं ने देखा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द उन्हें बोसा दे रहे हैं।"(2)

मह़ब्बते ख़ुदा व मुस्त़फ़ा काफ़ी :

﴾337﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم बयान करते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात हुई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की तजहीज़ो तक्फ़ीन का हुक्म फ़रमाया। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ब्र में रखा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहलिय्या ने कहा : "ऐ अबू साइब ! तुझे जन्नत की बिशारत हो।" तो मुस्त़फ़ा करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "तुझे कैसे इस का इ़ल्म हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह दिन को रोज़ा रखते और रात को इ़बादत किया करते थे।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू येह कहती कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करते थे तो येही काफ़ी होता।"(3)

---

1 ......جامع الترمذی،ابواب صفة القیامة،باب حدیث علی فی ذکر مُصْعَب بن عُمَیر،الحدیث:۲۴۷۶،ص۱۹۰۱۔ عن علی بن ابی طالب.

2 ......مسند ابی داود الطیالسی،القاسم عن عائشة عنه،الحدیث:۱۴۱۵،ص۲۰۱.

3 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب الاولیاء،الحدیث:۷۲،ج۲،ص۴۰۶.

www.dawateislami.net

विसाल पर अहलिय्या के अश्आर :

﴾338﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ सबीई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहलिय्या पुराने कपड़ों में मल्बूस अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पास ह़ाज़िर हुईं तो उन्हों ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो अ़र्ज़ की : "मेरे शोहर दिन को रोज़ा रखते और रात को इ़बादत करते हैं (और कमाते नहीं) ।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस बात की ख़बर मिली तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर तम्बीह फ़रमाई और फ़रमाया : "क्या तुम्हारे लिये मेरा त़रीक़ा काफ़ी नहीं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा करे !" इस के बा'द उन की ज़ौजए मोह़तरमा अच्छी ह़ालत में और ख़ुश्बू लगाए अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पास आईं और जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात हुई तो उन्हों ने येह अश्आ़र कहे :

يَا عَيْنِ جُوْدِىْ بِدَمْعٍ غَيْرِ مَمْنُوْنٍ ... عَلٰى رَزِيَّةِ عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنِ
عَلٰى امْرَءٍ بَاتَ فِىْ رِضْوَانِ خَالِقِهٖ ... طُوْبٰى لَهٗ مِنْ فَقِيْدِ الشَّخْصِ مَدْفُوْن
طَابَ الْبَقِيْعُ لَهٗ سُكْنٰى وَغَرْقَدُهٗ ... وَاَشْرَقَتْ اَرْضُهٗ بَعْدَ تَفْتِيْن
وَاَوْرَثَ الْقَلْبَ حُزْنًا لَا انْقِطَا عَ لَهٗ ... حَتّٰى الْمَمَاتِ فَمَا تَرَقّٰى لَهٗ شُوْنِى

तर्जमा : (1).....ऐ मेरी आंख ! सय्यिदी उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (के विसाल) की मुसीबत पर ख़ूब आंसू बहा ।

(2).....और उस हस्ती पर गिर्या व ज़ारी कर जिस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी में रातें गुज़ारी, इस दफ़्न शुदा बे मिसाल शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है ।

(3).....बक़ीए़ ग़र्क़द इन का बेहतरीन ठिकाना है और दुन्यवी मुसीबतों के बा'द इन का मदफ़न रौशन हो गया ।

(4).....इन की वफ़ात से दिल को ऐसा सदमा पहुंचा है जो मरते दम तक कभी ख़त्म न होगा और मेरे सब्र का ज़ख़ीरा भी इसे ख़त्म नहीं कर सकता ।(1)

1.....مسند ابی یعلی الموصلی،حدیث ابی موسٰی الاشعری،الحدیث:۷۲۰۶،ج۶،ص۲۰۵۔
الإسْتِیعاب فی معرفة الاصحاب،الرقم ۷۹۸عثمان بن مَظْعُون،ج۳،ص۱۶۷.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم से मह़ब्बत करने वाले, कुरआने पाक की तिलावत करने वाले, जंगे उहुद में शरीक होने वाले, सब से पहले ह़क़ की दा'वत देने वाले, परहेज़गारों के सरदार, नेकियों में सबक़त ले जाने वाले, वा'दा पूरा करने वाले, तकल्लुफ़ व बनावट से पाक, मुख़्लिस और मह़ब्बत व ख़ौफ़ में मग़लूब रहने वाले अ़ज़ीमुश्शान इन्सान थे।

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "पाकीज़ा बाग़ों में उन्सिय्यते ह़क़ तलाश करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

तब्लीग़े दीन के लिये कोशिशें :

﴾339﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि जब अन्सार ने ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू सुनी तो उन्हें यक़ीन की दौलत नसीब हुई, उन के दिल मुत़मइन हो गए और उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की तस्दीक़ की और ईमान क़बूल कर के भलाई पाने वालों में शामिल हो गए और आइन्दा साल मौसिमे ह़ज में मिलने का वा'दा कर के अपनी क़ौम की त़रफ़ लौट गए। वहां पहुंच कर उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि हमारे पास किसी मुबल्लिग़े इस्लाम को भेजें जो लोगों को कुरआने पाक की त़रफ़ बुलाए और लोग उस की इत्तिबाअ़ करें। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनी अ़ब्दुद्दार से तअ़ल्लुक़ रखने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन की त़रफ़ रवाना किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बीलए बनी ग़नम के असअ़द बिन ज़ुरारा के हां क़ियाम फ़रमाया और उन्हें कुरआने पाक सुनाया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जा कर इस्लाम की दा'वत दी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के हाथ पर उन्हें हिदायत अ़त़ा फ़रमाई। ह़त्ता कि अन्सार के अक्सर घराने, उन के सरदार व शुरफ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम ले आए, बुत तोड़ दिये गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में लौट आए और क़ारी के नाम से मश्हूर हो गए।"(1)

(1)......المعجم الكبير، الحديث: ٨٤٩، ج٢٠، ص ٣٦٢.

www.dawateislami.net

मदीनए मुनव्वरा में तब्लीग़ की इब्तिदा :

﴾340﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से मरवी है कि जब "अहले अ़क़्बा" शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत पर ईमान ले आए और उन पर कुरआने मजीद की आयात तिलावत की गईं तो उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा और हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन मालिक (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में भेजा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास किसी ऐसे शख़्स को भेजें जो लोगों को कुरआने पाक के अह़काम सिखाए और हम उस की पैरवी करें। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनी अ़ब्दुद्दार से तअ़ल्लुक़ रखने वाले हज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में इस्लाम की दा'वत देते रहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के हाथ पर कसीर लोगों को हिदायत अ़ता फ़रमाई ह़त्ता कि अन्सार के अक्सर घराने, उन के सरदार व शुरफ़ा नीज़ हज़रते अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم इस्लाम ले आए, बुत तोड़ दिये गए और मुसलमान मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में ग़ालिब आ गए फिर हज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस लौट आए और उन्हें क़ारी कहा जाने लगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह पहले सहाबी हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद से क़ब्ल मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में लोगों को जुमुआ़ के लिये जम्अ़ किया।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किया अ़ह्द सच्चा कर दिया :

﴾341﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से मरवी है कि जब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उहुद के दिन जंग से फ़ारिग़ हुवे तो हज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद देख कर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

---

(1)......المعجم الكبير،الحديث:٨٤٩،ج٢٠،ص٣٦٢۔
المعجم الاوسط،الحديث:٦٢٩٤،ج٤،ص٣٧٦۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था ।(1)

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ۚ (پ۲۱،الاحزاب:۲۳)

शुहदा, सलाम का जवाब देते हैं :

﴾342﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर (رضی اللّٰہ تعالٰی عنہما) से मरवी है कि ग़ज़्वए उहुद से वापसी के मौक़अ़ पर सरकारे नामदार, रसूलों के सालार, मक्की मदनी ताजदार صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ और दूसरे शुहदाए उहुद के पास खड़े हो कर फ़रमाया : ''मैं गवाही देता हूं कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां जि़न्दा हो । (ऐ लोगो !) इन की ज़ियारत करो और इन पर सलाम भेजो । उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! क़ियामत तक जो भी इन पर सलाम भेजेगा येह उसे जवाब देंगे ।''(2)

दुम्बे की ख़ाल का लिबास :

﴾343﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन उ़मैर رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ को दुम्बे की खाल का लिबास पहने देखा तो फ़रमाया : ''इस शख़्स को देखो जिस के दिल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुनव्वर (या'नी रौशन) फ़रमा दिया है । मैं ने इस की वोह ज़िन्दगी भी देखी है कि इस के वालिदैन इसे उ़म्दा व बेहतरीन ख़ुराक देते थे लेकिन अब अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की मह़ब्बत में इस की येह ह़ालत हो गई है ।''(3)

1 ......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب مُصْعَب بن عُمَيْر، الحديث:٤٩٥٧،ج٤،ص٢٠٦.

2 ......المعجم الكبير،الحديث:٨٥٠،ج٢٠،ص٣٦٤.

3 ......شعب الإيمان للبيهقي،باب في الملابس والاواني، فصل في التواضع في اللباس،الحديث:٦١٨٩،ج٥،ص١٦٠.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम उठाने वाले, उस की महब्बत में कोशिश करने वाले और सब से पहले इस्लामी परचम उठाने वाले हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोजे़ शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन अफ़राद में से हैं जिन्हों ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की और जंगे बद्र में शरीक हुवे और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया।

पहला इस्लामी परचम :

﴾344﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि इस्लाम में सब से पहला जो परचम लहराया गया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का था। नीज़ मुसलमान मुजाहिदीन के दरमियान सब से पहले जो माले ग़नीमत तक़्सीम किया गया वोह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़ासिल किया हुवा था।(1)

शहादत की दुआ़ :

﴾345﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उहुद के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ क्यूं नहीं करते ?" फिर ख़ुद एक त़रफ़ जा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करने लगे : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! कल मेरा मुक़ाबला दुश्मनों के ऐसे शख़्स से हो जो बहुत सख़्त हो मैं तेरी रिज़ा के लिये उस से मुक़ाबला करूं फिर वोह मेरे कान, नाक काट दे और जब बरोज़े क़ियामत मैं तेरी बारगाह में ह़ाज़िर होऊं और तू इन (कान, नाक) के बारे में पूछे तो मैं अ़र्ज़ करूं : "तेरे और तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की राह में कट गए।" फिर तू

1 ......الإستيعاب في معرفة الاصحاب،الرقم ١٥٠٢ عبد الله بن جحش،ج٣،ص١٤.

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाए : "तू ने सच कहा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने दिन के आख़िरी ह़िस्से में इन की नाक और कान धागे में पिरोए हुवे देखे ।"(1)

﴾346﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उहुद के दिन दुआ़ मांगी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि कल मेरा मुक़ाबला ऐसे दुश्मन से हो जो मुझे शहीद कर के मेरा पेट फाड़ दे और मेरी नाक या कान या दोनों काट ले, फिर तू बरोज़े क़ियामत मुझ से इन के बारे में पूछे तो मैं अ़र्ज़ करूं : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरी राह में काटे गए ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस त़रह़ इन की पहली दुआ़ क़बूल फ़रमाई इसी त़रह़ आख़िरी दुआ़ भी क़बूल फ़रमाएगा ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शरई अह़काम को बजा लाने और ह़सद की नुहूसत से ख़ुद को बचाने वाले थे । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म को वफ़ात के बा'द आस्मान पर उठा लिया गया । दीने इस्लाम की दा'वत मिलते ही इसे क़बूल करने वाले और हिजरत के मवाक़ेअ़ पर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत व ख़िदमत में रह कर फ़ैज़ पाने वाले थे ।

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "तसव्वुफ़ इसी का नाम है कि फ़िरिश्ता मौत की ख़बर लाए तो बन्दा अपने दिल में ख़ुशी पाए ।"

(1)......المستدرك، كتاب الجهاد، باب رأس الأمر الإسلام......الخ، الحديث: ٢٤٥٦، ج٢، ص٣٩٥.

(2)......المستدرك ، كتاب معرفة الصحابة ، باب ذكر مناقب عبد الله بن جحش، الحديث: ٤٩٠٤، ج٤، ص٢٠٥.

www.dawateislami.net

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त मिली :

﴾347﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान फ़रमाती हैं कि "जब मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا हिजरत फ़रमाई उस वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह सिर्फ़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और रास्ता बताने के लिये क़बीलए बनी दैल का एक शख़्स था।"(1)

﴾348﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) फ़रमाती हैं कि "हिजरत के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तीन रातें ग़ारे सौर को शरफ़ बख़्शा कि वहां क़ियाम फ़रमाया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम, ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बकरियां चराया करते थे येह भी शाम को उन के पास ह़ाज़िर हो जाते, रात वहीं गुज़ारते, सुब्ह़ फिर चरवाहों के साथ चरागाह पहुंच जाते। येह इस त़रह़ करते कि जब शाम के वक़्त चरवाहों के साथ वापस आ रहे होते तो चलने की रफ़्तार कम कर देते यहां तक कि जब रात की तारीकी छा जाती तो बकरियां ले कर उन ह़ज़रात के पास ग़ार की त़रफ़ ले जाते और चरवाहे समझते कि वोह हमारे साथ ही हैं।"(2)

लाशा आस्मान की त़रफ़ उठा लिया गया :

﴾349﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا पहुंचे तो ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बिअ्रे मऊ़ना के दिन शहीद कर दिया गया और ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को क़ैद

---

1 ......المسند لابی یعلی الموصلی، مسند عائشۃ، الحدیث: ٤٥٥٤، ج٤، ص١٣٩.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ٢٨٤، ج٢٤، ص١٠٦.

www.dawateislami.net

कर लिया गया। आ़मिर बिन तुफ़ैल ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द उन के लाशे की त़रफ़ इशारा करते हुवे इस्तिफ़्सार किया : "येह कौन है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" तो उन्हों ने बताया कि "जब इन को शहीद कर दिया गया तो मैं ने देखा कि इन्हें आस्मान की त़रफ़ उठा लिया गया यहां तक कि मैं इन्हें आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होते देखता रहा।"(1)

फ़िरिश्तों ने दफ़्न किया :

﴾350﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बताया कि "हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनी सुलैम की त़रफ़ एक वफ़्द रवाना फ़रमाया जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे। आ़मिर बिन तुफ़ैल ने बिअ्रे मऊ़ना के मक़ाम पर उन के ख़िलाफ़ लश्कर कशी की और उन्हें शहीद कर दिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मुझे ख़बर पहुंची है कि लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जामे शहादत नोश करने के बा'द उन का जिस्म तलाश किया और न पा कर समझ गए कि फ़िरिश्तों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे अक़्दस को दफ़्न कर दिया है।"(2)

﴾351﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा अपने वालिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمَا से रिवायत करते हैं कि आ़मिर बिन तुफ़ैल ने एक शख़्स के बारे में उन्हें बताया कि "जब उसे शहीद किया गया तो उस का लाशा आस्मान की त़रफ़ उठा लिया गया यहां तक कि मैं ने उसे आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होते देखा। फिर लोगों ने मुझे बताया कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।"(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الرجیع......الخ، الحدیث:٤٠٩٣، ص٣٣٥.

2 ......المصنّف لعبد الرزاق، کتاب المغازی، باب وقعة حنین، الحدیث:٩٨٠٤، ج٥، ص٢٦٢.

3 ......السیرة النبویة لابن ھشام، حدیث بئر معونة فی صفر سنة اربع، ص٣٧٦.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाहिरी व बाति़नी त़हारत व नज़ाफ़त के वस्फ़ में नुमायां और ईफ़ाए अ़ह्द करने वाले थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़िन्दगी राहे खु़दा में वक़्फ़ की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बा'दे वफ़ात भी इन के जिस्मे मुबारक को कुफ़्फ़ार की पहुंच से दूर रखा।

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं कि : "दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की त़रफ़ रग़बत रखने का नाम तसव्वुफ़ है।"

शहद की मक्खियों के ज़रीए हि़फ़ाज़त :

﴾352﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन अ़म्र बिन क़तादा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि "सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने 6 जां निसार अस्ह़ाब का एक क़ाफ़िला रवाना फ़रमाया जिस का अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना मर्सद बिन अबी मर्सद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया। इन में ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन बुकैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी शामिल थे। जब येह सब मक़ामे रजीअ़ पर पहुंचे तो क़बीला हुज़ैल ने इन्हें अमान की पेशकश की लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना मर्सद और ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने इन की पेशकश को ठुकराते हुवे फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमें किसी मुशरिक का कोई अ़ह्द क़बूल है न उस की पनाह से कुछ ग़रज़।" येह सुन कर अहले हुज़ैल तै़श में आ गए और उन से कि़ताल किया और उन्हें शहीद कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चूंकि जंगे उहुद के मौक़अ़ पर सुलाफ़ा बिन्ते सा'द के दो बेटों को क़त्ल किया था और उस ने क़सम खाई कि "अगर मुझे उन के सर पर कुदरत मिली तो मैं उस की खोपड़ी में शराब भर कर पियूंगी।" लिहाज़ा कुफ़्फ़ार ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे मुबारक से सरे अक़्दस को जुदा करने का इरादा कर लिया ताकि इसे सुलाफ़ा बिन्ते सा'द के हाथों फ़रोख़्त कर दें और वोह अपनी क़सम पूरी कर ले। चुनान्चे, जब कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर काटने की ग़रज़ से आगे बढ़े तो शहद की मक्खियों ने आप के जसदे मुबारक के गिर्द घेरा डाल कर दुश्मनों से छुपा लिया और किसी को क़रीब न आने दिया। तो वोह येह कहते हुवे वहां से चल दिये कि "अभी छोड़ो, शाम को जब मक्खियां चली जाएंगी तो हम सर काट कर

www.dawateislami.net

ले जाएंगे।" लेकिन कुदरत को कुछ और ही मन्ज़ूर था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की करनी कुछ ऐसी हुई कि उस वादी में ख़ूब बरसात हुई और बरसात का पानी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक लाशे को बहा ले गया। इस लिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़क़ीदा था कि मुशरिकीन नजिस हैं। पस उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़ह्द किया था कि "वोह किसी मुशरिक को छूएंगे न कोई मुशरिक उन्हें छूए।"

जब येह वाक़िआ़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दए मोमिन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई। उन्हों ने ज़िन्दगी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किये हुवे अ़ह्द को पूरा किया और वोह जिस त़रह़ ज़िन्दगी में कुफ़्फ़ार से दूर रहते थे इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की वफ़ात के बा'द भी कुफ़्फ़ार को उन के क़रीब न आने दिया।"[1]

मुशरिकीन से नफ़रत :

﴾353﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा बिन सुफ़्यान अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन दसिना, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी और ह़ज़रते सय्यिदुना मर्सद बिन अबी मर्सद رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن पर मुश्तमिल एक क़ाफ़िला तब्लीग़े दीन की ग़रज़ से बनी लिह़यान की त़रफ़ रवाना फ़रमाया। जब येह मक़ामे रजीअ़ तक पहुंचे तो मुशरिकीन इन के मुक़ाबले में उतर आए। मजबूरन इन्हें भी लड़ना पड़ा लेकिन क़िल्लते अफ़राद के पेशे नज़र सिवाए ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सब अमान लेने के लिये तय्यार हो गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं किसी मुशरिक से अमान नहीं लूंगा।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करते हुवे अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं आज तेरे दीन की ह़िफ़ाज़त पर कमरबस्ता हूं पस तू मेरे जिस्म की ह़िफ़ाज़त फ़रमाना।"

फिर येह अश्आ़र पढ़ते हुवे दुश्मनों से लड़ने लगे :

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٧٧٥،ج٢٠،ص٣٢٧۔
السيرة النبوية لابن هشام،ص٣٦٩.

www.dawateislami.net

مَا عِلَّتِی وَاَنَا جَلْدٌ نَابِلُ   وَالْقَوْسُ فِیْهَا وَتَرٌ عُنَابِلُ
اِنْ لَّمْ اُقَاتِلْكُمْ فَاُمِّیْ هَابِلُ   اَلْمَوْتُ حَقٌّ وَالْحَیَاةُ بَاطِلُ
وَكُلُّ مَا حَمَّ الْاِلٰهُ نَازِلُ   بِالْمَرْءِ وَالْمَرْءُ اِلَیْهِ آئِلُ

तर्जमा : (1).....मैं कमज़ोर नहीं बल्कि बहादुर तीर अन्दाज़ हूं और मेरे कमान में मोटा और सख़्त चल्ला लगा हुवा है।

(2).....(ऐ दुश्मनो !) अगर मैं तुम से लड़ाई न करूं तो मेरी मां मुझ से महरूम हो जाए। मौत का आना हक़ और यक़ीनी है और ज़िन्दगी फ़ानी व बातिल है।

(3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस के बारे में जो इरादा फ़रमा लिया वोह वाक़ेअ़ हो कर रहता है और इन्सान उस की त़रफ़ ज़रूर लौटने वाला है।

बिल आख़िर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले हुज़ैल के एक कुंवें में थे कि किसी ने कहा : "येह तो वोही शख़्स है जिस के बारे में सुलाफ़ा बिन्ते सा'द ने क़सम खाई थी कि अगर इस के सर पर कुदरत पाऊंगी तो इस की खोपड़ी में शराब भर कर पियूंगी।" और उस ने येह क़सम इस लिये खाई थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे उहुद में बनी अ़ब्दुद्दार के तीन अ़लम बरदार बहादुरों को क़त्ल किया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीर चलाते जाते और कहते जाते थे : "मैं अक़्लह़ का बेटा हूं।" चुनान्चे, उन्हों ने इरादा कर लिया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर काट कर सुलाफ़ा बिन्ते सा'द के पास ले जाएंगे ताकि वोह उस की खोपड़ी में शराब भर कर पिये। जब वोह अपने इस नापाक इरादे से ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़द्दस लाशे की त़रफ़ बढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के इरादे को ख़ाक में मिला दिया। वोह इस त़रह़ की शहद की मख्खियों के एक लश्कर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाकीज़ा लाशे को छुपा लिया जिस की वज्ह से मुशरिकीन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर तन से जुदा न कर सके।"(1)

---

(1)......السنن لابی عثمان سعیدبن منصور، کتاب الجهاد، باب جامع الشهادة، الحدیث:۲۸۳۷، ج۲، ص۳۴۷۔
السیرة النبویة لابن هشام، ذکر یوم الرجیع فی سنة ثلاث، ص۳۷۰۔

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये साबित क़दमी इख़्तियार करने, सब्र करने वाले थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ राहे ख़ुदा में सूली चढ़ाए गए।

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "हि़फ़ाज़ते दीन की ख़ातिर सख़्तियां बरदाश्त करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

बेहतरीन क़ैदी और ग़ैबी रिज़्क़ :

﴾354﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस अफ़राद का एक क़ाफ़िला किसी मुहिम पर रवाना फ़रमाया और ह़ज़रते आ़सिम बिन उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के नाना ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस क़ाफ़िले का अमीर बनाया। जब येह क़ाफ़िला अ़स्फ़ान और मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के दरमियान वाके़अ़ हदा के मक़ाम पर पहुंचा और हुज़ैल के क़बीलए बनू लिह़यान को इस का पता चला तो उन्हों ने तक़रीबन 100 तीर अन्दाज़ों को इन के तआ़क़ुब में भेजा। येह लोग इन के निशानाते क़दम तलाश करने लगे यहां तक कि उस मक़ाम को पाने में कामयाब हो गए जहां उतर कर मुसलमानों के क़ाफ़िले ने खजूरें तनावुल फ़रमाईं थीं तो कुफ़्फ़ार कहने लगे कि येह तो यसरब (या'नी मदीनए मुनव्वरा) की खजूरों की गुठलियां हैं पस इन्हीं निशानात पर पीछा करने लगे। उधर जब ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के रुफ़क़ा ने कुफ़्फ़ार को पीछा करते देखा तो एक कुशादा व हमवार ज़मीन में पनाह ली, इतने में मुशरिकीन ने उन्हें घेर लिया और कहा : "अपने आप को हमारे ह़वाले कर दो हम वा'दा करते हैं कि तुम में से किसी को क़त्ल नहीं करेंगे।" अमीरे क़ाफ़िला ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं किसी काफ़िर की अमान क़बूल नहीं करूंगा।" इतना कहने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे बारे में अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आगाह फ़रमा।" इतने में इन बदबख़्तों ने लगातार तीर बरसाने शुरूअ़ कर दिये। जिस के सबब अमीरे क़ाफ़िला ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और 7 शुरकाए क़ाफ़िला जामे शहादत नोश फ़रमा गए।

और जो 3 सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ज़िन्दा बचे उन में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन दसिना और एक और सहाबी رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن थे। येह तीनों ह़ज़रात मुशरिकीन के वा'दे पर पहाड़ से उतर आए। जब उन्हों ने इन पर ग़लबा पा

www.dawateislami.net

लिया तो कमान की तांत से इन के हाथ बांध दिये तो तीसरे सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह पहला धोका है, मैं उन के साथ ही शहीद हो जाता तो बेहतर था।" जब मुशरिकीन ने इन्हें साथ ले जाना चाहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जाने से इन्कार कर दिया जिस की वज्ह से मुशरिकीन ने इन्हें भी शहीद कर दिया और ख़ुबैब व ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को ले कर चले गए और ग़ज़्वए बद्र के बा'द उन्हें मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में ले जा कर बेच दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बनू ह़ारिस ने ख़रीद लिया क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बद्र के दिन ह़ारिस बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को काफ़ी अ़र्सा क़ैद में रखा यहां तक कि सब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए। क़ैद के दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़रूरत के तह़त बनू ह़ारिस की एक औ़रत से उस्तरा मांगा तो उस ने दे दिया। इस दौरान उस औ़रत का बेटा खेलता हुवा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ चला गया। वोह औ़रत कहती है : "मैं ने अपने बेटे को ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रान पर बैठे देखा तो घबरा गई क्यूंकि उस्तरा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में था।" ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की घबराहट देख कर कहा : "तू इस बात से डरती है कि मैं इसे क़त्ल कर दूंगा ह़ालांकि मैं ऐसा नहीं कर सकता।" वोह औ़रत कहा करती थी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बेहतर कोई क़ैदी नहीं देखा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने एक दिन उन के हाथ में अंगूरों का ख़ोशा देखा ह़ालांकि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَکْرِیْمًا में कहीं भी अंगूर न थे। येह वोह रिज़्क़ था जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा फ़रमाया था।"

जब मुशरिकीन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के लिये ह़रम से बाहर ले कर निकले तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने की मोहलत दो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ पढ़ कर फ़रमाया : "अगर मुझे इस बात का ख़ौफ़ न होता कि तुम मेरे बारे में येह समझोगे कि मैं मौत के ख़ौफ़ से नमाज़ त़वील करता हूं तो मैं ज़रूर त़वील करता।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ मांगी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन को चुन चुन कर क़त्ल कर और किसी को ज़िन्दा न छोड़।"

फिर येह अश्आ़र पढ़े :

فَلَسْتُ اُبَالِیْ حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا ۔۔۔ عَلٰی اَیِّ جَنْبٍ کَانَ فِی اللّٰہِ مَصْرَعِی

وَذَالِکَ فِیْ ذَاتِ الْاِلٰہِ وَاِنْ یَّشَاءُ ۔۔۔ یُبَارِکْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعٖ

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....मैं ह़ालते इस्लाम में शहीद हो जाऊं तो मुझे इस की क्या परवाह कि किस पहलू पर गिरता हूं जब कि मेरी मौत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है।

(2).....मेरी शहादत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये है। अगर वोह चाहेगा तो मेरे बिखरे हुवे आ'ज़ा के जोड़ों में बरकत अ़ता फ़रमा देगा।

फिर अबू सिर्वअ़ा उ़क़्बा बिन ह़ारिस ने आगे बढ़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह पहले इन्सान हैं जिन्हों ने ज़ुल्मन क़त्ल किये जाने वाले हर मुसलमान के लिये क़त्ल से पहले नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा जारी फ़रमाया।[1]

शहादत से क़ब्ल नमाज़ :

﴾355﴿.....हुजैर बिन अबी इहाब की बांदी मारिया जो बा'द में मुसलमान हो गई थीं बयान करती हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे घर में क़ैद थे। एक दिन मैं ने देखा कि उन के हाथ में इन्सानी सर के बराबर बड़े अंगूर का ख़ोशा था और वोह उस से अंगूर खा रहे हैं ह़ालांकि मैं नहीं जानती कि उस वक़्त ज़मीन पर अंगूर का एक दाना भी खाने के लिये मौजूद हो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब बनी ह़ारिस, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के लिये तनईम की त़रफ़ ले गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "मुझे दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने दो।" उन्हों ने इजाज़त दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ अदा की फिर उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे येह गुमान न होता कि तुम सोचोगे कि मैं मौत से डर कर लम्बी नमाज़ पढ़ता हूं तो मैं नमाज़ को ज़रूर त़वील करता।" जब आप को सूली चढ़ाया जाने लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ मांगी : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम ने तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाया तू अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमारे ह़ालात से आगाह फ़रमा।"[2]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ١٠، الحدیث: ٣٩٨٩، ص ٣٢٥.

2 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ذکر یوم الرجیع فی سنۃ ثلاث، ص ٣٧١، "ماریۃ" بدلہ "ماویۃ".

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पुरसोज़ अश्आ़र :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने इस्हाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि "जब मुशरिकीन हज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूली चढ़ाने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह अश्आ़र पढ़े :

لَقَدْ جَمَعَ الْاَحْزَابُ حَوْلِيْ وَاَلَّبُوْا ‏ قَبَائِلَهُمْ وَاسْتَجْمَعُوْا كُلَّ مَجْمَعِ

وَقَدْ جَمَعُوْا اَبْنَاءَ هُمْ وَنِسَائَهُمْ ‏ وَقُرِّبْتُ مِنْ جَزْعٍ طَوِیْ مَمْنَعِ

اِلَى اللّٰهِ اَشْكُوْ كُرْبَتِيْ بَعْدَ غُرْبَتِيْ ‏ وَمَا جَمَعَ الْاَحْزَابُ لِيْ حَوْلَ مَصْرَعِي

فَذَا الْعَرْشِ صَبِّرْنِيْ عَلٰى مَا يُرَادُ بِيْ ‏ فَقَدْ بَضَعُوْا لَحْمِيْ وَقَدْ يَاسَ مَطْمَعِي

وَقَدْ خَبَّرُوْنِيَ الْكُفْرَ وَالْمَوْتُ دُوْنَهُ ‏ وَقَدْ ذَرَفَتْ عَيْنَایَ مِنْ غَيْرِ مَجْزَعِ

وَمَا بِيْ حَذَارُ الْمَوْتِ اِنِّيْ مَيِّتٌ ‏ وَلٰكِنْ حَذَارِيْ جَحْمُ نَارٍ مُلَفَّعِ

وَذٰلِكَ فِيْ ذَاتِ الْاِلٰهِ وَاِنْ يَّشَاءُ ‏ يُبَارِكْ عَلٰى اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعِ

فَلَسْتُ اُبَالِيْ حِيْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا ‏ عَلٰى اَيِّ جَنْبٍ كَانَ فِي اللّٰهِ مَصْرَعِي

तर्जमा : (1).....मेरे इर्द गिर्द मुशरिकीन के कई गुरौह अपने तमाम क़बाइल को ले कर जम्अ़ हो गए ।

(2).....येही नहीं, बल्कि वोह तो अपने बच्चों और अपनी औ़रतों को भी जम्अ़ कर लाए । और मैं जज़्अ़ फ़ज़्अ़ (या'नी गिर्या व ज़ारी) के क़रीब हो गया ।

(3).....मैं अपनी तन्हाई व मुसीबत और मेरे क़त्ल के लिये जम्अ़ होने वाले मुशरिकीन की शिकायत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से करता हूं ।

(4).....ऐ अ़र्श के मालिक ! मुझे उन तकालीफ़ पर सब्र अ़ता फ़रमा जिस का कुफ़्फ़ार इरादा किये बैठे हैं । बेशक वोह मेरे जिस्म के टुकड़े करना चाहते हैं और मैं अपनी ज़िन्दगी से उम्मीद उठा चुका हूं ।

(5).....वोह मुझे इस्लाम से फिरने का कहते हैं जब कि (मैं जानता हूं कि) मौत की तक्लीफ़ कुफ्ऱ के अ़ज़ाब से बहुत हल्की है । और इस ह़ालत में मेरी आंखों से बे साख़्ता सैले अश्क रवां है ।

(6).....मुझे यक़ीन है कि एक दिन मरना है और मुझे मौत का कोई डर नहीं । हां ! जहन्नम की झुलसा देने वाली आग से ख़ौफ़ आता है ।

www.dawateislami.net

(7)..... मैं ह़ालते इस्लाम में शहीद हो जाऊं तो मुझे इस की क्या परवाह कि किस पहलू पर गिरता हूं जब कि मेरी मौत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में है।

(8).....मेरी शहादत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये है। अगर वोह चाहेगा तो मेरे बिखरे हुवे आ'ज़ा के जोड़ों में बरकत अ़ता फ़रमाएगा।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहतरीन ख़त़ीब और मेहमान की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ फ़रमाने वाले थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले मा'रिफ़त में वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाते और ग़रीबों मिस्कीनों को अपने हां मेहमान बनाते। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों हिजरतों (या'नी पहले ह़बशा फिर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ हिजरत) का शरफ़ पाया। दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने की ख़ुसूसिय्यत भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़िस्से में आई। शुजाअ़त व सख़ावत में भी नुमायां थे। नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों से किनारा कश और रब عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाए रहते थे।

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "मख़्लूक़ से किनारा कशी इख़्तियार करने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौ लगाए रहने का नाम तसव्वुफ़ है।"

नजाशी के दरबार में ए'लाने ह़क़ :

﴾356﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना बुर्दा अपने वालिद (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़बशा के बादशाह नजाशी की सल्त़नत में जाने का हुक्म फ़रमाया। उधर क़ुरैश को येह ख़बर पहुंची तो उन्हों ने अ़म्र बिन आ़स और उ़मारा बिन वलीद को शाहे ह़बशा नजाशी के लिये तह़ाइफ़ दे कर हमारे पीछे भेज दिया। हम वहां पहुंचे तो येह दोनों भी नजाशी के दरबार में पहुंच गए और तह़ाइफ़ पेश किये। उस ने क़बूल कर लिये। फिर इन दोनों ने उसे सजदा किया और अ़म्र बिन आ़स ने कहा : "ऐ बादशाह ! हमारे मुल्क के चन्द लोगों ने अपना

[1]......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،ص۳۷۲.

www.dawateislami.net

दीन तर्क कर दिया है और वोह इस वक़्त तुम्हारे मुल्क में पनाह लिये हुवे हैं।" नजाशी ने पूछा : "मेरी सल्तनत में ?" उन्हों ने कहा : "हां।" (रावी बयान करते हैं कि) फिर शाहे ह़बशा नजाशी ने हमें बुला लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : "तुम में से कोई न बोलेगा। आज मैं उस से बात करूंगा।" जब हम नजाशी के दरबार में पहुंचे तो दरबार लगा हुवा था, उस के दाईं त़रफ़ अ़म्र बिन आ़स और बाईं जानिब उ़मारा बिन वलीद बैठा हुवा था जब कि दीगर पादरी व राहिब उस के सामने हाथ बांधे सफ़ बस्ता खड़े थे। चूंकि अ़म्र बिन आ़स और उ़मारा बिन वलीद ने पहले ही हमारे बारे में उन्हें कह दिया था कि वोह दोनों बादशाह को सजदा नहीं करेंगे।" चुनान्चे, हमारे वहां पहुंचते ही बादशाह की त़रफ़ से पादरियों और राहिबों ने हम से कहा कि "बादशाह को सजदा करो।" ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को सजदा नहीं करते।" नजाशी बादशाह ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हम में एक रसूल भेजा है और येह वोही रसूल हैं जिन की आमद की बिशारत ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दी थी और फ़रमाया था कि मेरे बा'द एक रसूल तशरीफ़ लाएंगे जिन का नाम अह़मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم होगा। तो ऐ बादशाह ! उसी रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हुक्म दिया है कि हम सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करें और किसी को उस का शरीक न ठहराएं, नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें, उस ने हमें नेकी का हुक्म दिया और बुराई से मन्अ़ फ़रमाया है।"

नजाशी बादशाह को ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात बड़ी अच्छी लगी। लेकिन जब अ़म्र बिन आ़स ने येह मुआ़मला देखा तो फ़ौरन कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बादशाह को सलामत रखे ! येह ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम (عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के बारे में तुम्हारे ख़िलाफ़ अ़क़ीदा रखते हैं।" नजाशी ने ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "तुम्हारे नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم), ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम (عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के बारे में क्या कहते हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़क़ीदा वोही है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया कि वोह रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें कुंवारी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पैदा फ़रमाया, जिन्हें न किसी मर्द ने छुवा और न उन्हें किसी बच्चे का गुमान था।" येह सुन कर नजाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी उठाई उसे बुलन्द किया और कहा : "ऐ पादरियो और ऐ राहिबो ! इन्हों ने भी तो वोही कहा जो तुम कहते हो कि ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बुराई का इरतिकाब नहीं किया।" फिर कहा : "ऐ मुसलमानो ! ख़ुश आमदीद ! तुम्हें और उस नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को जिन के पास से तुम आए हो और मैं गवाही देता हूं कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और येह वोही हैं जिन की बिशारत ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दी थी। अगर मैं बादशाह न होता तो ख़ुद चल कर उन की बारगाह में ह़ाज़िर होता और उन के ना'लैने मुबारकैन चूमता। ऐ मुसलमानो ! जब तक चाहो मेरी सल्त़नत में रहो।" इतना कहने के बा'द नजाशी शाहे ह़बशा ने अपने ख़ादिमों को हमारे लिये खाना तय्यार करने और हमें लिबास मुहय्या करने का हुक्म दिया और अ़म्र बिन आ़स व उ़मारा बिन वलीद के तह़ाइफ़ उन को वापस करने का हुक्म जारी कर दिया।"(1)

दरबारे शाही में ईमान अफ़रोज़ बयान :

﴾357﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान फ़रमाती हैं कि जब हम मुहाजिरीन का क़ाफ़िला ह़बशा की सर ज़मीन पर उतरा तो हम ने नजाशी को बेहतरीन पड़ोसी पाया। वहां हम अपने दीन पर क़ाइम रहते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते रहे और हमें कोई तक्लीफ़ पहुंची न हम ने कोई ना पसन्दीदा बात सुनी। फिर जब कु़रैश ने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ और अ़म्र बिन आ़स को तह़ाइफ़ दे कर नजाशी और उस के वुज़रा की त़रफ़ भेजा तो नजाशी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को बुलवाया। जब नजाशी का पैग़ाम मुसलमानों को पहुंचा तो वोह जम्अ़ हो कर आपस में मश्वरा करने लगे कि "नजाशी के पास जा कर क्या कहेंगे ?" चुनान्चे, वोह इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो गए कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम नजाशी से वोही कहेंगे जो हम ने सीखा और जिस का हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है फिर जो होगा देखा जाएगा।"

जब मुसलमान नजाशी के दरबार में पहुंचे तो उस ने अपने उ़लमा को पास बिठाया हुवा था जिन्हों ने अपनी आस्मानी किताबें खोल रखी थीं। नजाशी ने मुसलमानों से पूछा : "वोह कौन

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب المغازی، باب ما جاء فی الحبشۃ و أمر......الخ، الحدیث:١، ج٨، ص٤٦٥.

www.dawateislami.net

सा दीन है जिस की वज्ह से तुम अपनी क़ौम से बिछड़ गए (या'नी हिजरत कर आए) न मेरे दीन में दाख़िल हुवे और न ही उन उम्मतों में से किसी का दीन क़बूल किया?'' मुसलमानों की त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने नजाशी से गुफ़्तगू की और फ़रमाया : ''ऐ बादशाह ! हम जाहिल थे। बुतों को पूजते, मुर्दार खाते और फ़वाहिश का इरतिकाब करते थे। क़त़ए रेह़मी व अमान को तोड़ना हमारा शेवा था। त़ाक़तवर, कमज़ोर के ह़ुक़ूक़ ग़स्ब कर लेते थे। हम इन्ही गुमराहियों में भटक रहे थे कि अल्लाह عزّوجل ने हमारे दरमियान एक रसूल मबऊ़स फ़रमाए। हम उन के नसब, सच्चाई, अमानत दारी और पाक दामनी को ख़ूब अच्छी त़रह़ जानते हैं। उन्हों ने हमें अल्लाह عزّوجل की वह़दानिय्यत व इ़बादत की त़रफ़ बुलाया और ह़ुक्म दिया कि हम सिर्फ़ एक ख़ुदा की इ़बादत करें और उन पथ्थरों और बुतों को छोड़ दें जिन की हम और हमारे आबाओ अज्दाद परस्तिश करते थे। नीज़ हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, सिलए रेह़मी और पड़ोसी से अच्छा सुलूक करने, मह़ारिम से बाज़ रहने और ख़ूनरेज़ी से रुकने का ह़ुक्म दिया और बे ह़याई, झूट, यतीम का माल खाने और पाक दामन पर तोह्मत लगाने से मन्अ़ फ़रमाया। उन्हों ने हमें ह़ुक्म दिया कि हम सिर्फ़ अल्लाह عزّوجل की इ़बादत करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं, नीज़ उन्हों ने हमें नमाज़ पढ़ने, ज़कात अदा करने और रोज़ा रखने का ह़ुक्म दिया।'' इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुतअ़द्दिद इस्लामी उमूर बयान करने के बा'द फ़रमाया : ''पस हम ने उन की तस्दीक़ की और उन पर ईमान ले आए और वोह अह़काम जो अल्लाह عزّوجل की त़रफ़ से लाए उन की इत्तिबाअ़ की और हम ने सिर्फ़ अल्लाह عزّوجل की इ़बादत की और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराया। जिस चीज़ को उस ने हम पर ह़राम किया हम ने उसे ह़राम जाना और जिस को ह़लाल किया उसे ह़लाल जाना। पस इस बात पर क़ौम हमारी दुश्मन बन गई। उन्हों ने हमें त़रह़ त़रह़ से सताया और दीन के मुआ़मले में आज़माइश से दो चार किया ताकि हम अल्लाह عزّوجل की इ़बादत छोड़ कर बुतों को पूजना शुरूअ़ कर दें और ख़बाइस को दोबारा ह़लाल समझें जब उन्हों ने हमें ह़द से ज़ियादा सताया, मज़ालिम ढाए, हमारी राहें तंग कर दीं, हमारे और हमारे दीन के दरमियान ह़ाइल हो गए, तब हम तेरे मुल्क की त़रफ़ निकल आए। ऐ बादशाह ! इस उम्मीद पर कि तेरी पनाह में हम पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा, हम ने दूसरों को छोड़ कर तेरा मुल्क पसन्द किया और तेरे पड़ोस को तरजीह़ दी।'' नजाशी ने पूछा : ''तुम्हारे नबी अल्लाह عزّوجل का जो पैग़ाम लाए हैं, उस में से कुछ तुम्हारे पास है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन

www.dawateislami.net

अबी तालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हां।" नजाशी ने कहा : "मुझे उस में से कुछ पढ़ कर सुनाओ !" हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए मरयम की इब्तिदाई आयात तिलावत फ़रमाई जिन्हें सुन कर नजाशी रो पड़ा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस की दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई नीज़ उस के उ़लमा भी तिलावत सुन कर इस क़दर रोए कि उन के सहाइफ़ आंसूओं से भीग गए। फिर नजाशी ने कहा : "बेशक येह कलाम और जो हज़रते सय्यिदुना मूसा (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ले कर आए (या'नी तौरैत) एक ही नूर से निकले हैं।" और क़ुरैश के दोनों क़ासिदों अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ और अ़म्र बिन आ़स से कहा : "तुम दोनों चले जाओ। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इन लोगों को तुम्हारे सिपुर्द नहीं करूंगा।"

फिर नजाशी बादशाह ने मुसलमानों से कहा : "आज से मेरा मुल्क तुम्हारे लिये जाए पनाह है, जो तुम्हें छूएगा नुक़्सान उठाएगा। जो तुम्हें छूएगा नुक़्सान उठाएगा। जो तुम्हें छूएगा नुक़्सान उठाएगा। (ऐ गुरौहे मुस्लिमीन !) अगर मुझे सोने का पहाड़ भी मिल जाए, तब भी मैं येह गवारा नहीं करूंगा कि तुम में से किसी एक को तक्लीफ़ पहुंचे। और कहा : (कुफ़्फ़ार के) उन दोनों क़ासिदों के तहाइफ़ उन्हें लौटा दो मुझे उन की ज़रूरत नहीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरा मुल्क मुझे लौटाया तो मुझ से कोई रिश्वत नहीं ली तो मैं कैसे उस के लिये रिश्वत ले सकता हूं और उस ने मुझे लोगों का मुतीअ़ नहीं बनाया कि मैं उस की ना फ़रमानी में लोगों की इताअ़त करूं।" पस क़ुरैश के दोनों क़ासिद नाकाम व ना मुराद लौटे, उन के लाए हुवे तहाइफ़ उन के मुंह पर मार दिये गए और हम नजाशी के पास अच्छे घर में बेहतरीन हमसाए के पड़ोस में क़ियाम पज़ीर हो गए।"[1]

दरबारे नजाशी में ता'ज़ीमो तौक़ीर :

﴾358﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (येह इस वाक़िए के वक़्त तक इस्लाम नहीं लाए थे) से मरवी है कि जब हम नजाशी के दरवाज़े पर पहुंचे तो मैं ने निदा दी कि "अ़म्र बिन आ़स को अन्दर आने की इजाज़त दी जाए। उस वक़्त मेरे पीछे से हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आवाज़ दी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के गुरौह को अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त दी जाए।" नजाशी ने हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ सुनी तो उन्हें मुझ से पहले अन्दर

[1] المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث جَعفَر بن ابی طالب،الحدیث:۲۲۵۶۱،ج۸،ص۳۴۹۔

www.dawateislami.net

दाख़िल होने की इजाज़त दी। फिर जब मैं दाख़िल हुवा तो देखा कि नजाशी तख़्त पर बैठा था जब कि हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के सामने और दीगर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن उस के गिर्द तक्या लगाए बैठे थे।" मैं ने हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बैठे देखा तो ह़सद की वज्ह से उन के और तख़्त के दरमियान बैठ गया और उन की त़रफ़ पीठ कर ली। यूंही हर दो के दरमियान अपना एक साथी बिठा दिया।"(1)

तिलावत सुन कर रोने लगे :

﴾359﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ारिस बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नजाशी ने हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलवाया और नसारा को जम्अ़ किया फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि "उन्हें क़ुरआन सुनाएं।" हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के सामने सूरए मरयम की तिलावत की जिसे सुन कर वोह रोने लगे। और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

تَرٰۤی اَعْیُنَهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ (پ۷،المائدة:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए।*(2)

मसाकीन की ख़ैर ख़्वाही :

﴾360﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं न तो ख़मीरी रोटी खाता और न ही रेशम पहनता था और भूक की शिद्दत से मेरा पेट सुकड़ जाता था यहां तक कि अगर मैं किसी शख़्स को क़ुरआने मजीद की कोई आयत सुनाता जो मुझे याद होती तो उस से मक़्सूद येह होता कि शायद वोह मुझे अपने साथ ले जा कर खाना खिलाए और मिस्कीनों के सब से ज़ियादा ख़ैर ख़्वाह हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। वोह हमें अपने साथ ले जाते और घर में जो कुछ होता हमें खिला देते और अगर कुछ न होता तो घी का बरतन (या'नी कुप्पी) हमें दे देते और हम उसे खोल कर उस में जो घी लगा होता उसे चाट कर गुज़ारा कर लिया करते।"(3)

---

1 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسندجَعْفَر بن ابی طالب،الحدیث:۱۳۲۵،ج٤،ص۱۵۳.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب المغازی،باب ما جاء فی الحبشة......الخ،الحدیث:٥،ج٨،ص٤٦٦.

3 ......صحیح البخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی،باب مناقب جَعْفَر بن ابی طالب،الحدیث:۳۷۰۸،ص۳۰۳.

www.dawateislami.net

﴾361﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मसाकीन से महब्बत फ़रमाते उन की सोहबत इख़्तियार करते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से गुफ़्तगू फ़रमाते और वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बातें करते इसी वज्ह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की कुन्यत(1) "अबुल मसाकीन" रखी।"(2)

सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के मुतअ़ल्लिक़ रिवायात

70 से ज़ाइद ज़ख़्म :

﴾362﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि मैं ग़ज़्वए मौता में हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह था। जंग के बा'द जब हम ने उन्हें तलाश किया तो उन के जिस्म पर तीरों और नेज़ों के 70 से ज़ाइद ज़ख़्म देखे।"(3)

﴾363﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि ग़ज़्वए मौता में हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को न पा कर तलाश किया तो शुहदा में मिले और उन के जिस्म पर तीरों और नेज़ों के 90 से ज़ाइद ज़ख़्म थे और येह वोह ज़ख़्म थे जो जिस्म के अगले हिस्से पर थे।"(4)

1.....(किसी शख़्स का ऐसा नाम जो अ़लम और लक़ब के इलावा हो उसे कुन्यत कहते हैं। जैसे अबू बिलाल, उम्मे अ़म्मार वग़ैरा) इस के शुरूअ़ में लफ़्ज़ "अब्ब, उम्म, इब्ने, बिन्ते, अख़, उख़्त" में से किसी एक का होना ज़रूरी है। इस का इस्ति'माल तीन त़रह होता है : (1) इस से मक़्सूद साहिबे कुन्यत की अ़ज़्मतो शान का इज़्हार होता है और येह मुअ़ज़्ज़ज़ीन के लिये ख़ास है (2) ऐसी चीज़ का किनाया (या'नी इशारा) जिस का नाम लेना ना पसन्द और बुरा हो उसे भी कुन्यत कहते हैं और (3) ऐसा नाम जिस में साहिबे कुन्यत से मन्सूब किसी चीज़ या उस के वस्फ़े मश्हूर का बयान होता है। येह भी नाम की त़रह मश्हूर हो जाता है और साहिबे कुन्यत की पहचान बन जाता है।

(التعریفات للجرجانی،ص۱۳۲،بتصرفٍ۔لسان العرب،ج۲،ص۳۴۹۴)

2.....سنن ابن ماجہ،ابواب الزھد،باب مجالسۃ الفقراء،الحدیث:۴۱۲۵،ص۲۷۲۸.

3.....المستدرک،کتاب معرفۃ الصحابۃ،باب و جدعلی جَعْفَر......الخ،الحدیث:۴۹۹۷،ج۴،ص۲۲۲،بتغیر قلیل.

4.....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۴۶۴، ج۲، ص۱۰۷۔

صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب غزوۃ مؤتۃ من ارض الشام،الحدیث:۴۲۶۱،ص۳۴۹.

www.dawateislami.net

﴾364﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि मेरे रज़ाई वालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो ग़ज़्वए मौता में शरीक हुवे थे मुझे बताया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं देख रहा था कि ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घोड़े से उतरे और उस की कूंचें (या'नी टख़्नों के ऊपर के मोटे पठ्ठे) काट कर उसे नाकारा कर दिया (ताकि उसे दुश्मन इस्ति'माल न कर सके) फिर जिहाद में मसरूफ़ हो गए यहां तक कि शहीद हो गए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लड़ाई के वक़्त येह अश्आ़र पढ़ रहे थे :

يَا حَبَّذَا الْجَنَّةُ وَاقْتِرَابُهَا طَيِّبَةٌ وَبَارِدٌ شَرَابُهَا

وَالرُّوْمُ رَوْمٌ قَدْ دَنَا عَذَابُهَا عَلَيَّ اَنْ لَاقَيْتُهَا ضَرَّابُهَا

तर्जमा : (1).....जन्नत कितनी प्यारी जगह है, उस का क़ुर्ब पाकीज़ा और मशरूब ठन्डा है।

(2).....यक़ीनन अहले रूम हलाकत के क़रीब पहुंच गए। मुझ पर लाज़िम है कि उन से इस ह़ाल में मिलूं कि उन से ख़ूब क़िताल करूं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआनी आयात में ग़ौरो फ़िक्र करते और अ़लमे जिहाद उठाने में जल्दबाज़ी न किया करते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (मुल्के शाम के एक शहर) बल्क़ा के मक़ाम पर शहादत पाई। दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखते थे।

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "मुसीबतों और परेशानियों पर सब्र कर के उल्फ़त व रिज़ा की मन्ज़िलें तै़ करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

पुल सिरात़ से गुज़रने का ख़ौफ़ :

﴾365﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम से मौता (शहरे बल्क़ा के एक क़रीबी गाऊं में) जाने लगे

1.....سنن ابی داؤد، کتاب الجهاد، باب فی الدابة......الخ، الحدیث: ۲۵۷۳، ص ۱۴۱۴۔
السیرة النبویة لابن هشام، ذکر غزوة مؤتة فی جمادی الاولی......الخ، ص ۴۵۹۔

www.dawateislami.net

तो मुसलमान उन्हें रुख़्सत करने आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे। लोगों ने वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे दुन्या से महब्बत है न तुम से जुदाई का डर, लेकिन मैं ने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान सुना है जिसे याद कर के रो रहा हूं :

وَ اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۚ (پ١٦،مريم:٧١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।

मुझे येह तो मा'लूम है कि मैं जहन्नम पर से गुज़रूंगा लेकिन येह ख़बर नहीं कि उस से नजात भी पाऊंगा या नहीं।"(1)

﴿366﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि मौता रवानगी से कुछ देर पहले हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रोते देख कर उन के घर वाले भी रोने लगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं न तो मौत के डर से रो रहा हूं और न ही तुम्हारी जुदाई की वज्ह से बल्कि मैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान को याद कर के रो रहा हूं :

وَ اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۚ (پ١٦،مريم:٧١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।

क्यूंकि मुझे येह तो यक़ीन है कि मैं जहन्नम पर से गुज़रूंगा लेकिन येह ख़बर नहीं कि उस से नजात भी पाऊंगा या नहीं।(2)

फ़र्श से मातम उठे वोह तय्यिबो ताहिर गया :

﴿367﴾.....हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि जब मुजाहिदीन का क़ाफ़िला मौता जाने के लिये तय्यार हो गया तो मैं ने लोगों से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा साथ

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،ذكرغزوة مؤتة فى جمادى الاولى سنة ثمان،ص٤٥٧،مفهومًا.

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،ذكر غزوة مؤتة فى جمادى الاولى سنة ثمان،ص٤٥٧،مفهومًا۔
المستدرك،كتاب الاهوال،باب يرد الناس......الخ ،الحديث:٨٧٨٦،ج٥،ص٨١٠،عن قيس بن ابى حازم.

www.dawateislami.net

दे और तुम से मसाइब व तकालीफ़ दूर फ़रमाए।" (येह सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे :

لٰكِنَّنِیْ اَسْاَلُ الرَّحْمٰنَ مَغْفِرَةً وَضَرْبَةً ذَاتَ فَرْعٍ تَقْذِفُ الزَّبَدَا

اَوْطَعْنَةً بِيَدَیْ حَرَّانَ مُجْهَزَةً بِحَرْبَةٍ تَنْفُذُ الْاَحْشَاءَ وَالْكَبِدَا

حَتّٰی يَقُوْلُوْا اِذَا مَرُّوْا عَلٰی جَدَثِیْ اَرْشَدَكَ اللّٰهُ مِنْ غَازٍ وَقَدْ رَشَدَا

तर्जमा : (1).....लेकिन मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत और ऐसी सख़्त ज़र्ब का सुवाल करता हूं जो जबड़ों को फाड़ दे।

(2).....या किसी (मेरे ख़ून के) प्यासे के हाथों में ऐसा नेज़ा हो जिस का वार आंतों और कलेजे से पार हो जाए।

(3).....यहां तक कि जब लोग मेरी क़ब्र से गुज़रें तो कहें : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे फ़लाह़ बख़्शी कि तू ने ग़ाज़ी हो कर कामयाबी पाई।"

रावी बयान करते हैं : फिर मुजाहिदीने इस्लाम का क़ाफ़िला रवाना हुवा और शाम की सर ज़मीन पर पड़ाव डाला। तो उन्हें ख़बर मिली कि हिरक़्ल (ہِرَقْل) ने बल्क़ा के मक़ाम पर एक लाख रूमी फ़ौजियों के हमराह पड़ाव डाला हुवा है नीज़ अ़रब के क़बाइल लख़्म, जुज़ाम, बल्क़ैन, बह्रा और बली के एक लाख जंगजू उस के साथ मिल गए हैं। मुसलमान दो रातें उस में ग़ौरो फ़िक्र करते रहे बिल आख़िर येह फ़ैसला हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मक्तूब (या'नी ख़त़) भेज कर दुश्मनों की ता'दाद से आगाह किया जाए। तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुजाहिदीन को जम्अ़ कर के ख़िता़ब किया और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम शहादत की त़लब में घर से निकले हो और अब इसी को ना पसन्द जानते हो ह़ालांकि हम कभी भी दुश्मन से ता'दाद, क़ुव्वत व कसरत की बिना पर नहीं लड़े बल्कि सिर्फ़ अपने दीन के लिये लड़े हैं जिस की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें इ़ज़्ज़त अ़ता़ फ़रमाई है। निकलो ! फ़त्ह़ और शहादत में से एक अच्छाई तो ह़ासिल होगी !"

रावी बयान फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह बयान सुन कर तमाम मुजाहिदीन पुकार उठे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सच कहा है।" फिर तमाम मुजाहिदीन जंग के लिये चल पड़े।(1)

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، ذكر غزوة مؤتة فی جمادی الأولی سنة ثمان، ص ٤٥٧ .

www.dawateislami.net

रोने पर तम्बीह :

﴾368﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि "मैं यतीमी में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ की परवरिश में था। जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ जंगे मौता के लिये रवाना हुवे तो मैं ऊंट पर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के पीछे सुवार था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक रात दौराने सफ़र मैं ने आप को येह अश्आ़र पढ़ते सुना :

اِذَا اَدْنَيْتِنِىْ وَحَمَلْتِ رَحْلِىْ — مَسِيْرَةَ اَرْبَعٍ بَعْدَ الْحِسَاءِ

فَشَانُكِ فَانْعِمِىْ وَخَلَاكِ ذَمٌّ — وَلَا اَرْجِعُ اِلٰى اَهْلِىْ وَرَائِىْ

وَآبَ الْمُسْلِمُوْنَ وَغَادَرُوْنِىْ — بِاَرْضِ الشَّامِ مُشْتَهِى الثَّوَاءِ

وَرَدَّكِ كُلُّ ذِىْ نَسَبٍ قَرِيْبٍ — اِلَى الرَّحْمٰنِ مُنْقَطِعَ الْاِخَاءِ

هُنَالِكَ لَا اُبَالِىْ طَلْعَ بَعْلٍ — وَلَا نَخْلَ اُسَالِفُهَا رَوَاءِ

तर्जमा : (1).....ऐ मेरी सुवारी ! मक़ामे ह़िसा के बा'द जब तू ने मुझे मन्ज़िल के क़रीब पहुंचा दिया और चार मन्ज़िल की मसाफ़त तक मेरे कजावे को उठाए रखा।

(2).....अब तेरा काम येह है कि तू मुझे ख़ुशह़ाल रखे और ख़ुदा करे कि तुझे कोई तक्लीफ़ न पहुंचे अलबत्ता ! मैं वापस अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ न लौटूं (या'नी शहीद हो जाऊं)।

(3).....और (ख़ुदा करे कि) मुसलमान ग़ाज़ी बन कर लौटें और मुझे शाम की सर ज़मीन में वहीं ठहरने के लिये छोड़ आएं।

(4).....(ऐ नफ़्स !) हर क़रीबी रिश्तेदार तुझ से अपना तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर के तुझे रह़मान عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दे।

(5).....फिर वहां मुझे फलों के शगूफ़ों और खजूरों के ख़ुशनुमा बाग़ात के पीछे छोड़ देने की कोई परवाह नहीं।

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : "येह अश्आ़र सुन कर मैं रो पड़ा।" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुझे आहिस्ता से दुर्रा मार कर फ़रमाया : "ऐ नादान ! तुझे किस चीज़ का ग़म है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे शहादत अ़त़ा फ़रमाए और तू कजावे पर तन्हा बैठ कर वापस चला जाए ?"(1)

(1)......السيرة النبوية لابن هشام،ذكرغزوة مؤتة فى جمادى الأولٰى سنة ثمان،ص٤٥٨.

www.dawateislami.net

नफ़्स को नसीहतें :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इस्हाक़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से मरवी है कि मुझे इब्ने उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) ने बताया कि उन्हें उन के कफ़ील ने जो कि उस ग़ज़्वे में शरीक थे, बताया कि जब हज़रते सय्यिदुना ज़ैद और हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) शहीद हो गए तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़लमे जिहाद उठाया और घोड़े पर सुवार हो कर आगे बढ़ते हुवे नफ़्स में कुछ तरद्दुद पाया तो इसे मुख़ात़ब कर के फ़रमाया :

اَقۡسَمۡتُ یَا نَفۡسُ لَتَنۡزِلَنَّہۡ　　لَتَنۡزِلَنَّہٗ اَوۡلَتُکۡرَہَنَّہۡ
اِذَاجَلَبَ النَّاسُ وَشَدُّوا الرَّنَّۃ　　مَا لِیۡ اَرَاکِ تَکۡرَہِیۡنَ الۡجَنَّۃ
لَطَالَمَا قَدۡ کُنۡتِ مُطۡمَئِنَّۃ　　ہَلۡ اَنۡتِ اِلَّا نُطۡفَۃٌ فِیۡ شَنَّۃ

तर्जमा : (1)....ऐ नफ़्स ! मैं क़सम उठाता हूं कि तुझे मैदाने जंग में ज़रूर जाना पड़ेगा चाहे तुझे ना पसन्द हो।

(2)....जब जंग में लोगों की आवाज़ें बुलन्द हो रही हैं और लड़ाई शिद्दत इख़्तियार कर रही है तो क्या वज्ह है कि मैं तुझे जन्नत को ना पसन्द करते देखता हूं।

(3)....ह़ालांकि कितना अ़र्सा तू ने इत़्मीनान से ज़िन्दगी गुज़ारी है जब कि ह़क़ीक़तन तू नापाक पानी का मह़ज़ एक क़त़रा है।

इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने नफ़्स को नसीह़त करते हुवे मज़ीद फ़रमाया :

یَا نَفۡسُ اِلَّا تَقۡتُلِیۡ تَمُوۡتِیۡ　　ھٰذَا حَمَّامُ الۡمَوۡتِ قَدۡ صَلَیۡتِ
وَمَا تَمَنَّیۡتِ وَقَدۡ اُعۡطِیۡتِ　　اِنۡ تَفۡعَلِیۡ فِعۡلَہُمَا ھُدِیۡتِ

तर्जमा : (1)....ऐ नफ़्स ! अगर तू ने (जिहाद में शिर्कत कर के) जामे शहादत नोश न किया तो भी तुझे मरना ही है क्यूंकि येह ज़िन्दगी मौत का ह़म्माम है जिस में तू दाख़िल हो चुका है।

(2)....और तू ने जो चाहा तुझे वोह दिया गया। अब अगर तू ने उन दोनों (या'नी शहीद होने वाले ह़ज़रते ज़ैद व जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) की इत्तिबाअ़ की तो हिदायत पा जाएगा।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उतरे तो उन के पास मेरे चचाज़ाद भाई गोश्त का टुकड़ा लाए और कहा : "इस से अपनी पीठ सीधी कर लीजिये (या'नी खा कर कुव्वत ह़ासिल कर लीजिये) कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को उन दिनों शदीद ह़ालात का सामना करना पड़ा है।"आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने गोश्त का वोह टुकड़ा ले कर खाना शुरूअ़ कर दिया। ऐसे में अचानक लोगों की त़रफ़ से शोर की आवाज़

www.dawateislami.net

सुनाई दी तो ख़ुद को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : "तू दुन्या में मश्ग़ूल है।" फिर वोह टुकड़ा छोड़ दिया और तल्वार पकड़ कर आगे बढ़ कर लड़ने लगे ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया गया।

ग़ैबों पर ख़बरदार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

जंग में शरीक रावी बयान करते हैं कि इस त़रफ़ मुसलमान मुजाहिदीन जंग में मसरूफ़ थे तो दूसरी त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में मौजूद सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को जंग के ह़ालात बयान करते हुवे फ़रमा रहे थे : "ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अ़लम उठाया, वोह लड़ते रहे यहां तक कि शहीद हो गए। फिर जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अ़लम उठाया और लड़ते लड़ते शहीद हो गए।" फिर ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए जिस की वज्ह से अन्सार के चेहरों का रंग बदल गया और समझे कि शायद अब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कोई सख़्त तक्लीफ़ पहुंची है। कुछ देर बा'द ह़ुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान, ह़बीबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अब अ़लमे जिहाद अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के हाथ आया है। वोह दुश्मनों से क़िताल कर रहे हैं और बिल आख़िर वोह भी शहीद हो गए।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं ने जन्नत में देखा कि येह तीनों सोने के तख़्तों पर मह़्वे इस्तिराह़त हैं और अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का तख़्त अपने दोनों रुफ़क़ा से कुछ फ़ासिले पर है।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस की क्या वज्ह है ?" फ़रमाया : "इन के दोनों रुफ़क़ा जामे शहादत नोश कर चुके थे जब कि अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा कुछ तरद्दुद में थे।"(1)

जन्नती ख़ैमा :

﴾369﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे जन्नत में मोतियों का वोह ख़ैमा दिखाया गया जिस में ज़ैद, जा'फ़र और अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) तख़्त पर बैठे थे, मैं ने ज़ैद और अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की गर्दनों में कुछ बल देखा जब कि जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की गर्दन में कोई बल न था। मुझे बताया गया कि ब वक़्ते शहादत इन्हों

(1)......السيرة النبوية لابن هشام،مقتل عبد الله بن رواحة /الرسول يتنبأبماحدث،ص ٤٥٩ .

www.dawateislami.net

ने कुछ ए'राज़ किया था जिस की वज्ह से इन की गर्दनों में बल आ गया जब कि जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने ऐसा नहीं किया था इस लिये इन की गर्दन बिल्कुल दुरुस्त रही।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि येह उस वक़्त हुवा जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह अश्आ़र पढ़े :

اَقْسَمْتُ یَا نَفْسُ لَتَنْزِلَنَّهْ بِطَاعَةٍ مِّنْکِ اَوْلَتُکْرَهَنَّه
فَطَالَمَا قَدْ کُنْتِ مُطْمَئِنَّةً جَعْفَرُ مَا اَطْیَبَ رِیْحُ الْجَنَّة

तर्जमा : (1).....ऐ नफ़्स ! मैं क़सम उठाता हूं कि तुझे मैदाने जंग में ज़रूर जाना पड़ेगा चाहे तुझे पसन्द हो या न हो।

(2).....ह़ालांकि कितना अ़र्सा तू ने मुत़मइन ज़िन्दगी गुज़ारी है, ऐ जा'फ़र ! देख ! जन्नत की खुश्बू क्या ही उ़म्दा है ![1]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साबित क़दमी व नुस्रते इलाही से कुव्वत व ताईद ह़ासिल थी। जंगे बद्र में किसी वज्ह से ह़ाज़िर न हो सके थे लेकिन जंगे उहुद में शिर्कत फ़रमाई और मन्सबे शहादत पर फ़ाइज़ हुवे और खुश्बूओं से मुअ़त्तर व महकते रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने आ'ज़ा, राहे खुदा में कुरबान कर के आख़िरत की कामयाबियां पाईं।

अहले तसव्वुफ़ के नज़्दीक "जन्नती हवाओं के झोंकों और उस की ने'मतों का मुश्ताक़ रहने का नाम तसव्वुफ़ है।"

मुझे जन्नत की खुश्बू आ रही है :

﴿370﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ[2] (मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में मौजूद न होने के सबब) जंगे बद्र में शिर्कत न कर सके। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : "मैं पहले मा'रिकए ह़क़ व बात़िल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक नहीं हो सका लेकिन अब अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

[1].....المصنف لعبدالرزاق، کتاب الجهاد، باب اجر الشهادة، الحدیث:٩٦٢٥، ج٥، ص١٧٩.

[2].....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चचा हैं।

www.dawateislami.net

मुझे कुफ़्फ़ार से जंग का मौक़अ़ अ़ता फ़रमाएगा तो मैं उस के फ़ज़्लो करम से इस की तलाफ़ी करूंगा।" फिर उहुद के दिन जब इब्तिदाअन मुसलमान पीछे हटने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन मुशरिकीन ने जो कुछ किया मैं इस से बरी हूं और मुसलमानों से जो मुआ़मला सरज़द हुवा उस की मुआ़फ़ी त़लब करता हूं।" फिर तल्वार पकड़ी और कुफ़्फ़ार की त़रफ़ बढ़ गए, रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हुई तो फ़रमाया : "ऐ सा'द ! उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुझे उहुद की त़रफ़ से जन्नत की ख़ुश्बू आ रही है। वाह ! जन्नत की ख़ुश्बू कितनी पाकीज़ा है !!!" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे नहीं मा'लूम कि इस के बा'द उन पर क्या बीती।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जंग के बा'द हम ने उन्हें तलाश किया तो शुहदा में पाया और उन की बहन ने उन्हें उंगलियों से पहचाना क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म पर तल्वार, तीर और नेज़े के 80 से ज़ाइद ज़ख़्म थे और दुश्मनों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुस्ला कर दिया था (या'नी कान, नाक और आ'ज़ा वग़ैरा काट दिये थे)।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ۚ (پ۲۱،الاحزاب:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द अल्लाह से किया था।*

तो हम कहा करते थे कि "येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के रुफ़क़ा के बारे में नाज़िल हुई है।"(1)

---

(1)......السنن الکبری للبیھقی، کتاب السیر، باب من تبرع بالتعرض......الخ، الحدیث:۱۷۹۱۷، ج۹، ص۷۵.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ(1) फ़िक्रे आख़िरत में मुस्तग़्रक़ रहा करते और क़ुरआने मजीद की तिलावत करते रहते। दुन्या से किनारा कश रहते और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से भाईचारा क़ाइम करने वाले थे। नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह सआ़दत भी हासिल हुई कि रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपने प्यारे प्यारे मुबारक व मुक़द्दस हाथों से इन्हें क़ब्र में उतारा और इन की वफ़ात पर आंसू बहाए।

सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्र में उतारा :

﴾371﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस हज़रते अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र में रात के वक़्त दाख़िल हुवे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये चराग़ जलाया गया फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को क़िब्ले की जानिब से क़ब्र में उतारा, नमाज़े जनाज़ा भी ख़ुद ही पढ़ाई और फिर इन के ह़क़ में येह दुआ़इय्या कलिमात इरशाद फ़रमाए : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! तुम बहुत तौबा करने वाले और क़ुरआने मजीद की तिलावत करने वाले थे।"(2)

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इस से राज़ी हो जा :

﴾372﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़ज़्वए तबूक में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र में देखा। उस वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी ह़ाज़िर थे और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से फ़रमा रहे

1.....ज़ुल बिजादैन का मा'ना है, दो चादरों वाला। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आने लगे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा ने आप को बालों से बनी एक चादर दी, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के दो टुकड़े किये एक की चादर और दूसरे का इज़ार बनाया। जब सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ज़ुल बिजादैन** का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया। (معرفة الصحابة،باب الذال من باب العين، ج۳،ص۱۳۵)

2.....جامع الترمذی،ابواب الجنائز،باب ماجاء فی الدفن باللیل،الحدیث:۱۰۵۷،ص۱۷۵۳.

www.dawateislami.net

थे : “अपने भाई को मेरी त़रफ़ लाओ।” फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें क़िब्ले की त़रफ़ से क़ब्र में उतारा और ख़ुद बाहर तशरीफ़ ले आए और बक़िय्या काम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के सिपुर्द फ़रमाया। तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़िब्ला रू हो कर हाथ बुलन्द किये और येह दुआ़ फ़रमाई : “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी हो जा।” ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : “येह रात का वाक़िआ़ है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं येह ख़्वाहिश करता था कि काश ! इन की जगह मैं होता और मैं उन से 15 बरस क़ब्ल इस्लाम लाया था।”(1)

काश ! इन की जगह मैं होता :

﴿373﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं कि मैं ग़ज़्वए तबूक में रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। आधी रात के वक़्त उठा तो लश्कर के एक कोने में आग का शो'ला दिखाई दिया, मैं उस की त़रफ़ देखते हुवे वहां पहुंचा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) वहां मौजूद थे जब कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वफ़ात पा चुके थे। उन के लिये क़ब्र तय्यार की गई और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्र के अन्दर तशरीफ़ ले गए जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا), ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को क़ब्र में उतार रहे थे और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : “अपने भाई को मेरी त़रफ़ से उतारो।” पस उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान पर अ़मल किया।

तदफ़ीन से फ़राग़त के बा'द हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के ह़क़ में हाथ उठा कर येह दुआ़ फ़रमाई : “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी हो जा।” ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : “काश ! इन की जगह मैं होता और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रह़मत भरे हाथों से क़ब्र में उतार दिया जाता।”(2)

---

1 ......المغنى لابن قدامة ،كتاب الجنائز،فصل فأماالدفن ليلا،ج٣،ص٥٠٣ .

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة تبوك فى رجب سنة تسع،كتاب رسول اللّٰهلصاحب أيلة،ص٥١٩ .

www.dawateislami.net

बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ज़िक्रे खै़र

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "इस त़बके़ के कसीर आ़रिफ़ीन, ज़ाहिदीन व आ़बिदीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का ज़िक्र हम से रह गया है जिन्होंने रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक्दस में वफ़ात पाई उन में से बा'ज़ के अस्माए गिरामी बयान किये गए हैं जैसे हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन दसिना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो अपने रुफ़का समेत मक़ामे "रजीअ़" पर शहीद हुवे, हज़रते सय्यिदुना मुन्ज़िर बिन अ़म्र बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और हज़रते सय्यिदुना ह़राम बिन मिल्ह़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो बिअ्रे मऊना के मक़ाम पर शहीद हुवे, उन के अह़वाल बे शुमार हैं, बा'ज़ अह़वाल हम ने अपनी किताब "अल मा'रिफ़ह" में ज़िक्र किये हैं येह हज़रात इस हाल में दुन्या से रुख़्सत हुवे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से राज़ी थे और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बत़ौरे आज़्माइश उन्हें दुन्यावी शादाबी अ़त़ा फ़रमाई तो इस से उन का दामन मह़फ़ूज़ रहा और वोह सलामती के साथ अपने प्यारे मौला عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर ह़ाज़िर हो गए और (याद रखो !) जो उन के रास्ते पर चला और उन की सुन्नत को अपनाया वोह नजात पा गया।"

70 कु़र्रा सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की शहादत

﴾374﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि अ़रब के तीन क़बाइल रिअ़्ल, ज़क्वान और उ़सय्या के लोगों ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मदद त़लब की तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार के उन 70 सह़ाबा (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) को मदद के लिये रवाना फ़रमाया जो मश्हूर कुर्रा (या'नी कुरआन के क़ारी) थे। और येह कुर्रा सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن (गुज़र औक़ात के लिये) दिन को लकड़ियां इकट्ठी करते और रात को नमाज़ में मश्गूल रहते। जब येह सब बिअ्रे मऊना के मक़ाम पर पहुंचे तो ले जाने वालों ने धोका देही और मुनाफ़क़त का मुज़ाहरा करते हुवे उन कुर्रा सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को शहीद कर दिया। जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस वाक़िए की ख़बर मिली तो आप

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक माह तक नमाज़े फ़ज्र में उन के ख़िलाफ़ दुआए क़ुनूत पढ़ी।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "हम उन के बारे में येह आयत तिलावत किया करते थे بَلِّغُوْا عَنَّا قَوْمَنَا اِنَّا لَقِيْنَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَاَرْضَانَا तर्जमा : हमारी त़रफ़ से हमारी क़ौम को येह पैग़ाम पहुंचा दो कि हम अपने रब से जा मिले हैं पस वोह हम से राज़ी है और हमें उस ने राज़ी कर दिया। फिर येह आयत हम को भुला दी गई (या'नी मन्सूख़ हो गई)।"(1)

हर रोज़ कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ दुआ :

﴿375﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि "अन्सार सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में से 70 का ह़ाल येह था कि जब रात होती तो मदीनए त़य्यिबा में अपने मुअ़ल्लिम (या'नी उस्ताज़) के पास चले जाते और सारी रात क़ुरआने पाक सीखने में गुज़ार देते और दिन में जो त़ाक़तवर थे वोह लकड़ियां जम्अ़ करते और पानी भर कर लाते और साह़िबे हैसिय्यत बकरियां चरा कर गुज़र बसर करते। और सुब्ह़ होते ही अपने मह़बूब आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका के क़रीब जम्अ़ हो जाया करते। फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को शहीद कर दिया गया तो ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का बदला लेने के लिये इन अस्ह़ाब को रवाना फ़रमाया। इन में मेरे मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़राम बिन मिल्ह़ान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी थे। जब येह लोग "बनू सुलैम" के एक क़बीले के पास पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़राम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने लश्कर के अमीर से कहा : "हम उन्हें येह बता देते हैं कि हमारी तुम्हारी कोई दुश्मनी नहीं है इस लिये तुम हमारा रास्ता छोड़ दो।" अमीर ने कहा : "ठीक है।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़राम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उन के पास जा कर बात चीत करने लगे। अचानक उन में से एक शख़्स ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को सामने से नेज़ा मारा जो जिस्म से पार हो गया, जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़राम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने पेट में नेज़े की तक्लीफ़ मह़सूस की तो फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! मैं कामयाब हो गया।" इस के बा'द बनू सुलैम के क़बीले ने इस्लामी लश्कर को घेर कर शहीद कर दिया यहां तक कि कोई ख़बर देने वाला भी न बचा। ह़ुज़ूर नबिय्ये

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی،باب غزوة الرجيع ......الخ،الحديث:٤٠٩٠،ص٣٣٥.

www.dawateislami.net

अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस सरिय्ये[1] पर सब से ज़ियादा दुख का इज़्हार फ़रमाया और मैं ने देखा कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर रोज़ नमाज़े फ़ज्र में हाथ उठा कर कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ दुआ़ करते थे[2] ।''[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार मुहाजिरीन के उस त़बक़े में होता है जिन्हों ने हिजरत करने में पहल की। और उन बुज़ुर्गों में भी शामिल हैं जो इ़बादत गुज़ार मश्हूर हैं। क़ुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने वाले, ख़ुदादाद सलाह़ो ख़ैर के मालिक थे। साहि़बे फ़ह्मे आ़लम, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साहि़बे असरार (या'नी राज़दार) और साहि़बे सवाद (या'नी तक्या उठाने वाले) थे, (नेकियों में) जल्दी करने वाले, आगे बढ़ने वाले, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सब से ज़ियादा क़ुर्ब रखने वाले और तमाम सह़ाबा में इम्तियाज़ी शान के मालिक थे। ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ व मुशीरे ख़ास और ज़क्की व हौनहार पहरेदार थे। मह़ब्बते ख़ुदावन्दी से सरशार, मुशाहदए ह़क़ के त़लबगार, वा'दों के पासदार मुस्तजाबुद्दा'वात थे।''

अहले तसव्वुफ़ के नज़्दीक ''मुशाहदए ह़क़ का ग़लबा रहने और वा'दों और ह़ुदूद की हि़फ़ाज़त करने का नाम तसव्वुफ़ है।''

1.....शारेह़े बुख़ारी, नाइबे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : ''अस्ह़ाबे सियर ने उस लश्कर को जिस में ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस शरीक हुवे, ग़ज़्वा कहा और जिस में ख़ुद शरीक न हुवे किसी सह़ाबी को अमीरे लश्कर बना कर भेजा उसे सरिय्या और बा'स कहा।''

(नुज़हतुल क़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, जि. 4, स. 735)

2.....सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा 4, स. 657 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : ''वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में क़ुनूत न पढ़े। हां ! अगर ह़ादिसए अ़ज़ीमा वाक़ेअ़ हो तो फ़ज्र में भी पढ़ सकता है और ज़ाहिर येह है कि रुकूअ़ के क़ब्ल क़ुनूत न पढ़े।''

(الدر المختار، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۵٤۱, अल फ़तावा रज़विय्या, जि. 7, स. 490)

मदनी मश्वरा : इस मस्अले की रौशन तह़क़ीक़ मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के रिसाले ''اِجْتِنَابُ الْعُمَّال عَنْ فَتَاوَی الْجُهَّال'' (फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा), जि. 7, स. 487) और सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के रिसाले ''اَلتَّحْقِيْقُ الْكَامِل فِيْ حُكْمِ قُنُوْتِ النَّوَازِل'' (फ़तावा अमजदिय्या, बाबुल वित्र वन्नवाफ़िल, जि. 1, स. 203) पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। (इ़ल्मिय्या)

3.....المعجم الکبیر، الحدیث:٦٠٦٣، ج٤، ص٥١.

www.dawateislami.net

इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ तिलावत किया करो :

﴾376﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास उस शख़्स की शिकायत ले कर आया हूं जो ज़बानी अपनी याद दाश्त से मसाह़िफ़ लिखाता है।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और फ़रमाने लगे : "तुम पर अफ़्सोस है ! ग़ौर करो, तुम क्या कह रहे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़क़ बयान कर रहा हूं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "वोह कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "वोह अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से ज़ियादा इस काम का ह़क़दार अब मुसलमानों में कोई नहीं। मैं तुम्हें एक ह़दीस सुनाता हूं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह मुसलमानों के किसी काम के सिलसिले में हमें काफ़ी रात हो गई (फ़राग़त के बा'द) हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाएं बाएं चलते हुवे वहां से निकले। जब हम मस्जिद के क़रीब पहुंचे तो वहां एक शख़्स क़ुरआने मजीद की तिलावत कर रहा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की तिलावत सुनने के लिये ठहर गए। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस की तिलावत सुनने के लिये रुक गए ?" ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने हाथ मुबारक से ख़ामोश रहने का इशारा फ़रमाया। फिर उस शख़्स ने क़िराअत की, रुकूअ़ व सजदा किया और बैठ कर दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हो गया। रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सुवाल कर तुझे दिया जाएगा।" फ़िर फ़रमाया : "जिसे येह पसन्द हो कि वोह उस त़रह़ क़ुरआने मजीद की तिलावत करे जिस त़रह़ नाज़िल हुवा है तो वोह अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की त़रह़ तिलावत करे।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं जब मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया तब मुझे और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पता चला कि

www.dawateislami.net

वोह शख़्स हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं । सुब्ह़ जब मैं उन्हें येह ख़ुश ख़बरी सुनाने गया तो वोह कहने लगे कि "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह बिशारत सुना गए हैं ।" इस पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह, नेकी में हमेशा मुझ पर सब्क़त ले जाते हैं !!!"(1)

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से 70 सूरतें याद कीं :

﴿377﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ख़ुमैर बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुरआने मजीद की 70 सूरतें याद कीं । येह उस वक़्त की बात है जब ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कमसिन बच्चे थे और मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से जो सुना है उसे दोहराता रहता हूं ।"(2)

﴿378﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'द अज़्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि "मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़बान से 70 सूरतें याद की थीं और येह उस वक़्त की बात है जब कि ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अभी इस्लाम से मुशर्रफ़ नहीं हुवे थे और वोह बच्चों के साथ खेला करते और उन के बालों में गिरहें लगी होती थीं ।"(3)

﴿379﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं अभी कमसिन बच्चा था और मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ की बकरियां चराया करता था । एक दिन हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए और

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسندعمربن الخطاب،الحديث:١٧٥،ج١،ص٦٤۔
المعجم الكبير،الحديث:٨٤٢٠،ج٩،ص٦٩.

2 ......مسند ابی داو دالطیالسی،مااسند عبد اللّٰہ بن مسعود،الحدیث:٤٠٥،ص٥٤.

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٨٤٣٩،ج٩،ص٧٥،"الغلمان"بدلہ"الصبیان".

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! तुम्हारे पास दूध हो तो हमें पिलाओ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "येह बकरियां तो मेरे पास किसी की अमानत हैं इस लिये मैं ऐसा नहीं कर सकता।" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास कोई कमसिन बकरी है जिस से नर ने जुफ़्ती न की हो ?" मैं ने ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर कर दी। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उसे पकड़ा और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ पढ़ कर अपने रह़मत भरे हाथों से उस के थनों को मस फ़रमाया तो वोह दूध से भर गए। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूध दोहा। ख़ुद भी नोश फ़रमाया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी पिलाया। फिर थनों से फ़रमाया : "अपनी पहली ह़ालत पर लौट आओ।" येह हुक्म पाते ही थन पहली ह़ालत पर लौट आए। (येह देख कर) मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे भी इस पाकीज़ा कलाम से कुछ सिखा दीजिये।" इरशाद फ़रमाया : "तुम ख़ुदादाद सलाह़ो ख़ैर के मालिक हो।" फ़रमाते हैं : "मैं ने बा'द में हुज़ूर, सरापा नूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुक़द्दस से 70 सूरतें ह़िफ़्ज़ कीं जिन में मुझ से कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता था।"(1)

﴾380﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "लोगों पर तअ़ज्जुब है कि वोह मेरी क़िराअत छोड़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) की क़िराअत के मुत़ाबिक़ तिलावत करने लगे हैं, ह़ालांकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से 70 सूरतें याद की हैं और येह उस वक़्त की बात है जब कि ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अभी बच्चे थे और बाल लटकाए मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की गलियों में घूमा करते थे और बालों में गांठें लगी होती थीं।"(2)

---

1 ......مسند ابی داؤد الطیالسی،ماسند عبد اللّٰہ بن مسعود،الحدیث:٣٥٣،ص٤٧.

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٨٤٤٠،ج٩،ص٧٥،بدون:یجیٔ ویذھب بالمدینۃ.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुसूसिय्यात

घर में दाख़िले की ख़ुसूसी इजाज़त :

﴾381﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बताया कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "तुझे पर्दा उठा कर घर में आने जाने और मेरी बातें सुनने की इजाज़त है जब तक कि मैं तुझे इस से मन्अ़ न कर दूं।"(1)

तक्या व मिस्वाक वाले :

﴾382﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं एक मरतबा मुल्के शाम गया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मजलिस में जा कर बैठ गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : "कहां से आए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "कूफ़ा से।" फ़रमाया : "क्या तुम्हारे दरमियान صَاحِبُ الْوِسَادَةِ وَالسِّوَاک (या'नी तक्या और मिस्वाक वाले ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) नहीं हैं ?"(2)

﴾383﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शम्ए़ रिसालत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तक्या मुबारक, मिस्वाक और ना'लैन शरीफ़ैन उठाया करते थे।"(3)

इस्लाम क़बूल करने में सब्क़त :

﴾384﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं छटे नम्बर पर इस्लाम लाया और उस वक़्त सिवाए हम चन्द अफ़राद के कोई मुसलमान न हुवा था।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، باب ماذکرفی عبداللّٰہ بن مسعود، الحدیث:١، ج٧، ص٥٢٠، بتغیرٍ.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی الدرداء، الحدیث:٢٧٦١٩، ج١٠، ص٤٣١.

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٨٤٥١، ج٩، ص٧٧.

4 ......المصنف ابن ابی شیبة، کتاب التأریخ، باب کتاب التاریخ، الحدیث:٢٤، ج٨، ص٤٣.

www.dawateislami.net

मुक़र्रबे बारगाहे इलाही :

﴾385﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ को फ़रमाते हुवे सुना कि ''ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से जिन्हें ह़िफ़्ज़े क़ुरआने करीम की सआ़दत मिली उन में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ भी हैं जो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन व बरगुज़ीदा बन्दों में होंगे।''[1]

﴾386﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : ''क़ियामत के दिन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा मुक़र्रब बन्दे होंगे।''[2]

उहुद पहाड़ से भी ज़ियादा वज़्नी :

﴾387﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद رضی اللہ تعالٰی عنہ बयान करते हैं कि हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से कहा कि ''हमें किसी ऐसे शख़्स के बारे में बताएं जो हिदायत व सुन्नत में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब हो ताकि हम उस की सोह़बत को लाज़िम कर लें।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : ''मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ से ज़ियादा हिदायत व सुन्नत की इत्तिबाअ़ करने वाले किसी शख़्स को नहीं जानता क्यूंकि हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा मुक़र्रब बन्दे होंगे।''[3]

1.....المعجم الکبیر،الحدیث:٨٤٨٨،ج٩،ص٨٨.

2.....المعجم الکبیر،الحدیث:٨٤٨١،ص٨٨.

3.....مسند ابی داودالطیالسی،احادیث حذیفة بن الیمان،الحدیث:٤٢٦،ص٥٧.

www.dawateislami.net

﴾388﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं पीलू के दरख़्त से हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मिस्वाक तोड़ा करता था। एक मरतबा तेज़ हवा की वज्ह से मेरी पिन्डलियों से कपड़ा हट गया और लोग मेरी कमज़ोर पतली पिन्डलियां देख कर हंसने लगे। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हंसने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई तो लोगों ने अ़र्ज़ की : "इन की कमज़ोर व पतली पिन्डलियां देख कर हमें हंसी आ गई।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! येह मीज़ान में उहुद पहाड़ से भी ज़ियादा वज़्नी हैं।"(1)

क़बूलिय्यते दुआ़ की बिशारत :

﴾389﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुना वोह अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा वोह रात में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उन के पास से हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का गुज़र हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मांगो तुम्हें अ़त़ा किया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "(येह सुन कर) मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ गया (और उन्हें येह ख़ुश ख़बरी सुनाई) तो उन्हों ने कहा : "मेरी एक दुआ़ है जिसे मैं ज़रूर मांगूंगा और वोह येह है :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ اِیْمَانًا لَا یَبِیْدُ وَنَعِیْمًا لَا یَنْفَدُ وَقُرَّۃَ عَیْنٍ لَا تَنْقَطِعُ، وَمُرَافَقَۃَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فِیْ اَعْلٰی جَنَّۃِ الْخُلْدِ

(रावी को इस में शक है कि "لَا یَبِیْدُ" कहा था या "لَا تَبِیْدُ")

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से ईमाने कामिल और अज़ली ने'मतों का सुवाल करता हूं और आंखों की ऐसी ठन्डक का त़लबगार हूं जो कभी ख़त्म न हो और जन्नतुल फ़िरदौस में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस मांगता हूं।"(2)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۸۴۵۲،ج۹،ص۷۸۔
مسندابی داود الطیالسی،ماآسند عبد اللّٰہ بن مسعود،الحدیث:۳۵۵،ص۴۷.

2 ......مسند ابی داود الطیالسی،ماآسند عبد اللّٰہ بن مسعود،الحدیث:۳۴۰،ص۴۵۔
المسند للامام احمد بن حنبل، مسندعبد اللّٰہ بن مسعود،الحدیث:۴۳۴۰، ج۲،ص۱۷۳،"لا یبید" بدلہ"لا یرتد".

www.dawateislami.net

﴾390-391﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ़ मांग रहे थे कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास से गुज़रे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी साथ थे। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की दुआ़ सुनी तो फ़रमाया : "येह कौन दुआ़ मांग रहा है ? मांगे, इसे दिया जाएगा।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास गए और फ़रमाया : "जो दुआ़ तुम अभी मांग रहे थे, मुझे बताओ !" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द व बुज़ुर्गी बयान की फिर येह दुआ़ की :

لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ وَعْدُکَ حَقٌّ وَلِقَاؤُکَ حَقٌّ، اَلْجَنَّۃُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَرُسُلُکَ حَقٌّ، وَکِتَابُکَ حَقٌّ، وَالنَّبِیُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ صَلَّی اللہ تعالی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ حَقٌّ

या'नी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तेरा वा'दा सच्चा है। तेरी मुलाक़ात ह़क़ है। जन्नत व दोज़ख़ ह़क़ है। तेरे रसूल सच्चे, तेरी किताब सच्ची और तेरे अम्बिया बर ह़क़ हैं और हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी सच्चे हैं।"(1)

﴾392﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) के अ़ह्द को लाज़िम पकड़ लो।"(2)

सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 14 रुफ़क़ा :

﴾393﴿.....अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर नबी को 7, 7 बा वफ़ा रफ़ीक़ व वज़ीर अ़त़ा हुवे, जब कि मुझे 14 अ़त़ा फ़रमाए गए हैं : अमीरे ह़म्ज़ा, जा'फ़र, अ़ली, ह़सन, हु़सैन, अबू बक्र, उ़मर, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, अबू ज़र, मिक़्दाद, हु़ज़ैफ़ा, अ़म्मार, सलमान और बिलाल।"

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۸۴۱۸/۸۴۱۹، ج۹، ص۶۸.

2 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب عبد اللہ بن مسعود، الحدیث:۳۸۰۵، ص۲۰۴۳.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन नजिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इसी ह़दीस की मिस्ल रिवायत किया है। और उन की रिवायत में "रुफ़क़ा" या "रुक़बा" का लफ़्ज़ है।"(1)

﴾394﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबुल अह़वस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल हुवा तो मैं हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा और हज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की बारगाह में ह़ाज़िर था। उन में से एक दूसरे से कह रहे थे : "क्या तुम्हारे ख़याल में हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने जैसा कोई शख़्स छोड़ा है ?" दूसरे ने कहा : "अगर ऐसी बात है तो सुनो ! जब हमें बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िरी से रोक दिया जाता तो उन्हें ह़ाज़िरी की इजाज़त होती थी और जब हम ग़ाइब होते तो येह बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर होते थे।"(2)

﴾395﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा और हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के पास बैठा हुवा था कि उन में से एक ने दूसरे से पूछा : क्या आप ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ुलां फ़ुलां ह़दीस सुनी है ?" दूसरे ने नफ़ी में जवाब देते हुवे पूछा : "क्या आप ने सुनी है ?" तो पहले ने कहा : "मैं ने तो नहीं सुनी, अलबत्ता उस घर वाले का दा'वा है कि उस ने वोह ह़दीस सुनी है।" हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : "तो उन की बात सच है। क्यूंकि जब हमें बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िरी से रोक दिया जाता था तो उस वक़्त भी उन्हें दाख़िले की इजाज़त होती थी और जब हम ग़ाइब होते तो येह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िर रहते थे।" हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस (घर वाले) से हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुराद हैं।"(3)

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का इ़ल्मी मक़ाम :

﴾396﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तशरीफ़ फ़रमा थे कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

---

1 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب أنّ الحسن والحسین......الخ، الحدیث:٣٧٨٥، ص٢٠٤١.

2 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل عبدالله بن مسعود وامه، الحدیث:٦٣٢٩، ص١١١٠.

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٨٤٩٢، ج٩، ص٨٩.

www.dawateislami.net

बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहां आ गए उन्हें देख कर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह कैसा कामिल फ़क़ीह है !"(1)

﴾397﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़त़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से फ़रमाया : "जब तक सय्यिदे आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी व मुतबह़्ह़िर आ़लिम या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे दरमियान मौजूद हैं हम से कोई मस्अला दरयाफ़्त न किया करो।"(2)

﴾398﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब तक येह मुतबह़्ह़िर आ़लिम या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम्हारे दरमियान मौजूद हों मुझ से कोई मस्अला दरयाफ़्त न किया करो।"(3)

﴾399﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि लोगों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के बारे में पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम किस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछते हो ?" उन्हों ने कहा : "हमें ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में बताएं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह क़ुरआनो सुन्नत के आ़लिम हैं और इ़ल्म में वोही काफ़ी हैं।"(4)

﴾400﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "उन्हों ने क़ुरआने मजीद की तिलावत की और उस में इस क़दर ग़ौरो फ़िक्र किया कि येह उन्हें किफ़ायत कर गया।"(5)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الفضائل ،باب ما ذکرفی عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث:۱۲، ج۷، ص ۵۲۱، بتغیر.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۸۴۹۹/ ۸۵۰۰، ج۹، ص ۹۱۔۹۲.

3 ......صحیح البخاری، کتاب الفرائض، باب میراث ابنة ابن مع ابنة، الحدیث: ۶۷۳۶، ص ۵۶۳۔
المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث: ۴۴۲۰، ج۲، ص ۱۹۲ .

4 ......الطبقات الکبرٰی لابن سعد، مشایخ شتی ، ج۲، ص ۲۶۳ .

5 ......تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر، الرقم ۳۵۷۳ عبد اللّٰہ بن مسعود ، ج۳۳، ص ۱۴۳، "وقف" بدله "قام".

www.dawateislami.net

इरशादाते इब्ने मसऊ़द :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इरशादात जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के उन हालात पर मुश्तमिल हैं जिन की बदौलत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहे और औक़ात में बरकात ह़ासिल हुईं।"

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं कि "मनाज़िल की दुरुस्ती के लिये मुआ़मले को सह़ीह़ रखने का नाम तसव्वुफ़ है।"

ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को कैसा होना चाहिये ?

﴾401﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को चाहिये कि जब लोग सो रहे हों तो वोह अपनी रात की ह़िफ़ाज़त करे (कि इस में जाग कर क़ुरआने मजीद की तिलावत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करे हरगिज़ इसे ग़फ़्लत में न गुज़ारे)। जब लोग खा पी रहे हों तो वोह अपने दिन का ख़याल (या'नी रोज़ा) रखे। जब लोग ख़ुश हो रहे हों तो वोह अपने ग़म को याद करे (या'नी फ़िक्रे आख़िरत करे)। जब लोग हंस रहे हों तो वोह आंसू बहाए। जब लोग बाहम मिल जुल रहे हों तो वोह ख़ामोश रहे और जब लोग तकब्बुर का शिकार हों तो वोह ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ इख़्तियार करे। नीज़ ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को चाहिये कि वोह रोने वाला, ग़मज़दा, ह़िक्मत व बुर्द बारी, इ़ल्म व इत़्मीनान वाला हो। और उसे चाहिये कि वोह ख़ुश्क रू, ग़ाफ़िल, शोर मचाने वाला, चीख़ो पुकार करने वाला न हो और न ही सख़्त मिज़ाज हो।"(1)

﴾402﴿.....हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन वसाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे फ़ारिग़ शख़्स ना पसन्द है कि जो न तो दुन्या के किसी काम में मसरूफ़ हो और न ही आख़िरत के किसी अ़मल में मश्ग़ूल हो।"(2)

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی ھریرۃ، الحدیث:۸۹۲، ص ۱۸۳۔
المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ما قالوا فی......الخ، الحدیث: ۶۳، ج۸، ص ۳۰۵.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۸۵۳۸، ج۹، ص ۱۰۲.

www.dawateislami.net

﴾403﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे ऐसे शख़्स से सख़्त नफ़रत है, जो न तो दुन्या के किसी काम में मगन हो और न ही उसे आख़िरत की कुछ फ़िक्र हो।"(1)

﴾404﴿.....हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : لَا اُلْفِيَنَّ اَحَدَكُمْ جِيفَةَ لَيْلٍ قُطْرُبَ نَهَارٍ या'नी : मैं तुम में से किसी को हरगिज़ ऐसे शख़्स की त़रह़ न पाऊं जो रात भर बे जान लाशे की त़रह़ पड़ा रहता और दिन भर दुन्या कमाने के लिये भाग दौड़ करता है (जब कि उसे आख़िरत की बिल्कुल फ़िक्र नहीं होती)।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़यैना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले से बयान किया गया है कि "क़ुत़रुब से मुराद वोह शख़्स है जो इधर उधर बैठ कर अपना वक़्त बरबाद करता है।"

﴾405﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुर्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब तक तुम नमाज़ में मश्ग़ूल रहते हो तो गोया ऐसे हो जैसे बादशाह का दरवाज़ा खट खटा रहे हो और जो बादशाह का दरवाज़ा खट खटाता रहता है उस के लिये दरवाज़ा खोल ही दिया जाता है।"(3)

जब "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" सुनो !

﴾406﴿.....हज़रते सय्यिदुना मा'न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जहां तक हो सके बा वुज़ू रहा करो और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान : "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" (ऐ ईमान वालो !) सुनो तो अपने कानों को उस की त़रफ़ लगा दो क्यूंकि उस में किसी भलाई का हुक्म या किसी बुराई से मुमानअ़त होती है।"(4)

शैत़ान को भगाने का क़ुरआनी नुस्ख़ा :

﴾407﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबुल अह़वस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक क़ुरआने पाक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियाफ़त है लिहाज़ा अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ उस की ज़ियाफ़त क़बूल करो (या'नी जिस क़दर हो सके उसे

1.....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام ابن مسعود، الحدیث:٤٧، ج٨، ص١٦٤.

2.....المعجم الکبیر، الحدیث:٨٧٦٣، ج٩، ص١٥٢.

3.....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب التطوع والامامة، باب الرکوع......الخ، الحدیث:١٠، ج٢، ص٣٦٠، مفهومًا.

4.....الزھد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی ھریرة، الحدیث:٨٦٦، ص١٨٠.

www.dawateislami.net

सीखो क्यूंकि) जिस घर में उस की तिलावत नहीं होती उस में कोई भलाई नहीं होती और जिस घर में सूरए बक़रह की तिलावत की जाती है शैतान वहां से भाग जाता है।"[1]

﴾408﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दिल बरतनों की त़रह़ हैं। लिहाज़ा इन्हें कुरआने पाक के इलावा किसी और चीज़ से न भरो।"[2]

﴾409﴿.....हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इ़ल्म कसरते रिवायत से नहीं बल्कि ख़शिय्यते इलाही से ह़ासिल होता है।"[3]

﴾410﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! इ़ल्म सीखो फिर उस पर अ़मल करो।"[4]

आ़लिम और जाहिल दोनों के लिये हलाकत :

﴾411﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हलाकत है उस शख़्स के लिये जिस ने इ़ल्म ह़ासिल नहीं किया अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो वोह ज़रूर ह़ासिल करता और उस के लिये भी हलाकत है जिस ने इ़ल्म तो ह़ासिल किया मगर उस पर अ़मल न किया।" येह बात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सात मरतबा इरशाद फ़रमाई।[5]

﴾412﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़कैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस मस्जिद में दाएं हाथ से इशारा करते और फ़रमाते हुवे सुना कि तुम में से हर एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ तन्हा ह़ाज़िर होगा जिस त़रह़ तुम चौदहवीं रात में चांद के साथ तन्हा होते हो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद

1 ......المصنف لعبد الرزاق،کتاب فضائل القرآن ، باب تعلیم القرآن وفضله ، الحدیث:٦٠١٨،ج٣،ص٢٢٥.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الزھد ، کلام ابن مسعود ،الحدیث:٣٦، ج٨،ص١٦٢ .

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل ، فی فضل ابی ھریرة ،الحدیث:٨٦٧،ص١٨٠ .

4 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزھد،کلام ابن مسعود، الحدیث:٣٢، ج٨، ص١٦١ ،"العلم"بدله "تعلموا".

5 ......الزھد للامام احمد بن حنبل ،فی فضل ابی ھریرة ،الحدیث:٨٦٨،ص١٨٠ .

www.dawateislami.net

फ़रमाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! तुझे किस चीज़ ने मुझ से फ़रैब में रखा ? ऐ इब्ने आदम ! तू ने मुर्सलीन (عَلَيۡهِمُ السَّلَام) की पैरवी क्यूं न की ? ऐ इब्ने आदम ! तू ने अपने इल्म पर अ़मल क्यूं न किया ?"(1)

इस्यान से निस्यान :

﴾413﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं समझता हूं कि आदमी जो इल्म ह़ासिल करता है ना फ़रमानी उसे भुला देती है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अहलो इयाल के मुआ़मले में दुन्या की फ़ुज़ूलिय्यात से दूर रहते। अपने आप पर, अपने दिल के ह़ालात और इस पर वारिद होने वाले ख़त़रात पर रोते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाकर्दा ने'मत ईमान की दौलत की वज्ह से उस की रह़मत पर उम्मीद रखते थे।"

अस्ह़ाबे तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "ख़ौफ़ व उम्मीद के साथ नफ़्स को नजात पर उभारने का नाम तसव्वुफ़ है।"

मुसलमान के लिये तोह़फ़ा :

﴾414﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दुन्या का ख़ालिस ह़िस्सा चला गया और गदला ह़िस्सा बच गया। पस अब मौत हर मुसलमान के लिये तोह़फ़ा है।"(3)

﴾415﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दुन्या पहाड़ के साए में वाक़ेअ़ तालाब की मानिन्द है जिस का साफ़ ह़िस्सा तो ख़त्म हो गया लेकिन गदला ह़िस्सा बाक़ी रह गया।"(4)

﴾416﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन ह़ब्तर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दो ना पसन्दीदा चीज़ें मौत और तंगदस्ती कितनी उ़म्दा हैं !

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٨٨٩٩، ج٩، ص١٨٢.

2 ......الزهدللامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی هريرة، الحديث: ٨٥٣، ص١٧٨.

3 ......المصنف لابن ابی شيبة، كتاب الزهد، كلام ابن مسعود، الحديث: ١، ج٨، ص١٥٨.

4 ......المصنف لابن ابی شيبة، كتاب الزهد، كلام ابن مسعود، الحديث: ٢، ج٨، ص١٥٨، بدون: إنما.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दो चीज़ों में से एक तो ज़रूर है मालदारी या नादारी और मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं कि इन में से किसी के ज़रीए भी आज़माया जाऊं क्यूंकि अगर मालदारी अ़ता हुई तो इस से लोगों पर मेहरबानी करूंगा और अगर तंगदस्ती अ़ता हुई तो सब्र करूंगा।''[1]

हलावते ईमान से महरूमी के अस्बाब :

﴾417﴿.....हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''कोई मुसलमान उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक ईमान की बुलन्दी को न पा ले और ईमान की बुलन्दी को पाने में उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकता जब तक फ़क़्र को दौलत से बेहतर और आ़जिज़ी व इन्किसारी को इ़ज़्ज़तो शराफ़त से अच्छा ख़याल न करे नीज़ जब तक ता'रीफ़ करने वाले और मज़म्मत करने वाले को यक्सां हैसिय्यत न दे।''[2]

रावी बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रुफ़क़ा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस फ़रमाने ज़ीशान की वज़ाह़त यूं फ़रमाई कि ''आदमी ईमान की ह़लावत व रिफ़्अ़त उस वक़्त पा सकता है जब उसे ह़लाल पर गुज़ारा करते हुवे ग़रीबी व नादारी को गवारा करना ह़राम इख़्तियार कर के मालदारी ह़ासिल हो जाने से ज़ियादा पसन्द हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इता़अ़त व फ़रमांबरदारी वाली आ़जिज़ी व इन्किसारी उस की ना फ़रमानी वाली इ़ज़्ज़तो शोहरत से ज़ियादा पसन्द हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ातो सिफ़ात में इस त़रह़ फ़ना हो जाए कि उस की नज़र में ता'रीफ़ करने वाला और बुराई व मज़म्मत करने वाला दोनों बराबर हों।''

﴾418﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन सा'द बिन अख़रम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! जो शख़्स इस्लाम की ह़ालत में सुब्ह़ो शाम करता है उसे दुन्यावी रन्जो ग़म नुक़्सान नहीं देते (बल्कि वोह इस पर सब्र कर के अज्र पाता है)।''[3]

---

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی هريرة، الحديث:٨٤٧، ص١٧٨ .

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی هريرة، الحديث:٨٦٣، ص١٨٠ .

3 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی هريرة، الحديث:٨٧٦، ص١٨١ .

www.dawateislami.net

﴾419﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन सुवैद رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! कोई सुब्ह़ ऐसी न हुई कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رضی اللہ تعالٰی عنہ) की औलाद के पास कोई ऐसी चीज़ होती जिस से उन्हें उम्मीद हो कि अल्लाह عزوجل उन्हें ख़ैरो भलाई अ़ता फ़रमाए या उन से किसी बुराई को दूर फ़रमाए मगर अल्लाह عزوجل ख़ूब जानता है कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رضی اللہ تعالٰی عنہ) उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता।"(1)

ह़िसाबो किताब का ख़ौफ़ :

﴾420﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन मसरूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़रीब किसी ने कहा : "मैं नहीं चाहता कि अस्ह़ाबे यमीन(2)

1.....المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابن مسعود، الحدیث:۱۸، ج۸،ص۱۶۰.

2.....अस्ह़ाबे यमीन अहले जन्नत का एक गुरौह है जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में सूरए वाक़िआ़ के अन्दर है, इस का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान से पेश किया जाता है : "और दहनी त़रफ़ वाले (या'नी जिन के नामए आ'माल उन के दाहिने हाथों में दिये जाएंगे) कैसे दहनी त़रफ़ वाले ! (येह उन की ता'ज़ीमे शान के लिये फ़रमाया कि वोह बड़ी शान रखते हैं सईद हैं जन्नत में दाख़िल होंगे) बे कांटों की बेरियों में और केले के गुच्छों में और हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में और बहुत से मेवों में जो न ख़त्म हों और न रोके जाएं और बुलन्द बिछौनों में। बेशक हम ने उन औ़रतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कंवारियां, अपने शोहरों पर प्यारियां, उन्हें प्यार दिलातियां, एक उ़म्र वालियां दहनी त़रफ़ वालों के लिये।" इसी त़रह़ मुक़र्रबीन भी अहले जन्नत का एक गुरौह है जिस का तज़किरा भी सूरए वाक़िआ़ में मिलता है। इस का भी तर्जमा पेश किया जाता है। **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जो सब्क़त ले गए (नेकियों में) वोह तो सब्क़त ही ले गए (दुख़ूले जन्नत में) वोही मुक़र्रबे बारगाह हैं चैन के बाग़ों में, अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े। जड़ाव तख़्तों पर होंगे, उन पर तक्या लगाए हुवे आमने सामने उन के गिर्द लिये फिरेंगे (आदाबे ख़िदमत के साथ) हमेशा रहने वाले लड़के (जो न मरें, न बूढ़े हों, न उन में तग़य्युर आए। येह अल्लाह तआ़ला ने अहले जन्नत की ख़िदमत के लिये जन्नत में पैदा फ़रमाए) कूज़े और आफ़्ताबे और जाम और आंखों के सामने बहती शराब कि उस से न उन्हें दर्दे सर हो और न होश में फ़र्क़ आए (ब ख़िलाफ़ शराबे दुन्या के कि उस के पीने से ह़वास मुख़्तल हो जाते हैं) और मेवे जो पसन्द करें और परन्दों का गोश्त जो चाहें और बड़ी आंख वालियां हूरें (उन के लिये होंगी) जैसे छुपे रखे हुवे मोती, सिला उन के आ'माल का, उस में न सुनेंगे न कोई बेकार बात, न गुनहगारी। हां ! येह कहना होगा सलाम सलाम।" हिलालैन (या'नी ब्रेकेट्स brackets) में लिखी हुई इबारात तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान अज़ मुफ़स्सिरे क़ुरआन, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی से ली गई हैं) (कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 27, अल वाक़िआ़ : 10 ता 38) मुमकिन है इस रिवायत में अस्ह़ाबे यमीन व अस्ह़ाबे मुक़र्रबीन से येही दो जन्नती गुरौह मुराद हों कि किसी ने अस्ह़ाबे यमीन में से होने पर मुक़र्रबीन में से होने को तरजीह़ दी जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ के ख़ौफ़े ख़ुदा का आ़लम येह है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ मरने के बा'द मिट्टी हो जाने और ह़िसाबे आख़िरत के ख़ौफ़ से दोबारा न उठाए जाने की तमन्ना कर रहे हैं। अल्लाह عزوجل इन के सदक़े हमें भी अपना ख़ौफ़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم (इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

से हो जाऊं बल्कि मैं तो येह चाहता हूं कि मुक़र्रबीने बारगाहे ख़ुदावन्दी में से कहलाऊं।'' रावी कहते हैं : येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''लेकिन यहां तो एक ऐसा शख़्स है जो येह तमन्ना करता है कि ''जब वोह मर जाए तो उसे दोबारा न उठाया जाए।'' यहां ''शख़्स'' से उन्हों ने अपनी ज़ात मुराद ली है।(1)

ख़ौफ़े ख़ुदा की एक झलक :

﴾421﴿.....हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अगर मुझे जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान खड़ा कर के दोनों में से एक में जाने या मिट्टी हो जाने का इख़्तियार दिया जाए तो मैं मिट्टी हो जाना पसन्द करूंगा।''(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़ोह्द :

﴾422﴿.....हज़रते सय्यिदुना हारिस बिन सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अगर तुम मेरी ह़क़ीक़त व अस्लिय्यत को पहचान लो तो मेरे सर पर मिट्टी डालने लगो।''(3)

﴾423﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबुल अह़वस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास दीनारों की त़रह़ ख़ूब सूरत तीन साहिबज़ादे बैठे हुवे थे। हम उन की त़रफ़ देखने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात को भांप गए और फ़रमाने लगे : ''शायद ! तुम इन्हें देख कर मुझ पर रश्क कर रहे हो ?'' हम ने कहा : ''आदमी पर ऐसों ही की वज्ह से रश्क किया जाता है।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने छत की त़रफ़ सर उठाया तो वहां अबाबील परन्दे ने अन्डे दे रखे थे, उन्हें मुलाह़ज़ा किया फिर फ़रमाया : ''इन्हें (या'नी अपने बेटों को) क़ब्रों में दफ़्न कर के मिट्टी से हाथ झाड़ लेना मुझे इस परन्दे के अन्डों के नीचे गिर कर टूट जाने से ज़ियादा पसन्द है।''(4)

---

1. ......الزھد للامام احمد بن حنبل ،فی فضل ابی ھریرۃ ،الحدیث:٨٦٩،ص١٨٠، مفھومًا.
2. ......المعجم الکبیر، الحدیث:٨٥٣٥،ج٩،ص١٠٢.
3. ......المستدرک،کتاب معرفۃ الصحابۃ ،باب کان عبد اللّٰہ یخطب......الخ، الحدیث:٥٤٣٣،ج٤،ص٣٧٥،بتغیر.
4. ......الزھد لابن المبارک ،باب فی أخبار ابو ریحانۃ وغیرہ،الحدیث:٨٨٠،ص٣٠٧،بتغیر.

www.dawateislami.net

《424》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं कूफ़ा में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में बैठा करता था, एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर में चबूतरे पर बैठे हुवे थे जब कि नीचे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो ख़ूब सूरत व साह़िबे हैसिय्यत बीवियां बैठी हुई थीं और उन दोनों से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ूब सूरत औलाद भी थी। अचानक एक चिड़या ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर पर बीट कर दी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे हाथ से साफ़ कर के फ़रमाया : "अ़ब्दुल्लाह के अहलो इयाल का मर जाना और मेरा इस दुन्या से चला जाना मुझे इस चिड़या की मौत से ज़ियादा पसन्द है।"(1)

सफ़रे आख़िरत की तय्यारी का दर्स :

《425》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ुजीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब लोगों के पास बैठते तो फ़रमाते : "ऐ लोगो ! शबो रोज़ गुज़रने के साथ साथ तुम्हारी उ़म्रें भी कम होती जा रही हैं। तुम्हारे आ'माल लिखे जा रहे हैं। मौत अचानक आएगी। पस जो नेकी की फ़स्ल बोएगा जल्द ही उसे शौक़ से काटेगा और जो बुराई की खेती बोएगा उसे नदामत के साथ काटना पड़ेगा। हर एक अपनी ही उगाई हुई खेती काटेगा। सुस्ती व काहिली करने वाला अपने अ़मल के ज़रीए आगे कभी नहीं बढ़ पाएगा और ह़िर्सो लालच में मुब्तला सिर्फ़ अपना मुक़द्दर ही ह़ासिल कर पाएगा। जिसे भी भलाई की तौफ़ीक़ मिली वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है और जिसे बुराई से बचाया गया तो वोह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के करम से है। मुत्तक़ी व परहेज़गार आ़म लोगों के सरदार और फ़ुक़हा, रहनुमा हैं। इन की सोह़बत इख़्तियार करना नेकियों में इज़ाफ़े का सबब है।"(2)

《426》.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक बिन मुज़ाह़िम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम में से हर एक मेहमान है और मेहमान हमेशा नहीं रहता उसे रुख़्सत होना पड़ता है और तुम्हारे पास जो माल है येह उधार है और उधार उस के मालिक को लौटाना होता है।"(3)

---

1 ......الزهد لابی داؤد ،باب من خبر ابن مسعود ، الحديث: ١٤٨ ، ج١ ، ص ١٦٠ ،بتغيرقليلٍ.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل،باب فضل ابی هريرة،الحديث:٨٨٩،ص١٨٣ .

3 ......المعجم الكبير،الحديث:٨٥٣٣،ج٩،ص١٠١ .

www.dawateislami.net

कलिमाते नाफ़ेआ :

﴾427﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने उन के पास आ कर कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! (येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) मुझे जामेअ़ व नाफ़ेअ़ कलिमात सिखाइये !" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो। उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ। कु़रआने मजीद के अह़कामात के मुत़ाबिक़ जि़न्दगी बसर करो। अगर तुम्हारे पास कोई ना वाक़िफ़ व ना पसन्द शख़्स भी ह़क़ बात लाए तो उसे क़बूल कर लो और कोई तुम्हारा प्यारा व पसन्दीदा शख़्स भी नाह़क़ बात पेश करे तो उसे रद कर दो।"(1)

﴾428﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सच भारी और तल्ख़ लगता है जब कि झूट हल्का व शीरीं मह़सूस होता है और कभी थोड़ी सी शहवत त़वील ग़म का सबब बन जाती है।"(2)

﴾429﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! रूए ज़मीन पर ज़बान से बढ़ कर कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसे त़वील मुद्दत क़ैद में रखने की ज़ियादा ह़ाजत हो।"(3)

﴾430﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मा'न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दिल में अच्छी ख़्वाहिशात भी पैदा होती हैं और बुरे ख़यालात भी जनम लेते हैं। लिहाज़ा नेकी को ग़नीमत जान कर उसे कर लो और बदी से अपना दामन दाग़दार न करो बल्कि उसे तर्क कर दो।"(4)

﴾431﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दिल को सख़्त कर देने वाली अश्या से बचो और जो चीज़ दिल में खटके उसे तर्क कर दो।"(5)

---

1 .....الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمْت آداب اللسان،باب الصدق وفضله، الحدیث:٤٥٤، ج٧، ص٢٦٤، مفهومًا.

2 .....الزهد لابن المبارك، باب الاعتبار والتفكر، الحديث: ٢٩٠، ص٩٨.

3 .....المعجم الكبير، الحديث:٨٧٤٤/٨٧٤٥، ج٩، ص١٤٩ .

4 .....الزهدلابن المبارك، باب فضل ذكر الله، الحديث:١٣٣١، ص٤٦٩، مفهومًا.

5 .....الورع للامام احمد بن حنبل، باب ما يكره من امر الربا، ص٤٦ .

www.dawateislami.net

कुफ़्फ़ार की ख़ुशहालियां क़ाबिले फ़ख़्र नहीं !

﴾432﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में कुछ किसान ह़ाज़िर हुवे तो उन की मोटी गर्दनें और सिह़ह़त मन्द व तुवानां बदन देख कर लोगों को तअ़ज्जुब हुवा (इस पर) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम देखते हो काफ़िरों के जिस्म सिह़ह़त मन्द हैं लेकिन दिल बीमार हैं और मोमिन का जिस्म अगर्चे कमज़ोर हो लेकिन उस का दिल सिह़ह़त मन्द व मज़बूत़ होता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम्हारे जिस्म सिह़ह़त मन्द हों मगर दिल मरीज़ तो तुम्हारी हैसिय्यत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक गब्रीला (या'नी गोबर के कीड़े) से भी कम तर है।"(1)

﴾433﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जिस से बन पड़े अपना माल वहां रखे जहां उसे कीड़ा लगे न चोर का हाथ (या'नी राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दे) क्यूंकि बन्दे का दिल माल की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता है।"(2)

﴾434﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इतरीस बिन उ़र्क़ूब शैबानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे और कहा : "हलाक हुवा वोह शख़्स जिस ने न तो नेकी का हुक्म दिया और न ही बुराई से मन्अ़ किया।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बल्कि हलाक तो वोह हुवा जिस का दिल भलाई को भलाई और बुराई को बुराई नहीं समझता।"(3)

﴾435﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सालिह़ीन दुन्या से रुख़्सत हो गए और शक करने वाले बाक़ी रह गए जिन्हें नेकी की पहचान है न बुराई का पता।"(4)

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،باب فی فضل ابی ھریرۃ،الحدیث: ٩٤٠، ص ١٨٤، مفهومًا.
2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ ، کتاب الزھد،کلام ابن مسعود، الحدیث:٨،ج٨،ص ١٥٩ .
3 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٨٥٦٤،ج٩،ص ١٠٧ .
4 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٨٥٥٢،ج٩،ص ١٠٥ .

www.dawateislami.net

हिफ़ाज़ते ज़बान की नसीहत :

﴾436﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये !" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "तेरा घर तुझे किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) ज़बान की हिफ़ाज़त करो और अपनी ख़त़ाओं को याद कर के आंसू बहाओ।"(1)

﴾437﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने एक शख़्स को येह कहते हुवे सुना कि "कहां हैं दुन्या को तर्क करने वाले और आख़िरत में रग़बत रखने वाले ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "वोह जाबिया के रहने वाले थे, वोह ता'दाद में 500 थे और उन्हों ने क़सम खाई थी कि शहीद हुवे बिग़ैर वापस नहीं पलटेंगे फिर वोह सर मुन्डा कर दुश्मनों से जा भिड़े यहां तक कि वोह सब के सब जामे शहादत नोश कर गए और उन की शहादत की ख़बर देने वाले के सिवा एक भी ज़िन्दा न बचा।"(2)

सब से ज़ियादा ज़ोह्द वाले :

﴾438﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "(ऐ लोगो !) तुम नमाज़, रोज़ा और इजतिहाद में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن से बढ़ना चाहते हो (याद रखो ! ऐसा नहीं हो सकता क्यूंकि) वोह तुम से बेहतर हैं।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! इस की क्या वज्ह है ?" फ़रमाया : "वोह दुन्या में सब से ज़ियादा ज़ोह्द इख़्तियार करते और आख़िरत में सब से बढ़ कर रग़बत रखते हैं।"(3)

---

1 .....الزهد لابن المبارك، باب ماجاء فى الحزن والبكاء، الحديث: ١٣٠، ص ٤٢.

2 .....المعجم الكبير، الحديث: ٨٥٨٤، ج٩، ص ١١٣.

3 .....المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام ابن مسعود، الحديث: ٣٥، ج٨، ص ١٦٢.

www.dawateislami.net

मोमिन का आराम व सुकून

﴾439﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मोमिन के लिये दीदारे इलाही से बढ़ कर किसी चीज़ में राह़त व सुकून नहीं और जिस का आराम व सुकून दीदारे इलाही में है वोह ज़रूर उसे पाएगा।"(1)

फ़ितनों का दौर दौरा :

﴾440﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब फ़ितनों में उलझ जाओगे ? जब ऐसा वक़्त आए तो तुम सुन्नत को मज़बूती से थामे रखना क्यूंकि येह फ़ितने ऐसे ख़त़रनाक होंगे कि बच्चे जवान और जवान बूढ़े हो जाएं। अगर उन से कोई चीज़ रह जाएगी तो एक दूसरे से कहेगा : "तू ने सुन्नत तर्क कर दी।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसा कब होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे अ़ालिम कम और क़ारी ज़ियादा, मालदार ज़ियादा और दियानत दार कम हो जाएंगे। आख़िरत की बेहतरी के लिये किये जाने वाले आ'माल को दुन्या कमाने का ज़रीआ़ बनाया जाएगा और हुसूले इ़ल्म का मक़्सद रिज़ाए इलाही नहीं होगा।"(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह ह़दीस बयान करने के बा'द फ़रमाया : "अब तुम ऐसे ही ज़माने में हो।"

नेकियां छुपाओ :

﴾441﴿.....हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُوْد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई रोज़े की ह़ालत में सुब्ह़ करे या फ़रमाया तुम में से कोई रोज़ादार हो तो कुछ चले फिरे और जब दाएं हाथ से सदक़ा दे तो बाएं हाथ से छुपाए और जब नफ़्ल नमाज़ अदा करे तो घर में पढ़े।"

---

1 ......الزهد لابن المبارك، باب التحضيض على طاعة الله، الحديث:١٧، ص٦.

2 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب تغير الزمان وما يحدث فيه، الحديث: ١٨٥ / ١٨٦، ج١، ص٧٥.

www.dawateislami.net

दीन में पैरवी का मे'यार :

﴾442﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबुल अहवस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दीन में किसी की इस त़रह़ पैरवी न करो कि वोह ईमान लाए तो तुम ईमान लाओ और अगर वोह कुफ़्र करे तो तुम भी कुफ़्र करो। हां ! अगर तुम ने पैरवी करनी ही है तो वफ़ात याफ़्ता बुज़ुर्गों की करो कि ज़िन्दा पर फ़ितने से बे ख़ौफ़ी नहीं[1] ।[2]"

﴾443﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम में से कोई इम्मिआ़ न बन जाए।" लोगों ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! इम्मिआ़ कौन होता है ? फ़रमाया : इम्मिआ़ वोह है जो कहे कि मैं सब के साथ हूं (या'नी हर एक की हां में हां मिलाए और कहे कि) अगर दूसरे लोग हिदायत पर हैं तो मैं भी हिदायत पर हूं, और अगर वोह गुमराह हैं तो मैं भी गुमराह हूं। बल्कि ऐसे बनो कि लोग अगर कुफ़्र भी करें तो तुम इस्लाम पर क़ाइम रहो।"[3]

1.....इस ह़दीस की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "इस में ताबेईन से ख़िताब है या'नी ता क़ियामत जो कोई सीधी राह चलना चाहे वोह सह़ाबा की पैरवी करे खुद कुरआनो ह़दीस से इस्तिम्बाते मसाइल पर क़नाअ़त न करे इसी लिये मुजतहिदीन अइम्मा सह़ाबा के पैरू हैं इस की ताईद वोह ह़दीस करती है कि मेरे सह़ाबा तारे हैं जिन की पैरवी करो हिदायत पा जाओगे।" मज़ीद आगे इरशाद फ़रमाया : "यहां ज़िन्दों से मुराद ग़ैर सह़ाबा हैं और वफ़ात पाने वालों से सारे सह़ाबा, ज़िन्दा हों या वफ़ात याफ़्ता। (साहिबे) मिरक़ात ने फ़रमाया येह कलाम हज़रते इब्ने मसऊ़द ने इन्किसारन फ़रमाया वरना उस वक़्त आप और तमाम ज़िन्दा सह़ाबा क़ाबिले इत्तिबाअ़ थे। ज़िन्दा से (उस ज़माने के) ताबेईन मुराद हैं क्यूंकि सह़ाबा से अल्लाह-रसूल का वा'दा जन्नत हो चुका। रब ने फ़रमाया : "وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى (پ٢٦،الفتح:٢٦) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया) और फ़रमाया اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ (پ٢٦،الحجرات:٣) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह हैं जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है) और फ़रमाया وَكَرَّهَ اِلَیْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْیَانَؕ (پ٢٦،الحجرات:٧) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और कुफ़्र और हुक्म अ़दूली और ना फ़रमानी तुम्हें ना गवार कर दी) जिस से पता लगा कि रब ने सह़ाबा के लिये ईमान लाज़िम कर दिया उन के दिलों में कुफ़्र और फ़िस्क़ से नफ़रत पैदा फ़रमा दी खुसूसन हज़रते इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को तो जन्नत की बिशारत दी जा चुकी थी ख़याल रहे कि मुर्तद सह़ाबी नहीं रहता इर्तिदाद से सह़ाबिय्यत ख़त्म हो जाती है।

(मिरआतुल मनाजीह़, किताबुल ईमान, बाबुल ए'तिसाम, जि. 1, स. 181)

2.....المعجم الكبير،الحديث:٨٧٦٤،ج٩،ص١٥٢.

3.....المعجم الكبير،الحديث:٨٧٦٥،ج٩،ص١٥٢.

www.dawateislami.net

4 बातों का हल्फ़िया बयान :

﴾444﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "मैं 3 बातों पर क़सम उठाता हूं और चौथी बात पर अगर क़सम उठा लूं तो उस में भी सच्चा होऊंगा। वोह येह हैं (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसलमान और काफ़िर को बराबर न रखेगा (2) जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या में कोई ने'मत अ़ता नहीं फ़रमाता उसे आख़िरत में अ़ता फ़रमाएगा (3) बन्दे का ह़श्र उसी के साथ होगा जिस से वोह मह़ब्बत करता है (4) और चौथी बात जिस पर मैं क़सम उठाता हूं वोह येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या में जिस बन्दे की पर्दापोशी फ़रमाता है आख़िरत में भी उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा।"(1)

﴾445﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत हर शख़्स येह तमन्ना करेगा कि काश ! मैं दुन्या में ब क़दरे ज़रूरत ही खाता और जिस का दिल शको शुबा से पाक हो तो दुन्या में सुब्ह़ो शाम उस के लिये कोई नुक़्सान नहीं और मुंह में अंगारा ले लेना इस से बेहतर है कि आदमी उस बात के न होने की तमन्ना करे जिस के होने का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़ैसला फ़रमा दिया हो।"(2)

हर दिन में बारह साअ़तें :

﴾446﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** या **उ़बैदुल्लाह** बिन मिकरज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : बेशक तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ के हां ! दिन रात नहीं, ज़मीनो आस्मान का नूर उसी के नूर से है। उस के हां तुम्हारे दिनों के ए'तिबार से हर दिन बारह साअ़तों पर मुश्तमिल है। जब उस की बारगाह में तुम्हारे आ'माल पेश किये जाते हैं तो वोह तीन साअ़तें उन पर नज़र फ़रमाता है। अ़र्श उठाने वाले, अ़र्श के गिर्द रहने वाले और मुक़र्रबीन फ़िरिश्ते उस की तस्बीह़ बयान करते हैं। फिर रह़मान عَزَّوَجَلَّ तीन साअ़तें नज़रे रह़मत फ़रमाता है ह़त्ता कि रह़मत से भर जाता है तो येह छे साअ़तें हुईं फिर तीन साअ़तें अरह़ाम में नज़र फ़रमाता है, जिस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने मजीद में उस का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ......جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق، باب المرء مع من أحب،الحديث: ٢٠٤٨٦، ج١٠، ص٢٠٣

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابن مسعود، الحديث:٥٢، ج٨، ص ١٦٥۔

الزهدللامام احمد بن حنبل، باب فی فضل ابی هريرة، الحديث:٨٤٥، ص١٧٧۔

www.dawateislami.net

يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ (پ۳،ال عمران:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे ।

और इरशाद फ़रमाया :

يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا (پ۲٥،الشوری:٤٩،٥٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिसे चाहे बेटियां अ़ता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे ।

येह नौ साअ़तें हुईं । फिर तीन साअ़तें रिज़्क़ के मुआ़मले में नज़र फ़रमाता है : इस बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ (پ۲٥،الشوری:١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रोज़ी वसीअ़ करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है ।

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۝ (پ۲۷،الرحمن:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उसे हर दिन एक काम है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! येह तुम्हारा मुआ़मला और तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की शान है ।"(1)

दुन्या की ख़ातिर आख़िरत को नुक़्सान न पहुंचाओ :

﴾447﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैल बिन शुर्ह़बील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "जो दुन्या (ह़ासिल करने) का इरादा करता है वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो आख़िरत संवारता है उस की दुन्या को नुक़्सान पहुंचता है । तो ऐ लोगो ! हमेशा रहने और कभी न ख़त्म होने वाली आख़िरत की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिये नापाएदार व जल्द ख़त्म हो जाने वाली दुन्या की ज़िन्दगी के नुक़्सान की परवाह न करो ।"(2)

1 ......المعجم الكبير ،الحديث:٨٨٨٦،ج٩،ص١٧٩ .

2 ......المصنف لابن ابی شيبة ،كتاب الزهد ،كلام ابن مسعود ،الحديث:٤، ج٨، ص١٥٨ .

www.dawateislami.net

﴾448﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बजली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि "जिस ने दुन्या में लोगों को दिखाने के लिये अ़मल किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे सब के सामने रुस्वा करेगा और जो शोहरत का ख़्वाहां होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे ज़लील करेगा और जो ब सबबे तकब्बुर बड़ाई चाहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मर्तबा घटा देगा और जो आ़जिज़ी इख़्तियार करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा।"[1]

41 सुन्हरे फ़रामीने आ़लीशान :

﴾449﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक सब से सच्ची किताब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब (या'नी कुरआने मजीद) है। सब से मज़बूत़ रस्सी तक़्वा व परहेज़गारी की बातें हैं। बेहतरीन मिल्लत, मिल्लते इब्राहीमी है। सब से अच्छा त़रीक़ा, त़रीक़ए मुह़म्मदी है। बेहतरीन रहनुमाई अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की है। अफ़्ज़ल तरीन ज़िक्र, ज़िक्रे इलाही है। बेहतरीन वाक़िआ़त कुरआने पाक के हैं। बेहतरीन उमूर वोह हैं जिन का अन्जाम अच्छा हो और बुरे उमूर वोह हैं जिन का शरीअ़त से कोई तअ़ल्लुक़ न हो। थोड़ा माल जो किफ़ायत करे उस कसीर से बेहतर है जो ग़फ़्लत में मुब्तला कर दे। नफ़्स को गुनाहों से पाक रखना बुलन्दिये दरजात का बाइ़स है। मौत के वक़्त की मलामत सब से बुरी मलामत है। क़ियामत की रुस्वाई बदतरीन रुस्वाई है। हिदायत मिलने के बा'द गुमराह हो जाना सब से बदतर गुमराही है। बेहतरीन ग़िना दिल का लोगों की त़रफ़ से बे परवाह होना है। बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा व परहेज़गारी है। दिल में इल्क़ा की जाने वाली सब से बेहतरीन चीज़ यक़ीन और शक कुफ़्र में से है। दिल का अन्धा होना सब से बुरा अन्धापन है। शराबनोशी सब गुनाहों की जड़ है। औ़रतें शैत़ान की रस्सियां है। जवानी जुनून का एक शो'बा है। नौह़ा करना ज़मानए जाहिलिय्यत के कामों में से है। बा'ज़ लोग जुमुआ़ में ताख़ीर से ह़ाज़िर होते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र बहुत कम करते हैं। झूट सब से बड़ा गुनाह है। मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ और उस से (ह़लाल समझ के) क़िताल करना कुफ़्र है। मुसलमान के माल की हुर्मत उस के ख़ून की हुर्मत की त़रह है।

[1] الزھد لابن المبارک، ما رواہ نعیم بن حماد فی نسختہ زائدا، باب حسن السریرۃ، الحدیث:٧٤،ص١٨،مفھومًا.

www.dawateislami.net

जो लोगों को मुआफ़ करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मुआफ़ फ़रमाता है। जो गुस्सा पी लेता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अज्र अ़ता फ़रमाता है। जो लोगों को अपने हुक़ूक़ बख़्श देता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की बख़्शिश फ़रमा देता है। जो तकालीफ़ पर सब्र करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अच्छा बदला अ़ता फ़रमाता है। सब कमाइयों से बुरी सूद की कमाई है। सब से बुरा खाना यतीम का माल है। खुश बख़्त वोह है जो दूसरों से नसीह़त ह़ासिल करे और बद बख़्त वोह है जो मां के पेट ही से बद बख़्त लिख दिया गया हो। तुम्हें इतना माल काफ़ी है जितने पर तुम्हारा नफ़्स क़नाअ़त करे। बेशक इन्सान चार गज़ के ठिकाने (या'नी क़ब्र) की त़रफ़ जा रहा है और अस्ल ज़िन्दगी तो आख़िरत ही की है। आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है। सब से बदतर रिवायत झूटी रिवायत है। शुहदा की मौत बेहतरीन मौत है। जो मुसीबत व आज़्माइश को पहचानता है उस पर सब्र करता है और जो नहीं पहचानता वावेला करता और शोर मचाता है। जो तकब्बुर करता है ज़िल्लत उठाता है। जो दुन्या का वाली बनने जाता है आ़जिज़ आ जाता है। जो शैत़ान की मानता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में मुब्तला हो जाता है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यक़्ज़ान अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कामिल ईमान और पुख़्ता यक़ीन के ह़ामिल थे। इम्तिह़ान व आज़्माइश में साबित क़दम और तकालीफ़ो मसाइब पर साबिरो शाकिर रहते। त़ाअ़ात व इ़बादात में पहल करते। हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में सरकशों से जिहाद करने में पेश पेश रहते थे और मरते दम तक बाग़ियों की सरकोबी करते रहे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िरी का शरफ़ पाते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुशी का इज़्हार फ़रमाते और बिशारतों से नवाज़ते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुन्यवी ज़ेबो आराइश को तर्क करने, नफ़्स को ज़ेर करने, दीन के मददगारों व ह़ामियों को बुलन्द करने और इमामे हुदा की इत्तिबाअ़ करने वाले बदरी सह़ाबी हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया और वहां के लोगों को येह लिख कर भेजा कि येह हु़ज़ूर नबिय्ये

(1) المصنف لابن ابی شیبة ،کتاب الزھد، کلام ابن مسعود ، الحدیث:۳۷،ج۸،ص۱۶۲،بتغیر.

www.dawateislami.net

अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबा में अपनी ज़ातो सिफ़ात के ए'तिबार से मुमताज़ हैसिय्यत के हामिल हैं और इन का शुमार उन 4 सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में होता है कि खुद जन्नत जिन की मुश्ताक़ है। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक जन्नत की अबदी ने'मतों को पाने के लिये कोशां रहे यहां तक कि अपने अहबाब या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से जा मिले।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "उख़रवी ने'मतों के हुसूल की ख़ातिर मसाइब बरदाश्त करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

ईमाने कामिल की बिशारत :

﴾450﴿.....हज़रते सय्यिदुना हानी बिन हानी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में हाज़िर थे कि हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तशरीफ़ लाए तो अमीरुल मोमिनीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मुबारक हो पाक और पाकीज़ा शख़्स को।" फिर फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "अ़म्मार बिन यासिर (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) हल्क़ तक ईमान के नूर से भरे हुवे हैं।"(1)

﴾451﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया : "बेशक अ़म्मार बिन यासिर (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) सर से पाउं तक ईमान से भरे हुवे हैं।"(2)

जन्नत की ख़ुश ख़बरी :

﴾452﴿.....अमीरुल मोनिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : एक मरतबा वादिये बत़्हा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरी मुलाक़ात हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ अपने दस्ते अक़्दस में ले लिया फिर मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ चलने लगा यहां तक कि हज़रते अ़म्मार और उन की वालिदा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के पास से

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب فضل عمار بن ياسر، الحديث:١٤٧، ص٢٤٨٦.

2 ......صفة الصفوة، الرقم٢٧عمار بن ياسر بن عمار بن مالك، ج١، ص٢٣١.

www.dawateislami.net

गुज़र हुवा। चूंकि, उन दिनों उन्हें ईमान लाने की वज्ह से बहुत सताया जाता था इस लिये हुज़ूर नबिय्ये रह्मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इरशाद फ़रमाया : "ऐ आले यासिर ! सब्र करो ! बेशक तुम्हारा ठिकाना जन्नत है।"(1)

इस्लाम के अव्वलीन मुबल्लिग़ीन :

﴾453﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "सब से पहले जिन्हों ने दीने इस्लाम की दा'वत को आ़म किया, वोह येह 7 शख़्सिय्यात हैं : (1) हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (2) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (3) हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब (4) हज़रते सय्यिदुना सुहैब (5) हज़रते सय्यिदुना बिलाल (6) हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार (7) हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मार सुमय्या (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)"

हुज़ूर नबिय्ये रह्मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त का ज़रीआ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चचा अबू त़ालिब बना और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की हिफ़ाज़त उन के क़बीले के लोगों ने की जब कि बक़िय्या अफ़राद को कुफ़्फ़ार लोहे की ज़िरहें पहनाते और कड़ी धूप में डाल देते। जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा उन्हों ने यूं ही सूरज और लोहे की गर्मी की तकालीफ़ उठाईं। जब शाम होती तो अबू जह्ल बरछी ले कर आता, उन मुअ़ज़्ज़ज़ हज़रात को गालियां बकता और बरछी के ज़रीए तकालीफ़ पहुंचाता।"(2)

﴾454﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पोते अबू उ़बैदा बिन मुहम्मद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को अपने मा'बूदों की ता'रीफ़ करने पर मजबूर किया। जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास तशरीफ़ लाए तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या मुआ़मला पेश आया ?" उन्हों ने बताया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बहुत बुरा मुआ़मला पेश आया, उन्हों ने मुझे उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ नहीं लाए और मुझे अपने बातिल मा'बूदों की ता'रीफ़ करने पर भी मजबूर किया। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार

---

1 ......مسند الحارث، كتاب المناقب، باب فضل عمار بن ياسر، الحديث: ١٠١٦، ج٢، ص٩٢٣.

2 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب التاريخ، باب كتاب التاريخ، الحديث: ١٣، ج٨، ص٤٢، بتغير.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : ''तुम अपनी दिली कैफ़िय्यत को कैसा पाते हो ?'' अ़र्ज़ की : ''मैं अपने दिल को ईमान पर मुत़मइन पाता हूं।'' तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर मुशरिकीन दोबारा मजबूर करें तो तुम्हें ऐसा करने की इजाज़त है।''(1)

पाकीज़ा शख़्स :

﴾455﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने की इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''इसे इजाज़त दो, मुबारक हो ऐ पाक और पाकीज़ा शख़्स।''(2)

﴾456﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआने पाक की कभी एक सूरत का कुछ ह़िस्सा याद करते तो कभी दूसरी सूरत का। जब येह बात हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बताई गई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़जरते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम कभी एक सूरत से और कभी दूसरी सूरत से क्यूं याद करते हो ?'' ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी सुना है कि मैं ने कुरआन के साथ ग़ैरे कुरआन को मिला दिया है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''नहीं।'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''येह सारे का सारा उ़म्दा व पाकीज़ा है।''(3)

कामिलुल ईमान बनाने वाले आ'माल :

﴾457﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''तीन आ़दतें ऐसी हैं कि जिस ने इन्हें इख़्तियार कर लिया उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के किसी रफ़ीक़ ने दरयाफ़्त किया कि ऐ अबू यक़्ज़ान ! (येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) वोह कौन सी आ़दात हैं जिन की निस्बत आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि

---

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم ٤٥ عمار بن یاسر، ج٣، ص١٨٩.

2 ......جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب عماربن یاسر، الحدیث:٣٧٩٨، ص٢٠٤٢.

3 ......المسند للامام احمدبن حنبل، مسند علی بن ابی طالب، الحدیث:٨٦٥، ج١، ص٢٣٣.

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने अपने अन्दर येह आ़दतें इकठ्ठी कर लीं उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया।" फ़रमाया : "तंगी के वक़्त राहे ख़ुदा में ख़र्च करना, अपने नफ़्स से इन्साफ़ करना और आ़लिमे दीन को सलाम करना।"(1)

गुलामाने मुस्त़फ़ा की सादगी :

﴾458﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم गज़्वए अ़शीरह में एक दूसरे के रफ़ीक़ थे। एक जगह हम खजूर के दरख़्त के नीचे मिट्टी पर सो गए तो रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को अपने क़दम मुबारक से बेदार फ़रमाया जब कि हमारे जिस्म मिट्टी से आलूदा हो चुके थे।"(2)

ह़क़ीक़ी हिजरत करने वाले :

﴾459﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : दो शख़्स ह़म्माम से तेल लगाए हुवे बाहर निकले तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की उन से मुलाक़ात हुई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम कौन हो ?" बोले : हम हिजरत करने वालों में से हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम झूट बोलते हो, ह़क़ीक़ी हिजरत करने वाले तो ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"(3)

नबिय्ये गै़बदान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गै़बी ख़बर :

﴾460﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी और मैसरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दूध पेश किया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पीने के बा'द फ़रमाया : "रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दी हुई गै़बी ख़बर के मुत़ाबिक़ येह मेरी ज़िन्दगी का आख़िरी मशरूब है।" येह कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب اِفْشاء السلام من الاسلام، ص ٤ .

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث عمار بن یاسر ، الحدیث: ١٨٣٤٩، ج٦، ص ٣٦٥، مفهومًا .

3 ......المصنف لعبد الرزاق، کتاب الطهارة، باب الحمام للرجال، الحدیث: ١١٢٣، ج١، ص ٢٢٥ .

www.dawateislami.net

अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़िताल में मसरूफ़ हो गए यहां तक कि जामे शहादत नोश फ़रमा गए ।"[1]

﴾461﴿.....सहा़बिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान दुअली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मशरूब मंगवाया तो एक प्याले में दूध पेश किया गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पी कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान ह़क़ है, मैं आज अपने आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहा़बा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से जा मिलूंगा क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान के मुत़ाबिक़ मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी ग़िज़ा दूध है ।" फिर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर दुश्मन हमें शिकस्त दे कर मक़ामे हजर की चोटियों तक भी धकेल दे फिर भी हमें यक़ीन है कि हम ह़क़ पर और वोह बात़िल पर हैं ।"[2]

﴾462﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह तुम्हारे साथ एक ऐसे मा'रिके में शरीक होंगे जिस का अज्र बहुत ज़ियादा होगा और उस का तज़्किरा ब कसरत होगा और उस की ता'रीफ़ करना अच्छा है ।"[3]

रिज़ाए इलाही के लिये लड़ने वाले :

﴾463﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किसी को नहीं जानता जो (जंगे सिफ़्फ़ीन) में रिज़ाए इलाही और यौमे आख़िरत के लिये लड़ा हो ।"[4]

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث عمار بن ياسر، الحديث:١٨٩٠٢،ج٦،ص٤٨٠۔
المسندلابی يعلى الموصلی ،مسند عمار بن ياسر ، الحديث:١٦٢٢،ج٢،ص١٢٨.

2 ......صفة الصفوة ، الرقم٢٧عمار بن ياسر بن عمار بن مالك ،ج١،ص٢٣١.

3 ......المسندلابی يعلى الموصلی، مسند الحسين بن على بن ابی طالب ، الحديث:٦٧٣٩،ج٦،ص٣٠،مفهومًا.

4 ......التاريخ الصغير للبخاری ، ذكر من مات بعدعثمان......الخ،الحديث:٣٣١،ج١، ص٨٣، بتغيرٍ.

www.dawateislami.net

जन्नत 4 सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुश्ताक़ है :

﴾464﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत 4 अफ़राद की मुश्ताक़ है । (1) ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर (2) ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा (3) ह़ज़रते सलमान फ़ारसी और (4) ह़ज़रते मिक़्दाद (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) ।"[1]

﴾465﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन सुवैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शिकायत की । जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की ख़बर मिली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर वोह झूटा है तो उसे दोनों घाटियों के दरमियान रौंद डाल और उस के लिये दुन्या कुशादा फ़रमा ।"[2]

﴾466﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ज़ियादा ख़ामोश रहते और अक्सर ग़मज़दा व अफ़्सुर्दा रहते और फ़ितनों से अक्सर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते ।"[3]

﴾467﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू हुज़ैल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना घर बनवाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि मेरा घर देखिये । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घर देख कर फ़रमाया : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़्बूत़ घर ता'मीर करवाया और लम्बी उम्मीद बांधी लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तो अ़न क़रीब इस दुन्या से रुख़्सत हो जाना है ।"[4]

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٦٠٤٥، ج٦، ص٢١٥ .

2 ......المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الادب، باب من کرہ اَنْ یّوطأ عقبه ، الحدیث:٣، ج٦، ص ١٤٨ ۔
الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم٥٤ عمار بن یاسر، ج٣، ص ١٩٤ .

3 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الهَمّ والحُزْن، الحدیث:٣٤، ج٣، ص٢٦٨ ۔
الطبقات الکبری لابن سعد ،الرقم٥٤ عماربن یاسر، ج٣، ص١٩٤ .

4 ......الزهد لابی داود، باب من خبر عمار، الحدیث:٢٦٣، ج١، ص٢٨٣ .

www.dawateislami.net

रिज़ाए इलाही के मुतलाशी :

﴾468﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक रोज़ दरयाए फ़ुरात के किनारे चलते हुवे यूं अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर मुझे पता चल जाए कि मेरे गिर कर हलाक होने से तू मुझ से राज़ी होगा तो मैं येह भी कर गुज़रूं और अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि इस पानी में ग़र्क़ होना तेरी रिज़ा का सबब है तो मैं ऐसा करने के लिये भी तय्यार हूं।"(1)

हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बनी ज़ोहरा के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ख़ुशी इस्लाम क़बूल करने वाले, तकालीफ़ व आज़माइश की भट्टी से गुज़रने वाले, ब रिज़ा व रग़बत हिजरत करने वाले हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुजाहिद बन कर ज़िन्दगी बसर की और इस्लाम की ख़ातिर पेश आने वाले मसाइब को सब्रो शुक्र से बरदाश्त किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार आहो ज़ारी करने और ब कसरत रोने वालों में होता है और जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को माले ग़नीमत से हिस्सा दिया जाता तो ग़मगीन हो जाते। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ुक़रा मुहाजिरीन व साबिक़ीन में से हैं और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ब कसरत हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत में बैठते और उन्स हासिल करते। आप और आप के रुफ़क़ा رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ (پ۷،الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह और शाम।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से उन्स हासिल करते और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत व सोहबत में कसरत से बैठते थे।

1 ......الزہد للامام احمد بن حنبل، زہد علی بن الحسین، الحدیث:۹۸۵، ص۱۹۶.

www.dawateislami.net

﴾469﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्दूस ग़त़फ़ानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाने में छटे नम्बर पर हैं, आप के लिये इस्लाम का छटा हिस्सा है।''(1)

﴾470﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मा'दी करब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में सूरए शुअ़रा के बारे में पूछने आए तो फ़रमाया : ''मुझे इस का इ़ल्म नहीं, तुम ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछ लो कि उन्हों ने इसे हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुन कर याद रखा है।''(2)

राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरों की तकालीफ़ :

﴾471﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अव्वलीन मुहाजिरीन और राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करने वालों में से हैं।(3)

﴾472﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शा'बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशरिकीन की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ के बारे में पूछा तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (भी चूंकि वहां मौजूद थे उन्हों) ने अ़र्ज़ की : ''या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मेरी पीठ देखें।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा तो फ़रमाया : ''मैं ने आज तक ऐसी पीठ नहीं देखी।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''कुफ़्फ़ार मेरे लिये आग भड़काते (फिर मुझे बरहना पीठ उस पर लिटाते) तो आग को मेरी पुश्त की चरबी ही बुझाती थी।''(4)

﴾473﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : एक मरतबा हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कम्बल ओढ़े ख़ानए का'बा के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे। हम ने मुशरिकीन की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिकायत

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب التاریخ، باب کتاب التاریخ، الحدیث:١٦، ج٨، ص٤٣.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٣٦١٤، ج٤، ص٥٥.

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب المغازی، باب اسلام ابی بکر، الحدیث:٨، ج٨، ص٤٤٨.

4 ......الإستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، الرقم٦٤٦ خباب بن الارت، ج٢، ص٢٢.

www.dawateislami.net

करते हुवे अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से क्यूं दुआ़ नहीं फ़रमाते और क्यूं मदद त़लब नहीं फ़रमाते ?" येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक सुर्ख़ हो गया फिर इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम से पहले के मुसलमानों में से किसी के बदन के दो टुकड़े कर दिये जाते तो किसी का लोहे की कंघी से गोश्त उधेड़ा जाता था लेकिन इस के बा वुजूद वोह दीन से न फिरते ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस दीन पर चलने वालों के लिये ऐसा अम्न क़ाइम फ़रमाएगा कि तुम में से कोई सुवार सन्आ़ से ह़ज़्रमौत तक सफ़र करेगा और उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी का ख़ौफ़ न होगा और भेड़िया बकरियों की निगहबानी करेगा लेकिन तुम लोग जल्द बाज़ हो ।"(1)

﴾474﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि "मुशरिकीन मुसलमानों को शदीद तकालीफ़ से दो चार कर के अपनी पसन्द की बातें कहलवा लेते थे लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गर्म पथ्थर पर लिटाने के बा वुजूद उन के मुंह से अपनी पसन्द की एक बात भी नहीं सुन पाते थे ।"(2)

मौत की तमन्ना करना कैसा ?

﴾475﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन मुज़र्रिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : एक दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जिस्म जगह जगह से दाग़ा हुवा है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो मसाइब मुझे पहुंचे मैं नहीं जानता कि वोह किसी दूसरे को भी पहुंचे हों । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर में मेरे पास एक दिरहम भी न था और आज मेरे घर में 40 हज़ार दिरहम मौजूद हैं । अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मौत की तमन्ना करने से मन्अ़ न फ़रमाया होता तो मैं ज़रूर मौत की तमन्ना करता ।"(3)

﴾476﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन मुज़र्रिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पेट पर 7 जगह

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب المناقب،باب علامات النبوۃ فی الاسلام ، الحدیث: ۳۶۱۲،ص ۲۹٤،مفھومًا.

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۳٦۹٤،ج٤،ص۷۷،مفھومًا.

3 ......مسند ابی داود الطیالسی،خباب بن الارت،الحدیث:۱۰۵۳،ص۱٤۱.

www.dawateislami.net

दाग़ने के निशान हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद न फ़रमाया होता कि "तुम में से कोई भी हरगिज़ मौत की तमन्ना न करे।" तो मैं ज़रूर मौत की तमन्ना करता। किसी ने अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत और बारगाह में ह़ाज़िरी का कुछ तज़्किरा फ़रमा दें !" तो फ़रमाया : "मैं इस बात से डरता हूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होऊं (या'नी तज़्किरा करते हुवे) और मेरे पास येह 40 हज़ार दिरहम भी हों।"(1)

﴾477﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन मुज़र्रिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जिस्म 7 जगहों से दाग़ा हुवा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह इरशाद न फ़रमाते कि "तुम में से कोई भी हरगिज़ मौत की तमन्ना न करे।" तो मैं ज़रूर मौत की तमन्ना करता।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन आदम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत में इतना ज़ाइद है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में मेरी येह ह़ालत थी कि मेरे पास एक दिरहम भी न होता था और अब मेरे घर में 40 हज़ार दिरहम हैं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कफ़न लाया गया तो उसे देख कर रो पड़े और फ़रमाया : "सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कफ़न के लिये एक धारीदार चादर थी। जब उस के साथ सर ढांका जाता तो पाउं ज़ाहिर हो जाते और जब पाउं पर डाली जाती तो सर ख़ाली रह जाता फिर वोह चादर उन के सर पर डाली गई और क़दमों पर घास रखी गई।"(3)

﴾478﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास उन के मरज़े मौत में ह़ाज़िर हुवे तो उन्हों ने फ़रमाया : "इस ताबूत में 80 हज़ार दिरहम हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने न तो इन्हें धागे से सिया है और न ही किसी साइल को मह़रूम रखा है।"

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٣٦٧٢،ج٤،ص٧١،دون قولہ وقال بعضھم......فی البیت.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٣٦٧٢،ج٤،ص٧١.

3 ......المسند للامام احمد حنبل، حدیث خباب بن الارت ،الحدیث:٢١١٢٩، ج٧،ص٤٥٤.

www.dawateislami.net

फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रो पड़े। हम ने रोने की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : "मैं इस लिये रोता हूं कि मेरे रुफ़क़ा चले गए और दुन्या उन्हें कोई नुक़्सान न पहुंचा सकी जब कि हम ज़िन्दा हैं और इन दराहिम के लिये मिट्टी के सिवा कोई जगह नहीं पाते।"

अबू उसामा हज़रते इदरीस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से नक़्ल करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं पसन्द करता हूं कि येह दराहिम मेंगनियां या कुछ और होते।"(1)

﴾479﴿.....हज़रते सय्यिदुना तारिक़ बिन शिहाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَهَّاب से मरवी है कि चन्द सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इयादत के लिये तशरीफ़ लाए और कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! (येह हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) ख़ुश हो जाइये ! अ़न क़रीब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने रुफ़क़ा से मिलने वाले हैं।" (येह सुन कर) आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने और फ़रमाने लगे : "मुझे मरने का ग़म नहीं बल्कि तुम ने मेरे सामने उन लोगों का तज़्किरा किया और मुझे उन का भाई कहा है जो अपना पूरा पूरा अज्र ले चुके और मैं ख़ौफ़ज़दा हूं कि कहीं मुझे मेरे आ'माल का अज्रो सवाब दुन्या ही में न दे दिया गया हो।"(2)

﴾480﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी हाज़िम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो देखा कि उन का जिस्म सात जगहों से दाग़ा हुवा है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ क़ैस ! अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें मौत की दुआ़ करने से मन्अ़ न फ़रमाते तो मैं ज़रूर मरने की दुआ़ करता।"(3)(4)

1.....المعجم الكبير،الحديث:٣٦٦٦/٣٦٦٧،ج٤،ص٧٠۔
المصنف لابن ابی شيبة ،كتاب الزهد،باب ما قالوا فی البكاء......الخ،الحديث:١٠،ج٨،ص٢٩٧.

2.....الطبقات الكبرى لابن سعد ،الرقم٤٣ خباب بن الارت ،ج٣،ص١٢٤.

3.....صحيح البخاری،كتاب الدعوات،باب الدعاء بالموت و الحياة،الحديث:٦٣٤٩،ص٥٣٤.

4.....मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی "मिरआतुल मनाजीह" में फ़रमाते हैं : "मौत की आरज़ू अच्छी भी है और बुरी भी, अगर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार के लिये या दुन्यवी फ़ितनों से बचने के लिये मौत की तमन्ना करता है तो अच्छा है और अगर दुन्यवी तकालीफ़ से घबरा कर तमन्नाए मौत करे तो बुरा, मौत की याद बेहतरीन इबादत है ख़ुसूसन जब इस के साथ तय्यारिये मौत हो। ख़याल रहे कि येह कहना जाइज़ है : ख़ुदाया ! मुझे शहादत की मौत दे, ख़ुदाया ! मुझे मदीनए पाक में मौत नसीब कर। चुनान्चे, (**बक़िय्या हिस्सा अगले सफ़हा पर.....**)

www.dawateislami.net

﴾481﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : "हम हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इयादत के लिये हाज़िर हुवे तो देखा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पेट सात जगहों से दाग़ा हुवा है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मरने की दुआ़ करने से मन्अ़ न फ़रमाया होता तो मैं ज़रूर करता।" फिर फ़रमाया : "हम से पहले गुज़रने वालों ने दुन्या से कुछ न लिया (या'नी दुन्यवी मालो अस्बाब जम्अ़ न किये) जब कि हमारे पास इतना दुन्यवी माल है कि हमें समझ नहीं पड़ती कि इसे कहां ख़र्च करें सिवाए इस के कि मिट्टी में मिला दें और मुसलमान को मिट्टी में ख़र्च करने के सिवा हर जगह ख़र्च करने का अज्र मिलता है (मिट्टी में ख़र्च करने से फ़ुज़ूल ता'मीरात वग़ैरा में ख़र्च करना मुराद है)।"(1)

मसाकीन सहाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान में क़ुरआनी आयात :

﴾482﴿.....हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार, हज़रते सय्यिदुना बिलाल और मुझ समेत दीगर ग़रीब मोमिनीन رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के झुरमुट में तशरीफ़ फ़रमा थे कि अक़रअ़ बिन हाबिस तमीमी और उ़यैना बिन हिस्न फ़ज़ारी हाज़िरे ख़िदमत हुवे। बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में मौजूद उन ग़रीब सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को हक़ारत से देखते हुवे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़लाहिदगी में मिलने को कहा और अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में हम अ़रब के वफ़्द हाज़िर होते हैं और हमें इन ग़ुलामों के साथ बैठना गवारा नहीं है। इस से हमें हया आती है। लिहाज़ा जब हम हाज़िरे ख़िदमत हों तो इन्हें अपने पास से उठा दिया करें।" हुज़ूर

........(अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना) उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने दुआ़ की थी कि मौला (عَزَّوَجَلَّ) मुझे अपने हबीब (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के शहर में शहादत नसीब कर। (उम्मुल मोमिनीन) हज़रते (सय्यिदतुना) ह़फ़्सा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने अ़र्ज़ किया : येह कैसे हो सकेगा तो आप (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ऐसे ही होगा। चुनान्चे, मस्जिदे नबवी मेह़राबुन्नबी नमाज़ की ह़ालत में मुसल्लाए मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर आप (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) को काफ़िर मजूसी अबू लूअ लूअ ने शहीद किया, दुआ़ क्या थी कमान से निकला हुवा तीर था कि जो कहा था वोही हुवा, क्यूं न हो रब (عَزَّوَجَلَّ) की येह मानते हैं रब (عَزَّوَجَلَّ) इन की मानता है। (मिरआतुल मनाजीह़, बाब तमन्नियुल मौत व ज़िक्र, जि. 2, स. 436)

1 ......مسند الحمیدی، مسند خباب بن الارت، الحدیث:۱۵۴، ص۸۳.

www.dawateislami.net

सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ठीक है।" फिर उन्हों ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे लिये अपने ज़िम्मे एक मुआ़हदा लिख दें।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सह़ीफ़ा मंगवाया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को लिखने के लिये बुलवाया जब कि हम एक कोने में बैठे हुवे थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह वह़्य ले कर ह़ाज़िर हुवे :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّہُمْ بِالْغَدٰوۃِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْہَہٗ ؕ مَا عَلَیْکَ مِنْ حِسَابِہِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِکَ عَلَیْہِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَہُمْ فَتَکُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۲﴾ وَکَذٰلِکَ فَتَنَّا بَعْضَہُمْ بِبَعْضٍ لِّیَقُوْلُوْۤا اَہٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰہُ عَلَیْہِمْ مِّنْۢ بَیْنِنَا ؕ اَلَیْسَ اللّٰہُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰکِرِیْنَ ﴿۵۳﴾ وَاِذَا جَآءَکَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا

(پ٨،الانعام:٥٢تا٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बई़द है और यूंही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मोह़ताज मुसलमानों को देख कर कहें क्या येह हैं जिन पर अल्लाह ने एह़सान किया हम में से, क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को और जब तुम्हारे ह़ुज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।*

चुनान्चे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह सह़ीफ़ा फेंक दिया और हमें अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने का फ़रमाया। जब हम ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "तुम पर सलामती हो।" फिर हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़दर क़रीब हुवे कि हमारे घुटने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक घुटनों से मिल गए। इस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे साथ बैठने लगे। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठने का इरादा फ़रमाते तो हमें छोड़ कर खड़े हो जाते। इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

www.dawateislami.net

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ (پ۱۵،الکھف:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्हो शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें।*

हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि "इस के बा'द हम हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बैठने का शरफ़ पाते थे और जब हम जान लेते कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठना चाहते हैं, तो हम आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले ही उठ जाते यूं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे उठने से पहले न उठते बल्कि हमेशा हमारे उठने का इन्तिज़ार फ़रमाते।"(1)

कूफ़ा में तदफ़ीन की वसिय्यत :

﴾483﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जंगे सिफ़्फ़ीन से वापसी पर हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के हमराह कूफ़ा के दरवाज़े पर पहुंचे तो हमें सात क़ब्रें नज़र आईं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह किन की क़ब्रें हैं ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिफ़्फ़ीन तशरीफ़ ले जाने के बा'द हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब वक़्ते वफ़ात येह वसिय्यत फ़रमाई थी कि उन्हें कूफ़ा की सर ज़मीन पर दफ़्न किया जाए।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ब्बाब पर रह़्म फ़रमाए ! कि वोह ब ख़ुशी इस्लाम लाए और ब रिज़ा व रग़बत हिजरत की और जिहाद करते हुवे ज़िन्दगी गुज़ारी और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम की ख़ातिर कई जिस्मानी तकालीफ़ का सामना किया। (याद रखो !) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक अ़मल करने वाले के अज्र को हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता।" फिर इरशाद फ़रमाया : "उस शख़्स के लिये खुश ख़बरी हो जो आख़िरत को याद रखे, ह़िसाब के लिये अ़मल करे, थोड़े पर क़नाअ़त करे और हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे।"(2)

---

(1)......المعجم الکبیر،الحدیث:۳۶۱۸،ج۴،ص۵۶.

(2)......سنن ابن ماجه، ابواب الزهد،باب مجالسة الفقراء،الحدیث:۴۱۲۷،ص۲۷۲۸.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना बिलाल हबशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तन्हाई में इबादत करने वाले, साहिबे फ़ज़्लो सख़ावत अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीने इस्लाम क़बूल करने की वज्ह से बहुत ज़ियादा सताया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ाज़िन थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत करते। नेकियों में पहल करते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर कामिल भरोसा और यक़ीन रखते थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं कि "मख़्लूक़ से उम्मीदें क़त्अ़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर कामिल भरोसा रखने का नाम तसव्वुफ़ है।"

﴾484﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हमारे सरदार हैं और उन्हों ने हमारे सरदार हज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को आज़ाद किया।"(1)

मुअज़्ज़िनीन के सरदार :

﴾485﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) एक अच्छे इन्सान और मुअज़्ज़िनीन (या'नी इज़्न देने वालों) के सरदार हैं।"(2)

सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस्तिक़ामत :

﴾486﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक दिन वरक़ा बिन नौफ़ल का गुज़र हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से हुवा जब कि उन्हें

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب بلال......لخ، الحدیث:٣٧٥٤، ص٣٠٥.

(2)......المعجم الکبیر، الحدیث:٥١١٩، ج٥، ص٢٠٩.

www.dawateislami.net

(इस्लाम लाने की वज्ह से) मारा जा रहा था और ऐसी हालत में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "اَحَدٌ، اَحَدٌ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है" की सदा लगा रहे थे। वरक़ा बिन नौफ़ल ने देखा तो कहा : "बिलाल ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही का नाम लिये जाओ।" फिर उमय्या बिन ख़लफ़ जो हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मार रहा था उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम इन्हें इस बात पर शहीद कर दोगे तो मैं इन्हें हनान[1] बनाऊंगा।"

फिर जब एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुज़र हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से हुवा और वोह लोग हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ येही बरताव कर रहे थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उमय्या बिन ख़लफ़ से फ़रमाया : "इस बेचारे के मुआमले में तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता। कब तक इसे तक्लीफ़ देता रहेगा ?" उमय्या ने कहा : "आप ने इसे बिगाड़ा है, आप इसे इस तक्लीफ़ से बचा लें जो आप देख रहे हैं।"

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया : "मैं बचा लेता हूं मेरे पास एक सियाह फ़ाम गुलाम है जो बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से ज़ियादा क़वी और ताक़तवर है और वोह तेरे ही (बातिल) दीन पर है, मैं वोह तुझे दे देता हूं और तुम इस के बदले में मुझे बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) दे दो।" उमय्या बोला : "मुझे मन्ज़ूर है।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उमय्या को अपना गुलाम दे दिया और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ले लिया और उन्हें आज़ाद कर दिया। फिर मक्कए मुअज़्ज़मा से हिजरत करने से पहले मज़ीद 6 गुलाम इस्लाम की शर्त पर आज़ाद फ़रमाए और हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन सब से पहले आज़ाद फ़रमाया।"

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इस्हाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق ने ज़िक्र किया कि हज़रते सय्यिदुना बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) क़बीलए बनी जुमह के गुलाम थे और उन का नाम बिलाल बिन रबाह है और उन की मां का नाम हमामा है और आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) इस्लाम में सच्चे और पाकीज़ा दिल

1.....साहिबे लिसानुल अ़रब ने येह हदीस नक़्ल की और "हनान" का मा'ना रहमत व बरकत बयान करने के बा'द लिखा कि वरक़ा बिन नौफ़ल की मुराद येह थी कि (अगर हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस वज्ह से फ़ौत हो गए तो) उन को रहमत व बरकत पाने की जगह (या'नी उन का मज़ार) बनाऊंगा (ताकि वहां से लोगों को बरकतें और रहमतें हासिल हों) जिस तरह पिछली उम्मतों के सालेहीन के मज़ारात से बरकात हासिल की जाती हैं। (लिसानुल अ़रब, जि. 1, स. 969)

www.dawateislami.net

वाले थे और दोपहर के वक़्त जब गर्मी ख़ूब ज़ोर पकड़ती तो उमय्या बिन ख़लफ़ उन्हें बाहर ला कर पीठ के बल मक्का के रैतिले मैदान में डाल देता फिर बड़ा पथ्थर लाने का हुक्म देता तो उन के सीने पर रख दिया जाता फिर कहता : ''तुम ऐसे ही पड़े रहोगे यहां तक कि मर जाओ या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से फिर जाओ और लात व उ़ज़्ज़ा (येह मुशरिकीन के दो बातिल मा'बूदों के नाम हैं) को पूजो।'' लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस सख़्त मुसीबत में गिरिफ़्तार होने के बा वुजूद ''اَحَد،اَحَد'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक है, की सदा लगाए जाते।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का एक नाम अ़तीक़ भी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़रीद कर आज़ाद करने, उन की तकालीफ़ और उन के रुफ़क़ा को आज़ाद करने के मुतअ़ल्लिक़ दर्जे ज़ैल अश्आ़र कहे :

جَزَی اللّٰهُ خَیْرًا عَنْ بِلَالٍ وَصَحْبِهٖ — عَتِیْقًا وَاَخْزٰی فَاكِهًا وَاَبَا جَهْل
عَشِیَّةَ هُمَا فِیْ بِلَالٍ بِسَوْءَةٍ — وَلَمْ یَحْذَرَا مَا یَحْذَرُ الْمَرْءُ ذُو الْعَقْل
بِتَوْحِیْدِهٖ رَبَّ الْاَنَامِ وَقَوْلُهٗ — شَهِدْتُّ بِاَنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ عَلٰی مَهْل
فَاِنْ یَّقْتُلُوْنِیْ یَقْتُلُوْنِیْ فَلَمْ اَكُنْ — لِاُشْرِكَ بِالرَّحْمٰنِ مِنْ خِیْفَةِ الْقَتْل
فَیَا رَبَّ اِبْرَاهِیْمَ وَالْعَبْدِ یُوْنُسَ — وَمُوْسٰی وَعِیْسٰی نَجِّنِیْ ثُمَّ لَا تُمْل
لِمَنْ ظَلَّ یَهْوِی الْغَیَّ مِنْ آلِ غَالِبٍ — عَلٰی غَیْرِ بِرٍّ كَانَ مِنْهُ وَلَا عَدْل

तर्जमा : (1).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल और उन के दोस्तों (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين) की त़रफ़ से अ़तीक़ (या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए और उमय्या और अबू जह्ल को रुस्वा करे।

(2).....वोह शाम याद करो जब उन दोनों बद बख़्तों (या'नी अबू जह्ल व उमय्या) ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) से इन्तिहाई सफ़्फ़ाकाना सुलूक किया और इस से न डरे जिस से अ़क़्लमन्द आदमी डर जाता है।

(3).....उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर इस लिये ज़ुल्म किया क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत का इक़रार किया और फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा रब है।

www.dawateislami.net

(4).....और (फ़रमाया :) अगर तुम मुझे क़त्ल करते हो तो कर दो मगर मैं इस के डर से रहमान عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क नहीं कर सकता।

(5-6).....ऐ हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, सय्यिदुना यूनुस, सय्यिदुना मूसा और सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे नजात अ़ता फ़रमा फिर उसे मोहलत न दे जो नाहक़ आले ग़ालिब (या'नी क़ुरैश वालों) की गुमराही की आरज़ू किये जाता है और उसे एह़सान व भलाई से कोई वासित़ा नहीं।(1)

﴾487﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कि "सब से पहले दीने इस्लाम का पैग़ाम आ़म करने वाली 7 शख़्सिय्यात हैं : (1) हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (2) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (3) हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (4) इन की वालिदा हज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (5) हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (6) हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और (7) हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के ज़रीए फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिफ़ाज़त का ज़रीआ़ इन की क़ौम को बनाया जब कि दीगर हज़रात को मुशरिकीन ने पकड़ कर लोहे की ज़िरहें पहनाईं और उन्हें सूरज की तपती धूप में डाल दिया। मुशरिकीन ने उन में से हर एक से जो चाहा कहलवाया लेकिन हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में अपनी जान की परवाह न की और जब मुशरिकीन पर इन का मुआ़मला मुश्किल हुवा तो उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बांध कर बच्चों के ह़वाले कर दिया जो इन्हें मक्का के गली कूचों में घसीटते फिरते लेकिन इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर اَحَد،اَحَد "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है, जारी रहता।"(2)

1.....السیرۃ النبویۃ لابن ہشام ، ذکرعدو ان المشرکین......الخ ، ص ۱۲۵۔
فضائل الصحابۃ للامام احمدبن حنبل، باب قولہ مروا ابابکر یصلی بالناس،الحدیث:۸۹،ج۱،ص ۱۲۰.

2.....المصنف لابن ابی شیبۃ ،کتاب الفضائل،باب فی بلال وفضلہ، الحدیث:۱،ج۷،ص۵۳۷.

www.dawateislami.net

﴾488﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़बशा की त़रफ़ हिजरत करने वालों में बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सब से पहले हैं।"(1)

﴾489﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह हौज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो मैं ने पूछा कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रोज़ाना का कितना ख़र्चा होता था ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास (ब ज़ाहिर) कोई चीज़ न थी। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिअ़्सत से ले कर विसाले ज़ाहिरी तक माली मुआ़मलात का ज़िम्मेदार था। चुनान्चे, जब कोई नौ मुस्लिम बे सरो सामानी की ह़ालत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे हुक्म फ़रमाते तो मैं क़र्ज़ ले कर उस के लिबास और खाने वग़ैरा का बन्दोबस्त करता।"(2)

फ़क़्र की अहम्मिय्यत व तरग़ीब का बयान

﴾490﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए, उन के पास खजूरों का एक टोकरा रखा हुवा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! येह किस के लिये है ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह मैं ने आप और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मेहमानों के लिये जम्अ़ कर रखा है।" इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! क्या तुम जहन्नम के धुवें से नहीं डरते ? ख़र्च करो और अ़र्श के मालिक عَزَّوَجَلَّ से तंगी व कमी का ख़ौफ़ न रखो।"(3)

﴾491﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! मालदारी के बजाए नादारी की ह़ालत में दुन्या से रुख़्सत होना।" मैं ने अ़र्ज़ की :

---

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب خير السودان ثلاثة، الحديث: ٥٢٩٤، ج٤، ص٣٢٩.

2 ......سنن ابی داود، كتاب الخراج، باب فی الامام يقبل هدايا المشركين، الحديث: ٣٠٥٥، ص١٤٥٣.

3 ......المعجم لكبير، الحديث: ١٠٢٠، ج١، ص ٣٤٠، الحديث: ١٠٣٠٠، ج١٠، ص١٥٥.

www.dawateislami.net

“या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मेरे लिये कैसे मुमकिन होगा ?” इरशाद फ़रमाया : “जो रिज़्क़ तुझे मिले उसे जम्अ़ न कर और जब कोई तुझ से सुवाल करे तो उसे महरूम न कर ।” मैं ने फिर अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मेरे लिये किस त़रह़ मुमकिन होगा ?” इरशाद फ़रमाया : “इसे इख़्तियार करो या फिर जहन्नम की आग को ।”(1)

﴾492﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “राहे ख़ुदा में जिस क़दर मुझे डराया-धमकाया गया इतना किसी को नहीं डराया गया और जितना मैं सताया गया उतना किसी और को नहीं सताया गया । ऐसे ह़ालात भी आए कि एक एक महीने तक मेरे और बिलाल के पास खाने के लिये कुछ न होता था सिवाए इतनी चीज़ के जो बिलाल की बग़ल में आ जाए ।”(2)

﴾493﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा और अपने आगे किसी के क़दमों की आहट सुनी । तो मैं ने पूछा : ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! “येह कौन है ?” उन्हों ने बताया : “येह ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) हैं ।”(3)

﴾494﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने जन्नत में अपने आगे क़दमों की आहट सुनी तो दरयाफ़्त किया : “येह कौन है ?” फ़िरिश्तों ने मुझे बताया कि “येह ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) हैं ।” जब ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : “ऐ बिलाल ! किस सबब से तुम जन्नत में मुझ से आगे आगे चल रहे थे ?” अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं हमेशा बा वुज़ू रहता हूं और जब भी वुज़ू करता हूं तो दो रक्अ़त नमाज़ (तह़िय्यतुल वुज़ू) पढ़ लेता हूं ।”(4)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۲۱،ج۱،ص۳٤۱.

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسند انس بن مالك بن النضر،الحدیث:۱٤۰۵۷،ج٤،ص۵۷۰.

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، مسندجابر بن عبد الله ،الحدیث:۱۵۰۰٦،ج۵،ص۱٦٦.

4 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الفضائل،باب فی بلال وفضله،الحدیث:۳،ج۷،ص۵۳۷.

www.dawateislami.net

﴾495﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पांच ऊक़िया (या'नी 200 दिरहम) के इवज़ ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद किया है तो मुझे इजाज़त दें कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल बजा लाऊं और अगर इस लिये आज़ाद किया है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से ख़िदमत लें तो मुझे अपना ख़ादिम बना लें।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रो पड़े और फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद किया है जाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल बजा लाओ।"(1)

﴾496﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (जिहाद के लिये) शाम जाने की तय्यारी की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! मेरा ख़याल है कि तुम हमें इस हाल में छोड़ कर न जाओ हम ने तुम्हें आज़ाद किया है इस लिये हमारे पास ही ठहरे रहो।" हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद किया है तो मुझे जाने दीजिये और अगर अपनी ज़ात के लिये आज़ाद किया है तो अपने पास रोक लीजिये।" चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें जाने की इजाज़त दे दी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम तशरीफ़ ले गए और वहीं वफ़ात पाई।"(2)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الفضائل، باب فی بلال وفضلہ، الحدیث:٤، ج٧، ص٥٣٨.

2 ......الجہاد لابن المبارک، الحدیث:١٠٢، ص٨٧.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले हिजरत करने वालों में से हैं। ब निय्यते सवाब लोगों को खाना खिलाते। राहे ख़ुदा में अपना माल ख़र्च करते, नफ़्स की मुख़ालफ़त करते, दीन की उ़म्दा समझ रखते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये जिहाद भी करते थे। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के अह़कामात को बजा लाने में जल्दी किया करते थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "फ़ुज़ूलिय्यात को तर्क कर के दीन पर अ़मल करने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात के लिये हर वक़्त तय्यार रहने का नाम तसव्वुफ़ है।"

परवानए शम्ए रिसालत :

﴾497﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जहां भी तशरीफ़ ले जाते मैं वहां ज़रूर ह़ाज़िर होता। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी कोई बैअ़त लेते मैं उस में भी ज़रूर शरीक होता और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो लश्कर भी जंग के लिये रवाना फ़रमाया मैं उस में भी शरीक रहा और जिस जंग में मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस शरीक होते मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहता। अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने की त़रफ़ से ह़म्ले का अन्देशा होता तो सामने आ जाता अगर पीछे से ख़त़रा होता तो पीछे हो जाता और मैं ने कभी भी हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने और दुश्मनों के दरमियान तन्हा नहीं छोड़ा ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाया।"(1)

सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान :

﴾498﴿.....हज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम,

---

(1)......المعجم الکبیر،الحدیث:۷۳۰۹،ج۸،ص۳۷.

www.dawateislami.net

शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हिजरत करने के लिये निकले तो कुरैश का एक गुरौह आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पीछे लग गया। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी सुवारी से उतरे और तरकश से तमाम तीर निकाल कर फ़रमाया : "ऐ गुरौहे कुरैश ! तुम जानते हो कि मैं तुम सब से ज़ियादा तीर अन्दाज़ी का माहिर हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम उस वक़्त तक मुझ तक नहीं पहुंच सकते जब तक मेरे तरकश में एक तीर भी बाक़ी है फिर मैं तल्वार से लड़ूंगा यहां तक कि मेरे हाथों में कुव्वत ख़त्म हो जाए। अब तुम्हारी मरज़ी है या तो मैं तुम्हें मक्का में अपने मालो दौलत के बारे में बता दूं तो तुम उस पर क़ब्ज़ा कर के मेरा रास्ता छोड़ दो। या मुझ से लड़ो।" लिहाज़ा कुफ़्फ़ार माल लेने पर राज़ी हो गए और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का रास्ता छोड़ दिया। जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में बारगाहे रिसालत عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू यह़्या ने नफ़्अ़ बख़्श तिजारत की, अबू यह़्या ने नफ़्अ़ बख़्श तिजारत की।" (अबू यह़्या, ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की कुन्यत है)

रावी बयान करते हैं कि फिर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ (پ۲،البقرة:۲۰۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कोई आदमी अपनी जान बेचता है अल्लाह की मरज़ी चाहने में।*(1)

ग़ैबी ख़बर :

﴾499﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हमराह मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं ने भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जाने का इरादा कर लिया लेकिन कुरैश के चन्द नौजवानों ने मेरा रस्ता रोक लिया। मैं सारी रात खड़ा रहा यहां तक कि लोग मुझ पर त़न्ज़ करते और कहते कि "इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पेट के दर्द में मुब्तला कर दिया है।" ह़ालांकि मुझे कोई तक्लीफ़ न थी। फिर

1......الطبقات الكبرى لابن سعد،الرقم ٤٨ صُهَيْب بن سِنَان ،ج٣،ص ١٧١ .

www.dawateislami.net

जब वोह मुझे छोड़ कर चले गए तो मैं भी जाने के लिये निकला लेकिन कुछ लोग मुझे वापस ले जाने के इरादे से दोबारा मेरी राह में हाइल हो गए। मैं ने उन से कहा : "मैं तुम्हें चन्द ऊक़िय्या सोना और दो क़ीमती जोड़े देता हूं जो मक्का में हैं तुम मुझ पर भरोसा कर के मेरा रास्ता छोड़ दो।" चुनान्चे, वोह लोग इस बात पर राज़ी हो गए तो मैं उन के साथ मक्का गया और उन्हें दरवाज़े की चौखट के नीचे जगह खोदने के लिये कहा। उस के नीचे से चन्द ऊक़िय्या सोना मिला। मैं ने वोह सोना उन्हें दे कर कहा कि "फ़ुलां औ़रत के पास चले जाओ और उसे येह निशानी दिखा कर दो जोड़े वुसूल कर लो।" इस के बा'द मैं वहां से निकला और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वादिये क़ुबा से निकलने से क़ब्ल ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू यह़्या ! तिजारत नफ़्अ़ बख़्श रही।" और येह बात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार इरशाद फ़रमाई। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझ से पहले आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास तो कोई नहीं आया यक़ीनन येह ख़बर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने दी होगी।"(1)

﴾500﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हिजरत के मौक़अ़ पर मुशरिकीने मक्का मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तलाश में निकले और ग़ार की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे लेकिन फिर लौट आए। उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे याद करते हुवे फ़रमाया : "अफ़्सोस ! ऐ सुहैब ! सुहैब मेरे साथ नहीं है।" जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत का इरादा फ़रमाया था तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दो या तीन मरतबा मेरी त़रफ़ भेजा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे नमाज़ में मश्ग़ूल पा कर बारगाहे नबुव्वत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने उन्हें नमाज़ में मश्ग़ूल देखा तो उन की नमाज़ में ख़लल डालना मुनासिब न समझा।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने अच्छा किया।" फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रातों रात तशरीफ़ ले गए। फ़ज्र के बा'द मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजए मोह़तरमा उम्मे

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٧٢٩٦، ج٨، ص٣١-٣٢.

www.dawateislami.net

रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गया तो वोह मुझे देख कर फ़रमाने लगीं कि "मैं तुम्हें यहां देखती हूं जब कि तुम्हारे दोनों भाई चले गए और उन्हों ने अपने ज़ादे राह में तुम्हारा भी हिस्सा रखा है।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं वहां से निकला अपनी बीवी के पास पहुंच कर अपनी तल्वार, कमान और नेज़ा लिया और मदीनए तृय्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह्तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ फ़रमा थे। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे देख कर खड़े हो गए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे मेरे बारे में नाज़िल होने वाली आयते करीमा की बिशारत दी। फिर मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कुछ इज़्हारे नाराज़ी किया कि आते वक़्त मुझे ख़बर न दी ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की वज्ह बयान फ़रमाई और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो ख़ुशी का इज़्हार किया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू यह्या ! तुम्हारी तिजारत नफ़्अ़ बख़्श रही।"(1)

﴾501﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "इन्सान जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वोह अपने माल को इस तरह ख़र्च न करे। येह कहते हुवे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दाएं बाएं इशारा फ़रमाया।"(2)

﴾502﴿.....हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "ऐ सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! औलाद न होने के बा वुजूद तुम ने अपनी कुन्यत रख ली और रूमी हो कर अ़रब की तरफ़ निस्बत कर ली ?" हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! जहां तक आप का येह फ़रमान है कि औलाद न होने के बा वुजूद मैं ने अपनी कुन्यत रखी हुई है, तो येह इस वज्ह से है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अबू यह्या की कुन्यत से याद फ़रमाया है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह फ़रमाना कि मैं ने रूमी होने के बा वुजूद अ़रब की तरफ़ अपने आप को मन्सूब कर लिया तो येह इस वज्ह से है कि दर हक़ीक़त

1.....المعجم الكبير،الحديث:٧٣٠٨،ج٨،ص٣٦.

2.....تاريخ بغداد،الرقم٤٨٥٣صالح بن حرب بن خالد ، ج٩،ص٣١٧.

www.dawateislami.net

मेरा तअ़ल्लुक़ अ़रब के क़बीलए नमिर बिन क़ासित़ से है। मुझे मौसल से क़ैद कर के गुलाम बनाया गया था, पस मैं अपना अहलो नसब जानता हूं।"(1)

﴾503﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों को बहुत ज़ियादा खाना खिलाया करते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "ऐ सुहैब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तुम लोगों को बहुत ज़ियादा खाना खिलाते हो और मेरे ख़याल में येह माल का इसराफ़ है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में बेहतरीन वोह है जो खाना खिलाए और सलाम का जवाब दे।" पस येही फ़रमाने आ़लीशान मुझे खाना खिलाने पर उभारता है।"(2)

तीन बातों पर ए'तिराज़ :

﴾504﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "मुझे तुम्हारी तीन बातों पर ए'तिराज़ है।

(1) तुम ने अपनी कुन्यत अबू यह़्या रखी जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

لَمۡ نَجۡعَلۡ لَّہٗ مِنۡ قَبۡلُ سَمِیًّا ﴿۷﴾ (پ۱۶، مریم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस के पहले हम ने इस नाम का कोई न किया*

(2) तुम्हारे पास जो चीज़ भी आती है तुम उसे ख़र्च कर देते हो और

(3) तुम अपने आप को क़बीलए नमिर बिन क़ासित़ की त़रफ़ मन्सूब करते हो ह़ालांकि तुम मुहाजिरीने अव्वलीन में से हो जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्आ़म फ़रमाया है।"

तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! अबू यह़्या कुन्यत मैं ने खुद इख़्तियार नहीं की बल्कि येह तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अ़त़ा फ़रमाई है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अबू यह़्या कह कर याद फ़रमाते थे और मेरे पास जो चीज़ भी आती है मैं उसे इस लिये ख़र्च कर देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

❶.....المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۳۱۰،ج۸،ص۳۸.

❷.....المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث صُهیب،الحدیث:۲۳۹۸۱، ج۹، ص ۲۴۰.

www.dawateislami.net

وَمَاۤ اَنۡفَقۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ فَھُوَ یُخۡلِفُهٗ ۚ
(پ۲۲،سبا:۳۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वोह इस के बदले और देगा।

और जहां तक नमिर बिन क़ासित् की त़रफ़ मन्सूब होने का मुआ़मला है तो येह भी बिल्कुल दुरुस्त है क्यूंकि अ़रब एक दूसरे को क़ैद कर लेते थे, ऐसे ही अ़रब के एक क़बीले ने मुझे भी क़ैद कर लिया और कूफ़ा ले जा कर बेच दिया, वहां मैं ने उन की ज़बान सीख ली, लिहाज़ा अगर मैं रूमी होता तो उन्ही की त़रफ़ मनसूब होता।''(1)

खाने में हैरत अंगेज़ बरकत :

﴾505﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये खाना तय्यार किया जब बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) के झुरमुट में तशरीफ़ फ़रमा पाया। मैं ने सामने खड़े हो कर इशारे से खाने का अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशारे से सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) का दरयाफ़्त फ़रमाया। मैं ने (खाने की कमी की वज्ह) से अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए और मैं अपनी जगह खड़ा रहा। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे तो मैं ने फिर इशारे से खाने का अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अब की बार भी येही दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या इन के लिये भी ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' दो या तीन मरतबा ऐसा हुवा फिर मैं ने अ़र्ज़ की : ''हां ! इन के लिये भी।'' चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रुफ़क़ा को साथ ले कर तशरीफ़ लाए और सब ने मिल कर खाना खाया। मैं ने वोह खाना सिर्फ़ हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये थोड़ा सा बनाया था लेकिन उन सब के खाने के बा'द भी वोह बच रहा।''(2)

क़र्ज़ का चोर :

﴾506﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो शख़्स किसी औ़रत से

---

1 ......المستدرك ، كتاب معرفة الصحابة ، باب نزلت آية:ومن الناس......الخ،الحديث:٥٧٥٤، ج٤، ص٤٩٠.
2 ......المعجم الكبير، الحديث:٧٣٢١،ج٨، ص٤٥.

www.dawateislami.net

मेहर पर शादी करे और उस का इरादा मेहर अदा करने का न हो तो उस शख़्स ने उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ धोका दिया और बातिल तरीक़े से उस की शर्मगाह को अपने लिये हलाल किया बरोज़े क़ियामत ऐसा शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि वोह ज़ानी होगा[1] और जो वापस न करने के इरादे से क़र्ज़ लेता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ धोका देता और बातिल तरीक़े से ग़ैर के माल को अपने लिये हलाल ठहराता है। ऐसा शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि वोह चोर होगा।''[2]

मैं क्यूं मुस्कुराया ? :

﴾507﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कि एक मरतबा हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रात की नमाज़ पढ़ी। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रुख़े अन्वर फेरा तो वोह हमारी तरफ़ मुस्कुराते हुवे मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : ''जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ?'' सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुसलमान बन्दे के हक़ में फ़ैसले पर तअ़ज्जुब हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जो भी फ़ैसला फ़रमाता है उस के लिये उस में भलाई ही होती है और जिस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम फ़ैसले भलाई के फ़रमाए वोह बन्दा मोमिन ही होता है।''[3]

3 दिन में 70 हज़ार अमवात :

﴾508﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ दिन सुब्ह की नमाज़ के बा'द अपने होंटों

1.....इस का येह मत़लब नहीं कि शरई ए'तिबार से उस का निकाह़ ही न होगा। जैसा कि मुहद्दिसे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : ''येह जो ह़दीस में इरशाद हुवा है कि जिन का निकाह़ हुवा उन की निय्यत में अदाए मेहर नहीं वोह रोज़े क़ियामत ज़ानी व ज़ानिय्या उठाए जाएंगे, येह उन के वासित़े है जो मह़्ज़ बराए नाम झूटे त़ौर पर एक लग्व रस्म समझ कर मेहर बांधें, शरअ़न उन का निकाह़ भी हो जाएगा और वोह ब हुक्मे शरीअ़त ज़ानी व ज़ानिय्या नहीं ज़न व शो (या'नी मियां-बीवी) हैं। अगर्चे क़ियामत में उन पर इस बद निय्यत का वबाल मिस्ले ज़िना हो कि उन्हों ने हुक्मे इलाही को हल्का समझा।'' (फ़तावा रज़विय्या, जि. 12, स. 199)

2.....المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث صُھیب بن سنان ، الحدیث:١٨٩٥٤،ج٦،ص٥٠٣.

3.....المعجم الکبیر، الحدیث:٧٣١٧،ج٨،ص٤٠.

www.dawateislami.net

को ह़रकत देते हुवे कुछ पढ़ते थे, हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ दिनों से सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द अपने होंटों को ह़रकत देते हुवे कुछ पढ़ते हैं जब कि इस से पहले येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल नहीं था।" तो इरशाद फ़रमाया : "मुझ से पहले एक नबी (عَلَيْهِ السَّلَام) थे, जिन्हों ने अपनी उम्मत की कसरत से खुश होते हुवे कहा : "इन की कसरत के सबब इन पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "तेरी उम्मत की भलाई तीन बातों में से एक में है कि मैं उन पर मौत, दुश्मन या भूक मुसल्लत़ कर दूं।" इन्हों ने येह बात अपनी उम्मत को बताई तो उन्हों ने कहा : "भूक बरदाश्त करने और दुश्मन से लड़ने की तो हम में त़ाक़त नहीं, हां ! मौत क़बूल कर लेते हैं।" चुनान्चे, तीन दिन के अन्दर अन्दर उस उम्मत के 70 हज़ार अफ़राद फ़ौत हो गए। जब कि मैं आज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे ही नाम से इरादा व कोशिश करता हूं और तेरी ही मदद से दुश्मनों पर ह़म्ला करता हूं और तेरा नाम ले कर उन से क़िताल करता हूं।"(1)

दीदारे इलाही :

﴾509﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ
(پ۱۱،یونس۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद।

फिर इस की तफ़्सीर करते हुवे इरशाद फ़रमाया : जन्नतियों के जन्नत में चले जाने के बा'द एक मुनादी निदा करेगा कि "ऐ अहले जन्नत ! अभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक वा'दा बाक़ी है।" तो वोह कहेंगे : "अब कौन सा वा'दा बाक़ी है ? क्या उस ने हमारे चेहरे रौशन नहीं किये ? क्या उस ने हमारे आ'माल नामे भारी नहीं किये ? क्या उस ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया ?" येह बात उन से तीन मरतबा कही जाएगी। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर अपनी

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ۷۳۱۸،ج۸،ص ۴۰۔
المسند للامام احمدبن حنبل،حديث صُهيب بن سنان،الحديث:۱۸۹۶۲، ج۶، ص ۵۰۵۔

www.dawateislami.net

तजल्ली फ़रमाएगा तो अहले जन्नत दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होंगे और येह ने'मत उन के नज़्दीक सब ने'मतों से बढ़ कर होगी।"(1)

《510》.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ फ़रमाया करते थे :

اَللّٰھُمَّ لَسْتَ بِاِلٰہٍ اِسْتَحْدَثْنَاہُ، وَلَابِرَبٍّ اِبْتَدَعْنَاہُ، وَلَا کَانَ لَنَا قَبْلَکَ مِنْ اِلٰہٍ نَّلْجَأُ اِلَیْہِ وَ نَذَرُکَ،وَلَااَعَانَکَ عَلٰی خَلْقِنَا اَحَدٌ فَنُشْرِکَہٗ فِیْکَ،تَبَارَکْتَ وَ تَعَالَیْتَ

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ऐसा मा'बूद व परवर दगार नहीं जिसे हम ने खुद बनाया हो और न तुझ से पहले हमारा कोई मा'बूद था कि हम उस की पनाह ले लें और तुझे छोड़ दें और हमारी तक्लीफ़ में तेरा कोई मददगार नहीं है कि हम उसे तेरा शरीक ठहराएं। तेरी ज़ात बा बरकत है और तू बुलन्द शान का मालिक है।"

हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी इसी त़रह़ दुआ किया करते थे।"(2)

येह अल्फ़ाज़ अ़म्र बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत के हैं जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मालिक रासिबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की रिवायत में यूं है :

وَلَا بِرَبٍّ یَبِیْدُ ذِکْرُہٗ وَلَا کَانَ مَعَکَ اِلٰـہٌ فَنَدْعُوْہُ وَنَتَضَرَّعُ اِلَیْہِ وَلَا اَعَانَکَ عَلٰی خَلْقِنَا اَحَدٌ فَنَشُکَّ فِیْکَ

या'नी : और तू ऐसा परवर दगार नहीं जिस का ज़िक्र ख़त्म हो जाए और न तेरे सिवा कोई और मा'बूद है कि हम उसे पुकारें और उस के सामने आहो ज़ारी करें और हमारी तक्लीफ़ में तेरा कोई मददगार नहीं है कि हम तेरी (ताक़त व कुदरत) में शको शुबा का इज़्हार करें।(3)

उड़ कर जन्नत में जाने वाले :

《511》.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुहाजिरीन ही सब्क़त ले जाने वाले, शफ़ाअ़त

---

❶......مسند ابی داود الطیالسی، صُھیب ، الحدیث:١٣١٥،ص١٨٦ .

❷......المعجم الکبیر، الحدیث:٧٣٠٠،ج٨،ص٣٤ .

❸......العظمۃ لابی الشیخ الاصبھانی،ذکر آیات ربناتبارك وتعالی وعظمتہ وسؤددہ،الحدیث:١١٦،ص٥٤ .

www.dawateislami.net

करने वाले और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रहनुमाई करने वाले हैं। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! बरोज़े क़ियामत येह अपनी गर्दनों में हथयार लटका कर जन्नत का दरवाज़ा खट खटाएंगे। दारोग़ए जन्नत (या'नी जन्नत पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते) उन से दरयाफ़्त करेंगे "तुम कौन हो ?" कहेंगे : "हम मुहाजिरीन हैं।" वोह पूछेंगे : "क्या तुम्हारा ह़िसाबो किताब हो चुका है ?" येह सुन कर वोह घुटनों के बल गिर जाएंगे, उन के तरकश के तीर बिखर जाएंगे और हाथों को उठा कर परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से फ़रयाद करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या अब भी हमारा ह़िसाब होगा जब कि हम ने तेरी रिज़ा के लिये अपने अहलो इ़याल और माल को छोड़ कर हिजरत की।" उन की फ़रयाद बारगाहे रब्बुल इ़बाद में मुस्तजाब होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें सोने के पर अ़त़ा फ़रमाएगा जिस में ज़बर जद और याक़ूत जड़े होंगे और येह उन के ज़रीए उड़ कर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। (इस पर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाएंगे जिसे क़ुरआने पाक में यूं बयान किया गया) :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۙ ﴿۳۴﴾ الَّذِیْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖۚ لَا یَمَسُّنَا فِیْهَا نَصَبٌ وَّ لَا یَمَسُّنَا فِیْهَا لُغُوْبٌ ﴿۳۵﴾ (پ۲۲،الفاطر:۳۴،۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सब ख़ूबियां* ***अल्लाह*** *को जिस ने हमारा ग़म दूर किया बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है वोह जिस ने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें उस में न कोई तक्लीफ़ पहुंचे न हमें उस में कोई तकान लाह़िक़ हो।*

ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उन्हें जन्नत में ऐसे घर अ़त़ा होंगे कि जिन के ज़रीए उन के दुन्यावी मक़ामो मर्तबे की पहचान होगी।"(1)

---

(1) المستدرك، كتاب المعرفة الصحابة، باب براءة المهاجرين......الخ، الحديث: ٥٧٥٧، ج٤، ص٤٩١، "فيجعل الله" بدله "فيمثل الله".

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इबादत गुज़ार, दुन्या से बेज़ार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बे मिसाल फ़रमां बरदार बन्दे थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चौथे नम्बर पर इस्लाम क़बूल किया। दीने इस्लाम की तशरीफ़ आवरी से पहले भी कभी बुत परस्ती के क़रीब न गए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत से पहले भी लोगों में इबादत गुज़ार मशहूर थे और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में सब से पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ने सलाम अ़र्ज़ किया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ बात बयान करने में न किसी मलामत करने वाले की मलामत से ख़ौफ़ज़दा होते, न हुक्मरानों और बादशाहों के रो'ब व दबदबे से घबराते। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह शख़्सिय्यत हैं कि जिन्हों ने सब से पहले इल्मुल बक़ा (या'नी अह़वाले आख़िरत के इ़ल्म) में कलाम किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों में भी दीन पर साबित क़दम रहते, वा'दा निभाते और वसिय्यत पूरी फ़रमाते, मसाइबो आलाम पर सब्र करते और सारी उ़म्र लोगों से (बिला ज़रूरत) मेल जोल रखने से कतराते रहे। नीज़ फ़ुज़ूलिय्यात को तर्क करते हुवे हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रह कर इ़ल्म ह़ासिल करने का शरफ़ भी पाया।"

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "शिद्दते इ़श्क़ो ग़म की वज्ह से परेशान व ख़स्ता ह़ाल रहते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल रहने का नाम तसव्वुफ़ है।"

सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जज़्बए इबादत :

﴾512﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सामित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! मैं इस्लाम से चार बरस पहले भी नमाज़ पढ़ा करता था। उन्हों ने पूछा : "इस्लाम की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ किस की इबादत करते थे ?" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आस्मानों के मालिक عَزَّوَجَلَّ की।" उन्हों ने फिर पूछा : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त किस त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ते थे ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस सिम्त मेरा रुख़ फेर देता उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ लेता।"(1)

1 ......دلائل النبوۃ للاصبھانی، الحدیث: ۱۶۰،ص۱۴۷تا۱۴۹.

www.dawateislami.net

﴾513﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने से क़ब्ल भी तीन बरस तक नमाज़ पढ़ी है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त किया : "उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस की इ़बादत करते थे ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की।" उन्हों ने फिर पूछा कि : "उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते थे ?" फ़रमाया : "जिस त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फेर देता उसी त़रफ़ रुख़ कर लेता। जब मैं रात के वक़्त नमाज़ के लिये खड़ा होता तो नमाज़ ही की ह़ालत में सह़री का आख़िरी वक़्त आ जाता फिर मुझ में सकत बाक़ी न रहती तो मैं गिर जाता यहां तक कि सूरज बुलन्द हो जाता।"(1)

﴾514﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं इस्लाम क़बूल करने में चौथे नम्बर पर हूं क्यूंकि जब मैं ने इस्लाम क़बूल किया उस वक़्त अभी सिर्फ़ तीन अफ़राद ने इस्लाम क़बूल किया था।"(2)

सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम :

﴾515﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरे इस्लाम लाने का वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ से है कि हमें क़ह़त़ साली ने आ लिया तो मेरी मां मुझे और मेरे भाई अनीस को ले कर नज्द में अपने रिश्तेदारों (या'नी मामूं) के हां चली गईं। उन्हों ने हमारा ख़ूब इकराम किया। कुछ दिनों बा'द उस मह़ल्ले का एक आदमी मेरे मामूं के पास आया और कहा : "अनीस ने आप की ज़ौजा के मुआ़मले में आप से ख़ियानत की है।" येह बात मामूं को बहुत बुरी लगी। जब मैं ऊंट चरा कर घर वापस आया तो उन्हें ग़मगीन और रोता हुवा पाया। मैं ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने मुझे सारा वाक़िआ़ बताया। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह कि हम ऐसा फ़ोह़्श काम करें अगर्चे ज़माने ने हमें मोह़ताज बना डाला है।" इस के बा'द मैं अपनी वालिदा और भाई को ले कर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا चला आया। कुफ़्फ़ारे मक्का ने

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل ابی ذر، الحدیث: ۶۳۵۹، ص ۱۱۱۱۔
الطبقات الکبرٰی لابن سعد، الرقم ۴۳۲ ابوذر، ج۴، ص ۱۶۶۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۶۱۷، ج۲، ص ۱۴۷۔

www.dawateislami.net

बताया कि "यहां (مَعَاذَاللہ) कोई बद दीन या मजनून या जादूगर रहता है।" एक दिन मैं ने उन से पूछा : "जिस के बारे में तुम ऐसा सोचते हो वोह कहां मिलेगा ?" लोगों ने कहा : "सामने देखो येह वोही है।" फ़रमाते हैं : "मैं उन की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त की ख़ातिर कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन से हड्डी, पथ्थर और मिट्टी के ढेले खाए जिस की वज्ह से मेरा इस क़दर ख़ून बहा कि मैं उस में नहा गया। फिर मैं ख़ानए का'बा आया और उस के ग़िलाफ़ व इमारत के दरमियान दाख़िल हो गया। वहां मैं ने तीस रोज़े इस त़रह़ रखे कि आबे ज़म ज़म के सिवा न कुछ खाया और न कुछ पिया।"

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया : "अबू ज़र !" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं हाज़िर हूं।" फ़रमाया : "क्या तुम ज़मानए जाहिलिय्यत में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत किया करते थे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "हां ! मुझे याद है कि मैं सूरज निकलने के वक़्त नमाज़ पढ़ने खड़ा होता और मुसलसल नमाज़ पढ़ता रहता यहां तक कि सूरज की तपिश मुझे सताने लगती और मैं बे ह़ाल हो कर गिर पड़ता।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम किस त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते थे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "येह तो मुझे याद नहीं, अलबत्ता ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस त़रफ़ मेरा रुख़ फेर देता मैं उसी त़रफ़ रुख़ कर लेता यहां तक कि उस ने मुझे इस्लाम लाने की सआदत व तौफ़ीक़ बख़्शी।"(1)

इज़्हारे इस्लाम का वाक़िआ :

﴾516﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में क़ियाम किया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस्लाम के अह़काम सिखाए और क़ुरआने मजीद का कुछ ह़िस्सा भी पढ़ाया। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अपने दीन का इज़्हार करना चाहता हूं।" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(अभी चूंकि कुफ़्र का ग़लबा है इस लिये) मुझे डर है कि कहीं कुफ़्फ़ार तुम्हें शहीद न कर दें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस्लाम का इज़्हार ज़रूर करूंगा ख़्वाह मुझे शहीद कर दिया जाए।" इस के बा'द हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۷۷۳، ج۱، ص۲۶۶.

www.dawateislami.net

ने कोई बात नहीं की और ख़ामोश रहे। मैं मस्जिद में गया तो वहां क़ुरैश ह़ल्क़ा बनाए मह़्वे गुफ़्तगू थे। मैं ने कहा : "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के रसूल हैं।" येह सुनते ही वोह मुझ पर टूट पड़े यहां तक कि मार मार कर सुर्ख़ पथ्थर की त़रह़ कर दिया। वोह अपने ख़याल में मुझे ख़त्म कर चुके थे। कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो मैं बारगाहे रिसालत عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी ह़ालत देख कर इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं ने तुम्हें मन्अ़ न किया था ?" मैं ने अ़र्ज़ कि : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मेरे दिल की ख़्वाहिश थी, लिहाज़ा मैं ने पूरी कर ली।" मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ क़ियाम पज़ीर था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपनी क़ौम के पास चले जाओ जब मुझे ग़लबा ह़ासिल हो जाए तो मेरे पास चले आना।"(1)

सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का जज़्बए ईमानी :

﴾517﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जमरह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने हमें ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इस्लाम के ज़ाहिर होने के बारे में बताया कि "उन्हों ने बारगाहे रिसालत عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो चाहें हुक्म इरशाद फ़रमाएं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तक तुम्हें इस्लाम के ग़ालिब आ जाने की इत्तिलाअ़ न मिले अपने घर वालों के पास रहो।" ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपने क़ुबूले इस्लाम का ए'लान व इज़्हार किये बिग़ैर नहीं जाऊंगा।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मस्जिद की त़रफ़ गए और बुलन्द आवाज़ से येह ए'लान करने लगे : "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के रसूल हैं।" मुशरिकीन येह सुन कर कहने लगे कि "येह बद दीन हो गया और अपने दीन से फिर गया है।" फिर मुशरिकीन चारों त़रफ़ से उन पर टूट पड़े और इतना मारा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه गिर गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वहां से गुज़रे तो फ़रमाया : "ऐ गुरौहे क़ुरैश ! तुम ताजिर हो और तुम्हारा गुज़र क़बीलए बनी गिफ़ार के

(1) ......المعجم الاوسط،الحديث:٢٧٦٤،ج٢،ص١٣٠.

www.dawateislami.net

पास से होता है क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा रास्ता बन्द कर दिया जाए ?" हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के छुड़ाने पर कुफ़्फ़ार उन्हें छोड़ कर चले गए। दूसरे दिन हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर इसी तरह ए'लान कर दिया जिस के नतीजे में कुफ़्फ़ार फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर टूट पड़े और मारने लगे। हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आज भी वहां से गुज़र हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें छुड़ा लिया।(1)

इज़्हारे इस्लाम पर तकालीफ़ का सामना :

﴾518﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا आया तो वहां के कुफ़्फ़ार मुझ पर टूट पड़े। ढेलों, हड्डियों वग़ैरा से मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब होश आया तो उठा और देखा कि ख़ून बहने की वज्ह से मैं सुर्ख़ पथ्थर की मानिन्द लग रहा था।"(2)

सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुसूसिय्यात :

﴾519﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : "मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا आया और कुफ़्फ़ार से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में पूछा कि वोह कहां हैं ?" कुफ़्फ़ार ने सुना तो "बद दीन, बद दीन" कहते हुवे मुझे हड्डियों और पथ्थरों से मारने लगे यहां तक कि मुझे सुर्ख़ पथ्थर की मानिन्द कर डाला। सुब्ह की ठन्डक से मुझे कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो मैं उठ कर आबे ज़म ज़म तक आया। उस से पिया और ग़ुस्ल किया। फिर का'बा और उस के पर्दों के दरमियान तीस दिन तक ठहरा रहा और आबे ज़म ज़म के सिवा कुछ खाया न पिया यहां तक कि मैं बहुत कमज़ोर हो गया फिर एक रात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैतुल्लाह शरीफ़ के तवाफ़ के लिये तशरीफ़ लाए और मक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ अदा फ़रमाई और सब से पहले मैं ने ही हुज़ूर

1 ......المعجم الاوسط، الحديث:٢٦٣٣، ج٢، ص٩٤، مفهومًا.

2 ......مصنف ابن ابی شيبة ، كتاب المغازی ، باب اسلام ابی ذر، الحديث:١، ج٨، ص٤٥٠.

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलामे तहिय्यत किया और अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : وَعَلَيْکَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ (1)

﴾520﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जब सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : وَعَلَيْکَ السَّلَام लिहाज़ा सब से पहले मुझे बारगाहे रिसालत में सलामे तहिय्यत पेश करने की सआ़दत मिली।(2)

6 बातों की नसीह़त :

﴾521﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे 6 बातों की नसीह़त फ़रमाई : (1) मसाकीन से मह़ब्बत करना। (2) (दुन्यवी ए'तिबार से) अपने से कम दरजा लोगों को देखना, ऊंचे दरजे वालों की त़रफ़ न देखना। (3) हर ह़ाल में ह़क़ बात कहना अगर्चे कड़वी हो और (4) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी की मलामत से न डरना। (5) रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करना अगर्चे वोह क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करें और (6) لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه की कसरत करना।)"(3)

नफ़ाज़े हुक्मे रसूल का जज़्बा :

﴾522﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने मेरे पास आ कर कहा : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के आ़मिलीन (या'नी ज़कात की वुसूली पर मुक़र्रर कर्दा अफ़राद) ज़कात के मुआ़मले में हम पर ज़ियादती करते हैं तो क्या हम ब क़दरे ज़ियादती अपना माल छुपा लिया करें ?" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "नहीं। बल्कि तुम अपना माल उन के सामने रखो और उन से कहो कि जितना ह़क़ बनता है उतना ही लो और जिस में ह़क़ नहीं बनता उसे छोड़ दो। फिर भी अगर वोह तुम पर ज़ुल्म करें तो उन का येह

❶......مصنف ابن ابی شیبۃ ، کتاب المغازی ، باب اسلام ابی ذر،الحدیث:۱،ج۸،ص۴۵۰،بتغیر.

❷......صحیح مسلم ،کتاب فضائل الصحابۃ ،باب من فضائل ابی ذر، الحدیث:۶۳۵۹/۶۳۶۱،ص۱۱۱۱.

❸......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۶۴۸،ج۲،ص۱۵۶،بتقدم وتاخر.

www.dawateislami.net

ज़ुल्म नेकियों की सूरत में कल बरोज़े क़ियामत तुम्हारे नामए आ'माल में रखा जाएगा।" वहां उस वक़्त एक क़ुरैशी नौजवान खड़ा था उस ने कहा : "क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़तवा देने से मन्अ़ नहीं किया था ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम मेरे निगहबान हो ? उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर तुम मेरे गले पर छुरी भी रख दो और मुझे यक़ीन हो कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म को छुरी चलने से पहले नाफ़िज़ कर सकता हूं तो मैं ऐसा ज़रूर करूंगा।"(1)

दुन्या से नफ़रत :

﴾523﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भतीजे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं अपने चचा हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। चचा ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रब्ज़ा की त़रफ़ जाने की इजाज़त त़लब की तो उन्हों ने इजाज़त देते हुवे फ़रमाया : "हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास सुब्हो शाम सदक़े के मवेशी भेजते रहेंगे।" हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे इन की हाजत नहीं। अबू ज़र के लिये तो इस से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ ही काफ़ी है।" फिर खड़े हो कर फ़रमाया : "आप को आप की दुन्या मुबारक हो। हमें अपने रब عَزَّوَجَلَّ और दीन के साथ रहने दीजिये।" उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का माल तक़्सीम किया जा रहा था और हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "आप उस शख़्स के बारे में क्या कहते हैं जो माल जम्अ़ करता फिर उसे सदक़ा करता और राहे ख़ुदा में ख़र्च करता है और इस के ज़रीए़ फ़ुलां फ़ुलां नेकी का काम करता है ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "मुझे उस के बारे में भलाई की उम्मीद है।" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जलाल में आ कर अपना अ़सा हज़रते

---

(1) ......سنن الدارمی،المقدمۃ،باب البلاغ عن......الخ،الحدیث:٥٤٥، ج١، ص١٤٦، بتغیر.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर उठाया और फ़रमाया : "ऐ बनी इसराईलिय्या के बेटे ! तुम इस माल के मालिक को इजाज़त दे रहे हो कि बरोज़े क़ियामत इस माल के इवज़ बिच्छू उस के दिल पर डसें(1)।"(2)

﴾524﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ख़िराश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रब्ज़ा में हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक सियाह ख़ैमे में बोरी के बने हुवे बिस्तर पर तशरीफ़ फ़रमा देखा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा भी वहां मौजूद थीं। किसी ने उन से कहा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद तो ज़िन्दा नहीं रहती।" फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमारी औलाद को दारे फ़ानी (या'नी दुन्या) से (हमारे फ़ाइदे के लिये) दारे बक़ा (या'नी

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : "(हज़रते सय्यिदुना) उस्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने (हज़रते सय्यिदुना) अबू ज़र ग़िफ़ारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की मौजूदगी में (हज़रते सय्यिदुना) का'बुल अहबार (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से मस्अला पूछा कि (हज़रते) अ़ब्दुर्रहमान इब्ने औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) बहुत माल छोड़ कर वफ़ात पा गए हैं तुम्हारा क्या ख़याल है आया माल जम्अ़ करना और बाल बच्चों के लिये छोड़ जाना जाइज़ है या नहीं ? मिरक़ात में है कि हज़रते अ़ब्दुर्रहमान इब्ने औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने दो लाख दीनार छोड़े थे। ख़याल रहे कि हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ज़ाहिद तरीन सहाबा (में से) थे ज़ोहद व तर्के दुन्या की अहादीस पर सख़्ती से आ़मिल थे इस लिये उन की मौजूदगी में येह सुवालो जवाब हुवे, ताकि वोह हुक्मे शरई और ज़ोहद में नीज़ तक़्वा व फ़तवा में फ़र्क़ कर लें। (लिहाज़ा) माल जम्अ़ रखना, बा'दे वफ़ात छोड़ जाना हलाल है जब कि इस से ज़कात, फ़ित्रा, क़ुरबानी, हुक़ूक़ुल इबाद अदा किये जाते रहे हों येह कन्ज़ में दाख़िल नहीं जिस की क़ुरआने करीम में बुराई आई है। (हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का) येह मारना ब हालते जज़्ब था, आप अपने नफ़्स पर क़ाबू न पा सके, चूंकि (हज़रते सय्यिदुना) अबू ज़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) बुज़ुर्ग तरीन सहाबी थे, तमाम सहाबा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) आप का बहुत एहतिराम करते उन की नाराज़ी या मार पर नाराज़ न होते थे, जैसे आज भी सआ़दत मन्द जवान महल्ले के बुज़ुर्गों की सख़्ती पर नाराज़ नहीं होते इस लिये ख़लीफ़तुल मोमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उन से क़िसास के लिये न कहा न हज़रते का'ब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने कुछ बुरा मनाया। हो सकता है कि आप की येह मार तादीब व सरज़निश के लिये हो कि तुम तो कह रहे हो कि माल जम्अ़ करने में कोई हरज नहीं हालांकि अमीरे सख़ी भी मिस्कीनों से पांच सौ बरस बा'द जन्नत में जाएंगे, हिसाब में देर लगेगी। यहां मिरक़ात में है कि बा'द में हज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने (हज़रते सय्यिदुना) अबू ज़र ग़िफ़ारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को मदीनए मुनव्वरा (زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) से मक़ामे रब्ज़ा में भेज दिया था। आप ता वफ़ात वहां ही रहे, क्यूंकि आप की त़बीअ़त बहुत जलाली थी। ख़ुलासए जवाब येह है कि ऐ का'ब तुम तो कहते हो माल जम्अ़ करने में हरज नहीं जब कि उस से फ़राइज़ अदा कर दिये जाएं, मगर मैं ने अपने महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना। (लिहाज़ा) माल सारे का सारा ख़ैरात कर देना कुछ बाक़ी न रखना सुन्नत है और जम्अ़ करना ख़िलाफ़े सुन्नत, क्या ख़िलाफ़े सुन्नत में हरज नहीं होता ? मगर येह जूदो सख़ा हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यात से है कि ख़ुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के सब घर वाले सय्यिदुल मुतवक्किलीन थे। हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़दीस सुनने का इक़रार तो किया, मगर ह़दीस का मत़लब समझाया कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह अपने लिये फ़रमाया है, आ़म मुसलमानों को इस का हुक्म न दिया।"
(मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 88)

2.....سیر اعلام النبلاء، الرقم ۱۰۶، ابو ذَرجُندُب بن جُنادۃ الغِفَاری، ج۳، ص ۳۹۱، بتغیر.

www.dawateislami.net

आख़िरत) की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दिया।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अगर आप दूसरी शादी कर लें तो बेहतर है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐसी औ़रत से शादी करना जो (औलाद न होने की वज्ह से) मेरा नाम पस्त करे मुझे उस औ़रत से ज़ियादा पसन्द है जो (औलाद होने की वज्ह से) मेरा नाम बुलन्द करे।" लोगों ने फिर अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बोरी के बिस्तर के बजाए कोई नर्म बिछौना बना लें" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम अपने लिये जो चाहो करो।"(1)

﴾525﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्मा रह़बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि वोह रब्ज़ा के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी भी परागन्दा ह़ाल वहां मौजूद थीं। न तो उन के पास ज़ा'फ़रान था और न ही उन्हों ने कोई ख़ुश्बू लगाई हुई थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम देखते हो कि मेरी बीवी मुझे (इक़्तिदार के लिये) इराक़ जाने का मश्वरा देती है कि जब मैं वहां पहुंचूंगा तो अहले इराक़ दुन्या ले कर मेरे पास आएंगे। जब कि मुझ से मेरे ख़लील, मह़बूबे रब्बे जलील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ह्द लिया था कि पुल सिरात़ के इलावा भी एक ऐसा रास्ता है जो बहुत ज़ियादा फिसलन वाला है। लिहाज़ा उस पर इक़्तिदार का बोझ ले कर पहुंचने से बेहतर है कि हम उस से आराम व सुकून के साथ नजात पा जाएं।"(2)

ब क़द्रे किफ़ायत अस्बाब पर क़नाअ़त :

﴾526﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुन्कदिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मुल्के शाम के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन मस्लमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास 300 दीनार हदिय्या भेजे और कहा : "इन से अपनी ज़रूरिय्यात पूरी फ़रमा लें।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हदिय्या लौटा दिया और फ़रमाया : "क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ धोका करने के लिये उसे हमारे इलावा कोई और नहीं मिला।" हमें तो सर छुपाने जितनी जगह और कुछ बकरियां जो शाम को लौट आया करें और एक बांदी (या'नी नोकरानी) जो हमारी ख़िदमत कर सके, काफ़ी है और जो इस से ज़ाइद हो हम उस से डरते हैं।"(3)

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:١٦٢٩، ج٢، ص١٥٠.

2 ......المسند للامام احمد حنبل، حديث ابى ذرالغِفَارى، الحديث: ٢١٤٧٣، ج٨، ص٩٥، "شعثة " بدله" مسغبة"

3 ......الزهد للامام احمد بن حنبل ، زهد ابى ذر، الحديث:٧٩٤، ص١٧٠.

www.dawateislami.net

﴾527﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن से मरवी है, कि क़बीलए कुरैश का एक ह़ारिस नामी शख़्स जो मुल्के शाम में था उसे पता चला कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तंगदस्ती में मुब्तला हैं तो उस ने 300 दीनार आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में भेज दिये लेकिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : उसे मेरे इलावा कोई और नज़र नहीं आया ? मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुन रखा है कि "जिस के पास चालीस दिरहम हों और वोह इस के बा वुजूद सुवाल करे तो उस ने इस्रार के साथ मांगा ।" जब कि आले अबू ज़र के पास चालीस दिरहम, चालीस बकरियां और माहनान (या'नी लौंडी) है ।(1)

﴾528﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी फ़रमाते हैं : बरोज़े क़ियामत मैं तुम से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब होऊंगा इस लिये कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना है कि "क़ियामत के दिन मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जो दुन्या से इस त़रह़ गया जिस त़रह़ मैं इसे छोड़ कर जा रहा हूं ।" और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे इलावा तुम में से हर एक किसी न किसी दुन्यावी चीज़ से वाबस्ता है ।(2)

मुझे अमीर बनने की ख़्वाहिश नहीं :

﴾529﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, किसी ने मुझ से कहा : "आप फ़ुलां फ़ुलां की त़रह़ जाएदाद क्यूं नहीं बनाते ?" मैं ने कहा : "मुझे अमीर बनने की ख़्वाहिश ही नहीं है बल्कि मेरे लिये हर दिन पानी या दूध का एक घूंट और हफ़्ता भर में गन्दुम का सिर्फ़ एक क़फ़ीज़ (एक पैमाने का नाम है) ही काफ़ी है ।"(3)

﴾530﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में मेरी ख़ूराक सिर्फ़ एक साअ़(4) थी और अब मैं सारी ज़िन्दगी इस मिक़्दार पर इज़ाफ़ा नहीं करूंगा ।"(5)

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:١٦٣٠،ج٢،ص١٥٠.

2 ......الزهد للامام احمد حنبل، زهد ابی ذر، الحديث:٧٩٥،ص١٧٠.

3 ......الزهد للامام احمد حنبل، زهد ابی ذر، الحديث:٨٠٠،ص١٧٠.

4 .....साअ़ अ़रब के पैमानों में से एक पैमाना है और एक साअ़ हमारे 80 तोला वाले सैर से क़रीबन साढ़े चार सैर होता है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 24)

5 ......الإستيعاب فی معرفة الاصحاب،الرقم٣٤٣ جُنْدُب بن جُنَادة ابوذر الغِفاری، ج١،ص٣٢٣.

www.dawateislami.net

﴾531﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर था कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तुम नेक इन्सान हो, अ़न क़रीब मेरे बा'द तुम्हें आज़्माइश आएगी । मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या येह आज़्माइश राहे ख़ुदा में आएगी ?" इरशाद फ़रमाया : "हां !" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं रिज़ाए इलाही में आने वाली हर आज़्माइश को मरह़बा कहता हूं ।"(1)

﴾532﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "क़बीलए बनू उमय्या ने मुझे क़त्ल और फ़क़्र की धमकियां दीं ह़ालांकि मुझे ज़मीन का पेट इस की पुश्त से और नादारी मालदारी से ज़ियादा पसन्द है ।" इस पर किसी ने कहा : "ऐ अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या बात है जब भी आप किसी क़ौम के पास बैठते हैं तो वोह आप को छोड़ कर उठ जाते हैं ?" फ़रमाया : "इस की वज्ह येह है कि मैं उन को माल जम्अ़ करने से मन्अ़ करता हूं ।"(2)

आग का अंगारा :

﴾533﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मेरे ख़लील, मह़बूबे रब्बे जलील صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से अ़हद लिया कि जो भी सोना चांदी जम्अ़ करेगा येह उस के लिये आग का अंगारा होगा मगर येह कि इसे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया जाए ।"(3)

﴾534﴿.....हज़रते सय्यिदुना साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे जो अपना घर ता'मीर करवा रहे थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम पथ्थरों को लोगों की पुश्तों पर उठवा रहे हो ?" उन्हों ने कहा : "मैं अपने लिये घर बनवा रहा हूं ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर वोही बात कही ।" उन्हों ने जवाब दिया : "ऐ मेरे भाई ! शायद आप इस काम को अच्छा नहीं समझते ।" फ़रमाया : "तुम्हारा अपने घर वालों की गन्दगी में होना मुझे तुम्हारी इस ह़ालत से ज़ियादा पसन्द है जिस में, मैं तुम्हें देख रहा हूं ।"(4)

---

1 ......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، مسند ابی ذر الغِفَاری ،الحدیث:٣٨٩٤، ج٩،ص٣٣٩.
2 ......مصنف ابن ابی شیبة ،کتاب الزھد ، کلام ابی ذر ، الحدیث:١٠ ، ج٨، ص١٨٤،مختصراً.
3 ......المعجم الکبیر،الحدیث:١٦٣٤،ج٢،ص١٥١.
4 ......الزھد للامام احمدحنبل ،زھد ابی ذر،الحدیث:٧٩١،ص١٦٩.

www.dawateislami.net

﴾535﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "लोग मरने के लिये पैदा होते हैं, वीरान करने के लिये मकान ता'मीर करवाते हैं, फ़ना होने वाली चीज़ की हिर्स रखते हैं और बाक़ी रहने वाली (या'नी आख़िरत) को भुला देते हैं। सुनो ! मौत और ग़ुरबत कितनी अच्छी हैं हालांकि लोग इन्हें ना पसन्द जानते हैं।"(1)

हर माल में 3 हिस्सेदार हैं :

﴾536﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "माल में 3 हिस्सेदार होते हैं : (1) तक़दीर, येह वोह हिस्सेदार है जिसे भलाई और बुराई (या'नी माल या तुझे हलाक करने) में तेरी इजाज़त की हाजत नहीं। (2) दूसरा हिस्सेदार तेरा वारिस, इसे इस बात का इन्तिज़ार है कि तू मरे और येह तेरे माल पर क़ब्ज़ा कर ले और (3) तीसरा हिस्सेदार तू ख़ुद है मज़म्मत किया हुवा, यक़ीनन तुम इन दोनों हिस्सेदारों को आजिज़ नहीं कर सकते लिहाज़ा अपना माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो।

बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ
(پ٤،ال عمران:٩٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।*

इस आयते करीमा की तिलावत करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ऊंटों की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाने लगे मुझे मेरे माल में येह ऊंट सब से बढ़ कर पसन्द हैं इस लिये मैं इन्हें ख़ैरात कर के अपने लिये आख़िरत में ज़ख़ीरा करना पसन्द करता हूं।"(2)

एक चादर के हिसाब का डर :

﴾537﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू शो'बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हाज़िर हो कर कुछ माल पेश किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

1 ......الزهدلابن المبارك،باب النهى عن طول الأمل،الحديث:٢٦٢،ص٨٨.

2 ......الزهد لهناد بن السرى ،باب الطعام فى الله ،الحديث:٦٥١،ج١،ص٣٤٨.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "हमारे पास दूध के लिये बकरी, सुवारी के लिये गधा और ख़िदमत के लिये बीवी है और एक चादर ज़रूरत से ज़ाइद है और मैं इस की वज्ह से ख़ौफ़ज़दा हूं कि कहीं मुझ से इस का हिसाब न ले लिया जाए।"(1)

﴾538﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम पर एक ऐसा ज़माना ज़रूर आएगा कि मालदार पर इस त़रह़ रश्क किया जाएगा जिस त़रह़ आज आ़शिर (या'नी ज़कात वुसूल करने वाले) पर किया जाता है।"(2)

﴾539﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू सलील رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साहिबज़ादी इस हालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आई कि ऊन के दो कपड़े पहन रखे थे। गाल पिचके हुवे थे और खजूर के पत्तों की टोकरी उठाई हुई थी। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने रुफ़क़ा के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे। बेटी ने अ़र्ज़ की : "अब्बाजान ! किसान और काश्तकार कहते हैं कि आप के येह सिक्के खोटे हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेटी ! इन्हें रख दो।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि आज तेरे बाप ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की है कि इन खोटे सिक्कों के सिवा कोई सोना चांदी इस की मिल्किय्यत में नहीं है।"(3)

﴾540﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "2 दिरहम वाले का ह़िसाब एक दिरहम वाले के ह़िसाब से सख़्त होगा (या'नी जितना माल ज़ियादा उतना वबाल ज़ियादा)।"(4)

काश मैं दरख़्त होता !

﴾541﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो मैं जानता हूं अगर तुम जान लो तो अपनी औ़रतों से बे तकल्लुफ़ होना छोड़ दो और तुम्हें अपने बिस्तरों पर भी सुकून ह़ासिल न हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं येह पसन्द करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दरख़्त बना देता जिसे काट दिया जाता और उस का फल खा लिया जाता।"(5)

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:١٦٣١،ج٢،ص١٥٠.

2 ......المستدرك،كتاب الفتن و الملاحم ، باب يبعث الله ريحًا طيبةً......الخ،الحديث:٨٤٣١، ج٥، ص٦٣٦، بتغيرٍ.

3 ......صفة الصفوة،الرقم٦٤ابو ذرجُنْدُب بن جُنَادة،ج١،ص٣٠٢،بتغيرٍقليلٍ.

4 ......المصنف لابن ابى شيبة ، كتاب الزهد،كلام ابى ذر،الحديث:٣،ج٨،ص١٨٣.

5 ......المرجع السابق، الحديث:١ ـ الزهد لهناد بن السرى ، باب الطعام فى الله، الحديث:٤٥٠،ج١،ص٢٥٩.

www.dawateislami.net

फ़रामीने अबू ज़र गिफ़ारी :

《542》.....हज़रते सय्यिदुना हाज़िम अ़ब्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی एक शामी बुज़ुर्ग से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जो जन्नत में जाना चाहता है उसे चाहिये कि दुन्यवी मालो ज़र से रग़बत न रखे।"

《543》.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये नेकी व भलाई की हैसिय्यत ऐसी है जैसी सालन में नमक की।"(1)

《544》.....हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "क्या आप ने नहीं देखा कि उन लोगों में नेकी व भलाई की रग़बत और जज़्बा ज़ियादा होता है जिन में कोई परहेज़गार और गुनाहों से तौबा करने वाला होता है।"(2)

फ़िक्रे आख़िरत :

《545》.....हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के विसाल के बा'द एक बसरी शख़्स आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वालिदा के पास आया और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की इ़बादत के बारे में पूछा। वालिदए माजिदा ने बताया कि "उन का सारा दिन फ़िक्रे आख़िरत में गुज़रता था।"(3)

《546》.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हमें ख़बर मिली कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को आराम के लिये जगह तलाश करते देखा तो कहा : "ऐ अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ! आप क्या कर रहे हैं?" जवाब दिया : "मैं कोई ऐसी जगह तलाश कर रहा हूं जहां आराम कर सकूं क्यूंकि मेरा नफ़्स मेरी सुवारी है अगर मैं ने इस के साथ नर्मी न बरती तो येह मुझे मेरी मन्ज़िल तक नहीं पहुंचाएगा।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الدعاء، باب الدعاء بلا نیة ولا عمل، الحدیث:٤،ج٧،ص٤٠.

2 ......الزهد للامام احمدبن حنبل، زهد ابی ذر، الحدیث:٧٩٢،ص١٦٩.

3 ......صفة الصفوة،الرقم٦٤ابو ذرجُندُب بن جُنَادة،ج١، ص٣٠١، مفهومًا.

4 ......الزهد لابن المبارك، باب فضل ذكرالله، الحدیث:١٣٣٧، ص٤٧٠، مختصراً.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसीहत भरा बयान :

﴾547﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने का'बे के पास खड़े हो कर फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं जुन्दब गिफ़ारी हूं। अपने शफ़्क़त व नसीहत करने वाले भाई के पास जम्अ़ हो जाओ ! सब लोग जम्अ़ हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''जब तुम में से कोई सफ़र पर जाता तो क्या वोह ज़ादे राह (या'नी सफ़र में काम आने वाला ज़रूरी सामान) साथ नहीं लेता जिस से ज़रूरिय्यात पूरी हों और अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सके ? लोगों ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं !'' फ़रमाया : ''तो सुनो ! क़ियामत का सफ़र सब से त़वील है। इस के लिये ख़ूब ज़ादे राह तय्यार करो जो तुम्हारे काम आ सके।'' हाज़िरीन ने पूछा : ''वोह क्या है जो इस में हमारे काम आए ?'' फ़रमाया : ''बड़े बड़े दुश्वार कामों से बचने के लिये ह़ज करो। रोज़े क़ियामत की गर्मी व तपिश से ह़िफ़ाज़त के लिये सख़्त गर्मी के दिनों में भी रोज़े रखो। क़ब्र की वह़शत व घबराहट से नजात ह़ासिल करने के लिये रात की तारीकी में नमाज़ अदा किया करो। ह़िसाब के दिन की पेशी के लिये अच्छी बात कहो और बुरी से बाज़ रहो। क़ियामत की सख़्तियों से बचने के लिये अपना माल सदक़ा करो। दुन्या में सिर्फ़ दो क़िस्म की मह़फ़िल इख़्तियार करो एक वोह जो त़लबे आख़िरत के लिये हो और दूसरी वोह जो त़लबे ह़लाल के लिये हो और इन के इ़लावा कोई तीसरी मह़फ़िल इख़्तियार न करना कि उस में तुम्हारे लिये कोई नफ़्अ़ नहीं बल्कि वोह तुम्हारे लिये नुक़्सान देह साबित होगी। इसी त़रह़ अपने माल को भी दो ह़िस्सों में बांट लो, एक ह़िस्सा अहलो इ़याल पर ख़र्च करो और दूसरा राहे ख़ुदा में ख़र्च कर के अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लो इन के इ़लावा कोई तीसरा ह़िस्सा मत बनाओ कि उस में सरासर नुक़्सान है, फ़ाइदा कुछ नहीं। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : ''लोगो ! ह़िर्स (से बचो कि इस) में तुम्हारे लिये हलाकत है क्यूंकि येह कभी ख़त्म नहीं होती और न ही तुम इसे पूरा कर सकते हो।''(1)

﴾548﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الصَّمَد से मरवी है कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमा रहे थे कि हमें हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़रमान पहुंचा : ''ऐ लोगो ! मैं तुम्हें नसीहत करता और तुम पर शफ़्क़त करता हूं। क़ब्र की वह़शत से बचने

---

(1) ......اخبار مکة للفاکھی،باب ذکر خطبة ابی ذر،الحدیث:١٩٠٤، ج٣، ص١٣٤۔
صفة الصفوة، الرقم٦٤، ابو ذر جُنْدُب بن جُنَادة ،ج١،ص٣٠١.

www.dawateislami.net

के लिये रात की तारीकी में नमाज़ अदा किया करो। क़ियामत की गर्मी से बचने के लिये रोज़े रखो और सख़्त दिन (या'नी महशर) के ख़ौफ़ से (हिफ़ाज़त के लिये) सदक़ा करो। ऐ लोगो ! मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह और तुम पर शफ़ीक़ हूं।"(1)

﴾549﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आयत बार बार पढ़ते और मुझे सुनाते :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

(پ۲۸،الطلاق:۲،۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।*(2)

﴾550﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! एक ऐसी आयत है कि अगर लोग उस पर अ़मल करें तो वोह उन्हें किफ़ायत करे।" इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सामने बार बार उस आयते करीमा की तिलावत फ़रमाई :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

(پ۲۸،الطلاق:۲،۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।*(3)

27 सुवालात व जवाबात :

﴾551﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब बैठ गया तो इरशाद फ़रमाया : "अबू ज़र ! दो रक्अ़त तहिय्यतुल मस्जिद अदा कर लो।" फ़रमाते हैं : मैं वहां से उठा नमाज़ अदा की और फिर ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हो कर बैठ गया और

---

1 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،زهدابی ذر،الحدیث:۸۰۲،ص۱۷۱ .

2 ......المعجم الاوسط ،الحدیث:۲۴۷۴،ج۲،ص۵۱۔

الزهد للامام احمد بن حنبل، باب زهد ابی ذر،الحدیث: ۷۹۰، ص۱۶۹.

3 ......الزهد للامام احمد بن حنبل ،زهد ابی ذر ،الحدیث: ۷۹۰،ص۱۶۹.

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने मुझे नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया, येह इरशाद फ़रमाएं कि नमाज़ क्या है ?"

इरशाद फ़रमाया : "नमाज़ कम हो या ज़ियादा इस में ख़ैर ही ख़ैर है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "अफ़्ज़ल तरीन अ़मल कौन सा है ?"

इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना और उस की राह में जिहाद करना।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "ईमान में कामिल कौन है ?"

इरशाद फ़रमाया : "सब से अच्छे अख़्लाक़ वाला।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "इस्लाम में कामिल कौन है ?"

इरशाद फ़रमाया : "जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे लोग मह़फ़ूज़ रहें।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "अफ़्ज़ल तरीन हिजरत कौन सी है ?"

इरशाद फ़रमाया : "गुनाहों को तर्क कर देना।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "अफ़्ज़ल नमाज़ कौन सी है ?"

इरशाद फ़रमाया : "जिस में क़ियाम त़वील हो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! रोजों के बारे में इरशाद फ़रमाइये "

इरशाद फ़रमाया : "रोज़े फ़र्ज़ हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इस का अज्र कई गुना है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "अफ़्ज़ल जिहाद कौन सा है ?"

इरशाद फ़रमाया : "जिस में घोड़े के पाउं कट जाएं और उस का ख़ून बह जाए।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "कैसा गुलाम आज़ाद करना अफ़्ज़ल है ?"

इरशाद फ़रमाया : "जो क़ीमती और मालिक को पसन्द हो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "अफ़्ज़ल सदक़ा कौन सा है ?"

इरशाद फ़रमाया : "माल कम होने की सूरत में भी फ़क़ीर की ह़ाजत रवाई करना।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "क़ुरआने ह़कीम की सब से बड़ी आयत कौन सी है ?"

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "आयतुल कुरसी ।" फिर फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! कुरसी और सातों आस्मानों की हैसिय्यत मैदान में पड़ी अंगूठी की मानिन्द है और अ़र्श की फ़ज़ीलत कुरसी पर ऐसी है जैसी मैदान की फ़ज़ीलत अंगूठी पर ।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'दाद कितनी है ?"

इरशाद फ़रमाया : "(कमो बेश) एक लाख चौबीस हज़ार (1,24000)"[1]

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कितने रसूल मबऊ़स फ़रमाए ?"

इरशाद फ़रमाया : "313 का जम्मे ग़फ़ीर ।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "येह कसरत तो अच्छी है ।"

फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! पहले नबी कौन हैं ?"

इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) ।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वोह नबिय्ये मुर्सल हैं ?"

इरशाद फ़रमाया : "हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपने दस्ते कु़दरत से पैदा फ़रमाया और उन में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी फिर सब से पहले उन्हें ठीक (या'नी सालिमुल आ'ज़ा) बनाया ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत में है कि "फिर सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से कलाम फ़रमाया ।" इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! **4 नबी सुरयानी हैं :** (1) ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام (2) ह़ज़रते शीस عَلَیْہِ السَّلَام (3) ह़ज़रते अख़नूख़ عَلَیْہِ السَّلَام और वोह इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام हैं और येह पहले अम्बिया है जिन्हों ने क़लम

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 52 पर है : "अम्बिया (عَلَیْہِمُ السَّلَام) की कोई ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं कि ख़बरें (या'नी अह़ादीस) इस बाब (या'नी बारे) में मुख़्तलिफ़ हैं और ता'दादे मुअ़य्यन (या'नी एक ता'दाद मख़्सूस कर के उस) पर ईमान रखने में नबी को नबुव्वत से ख़ारिज मानने (या'नी किसी नबी की नबुव्वत का इन्कार करने) या ग़ैरे नबी को नबी जानने का एह़तिमाल है और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं लिहाज़ा येह ए'तिक़ाद चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर नबी पर हमारा ईमान है ।"

www.dawateislami.net

से लिखा और (4) नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) । **और चार नबी अ़रबी हैं :** (1) हूद (عَلَيْهِ السَّلَام) (2) सालेह (عَلَيْهِ السَّلَام) (3) शोऐ़ब (عَلَيْهِ السَّلَام) और ऐ अबू ज़र ! (4) तेरे नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कितनी किताबें नाज़िल फ़रमाईं ?"

इरशाद फ़रमाया : "100 सहीफ़े और 4 किताबें। 50 सहीफ़े ह़ज़रते शीस (عَلَيْهِ السَّلَام) पर, 30 सहीफ़े ह़ज़रते इदरीस (عَلَيْهِ السَّلَام) पर, 10 सहीफ़े ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) पर और 10 सहीफ़े ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) पर तौरात से पहले नाज़िल किये। इस के इ़लावा तौरात, इन्जील, ज़बूर और क़ुरआने ह़कीम नाज़िल फ़रमाया।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के सह़ीफ़ों में क्या था ?"

इरशाद फ़रमाया : "वोह सब इ़ब्रत व नसीह़त पर मुश्तमिल थे उस में था कि ऐ दुन्या के धोके में मुब्तला बादशाह ! हम ने तुम्हें दुन्या इकठ्ठी करने नहीं भेजा बल्कि तुम्हें मज़्लूम की ह़ाजत रवाई करने के लिये भेजा है क्यूंकि मैं मज़्लूम की दुआ़ रद नहीं करता अगर्चे काफ़िर हो। उस में येह भी था कि अ़क़्लमन्द को चाहिये कि जब तक उस की अ़क़्ल मग़्लूब न हो अपने वक़्त को इस त़रह़ तक़्सीम करे कि एक घड़ी अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करे, एक घड़ी में अपना मुह़ासबा करे, एक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में ग़ौरो फ़िक्र करे और एक घड़ी खाने पीने के लिये छोड़ रखे। अ़क़्लमन्द सिर्फ़ तीन चीज़ों के लिये सफ़र करता है आख़िरत बनाने, रोज़ी कमाने, या ह़लाल चीज़ों से फ़ाइदा उठाने के लिये। अ़क़्लमन्द पर लाज़िम है कि अपने ज़माने के ह़ालात से वाक़िफ़, उस के मुआ़मलात से आगाह हो और अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे। बातें करने के बजाए काम करे और उस का कलाम फ़ुज़ूल बातों पर मुश्तमिल न हो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के सह़ीफ़ों में क्या था ?"

इरशाद फ़रमाया : "उन तमाम में इ़ब्रत का बयान था कि तअ़ज्जुब है उस पर जो मौत का यक़ीन रखता है फिर भी ख़ुश होता है। तअ़ज्जुब है उस पर जो तक़्दीर पर ईमान रखता है फिर भी रिज़्क़ की तलाश में मारा मारा फिरता है। तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या की ह़क़ीक़त से आगाह

www.dawateislami.net

है फिर भी उसे क़बूल कर के मुत्मइन हो जाता है और तअ़ज्जुब है उस पर जिसे यक़ीन है कि कल उसे हि़साब देना है फिर भी नेक आ'माल नहीं करता।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे नसीहत फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं क्यूंकि तक़्वा तमाम अच्छे आ'माल की बुन्याद है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआने मजीद की तिलावत अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि येह ज़मीन में तुम्हारे लिये नूर और आस्मानों में तुम्हारे तज़्किरे का बाइ़स है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "ज़ियादा हंसने से बचो क्यूंकि इस से दिल मुर्दा और चेहरा अफ़्सुर्दा हो जाता है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "अच्छी बात के सिवा कुछ न कहो। शैत़ान तुम से दूर भागेगा और नेकियों में मदद मिलेगी।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "जिहाद को लाज़िम पकड़ो। येह मेरी उम्मत की रहबानिय्यत है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "ग़रीबों से महृब्बत और उन की सोह़बत इख़्तियार करो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !"

इरशाद फ़रमाया : "(दुन्यवी मुआ़मलात में) अपने से कम दरजे वालों को देखो बुलन्द दरजे वालों (या'नी अपने से ज़ियादा मालदारों) की त़रफ़ न देखो कि तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की कमी का एह़सास हो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद नसीहत फ़रमाएं !"

इरशाद फ़रमाया : "अपने रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करो अगर्चे वोह तुम से क़त़ए तअ़ल्लुक़ी कर लें।" **मज़ीद फ़रमाया : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में किसी की मलामत से न डरो और ह़क़ बात कहो अगर्चे कड़वी हो।"

www.dawateislami.net

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइये !"
इरशाद फ़रमाया : "दूसरों की उन ख़ामियों पर ए'तिराज़ न करो जो तुम्हारे अन्दर पाई जाती हैं और उन कामों पर गुस्सा न करो जिन्हें तुम खुद भी करते हो और किसी की ग़ीबत के लिये येही बात काफ़ी है कि तुम उस के बारे में ऐसी बात कहो जिसे अपने लिये बुरा जानते हो या दूसरों के उन कामों पर गुस्सा करो जिन्हें तुम खुद भी करते हो।"

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस मेरे सीने पर मार कर फ़रमाया : 'ऐ अबू ज़र ! किफ़ायत शिआ़री से बढ़ कर कोई अ़क़्लमन्दी नहीं, गुनाहों को छोड़ने से बढ़ कर कोई तक़्वा व परहेज़गारी नहीं और हुस्ने अख़्लाक़ से बढ़ कर कोई शराफ़त नहीं।"(1)

﴾552﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "एक दिन हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं ने इस तन्हाई को ग़नीमत जाना। फिर पिछली ह़दीस की त़रह़ बयान फ़रमाया अलबत्ता इस रिवायत में इतना ज़ाइद है कि मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम व हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सहीफ़ों की कोई ऐसी बात इरशाद फ़रमाइये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी नाज़िल फ़रमाई हो।" इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! पढ़ो :

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿۱۵﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا ﴿۱۶﴾ وَ الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿۱۷﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿۱۸﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى ﴿۱۹﴾ (پ۳۰،الاعلی:۱۴تا۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी बल्कि तुम जीती दुन्या को तरजीह़ देते हो और आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली बेशक येह अगले सहीफ़ों में है इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।*(2)

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البر، باب ماجاء في الطاعات وثوابها، الحديث:۳۶۲، ج۱، ص۲۸۷۔
المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی ذر الغِفَاری، الحديث:۲۱۵۵۶، ج۸، ص۱۱۷۔
المعجم الكبير، الحديث:۱۶۵۱، ج۲، ص۱۵۷۔

2 ......الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم۲۱۴۲ يحيی بن سعيد السعدی، ج۹، ص۱۰۷۔
كتاب الثقات لابن حبان، السنة العاشرة من الهجرة، ج۱، ص۱۵۰۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانِی फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अक्सर बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर रहते और हम नशीनी का शरफ़ पाते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल करने और मसाइल याद करने के मुआमले में हरीस थे और जो इस्तिफ़ादा करते उस पर हमेशा पाबन्द रहा करते। उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ईमान, एहसान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार और उस के पसन्दीदा कलाम के बारे में इस्तिफ़्सार किया नीज़ शबे क़द्र के बारे में सुवाल किया कि क्या वोह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ उठा ली जाएगी या बाक़ी रहेगी ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हर चीज़ के बारे में सुवाल किया यहां तक कि नमाज़ में कंकरियों को छूने के बारे में भी दरयाफ़्त किया। चुनान्चे,

﴾553﴿.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने हर चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया यहां तक कि नमाज़ में कंकरियों के छूने के मुतअ़ल्लिक़ भी। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक मरतबा हटा लो या छोड़ दो[(1)]।[(2)]

﴾554﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ुरज़ी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रब्ज़ा की तरफ़ निकले तो आप का वक़्ते विसाल क़रीब आ गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों को वसिय्यत करते हुवे फ़रमाया : "मुझे ग़ुस्ल दे कर, कफ़न पहना कर रास्ते में डाल देना फिर सब से पहले गुज़रने वाले क़ाफ़िले से मेरा हाल बयान करना कि येह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी अबू ज़र हैं। इसे दफ़्नाने में हमारी मदद करो।" चुनान्चे, सब से पहले हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अहले इराक़ के क़ाफ़िले के साथ गुज़र हुवा।[(3)]

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़हा 625 पर सदरुश्शरीआ़ हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "(नमाज़ में) कंकरियां हटाना मकरूहे तह़रीमी है, मगर जिस वक़्त कि पूरे त़ौर पर बर वज्हे सुन्नत सजदा अदा न होता हो, तो एक बार की इजाज़त है और बचना बेहतर है और अगर बिग़ैर हटाए वाजिब अदा न होता हो तो हटाना वाजिब है, अगर्चे एक बार से ज़ियादा की ह़ाजत पड़े। (الدرمختاروردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ......الخ،ج۲،ص۴۹۳)

2.....المسندللامام احمد بن حنبل،حدیث ابی ذرالغِفَاری،الحدیث:۲۱۵۰۲،ج۸،ص۱۰۲.

3.....الطبقات الکبرٰی لابن سعد،الرقم۴۳۲ابوذَر،ج۴،ص۱۷۷.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले पुर मलाल :

﴾555﴿.....हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो मैं रो पड़ी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रोने की वज्ह पूछी तो मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कफ़न का कोई बन्दोबस्त नहीं है, न तो मेरे कपड़ों में ऐसा कोई कपड़ा है और न ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास कोई ऐसा कपड़ा है जो कफ़न को किफ़ायत करे।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मत रो ! बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ऐसी जमाअ़त से फ़रमाया जिस में मैं भी शामिल था कि "तुम में से एक शख़्स सहरा में वफ़ात पाएगा और मोमिनीन की एक जमाअ़त उस के जनाज़े में हाज़िर होगी।" अब उस जमाअ़त में से सिर्फ़ मैं ही बचा हूं जो सहरा में फ़ौत हो रहा हूं क्यूंकि बाक़ी सब किसी बस्ती या मुसलमानों की जमाअ़त में फ़ौत हुवे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न मैं ने झूट बोला और न मुझ से झूट बोला गया।" ज़ौजए मोहतरमा ने अ़र्ज़ की : "अब तो हुज्जाज के क़ाफ़िले भी आना बन्द हो गए हैं। फिर मज़ीद क़ाफ़िला देखने के लिये टीले पर चढ़ीं तो अचानक दूर से उन्हें एक क़ाफ़िला नज़र आया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا कपड़ा हिला हिला कर उन्हें अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने लगीं यहां तक कि वोह क़ाफ़िला आप के पास आ कर रुक गया और पूछा : "क्या बात है ?" हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "एक मुसलमान मरने के क़रीब है उस के कफ़न व दफ़्न का बन्दोबस्त करो।" क़ाफ़िले वालों ने पूछा : "वोह कौन है ?" फ़रमाया : "अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।"

चुनान्चे, क़ाफ़िले वालों ने अपने ऊंटों को हांका और अपने कोड़ों को उन की गर्दनों के साथ बांध कर जल्दी जल्दी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हाज़िर हुवे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम्हें बिशारत हो ! क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक ऐसी जमाअ़त से कि जिस में, मैं भी शामिल था येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "तुम में से एक शख़्स सहरा में वफ़ात पाएगा और मोमिनीन की एक जमाअ़त उस के जनाज़े में हाज़िर होगी।" लिहाज़ा इन में से हर शख़्स किसी गाऊं या जमाअ़त में फ़ौत हुवा और मैं सहरा में फ़ौत हो रहा हूं। तुम सुन रहे हो कि अगर मेरे पास या मेरी बीवी के पास इतना कपड़ा होता जो मेरे कफ़न के लिये काफ़ी होता तो मुझे सिर्फ़ उसी कपड़े का कफ़न पहनाया जाता। मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और इस्लाम का वासित़ा देता हूं कि मुझे कोई ऐसा शख़्स कफ़न न दे जो किसी अ़लाक़े का अमीर, नुजूमी, सरकारी मुलाज़िम या डाकिया हो।"

www.dawateislami.net

चुनान्चे, क़ाफ़िले वालों में सिवाए एक अन्सारी नौजवान के कोई भी ऐसा न था जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कही हुई तमाम बातें पाई जाती हों। उस नौजवान ने अ़र्ज़ की : "ऐ चचा ! मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़न दूंगा क्यूंकि जो बातें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाई हैं मैं उन से ख़ाली हूं। मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ऊपर ओढ़ी हुई चादर और उन दो कपड़ों में कफ़न दूंगा जो मेरी वालिदा ने मेरे लिये सूत से तय्यार किये हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम ही मुझे कफ़न देना।" लिहाज़ा अन्सारी नौजवान ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़न दिया हालांकि उस क़ाफ़िले में ह़ज़रते सय्यिदुना हुजर बिन अदबर और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक अश्तर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी मौजूद थे और येह सारे के सारे यमनी थे।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सातवें नम्बर पर इस्लाम क़बूल किया। हुकूमत व सल्त़नत से बिल्कुल दिल न लगाते थे। शहरों और मुल्कों की इमारत को भी ठुकरा देते थे। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा में मस्जिद व मिम्बर की ता'मीर करवाने के बा'द इमारत से मुस्ता'फ़ी हो गए, रब्ज़ा में वफ़ात पाई। दुन्या की ना पाईदारी व बे सबाती और ह़वादिसे ज़माना पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ुत़बा मश्हूर है।

ह़क़ीक़ते दुन्या को बे निक़ाब करने वाला बयान :

﴾556﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें ख़ुत़बा देते हुवे फ़रमाया : "ऐ लोगो ! बिलाशुबा दुन्या अपने फ़ना हो जाने का ए'लान कर चुकी है और पीठ फेरे जा रही है इस में से सिर्फ़ इतना बाक़ी है जितना कि तिलछट (या'नी बरतन की तह में रह जाने वाली चीज़)। सुनो ! तुम उस घर में मुक़ीम हो जहां से एक दिन ज़रूर तुम्हें निकलना है। इस लिये जहां तक हो सके नेक आ'माल ले कर इस घर से जाओ। मैं इस बात से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं कि अपने आप को बड़ा समझूं जब कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां छोटा हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे बा'द

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب اخبارہ عمایکون فی امتہ من الفتن والحوادث، الحدیث:٦٦٣٥/٦٦٣٦، ج٨، ص٢٣٤.

www.dawateislami.net

हुक्मरानों को आज़्माइशों का सामना करना पड़ेगा। ब ख़ुदा ! ख़िलाफ़ते नबुव्वत (या'नी ख़िलाफ़ते राशिदा) ख़त्म हो चुकी है और अब सिर्फ़ अमारत व हुकूमत रह गई है। मैं उन सात सहाबा में से सातवां हूं जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ होते थे, हमारे पास खाने को सिर्फ़ दरख़्तों के पत्ते हुवा करते थे जिन्हें खा कर हम गुज़ारा किया करते और उन्हें खाने की वज्ह से हमारे जबड़े ज़ख़्मी हो जाया करते थे। एक बार मुझे एक चादर मिली मैं ने उस के दो टुकड़े कर के आधी ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दी और आधी ख़ुद ओढ़ ली। येह उस वक़्त के ह़ालात थे जब कि आज उन अफ़राद में से जो भी ज़िन्दा है वोह किसी न किसी अ़लाक़े का ह़ाकिम है। हाए अफ़्सोस ! जहन्नम इस क़दर गहरा है कि अगर उस के किनारे से एक पथ्थर फेंका जाए तो 70 साल में उस की निचली सत़ह़ तक पहुंचे। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जहन्नम को ज़रूर भरा जाएगा और क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं कि जन्नत के हर दो दरवाज़ों के दरमियान चालीस साल का सफ़र है और एक दिन ऐसा आएगा कि उस का हर दरवाज़ा रश की वज्ह से चर चरा उठेगा।"[1]

दरख़्तों के पत्ते खा कर गुज़ारा कर लेते :

﴾557﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं उन सात सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) में से सातवां हूं जो हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे। उस ज़माने में हमारे पास खाने के लिये दरख़्तों के पत्तों के सिवा कुछ नहीं होता था यहां तक कि हम इस त़रह़ क़ज़ाए ह़ाजत करते थे जिस त़रह़ बकरी मेंगनियां करती हैं और उस में कोई चीज़ मिली हुई नहीं होती।"[2]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزھد، باب الدنیا سجن للمؤمن و جنة للکافر، الحدیث:٧٤٣٥، ص١١٩٢، بتغیر.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٢٨٥، ج١٥-١٧، ص١١٦۔
المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث:١٤٩٨، ج١، ص٣٦٨.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पूरा नाम मिक़्दाद बिन अ़म्र बिन सा'लबा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। इस्लाम क़बूल करने में सब्क़त करने वाले और मैदाने जंगो जिदाल के अ़ज़ीम शह सुवारों में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पानी पिलाने और खाना खिलाने का अ़ज़्म किया तो ह़ाकिमीन से तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर दिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर दलाइल रौशन हुवे और अ़लामतें खुल गईं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिहाद व इबादत को दीगर उमूर पर तरजीह़ दिया करते थे।

लोहे का लिबास और तपती ज़मीन :

﴾558﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : सब से पहले जिन्हों ने दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त की वोह सात शख़्सिय्यात हैं : (1) नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (2) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (3) हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (4) उम्मे अ़म्मार हज़रते सय्यिदतुना सुमय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) (5) हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (6) हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (7) हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा (अबू त़ालिब) के ज़रीए करवाई और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़िफ़ाज़त उन की क़ौम से करवाई और इन के इ़लावा दूसरे मुबल्लिग़ीन को मुशरिकीन लोहे के लिबास पहना कर तपती धूप में डाल दिया करते थे।"[1]

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे :

﴾559﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिदे माजिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे चार बन्दों

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب في فضائل اصحاب رسول الله......الخ، الحديث: ١٥٠، ص٢٤٨٦.

www.dawateislami.net

से महब्बत करने का हुक्म दिया और फ़रमाया : "मैं भी उन से महब्बत करता हूं।" ऐ अ़ली ! तुम उन में से हो और मिक्दाद, अबू ज़र और सलमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) भी उन में से हैं।"(1)

﴾560﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं : मुझे हज़रते सय्यिदुना मिक्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की सोहबत में बैठना रूए ज़मीन की हर चीज़ से ज़ियादा पसन्द है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मैदाने जंग के शह सुवार थे। एक बार सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए नूर बार जलाल की वज्ह से सुर्ख़ था उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना मिक्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बिशारत हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस तरह नहीं कहेंगे जिस तरह बनी इस्राईल ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा था कि :

فَاذۡهَبۡ اَنۡتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوۡنَ ﴿۲۴﴾ (پ٦،المائدة:٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं।

बल्कि उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाएं बाएं आगे पीछे हर तरफ़ से लड़ेंगे यहां तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़त्ह़ अ़ता फ़रमा दे।"(2)

जां निसाराने मुस्त़फ़ा :

﴾561﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इस्हाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मरवी है कि जब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बद्र तशरीफ़ ले जाने लगे तो अपने जां निसार सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن से मश्वरा किया। हज़रते सय्यिदुना मिक्दाद बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो हुक्म दिया है आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस पर अ़मल फ़रमाएं हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हैं।

1 ......سنن ابن ماجه،كتاب السنة،باب فی فضائل اصحاب رسول اللّٰه......الخ،الحديث: ١٤٩، ص٢٤٨٦.

2 ......المسند للامام احمد حنبل،مسند عبد اللّٰه بن مسعود،الحديث:٤٣٧٦،ج٢،ص١٨٠۔
البحرالزخارالمعروف بمسند البزار، مسند عبد اللّٰه بن مسعود،الحديث:١٤٥٥،ج٤،ص٢٨٤۔
تاريخ الطبری،ذكر وقعة بدرالكبرى،الرقم ٨٩،ج٢، ص٩٤.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वोह न कहेंगे जो बनी इस्राईल ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा था कि :

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾ (پ۶، المائدة:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं ।*

बल्कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मिल कर कुफ़्फ़ार से जंग करेंगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें बरकुल ग़िमाद (या'नी ह़बशा व यमन के शहरों में) ले चलें तो हम वहां जा कर भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद में शरीक होने को तय्यार हैं ।" इस पर जाने काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ता'रीफ़ फ़रमाई और उन के लिये दुआ़ए ख़ैर की ।[1]

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मेहमान :

﴾562﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं ने और मेरे दो रफ़ीक़ों ने इस क़दर मशक़्क़त उठाई कि हमारी आंखें और कान ज़ाएअ़ होने के क़रीब हो गए । हम मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم اَجْمَعِين से मिलते रहे लेकिन किसी ने भी हम पर तवज्जोह न दी । बिल आख़िर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें अपनी रिहाइश गाह पर ले गए उस वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले बैत के पास तीन बकरियां थीं जिन का दूध आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान तक़्सीम फ़रमाते और हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िस्सा अलग कर दिया करते । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब रात को तशरीफ़ लाते तो इतनी आवाज़ में सलाम फ़रमाते कि सोने वालों की नींद में ख़लल न आता और बेदार ब आसानी सुन लेता ।"

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "एक दिन शैत़ान ने मेरे दिल में वस्वसा डाला कि अन्सार हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करते ही रहते हैं । इस लिये आज अगर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़िस्से का दूध भी तू पी लेगा तो इस में कोई ह़रज नहीं है ।" फ़रमाते हैं :

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرى، ابو بكر وعمر والمقداد و كلماتهم فى الجهاد، ص٢٥٣ .

www.dawateislami.net

"शैतान की तरफ़ से इस तरह के ख़यालात आते रहे यहां तक कि मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हिस्से का दूध भी पी लिया। लेकिन पीने के बा'द मुझे शर्मिन्दगी होने लगी (और इस तरह के ख़यालात आने लगे) कि येह मैं ने क्या किया ? जब सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएंगे और अपने हिस्से का दूध नहीं पाएंगे तो मुझे हलाकत की दुआ देंगे और मैं हलाक हो जाऊंगा। मेरे दोनों रफ़ीक़ तो अपने अपने हिस्से का दूध पी कर सो चुके थे लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। मेरे पास एक चादर थी जिसे मैं सर पर औढ़ता तो पाउं से हट जाती और पाउं पर डालता तो सर ख़ाली रह जाता। इतने में हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मा'मूल के मुताबिक़ तशरीफ़ ले आए फिर जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा नमाज़ अदा फ़रमाई। नमाज़ से फ़रागत के बा'द जब अपने हिस्से का दूध तलाश फ़रमाया तो कुछ न पाया। फिर दुआ के लिये हाथ उठा दिये मैं ने कहा : अब आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये बद दुआ फ़रमाएंगे और मैं हलाकत में जा पड़ूंगा। लेकिन आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई : **اَللّٰھُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ** या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस ने मुझे खिलाया उसे खिला और जिस ने मुझे पिलाया उसे पिला।"

हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने छुरी, चादर उठाई और एक फ़र्बा बकरी की तलाश में चल दिया ताकि उसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ज़ब्ह कर लाऊं लेकिन देखा तो सब बकरियां दूध से भरी थीं। मैं ने अहले बैत के खाने का बरतन लिया दूध दोह कर उस बरतन में भर लाया और बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में पेश कर दिया। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में से कुछ दूध नोश फ़रमाया। फिर मुझे अता कर दिया। मैं ने उस में से पिया फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नोश फ़रमाया फिर मुझे अता फ़रमाया मैं ने फिर पिया। इस क़दर बरकत देख कर मैं हंस पड़ा और बक़िय्या दूध ज़मीन पर डाल दिया। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ मिक़्दाद ! येह बुरी बात है।" मैं ने सारी बात कह सुनाई तो इरशाद फ़रमाया : "येह तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत है अगर तुम अपने दोनों रफ़ीक़ों को उठा देते तो वोह भी सैर हो जाते।" मैं ने अर्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाने वाले रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूध नोश फ़रमा लिया और मैं ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बचा हुवा पी लिया तो मुझे इस की परवाह न रही कि कौन रह गया है।"(1)

---

(1)......مسند داود الطيالسی ،المقداد بن الاسود ،الحديث:١١٦٠،ص١٥٨.

www.dawateislami.net

﴾563﴿.....हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब हम मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا पहुंचे तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 10-10 के हल्क़े बना दिये यूं हर मकान में 10 अफ़राद थे और मैं उन 10 अफ़राद में था जो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे। हमारे पास एक ही बकरी थी हम उसी का दूध पी कर गुज़ारा किया करते थे।"(1)

﴾564﴿.....हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक बार सरकारे वाला तबार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे किसी काम की अदाएगी के लिये लोगों पर हाकिम मुक़र्रर फ़रमाया जब मैं लौट कर दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम ने इमारत को कैसा पाया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे यूं लगा जैसे सब लोग मेरे ग़ुलाम हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं पूरी ज़िन्दगी किसी काम पर अमीर नहीं बनूंगा।"(2)

﴾565﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक बार हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक सरिय्ये पर अमीर बना कर भेजा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब वापस लौटे तो हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू मा'बद ! (येह हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है।) इमारत को कैसा पाया ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी ख़िदमत व इ़ज़्ज़त की जाती थी जिस से मैं समझा कि मुझे लोगों पर फ़ज़ीलत हासिल है।" सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह बात तो है ! अब तुम्हारी मरज़ी इसे क़बूल करो या छोड़ दो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! मैं आइन्दा दो आदमियों पर भी कभी अमीर नहीं बनूंगा।"(3)

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٥٦٩، ج٢٠، ص٢٤٠.

2 ......الزهد الكبير للبيهقى، فصل فى ترك الدنيا ومخالفة النفس والهوى، الحديث:٣٠٦، ص١٤٨.

3 ......مجمع الزوائد، كتاب الخلافة، باب كراهة الولاية......الخ، الحديث:٩٠٢٤، ج٥، ص٣٦٤، بتغيرقليل.

www.dawateislami.net

दिल बदलता रहता है :

﴾566﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन जुबैर बिन नुफ़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी काम से हमारे पास तशरीफ़ लाए। हम ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को आ़फ़िय्यत बख़्शे ! तशरीफ़ रखिये ! हम आप की ह़ाजत पूरी किये देते हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठ गए और फ़रमाने लगे : तअ़ज्जुब है उन पर जिन के पास से गुज़र कर मैं आया कि वोह फ़ितने की तमन्ना करते हैं और समझते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन को उन मसाइब में मुब्तला करेगा जिन में सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को मुब्तला किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "ख़ुश बख़्त है वोह जो फ़ितनों से मह़फ़ूज़ रहा।" येह बात तीन मरतबा इरशाद फ़रमाई फिर फ़रमाया : "अगर इसे मुब्तला कर दिया जाए तो सब्र से काम ले।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जब तक किसी की मौत का ह़ाल न जान लूं उस के जन्नती होने की गवाही नहीं देता क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी का दिल हन्डिया के जोश मारने से भी जल्दी बदलता रहता है।"[1]

रफ़ाक़ते मुस्त़फ़ा की तड़प :

﴾567﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन नुफ़ैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक दिन हम हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बैठे हुवे थे कि एक शख़्स वहां से गुज़रा उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा तो कहा : "ख़ुश बख़्त हैं वोह आंखें जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम भी ख़्वाहिश रखते हैं कि काश ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ हम भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होते, मुख़्तलिफ़ जंगों में शरीक होते और हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी बातें सुनते।"

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٥٩٨،ج٢٠ص٢٥٢.

www.dawateislami.net

रावी कहते हैं : मुझे इस की बातों पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि येह कितनी अच्छी बातें कर रहा है। ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "तुम में से किसी शख़्स को इस बात की तमन्ना नहीं करनी चाहिये जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे दूर रखा क्यूंकि उसे क्या पता कि अगर उस दौर में होता तो उस के साथ क्या मुआ़मला पेश आता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! कितने लोग ऐसे हैं जिन्हों ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक ज़माना पाया मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें औंधे मुंह जहन्नम में गिरा देगा क्यूंकि उन्हों ने न तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल की और न ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ की। तो क्या तुम इस बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं करते कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही को मा'बूद मानते हो और उस के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लाए हुवे अह़कामात की तस्दीक़ करते हो और तुम्हें बचा कर दूसरे लोगों को आज़माइश में मुब्तला किया गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में से सब से सख़्त ह़ालात में मबऊ़स किया गया। येह जहालत और दीन से दूरी का दौर था। उस दौर में मुशरिकीन सब से अफ़्ज़ल दीन, बुतों की इ़बादत समझते थे।

चुनान्चे, हादिये बर ह़क़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे दलाइल ले कर आए जिन्हों ने ह़क़ व बात़िल के दरमियान इम्तियाज़ कर दिया। ईमान व कुफ़्र की बुन्याद पर बाप बेटे के दरमियान जुदाई हो गई यहां तक कि बा'ज़ ऐसे लोग भी हुवे कि जिन का वालिद, बेटा और भाई काफ़िर लेकिन इस के बा वुजूद वोह ख़ुद मुसलमान क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन का दिल ईमान के लिये खोल दिया था। उन्हें इस बात का यक़ीन था कि जहन्नम में जाने वाला तबाहो बरबाद है लेकिन जहन्नम से बचने के बा वुजूद उन की आंखें ठन्डी न होती थीं क्यूंकि उन का भाई, बेटा और वालिद ब सबबे कुफ़्र जहन्नम के ह़क़दार होते थे। येही वोह बात है जिस के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें दुआ़ करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया :

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ (پ۱۹، الفرقان:۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ हमारे रब ! हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक।*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث المقداد بن الاسود، الحديث: ۲۳۸۷۱، ج۹، ص۲۱۴۔
المعجم الكبير، الحديث: ۶۰۰، ج۲۰، ص۲۵۳۔

www.dawateislami.net

अमीरे लश्कर से मुआफ़ी मंगवाई :

﴾568﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक "सरिय्या" में थे। दुश्मनों ने उस लश्कर का मुह़ासरा कर लिया। लश्कर के अमीर ने ए'लान किया : "कोई शख़्स अपनी सुवारी को खड़ा न करे।" एक शख़्स ने जिसे इस ए'लान का पता न चला अपनी सुवारी को खड़ा कर दिया। अमीरे लश्कर ने इस पर उसे सज़ा दी तो वोह येह कहते हुवे चल दिया : "आज जैसा सुलूक मेरे साथ किया गया ऐसा कभी नहीं देखा गया।" ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के पास गए और पूछा : "क्या हुवा ?" उस ने सारा क़िस्सा बयान कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तल्वार सोंती और उसे ले कर अमीरे लश्कर के पास पहुंचे और अमीर से कहा : "इस शख़्स से मुआफ़ी मांगो !" मुआफ़ी मांगने पर उस शख़्स ने अमीरे लश्कर को मुआफ़ कर दिया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस लौटे तो वोह शख़्स कह रहा था : "मैं इस्लाम की मह़ब्बत में मरूंगा (या'नी इस्लाम की ख़ातिर अपनी जान भी कुरबान कर दूंगा।)"(1)

﴾569﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राशिद हुबरानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिला उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िम्स में एक ताबूत पर सुवार जिहाद के इरादे से तशरीफ़ ले जा रहे थे। जिस ताबूत पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवार थे वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शायाने शान न था मैं ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूर क़रार दिया है।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते करीमा भी नाज़िल फ़रमाई है :

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّ ثِقَالًا (پ۱۰، التوبۃ:۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कूच करो हल्की जान से चाहे भारी दिल से।(2)

1 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر ، الرقم۷۶۱۸ مِقْدَاد بن عمرو بن ثعلبۃ، ج۶۰،ص۱۷۲ .

2 ......المستدرک،کتاب الجھاد،باب ذکر سورۃ التوبۃ،الحدیث:۲۵۹۷،ج۲،ص۴۵۰ ۔
المعجم الکبیر،الحدیث:۵۵۶، ج۲۰،ص۲۳۶ .

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा

(رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا)

हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हाफ़िज़ भी थे और क़ारी भी। इमाम भी और मुहिब्बे इस्लाम भी। मुफ़स्सिरे क़ुरआन भी और मुख़्लिस इबादत गुज़ार भी।

﴾570﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआन 4 अश्ख़ास से सुना करो ! फिर उन के नाम ज़िक्र फ़रमाए : (1) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (2) हज़रते सालिम (3) हज़रते उबय बिन का'ब और (4) हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن)"[1]

﴾571﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : "जब मुहाजिरीने अव्वलीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मदीना शरीफ़ आमद से पहले हिजरत कर के मक़ामे क़ुबा में पहुंचे तो हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन की इमामत फ़रमाते थे क्यूंकि येह उन सब से ज़ियादा क़ुरआन पढ़ा करते थे।[2] इन की इक़्तिदा में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) भी नमाज़ पढ़ते थे।"[3][4]

1.....صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب،من فضائل عبد اللّٰہ بن مسعود وامہ،الحدیث: ۶۳۳۸، ص ۱۱۱۰.

2.....صحیح البخاری،کتاب الاذان،باب امامۃ العبد والمولی، الحدیث:۶۹۲،ص ۵۵.

3.....صحیح البخاری کتاب الاحکام،باب استقضاء الموالی واستعمالھم،الحدیث:۷۱۷۵، ص۵۹۸.

4.....इस ह़दीस पर एक इश्काल वारिद होता है कि "हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا तशरीफ़ लाने से पहले क़ुबा में जिन मुहाजिरीने अव्वलीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की इमामत किया करते थे उन में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी शामिल थे, ह़ालांकि उन्हों ने तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत की थी।" हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی ने इस का जवाब येह दिया है कि "मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا तशरीफ़ आवरी के बा'द जब कि मस्जिदे नबवी علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام अभी ता'मीर नहीं हुई थी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर क़ियाम फ़रमा थे, उस वक़्त भी हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (क़ुबा में) मुहाजिरीने अव्वलीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की इमामत किया करते थे। लिहाज़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब क़ुबा की जानिब तशरीफ़ ले जाते तो उन की इक़्तिदा में नमाज़ अदा फ़रमाते।" (فتح الباری لابن حجر،کتاب الاحکام، باب استقضاء الموالی واستعمالھم،تحت الحدیث:۷۱۷۵،ج۱۴، ص۱۴۵، ملخصًا)

www.dawateislami.net

महब्बते इलाही से सरशार :

﴾572﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को याद करते हुवे फ़रमा रहे हैं : "बिलाशुबा सालिम, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा महब्बत रखता है ।"(1)

﴾573﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मरज़ुल मौत में फ़रमाया : मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "सालिम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा महब्बत करता है अगर इसे ख़ौफ़े ख़ुदा न होता तो उस की ना फ़रमानी करता ।"(2)

﴾574﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं ह़ज़रते सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बना दूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाए कि "ऐ उ़मर ! तुझे किस बात ने सालिम को ख़लीफ़ा बनाने पर आमादा किया ?" तो मैं अ़र्ज़ करूंगा : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि "येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को दिल से महबूब रखता है ।"(3)

नमाज़ी व रोज़ादार भी अ़ज़ाबे नार में गिरिफ़्तार !

﴾575﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कुछ ऐसे लोगों को लाया जाएगा जिन की नेकियां मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के पहाड़ों की मिस्ल होंगी जब वोह ह़ाज़िर होंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की नेकियों को गर्दो ग़ुबार कर के उन्हें जहन्नम में डाल देगा । ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

---

1 ......فردوس الاخبار للدیلمی ،باب الالف،الحدیث:۸۹۶،ج۱،ص۱٤٠.

2 ......فردوس الاخبار للدیلمی ،باب الالف،الحدیث:۸۹۶،ج۱،ص۱٤٠.

3 ......فضائل الصحابۃ للامام احمد بن حنبل ،باب فضائل ابی عبیدۃ بن الجراح ، الحدیث:۱۲۸۷،ج۲،ص۷٤۲.

www.dawateislami.net

मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! हमें उन के बारे में बताएं ताकि हम उन्हें पहचान पाएं। उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं मैं भी उन के ज़ुमरे में न शामिल हो जाऊं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सालिम ! येह लोग नमाज़ व रोज़े के पाबन्द होंगे लेकिन जब इन्हें कोई ह़राम चीज़ मयस्सर आएगी तो (बिग़ैर तह़क़ीक़ किये) उस पर टूट पड़ेंगे पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के आ'माल बरबाद फ़रमा देगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह निफ़ाक़ है।" ह़ज़रते सय्यिदुना मा'ला बिन ज़ियाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد ने अपनी दाढ़ी पकड़ कर फ़रमाया : ऐ अबू यह़्या (येह ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की कुन्यत है) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सच फ़रमाया, येही निफ़ाक़ है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अ़तिय्यात व जागीर से बे रग़बत थे, ग़ज़्वए बद्र में शरीक हुवे। मस्जिदों और दीगर कई मक़ामात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से आबाद किया। निहायत समझदारी व महारत से फ़ितनों व आज़्माइशों वाले उमूर में पड़ने से बचते थे। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इ़ज़्ज़त व करामत के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर की और बिल आख़िर सलामती के साथ अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले।

﴿576﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : मैं ने सुना कि फ़ितनों के ज़माने में एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه नमाज़ अदा कर के सोए तो किसी ने ख़्वाब में उन से कहा : "उठो और उस फ़ितने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो जिस से उस के नेक बन्दे पनाह त़लब करते हैं।" चुनान्चे, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उठे, नमाज़ पढ़ी और इस क़दर बीमार हुवे कि घर से न निकल पाए यहां तक कि इन्तिक़ाल फ़रमा गए।"(2)

---

1 ......موسوعة للامام ابن ابى الدنيا، كتاب الاهوال، باب ذكر القصاص و المظالم، الحديث: ٣٠٧، ج٦، ص٢٦١، بتغير قليل.

2 ......الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم ٦٠ عامر بن ربيعة، ج٣، ص٢٩٦.

www.dawateislami.net

﴾577﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि जब लोगों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ए'तिराज़ात करने शुरूअ़ किये तो मेरे वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रात उठ कर नमाज़ पढ़ी और येह दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस फ़ितने से मह़फ़ूज़ फ़रमा जिस से तू ने अपने नेक बन्दों को मह़फ़ूज़ रखा।" रावी कहते हैं : "इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी घर से बाहर न निकले यहां तक कि इन्तिक़ाल फ़रमा गए।"(1)

﴾578﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में फ़ितने ने सर उठाया तो एक शख़्स ने अपने घर वालों से कहा : "मुझे ज़न्जीरों से बांध दो ! मैं पागल हूं।" जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया गया तो उस ने कहा : "मेरी ज़न्जीरें खोल दो ! तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे जुनून से शिफ़ा बख़्शी और अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़त्ल जैसे अ़ज़ीम जुर्म से मुझे बचाए रखा।"(2)

येह रिवायत मा'मर के इ़लावा दीगर लोगों ने भी इब्ने त़ाऊस से बयान की है और उन्हों ने इस बात की सराह़त की है कि येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है।

﴾579﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक अ़रबी उन के पास आया तो उन्हों ने उस का इकराम किया और उसे बेहतरीन जगह ठहराया। फिर उस की ज़रूरिय्यात के मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की। फिर एक और शख़्स ने उन के पास आ कर कहा : "मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़रब की बेहतरीन ज़मीन से एक ह़िस्सा पेश किया है और ऐसी ही ज़मीन का एक टुकड़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी पेश करना चाहता हूं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद को काम आए।" ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे तेरी ज़मीन की कुछ ह़ाजत नहीं क्यूंकि आज क़ुरआने मजीद की ऐसी आयत नाज़िल हुई है जिस ने हमें दुन्या से ग़ाफ़िल व बे परवाह कर दिया है (वोह येह है) :

---

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب عامر بن ربيعة ......الخ، الحديث: ٥٥٨٨، ج٤، ص٤٣٣، بتغيرٍ.

2 ......جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق، باب مقتل عثمان، الحديث: ٢١١٣٩، ج١٠، ص٣٦٨.

www.dawateislami.net

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِیْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ (پ۱۷،الانبیاء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *लोगों का हिसाब नज़दीक और वोह ग़फ़्लत में मुंह फेरे हैं।''*

हज़रते सय्यिदुना शैख़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''जिस चीज़ ने हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ज़ोहदो फ़क़्र और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र पर आमादा किया वोह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन और ग़ज़वात व सराया में शिर्कत कर के तकालीफ़ सहना है।''(1)

﴾580﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें किसी सरिय्ये पर रवाना फ़रमाते तो हमारे पास ज़ादे राह खजूर का एक थैला हुवा करता था। अमीरे लश्कर एक एक मुठ्ठी खजूर हम में तक़्सीम करता यहां तक कि आहिस्ता आहिस्ता वोह मिक़्दार एक खजूर तक पहुंच जाती। उन के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ की : ''अब्बाजान ! क्या एक खजूर से भूक मिट जाती थी ?'' फ़रमाया : ''बेटा ! येह मत पूछो ! इस की अहम्मिय्यत हमें उस वक़्त मा'लूम होती थी जब खजूरें ख़त्म हो जाती थीं।''(2)

﴾581﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मैं एक सख़्त तारीक रात में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था। हम ने एक मक़ाम पर पड़ाव किया, एक शख़्स ने पथ्थर साफ़ कर के नमाज़ के लिये जगह बनाई फिर नमाज़ अदा की गई। जब सुब्ह हुई तो मा'लूम हुवा कि हमारा रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ न था, हम ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने रात ग़ैरे क़िब्ला की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ी है।'' तो उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ۗ فَاَیْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ (پ۲، البقرة:۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और पूरब व पच्छिम सब **अल्लाह** ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह (ख़ुदा की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह) है।*(3)

---

1 ......الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ، الرقم ۱۱۰۵،عبدالرحمن بن زید بن اسلم ،ج۵،ص۴۴۸.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث عامر بن ربیعة،الحدیث:۱۵۶۹۲،ج۵،ص۳۲۵.

3 ......المعجم الاوسط،الحدیث:۴۶۰،ج۱،ص۱۴۳ بتغیر.

www.dawateislami.net

﴾582﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे एक शख़्स को नमाज़ में छींक आ गई उस ने नमाज़ ही में कहा[1] : اَلْحَمْدُلِلّٰہِ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا فِیْہِ کَمَا یَرْضٰی رَبُّنَا عَزَّوَجَلَّ وَبَعْدَ الرِّضٰی وَالْحَمْدُلِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो कसरत से हैं। पाकीज़ा व मुबारक हैं। ऐसी ता'रीफ़ जैसी हमारा रब عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है और उस की रिज़ा के बा'द हर ह़ाल में उस का शुक्र है। सलाम के बा'द हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह कलिमात किस ने कहे थे ?" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने कहे और सिर्फ़ भलाई के लिये कहे।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने 12 फ़िरिश्तों को देखा जो इन कलिमात को लिखने के लिये जल्दी जल्दी उन की त़रफ़ बढ़ रहे थे।"[2]

दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल :

﴾583﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, अब तुम्हारी मरज़ी कम पढ़ो या ज़ियादा।"[3]

﴾584﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "बन्दा जब तक मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी कम पढ़े या ज़ियादा।"[4]

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 605 पर है : "नमाज़ में छींक आए तो सुकूत करे और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कह लिया तो भी ह़रज नहीं और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे।"

(الفتاوی الھندیة،کتاب الصلاۃ، الباب السابع فیمایفسدالصلاۃ ومایکرہ فیھا،الفصل الاول،ج۱،ص۹۸)

2......سنن ابی داؤد،کتاب الصلاۃ،باب ما یستفتح بہ الصلاۃ من الدعاء،الحدیث:۷۷٤،ص۱۲۸۰۔

البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار،مسندعامر بن ربیعۃ ، الحدیث:۳۸۱۹،ج۹،ص۲۷۲۔

3......المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاۃ ،باب الصلاۃ علی النبی،الحدیث:۳۱۲۰،ج۲،ص۱٤۰۔

4......مسندابی داود الطیالسی، حدیث عامر بن ربیعۃ ، الحدیث:۱۱٤۲، ص۱۵٦۔

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़नाअ़त पसन्द, नेक व पारसा और ख़ुश त़ब्अ़ थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ेरे किफ़ालत ज़िन्दगी बसर की। बिला ज़रूरत किसी से सुवाल न करने और बादशाहों के दरबार में ह़ाज़िरी से कतराने की वज्ह से जन्नत में क़ियाम के ह़क़दार क़रार पाए।

﴾585﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल ह़मीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मेरी अंगूठी और कपड़े मुलाह़ज़ा किये तो फ़रमाया : "इन कपड़ों और अंगूठी का क्या करोगे ? अंगूठी तो बादशाहों के लिये होती है।" रावी फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने कभी अंगूठी नहीं पहनी।" मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें बताया कि एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले बैत के लिये दुआ़ फ़रमाई और दुआ़ में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा व ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا वग़ैरा का ज़िक्र किया। ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं भी अहले बैत में हूं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! जब तक तुम किसी सरदार के दरवाज़े पर या किसी अमीर से सुवाल करने न जाओ।"(1)

बिला ज़रूरत सुवाल करना :

﴾586﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मुझे एक चीज़ की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ज़मानत देता हूं।" इरशाद फ़रमाया : "कभी किसी से सुवाल न करना।" रावी फ़रमाते हैं :

---

1 ......فضائل الصحابة للامام احمد بن حنبل،باب ومن فضائل علی،الحدیث:١٠٨٠،ج٢،ص٦٣٤۔
المعجم الاوسط، الحدیث:٢٦٠٧،ج٢،ص٨٥۔

www.dawateislami.net

“बा’ज़ औक़ात हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ऊंट पर सुवार होते और कोड़ा गिर जाता तो उस के लिये भी किसी से सुवाल न करते बल्कि ख़ुद उतर कर उठा लेते[1] ।”[2]

---

1 ...सुवाल करना कब जाइज़ है और कब नाजाइज़ । इस की तफ़्सील जानने के लिये मुहद्दिसे आ’ज़म, सय्यिदी आ’ला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना **शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن का तफ़्सीली फ़तवा बनाम “خَیْرُالْاٰمَال فِیْ حُکْمِ الْکَسْبِ وَالسُّوَال” (कमाने और मांगने के हुक्म में बेहतरीन उम्मीद) का मुतालआ फ़रमाइये । इस रिसाले के इख़्तिताम से कुछ इबारत मुलाहज़ा हो : “येह तक़रीरे मुनीर हिफ़्ज़ (या’नी याद) रखने की है कि अव्वल ता आख़िर इस तहक़ीक़े जमील ज़ब्ते जलील के साथ इस के ग़ैर में न मिलेगी وَبِاللّٰہِ التَّوْفِیْق । इन्हें ज़वाबित़ से दूसरे सुवाल आ’नी (या’नी) मस्अलए सुवाल का हुक्म मुन्कशिफ़ (या’नी मा’लूम) हो सकता है : (1).....जब ग़र्ज़े ज़रूरी न हो तो सुवाल हराम, मसलन आज का खाने को मौजूद है तो कल के लिये सुवाल हलाल नहीं कि कल तक की ज़िन्दगी भी मा’लूम नहीं, खाने की ज़रूरत दरकिनार (या’नी खाने की ज़रूरत तो दूर की बात है) यूहीं रुसूमे शादी के लिये सुवाल हराम कि निकाह, शरअ़ में ईजाबो क़बूल का नाम है जिस के लिये एक पैसे की ज़रूरत शरअ़न नहीं, और (2)......अगर ग़र्ज़े ज़रूरी है और बे सुवाल किसी त़रीक़ए हलाल से दफ़्अ़ (या’नी पूरी) हो सकती है जब भी सुवाल हराम, मसलन खाने को कुछ पास नहीं मगर हाथ में हुनर है या आदमी क़वी तन्दुरुस्त क़ाबिले मज़्दूरी है कि अपनी सन्अ़त या उजरत से ब क़दरे हाजत पैदा कर सकता है क़ब्ल इस के कि एह्तियाज ता ब ह़द्दे मख़्मसा पहुंचे (या’नी जब तक भूक से जान जाने का ख़त़रा पैदा न हो) तो उसे सुवाल हलाल नहीं, न उसे देना जाइज़ कि ऐसों को देना उन्हें कस्बे हराम का मुअय्यिद (या’नी मुआविन) होता है, अगर कोई न दे तो झक मार कर (या’नी आजिज़ आ कर) आप ही मेहनत मज़दूरी करें और (3).....अगर दूसरा त़रीक़ए हलाल मयस्सर नहीं, हिरफ़त व सन्अ़त (या’नी कारीगरी) कुछ नहीं जानता, न मेहनत व मज़दूरी पर क़ादिर है ख़्वाह ब वज्हे मरज़ या ज़ो’फ़े ख़ल्क़ी या नाज़ परवर्दगी (या’नी बीमारी, जिस्मानी कमज़ोरी या आसाइशों में पलने के सबब मशक़्क़त नहीं कर सकता) या कस्ब कर तो सकता है मगर हाजत फ़ौरी है कस्ब पर मुहव्वल करना ता तिरयाक़ अज़ इराक़ मज़्मून हुवा जाता है (या’नी इस सूरत में कमाई का हुक्म देना इराक़ से ज़ह्र का असर ज़ाइल करने वाली दवा मंगवाने की त़रह है) तो सुवाल हलाल होगा कि हर इन सूरतों में कार रवाई यूहीं हो सकती है कि मांग कर ले या छीन कर या चुरा कर या कोई हराम या मुर्दार खाए और सिरक़ा व ग़स्ब की हुरमत सुवाल से अशद (या’नी चोरी और नाहक़ माल छीनना मांगने से ज़ियादा सख़्त हराम) है और हराम व मुर्दार की (हुरमत) ग़स्ब व क़ह्र से भी सख़्त तर, येह सूरतें तो ज़ाहिर हैं और उ़लमा ने ब वज्हे इश्तिग़ाले जिहाद व मश्ग़ूलिये त़लबे इल्मे दीन (या’नी जिहाद और त़लबे इल्मे दीन में मश्ग़ूल होने के सबब) फ़ुर्सते कस्ब न पाने को भी वुजूहे मा’ज़ूरी से शुमार फ़रमाया और ऐसे के लिये सुवाल हलाल बताया जब मदारे ज़रूरत, ग़र्ज़ व तअ़य्युने ज़रीआ़ पर ठहरा तो कुछ अकल व शुरब ही की तख़्सीस (या’नी खाना पीना ख़ास) नहीं कि जिस के पास एक दिन का क़ूत (या’नी खाना) है उसे सुवाल मुत़लक़न मन्अ़ हो, बल्कि अगर दस दिन का खाना मौजूद है और कपड़ा नहीं या कपड़ा भी है मगर हल्का कि जाड़े (या’नी सर्दी) की आफ़त रोक सकता नहीं और त़रीक़ए तह़सील (या’नी कपड़े ह़ासिल करने का त़रीक़ा) कोई दूसरा नहीं (तो) कपड़े के लिये सुवाल ना रवा (या’नी नाजाइज़) नहीं, यूहीं अगर खाने पहनने सब को मौजूद है मगर मदयून (या’नी मक़रूज़) है तो अगर कुछ माले फ़ाज़िल (या’नी ज़रूरत से ज़ाइद) रखा है जिसे बेच कर अदा करे या कमा कर दे सकता है तो सुवाल हराम और अगर कमाई से बा’द नफ़्क़ए ज़रूरी के कुछ नहीं बचा सकता और क़र्ज़ ख़्वाह गर्दन पर छुरी रखे हुवे है तो अदा के लिये सुवाल हलाल ।”

(फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा), जि. 23, स. 619)

2 ......سنن ابن ماجه،ابواب الزكاة ،باب كراهية المسألة ،الحديث:١٨٣٧،ص٢٥٨٧.

www.dawateislami.net

﴾587﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से सुवाल नहीं करेगा मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं ज़मानत देता हूं।" पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी किसी से सुवाल नहीं किया।[1]

﴾588﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स बिला ज़रूरत किसी चीज़ का सुवाल करेगा तो बरोज़े क़ियामत वोह चीज़ उस के चेहरे पर ऐ़ब बन कर ज़ाहिर होगी।"[2]

ज़कात अदा न करने वालों का अन्जाम :

﴾589﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स माल छोड़ कर मरा (जिस की ज़कात न अदा की हो) तो बरोज़े क़ियामत वोह माल उस के लिये गन्जे सांप की सूरत में आएगा, उस की दोनों आंखों के ऊपर सियाह नुक़्ते होंगे वोह उस शख़्स का पीछा करेगा तो वोह कहेगा : "तेरा नास हो ! तू कौन है ?" सांप कहेगा : "मैं तेरा वोह ख़ज़ाना हूं जो तू अपने पीछे छोड़ आया था।" फिर वोह सांप उस का तआ़क़ुब करेगा यहां तक कि उस का हाथ, मुंह चबा लेगा फिर उस का सारा जिस्म निगल जाएगा।[3]

﴾590﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स सोना या चांदी (इस ह़ाल में) छोड़ कर मरा (कि उस की ज़कात अदा न की हो) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत) उस के लिये चौड़ी तल्वारें बनाएगा जिन के ज़रीए़ उसे क़दमों से ठोड़ी तक दाग़ा जाएगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ अबू आ़मिर ! अगर तुम्हारे पास बकरी हो और उस का दूध बच जाए तो उस बचे हुवे दूध को भी तक़्सीम कर दो।"[4]

---

1 ......سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب کراھیۃ المسألۃ، الحدیث: ١٦٤٣، ص١٣٤٦.

2 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند ثَوبان، الحدیث: ٤١٥٥، ج١٠، ص٩١.

3 ......صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الزکاۃ، باب ذکر اخبار رویت عن النبی فی الکنز......الخ، الحدیث: ٢٢٥٥، ج٤، ص١١.

4 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب المیم، الحدیث: ٦٥٠٤، ج٢، ص٣٢١، اختصارًا.

www.dawateislami.net

दुन्या की महब्बत का वबाल :

﴾591﴿.....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूले दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़न क़रीब तमाम कुफ़्फ़ार तुम्हारे ख़िलाफ़ इस त़रह़ मुत्तह़िद हो जाएंगे जिस त़रह़ खाने के बरतन पर खाने वाले मुत्तह़िद होते हैं।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या ऐसा हमारी क़िल्लत की वज्ह से होगा ?" फ़रमाया : "नहीं ! उस वक़्त तुम्हारी ता'दाद तो बहुत होगी लेकिन सैलाब की झाग की त़रह़ तुम्हारी कोई अहम्मिय्यत व वुक़्अ़त न होगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रो'ब ख़त्म कर देगा और तुम्हारे दिलों में "वह्न" डाल देगा।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह "वह्न" क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "दुन्या की मह़ब्बत और मौत से नफ़रत।"(1)

कौन सा माल बेहतर है ?

﴾592﴿.....हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि एक बार हम सरकारे अबद क़रार, नबियों के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ किसी सफ़र पर थे कि मुहाजिरीन ने कहा : "सोने और चांदी के बारे में तो जो नाज़िल होना था हो चुका, काश ! हमें पता चल जाए कि अब कौन सा माल बेहतर है ?" तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अगर तुम चाहो तो मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तुम्हारे लिये पूछ लेता हूं।" उन्हों ने कहा : "ठीक है ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पूछ लें।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه येह दरयाफ़्त करने के लिये बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ चल दिये। हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं भी पीछे पीछे चल दिया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में पहुंच कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सोने चांदी के बारे में जो हुक्म नाज़िल होना था हुवा, मुहाजिरीन कहते हैं : "काश ! हमें पता चल जाए कि सोने, चांदी के बा'द अब कौन सा माल हमारे लिये बेहतर है ?"

---

1 ......سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب فی تداعی الامم علی الاسلام، الحدیث:٤٢٩٧، ص١٥٣٦ ۔
المسند للامام احمد حنبل، حدیث ثَوبان ، الحدیث: ٢٢٤٦٠، ج٨، ص٣٢٧.

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और ईमानदार बीवी जो ईमान पर तुम्हारी मदद करे।"(1)

﴾593﴿.....हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब सोने चांदी को ह़राम कर दिया गया(2) तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن कहने लगे कि "फिर हम कौन सा माल इख़्तियार करें ?" तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें बताता हूं।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ऊंट पर सुवार हुवे और बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी पीछे पीछे चल दिये। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम कौन सा माल इख़्तियार करें ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शुक्र करने वाला दिल, ज़िक्र करने वाली ज़बान और ईमानदार बीवी जो आख़िरत के मुआ़मले में तुम्हारी मदद करे।"(3)

❁--❁--❁--❁

1.....جامع الترمذی،ابواب تفسیر القرآن،باب ومن سورة التوبة،الحدیث:۳۰۹۴،ص۱۹٦٤۔
سنن ابن ماجه،ابواب النکاح،باب افضل النساء ، الحدیث:۱۸۵٦،ص۲۵۸۸

2.....सोना चांदी मर्द व औ़रत दोनों पर मुत़लक़न ह़राम नहीं बल्कि इस में तफ़्सील है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 253 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मर्द को ज़ेवर पहनना मुत़लक़न ह़राम है। सिर्फ़ चांदी की एक अंगूठी जाइज़ है जो वज़्न में एक मिस्क़ाल या'नी साढ़े चार माशा से कम हो और सोने की अंगूठी भी ह़राम है।" कुछ आगे चल कर मज़ीद फ़रमाया : "अंगूठी सिर्फ़ चांदी ही की पहनी जा सकती है दूसरी धात की अंगूठी पहनना ह़राम है। मसलन लोहा, पीतल, तांबा, जसत वग़ैरहा इन धातों की अंगूठियां मर्द व औ़रत दोनों के लिये नाजाइज़ हैं, फ़र्क़ इतना है कि औ़रत सोना भी पहन सकती है और मर्द नहीं पहन सकता।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 611)

मदनी मश्वरा : मज़ीद तफ़्सीलात के लिये बहारे शरीअ़त को इसी मक़ाम से मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। (इ़ल्मिय्या)

3.....سنن ابن ماجه،ابواب النکاح، باب افضل النساء، الحدیث: ۱۸۵٦،ص۲۵۸۸۔
المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث ثَوبان، الحدیث: ۲۲۵۰۰، ج۸،ص۳۳٤.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुल्ताने दो जहान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना अबुल बही राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घटया व ना पाईदार दुन्या से नफ़रत और बा रौनक़ व चमकदार आख़िरत से महब्बत रखते।

﴾594﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد बयान करते हैं कि बनू सईद का एक मुशतरिका गुलाम था जिसे एक शख़्स के सिवा सब ने आज़ाद कर दिया था। वोह गुलाम अपने बाक़ी हिस्से की आज़ादी की सिफ़ारिश करवाने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवा, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मालिक से बात की तो उस ने अपना हिस्सा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हिबा कर दिया फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे आज़ाद फ़रमा दिया। वोह गुलाम कहा करता था : "मैं हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलाम हूं।" उस ख़ुश नसीब गुलाम का नामे नामी इस्मे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अबुल बही राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ है।"(1)

मख़्मूमुल क़ल्ब का मफ़्हूम :

﴾595﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "लोगों में सब से अफ़्ज़ल कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "सच्चा और "मख़्मूमुल क़ल्ब" मुसलमान।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "मख़्मूमुल क़ल्ब" से क्या मुराद है ?" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला, हर क़िस्म के गुनाह, सरकशी, धोका देही और हसद से बचने वाला।" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन सिफ़ात को कौन अपना सकता है ?" इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स दुन्या से नफ़रत और आख़िरत से महब्बत करे।" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن फ़रमाते हैं : "हम अपने दरमियान सिर्फ़ हज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन सिफ़ात का हामिल पाते हैं।" फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कौन शख़्स इन सिफ़ात को पाने में कामयाब हो सकता है ?" इरशाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़ वाला मुसलमान।"(2)

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٤٤٧٢،ج٥،ص٢٣.

2 ......مسند الشاميين للطبرانى،مسند زيد بن واقد الدمشقى،الحديث:١٢١٨،ج٢،ص٢١٧-
شعب الايمان للبيهقى، باب فى حفظ اللسان،الحديث:٤٨٠٠،ج٤،ص٢٠٥.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुल्ताने दो जहान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वैसे तो ग़ज़्वए बद्र से पहले ही इस्लाम क़बूल कर चुके थे लेकिन इज़्हार न किया (चूंकि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम थे) इस लिये इन के साथ ही रहते थे। जब क़ुरैश का ख़त़ ले कर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا हाज़िर हुवे तो उस वक़्त इस्लाम ज़ाहिर किया ताकि मदीने ही में क़ियाम पज़ीर हो सकें लेकिन हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें वापस भेजते हुवे इरशाद फ़रमाया : "हम क़ासिद को रोकते हैं न अ़हद शिकनी करते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं जिन्हें हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था : "मेरे बा'द तुम्हें फ़क़्र का सामना करना पड़ेगा और उन्हें ज़रूरत से ज़ाइद माल जम्अ़ करने से मन्अ़ करते हुवे ज़ाइद माल जम्अ़ करने वाले की सज़ा से आगाह फ़रमाया।"

सदक़ात में ख़ियानत करने वालों की सज़ा :

﴾596﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान "बक़ीए़ ग़रक़द" के क़रीब से गुज़रे तो फ़रमाया : "उफ़, उफ़, उफ़,।" उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मैं अकेला ही था। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! क्या बात है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने इस क़ब्र वाले को फ़ुलां क़बीले पर आ़मिल (या'नी ज़कात वुसूल करने के लिये) मुक़र्रर किया था। उस वक़्त इस ने एक चादर में ख़ियानत की थी और अब मैं देखता हूं कि वोही चादर आग बन कर इसे जला रही है।"(1)

तमन्नाए फ़क़्र :

﴾597﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू राफ़ेअ़ ! उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब तुम फ़क़्र में मुब्तला होगे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या मैं अभी फ़क़्र

---

(1) .....المعجم الکبیر،الحدیث:۹۸۸،ج۱ص۳۳۰.

www.dawateislami.net

इख़्तियार न कर लूं ?" इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं ।" फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे पास कितना माल है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "40 हज़ार दिरहम । मैं उन सब को राहे ख़ुदा में ख़ैरात करता हूं ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कुछ तक़्सीम कर दो और कुछ अपनी औलाद के लिये बाक़ी रहने दो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हम पर औलाद के भी हुक़ूक़ है जिस त़रह़ हमारे उन पर हुक़ूक़ हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! बच्चे का ह़क़ वालिद पर येह है कि वोह उसे क़ुरआने करीम की ता'लीम दिलवाए, तीर अन्दाज़ी व तैराकी सिखाए और उसे ह़लाल माल से मीरास दे ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं फ़क़्र में कब मुब्तला होऊंगा ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरे बा'द ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द फ़क़्र में मुब्तला देखा यहां तक कि जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बैठते तो बैठे रहते और फ़रमाते : "कौन इस बूढ़े और अन्धे आदमी पर सदक़ा करेगा ? कौन इस आदमी पर सदक़ा करेगा जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बताया कि तू मेरे बा'द फ़क़्र में मुब्तला होगा ? कौन सदक़ा करेगा ? बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दस्ते क़ुदरत ही बुलन्द है और देने वाले का हाथ दरमियान में और साइल का हाथ नीचे होता है और जो बेजा सुवाल करता है क़ियामत के दिन उस के चेहरे पर निशान होगा जिस से वोह पहचाना जाएगा और ग़नी व मालदार के लिये सदक़ा लेना जाइज़ नहीं ।" रावी कहते हैं : मैं ने एक आदमी को देखा जिस ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को चार दिरहम दिये तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे एक दिरहम लौटा दिया । उस ने कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मेरा सदक़ा मुझ पर न लौटा !" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ाइद माल जम्अ़ करने से मन्अ़ फ़रमाया है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं फिर मैं ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मालदारी वाला दौर देखा कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इतने मालदार हुवे कि जब ज़कात वुसूल करने वाला आता तो फ़रमाते थे : "काश ! अबू राफ़ेअ़ फ़क़्र की ह़ालत में ही फ़ौत हो जाता ।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه किसी ग़ुलाम को इस की अस्ल क़ीमत पर ही मुकातब बनाते और ज़ाइद माल वुसूल न फ़रमाते थे ।"(1)

---

(1)......السنن الكبرى للبيهقى، كتاب السبق والرمى، باب التحريض على الرمى، الحديث:١٩٧٤٢، ج١٠، ص٢٦، باختصارٍ.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सलमान बिन इस्लाम फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़ारिस (या'नी ईरान) वालों में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه इस्लाम के सच्चे शैदाई थे, इस्लाम की ख़ातिर दरपेश मसाइबो आलाम पर सब्र करते, आख़िरत के लिये नेक आ'माल का ज़ख़ीरा करते, दाना व अ़क़्लमन्द, आ़लिम व इ़बादत गुज़ार, अ़लमे इस्लाम बुलन्द करने वाले और हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ और मुमताज़ सहाबा में से थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का शुमार उन ख़ुश नसीबों में होता है कि जिन की ख़ुद जन्नत मुश्ताक़ है। नीज़ तंगदस्ती के बा वुजूद साबित क़दम रहते और इस के बदले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अज्रे अ़ज़ीम पाया।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : ''जन्नत की उ़म्दा ने'मतों के हुसूल की ख़ातिर तक्लीफ़ों और मुसीबतों को बरदाश्त करने का नाम तसव्वुफ़ है।''

सब्क़त ले जाने वाले 4 अफ़राद :

﴾598﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ''हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''4 अफ़राद सब्क़त ले गए : (1) मैं (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मुल्के अ़रब से (2) सुहैब मुल्के रूम से (3) सलमान मुल्के फ़ारिस से और (4) बिलाल मुल्के ह़बशा से (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)''(1)

सुन्नते निकाह़ में शरीअ़त की पासदारी :

﴾599﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि आप का निकाह़ क़बीलए बनी किन्दा की एक औ़रत से हुवा और शबे अ़रूसी का इन्तिज़ाम उन के सुसराल के हां हुवा, रुख़्सती की रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के दोस्त अह़बाब भी दुल्हन के घर चले, घर पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप लोगों को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए अब आप लोग लौट जाएं।'' और घर के अन्दर न जाने दिया जिस त़रह़ कि बेवुक़ूफ़ लोग अपने दोस्तों को ज़ौजा के घर दाख़िल कर लेते हैं। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी दुल्हन का घर ख़ूब सजा धजा देखा तो फ़रमाने लगे कि ''तुम्हारे घर को बुख़ार आ गया है या का'बा शरीफ़ किन्दा मुन्तक़िल हो गया है ?'' अहले ख़ाना ने

(1) ......المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب السباق اربعۃ، الحدیث: ٥٧٦٨، ج٤، ص٤٩٥.

www.dawateislami.net

कहा : "न तो हमारे घर को बुख़ार है और न ही का'बा शरीफ़ किन्दा मुन्तक़िल हुवा है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़े पर लटके पर्दे के सिवा सारे पर्दे उतरवा कर अन्दर दाख़िल हुवे और वहां बहुत सारा सामान देखा तो पूछा : "इतना सामान किस के लिये है ?" घर में मौजूद लोगों ने कहा : "आप और आप की ज़ौजा के लिये।" फ़रमाया : मुझे मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ियादा मालो दौलत जम्अ़ करने की नहीं बल्कि इस बात की नसीहत फ़रमाई थी कि "तुम्हारे पास दुन्यावी माल सिर्फ़ इतना हो जितना मुसाफ़िर का ज़ादे राह होता है।" फिर वहां एक ख़ादिम देखा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह किस के लिये है ?" उन्हों ने कहा : "येह आप और आप की अहलिय्या की ख़िदमत के लिये है।" फ़रमाया : मुझे मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ादिम रखने की नसीहत नहीं फ़रमाई बल्कि सिर्फ़ उसे रोकने का फ़रमाया जिस से मैं निकाह करूं और फ़रमाया कि अगर तुम ने (सुसराल वालों से) मज़ीद कुछ लिया तो तुम्हारी औ़रतें तुम्हारी ना फ़रमान हो जाएंगी और इस का गुनाह उन के ख़ावन्द पर होगा और औ़रतों के गुनाह में भी कोई कमी न होगी।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां मौजूद दूसरी औ़रतों से फ़रमाया : "तुम यहां से जाओगी या यूंही मेरे और मेरी बीवी के दरमियान आड़ बनी रहोगी ?" वोह बोलीं : "हम चली जाएंगी।" वोह चली गईं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरवाज़ा बन्द कर के उस पर पर्दा डाल दिया और ज़ौजा के पास आ कर बैठ गए, उस की पेशानी पर हाथ रख कर बरकत की दुआ़ की और फ़रमाया : "जो मैं कहूं मानोगी ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मैं आप की इताअ़त करूंगी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नसीहत फ़रमाई है कि जब मैं अपनी बीवी के पास जाऊं तो उस के साथ मिल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करूं।" फिर दोनों मियां बीवी उठे मस्जिद में गए और जब तक हो सका **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहे, इस के बा'द हक़्क़े ज़ौजिय्यत अदा किया।

सुब्ह़ जब दोस्तों से मुलाक़ात हुई तो वोह रात के अह़वाल पूछने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से ए'राज़ किया उन्हों ने फिर पूछा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर कोई जवाब न दिया, तीसरी बार पूछने पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से ए'राज़ करते हुवे फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने घरों के पर्दे और दरवाज़े इस लिये बनाए हैं ताकि अन्दर की बात अन्दर ही रहे इस लिये बेहतर येही है कि मुझ से बाहर की बातों के बारे में दरयाफ़्त करो और जो चीज़ इन्सान से ग़ाइब हो उस के बारे में हरगिज़

www.dawateislami.net

सुवाल नहीं करना चाहिये क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "इस बारे में गुफ़्त्गू करने वाले रास्ते में जुफ़्ती करने वाले गधों की त़रह हैं।"(1)

निकाह़ नेक औ़रत से किया जाए :

﴾600﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक मरतबा सफ़र से वापसी पर ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई तो उन्हों ने फ़रमाया : "मैं तुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा होने पर खुश हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अगर ऐसा है तो फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरा निकाह़ करवा दीजिये।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा होने पर तो खुश हैं लेकिन इस बात पर राज़ी क्यूं नहीं?" सुब्ह़ उन के पास अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बीले के लोग आए, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "कोई काम है?" बोले : "जी हां!" आप ने फ़रमाया : "जब बात ख़त्म हो गई तो अब क्या काम है?" उन्हों ने कहा : "आप ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो कहा है उस का इरादा मुलतवी कर दें।" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत या सल्त़नत ने इस पर आमादा नहीं किया बल्कि मेरी निय्यत तो येह थी कि एक नेक आदमी के ख़ानदान में निकाह़ करूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से नेक औलाद पाऊंगा।"

रावी बयान करते हैं कि फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किन्दा की रहने वाली एक औ़रत से निकाह़ कर लिया, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर में दाख़िल हुवे तो घर को मुज़य्यन और उस में कुछ औ़रतों को मौजूद पाया तो फ़रमाया : "क्या का'बा शरीफ़ किन्दा मुन्तक़िल हो गया या इस घर को बुख़ार आ गया है?" फिर फ़रमाया : मेरे ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें फ़रमाया था कि "जब हम में से कोई निकाह़ करे तो सिर्फ़ इतना सामान बनाए जितना मुसाफ़िर के लिये ज़ादे राह होता है और औ़रतों में से सिर्फ़ अपनी बीवी से तअ़ल्लुक़ रखे।" इस के बा'द सब औ़रतें घर से चली गईं और तमाम पर्दे उतार दिये गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ौजा के पास गए और फ़रमाया : "तुम मेरी फ़रमां बरदारी करोगी या ना फ़रमानी?" ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "मैं आप की फ़रमां बरदारी करूंगी आप जो चाहें हुक्म फ़रमाएं।"

1......المصنف لعبد الرزاق، کتاب النکاح،باب ما یبدا الرجل......الخ،الحدیث: ۱۰۵۰۳، ج۶، ص۱۵۴ مفھومًا.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें फ़रमाया था कि जब कोई अपनी बीवी के पास जाए तो नमाज़ अदा करे।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बीवी को अपने पीछे नमाज़ पढ़ने का कहा फिर दुआ़ मांगी और उसे आमीन कहने का फ़रमाया। चुनान्चे, उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कहने के मुत़ाबिक़ किया। सुब्ह़ को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किन्दा की मजलिस में बैठे तो एक आदमी ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह (येह ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) ! सुब्ह़ कैसी रही और आप ने अपनी बीवी को कैसा पाया ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे और कुछ जवाब न दिया, उस ने दोबारा पूछा लेकिन अब भी उस की बात का कोई जवाब न दिया और फ़रमाया : "क्या बात है तुम घर के अन्दर की बातें पूछते हो तुम्हें येह बात काफ़ी होनी चाहिये कि जब किसी सुवाल का जवाब न दिया जाए तो दोबारा वोह सुवाल न करे।"(1)

निगाहे अ़ली में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ाम :

﴿601﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) से ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : "सलमान पहले और आख़िरी इ़ल्म के पैरूकार हैं और जो इन के पास है इसे कोई और नहीं पा सकता।"(2)

सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले बैत से हैं :

﴿602﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान किन्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक दिन हम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त खुश गवार देख कर लोगों ने अ़र्ज़ की : "हमें अपने दोस्तों के अह़वाल बयान कीजिये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम मेरे किस दोस्त के बारे में पूछते हो ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "हम ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٦٠٦٧، ج٦، ص٢٢٦، مختصراً.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الزھد،باب کلام سلمان،الحدیث:١٤، ج٨، ص١٨٠، بتغیر.

www.dawateislami.net

अस्ह़ाब के बारे में पूछते हैं।" फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तो तमाम सह़ाबा मेरे दोस्त हैं तुम किस सह़ाबी के बारे में पूछना चाहते हो ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "हम उन के बारे में पूछना चाहते हैं जिन के तज़्किरे से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुशी ह़ासिल होती है और आप उन के लिये रह़मत की दुआ़ करते हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमें ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी के बारे में बताएं ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने इरशाद फ़रमाया : "सलमान फ़ारसी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जैसा तुम में से कौन हो सकता है ? वोह हम में से और अहले बैत में से हैं। उन्हों ने पहले और आख़िरी उ़लूम ह़ासिल किये। वोह पहली किताब (इन्जील या तौराते मुक़द्दस) और आख़िरी किताब (क़ुरआने मजीद) के आ़लिम और इ़ल्म का न ख़त्म होने वाला समन्दर थे।"(1)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़ल्म की ता'रीफ़ फ़रमाई :

﴾603﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे घर आए तो मेरी ज़ौजा को परागन्दा ह़ालत में देख कर सबब दरयाफ़्त किया तो मेरी ज़ौजा ने कहा : "आप के भाई औ़रतों की ख़्वाहिश नहीं रखते, दिन रोज़े की ह़ालत में गुज़ारते और रात इ़बादत में बसर करते हैं।" येह सुन कर उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "बेशक आप पर आप की बीवी का भी ह़क़ है। लिहाज़ा रात में नमाज़ भी पढ़ा करें और कुछ देर आराम भी कर लिया करें। रोज़ा भी रखा करें और इफ़्त़ार भी किया करें (या'नी नाग़ा भी कर लिया करें)।" जब येह बात ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पता चली तो इरशाद फ़रमाया : "बेशक सलमान को इ़ल्म अ़त़ा किया गया है।"(2)

आ'माल में मियाना रवी का दर्स :

﴾604﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात के लिये गए तो उन की ज़ौजा को परागन्दा ह़ालत में देख कर इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो उन्हों ने बताया : "आप के भाई दुन्या की किसी चीज़ में रग़बत नहीं रखते वोह रात को नमाज़ में मश्ग़ूल रहते और दिन रोज़े की

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٦٠٤٢،ج٦،ص٢١٣.

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ ،کتاب الزھد،باب کلام سلمان، الحدیث:١٤، ج٨، ص١٨٠،بتغیر.

www.dawateislami.net

ह़ालत में बसर करते हैं।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से कहा : "खाना खाएं !" उन्हों ने कहा : "मैं रोज़े से हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम उठा कर फ़रमाया : "अगर आप ने न खाया तो मैं भी नहीं खाऊंगा।"

फिर दोनों ने मिल कर खाना तनावुल फ़रमाया और रात उन्हीं के हां क़ियाम किया। जब रात का कुछ ह़िस्सा गुज़रा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिये उठने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें येह कह कर रोक दिया कि "ऐ अबू दरदा ! बेशक आप पर आप के रब عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है, आप की ज़ौजा का ह़क़ है और आप के जिस्म का भी ह़क़ है पस आप हर एक का ह़क़ अदा करें। रोज़ा रखें, इफ़्तार (या'नी नाग़ा) भी करें, रात को क़ियाम करें, आराम भी करें और अपनी बीवी का ह़क़ भी अदा करें।"

फिर रात के आख़िरी पहर में ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "अब उठिये।" फिर दोनों ह़ज़रात उठे, वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी फिर नमाज़े फ़ज्र के लिये (मस्जिद की त़रफ़) चल दिये, सुब्ह़ की नमाज़ ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ाई, नमाज़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवे और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बातें बयान कीं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू दरदा ! बेशक तुम पर तुम्हारे जिस्म का भी ह़क़ है।" और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बातों की ताईद फ़रमाई।"(1)

इनफ़िरादी कोशिश का दिल नशीन अन्दाज़ :

﴾605﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक मरतबा क़बीलए "बनी अ़ब्स" के एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत इख़्तियार की। उस ने दरयाए दिजला से एक चुल्लू पानी पिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मज़ीद पीने का कहा। उस ने अ़र्ज़ की : "मैं सैराब हो गया हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तेरा ख़याल है कि तेरे पीने

1.....المعجم الکبیر،الحدیث:۲۸۵۵،ج۲۲،ص۱۱۲۔
المسندلابی یعلی الموصلی، مسندابی جحیفة، الحدیث:۸۹٤، ج۱،ص۳٦۹.

www.dawateislami.net

से इस से पानी कम हुवा है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मेरे एक घूंट पी लेने से क्या कम होगा ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''इस त़रह़ इ़ल्म भी ह़ासिल करने से कम नहीं होता लिहाज़ा तुम वोह इ़ल्म ज़रूर ह़ासिल करो जो तुम्हें नफ़्अ़ दे ।''(1)

﴾606﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन उ़मर सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अपने चचा से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ''ऐ अ़बसी भाई ! (या'नी ऐ क़बीलए बनू अ़बस से तअ़ल्लुक़ रखने वाले) बेशक इ़ल्म बहुत ज़ियादा और उ़म्र बहुत थोड़ी है लिहाज़ा दीन का ज़रूरी इ़ल्म ह़ासिल करो और इस के मा सिवा को छोड़ दो क्यूंकि इस पर तुम्हारी मदद नहीं की जाएगी ।''(2)

कुफ़्फ़ार से जंग में सुन्नत त़रीक़ा :

﴾607﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मरवी है कि मुजाहिदीने इस्लाम के एक लश्कर ने ईरान के एक क़ल्ए़ का मुह़ासरा कर लिया । उस लश्कर के अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । अहले लश्कर ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या हम उन पर ह़म्ला न कर दें ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मुझे जाने दो मैं उन्हें इस्लाम की दा'वत देता हूं जिस त़रह़ मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुशरिकीन को दा'वत देते हुवे सुना है ।''

चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले क़ल्आ़ से फ़रमाया : ''मैं तुम लोगों में से ही एक फ़ारसी हूं । तुम देखते नहीं कि अ़रब किस त़रह़ मेरी इत़ाअ़त करते हैं ? अगर तुम इस्लाम क़बूल कर लो तो तुम्हारे लिये भी वोही अह़काम होंगे जो हमारे लिये हैं और तुम पर भी वोही चीज़ लाज़िम होगी जो हम पर लाज़िम है और अगर तुम ने इस्लाम क़बूल न किया तो हम तुम्हें तुम्हारे ही दीन पर छोड़ देंगे लेकिन फिर तुम्हें ज़िल्लत के साथ जिज़्या देना पड़ेगा ।''

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ारसी में गुफ़्तगू करते हुवे फ़रमाया : ''तुम क़ाबिले ता'रीफ़ नहीं हो अगर तुम ने हमारी बात मानने से इन्कार कर दिया तो हम तुम से ए'लाने जंग करेंगे ।'' अहले क़ल्आ़ ने कहा : ''हम न ईमान लाएंगे और न ही जिज़्या देंगे बल्कि तुम से जंग करेंगे ।'' मुजाहिदीने इस्लाम ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या हम उन पर ह़म्ला न कर दें ?''

---

1 ......الزهدلابن المبارك، باب ماجاء فی قبض العلم، الحديث:٨٢٢، ص٢٨٣، بتغير.

2 ......صفة الصفوة، الرقم٥٩ سلمان الفارسی رضی اللّٰه عنه ، ذكرنبذة من كلامه ومواعظه، ج١، ص٢٨٠.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "नहीं !" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उन्हें तीन दिन तक इसी त़रह़ इस्लाम की दा'वत देते रहे फिर फ़रमाया : "ऐ अहले लश्कर ! उन पर ह़म्ला कर दो !" लश्करे इस्लाम ने उन पर ह़म्ला कर दिया और क़ल्अ़ा फ़त्ह़ कर लिया।"(1)

﴾608﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लैला किन्दी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ 12 या 13 सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن पर मुश्तमिल एक क़ाफ़िले में तशरीफ़ लाए। जब नमाज़ का वक़्त हुवा तो सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن ने उन्हें इमामत करवाने का कहा तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "मैं न तो तुम्हारा इमाम बनूंगा और न ही तुम्हारी औ़रतों से शादी करूंगा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें तुम्हारे ज़रीए़ हिदायत अ़त़ा फ़रमाई है।" रावी कहते हैं : "फिर एक सह़ाबी رضی اللہ تعالٰی عنہ आगे बढ़े और जब 4 रक्अ़त नमाज़ पढ़ा कर सलाम फेरा तो ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : हमें 4 रक्अ़तें पढ़ने की ज़रूरत नहीं थी दो ही काफ़ी थी क्यूंकि हम रुख़्सत के ज़ियादा मोह़ताज हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : "इस से मुराद सफ़र (में रुख़्सत) है।"(2)

इशा के बा'द लोग तीन क़िस्म के हो जाते हैं :

﴾609﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَهَّاب फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास रात गुज़ारी ताकि उन की इ़बादत को मुलाह़ज़ा कर सकूं। चुनान्चे, जब रात का पिछला पहर हुवा तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उठ कर नमाज़ अदा की गोया कि मैं जो समझता था (कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ सारी रात इ़बादत करते हैं) वैसा देखने में न आया। मैं ने येह बात आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से बयान की तो फ़रमाया : "उन पांच फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबन्दी करो तो येह दरमियान में होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं जब तक गुनाहे कबीरा का इर्तिकाब न किया जाए।" मज़ीद फ़रमाया कि "लोग जब इशा की नमाज़ अदा कर लेते हैं तो तीन क़िस्म के हो जाते हैं : (1) वोह लोग जिन के लिये येह रात वबाल बन जाती है और वोह इस से कोई फ़ाइदा नहीं उठा पाते (2) बा'ज़ ख़ुश नसीबों के लिये भलाई का सबब बन कर आती है और उन्हें वबाल

---

(1)......جامع الترمذی،ابواب السیر،باب ماجاء فی الدعوۃ قبل القتال،الحدیث:۱۵۴۸،ص۱۸۱۰.

(2)......المصنف لعبد الرزاق،کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃ فی السفر،الحدیث:۴۲۹۴،ج۲،ص۳۴۳۔
المصنف لعبد الرزاق، کتاب النکاح،باب الاکفاء،الحدیث:۱۰۳۶۷،ج۶،ص۱۲۴.

www.dawateislami.net

से बचाती है और (3) बा'ज़ नादानों के लिये येह रात न तो फ़ाइदा मन्द साबित होती है और न ही वबाल बनती है। जिन के लिये वबाल बनती है और फ़ाइदे से ख़ाली होती है येह वोह हैं जो रात की तारीकी और लोगों की ग़फ़्लत को ग़नीमत जान कर दिलेरी से गुनाहों में रात बसर करते हैं और जो रात की तारीकी और लोगों की ग़फ़्लत को ग़नीमत समझ कर रात में उठ कर इबादत करते हैं उन के लिये येह रात फ़ाइदे मन्द है वबाल नहीं और जो नमाज़ पढ़ कर सो जाते हैं उन के लिये न फ़ाइदे मन्द है और न ही वबाल। लिहाज़ा तुम ग़फ़्लत से बचो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत का क़स्द करो और इस पर हमेशगी इख़्तियार करो।"[1]

महब्बते ख़ुदावन्दी की बिशारत :

﴿610﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) मेरे पास आए और बताया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे 4 सहाबा से महब्बत फ़रमाता है।" हाज़िरीन में से एक ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह 4 सहाबा कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "अ़ली, सलमान, अबू ज़र और मिक़्दाद (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)"[2]

जन्नत भी मुश्ताक़ है :

﴿611﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत 4 अफ़राद की मुश्ताक़ है : (1) अ़ली (2) सलमान (3) अ़म्मार और (4) मिक़्दाद।"[3]

मज़हबे हक़ की तलाश :

﴿612﴾ (۱).....हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं "अस्बहान" के एक अ़लाक़े में रहता था, वहां के लोग संगे मर मर से बने हुवे एक घोड़ा नुमा बुत की पूजा किया करते थे और मैं उन के इस अ़मल को बुरा समझता था। फिर किसी ने मुझे बताया कि तुम जिस दीन की तलाश में हो उस के पैरूकार मग़रिब में पाए जाते हैं। चुनान्चे, मैं वहां से

---

1 ......المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ فی السفر، الحدیث:٤٧٤٩، ج٢، ص٤١٦.

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل سلمان و ابی ذر و المقداد، الحدیث:١٤٩، ص٢٤٨٦، مختصرًا.

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٦٠٤٥، ج٦، ص٢١٥، بتغیر.

www.dawateislami.net

चल दिया और "मौसल" की सर ज़मीन पर जा पहुंचा। वहां के लोगों से पूछा कि यहां सब से बड़ा आ़लिम कौन है?" उन्हों ने मुझे एक ऐसे आदमी का पता बताया जो गिर्जा में बैठा था। मैं उस के पास गया और उस से कहा कि "मैं मशरिक़ में रहता हूं। नेकी व भलाई की तलाश में यहां आया हूं। अगर आप मुनासिब समझें तो मैं आप के पास रह कर आप की ख़िदमत करूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को जो इ़ल्म अ़ता फ़रमाया है उस में से कुछ मुझे भी सिखा दें।" फ़रमाते हैं : "उस ने इजाज़त देते हुवे कहा ठीक है।" यूं मैं उस के पास उस शख़्स की त़रह़ रहने लगा जिस के ज़िम्मे गन्दुम, सिर्का, और ज़ैतून का हि़साब होता है और जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा मैं उस की सोह़बत में रहा बिल आख़िर उस की मौत का वक़्त आ पहुंचा। मैं उस के सिरहाने बैठ कर रोने लगा। उस ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया? तो मैं ने कहा : "मैं ने भलाई की जुस्तजू में अपना वत़न छोड़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप की अच्छी सोह़बत से नवाज़ा और आप ने मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ाकर्दा उ़लूम सिखाए। अब आप वफ़ात पा रहे हैं। मैं आप के बा'द कहां जाऊंगा?" उस ने कहा : "फ़ुलां जगह मेरा एक भाई रहता है। वोह ह़क़ पर है। जब मैं मर जाऊं तो तुम उस के पास जाना उसे मेरा सलाम कहना और बताना कि मैं ने तुम्हें उस की सोह़बत इख़्तियार करने की वसिय्यत की है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं वहां से उठा और उस के बताए हुवे आदमी के पास पहुंच कर उसे बताया कि आप के फ़ुलां भाई ने आप को सलाम कहा है।" उस ने सलाम का जवाब दिया फिर पूछा : "उसे क्या हुवा?" मैं ने कहा : "उस का इन्तिक़ाल हो चुका है।" फिर मैं ने उसे अपना सारा क़िस्सा सुनाया और कहा कि "उन्हों ने मुझे आप की सोह़बत में रहने की वसिय्यत की है।"

उस ने मुझे साथ रहने की इजाज़त दे दी और मेरे साथ अच्छा बरताव किया और अब मैं पहले ही की त़रह़ उस के यहां रहने लगा। जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो मैं उस के सिरहाने बैठ कर रोने लगा। उस ने रोने की वज्ह पूछी तो मैं ने कहा : "मैं ने अपना वत़न छोड़ा पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे फ़ुलां की सोह़बत अ़त़ा फ़रमाई, उन्हों ने अच्छा साथ निभाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ाकर्दा उ़लूम से फ़ैज़याब किया और जब उन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने मुझे आप का पता बताया, आप ने भी मेरे साथ अच्छा सुलूक किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ाकर्दा उ़लूम में से मुझे सिखाया और अब आप भी दुन्या से जा रहे हैं तो मैं कहां जाऊंगा?" उस ने कहा : "मुल्के रूम में मेरा एक भाई रहता है वोह ह़क़ पर है उस के पास जा कर मेरा सलाम कहना और बताना कि मैं ने तुम्हें उस के पास रहने का हुक्म दिया है।"

www.dawateislami.net

जब वोह शख़्स फ़ौत हो गया तो मैं वहां से निकल कर सफ़र करते हुवे उस के बताए हुवे शख़्स के पास पहुंच गया और उस से कहा कि "आप के फ़ुलां भाई ने आप को सलाम कहा है और मुझे आप के पास रहने का हुक्म दिया है।" उस ने सलाम का जवाब दिया और पूछा : "वोह कैसे हैं ?" मैं ने कहा : "वोह फ़ौत हो गए हैं।" फिर मैं ने उसे अपना क़िस्सा बताया और कहा कि "उन्हों ने मुझे आप की सोहबत इख़्तियार करने का हुक्म दिया है।" उस ने मुझे क़बूल कर के अच्छी सोहबत से नवाज़ा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ताकर्दा उ़लूम से सिखाया। जब उस का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो मैं उस के सिरहाने बैठ कर रोने लगा। उस ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप की सोहबत अ़ता फ़रमाई अब आप वफ़ात पा रहे हैं, मैं कहां जाऊंगा ?" उस ने कहा : "तुम कहीं भी न जाओ क्यूंकि मैं किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के दीन का पैरूकार हो लेकिन अब वोह वक़्त क़रीब आ चुका है कि अर्ज़े तिहामा में एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام का ज़ुहूर होने वाला है या हो चुका है लिहाज़ा तुम मेरी वफ़ात के बा'द इसी गिर्जा में ठहरे रहना और यहां से गुज़रने वाले ताजिरों के हर क़ाफ़िले के बारे में पूछते रहना क्यूंकि रूम में दाख़िल होने के लिये अहले हिजाज़ के तिजारती क़ाफ़िले यहीं से गुज़रते हैं। लिहाज़ा जब हिजाज़ के ताजिरों का कोई क़ाफ़िला रूम में आए तो उन से पूछना कि "क्या तुम्हारे हां किसी ने नबुव्वत का दा'वा किया है।" जब तुम्हें किसी शख़्स के बारे में बता दिया जाए कि उस ने नबुव्वत का दा'वा किया है, तो तुम उन के पास चले जाना क्यूंकि येह वोही होंगे जिन की बिशारत ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने दी है और उन की निशानी येह है कि उन के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत दरख़्शां होगी, वोह हदिय्या तनावुल फ़रमाएंगे लेकिन सदक़ा क़बूल नहीं करेंगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "इतना कह कर वोह शख़्स भी इन्तिक़ाल कर गया और मैं वहीं ठहरा रहा और हर गुज़रने वाले क़ाफ़िले के बारे में मा'लूमात लेता रहा यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के कुछ लोग मेरे पास से गुज़रे, मैं ने उन से उन का वत़न पूछा तो उन्हों ने बताया कि "हम हिजाज़ से आए हैं।" मैं ने दरयाफ़्त किया : "क्या तुम्हारे हां किसी शख़्स ने नबुव्वत का दा'वा किया है ?" उन्हों ने कहा : "हां।" मैं ने कहा : "तुम में से कोई मुझे अपना ग़ुलाम बना ले और मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पहुंचने तक मुझे सुवारी और खाने की सहूलत फ़राहम कर दे। फिर वहां पहुंच

www.dawateislami.net

कर चाहे तो बेच दे और चाहे तो ख़िदमत लेता रहे।" चुनान्चे, उन में से एक शख़्स ने मुझे अपना गुलाम बना लिया और सुवारी पर जगह भी दी। मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا पहुंच कर उस ने मुझे दो हबशियों के साथ एक बाग़ में काम पर लगा दिया। एक दिन मैं बाग़ से निकल कर मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में घूम रहा था कि अपने अ़लाके़ की एक औ़रत से मेरी मुलाक़ात हो गई। मैं ने कुछ देर उस से गुफ़्तगू की तो उस ने मुझे बताया कि "उस के आक़ा और घर वाले सब ने इस्लाम क़बूल कर लिया है।" फिर मैं ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया कि "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात अपने अस्हा़ब के साथ ह़जरे अस्वद के पास तशरीफ़ फ़रमा होते हैं और सुब्ह़ को तशरीफ़ ले जाते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं रात इस ग़ौरो फ़िक्र में बैठा हुवा था कि कहीं मेरे साथ काम करने वाले मुझे खो न दें इतने में कुछ लोगों ने मुझ से पूछा : "क्या हुवा ?" मैं ने कहा : "पेट में दर्द है।" फिर जब ह़जरे अस्वद के पास सरकारे अबद क़रार, बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद का वक़्त हुवा तो मैं वहां जा पहुंचा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़जरे अस्वद के पास तशरीफ़ फ़रमा थे और सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बैठे हुवे थे। मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पुश्त मुबारक की त़रफ़ हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे दिल की बात जान गए और अपनी चादर मुबारक कमर से सिरका दी। मैं कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो दिल में कहा : "اَللّٰهُ اَكْبَر एक निशानी तो देख ली।" फिर अगली रात भी मैं ने इसी त़रह़ किया और मेरे साथ काम करने वालों ने कुछ नाराज़ी का इज़्हार न किया। मैं कुछ खजूरें जम्अ़ कर के इन्तिज़ार करने लगा। जैसे ही मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी का वक़्त हुवा तो मैं ने खजूरें लीं और ह़ाज़िर हो कर ख़िदमत में पेश कर दीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह क्या है ?" मैं ने अ़र्ज़ की "सदक़ा है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह खजूरें अपने सह़ाबा (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) को तनावुल करने का हुक्म दिया और खुद उन में से कुछ भी तनावुल न फ़रमाया।" मैं ने दिल में कहा : "اَللّٰهُ اَكْبَر येह दूसरी निशानी है।"

फिर तीसरी रात भी मैं ने कुछ खजूरें जम्अ़ कीं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर पेश कर दीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : "हदिय्या है।" सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें खुद भी तनावुल फ़रमाई और

www.dawateislami.net

सहाबा (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) ने भी खाईं, येह देखते ही मैं ने कहा : "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के रसूल हैं।[1] हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से मेरा हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो मैं ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जाओ और जा कर अपने आप को ख़रीद लो ?" चुनान्चे, मैं अपने मालिक के पास आया और कहा : "मेरा नफ़्स मुझे बेच दो।" मालिक ने कहा : "मैं तुझे इस शर्त़ पर बेचता हूं कि तुम मेरे लिये खजूर के 100 दरख़्त लगाओ यहां तक कि वोह तय्यार हो कर फल देने लगें और उस के साथ खजूर की गुठली के बराबर सोना भी दो।"

चुनान्चे, मैं ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर सारी बात अ़र्ज़ की तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो उस ने मांगा है उसे दे दो और जिस कुंवें से तुम बाग़ को सैराब करते हो उस से एक डोल पानी भर कर मेरे पास लाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं अपने मालिक के पास गया और उस की मत़्लूबा शराइत़ पर अपने आप को ख़रीद लिया और जिस कुंवें से बाग़ को सैराब किया जाता था उस से पानी का एक डोल ले कर बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो गया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये दुआ़ फ़रमाई फिर मैं ने उस पानी से खजूरों के दरख़्त लगा दिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन में से एक भी खजूर का दरख़्त नहीं मुरझाया, जब उस का फल ज़ाहिर हो गया तो मैं ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि "फल पक कर तय्यार हो चुका है।" आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की गुठली के बराबर सोना मंगवाया और मुझे अ़त़ा फ़रमाया मैं वोह सोना ले कर एक आदमी के पास गया और तराज़ू के एक पलड़े में सोना और दूसरे में खजूर की गुठली को रख दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सोने वाला पलड़ा ज़मीन से न उठा। फिर मैं बारगाहे नबुव्वत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम इतने इतने वज़्न की भी शर्त़ मान लेते तो येह सोने का टुकड़ा उस से भारी होता।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गया और हर वक़्त आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रहता।"

---

1 ....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में तशरीफ़ आवरी के बा'द इस्लाम लाए। जैसा कि बा'द वाली रिवायत से ज़ाहिर है। और बा'ज़ ने कहा हिजरत से पहले मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में इस्लाम क़बूल किया। येह क़ौल ज़ईफ़ है। (ماخوذ از معرفة الصحابة، الرقم ۱۲۰۷، ج ۲، ص ٤٥٥)

www.dawateislami.net

﴾612﴿ (ب).....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं शहरे "अस्बहान" के एक देहात में रहता था। एक दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में येह बात इल्क़ा फ़रमाई कि आस्मानों और ज़मीन का ख़ालिक़ कौन है ? पस मैं एक ऐसे आदमी के पास गया जो अपनी बातों से लोगों को परेशान नहीं करता था। मैं ने उस से पूछा : "कौन सा दीन अफ़्ज़ल है ?" उस ने कहा : "तुझे येह नई बात कहां से सूझी, तू अपने बाप के दीन के सिवा और दीन इख़्तियार करना चाहता है ?" मैं ने कहा : "नहीं ! लेकिन मैं येह जानना चाहता हूं कि आस्मानों और ज़मीनों का मालिक कौन है ? सब से अफ़्ज़ल दीन कौन सा है ?" उस ने कहा कि "मौसल" में एक राहिब है उस से बड़ा कोई आ़लिम नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं उस की त़रफ़ चल दिया, मैं उस के पास रहा तो मैं पूरी दुन्या में उस पर भरोसा करने लगा। वोह दिन को रोज़ा रखता और रात इ़बादत में बसर करता, मैं भी उस की त़रह़ इ़बादत करने लगा। यूं मैं 3 साल उस के पास ठहरा रहा जब उस का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो मैं ने उस से कहा कि "आप मुझे किस के पास जाने का हुक्म देते हैं ?" उस ने कहा : "मैं मशरिक़ में किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जो इस दीन पर कारबन्द हो जिस पर मैं हूं। अलबत्ता जज़ीरए अ़रब के उस पार एक राहिब है तुम उस के पास चले जाना और उसे मेरा सलाम कहना।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : (उस के विसाल के बा'द) मैं उस आ़लिम के पास चला आया और उस का सलाम कहा और बताया कि उस का विसाल हो चुका है। मैं उस के पास भी 3 साल तक रहा। जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने कहा कि "आप अपने बा'द मुझे किस के पास जाने का कहते हैं ?" उस ने कहा : "मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ इस अ़लाक़े में तो कोई ऐसा आ़लिम नहीं है जो दीने ह़क़ पर हो। अलबत्ता "अ़म्मूरिय्या" में एक बड़ी उ़म्र का आ़लिम है लेकिन पता नहीं तुम उसे मिल पाओगे या नहीं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : उस के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने "अ़म्मूरिय्या" का सफ़र इख़्तियार किया। उस आ़लिम के पास भी कुछ अ़र्सा रहा। उसे मैं ने बहुत ख़ुशह़ाल पाया। जब उस का वक़्ते विसाल आया तो मैं ने कहा : "आप मुझे कहां जाने का हुक्म देते हैं ?" उस ने कहा : "इस वक़्त रूए ज़मीन पर कोई आ़लिम ऐसा नहीं है जो ह़क़ पर हो इस लिये अब तुम किसी के पास मत जाना लेकिन अगर तुम किसी ज़माने में सुनो कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आल में एक शख़्स पैदा हुवा है और मैं नहीं समझता कि तुम उस ज़माने को पाओगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "लेकिन मुझे उम्मीद

www.dawateislami.net

थी कि मैं उस ज़माने को पाऊंगा।" बहर ह़ाल उस ने कहा : "अगर तुम उन का साथ दे सको तो ज़रूर देना कि वोह ह़क़ पर होंगे। उन की निशानी येह है कि उन की क़ौम के लोग उन्हें साह़िर, मजनून और काहिन कहेंगे और एक निशानी येह है कि वोह हदिय्या तनावुल फ़रमाएंगे लेकिन सदक़े के माल में से कुछ न खाएंगे और एक अ़लामत येह है कि उन के दोनों शानों के दरमियान मोहरे नबुव्वत दरख़्शां होगी।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं इन्तिज़ार करता रहा बिल आख़िर मदीने की त़रफ़ जाने वाला एक क़ाफ़िला गुज़रा। मैं ने उन से पूछा : "तुम लोग कौन हो ?" बोले : "हम मदीने के रहने वाले हैं। ताजिर हैं। तिजारत कर के गुज़र बसर करते हैं। लेकिन अब आले इब्राहीम से एक शख़्स पैदा हुवा है उस की क़ौम उसे क़त्ल करने के दरपे है। जिस की वज्ह से वोह हिजरत कर के हमारे शहर में चला आया है। हमें डर है कि कहीं वोह हमारी तिजारत में रुकावट न डाल दे और अब उसे मदीने पर तसल्लुत़ ह़ासिल है।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने उन से पूछा कि "उन की क़ौम के लोगों का उन के बारे में क्या ख़याल है ?" उन्हों ने जवाब दिया कि "वोह उसे साह़िर, मजनून और काहिन कहते हैं।" मैं ने (दिल में) कहा "येही तो निशानी है।" मैं ने कहा : "तुम मुझे अपने अमीर के पास ले चलो।" चुनान्चे, अमीर के पास पहुंच कर मैं ने उस से कहा कि "मुझे अपने साथ मदीने ले चलो।" उस ने कहा : "तुम इस के इवज़ मुझे क्या दोगे ?" मैं ने कहा : "मेरे पास तुम्हें देने के लिये इस के सिवा कुछ नहीं है कि मैं तुम्हारा गुलाम बन जाऊं।" लिहाज़ा उस ने मुझे अपने साथ ले लिया और मदीने पहुंच कर खजूरों के एक बाग़ में ठहराया। मैं ऊंटों की त़रह़ अपनी पीठ पर पानी लाद कर लाता और बाग़ को सैराब करता ह़त्ता कि इस के सबब मेरी पीठ और सीना ज़ख़्मी हो गए। वहां मेरी (फ़ारसी) ज़बान कोई नहीं समझता था। एक दिन एक बूढ़ी फ़ारसी ख़ातून वहां आई वोह भी येही काम करती थी। मैं ने उस से बात की तो वोह मेरी बात समझ गई। मैं ने कहा : "मुझे बताओ येह शख़्स जो ज़ाहिर हुवा है कहां मिलेगा ?" उस ने कहा : "सुब्ह़ सवेरे नमाज़े फ़ज्र के बा'द दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में वोह यहां से गुज़रेगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं वापस आया, खजूरें इकठ्ठी कीं, सुब्ह़ खजूरें ले कर उसी जगह पहुंच गया, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के झुरमुट में

www.dawateislami.net

तशरीफ़ लाए तो मैं ने खजूरें ख़िदमत में पेश कीं तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''येह क्या है ? सदक़ा है या हदिय्या ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''सदक़ा है।'' इरशाद फ़रमाया : ''येह उन्हें दे दो।'' फिर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने वोह खजूरें तनावुल फ़रमाईं लेकिन हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में से कुछ न खाया। मैं ने (दिल में) कहा : ''एक निशानी तो हो गई।'' दूसरे दिन मैं फिर खजूरें ले कर ह़ाज़िर हुवा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : ''येह क्या है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''हदिय्या है।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी तनावुल फ़रमाई और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن को बुला कर उन्हें भी अपने साथ शामिल फ़रमाया। फिर जब सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ में मोहरे नबुव्वत देखने की बे क़रारी मुलाह़ज़ा फ़रमाई तो पुश्ते अत़हर से कपड़ा हटा दिया पस मैं मोहरे नबुव्वत के बोसे लेने और उस से चिमटने लगा। फिर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरयाफ़्त फ़रमाने पर मैं ने अपना सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''चूंकि तुम ने अहले क़ाफ़िला से तै़ कर लिया था कि तुम उन के ग़ुलाम हो। लिहाज़ा अब मैं तुम्हें उन से ख़रीद लूंगा।'' फिर मुझे मेरे आक़ा से इस शर्त़ पर ख़रीद लिया कि ''येह तुम्हें खजूरों के 300 दरख़्त लगा कर देगा और 40 ऊक़िय्या सोना भी देगा। फिर येह आज़ाद हो जाएगा।'' इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''गुठलियां मैं लगाऊंगा।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुठलियां लगाईं और कुंवें पर तशरीफ़ ले जा कर उस में डोल डाला, जब वोह ऊपर आता हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे ऊपर खींच लेते क्यूंकि जब डोल भर जाता तो ख़ुद ही बुलन्द हो जाता था ! फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन गुठलियों को पानी दिया। आप के इस अ़मल की बरकत से वोह दरख़्त बहुत जल्द उग आए। लोग कहने लगे : ''سُبْحٰنَ اللّٰہ ! हम ने इस जैसा ग़ुलाम नहीं देखा ! येह ग़ुलाम तो बड़ी शान वाला है !'' रावी बयान करते हैं कि लोग ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गिर्द जम्अ़ हो गए तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें सोने का एक टुकड़ा अ़त़ा फ़रमाया जिस का वज़्न 40 ऊक़िय्या के बराबर निकला।[1]

﴾613﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''10 से ज़ियादा राहिबों की ख़िदमत में रहने के बा'द मुझे सह़ीह़ दीन मिला।''[2]

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٦٠٧٥/٦٠٧٦، ج٦،ص٢٣١تا٢٣٣.

2 ......صحیح البخاری،کتاب مناقب الانصار،الحدیث:٣٩٤٦،ص٣٢٢.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के नसीह़त आमोज़ वाक़िआत

﴾614﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इयादत के लिये गए और कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! खुश ख़बरी हो कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ ले जाते वक़्त आप से राज़ी थे ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : ऐ सा'द ! येह कैसे ? जब कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुना है कि "तुम्हारे पास दुन्यावी साज़ो सामान एक मुसाफ़िर के ज़ादे राह की मिस्ल होना चाहिये ।"(1)

माले दुन्या ने रुला दिया :

﴾615﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने शुयूख़ से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इयादत के लिये गए तो उन्हें रोते देख कर पूछा : "क्यूं रो रहे हैं ? आप तो हौज़े कौसर पर अपने दोस्तों (या'नी सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) और हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलने वाले हैं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले जाते वक़्त आप से राज़ी थे ।" फ़रमाया : मैं मौत के डर या दुन्या छूटने की वज्ह से नहीं रो रहा बल्कि मैं तो इस वज्ह से रो रहा हूं कि मेरे इर्द गिर्द कसीर साज़ो सामान पड़ा हुवा है हालांकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से अ़ह्द लिया था कि "तुम्हारे पास दुन्यावी सामान सिर्फ़ उतना होना चाहिये जितना एक मुसाफ़िर के पास ज़ादे राह होता है ।" रावी बयान करते हैं : "उस वक़्त उन के पास जो सामान था वोह सिर्फ़ एक बरतन था जो वुज़ू करने या कपड़े धोने के काम आता था ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "आप हम से कोई अ़ह्द लें जिस पर हम आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात

---

1 ......شعیب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث:۱۰۳۹۶، ج۷، ص۳۰۶۔

www.dawateislami.net

के बा'द कारबन्द रहें।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "कोई काम करते वक़्त, फ़ैसला करते वक़्त और कोई चीज़ तक़्सीम करते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद रखा करो।"(1)

﴾616﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुवर्रिक़ इज्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात के वक़्त किसी ने उन्हें रोता देख कर वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से अ़ह्द लिया था कि "तुम्हारे पास दुन्यावी साज़ो सामान एक मुसाफ़िर के ज़ादे राह जितना होना चाहिये।" रावी बयान करते हैं कि "आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात के बा'द जब घर के सामान की त़रफ़ नज़र की गई तो एक पालान, एक बिस्तर और खाने पीने की चन्द चीज़ों के सिवा और कुछ न था और इन सब की क़ीमत तक़रीबन 20 दिरहम को पहुंचती थी।"(2)

﴾617﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि जब हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो रोने लगे। किसी ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप क्यूं रो रहे हैं ? क्या हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप से राज़ी हो कर दुन्या से तशरीफ़ नहीं ले गए ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं मौत के ख़ौफ़ से नहीं रो रहा बल्कि मैं इस वज्ह से रो रहा हूं कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से अ़ह्द लिया था कि "तुम्हारे पास दुन्यावी साज़ो सामान एक मुसाफ़िर के ज़ादे राह की मिस्ल होना चाहिये।"(3)

सरकार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किये अ़ह्द ने रुला दिया :

﴾618﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की इ़यादत के लिये गए तो उन्हें रोते देख कर कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप क्यूं रो रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से अ़ह्द लिया था कि "तुम्हारे पास दुन्यावी मालो दौलत एक मुसाफ़िर के ज़ादे राह के बराबर होना चाहिये।" लेकिन हम में से कोई भी सह़ीह़ मा'नों में इस अ़ह्द की ह़िफ़ाज़त नहीं कर सका।"(4)

---

1 ......الطبقات الكبرىٰ لابن سعد،الرقم٣٥٩،سلمان الفارسی،ج٤،ص٦٨،بتغير.

2 ......المعجم الكبير،الحديث:٦١٦٠،ج٦،ص٢٦١.

3 ......الطبقات الكبرىٰ لابن سعد،الرقم٣٥٩،سلمان الفارسی،ج٤،ص٦٨،مختصراً.

4 ......الطبقات الكبرىٰ لابن سعد،الرقم٣٥٩،سلمان الفارسی،ج٤،ص٦٨،مختصراً.

www.dawateislami.net

रन्जो मलाल की वज्ह !

﴾619﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात के वक़्त हम ने उन पर ग़म के असरात देखे तो पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप क्यूं गिर्या व ज़ारी कर रहे हैं ? ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه साबिक़ुल इस्लाम हैं और सरकारे दो जहान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में कई ग़ज़्वात में शिर्कत की सआ़दत पाई है और बड़ी बड़ी फ़ुतूह़ात में भी शरीक हुवे हैं ।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मुझे इस बात ने रन्जीदा व मलूल कर रखा है कि मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से जुदा होते वक़्त अ़ह्द लिया था कि "मोमिन के लिये मुसाफ़िर के ज़ादे राह के बराबर दुन्यावी सामान काफ़ी है ।" येही बात मेरे लिये परेशानी का बाइ़स है । रावी कहते हैं : "जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का माल जम्अ़ किया गया तो उस की क़ीमत 15 दीनार थी ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रिवायत के मुत़ाबिक़ तो वोह 15 दीनार ही थे लेकिन दूसरे रावियों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि उन के तर्के की कुल क़ीमत 10 दिरहम से कुछ ज़ियादा थी ।"(1)

﴾620﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इ़यादत करने की ग़रज़ से उन के पास गया तो उन्हें रोता पा कर सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से अ़ह्द लिया था कि "मेरे पास एक मुसाफ़िर के ज़ादे राह से बढ़ कर साज़ो सामान नहीं होना चाहिये ।"(2)

﴾621﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन बज़ीमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (के विसाल के बा'द जब उन) का तर्का बेचा गया तो उस की क़ीमत सिर्फ़ 14 दिरहम ह़ासिल हुई थी ।"(3)

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقراء و الزھد و القناعۃ، الحدیث:٧٠٤، ج٢، ص٤٥.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٦٠٦٩، ج٦، ص٢٢٧، بتغیر.

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٦٠٤٢، ج٦، ص٢١٤.

www.dawateislami.net

टोकरियां बनाने वाला हाकिम :

﴾622﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सलामा इज्ली رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा गाऊं से मेरे भान्जे क़ुदामा رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आए और मुझ से कहा कि "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ियारत कर के उन्हें सलाम पेश करना चाहता हूं।" उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ "मदाइन" में 20 हज़ार मुसलमानों पर अमीर मुक़र्रर थे। चुनान्चे, हम वहां पहुंचे तो देखा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चारपाई पर बैठे खजूर के पत्तों से टोकरियां बना रहे हैं।" मैं ने सलाम के बा'द अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! येह मेरा भान्जा है जो गाऊं से आया है और आप को सलाम पेश करना चाहता है।" (उस ने सलाम किया तो) आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के सलाम का जवाब इरशाद फ़रमाया। फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "येह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत करता है।" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे अपनी मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए।"[1]

﴾623﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ 30 हज़ार मुसलमानों पर अमीर थे और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़ीफ़ा 5 हज़ार दिरहम था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक चादर थी जिसे ओढ़ कर लोगों को ख़ुत़बा देते और सोते वक़्त वोही चादर आधी ऊपर और आधी नीचे बिछा लेते। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास वज़ीफ़ा आता तो उसे मुसलमानों पर ख़र्च कर देते और ख़ुद अपने हाथों से खजूर के पत्तों की टोकरियां बना कर गुज़ारा कर लेते।"[2]

लौंडी से निकाह़ :

﴾624﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अबी क़ुर्रा किन्दी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْقَوِی बयान करते हैं : मेरे वालिद ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी हमशीरा (मेरी फूफी) से निकाह़ का पैग़ाम दिया तो उन्हों ने इन्कार कर दिया और फिर बुक़ैरा नामी एक लौंडी से निकाह़ कर लिया। मेरे वालिद को ख़बर हुई कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अच्छे तअ़ल्लुक़ात हैं तो वोह उन्हें तलाश करने लगे। किसी ने बताया कि वोह सब्ज़ी के खेत में हैं। अब्बा हुज़ूर उन के पास पहुंचे तो उन्हें कन्धों पर सब्ज़ी से भरी एक टोकरी उठाए

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٦١١٠، ج٦، ص٢٤١ .

2 ......الزھد للامام احمدبن حنبل،باب زھدسلمان الفارسی،الحدیث:٨١٥،ص١٧٣ .

www.dawateislami.net

देखा। फिर उन्हें साथ ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर पहुंचे। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घर में दाख़िल हो कर सलाम किया और फिर मेरे वालिद को अन्दर आने का कहा। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक चटाई पर आराम फ़रमा रहे थे और उन के सर की जानिब कुछ ईंटें और बा'ज़ मा'मूली चीज़ें रखी थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस बांदी की चटाई पर बैठो जो उस ने अपने लिये तय्यार की है (इस से वोह समझ गए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निकाह़ कर चुके हैं लिहाज़ा उन्हों ने फिर इस मौज़ूअ़ पर कोई गुफ़्तगू न की)।"(1)

मह़ब्बत और नफ़रत का राज़ :

﴾625﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन उ़मैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं "मदाइन" गया तो वहां बोसीदा लिबास में मलबूस एक आदमी देखा। उस के पास पका हुवा सुर्ख़ चमड़ा था जिसे वोह ह़रकत दे रहा था। मैं ने उसे मुतवज्जेह किया तो उस ने मेरी त़रफ़ देखा और हाथ से इशारा करते हुवे फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अपनी जगह पर ठहरे रहो।" मैं रुक गया और अपने साथ वालों से दरयाफ़्त किया कि "येह कौन है ?" उन्हों ने बताया कि "येह ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" कुछ देर बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर में दाख़िल हुवे और सफ़ेद लिबास ज़ेबे तन किये बाहर तशरीफ़ लाए, फिर मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से मुसाफ़ह़ा किया और ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया। मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! इस से पहले न तो मैं ने कभी आप को देखा है और न ही आप ने मुझे कहीं देखा है, न मैं आप को जानता हूं और न ही आप मुझे पहचानते हैं ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! तुझे देखते ही मेरी रूह़ ने तेरी रूह़ को पहचान लिया। बताओ ! क्या तुम ह़ारिस बिन उ़मैरा नहीं हो ?" मैं ने कहा : "बेशक मैं ह़ारिस बिन उ़मैरा ही हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुना है कि "अरवाह़ मख़्लूत़ लश्कर हैं, तो उन में से जो (आ़लमे अरवाह़ में) जान पहचान रखती हैं वोह (दुन्या में भी) उल्फ़त रखती हैं और जो (आ़लमे अरवाह़ में) अजनबी रहती हैं वोह (दुन्या में भी) अलग रहती हैं।"(2)

---

1 ......الادب المفرد للبخاری، باب الخروج الی......الخ، الحدیث:۲۳۵، ص ۸۱.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۶۱۷۲، ج۶، ص ۲۶۴.

www.dawateislami.net

क़ियामत की भूक :

《626》.....हज़रते सय्यिदुना अ़तिय्या बिन आ़मिर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الغَافِر फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तकल्लुफ़न खाना तनावुल कर रहे हैं और फ़रमा रहे हैं : मुझे येह खाना काफ़ी है, मुझे येह खाना काफ़ी है । क्यूंकि मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि "जो लोग दुन्या में पेट भर कर खाते हैं वोह क़ियामत में ज़ियादा भूके होंगे। ऐ सलमान ! बेशक दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत[1] है।"[2]

《627》.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ القَوِی से मरवी है कि क़बीलए बनी अ़ब्स के एक शख़्स का बयान है कि मैं हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोहबत में रहा करता था, एक बार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों के किसरा को फ़त्ह करने और वहां के ख़ज़ाने मिलने का ज़िक्र करते हुवे फ़रमाया : "जिस मालिके मुत़लक़ ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें किसरा के ख़ज़ाने और मुल्क अ़त़ा फ़रमाया अगर वोह चाहता तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में येह ख़ज़ाने अ़त़ा फ़रमा देता। उस वक़्त सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सुब्ह़ इस ह़ाल में होती थी कि उन के पास दिरहमो दीनार ह़त्ता कि खाना भी मा'क़ूल मिक़्दार में नहीं होता था। ऐ अ़ब्सी ! अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को इतना माल अ़त़ा फ़रमा दिया है।" उस शख़्स का कहना है कि "फिर हम उन ख़ज़ानों के क़रीब से गुज़रे तो वोह बिखरे पड़े थे।" हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन ख़ज़ानों को यूं बिखरे पड़े देखा तो फ़रमाया :

1...मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीस की शर्ह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : "या'नी मोमिन दुन्या में कितना ही आराम में हो, मगर उस के लिये आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या जेल है, जिस में वोह दिल नहीं लगाता, जेल अगर्चे ए क्लास हो, फिर भी जेल है, और काफ़िर ख़्वाह कितने ही तकालीफ़ में हों, मगर आख़िरत के अ़ज़ाब के मुक़ाबिल उस के लिये दुन्या बाग़ और जन्नत है, वोह यहां दिल लगा कर रहता है, लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि बा'ज़ मोमिन दुन्या में आराम से रहते हैं, और बा'ज़ काफ़िर तक्लीफ़ में। एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अन्वर ने फ़रमाया : ऐ अबू ज़र दुन्या मोमिन की जेल है और क़ब्र उस के छुटकारे की जगह, जन्नत उस के रहने का मक़ाम है और दुन्या काफ़िर के लिये जन्नत है, मौत उस की पकड़ का दिन और दोज़ख़ उस का ठिकाना (मिरक़ात)।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 4)

2......سنن ابن ماجه،ابواب الاطعمة،باب الاقتصادفی الأکل و کراهة الشبع،الحديث:٣٣٥١،ص٢٦٧٩۔
البحرالزخار بمسندالبزار،مسندسلمان الفارسی،الحديث:٢٤٩٨،ج٦،ص٤٦١

www.dawateislami.net

"जिस मालिके मुत़्लक़ ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ ने किसरा के ख़ज़ाने और मुल्क अ़त़ा फ़रमाया अगर वोह चाहता तो हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में येह ख़ज़ाने तुम्हें अ़त़ा फ़रमा देता, उस वक़्त सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की सुब्ह़ इस ह़ाल में होती थी कि उन के पास दिरहमो दीनार ह़त्ता कि खाने को भी कुछ न होता था, ऐ अ़ब्सी ! अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को किसरा के ख़ज़ाने और मुल्क अ़त़ा फ़रमा दिया है (अब मुसलमान कितने चैन में हैं !) ।"(1)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सादगी :

﴾628﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़बीलए बनी अ़ब्दुल क़ैस के एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक ऐसी जंग में कि जिस में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरे लश्कर थे ऐसी ह़ालत में देखा कि एक दराज़ गोश पर सुवार थे और ऐसी शलवार पहन रखी थी जिस के किनारे हवा की वज्ह से ह़रकत कर रहे थे। दूसरी त़रफ़ लश्कर वाले कह रहे थे कि "अमीरे लश्कर तशरीफ़ ला रहे हैं।" येह सुन कर उन्हों ने फ़रमाया कि "ख़ैर और शर तो आज के बा'द शुरूअ़ होंगे (या'नी कामयाबी या नाकामी का पता तो अब चलेगा) ।"(2)

﴾629﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शौज़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सर के तमाम बाल मुन्डवा के रखते। किसी ने इस का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "अस्ल ज़िन्दगी तो आख़िरत की है।"(3)

बुख़्ल व ह़िर्स की मज़म्मत :

﴾630﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन हुनैफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक शख़्स से झगड़ा था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह झूटा है तो इसे उस वक़्त तक मौत न देना जब तक वोह तीन बातों में से एक में मुब्तला न हो जाए।" जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुस्सा कम हुवा तो मैं ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! वोह तीन बातें कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "फ़ित्नए दज्जाल, फ़ित्नए

---

1 ......مسند ابی داؤد الطیالسی،سلمان الفارسی،الحدیث:٦٥٧،ص٩١.

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الجھاد،باب فی الامارۃ،الحدیث:١٣،ج٧،ص٥٧٠،مختصرًا۔
الزھدلابی داؤد، الحدیث:٢٥٥،ج١،ص٢٧٢.

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،باب فی فضل ابی ھریرۃ، الحدیث:٨٤٢، ص١٧٧.

www.dawateislami.net

अमारत, येह भी फ़ितनए दज्जाल ही की त़रह़ है और बुख़्ल व ह़िर्स कि जब येह किसी इन्सान को लाह़िक़ होते हैं तो वोह इस बात की परवाह नहीं करता कि फ़ुलां शै कहां से आई है ?"[1]

दा'वत के खाने का एक मस्अला :

﴾631﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को खाने की दा'वत दी (खाने के दौरान वहां) एक मिस्कीन आ गया तो मेहमान ने खाने से एक निवाला उठाया ताकि उसे दे लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेहमान से फ़रमाया : "येह निवाला जहां से उठाया है वहीं रख दो क्यूंकि मैं ने तुम्हारी दा'वत की है ताकि तुम खुद येह खाना खाओ, मुझे येह पसन्द नहीं कि तुम्हारे मिस्कीन को निवाला देने की वज्ह से मुझे अज्र मिले और तुम्हारे सर गुनाह हो[2]।[3]

बीमारों की ख़ैर ख़्वाही :

﴾632﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने हाथ से रोज़ी कमाते, जब कुछ पैसे ह़ासिल हो जाते तो इस के इवज़ गोश्त या मछली ख़रीद लाते फिर मरज़े कोढ़ में मुब्तला लोगों को बुलाते और उन को अपने साथ खाना खिलाते थे।"[4]

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۶۰۵۲،ج۶،ص۲۱۷.

2 .....येह शरई मस्अला हर मेहमान को ज़ेहन में रखना चाहिये कि उ़मूमन दा'वतों में पेश आता है।

चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़ह़ा 36 पर है : (1).....दूसरे के हां खाना खा रहा है, साइल ने मांगा उस को येह जाइज़ नहीं कि साइल को रोटी का टुकड़ा दे दे क्यूंकि इस (मेज़बान) ने उस के खाने के लिये रखा है, उस को मालिक नहीं कर दिया कि जिस को चाहे दे दे। (2).....एक दस्तरख़्वान पर जो लोग खाना तनावुल करते हैं, उन में से एक शख़्स कोई चीज़ उठा कर दूसरे को दे दे येह जाइज़ है, जब कि मा'लूम हो कि साहि़बे ख़ाना को येह देना ना गवार न होगा और अगर मा'लूम है कि उसे ना गवार होगा तो देना जाइज़ नहीं, बल्कि अगर मुश्तबा ह़ाल हो मा'लूम न हो कि ना गवार होगा या नहीं जब भी न दे। बा'ज़ लोग एक ही दस्तरख़्वान पर मुअ़ज़्ज़ज़ीन के सामने उ़म्दा खाने चुनते हैं और ग़रीबों के लिये मा'मूली चीज़ें रख देते हैं। अगर्चे ऐसा न करना चाहिये कि ग़रीबों की इस में दिल शिकनी होती है। मगर इस सूरत में जिस के पास कोई अच्छी चीज़ है, उस ने ऐसे को दे दी जिस के पास नहीं है तो ज़ाहिर येही है कि साहि़बे ख़ाना को ना गवार होगा क्यूंकि अगर देना होता तो वोह खुद ही उस के सामने भी येह चीज़ रखता या कम अज़ कम येह सूरत इश्तिबाह की है, लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में चीज़ देना नाजाइज़ है और अगर एक ही क़िस्म का खाना है, मसलन रोटी, गोश्त और एक के पास रोटी ख़त्म हो गई, दूसरे ने अपने पास से उठा कर दे दी तो (जाइज़ है क्यूंकि) ज़ाहिर येह है कि साहि़बे ख़ाना को ना गवार न होगा।

3 ......مسند ابن الجعد،باب عمرو بن ابی البختری،الحدیث:۱۲۳،ص۳۵.

4 ......سیر اعلام النبلاء،الرقم۹۶،سلمان الفارسی،ج۳،ص۳۴۶.

www.dawateislami.net

अपने हाथ की कमाई पसन्द है :

《633》.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं अपने हाथ की कमाई से खाना पसन्द करता हूं।"

कमज़ोर के साथ रहमते ख़ुदावन्दी होती है :

《634》.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : अगर लोगों को मा'लूम हो जाए की कमज़ोर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ताईद व नुस्रत ह़ासिल होती है तो वोह कमज़ोरी व नातुवानी को त़ाक़तो क़ुव्वत पर तरजीह़ दें।[1]

《635》.....हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के साथ क़बीलए "बनी लैस" के पास गए ताकि उन से बात करें कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उन की एक औ़रत से निकाह़ का इरादा रखते हैं। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने क़बीले वालों के सामने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ज़ाइल व कमालात और साबिक़ुल इस्लाम होने का ज़िक्र किया और उन्हें बताया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه तुम्हारे क़बीले की फ़ुलां औ़रत से निकाह़ का इरादा रखते हैं। क़बीले वालों ने कहा कि "हम उस औ़रत का निकाह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से कर देते हैं लेकिन उन से नहीं कर सकते।" चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उस औ़रत से निकाह़ कर लिया और जब वहां से निकले तो हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से कहने लगे : "एक बात है लेकिन वोह बताते हुवे मुझे ह़या आती है।" उन्हों ने कहा : "ऐसी कौन सी बात है जो आप ह़या की वज्ह से नहीं बता पा रहे ?" हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने वोह सारा वाक़िआ़ कह सुनाया (कि क़बीले वालों ने इस त़रह़ कहा है और मैं ने उस औ़रत से शादी कर ली है)। हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे ज़ियादा ह़क़ पहुंचता है कि ऐसी औ़रत को पैग़ामे निकाह़ देने में ह़या करूं जिस के निकाह़ का फ़ैसला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के ह़क़ में फ़रमा दिया था।"[2]

---

1 .....الزهد للامام احمد بن حنبل، باب زهد سلمان الفارسی، الحديث: ٨٢١، ص ١٧٤.

2 .....المعجم الكبير، الحديث: ٦٠٥٠، ج٦، ص ٢١٦.

www.dawateislami.net

ख़ादिम पर नर्मी :

﴾636﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, उस ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को आटा गूंधते देखा तो हैरत ज़दा हो कर इस की वज्ह दरयाफ़्त की। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ने ख़ादिम को किसी काम से भेजा है और मुझे येह पसन्द नहीं कि मैं उस पर दो काम जम्अ़ करूं।" फिर उस शख़्स ने कहा कि "फ़ुलां ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को सलाम भेजा है।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम कब आए हो ?" उस ने कहा : "फ़ुलां दिन।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "अगर तुम उस का सलाम न पहुंचाते तो ख़ियानत के मुर्तकिब होते[1]।[2]

सलाम भी हदिय्या है :

﴾637﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस और जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْهِمَا हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मुलाक़ात के लिये निकले तो उन्हें मदाइन के गिर्दो नवाह में एक झोंपड़ी में पाया। हाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, फिर पूछा : "क्या सलमान फ़ारसी आप ही हैं ?" फ़रमाया : "जी हां !" उन्हों ने पूछा : "क्या आप सहाबिये रसूल हैं ?" फ़रमाया : "मैं नहीं जानता कि मैं सहाबी हूं या नहीं।" येह सुन कर दोनों हज़रात शक में मुब्तला हो गए और कहने लगे : "शायद हम जिन से मिलना चाहते हैं येह वोह नहीं हैं।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "तुम जिस से मिलना चाहते हो मैं वोही हूं। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ पाया है और उन की सोहबते बा बरकत भी मुझे हासिल रही है और (हक़ीक़त में) सहाबी तो वोह है

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 312 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" हिस्सा 16, स. 106 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "किसी से कह दिया कि फ़ुलां को मेरा सलाम कह देना उस पर सलाम पहुंचाना वाजिब है और जब उस ने सलाम पहुंचाया तो जवाब यूं दे कि पहले उस पहुंचाने वाले को इस के बा'द उस को जिस ने सलाम भेजा है या'नी येह कहे : وَعَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَام (الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب السابع فى السلام، ج٥، ص٣٢٦) मज़ीद फ़रमाया : "येह सलाम पहुंचाना उस वक़्त वाजिब है जब उस ने इस का इल्तिज़ाम कर लिया हो या'नी कह दिया हो कि हां तुम्हारा सलाम कह दूंगा कि उस वक़्त येह सलाम उस के पास अमानत है जो इस का हक़दार है उस को देना ही होगा वरना येह ब मन्ज़िला वदीअ़त है कि उस पर येह लाज़िम नहीं कि सलाम पहुंचाने वहां जाए। इसी त़रह हाजियों से लोग येह कह देते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर देना येह सलाम भी पहुंचाना वाजिब है।" (ردالمحتار، كتاب الحظر والاباحة، فصل فى البيع، ج٩، ص٦٨٥)

2.....الزهد للامام احمد بن حنبل، باب فى فضل ابى هريرة، الحديث: ٨٤١، ص١٧٧.

www.dawateislami.net

जो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नत में दाखि़ल होगा।'' फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम किस काम से आए हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''हम मुल्के शाम से आप के भाई के पास से आए हैं।'' आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फिर पूछा : ''वोह कौन है ?'' अ़र्ज़ की : ''हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه।'' फ़रमाया : ''उन्हों ने मेरे लिये जो तोहू़फ़ा भेजा है वोह कहां है ?'' अ़र्ज़ की : ''उन्हों ने आप के लिये कोई तोहू़फ़ा नहीं भेजा।'' फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अमानत अदा करो जो शख़्स भी उन के पास से आता है वोह मेरे लिये उन का तोहू़फ़ा लाता है।'' बोले : आप हम पर तोहमत न लगाएं अगर आप को कोई ज़रूरत है तो हम उसे अपने माल से पूरा किये देते हैं।'' आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''मुझे तुम्हारे माल की कोई ज़रूरत नहीं, मुझे तो वोह हदिय्या चाहिये जो उन्हों ने तुम्हारे हाथ भेजा है।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन्हों ने हमें कोई चीज़ दे कर नहीं भेजा सिवाए इस के कि उन्हों ने फ़रमाया : तुम में एक ऐसा शख़्स मौजूद है कि जब वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह होता था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी दूसरे की ह़ाजत नहीं होती थी। लिहाज़ा जब तुम उन के पास जाओ तो मेरा **सलाम** कहना।'' हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''येही तो वोह हदिय्या है जिस का मैं तुम से मुत़ालबा कर रहा था और एक मुसलमान के लिये **सलाम** से अफ़्ज़ल कौन सा हदिय्या हो सकता है जो अच्छी दुआ़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास से मुबारक व पाकीज़ा है।''(1)

हिक्मत भरा फ़ैसला :

﴾638﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला और अबू नहीक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हमराह एक लश्कर में शरीक थे कि एक शख़्स ने सूरए मरयम की तिलावत शुरूअ़ की तो वहां मौजूद एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा علی نبینا وعلیهما الصلوٰة والسلام को बुरा भला कहने लगा, हम ने उसे ख़ूब मारा यहां तक कि वोह लहू लुहान हो गया, उस ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर हमारी शिकायत की और कहा : ''जब इन्सान पर ज़ुल्म होता है तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से शिकायत करता है।'' आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हमारे पास तशरीफ़ लाए और उसे मारने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई। हम ने अ़र्ज़ की, कि ''हम सूरए मरयम की तिलावत कर रहे थे तो उस ने ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह علی نبینا وعلیهما الصلوٰة والسلام को गाली

(1)......المعجم الكبير،الحديث:٦٠٥٨،ج٦،ص٢١٩.

www.dawateislami.net

दी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम्हें उस के सामने येह सूरत तिलावत करने की क्या ज़रूरत थी ? क्या तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَیَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَیْرِ عِلْمٍؕ كَذٰلِكَ زَیَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَیُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ(۱۰۸) (پ۷،الانعام:۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें गाली न दो जिन को वोह अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वोह अल्लाह की शान में बे अदबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से यूंही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अ़मल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है वोह उन्हें बता देगा जो करते थे।*

फिर फ़रमाया : "ऐ गुरौहे अ़रब ! (याद करो) तुम दीनो दुन्या में किस क़दर बुरे और घटया थे। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इ़ज़्ज़त व ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया तो क्या अब तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दी हुई इ़ज़्ज़त से लोगों पर ग़लबा चाहते हो ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम अपनी इन ह़रकतों से बाज़ आ जाओ ! वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी येह शानो शौकत जो उस ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई है, छीन कर दूसरों को अ़त़ा फ़रमा देगा।" फिर आप ने हमें दर्स देते हुवे मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "मग़रिब और इ़शा के दरमियान कुछ नवाफ़िल (या'नी सलातुल अव्वाबीन) अदा किया करो, इस की बरकत से तुम सुकून मह़सूस करोगे और इस से इब्तिदाई रात का बोझ ख़त्म हो जाता है क्यूंकि इब्तिदाई रात का बोझ ही आख़िरी रात को ज़ाइल करता है।"(1)

दिल की बात :

﴾639﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ने लोगों से सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या मैं आप के लिये एक घर बनवा दूं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे ना पसन्द जाना तो उन्हों ने कहा : "आप इन्कार न करें, मैं आप के लिये ऐसा घर बनवाना चाहता हूं कि जब आप उस में लेटें तो एक जानिब आप का सर लगे और दूसरी जानिब पाउं, जब आप खड़े हों तो छत आप के सर को छूए, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "गोया आप ने मेरे दिल की बात कही है।"(2)

---

1 ......الزھدلابی داؤد،باب من زھدسلمان،الحدیث:۲۵۷،ج۱،ص۲۷۴.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،باب فی فضل ابی ھریرۃ،الحدیث:۸۴۰،ص۱۷۷.

www.dawateislami.net

क़ियामत की तारीकियां :

《640》.....हज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "ऐ जरीर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिज़ी इख़्तियार करो, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिज़ी इख़्तियार करता है बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अता फ़रमाएगा।" फिर फ़रमाया : "ऐ जरीर ! क्या तुम क़ियामत की तारीकियों के बारे में जानते हो ?" हज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" तो हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दुन्या में लोगों का एक दूसरे पर ज़ुल्म करना क़ियामत की तारीकियों का सबब है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बारीक लकड़ी हाथ में ली जो उंगलियों में सहीह़ त़रह़ दिखाई भी नहीं दे रही थी और फ़रमाया : "ऐ जरीर ! अगर तुम जन्नत में इस क़िस्म की लकड़ी ढूंडोगे तो न पाओगे।" उन्हों ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! तो फिर जन्नत में खजूर के और दीगर दरख़्त कैसे होंगे ?" फ़रमाया : "जन्नत के दरख़्तों की जड़ें मोतियों और सोने की और उन का बालाई हिस्सा फलों से लदा होगा।"(1)

सब से बड़ा गुनहगार :

《641》.....हज़रते सय्यिदुना शिमर बिन अ़तिय्या رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में ज़ियादा कलाम करने वाला बरोज़े क़ियामत सब से बड़ा गुनहगार होगा।"(2)

बद गुमानी से इजतिनाब :

《642》.....हज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन मुज़र्रिब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ख़ादिम के मुतअ़ल्लिक़ बद गुमान होने के ख़ौफ़ से अपना खाना खुद तय्यार करता हूं।"(3)

《643》.....हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अबू जा'द رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक अश्जई शख़्स से रिवायत करते हैं कि लोगों को पता चला कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदाइन की एक

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام سلمان، الحدیث:۹، ج۸، ص۱۷۹.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد سلمان الفارسی، الحدیث:۸۱٤، ص۱۷۳.

3 ......مسند ابن الجعد، باب من حدیث ابی خیثمة زھیر بن معاویة، الحدیث:۲۰۰۱، ص۳۷۱.

www.dawateislami.net

मस्जिद में हैं तो वोह उन के पास जम्अ़ होने लगे यहां तक कि हज़ार के लग भग अफ़राद वहां जम्अ़ हो गए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर फ़रमाया : बैठो बैठो ! जब सब लोग बैठ गए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए यूसुफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, आहिस्ता आहिस्ता लोग वहां से निकलने लगे यहां तक कि 100 के क़रीब अफ़राद बाक़ी रह गए, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जलाल में आ कर फ़रमाया : "तुम ने मन घढ़त व फ़ुज़ूल बातें सुनना चाहीं लेकिन मैं ने तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुनाया तो उठ कर चले गए।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम झूटी बातें सुनना चाहते हो और मैं तुम्हें फ़ुलां फ़ुलां सूरत की आयतें सुनाता हूं।"(1)

मेहमान नवाज़ी ईमान का हिस्सा है :

﴾644﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "आज के लोगों की आ़दतें कितनी अच्छी हैं। मैं सफ़र में था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने जब भी किसी के हां क़ियाम किया तो उस ने मेरे साथ इतना अच्छा बरताव किया कि मुझे यूं लगा जैसे मैं ने अपने भाई के पास क़ियाम किया है।"

रावी फ़रमाते हैं : फिर उस शख़्स ने लोगों की चन्द और अच्छी आ़दात और लुत्फ़ व मेहरबानी के वाक़िआ़त बताए तो हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! येह ईमान की अ़लामत है। क्या तुम ने नहीं देखा कि जब जानवर पर बोझ लादा जाता है तो वोह (इब्तिदाअन) तेज़ी से चलता है और त़वील सफ़र तै़ करने के बा'द सुस्त हो जाता है (ग़ालिबन येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि मेहमान अगर मेज़बान के हां एक-दो दिन तक रुके तो मेज़बान उस की अच्छी ख़ातिर तवाज़ोअ़ करता है और उस पर बोझ नहीं पड़ता लेकिन अगर वोह ज़ियादा दिन तक रुकेगा तो मेज़बान उस से उक्ता जाएगा)।"

---

(1)......سیر اعلام النبلاء،الرقم٩٦،سلمان الفارسی،ج٣،ص٣٤٨،مختصراً.

www.dawateislami.net

ज़ाहिरी इस्लाह का राज़ :

﴾645﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हर शख़्स का एक बातिन होता है और एक ज़ाहिर, जो अपने बातिन को संवार लेता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिर को संवार देता है और जो अपने बातिन को बिगाड़ लेता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिर को भी बिगाड़ देता है।"(1)

बुत की अदना सी ता'ज़ीम जहन्नम में ले गई :

﴾646﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "एक शख़्स मख्खी की वज्ह से जन्नत में दाख़िल हुवा और दूसरा शख़्स मख्खी के सबब जहन्नम में जा गिरा।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "वोह कैसे ?" फ़रमाया : गुज़श्ता ज़माने में दो शख़्स कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जिन के पास उन का बुत भी था और वहां से जो भी गुज़रता वोह उन के बुत को कुछ न कुछ नज़्रो नियाज़ पेश करता था। उन लोगों ने गुज़रने वाले एक शख़्स से कहा कि "हमारे इस बुत को नज़राना पेश करो।" उस ने कहा : "मेरे पास तो कुछ भी नहीं है मैं किस चीज़ का नज़राना पेश करूं।" बोले : "कुछ तो पेश करो अगर्चे एक मख्खी ही क्यूं न हो।" चुनान्चे, उस ने एक मख्खी बतौ़रे नज़राना पेश कर दी। जब उस शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो उसे जहन्नम में दाख़िल कर दिया गया। फिर उन्हों ने दूसरे से कहा कि "बुत को नज़राना पेश करो।" उस ने कहा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी से तअ़ल्लुक़ क़ाइम नहीं करूंगा।" येह सुन कर उन्हों ने उस शख़्स को शहीद कर दिया पस वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।"(2)

ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत :

﴾647﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स गुलामों और लौंडियों पर सदक़ा व ख़ैरात करते हुवे रात बसर करे और दूसरा शख़्स कुरआने ह़कीम की तिलावत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुवे रात गुज़ारे तो येह दूसरा शख़्स पहले से अफ़्ज़ल है।"

---

1 ......الزهد لابن المبارك،مارواه نعيم بن حمادفى نسخته زائدا،باب حسن السريرة،الحديث:٧٢،ص١٧.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل،الحديث:٨٤،ص٤٣،بتغير.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान तैमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की एक रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "पूरी रात नेज़ा बाज़ी करने वाले से ज़िक्रो तिलावत करने वाला अफ़्ज़ल है।"(1)

बे हयाई की आफ़ात :

﴾648﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी को ज़लीलो रुस्वा या हलाक करने का इरादा फ़रमाता है तो उस से हया छीन लेता है। फिर तुम उस से इस हाल में मिलोगे कि वोह लोगों से नफ़रत करता और लोग उस से नफ़रत करते हैं और जब वोह लोगों से नफ़रत करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मेहरबानी व शफ़्क़त से महरूम कर देता है। फिर तुम उसे इस हाल में मिलोगे कि वोह सख़्त दिल और बद मिज़ाज हो जाता है। जब वोह उस हालत को पहुंचता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से अमानत दारी सल्ब फ़रमा लेता है। अब जब तुम उसे मिलोगे तो इस हालत में देखोगे कि वोह लोगों से ख़ियानत करता और लोग उस से ख़ियानत करते हैं। जब वोह इस हालत को पहुंच जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ईमान भी सल्ब फ़रमा लेता है जिस की वज्ह से वोह मलऊन हो जाता है।"(2)

﴾649﴿.....हज़रते सय्यिदुना सल्म बिन अ़तिय्या असदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक शख़्स की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त वोह नज़्अ़ के आ़लम में था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ऐ फ़िरिश्ते ! इस के साथ नर्मी से पेश आ।" वोह शख़्स कहने लगा कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमा रहे हैं : "मैं हर मोमिन के साथ नर्मी से पेश आता हूं।"(3)

सलाम आ़म करो !

﴾650﴿.....हज़रते सय्यिदुना औस बिन ज़म्अ़ज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "हमें कोई ऐसा काम बताएं जिस पर हम अ़मल करें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सलाम को आ़म करो, खाना खिलाओ और रात के वक़्त जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ अदा करो।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب فضائل القرآن، باب من قال قراء ة......الخ، الحدیث:۲، ج۷، ص۱۷۸، بتغیر.

2 ......مکارم الاخلا ق لابن ابی الدنیا، باب ذکر الحیاء وماجاء فیه، الحدیث:۱۱۳، ص۹۴.

3 ......کرامات الاولیاء، الحدیث:۱۰۲، ص۱۴۶، مفهومًا.

4 ......المصنف لابن ابی شیبة، باب کلام سلمان، الحدیث:۲۲، ج۸، ص۱۸۲، بتغیر.

www.dawateislami.net

﴾651﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जो मुसलमान किसी जंगल-बयाबान में वुज़ू या तयम्मुम कर के अज़ान कहता और नमाज़ क़ाइम करता है तो उस की इक्तिदा में इस क़दर फ़िरिश्ते नमाज़ अदा करते हैं कि उन की सफ़ों के किनारे नज़र नहीं आते।"(1)

ख़त़ के ज़रीए इनफ़िरादी कोशिश :

﴾652﴿.....हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को ख़त़ के ज़रीए अर्ज़े मुक़द्दसा तशरीफ़ लाने की दा'वत दी तो उन्हों ने जवाब लिखा कि "ज़मीन किसी को मुक़द्दस नहीं बनाती बल्कि इन्सान के आ'माल उसे मुक़द्दस बनाते हैं और मुझे मा'लूम हुवा है कि आप त़बीब (या'नी क़ाज़ी) बना दिये गए हैं। अगर आप लोगों को शिफ़ा देते हैं (या'नी दुरुस्त फ़ैसला करते हैं) फिर तो येह आप के ह़क़ में बेहतर है और अगर आप इस से ना वाक़िफ़ हैं तो फिर किसी इन्सान का क़त्ल कर के दोज़ख़ में जाने से ख़ुद को बचाइये।" इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जब दो आदमियों के दरमियान फ़ैसला फ़रमाते तो उन्हें वापस जाता देख कर फ़रमाते : "मेरी त़रफ़ आओ और अपना वाक़िआ़ मुझे दोबारा सुनाओ। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ना वाक़िफ़ त़बीब हूं।"(2)

﴾653﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को ख़त़ लिखा कि "मुझे मा'लूम हुवा है कि आप त़बीब (या'नी क़ाज़ी) बना दिये गए हैं कि लोगों का इलाज करें लेकिन ख़याल रखना कि किसी मुसलमान को क़त्ल कर के जहन्नम के मुस्तहिक़ न बन जाना।"(3)

---

1 ......السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الصلاۃ،باب سنة الاذان والاقامة......الخ،الحدیث: ۱۹۰۷،ج۱،ص۵۹۶،بتغیر.

2 ......المؤطاللامام مالك،کتاب الوصیة،باب جامع القضاء و کراهیة،الحدیث:۱۵۲٤،ج۲،ص۲۸۵.

3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب فی فضل ابی ھریرۃ،الحدیث:۸۳۹،ص۱۷۷.

www.dawateislami.net

दिल और जिस्म की मिसाल

﴾654﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : दिल और जिस्म की मिसाल उस नाबीना और अपाहज शख़्स जैसी है कि अपाहज, नाबीना से कहे : "मैं एक फलदार दरख़्त देख रहा हूं लेकिन उठ कर उस से फल नहीं तोड़ सकता लिहाज़ा तुम मुझे उठाओ ताकि मैं फल उतारूं।" तो नाबीना उसे ऊपर ऊठा ले और वोह फल तोड़ कर खुद भी खाए और नाबीना को भी खिलाए।"(1)

﴾655﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मिले और फ़रमाया : "अगर तुम मुझ से पहले इन्तिक़ाल कर जाओ तो पेश आने वाले ह़ालात से मुझे आगाह करना और अगर मैं तुम से पहले फ़ौत हो गया तो मैं तुम्हें आगाह करूंगा।"(2)

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का इन्तिक़ाल पहले हो गया तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! कैसे हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं ख़ैरिय्यत से हूं।" फिर पूछा : "आप ने कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल पाया ?" हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ने तवक्कुल(3) को बहुत उ़म्दा पाया।"(4)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत में है कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने तीन बार फ़रमाया : "तुम तवक्कुल को अपने ऊपर लाज़िम कर लो। येह कितना उ़म्दा अ़मल है !"(5)

फ़िरिश्ते परों से ढांप लेते :

﴾656﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "फ़िरऔन की बीवी (हज़रते सय्यिदतुना आसिय्या رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا)

1.....القصاص و المذكرين،ص٢١٨.

2.....एक रिवायत में इतना ज़ाइद है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने पूछा : क्या ज़िन्दे और मुर्दे भी आपस में मिलते हैं ? तो हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : हां मुसलमानों की रूहें तो जन्नत में होती हैं लेकिन उन्हें इख़्तियार होता है कि जहां चाहे जाएं। (شعب الايمان للبيهقى،باب التوكل و التسليم،الحديث:١٣٥٥،ج٢،ص١٢١)

3.....तवक्कुल की ता'रीफ़ : ज़रूरी अस्बाब के इख़्तियार करने में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करना और इस बात का यक़ीन रखना कि जो कुछ मुक़द्दर में है वोह हो कर रहेगा। (القاموس الفقية،ج١٤،ص١٨٥)

4.....الطبقات الكبرىٰ لابن سعد،الرقم٣٥٩،سلمان الفارسى،ج٤،ص٧٠

5.....المرجع السابق.

www.dawateislami.net

को सताया जाता था और जब तकालीफ़ देने वाले हटते तो फ़िरिश्ते अपने परों से उन्हें ढांप लिया करते और जब उन्हें तक्लीफ़ें दी जा रही होतीं तो येह जन्नत में अपना ठिकाना देख रही होतीं।"(1)

शेर सजदा करते :

﴾657﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये दो शेर भूके रखे जाते फिर उन्हें आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर छोड़ दिया जाता तो वोह भूके होने के बा वुजूद आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अपनी ज़बान से चाटते और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आगे सजदे में गिर जाते।"(2)

हिक्मत की बात :

﴾658﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन जुबैर बिन मुत़इम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه नमाज़ पढ़ने के लिये जगह तलाश कर रहे थे कि "इल्जा" नामी एक औ़रत ने देख कर कहा : "पहले पाकीज़ा दिल तलाश कर लो फिर जहां चाहो नमाज़ पढ़ो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं उस की बात समझ गया हूं।"(3)

﴾659﴿.....हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) एक "नबत़िय्या" औ़रत के पास क़ियाम पज़ीर हुवे और उस से पूछा : "क्या यहां नमाज़ पढ़ने के लिये कोई पाक जगह है?" उस ने कहा : "पहले अपने दिल को पाक करो।" फिर दोनों में से एक ने दूसरे से कहा : "काफ़िर के दिल से निकली हुई हिक्मत की बात ले लो।"(4)

नमाज़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश :

﴾660﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के हिस्से में एक लौंडी आई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उस से फ़ारसी ज़बान में

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام سلمان، الحدیث:۲، ج۸، ص۱۷۸.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، باب ما ذکر مما ...... الخ، الحدیث:۹، ج۷، ص۴۴۸.

3 ......المصنف لعبدالرزاق، کتاب الصلاة، باب الصلاة فی البیعة، الحدیث:۱۶۱٤، ج۱، ص۳۱۱.

4 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد سلمان الفارسی، الحدیث:۸۱۸، ص۱۷۳.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "नमाज़ अदा करो।" उस ने इन्कार किया। फिर फ़रमाया : "ऐ ख़ातून ! एक सजदा ही कर ले।" उस ने इस से भी इन्कार कर दिया। तो किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया कि "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! एक सजदे से इस को क्या फ़ाइदा पहुंचना था ?" इरशाद फ़रमाया : 'अगर येह एक सजदा ही कर लेती तो इस को पांचों नमाज़ों की तौफ़ीक़ मिल जाती और जिस का इस्लाम में कुछ हि़स्सा हो वोह उस से बेहतर है जिस का इस्लाम में कोई हि़स्सा नहीं।"(1)

मोमिन व काफ़िर की आज़माइश में फ़र्क़ :

﴾661﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन वहब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने एक दोस्त की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए जो "किन्दा" से तअ़ल्लुक़ रखता था। मैं भी उन के साथ था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे को मुसीबत व आज़माइश में मुब्तला फ़रमाता है। फिर उसे इस से नजात अ़ता फ़रमाता है तो येह उस के गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है और वोह मोमिन बन्दा आइन्दा के लिये मोह़तात़ हो जाता (या'नी ना फ़रमानियों से बाज़ आ जाता) है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़िर को भी आज़माइश में मुब्तला करता और फिर उसे आ़फ़िय्यत बख़्शता है लेकिन वोह उस ऊंट की त़रह़ होता है जिसे बांधा और खोला जाता है जब कि वोह नहीं जानता कि उसे बांधा क्यूं गया और खोला क्यूं गया ?"(2)

मोमिन की मिसाल :

﴾662﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद वह़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मोमिन की मिसाल दुन्या में उस मरीज़ की त़रह़ है जिस का त़बीब हर वक़्त उस के साथ रहता है। उस की बीमारी को भी जानता और उस के इ़लाज से भी बा ख़बर होता है। जब वोह मरीज़ किसी नुक़्सान देह चीज़ की ख़्वाहिश करता है तो उसे रोक देता और कहता है : "उस चीज़ के क़रीब न जाना, अगर तुम उस तक गए तो वोह तुम्हें हलाक कर देगी।" वोह त़बीब उस मरीज़ को मुसलसल नुक़्सान देह अश्या से बचने की तल्क़ीन करता रहता है यहां तक कि वोह उन चीज़ों से परहेज़ करने की वज्ह से सिह़ह़त याब हो जाता है। इसी त़रह़

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۶۰۵۴، ج۶، ص۲۱۸.

2 ......الزھدلھنادبن السری، باب حط الخطایا، الحدیث:۴۱۴، ج۱، ص۲۴۲.

www.dawateislami.net

मोमिन कुफ़्फ़ार को ऐश करता देख कर बहुत सी चीज़ों की ख़्वाहिश करता है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उन चीज़ों से बाज़ रहने का हुक्म फ़रमाता और उसे उन चीज़ों से रोक देता है यहां तक कि उसे मौत दे कर जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है।"(1)

3 चीज़ें रुलाती और 3 हंसाती हैं :

﴿663﴾.....हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुर्क़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे 3 चीज़ें हंसाती और 3 रुलाती हैं। **हंसाने वाली 3 चीज़ें येह हैं :** तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो दुन्या से उम्मीदें बांधता है ह़ालांकि मौत उस की तलाश में है, और ह़ैरत है उस ग़ाफ़िल इन्सान पर जो ग़फ़्लत से बेदार नहीं होता और उस पर भी तअ़ज्जुब है जो मुंह खोल कर हंसता है ह़ालांकि उसे नहीं मा'लूम की उस का रब عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी है या नाराज़ और **रुलाने वाली 3 चीज़ें** येह हैं : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की जुदाई, नज़्अ़ की तकालीफ़ का पेश आना और बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होना जब कि मुझे मा'लूम नहीं कि मैं जहन्नम की त़रफ़ हांका जाऊंगा या जन्नत में जगह पाऊंगा।"(2)

वस्वसों से छुटकारे की अनोखी तरकीब :

﴿664﴾.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सूहान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना सालिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि एक मरतबा मैं अपने आक़ा हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सूहान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के साथ बाज़ार में था कि हमारे क़रीब से हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه गुज़रे। आप ने एक वस्क़ (साठ साअ़ या'नी 1440 तोले, बा'ज़ के नज़्दीक एक ऊंट के बोझ के बराबर) खाना ख़रीदा तो मेरे आक़ा ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप सह़ाबिये रसूल हो कर इतना खाना ख़रीद रहे हैं ?" हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जब बन्दा अपना रिज़्क़ जम्अ़ कर लेता है तो उस का दिल मुत़्मइन हो कर इ़बादत में लग जाता है और शैत़ान उस से मायूस हो जाता है।"(3)

---

1 ......صفۃ الصفوۃ،الرقم۹ ۵ سلمان الفارسی،ذکرنبذۃ من......الخ،ج۱،ص ۲۸۰۔

2 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب فی فضل ابی ھریرۃ،الحدیث:۸۳۷،ص۱۷۶۔

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۶۰۵۷،ج۶،ص۲۱۹۔

www.dawateislami.net

《665》.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने ग़निय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बन्दा जब अपना रिज़्क़ हासिल कर लेता है तो दिल मुत़्मइन हो जाता है।"(1)

विसाले पुर मलाल :

《666》.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मा'रूफ़ और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन सूक़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पेट की तक्लीफ़ में मुब्तला हुवे तो हम उन की इयादत के लिये हाज़िर हुवे और काफ़ी देर तक उन के पास बैठे रहे। येह बात उन पर शाक़ गुज़री तो अपनी ज़ौजा से फ़रमाया : "वोह ख़ुश्बू कहां है जो मैं (रूम के शहर) "बलन्जर" से लाया था ?" ज़ौजा ने वोह ख़ुश्बू हाज़िर की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इसे पानी में मिला कर मेरे बिस्तर के इर्द गिर्द छिड़क दो क्यूंकि अब मेरे पास वोह क़ौम आने वाली है जो न जिन्न है न इन्सान (बल्कि फ़िरिश्ते हैं)।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने ऐसा ही किया और हम वहां से चले आए। जब दोबारा वहां गए तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी है।"(2)

《667》.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा बुक़ैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "जब हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उस वक़्त वोह चार दरवाज़ों वाले कमरे में थे मुझे बुला कर फ़रमाया : "ऐ बुक़ैरा ! दरवाज़ा खोल दो क्यूंकि आज मुलाक़ाती आने वाले हैं और मुझे नहीं मा'लूम कि वोह किस दरवाज़े से अन्दर दाख़िल होंगे।" फिर ख़ुश्बू मंगवाई और फ़रमाया : "इसे पानी में मिला कर मेरे बिस्तर के इर्द गिर्द छिड़क दो।" मैं ने ऐसा ही किया फिर फ़रमाया : "अब मेरे पास से चली जाओ कुछ देर बा'द आना।" फिर मैं ने थोड़ी देर के बा'द जा कर देखा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिस्तर पर यूं लेटे हुवे थे जैसे सो रहे हों।"(3)

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی،باب التوکل و التسلیم،الحدیث:۱۲۲۰،ج۲،ص۸۳.

2 ......تاریخ مدینۃ د مشق لابن عساکر،الرقم ۲۵۹۹ سلمان بن الاسلام ابوعبداللّٰہ الفاری،ج۲۱،ص۴۵۷.

3 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد،الرقم۳۵۹سلمان الفارسی،ج۴،ص۶۹.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हिजरत में सब्क़त ले जाने वालों में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ौरो फ़िक्र करने वाले, आ़रिफ़, वा'ज़ो नसीह़त करने वाले आ़लिम, ने'मतें अ़ता फ़रमाने वाले रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ और उस की ने'मतों (के ह़क़) को पहचानने वाले, ख़ुशी व रन्ज में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ कर्दा अश्या में ग़ौरो फ़िक्र करने वाले थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इ़बादत से इस क़दर मह़ब्बत थी कि इ़बादत के शौक़ और ह़िसाब की शिद्दत के ख़ौफ़ से तिजारत को तर्क फ़रमा दिया। अ़मल पर हमेशगी इख़्तियार करने वाले, क़ुर्बे इलाही के मुश्ताक़, दुन्यावी ग़मों की परवाह न करने वाले थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के लिये फ़ह्म के दरवाज़े खोल दिये और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्मो ह़िक्मत को जानने वाले थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "बुलन्दियां अ़ता फ़रमाने वाले के शौक़े दीदार व मह़ब्बत में मशक़्क़तें बरदाश्त करने का नाम तसव्वुफ़ है।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़िक्रे आख़िरत :

﴾668﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल था ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "फ़िक्रे आख़िरत करना और इ़ब्रत ह़ासिल करना।"[1]

﴾669﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कौन सा अ़मल कसरत से करते थे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "इ़ब्रत ह़ासिल करना।"[2]

﴾670﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कौन सा

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهدابی الدرداء،الحديث: ٧٢٠،ص ١٦٠.

2 ......الزهدلابن المبارك،باب ماجاء فی ذكر عامربن قيس وصلة بن اشيم،الحديث:٨٧٢،ص ٣٠٢،بتغير.

www.dawateislami.net

अ़मल अफ़्ज़ल था ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : "(आख़िरत के मुआ़मले में) ग़ौरो फ़िक्र करना ।"[1]

﴾671﴿.....हज़रते सय्यिदुना मा'दान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "(आख़िरत के मुआ़मलात में) लम्हा भर ग़ौरो फ़िक्र करना सारी रात की (नफ़्ली) इ़बादत से बेहतर है ।"[2]

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नसीहत :

﴾672﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स जंग में रवानगी से क़ब्ल हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे वसिय्यत फ़रमाइये ।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम ख़ुशी की ह़ालत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद रखो वोह तुम्हें तुम्हारी मुसीबत व तंगी के वक़्त याद रखेगा और जब कोई दुन्यावी चीज़ तुम्हें अच्छी लगे तो उसे इख़्तियार करने से पहले उस का अन्जाम सोच लेना ।"[3]

﴾673﴿.....हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि खेती बाड़ी में मसरूफ़ दो बेल हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने से गुज़रे । उन में से एक ठहरा तो दूसरा भी रुक गया । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस में भी इन्सान के लिये इ़ब्रत है ।"[4]

जज़्बए इ़बादत व तर्के तिजारत :

﴾674﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत हुई उस वक़्त मैं तिजारत किया करता था । मैं ने कोशिश की, कि मेरी तिजारत भी बाक़ी रहे और मैं इ़बादत भी करता रहूं लेकिन ऐसा न हो सका । बिल आख़िर मैं तिजारत को छोड़ कर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया । उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में अबू दरदा की जान

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدرداء، الحدیث:۷، ج۸، ص۱۶۷ .

2 ......الزھد للامام احمدبن حنبل، باب زھد ابی الدرداء، الحدیث:۷۴۶، ص۱۶۳ .

3 ......سیراعلام النبلاء، الرقم ۱۶٤، ابو الدرداء، ج٤، ص۲۲ .

4 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدرداء، الحدیث:۲۰، ج۸، ص۱۶۹ .

www.dawateislami.net

है ! अगर मस्जिद के दरवाज़े पर मेरी दुकान हो और मैं यौमिय्या उस से 40 दीनार कमा कर राहे खुदा में सदक़ा करूं और मेरी नमाज़ों में भी इस से ख़लल वाक़ेअ़ न हो फिर भी मैं तिजारत करना पसन्द नहीं करूंगा।" किसी ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप तिजारत को इस क़दर ना पसन्द क्यूं जानते हैं ?" फ़रमाया : "ह़िसाब की शिद्दत के ख़ौफ़ की वज्ह से।"(1)

﴾675﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत से पहले मैं तिजारत किया करता था। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नबुव्वत फ़रमाया तो मैं ने इबादत व तिजारत को जम्अ़ करने की कोशिश की मगर नाकाम रहा। फिर मैं तिजारत तर्क कर के इबादत में मश्ग़ूल हो गया।"(2)

﴾676﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दे रब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे येह पसन्द नहीं कि मस्जिद के दरवाज़े पर मेरी दुकान हो और मैं यौमिय्या उस से 300 दीनार कमाऊं और तमाम नमाज़ें भी मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करूं। मैं येह नहीं कहता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़रीदो फ़रोख़्त को ह़लाल और सूद को ह़राम क़रार नहीं दिया बल्कि मैं येह पसन्द करता हूं कि मेरा शुमार उन लोगों में हो जिन्हें बैअ़ व तिजारत ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं करती।"(3)

बे मिसाल जन्नती ने'मतें :

﴾677﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़्वाब में एक गन्दुमी रंग का कुब्बा (या'नी गुम्बद) और सब्ज़ चरागाह देखी और उस कुब्बे के इर्द गिर्द बकरियों को चरते देखा तो पूछा : "येह किस के लिये है ?" जवाब मिला : "येह अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ के लिये है।" रावी कहते हैं : "कुछ देर बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद उस कुब्बे से निकले और मुझ से कहा : "ऐ औ़फ़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह हमें कुरआने मजीद की तिलावत के अज्र में अ़ता फ़रमाया है और अगर तुम उस टीले पर चढ़ कर देखो तो वहां ऐसी ऐसी ने'मतें पाओगे कि उन कि मिस्ल न तुम्हारी आंखों ने कभी देखीं, न तुम्हारे कानों ने कभी उन का

❶.....تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، ج۴۷،ص۱۰۸.

❷.....المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد،باب کلام ابی الدرداء،الحدیث:۳۰،ج۸،ص۱۷۲.

❸.....الزھد للامام احمد بن حنبل،باب زھد ابی الدرداء،الحدیث:۷۳۵،ص۱۶۲.

www.dawateislami.net

तज़्किरा सुना और न ही तुम्हारे दिल पर कभी उन का ख़याल गुज़रा है और येह सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये तय्यार की हैं क्यूंकि उन्हों ने दुन्या को इन राह़तों के लिये छोड़ दिया।"[1]

अ़मल में सुस्ती का एक सबब :

﴾678﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो खाने पीने की ने'मत के इ़लावा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को नहीं पहचानता उस का अ़मल थोड़ा हो जाता है और उसे तकालीफ़ का सामना रहता है[2] और जो दुन्या के पीछे भागता है दुन्या उस के हाथ नहीं आती।"[3]

﴾679﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कितनी ही ने'मतें एक साकिन (या'नी ठहरी हुई) रग में पोशीदा होती हैं।"[4]

﴾680﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़त़िय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब तक तुम नेक लोगों से मह़ब्बत रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे बारे में जब कोई ह़क़ बात बयान की जाए तो उसे मान लिया करो कि ह़क़ को पहचानने वाला उस पर अ़मल करने वाले की त़रह़ होता है।"[5]

﴾681﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन लोगों में होता है जिन्हें इ़ल्म अ़त़ा किया गया।"[6]

दुश्मन से दरगुज़र :

﴾682﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुख़ात़ब कर के कहा : "ऐ क़ुर्रा के गुरोह ! क्या बात है तुम हम से भी ज़ियादा बुज़दिल हो, जब तुम से किसी चीज़ का सुवाल किया जाता है तो उस वक़्त

---

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب زھدابی الدرداء،الحدیث:٧١٤،ص١٥٩،بتغیر.
2 ......الزھدلابن المبارك،باب فضل ذکراللّٰه،الحدیث:١٥٥١،ص٥٤٢.
3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب زھدابی الدرداء،الحدیث:٧٧٢،ص١٦٦.
4 ......الزھدلابی داؤد،باب من خبرابی الدرداء،الحدیث:٢٤٠،ج١،ص٢٥٦.
5 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی مقاربةوموادة......الخ،الحدیث:٩٠٦٣،ج٦،ص٥٠٣،بتغیر.
6 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الفضائل،باب ما ذکر فی ابی الدرداء،الحدیث:١،ج٧،ص٥٣٥.

www.dawateislami.net

बख़ील बन जाते हो और खाने के दौरान बड़े बड़े लुक़्मे मुंह में डालते हो ?" हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ कोई तवज्जोह न की और न ही कोई जवाब दिया। येह ख़बर जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंची तो उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत की, फिर कहा : "ऐ उ़मर ! क्या हम लोगों से जो कुछ भी सुनें उस पर उन से झगड़ा करें ?" इस के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस शख़्स के पास गए और उसे गिरेबान से पकड़ कर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले आए, उस शख़्स ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "मैं ने तो मज़ाक़ के त़ौर पर ऐसा कहा था।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई :

وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ لَيَقُوۡلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوۡضُ وَنَلۡعَبُ ؕ (پ۱۰،التوبة:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब अगर तुम उन से पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे।*(1)

जाहिल व बे अ़मल के लिये हलाकत :

﴾683﴿.....हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हलाकत है उस जाहिल के लिये जो इ़ल्म ह़ासिल नहीं करता और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो उसे इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाता और हलाकत है उस आ़लिम के लिये जो अपने इ़ल्म पर अ़मल नहीं करता।" येह बात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सात मरतबा इरशाद फ़रमाई।(2)

﴾684﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम उस वक़्त तक कामिल फ़क़ीह नहीं बन सकते जब तक क़ुरआने मजीद को मुख़्तलिफ़ वुजूह से समझ न लो और तुम उस वक़्त तक कामिल फ़क़ीह नहीं बन सकते ह़त्ता कि लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये बुरा समझो। फिर अपने नफ़्स को देखो तो उसे लोगों से बढ़ कर बुरा समझो।"(3)

---

1 ......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر،ج۴۷،ص۱۱۹.

2 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب زھد ابی الدرداء،الحدیث:۷۶۴،ص۱۶۶،مختصرًا.

3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب زھدابی الدرداء،الحدیث:۷۱۳،ص۱۵۹.

www.dawateislami.net

आ़लिम की निशानी :

﴾685﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ज़िन्दगी में नर्मी व आसानी आदमी के आ़लिम होने की अ़लामत है।"(1)

﴾686﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक बिन नहीक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अहले इल्म ह़ज़रात के साथ उठना बैठना, चलना फिरना और उन की मजालिस में शरीक होना आदमी के आ़लिम होने की अ़लामत है।"(2)

आ़लिम व जाहिल की इ़बादत में फ़र्क़ :

﴾687﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद किन्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अ़क़्ल मन्दों (या'नी इ़ल्म वालों) के खाने पीने और सोने की भी क्या बात है कि बे वुक़ूफ़ों (या'नी जाहिलों) की शब बेदारी और रोज़े भी उन के सामने ऐ़बदार हो जाते (या'नी नाक़िस रह जाते) हैं और साह़िबे तक़्वा व यक़ीन की ज़रा सी नेकी जाहिलों की पहाड़ों जैसी इ़बादत से अफ़्ज़ल और बेहतर है।"(3)

﴾688﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हैसम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम लोगों को उन बातों का मुकल्लफ़ न बनाओ जिन का उन्हें मुकल्लफ़ नहीं बनाया गया और ह़िसाबो किताब का मुआ़मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ दो। ऐ इब्ने आदम ! तुम पर अपने नफ़्स का मुह़ासबा लाज़िम है क्यूंकि जो किसी की टोह में रहता है उस का ग़म त़वील हो जाता है और उस का ग़ुस्सा ठन्डा नहीं होता।"(4)

﴾689﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत इस त़रह़ करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो और जान लो ! वोह क़लील माल जो तुम्हारी दुन्यवी

---

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حديث ابی الدرداء،الحديث:٢١٧٥٤،ج٨،ص١٦٣.

2 ......التاريخ الكبيرللبخاری،باب الشين،باب شريك،الحديث:٢٦٥٣،ج٤،ص٢٠٠،بتغير.

3 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الدرداء،الحديث:٧٣٨،ص١٦٢،بتغير.

4 ......الزهدللامام احمدحنبل،باب زهدابی الدرداء،الحديث:٧٧١،ص١٦٦،مختصرًا.

www.dawateislami.net

फ़िक्रों से नजात का ज़रीआ़ बने उस कसीर माल से बेहतर है जो तुम्हारी ग़फ़्लत का सबब बने। जान लो ! नेकी कभी पुरानी नहीं होती और गुनाह कभी भुलाया नहीं जाता।''(1)

भलाई किस में है ?

﴾690﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''भलाई इस में नहीं कि तुझे कसीर माल व औलाद मिल जाए बल्कि भलाई तो इस में है कि तेरा ह़िल्म बढ़े, इल्म तरक़्क़ी करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में लोगों से आगे बढ़े और जब तुम कोई नेकी करने में कामयाब हो जाओ तो इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाओ और बुराई हो जाने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश का सुवाल करो।''(2)

ज़िन्दगी को पसन्द करने की वज्ह :

﴾691﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन जुलैद ह़जरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अगर 3 चीज़ें न होतीं तो मैं ज़िन्दा रहने को मरने पर तरजीह़ न देता।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''वोह 3 चीज़ें कौन सी हैं ?'' फ़रमाया : ''दिन रात अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर सजदे करना, सख़्त गर्मी के दिनों में प्यासा रहना (या'नी रोज़े रखना) और ऐसे लोगों के साथ बैठना जो कलाम को उ़म्दा फलों की त़रह़ चुनते हैं।'' फिर फ़रमाया : ''कमाल दरजा तक़्वा येह है कि बन्दा एक ज़र्रे के मुआ़मले में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरे और जिस ह़लाल में ज़र्रा भर भी ह़राम का शुबा हो उसे तर्क कर दे, इस त़रह़ वोह अपने और ह़राम के दरमियान मज़बूत़ आड़ बना लेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मुक़द्दस कलाम में बन्दों के अन्जाम को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗؕ(۷) وَ مَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ۠(۸)

(پ۳۰،الزلزال:۷،۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

इस लिये तुम किसी बुराई को मा'मूली न समझो और न ही किसी नेकी को ह़क़ीर जानो।''(3)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزھد،باب کلام ابی الدرداء،الحدیث:۱،ج۸،ص۱۶۷.

2 ......المرجع السابق،الحدیث:۶. 3 ......الزھد الکبیر للبیھقی،الحدیث:۸۷۰،ص۳۲۴.

www.dawateislami.net

दीन सीखने और सिखाने वाला अज्र में बराबर हैं :

﴾692﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "क्या बात है तुम्हारे उ़लमा दुन्या से रुख़्सत हो गए और बे इल्म, इल्म सीख नहीं रहे ? बेशक इल्मे दीन सीखने और सिखाने वाला अज्र में बराबर हैं और इन के इ़लावा (जो न इल्मे दीन सीखते हैं, न दूसरों को सिखाते हैं) किसी में भलाई नहीं।"(1)

इल्म के ए'तिबार से लोगों की अक़्साम :

﴾693﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَافِر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "लोग तीन त़रह़ के हैं :

(1) आ़लिम इल्म रखने वाला

(2) त़ालिबे इल्म, इल्म सीखने वाला

(3) जाहिल, न इल्म रखता है न सीखता है और इस में कोई भलाई नहीं।"(2)

﴾694﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "इल्म ह़ासिल करो ! इस लिये कि इल्म सिखाने वाले और सीखने वाले का अज्र यक्सां है और इन दोनों के इ़लावा किसी में भलाई नहीं।"(3)

अहले दिमश्क़ को वा'ज़ो नसीह़त :

﴾695﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ अहले दिमश्क़ ! तुम सब दीन में इस्लामी भाई, घरों में एक दूसरे के पड़ोसी और दुश्मन के मुक़ाबले में एक दूसरे के मुआ़विन व मददगार हो। फिर क्या वज्ह है कि तुम मुझ से मह़ब्बत नहीं करते ? मेरी मेह़नत व मशक़्क़त तुम्हारे इ़लावा दूसरों पर सर्फ़ हो रही है।

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدرداء، الحدیث:٢٦، ج٨، ص١٧٠۔
الزھدللامام احمد بن حنبل، باب زھدابی الدرداء، الحدیث:٧٢٨، ص١٦١، بتغیر۔

2 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب فی ذھاب العلم، الحدیث:٢٤٦، ج١، ص٩٠، مختصرًا۔
الزھدللامام احمدبن حنبل، باب زھدابی الدرداء، الحدیث: ٧٣٢، ص١٦١، مفھومًا۔

3 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم و العلم، الحدیث: ٣٢٧، ج١، ص١٠٧۔
الزھدللامام احمدبن حنبل، باب زھدابی الدرداء، الحدیث:٧٢٧، ص١٦١۔

www.dawateislami.net

मैं तुम्हारे उ़लमा को दुन्या से रुख़्सत होते देख रहा हूं और येह भी देख रहा हूं कि तुम्हारे बे इ़ल्म, इ़ल्म ह़ासिल नहीं करते। तुम रिज़्क़ की तलाश में अपनी आख़िरत भूले बैठे हो। सुनो ! एक क़ौम ने मज़बूत़ मह़ल्लात ता'मीर किये। कसीर माल इकठ्ठा किया और लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधी मगर वोही मह़ल्लात उन की क़ब्रों में तब्दील हो गए। उन की उम्मीदों ने उन्हें धोके में डाला और उन का माल ज़ाएअ़ हो गया। ख़बरदार ! इ़ल्म ह़ासिल करो क्यूंकि इ़ल्म सिखाने और सीखने वाला अज्र में बराबर हैं और इन दोनों के इ़लावा किसी शख़्स में भलाई नहीं।''(1)

﴾696﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्रह رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! इ़ल्म ह़ासिल कर लो इस से पहले कि इ़ल्म उठ जाए। बेशक उ़लमा के जाने से इ़ल्म उठ जाता है और इ़ल्म सीखने और सिखाने वाला दोनों अज्र में बराबर हैं। बेशक समझदार लोग दो क़िस्म के हैं : (1) इ़ल्म सिखाने वाले (2) इ़ल्म सीखने वाले, इन के इ़लावा किसी में भलाई नहीं।''(2)

﴾697﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! मैं तुम्हें कभी ऐसी बात का हुक्म देता हूं जिस पर ख़ुद अ़मल नहीं करता लेकिन उम्मीद है कि मैं इस पर अज्र पाऊंगा (या'नी मेरे बताने से तुम अ़मल करोगे तो मुझे भी सवाब मिलेगा)।''(3)

तक़्वा बिग़ैर इ़ल्म और इ़ल्म बिग़ैर अ़मल के कामिल नहीं :

﴾698﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़मरा बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''कोई उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं बन सकता जब तक आ़लिम न बन जाए और उस वक़्त तक इ़ल्म से आरास्ता नहीं हो सकता जब तक अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे।''(4)

1......القصاص والمذكرين،ص٢٢٢.

2......سنن الدارمى،باب فى فضل العلم والعالم،الحديث:٢٤٦/٢٤٥ ج١،ص٩٠_الحديث: ٣٢٧، ص١٠٧.

3......المصنف لابن ابى شيبة،كتاب الزهد،باب كلام ابى الدرداء،الحديث:١٢،ج٨،ص١٦٨.

4......سنن الدارمى،باب من قال العلم الخشية وتقوى الله، الحديث:٢٩٣،ج١،ص١٠٠،مفهومًا

www.dawateislami.net

सब से ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा करने वाली बात :

《699》.....हज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन हिलाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे : मुझे सब से ज़ियादा इस बात से ख़ौफ़ आता है कि क़ियामत के दिन जब मैं हिसाब के लिये खड़ा होऊं तो मुझ से कहा जाए : "तुम ने इल्म तो ह़ासिल किया लेकिन इल्म पर क्यूं अ़मल न किया।"(1)

《700》.....हज़रते सय्यिदुना हौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मुझे सब से ज़ियादा इस बात का ख़ौफ़ है कि क़ियामत के दिन मुझ से फ़रमाया जाए : "ऐ उ़वैमिर ! तुम ने इल्म ह़ासिल किया या जाहिल रहे ?" अगर मैं ने अ़र्ज़ की, कि इल्म ह़ासिल किया है। तो फिर मुझ से हुक्म और मुमानअ़त वाली हर आयते क़ुरआनी के मुतअ़ल्लिक़ पूछगछ की जाएगी कि "क्या तू ने हुक्म और मुमानअ़त वाली आयत पर अ़मल किया ?" मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं ऐसे इल्म से जो नफ़्अ़ न दे, ऐसे नफ़्स से जो सैर न हो और ऐसी दुआ़ से जो मक़्बूल न हो।"(2)

《701》.....हज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَافِر से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मुझे सब से ज़ियादा इस बात का डर है कि कहीं बरोज़े क़ियामत तमाम मख़्लूक़ के सामने मुझ से येह सुवाल न कर लिया जाए कि "ऐ उ़वैमिर ! क्या तू ने इल्म ह़ासिल किया ?" मैं हां में जवाब दूं तो फिर पूछा जाए कि "अपने इल्म पर कहां तक अ़मल किया ?"(3)

ख़त़ के ज़रीए नेकी की दा'वत :

《702》.....हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने एक दोस्त से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक ख़त़ लिखा कि **ऐ मेरे भाई** ! अपनी सिह़्ह़त व फ़राग़त को ग़नीमत जानो इस से पहले कि तुम पर ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जिस को मख़्लूक़ दूर न कर सके और मुसीबत ज़दा की दुआ़ को ग़नीमत समझो।(4)

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدرداء، الحدیث:۱۹، ج۸، ص۱۶۹.
2 ......الزھدلابی داؤد، باب من خبر ابی الدرداء، الحدیث:۲۱۵، ج۱، ص۲۳۱، مفھومًا.
3 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۸۵۲، ج۲، ص۲۹۹، مفھومًا.
4 ......الجامع لعمربن راشد مع المصنف لعبدالرزاق، ج۱۰، ص۱۳۵.

www.dawateislami.net

ऐ मेरे भाई ! मस्जिद को (इबादत के लिये) अपना घर बना लो क्यूंकि मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि ''मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है।'' और जो लोग मसाजिद को अपना घर बना लेते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से राहत व आराम और पुल सिरात़ से सलामती के साथ गुज़ार कर अपनी रिज़ा तक पहुंचाने का वा'दा फ़रमाया है। **ऐ मेरे भाई !** यतीम पर रह़म करो, उसे अपने क़रीब करो और अपने खाने में से उसे खिलाओ क्यूंकि एक बार किसी शख़्स ने बारगाहे रिसालत عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) की शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुम अपने दिल को नर्म करना चाहते हो ?'' अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' इरशाद फ़रमाया : ''यतीम को अपने क़रीब करो, उस के सर पर हाथ फेरो और अपने खाने में से उसे खिलाओ कि येह चीज़ें दिल को नर्म करती और ह़ाजात के पूरा होने का भी ज़रीआ़ हैं।''

ऐ मेरे भाई ! इतना माल इकठ्ठा न करो जिस का शुक्र अदा न कर सको। बेशक मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि ''क़ियामत के दिन एक ऐसे मालदार को लाया जाएगा जिस ने माल के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की होगी। वोह इस ह़ाल में आएगा कि वोह आगे और उस का माल उस के पीछे होगा। पुल सिरात़ पर जब भी कोई रुकावट आएगी तो उस का माल उसे कहेगा : चलो ! चलो तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम हुक़ूक़ पूरे किये हैं। फिर एक ऐसे मालदार को लाया जाएगा जिस ने माल के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त न की होगी। वोह इस ह़ाल में आएगा कि उस का माल उस के कन्धों के दरमियान होगा वोह उसे फिसलाएगा और कहेगा : ''तेरी हलाकत हो ! तू ने मेरे मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त क्यूं न की ? वोह इसी त़रह़ कहता रहेगा ह़त्ता कि हलाकत की दुआ़ मांगेगा।'' **ऐ मेरे भाई !** मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम ने एक ख़ादिम ख़रीदा है। मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि ''बन्दा जब तक किसी ख़ादिम से मदद नहीं लेता, मुसलसल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाता रहता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उसे अपने क़ुर्ब से नवाज़ता है और जब वोह किसी ख़ादिम से ख़िदमत लेता है तो उस पर इस का ह़िसाब लाज़िम हो जाता है।'' मेरी ज़ौजा ने मुझ से एक ख़ादिम रखने का मुत़ालबा किया था लेकिन ह़िसाब के ख़ौफ़ से मैं ने इसे ना पसन्द जाना ह़ालांकि मैं उन दिनों मालदार था। **ऐ मेरे भाई !** अगर हम से पूरा पूरा ह़िसाब लिया गया तो बरोज़े क़ियामत मेरा और तेरा मददगार कौन होगा ?

www.dawateislami.net

ऐ मेरे भाई ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सहाबी होने की वज्ह से धोके में न रहना। बेशक हम हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द एक त़वील अ़र्सा ज़िन्दा रहे हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द हमें किन किन ह़ालात का सामना करना पड़ा है।

बिन्ते अबू दरदा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) का निकाह़ :

﴾703﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से मरवी है कि यज़ीद बिन मुआ़विया ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को उन की साहि़बज़ादी "दरदा" के लिये निकाह़ का पैग़ाम भेजा लेकिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रद कर दिया। यज़ीद के साथियों में से एक ने यज़ीद से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा भला करे ! तू मुझे उस लड़की से निकाह़ करने की इजाज़त दे दे।" यज़ीद ने कहा : "तू हलाक हो ! येह मुमकिन नहीं।" उस शख़्स ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी इस्लाह़ करे ! मुझे इजाज़त दे दे।" यज़ीद ने इजाज़त दे दी। चुनान्चे, उस शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ पैग़ाम भेजा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी बेटी का निकाह़ उस आदमी के साथ कर दिया। रावी का बयान है कि "येह बात लोगों में मश्हूर हो गई कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने यज़ीद का पैग़ाम रद कर के अपनी बेटी का निकाह़ एक ग़रीब मुसलमान से कर दिया है।" (इस पर) आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ने अपनी बेटी दरदा की बेहतरी सोची है तुम उस वक़्त दरदा के बारे में क्या सोचते जब एक दुन्यादार बादशाह उस का शोहर होता और वोह ऐसे घर में रहती जिस में उस की नज़रें चका चौंध (या'नी अन्धी) हो जातीं तो क्या उस का दीन सलामत रहता ?"(1)

तन्हाई में गुनाह करने की दुन्यावी सज़ा :

﴾704﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन मेहरान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मैं बचपन में एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, सलाम किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आंखें खुली थीं और मैं समझ रहा था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुझे मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं। काफ़ी देर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इसी ह़ालत में रहे फिर सर झुकाया और पूछा : "बेटा ! तुम कब से यहां खड़े हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "काफ़ी देर से खड़ा हूं।"

(1)......الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد ابی الدرداء، الحدیث: ٧٦١، ص ١٦٥.

www.dawateislami.net

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "हम किसी ख़याल में थे और तुम किसी और ख़याल में थे।" फिर फ़रमाया : हमें ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मेहरान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से बयान फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इरशाद है कि "बन्दे को इस बात से ख़ौफ़ज़दा रहना चाहिये कि कहीं मुसलमानों के दिलों में उस की नफ़रत न डाल दी जाए और उसे पता तक न चले।" फिर फ़रमाया : "जानते हो ऐसा क्यूं कर होता है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : "मुझे नहीं मा'लूम।" फ़रमाया : "बन्दा तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है जिस की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के दिलों में उस की नफ़रत डाल देता है और उसे मा'लूम भी नहीं होता।"(1)

दोस्त और दोस्ती के आदाब :

﴾705﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तेरा दोस्त तुझ पर इ़ताब करे येह इस से बेहतर है कि वोह तुझ से दूर रहे। तेरे दोस्त से बढ़ कर कौन तेरा ख़ैर ख़्वाह होगा ? अपने दोस्त के सुवाल को पूरा कर और उस के मुआ़मले में नर्मी इख़्तियार कर और उस के बारे में किसी ह़ासिद की बात पे यक़ीन न कर वरना तू भी उसी की मिस्ल अपने दोस्त से ह़सद करने लगेगा। फिर कल जब तेरी मौत आएगी तो वोह तुझ से मुंह फेर लेगा और तुम उस की मौत के बा'द क्यूं रोते हो जब कि ज़िन्दगी में इस से मिलना भी गवारा नहीं कर सकते थे।"(2)

क़ब्रो ह़श्र का ख़ौफ़ :

﴾706﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िज़ाम बिन ह़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَرِیْم से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर तुम मौत के बा'द के मुआ़मलात जान लो तो मन पसन्द लज़ीज़ खाने, ठन्डे और मीठे मशरूबात छोड़ दो, आ़लीशान मकानात व उ़म्दा मह़ल्लात से मुंह मोड़ लो, तुम्हारी कैफ़िय्यत ऐसी हो जाए कि सीनों को पीटते, आंसू बहाते सह़राओं की त़रफ़

(1)......الزھدلابی داؤد،باب من خبر الی الدرداء،الحدیث:٢٢٠،ج١،ص٢٣٦،مختصرًا.

(2)......الزھدلابی داؤد،باب من خبر الی الدرداء،الحدیث:٢٥١،ص٢٦٧،بتغیرٍ.

www.dawateislami.net

निकल जाओ और इस बात की तमन्ना करने लगो कि ऐ काश ! हम दरख़्त होते जिन्हें काट लिया जाता और उन के फल खा लिये जाते ।"(1)

ईमान का आ'ला दरजा :

﴾707﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान यज़ीद बिन मर्सद हमदानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि "ईमान का आ'ला दरजा येह है कि बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर सब्र करे और तक़्दीर पर राज़ी रहे नीज़ तवक्कुल के मुआ़मले में इख़्लास अपनाए और हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार रहे ।"(2)

दोस्त पर इनफ़िरादी कोशिश :

﴾708﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन मुह़म्मद मुह़ारिबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने एक दोस्त को ख़त़ लिखा ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : "इस दुन्या में तेरा कोई ह़िस्सा नहीं है क्यूंकि तुझ से पहले भी इस में लोग रहते थे वोह इसे यूंही छोड़ कर चले गए और तेरे बा'द इस में कुछ और लोग आ बसेंगे । इस दुन्या में तेरे लिये वोही है जो तू आगे भेज दे और जो चीज़ें तू यहां छोड़ जाएगा इस की ह़क़दार तेरी नेक औलाद होगी क्यूंकि मरने के बा'द तेरी पेशी ऐसी बारगाह में होनी है जहां कोई बहाना चलेगा न उ़ज़्र क़ाबिले क़बूल होगा और तुम जिन के लिये दुन्या इकठ्ठी करोगे वोह तुम्हारे काम नहीं आ सकेंगे । तुम्हारा जम्अ़ किया हुवा माल तुम्हारी औलाद के लिये है । वोह इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त कर के सआ़दत मन्द हो जाएगी जिस को कमाने की वज्ह से तुम बदबख़्त बने या वोह इस माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में ख़र्च कर के बद बख़्त हो जाएगी । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इन दोनों में से कोई भी ऐसा मुआ़मला नहीं कि जिस की वज्ह से तुम अपनी कमर पर बोझ उठाओ और इन्हें अपनी ज़ात पर तरजीह़ दो । लिहाज़ा जो गुज़र गए उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की उम्मीद रखो और जो पीछे रह गए उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रिज़्क़ पर ए'तिमाद करो ।"(3) وَالسَّلَام ।"

अहले क़ुबरुस की शानो शौकत कहां गई ?

﴾709﴿.....हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन नुफ़ैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब "क़ुबरुस" फ़त्ह़ हुवा तो वहां के बाशिन्दों में तफ़रीक़ कर दी गई । वोह एक दूसरे को याद कर के रोने लगे । मैं ने हज़रते

---

(1) .....الزھدلابی داؤد،باب من خبر الی الدرداء،الحدیث:۲۰۱،ص۲۱۷.

(2) .....الزھدلابن المبارك،ماروٰہ نعیم بن حماد فی نسختہ زائدا،باب فی الرضابالقضاء،الحدیث:۱۲۳،ص۳۱.

(3) .....تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر،ج۴۷،ص۱۶۹،مفھومًا.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि तन्हा बैठे रो रहे हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप क्यूं रो रहे हैं जब कि आज के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम व मुसलमानों को इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई है ?" फ़रमाया : "अफ़्सोस ! ऐ जुबैर ! जब कोई क़ौम अह़कामाते इलाही को तर्क कर देती है तो वोह उस के हां बे वक़्अ़त हो जाती है। देखो ! अहले क़ुबरुस किस क़दर त़ाक़त व ग़लबा वाले थे लेकिन इन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात की ना फ़रमानी की तो इन का येह ह़ाल हुवा जो तुम देख रहे हो।"(1)

मरज़े मौत की गुफ़्तगू :

﴾710﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन उ़बैदुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौत का वक़्त क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कौन मेरे इस दिन के अ़मल की त़रह़ अ़मल करेगा ? कौन मेरी इस घड़ी की त़रह़ अ़मल करेगा ? कौन मेरे इस लेटने की त़रह़ अ़मल करेगा ? फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ (پ۷،الانعام:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को जैसा वोह पहली बार उस पर ईमान न लाए थे।*(2)

माल जम्अ़ करने वाले के लिये हलाकत :

﴾711﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुरात बिन सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हर वोह शख़्स जो माल जम्अ़ करता है उस के लिये हलाकत है। उस का मुंह भरा हुवा है गोया कि वोह मजनून (या'नी पागल) है। ऐसे शख़्स की नज़र अपने माल पर नहीं बल्कि लोगों के माल पर होती है, अगर उस के बस में होता तो रात दिन कमाता ही रहता। उस के लिये सख़्त ह़िसाब और दर्दनाक अ़ज़ाब की वज्ह से हलाकत है।"(3)

---

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب زھدابی الدرداء،الحدیث:۷۶۳،ص۱۶۵.

2 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزھدوقصرالامل،الحدیث:۱۰۶۶۶،ج۷،ص۳۸۲.

3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،باب زھدابی الدرداء،الحدیث:۷۶۹،ص۱۶۶.

www.dawateislami.net

नसीहत के लिये मौत ही काफ़ी है :

﴾712﴿.....हज़रते सय्यिदुना शुर्हबील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَلِيْل से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब कोई जनाज़ा देखते तो फ़रमाते : "तुम सुब्ह को चल पड़े हम शाम को तुम्हारे पीछे आने वाले हैं या तुम शाम को चले हम सुब्ह आने वाले हैं। मौत बहुत बड़ी नसीहत है। लेकिन ग़फ़्लत भी बहुत जल्द त़ारी हो जाती है और नसीहत के लिये मौत ही काफ़ी है। अच्छे लोग दुन्या से रुख़्सत हो गए और बाक़ी बचने वालों में हिल्म व बुर्दबारी नाम की कोई चीज़ नहीं।"(1)

3 महबूब चीज़ें :

﴾713﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "3 चीज़ें जिन्हें लोग ना पसन्द करते हैं मुझे बहुत महबूब हैं : फ़क़्र, मरज़ और मौत।"(2)

﴾714﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने शैख़ से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं मौत को पसन्द करता हूं ताकि दीदारे इलाही ह़ासिल हो। फ़क़्र को पसन्द करता हूं ताकि रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गिड़ गिड़ाऊं और बीमारी को पसन्द करता हूं ताकि मेरे गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो।"(3)

क़ौमे आ़द का हाल :

﴾715﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू हिलाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ अहले दिमश्क़ ! क्या तुम ह़या नहीं करते ? इतना माल जम्अ़ करते हो जो खा न सकोगे। ऐसे मकान ता'मीर करते हो जिन में रह न पाओगे और ऐसी उम्मीदें बांधते हो जो पूरी न हो सकेंगी। तुम से पहले भी ऐसे लोग गुज़रे हैं जिन्हों ने माल जम्अ़ किया। लम्बी उम्मीदें बांधीं और मज़बूत़ इमारतें ता'मीर कीं लेकिन उन के जम्अ़ शुदा अमवाल तबाहो बरबाद हो गए। उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल गईं और उन के मह़ल्लात उन की क़ब्रों में तब्दील हो गए। येह क़ौमे आ़द थी, जिस ने "अ़दन" से ले कर "अ़म्मान" तक माल जम्अ़ किया और कसीर औलाद पाई तो कोई है जो क़ौमे आ़द का तर्का मुझ से 2 दिरहम के इवज़ ख़रीद ले ?"(4)

---

(1) ......الزهدلابی داؤد،باب من خبر الی الدرداء،الحدیث:۲۵۰،ج۱،ص۲۶۶.

(2) ......الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الدرداء،الحدیث:۷۳۶،ص۱۶۲،بتغیر.

(3) ......الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الدرداء، الحدیث:۸۱۱،ص۱۷۲.

(4) ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهدوقصرالامل،الحدیث:۱۰۷۴۰، ج۷،ص۳۹۸،بتغیر.

www.dawateislami.net

मालदारों को नसीहत :

﴾716﴿.....हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़म्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ मालदारो ! अपने अम्वाल से अपने जिस्मों को राहत पहुंचा लो इस से पहले कि हम और तुम बराबर हो जाएं और दुन्या में जो कुछ तुम देखते हो तो तुम्हारे साथ हम भी देख लेते हैं।" फिर फ़रमाया : "मुझे तुम पर ग़ाफ़िल कर देने वाली ने'मत में मख़्फ़ी शहवत का ख़ौफ़ है। वोह इस त़रह़ कि तुम खाना तो सैर हो कर खाते हो लेकिन इल्म के मुआ़मले में भूके रहते हो, तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जो अपने दोस्त से कहे कि आओ मरने से पहले रोज़ा रख लें और बद तरीन शख़्स वोह है जो अपने दोस्त से कहे कि आओ मरने से पहले कुछ खा पी लें और खेल कूद कर लें।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का गुज़र एक क़ौम के पास से हुवा जो मकान ता'मीर करने में मश्ग़ूल थी तो फ़रमाया : "तुम दुन्या को नया करने में मश्ग़ूल हो जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे बरबाद व वीरान करने का इरादा फ़रमाया हुवा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरादा ही (सब पर) ग़ालिब है।"

वीरान इमारतों से इ़ब्रत :

﴾717﴿.....हज़रते सय्यिदुना मकहूल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वीरान इमारतों के पास जा कर कहते : "ऐ वीरान होने वाली इमारतो ! तुम्हारे पहले रिहाइशी कहां चले गए ?"(1)

﴾718﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बीमार हुवे तो कुछ दोस्त इयादत के लिये हाज़िर हुवे और पूछा : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप को क्या मरज़ है ?" फ़रमाया : "मुझे गुनाहों का मरज़ लाह़िक़ है।" दोस्तों ने पूछा : "आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को किसी चीज़ की ख़्वाहिश है ?" फ़रमाया : "मैं जन्नत का ख़्वाहिश मन्द हूं।" दोस्तों ने कहा : "हम आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये त़बीब को बुला लाएं ?" फ़रमाया : "उसी (या'नी त़बीबे ह़क़ीक़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) ने मुझे बिस्तर पर लिटाया है।"(2)

---

1 .....الزهدلو كيع،باب الخرب،الحديث:١٠٥،ج٢،ص٧٦.

2 .....الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الد رداء،الحديث:٧٧١٦،ص١٦٠.

www.dawateislami.net

﴾719﴿.....हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللہِ تعالٰی علیہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो तलाश करता है वोह गुम हो जाता है। जो तक्लीफ़ देह उमूर पर सब्र नहीं करता वोह आ़जिज़ आ जाता है। अगर तुम लोगों के साथ बुराई से पेश आओगे तो वोह भी तुम्हारे साथ ऐसा ही मुआ़मला करेंगे। तुम उन्हें छोड़ना चाहोगे लेकिन वोह तुम्हें नहीं छोड़ेंगे।" रावी ने अ़र्ज़ की : "फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे क्या हुक्म देते हैं ?" फ़रमाया : "अपनी त़रफ़ से फ़क़्र वाले दिन (या'नी क़ियामत) के लिये क़र्ज़ दो।"(1)

﴾720﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْعَزِیْز से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दुआ़ की दरख़्वास्त की गई तो फ़रमाया : "मैं अच्छी त़रह़ तैराकी नहीं जानता इस लिये मुझे ग़र्क़ होने का ख़ौफ़ लाह़िक़ रहता है।"(2)

﴾721﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मुझे तुम्हारे बारे में सब से ज़ियादा ख़ौफ़ आ़लिम की लग़्ज़िश और इस बात का है कि मुनाफ़िक़ क़ुरआन से मुजादला (झगड़ा) करे ह़ालांकि क़ुरआने पाक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सच्ची किताब है। जिस त़रह़ रास्ते के सिरे पर रहनुमा मनारा होता है इसी त़रह़ क़ुरआन भी एक मनारा है और जो शख़्स दुन्या से बे नियाज़ हो उस के लिये दुन्या बे फ़ाइदा है।"(3)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ :

﴾722﴿.....हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह दुआ़ मांगते सुना : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ تَفْرِقَةِ الْقَلْب या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं दिल के मुतफ़र्रिक़ होने से तेरी पनाह मांगता हूं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : "दिल के मुतफ़र्रिक़ होने का क्या मत़लब है ?" फ़रमाया : "मेरे लिये मुख़्तलिफ़ वादियों में माल रख दिया जाए।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدرداء، الحدیث: ١٧، ج٨، ص١٦٩.

2 ......رجال حول الرسول، أبو الدرداء - أیّ حکیم کان، ص٩٢.

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد ابی الدرداء، الحدیث: ٧٧٢، ص١٦٦.

4 ......الزھد لابن المبارک، باب فی طلب الحلال، الحدیث: ٦٣٥، ص٢٢٣.

www.dawateislami.net

हंसता हुवा जन्नत में जाएगा :

﴾723﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "बेशक उन लोगों में से कि जिन की ज़बानें हर वक्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्गूल रहती हैं हर शख़्स मुस्कुराता हुवा जन्नत में दाख़िल होगा।"(1)

ज़िक्रुल्लाह, सदक़ा करने से अफ़्ज़ल है :

﴾724﴿.....हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि किसी ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि "हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 100 गुलाम आज़ाद किये हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "एक आदमी के माल से 100 गुलाम का आज़ाद होना बहुत बड़ी बात है लेकिन तुम चाहो तो मैं तुम्हें इस से भी अफ़्ज़ल चीज़ बताऊं ? वोह येह कि रात दिन हर वक्त ईमान को लाज़िम पकड़ो और अपनी ज़बान हर वक्त ज़िक्रे इलाही से तर रखो।"(2)

﴾725﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमरान क़सीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر फ़रमाते हैं : मैं ने अबू रजा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعُلَاء को फ़रमाते हुवे सुना कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "100 मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَر कहना मुझे 100 दीनार सदक़ा करने से ज़ियादा महबूब है।"(3)

सब से अच्छा अ़मल :

﴾726﴿.....हज़रते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह हज़्रमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम्हारे आ'माल में से सब से अच्छे अ़मल के बारे में न बताऊं जो तुम्हारे मालिक عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक पसन्दीदा और दरजात में इज़ाफ़े का बाइस और दुश्मन से जंग करने, अपनी गर्दन कटवाने, उस की गर्दन काटने और राहे ख़ुदा में दिरहमो दीनार ख़र्च करने से बेहतर हो ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह कौन सा अ़मल है ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना और उस का ज़िक्र ही सब से बड़ा है।"(4)

---

1 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الدرداء،الحدیث:٧٢٦،ص١٦١ .

2 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الدرداء،الحدیث:٧٣٠،ص١٦١ .

3 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،باب زهدابی الدرداء،الحدیث:٧٣٣،ص١٦٢ .

4 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزهد،کلام ابی الدَّرْدَاء،الحدیث:١١،ج٨،ص١٦٨ .

www.dawateislami.net

मोमिन और काफ़िर की ज़बान :

﴾727﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन वदाआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मोमिन के जिस्म में कोई उ़ज़्व ऐसा नहीं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ज़बान से ज़ियादा मह़बूब हो और मोमिन इसी के सबब जन्नत में दाख़िल होगा और काफ़िर के जिस्म में भी कोई उ़ज़्व ऐसा नहीं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ज़बान से ज़ियादा ना पसन्दीदा हो और काफ़िर इसी के सबब जहन्नम में जाएगा।"(1)

﴾728﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो मौत को कसरत से याद करता है उस की खुशियां कम हो जातीं और जिस्म कमज़ोर पड़ जाता है।"(2)

﴾729﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो शख़्स मौत को कसरत से याद करता है उस की खुशियां कम हो जातीं और जिस्म कमज़ोर पड़ जाता है।"(3)

सालेह़ीन के साथ मरने की दुआ़ :

﴾730﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन उ़बैदुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस त़रह़ दुआ़ करते : اَللّٰھُمَّ تَوَفَّنِیْ مَعَ الْاَبْرَارِ وَلَا تُبْقِنِیْ مَعَ الْاَشْرَار या'नी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे सालेह़ीन के साथ मौत देना और बुरों के साथ ज़िन्दा मत रखना।"

बुरे कामों से ह़िफ़ाज़त की दुआ़ :

﴾731﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं दुआ़ करते : اَللّٰھُمَّ لَا تَبْتَلِنِیْ بِعَمَلِ سُوْءٍ فَاُدْعٰی بِہٖ رَجُلَ سُوْءٍ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे बुरे अ़मल में मुब्तला न करना कि मैं बुरे आदमी के नाम से पुकारा जाऊं।"(4)

---

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،زھدابی الدَّرْدَاء،الحدیث:٧٥٠،ص١٦٤.

2 ......الزھدلابن المبارک،ماروا ہ نعیم بن حمادفی نسختہ زائدا،باب فی ذکر الموت،الحدیث:١٤٩،ص٣٧.

3 ......الزھدلابن المبارک ،،ماروا ہ نعیم بن حمادفی نسختہ زائدا،باب فی ذکر الموت،الحدیث:١٤٩،ص٣٧.

4 ......امالی ابن سمعون،ص١٣.

www.dawateislami.net

《732》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुह़म्मद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू औन رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने मुझ से फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه इरशाद फ़रमाते हैं : "मुझे लोगों की त़रफ़ से जब भी कोई मुसीबत पहुंचती है तो मैं उस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ने'मत ही पाता हूं।"(1)

《733》.....ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡجَوَاد से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़रमाया : "मुझे किसी दिन या रात में जब भी कोई मुसीबत पहुंचती है तो मुझे उस से आ़फ़िय्यत दी जाती है।"

《734》.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबुल जा'द رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! क्या बात है तुम दुन्या के ह़रीस बनते जा रहे हो और जिस (दीन) पर तुम्हें निगहबान बनाया गया है उसे ज़ाएअ़ कर रहे हो। मैं तुम्हारे शरीर लोगों से आगाह हूं जो घुड़ सुवारी करते हुवे अकड़ते, नमाज़ों में सुस्ती करते, कुरआने मजीद तवज्जोह से नहीं सुनते और न ही गुलामों को आज़ाद करने में रग़बत रखते हैं।"(2)

यतीम और मज़्लूम की बद दुआ़ से बचो :

《735》.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَافِر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़रमाया : "मज़्लूम और यतीम की बद दुआ़ से बचो क्यूंकि इन दोनों की दुआ़एं रातों रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश हो जाती हैं, जब कि लोग मह़्वे इस्तिराह़त होते हैं।"(3)

《736》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे सब से ज़ियादा नफ़रत उस से है जो ऐसे शख़्स पर ज़ुल्म करे जिस का मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई न हो।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدَّرۡدَاء، الحدیث:۹، ج۸، ص۱۶۸۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام ابی الدَّرۡدَاء، الحدیث:۲۶، ج۸، ص۱۷۰۔

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد ابی الدَّرۡدَاء، الحدیث:۷۶۶، ص۱۶۶، مختصراً۔

4 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام ابی الدَّرۡدَاء، الحدیث:۱۲، ج۸، ص۱۶۸۔

www.dawateislami.net

रह़मते इलाही से दूरी :

﴾737﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन आ़मिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कुरैब बिन अबरह के ह़वाले से बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "बन्दा उस वक़्त तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत) से दूर होता रहता है जब तक उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ चलता रहता है।"(1)

﴾738﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब तहज्जुद गुज़ारों को कुरआने मजीद की तिलावत करते सुनते तो फ़रमाते : "मेरा बाप उन लोगों पर कुरबान जो क़ियामत के दिन से पहले ही अपनी जानों पर रो रहे हैं और उन के दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से खुश हैं।"(2)

भलाई की तलाश में रहो :

﴾739﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "हर वक़्त भलाई की तलाश में रहो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत भरी हवाओं के मुतलाशी रहो क्यूंकि वोह जिस पर चाहता है अपनी रह़मत की हवाएं चलाता है और उसी से ऐबपोशी और ख़ौफ़ से अम्न का सुवाल करो।"(3)

नफ़्अ़ बख़्श बातें :

﴾740﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से अ़र्ज़ की : "मुझे कोई ऐसी बात सिखा दीजिये जिस पर अ़मल करने से मैं नफ़्अ़ पाऊं।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : 2,3,4, और 5 बातें हैं जो इन पर अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां उस के दरजात बुलन्द होंगे : ह़लालो त़य्यिब कमाओ, ह़लालो त़य्यिब खाओ, अपने घर में ह़लालो त़य्यिब को दाख़िल करो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करो कि वोह तुम्हें रोज़ाना का रिज़्क़ रोज़ाना ही अ़त़ा फ़रमाए और जब सुब्ह़ करो तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो गोया तुम उन से मिल गए हो, अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर

---

1 ......الزهدلابن المبارك،باب فی التواضع،الحديث:٣٩٤،ص١٣٢.

2 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،زهدابی الدَّرْدَاء،الحديث:٧٢٣،ص١٦١.

3 ......المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الزهد،كلام ابی الدَّرْدَاء،الحديث:١٥،ج٨،ص١٦٨.

www.dawateislami.net

दो और जो शख़्स तुम्हें गाली दे, बुरा भला कहे या तुम से झगड़ा करे उस का मुआमला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ दो और जब तुम से कोई बुराई सरज़द हो जाए तो इस्तिग़फ़ार करो।"(1)

﴾741﴿.....हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन हौशब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "बा'ज़ लोगों के सामने हम हंसते हैं जब कि हमारे दिल उन पर ला'नत भेजते हैं।"(2)

बुख़ार में फ़िक्रे आख़िरत :

﴾742﴿.....हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन हुदैर अस्लमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास हाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पसीने से शराबोर, ऊनी चादर ओढ़े बुख़ार की हालत में चमड़े या ऊन के बिछौने पर आराम फ़रमा हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पसन्द फ़रमाएं तो मैं आप की ख़िदमत में अमीरुल मोमिनीन का भेजा हुवा उ़म्दा बिछौना और चादर पेश कर देता हूं ?" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "हमारा एक घर है जिस की त़रफ़ हमें रवाना होना है और उसी के लिये हम अ़मल करते हैं।"(3)

मेहमानों को दर्से आख़िरत :

﴾743﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़ति़य्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के कुछ दोस्त आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मेहमान बने तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन की मेहमान नवाज़ी की, जब रात हुई तो बा'ज़ ऊनी बिस्तर पर और बा'ज़ बिग़ैर बिस्तर के सो गए। दूसरे दिन सुब्ह़ जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन के पास तशरीफ़ ले गए तो उन के चेहरों पर ना गवारी के आसार देख कर फ़रमाया : "हमारा एक अस्ली घर है जिस के लिये हम सामान जम्अ़ कर रहे हैं और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।"(4)

अहले दिमश्क़ से ख़िता़ब :

﴾744﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अहले दिमश्क़ से फ़रमाया : "क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि सालहा साल सैर

---

1 ......الزهدلابی داود،من خبرابی الدَّرْدَاء، الحدیث:۲٤۲،ج۱،ص۲۵۸.

2 ......صحیح البخاری،کتاب الادب،باب المداراة مع الناس،ص۵۱۷.

3 ......الزهدللمعافی بن عمران الموصلی،باب فی التنعم واتباع......الخ،الحدیث:۲۰۸،ص۲۱۸،بتغیرقلیلٍ.

4 ......صفة الصفوة،الرقم۷٦ابو الدَّرْدَاء عویمر بن زید،ج۱،ص۳۲٤،مختصراً.

www.dawateislami.net

हो कर खाओ और तुम्हारी मजालिस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ख़ाली हों ? क्या बात है तुम्हारे उ़लमा दुन्या से रुख़्सत हो रहे हैं लेकिन तुम्हारे अनपढ़ फिर भी इ़ल्म ह़ासिल नहीं करते। अगर तुम्हारे उ़लमा चाहें तो इ़ल्म में मज़ीद इज़ाफ़ा कर सकते और अनपढ़ इ़ल्म ह़ासिल कर सकते हैं। लिहाज़ा नुक़्सान देह चीज़ों पर सूदमन्द चीज़ों को तरजीह़ दो। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! (मा क़ब्ल) तमाम उम्मतें नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने और खुद को अच्छा समझने की वज्ह से हलाक हुईं।''(1)

﴾745﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़तिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक शख़्स को अपने बेटे का बनाव सिंगार करते देखा तो उस से फ़रमाया : ''तुम जितना चाहो उस का बनाव सिंगार कर लो, येह उस की गुमराही का सबब है।''(2)

﴾746﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़तिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में अपने भाई की शिकायत की तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''बहुत जल्द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ख़िलाफ़ तेरी मदद फ़रमाएगा।'' इत्तिफ़ाक़न वोह शख़्स क़ासिद बन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास ह़ाज़िर हुवा तो उन्हों ने उसे 100 दीनार अ़ता फ़रमाए। वापसी पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस शख़्स से फ़रमाया : ''क्या तुझे यक़ीन आ गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे भाई के ख़िलाफ़ तेरी मदद फ़रमा दी।'' (ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़तिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं) मदद इस त़रह़ हुई कि वोह शख़्स क़ासिद बन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास गया तो उन्हों ने उसे 100 दीनार और अपना एक ख़ादिम अ़ता फ़रमाया।''(3)

लोगों में बद तरीन शख़्स :

﴾747﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कब्शा सलूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़रमाते हुवे सुना कि ''क़ियामत के दिन लोगों में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बद तरीन शख़्स वोह आ़लिम होगा जो अपने इ़ल्म से नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं करता।''(4)

---

1 ......شعب الإيمان للبيهقي،باب في طلب العلم......الخ، الحديث: ١٧٢٠،ج٢،ص٢٦٨،مختصراً.

2 ......لسان العرب،حرف زوق،ج١،ص١٧١٥.

3 ......الزهدلابی داؤد،من خبرابی الدَّرْدَاء،الحديث:٢٣٩،ج١،ص٢٥٥.

4 ......الزهدلابن المبارك،باب التحضيض على طاعة الله،الحديث: ٤٠،ص١٤.

www.dawateislami.net

उ़लमा की ना पसन्दीदगी से बचो :

﴾748-749﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़तिय्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं दुआ़ करते : اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ أَعُوۡذُبِکَ أَنۡ تَلۡعَنَنِیۡ قُلُوۡبُ الۡعُلَمَاءِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि उ़लमा के दिल मुझ पर ला'नत करें।" किसी ने अ़र्ज़ की : "उन के दिल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क्यूं कर ला'नत करेंगे ?" फ़रमाया : "उन के दिलों का ला'नत करना येह है कि वोह मुझे ना पसन्द करें।"(1)

﴾750﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन हानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "झुटलाने वाले, ना फ़रमानी करने वाले और पुख़्ता अ़ह्द को तोड़ने वाले के लिये हलाकत है इस में कोई भलाई है न सच्चाई।"

﴾751﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम्हारे दिल हर वक़्त दुन्या की मह़ब्बत में डूबे रहते हैं अगर्चे बुढ़ापे की वज्ह से हंसली की हड्डियां आपस में मिल जाएं, सिवाए उन लोगों के कि जिन के दिलों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तक़्वा के लिये चुन रखा है मगर ऐसे लोग बहुत कम हैं।"(2)

कामिल इन्सान की तीन निशानियां :

﴾752﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इन्सान के कामिल होने की 3 निशानियां हैं :

(1) मुसीबत के वक़्त शिक्वा न करना

(2) अपनी तक्लीफ़ का ढिन्डोरा न पीटते फिरना और

(3) अपने मुंह मियां मिठ्ठू न बनना।"(3)

---

1 .....رجال حول الرسول،أبو الدرداء ـ أیّ حکیم کان،ص ۹۱.

2 .....الزھدلابن المبارک،باب النھی عن طول الأمل،الحدیث:۲۵۷،ص۸۷،بتغیر.

3 .....الزھدللامام احمدبن حنبل،زھدابی الدَّرْدَاء،الحدیث:۷۷۳،ص۱۶۶.

www.dawateislami.net

प्याले वाला वाक़िआ :

﴾753﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ (या ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की त़रफ़) ख़त़ लिखते तो उन्हें प्याले वाला वाक़िआ़ याद दिलाते। रावी इस वाक़िए़ की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहते हैं : "और हम बाहम येह गुफ़्त्गू किया करते थे कि एक मरतबा येह दोनों बुज़ुर्ग प्याले में खाना खा रहे थे कि इस प्याले और इस में मौजूद खाने ने उन के सामने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान की थी।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बोलने वाली हंडिया :

﴾754﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हंडिया के नीचे आग जला रहे थे, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी पास मौजूद थे कि अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हंडिया से आवाज़ सुनी फिर आवाज़ बुलन्द हुई वोह इस त़रह़ तस्बीह़ बयान कर रही थी जिस त़रह़ बच्चा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करता है फिर वोह हंडिया अपनी जगह से हट कर ख़ुद ब ख़ुद अपनी जगह पहुंच गई और उस से कोई चीज़ भी न गिरी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आवाज़ दे कर फ़रमाया : "ऐ सलमान ! येह अ़जीब मन्ज़र देखो ! ऐसा मन्ज़र तुम ने और तुम्हारे वालिद ने कभी नहीं देखा होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर आप ख़ामोश रहते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस से बड़ी बड़ी निशानियां देखते।"(2)

बारगाहे इलाही में इल्तिजा :

﴾755﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद बिन रबीआ़ दिमश्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : एक रात मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मेरा गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो सजदे की ह़ालत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह इल्तिजा कर रहा था :

---

1 ......فوائدأبی علی بن أحمدبن الحسن الصواف،اول الکتاب،ص٤٩.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزھد،کلام ابی الدَّرْدَاء،الحدیث:١٨،ج٨،ص١٦٩.

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ خَائِفٌ مُسْتَجِیْرٌ فَأَجِرْنِیْ مِنْ عَذَابِکَ، وَسَائِلٌ فَقِیْرٌ فَارْزُقْنِیْ مِنْ فَضْلِکَ، لَامِنْ ذَنْبٍ فَاعْتَذِرُ، وَلَاذُوْقُوَّةٍ فَا نْتَصِرُوَلٰکِنْ مُذْنِبٌ مُّسْتَغْفِرٌ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे अ़ज़ाब से ख़ौफ़ज़दा हूं। पनाह चाहता हूं। मुझे अपने अ़ज़ाब से बचा। मैं मोह़ताज हूं। तुझ से सुवाल करता हूं। मुझे अपने फ़ज़्ल से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा। मैं किसी गुनाह से इज़्हारे बराअत नहीं करता। न मैं त़ाक़तवर हूं कि ख़ुद ही अपनी मदद कर सकूं। हां ! मैं गुनाहगार हूं और अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहता हूं।" रावी बयान करते हैं कि सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बड़ी चाहत के साथ येह कलिमात अपने दोस्तों को सिखाए।"(1)

जन्नत में भी साथ रहने की दुआ़ :

﴾756﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر से मरवी है कि ह़जरते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे इलाही में यूं इल्तिजा की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुन्या में मुझे निकाह़ का पैग़ाम भेजा और मुझ से शादी की। मैं तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करती हूं कि मुझे जन्नत में भी उन की ज़ौजिय्यत में रखना।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "अगर तू इस बात को पसन्द करती है तो मैं भी येही चाहता हूं लिहाज़ा मेरे बा'द किसी से शादी न करना।" रावी बयान करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا साह़िबे ह़ुस्नो जमाल थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन्हें निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया तो इन्हों ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं दुन्या में किसी से शादी नहीं करूंगी। अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो जन्नत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजिय्यत में रहूंगी।"(2)

गुनहगार से नहीं, गुनाह से नफ़रत करो :

﴾757﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक शख़्स के पास से गुज़रे जिसे लोग गुनाह की वज्ह से मलामत कर रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इस बारे में तुम्हारी क्या राए है कि अगर तुम इसे किसी कुंवें में गिरा हुवा

(1) .....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الدعاء، باب مارخص للرجل......الخ، الحدیث:٥، ج٧، ص٣٤.

(2) .....صفة الصفوة، الرقم٧٦ ابو الدَّرْدَاء عویمر بن زید، ذکر وفاة ابی الدَّرْدَاء، ج١، ص٣٢٥.

www.dawateislami.net

पाते तो इसे निकालने की कोशिश न करते ?'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अपने भाई को गालियां न दो बल्कि इस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान करो कि उस ने तुम्हें इस गुनाह से आ़फ़िय्यत बख़्शी।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस को बुरा नहीं समझते ?'' फ़रमाया : ''मैं इस के अ़मल को बुरा समझता हूं अगर येह इसे छोड़ दे तो मेरा भाई है।''(1)

नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! ख़ुशह़ाली के अय्याम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करो ताकि वोह तंगी व मुसीबत में तुम्हारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाए।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िक्मत व दानाई से भरे हुवे और माहिर रूह़ानी त़बीब थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कलाम ब कसरत ह़िक्मत पर मुश्तमिल होता और वा'ज़ बेह़द मुफ़ीद होता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़िक्मत भरे कलाम और उ़लूम से (रूह़ानी) मरीज़ शिफ़ा पाते। दुन्या से किनारा कश और मज़्लूम इन्हें अपनी ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़ बनाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ौरो तफ़क्कुर फ़रमाते तो मुआ़मले की गहराई तक रसाई पाते और ज़िक्र करते तो शिफ़ा पाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुन्या की ज़ेबो ज़ीनत से कतराते और आख़िरत के मरातिब के ह़ुसूल की सई फ़रमाते थे।''

﴾758﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने यज़ीद बिन मुआ़विया को कहते सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उ़लमा व ह़ुकमा और उन लोगों में होता है जिन से लोग शिफ़ा पाते हैं।''(3)

सब से ज़ियादा मुफ़ीद चीज़ :

﴾759-760﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यज़ीद रह़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : क्या बात है आप शे'र नहीं कहते ? जब कि अन्सार में से सब ने कोई न कोई शे'र ज़रूर कहा है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं ने भी अश्आ़र कहे हैं, सुनो :

---

1 ......شعب الإيمان للبيهقى،باب فى تحريم أعراض الناس،الحديث:٦٦٩١،ج٥،ص٢٩٠،بتغيرٍ.

2 ......الزهدللامام احمد بن حنبل،زهدابى الدَرْدَاء،الحديث:٧١٨،ص١٦٠.

3 ......الاستيعاب فى معرفة الأصحاب،باب الدال،الرقم٢٩٧٠ابو الدَرْدَاء،ج٤،ص٢١٢،بتغيرٍ.

www.dawateislami.net

يُرِيْدُ الْمَرْءُ أَنْ يُّعْطٰى مَنَاهُ　　وَيَـأْبَـى اللّٰـهُ اِلَّا مَـا أَرَادَ
يَقُوْلُ الْمَرْءُ فَائِدَتِيْ وَمَالِيْ　　وَتَقْوَى اللّٰهِ اَفْضَلُ مَا اسْتَفَادَا

तर्जमा : (1)....बन्दा चाहता है कि उस की हर उम्मीद पूरी हो ह़ालांकि होना तो वोही है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मन्ज़ूर है।

(2)......बन्दा कहता है : मेरा फ़ाइदा, मेरा माल। जब कि ख़ौफ़े ख़ुदा से बढ़ कर कोई चीज़ फ़ाइदे मन्द नहीं।[1]

दुश्वार गुज़ार घाटी :

﴾761﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन यसाफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से अ़र्ज़ की : "क्या बात है आप अपने मेहमानों की उस त़रह़ ज़ियाफ़त नहीं करते जिस त़रह़ दूसरे लोग करते हैं ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मैं ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "तुम्हारे सामने एक दुश्वार गुज़ार घाटी है जिसे भारी बोझ वाले उ़बूर नहीं कर सकेंगे।" लिहाज़ा उस घाटी को उ़बूर करने के लिये मुझे हल्के बोझ वाला रहना पसन्द है।[2]

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी 6 अह़ादीस :

﴾762﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम करो वोह तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।" मरवान ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम से मुराद येह है कि उस की फ़रमां बरदारी करो।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो इस ह़ाल में मरा कि उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुतअ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ की : "अगर्चे वोह ज़िना करे अगर्चे वोह चोरी करे ?" इरशाद फ़रमाया : "अबू दरदा की नाक ख़ाक आलूद हो, हां ! अगर्चे वोह ज़िना करे, अगर्चे वोह चोरी करे।"[4]

1......صفة الصفوة،الرقم٧٦ابو الدَّرْدَاء عويمر بن زيد،ج١،ص٣٢٣.
2......المستدرك،كتاب الأهوال،باب موت ابن وهب بسمع كتاب الأهوال،الحديث:٨٧٥٣،ج٥،ص٧٩٢.
3......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث ابى الدَّرْدَاء،الحديث:٢١٧٩٣،ج٨،ص١٧١ "مروان" بدله "ابن ثوبان".
4......السنن الكبرى للنسائى،كتاب عمل اليوم والليلة،الحديث:١٠٩٦٣،ج٦،ص٢٧٦، بدون "حين سبر".

www.dawateislami.net

﴾763﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुलूए आफ़्ताब के वक़्त दो फ़िरिश्ते निदा करते हैं जिसे जिन्नो इन्स के इ़लावा तमाम मख़्लूक़ सुनती है कि ऐ लोगो ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ आओ, क़लील (माल) जो किफ़ायत करे उस कसीर से बेहतर है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल कर दे ।"(1)

﴾764﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यूं दुआ़ मांगा करते थे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْأَلُکَ حُبَّکَ وَ حُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّکَ، اَللّٰهُ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَفْسِیْ وَ اَھْلِیْ وَ الْمَاءِ الْبَارِدِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी मह़ब्बत, तेरे मुह़िब्बीन की मह़ब्बत और उस अ़मल का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी मह़ब्बत तक पहुंचा दे । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपनी मह़ब्बत मेरे नज़्दीक मेरी जान, मेरे घरवालों और ठन्डे पानी से भी ज़ियादा मह़बूब बना दे ।"(2)

﴾765﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जहां तक हो सके दुन्या के ग़मों से फ़राग़त इख़्तियार करो क्यूंकि जिस शख़्स की सब से बड़ी फ़िक्र दुन्या बन जाती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम फैला देता और उसे फ़क़्रो फ़ाक़ा के ख़ौफ़ में मुब्तला फ़रमा देता है और जिस शख़्स की सब से बड़ी फ़िक्र आख़िरत बन जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम संवारता और उस के दिल में ग़िना (या'नी दुन्या से बे परवाही) डाल देता है और जो बन्दा दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोमिनीन के दिलों को दोस्ती व मह़ब्बत के साथ उस की त़रफ़ माइल कर देता और उसे हर भलाई पहुंचाने में जल्दी फ़रमाता है ।"(3)

﴾766-767﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : "ऐ ईसा ! तुम्हारे बा'द मैं ऐसी उम्मत भेजूंगा जो बिला ह़िल्म व इ़ल्म ने'मत पर ह़म्दो शुक्र बजा लाएगी और मुसीबत पर सब्र व सवाब की त़ालिब होगी ।"

---

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث ابی الدَّرْدَاء،الحدیث:۲۱۷۸۰، ج۸، ص۱۶۸۔
مسندابی داود الطیالسی،مسندابی الدَّرْدَاء،الحدیث:۹۷۹،ص۱۳۱ .
2 ......جامع الترمذی،کتاب الدعوات،باب دعاء داود......الخ،الحدیث:۳۴۹۰،ص۲۰۱۱ .
3 ......المعجم الاوسط،الحدیث:۵۰۲۵،ج۴، ص۹،"تفد علیه"بدله"تفد إلیه".

www.dawateislami.net

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अर्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! येह बिग़ैर इल्म व हिल्म के कैसे होगा ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अपने इल्म व हिल्म से उन्हें अ़ता फ़रमाऊंगा।"(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "मज़्कूरा 6 अह़ादीसे मुबारका मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने रिवायत की हैं।"

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه

हिजरत में सब्क़त ले जाने वालों में हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه कामों को दुरुस्त त़रीक़े से अन्जाम देते, लड़ाई झगड़ों से इजतिनाब करते, उ़लमा के पेशवा, सख़ियों के सरदार, इबादत गुज़ार, क़ारिये क़ुरआन, ह़क़ीक़ी मह़ब्बत में साबित क़दम रहने वाले, ख़ुश ख़ुल्क़ व ख़ुश मिज़ाज, सख़ी व फ़य्याज़, मुसलमानों के मुह़ाफ़िज़, फ़ितनों से मह़फ़ूज़, पाक दामन व वफ़ादार, ह़ुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में दियानत दार, अम्वाल के लैन दैन में अमानत दार और ख़ुशह़ाली व ख़स्ता ह़ाली में मियाना रवी पर कार बन्द रहने वाले थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : बरकत के ख़ज़ानों के बाग़ात में मुसलसल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत की तलाश में रहना **तसव्वुफ़** कहलाता है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के मनाक़िब

﴾768-769﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में ह़लालो ह़राम का सब से ज़ियादा इल्म रखने वाले मुआ़ज़ बिन जबल हैं।"(2)

﴾770﴿.....हज़रते सय्यिदुना शह्‌र बिन ह़ौशब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : अगर मैं हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को ख़लीफ़ा नामज़द करता और मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस की वज्ह पूछता तो मैं अ़र्ज़ करता कि मैं ने तेरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "जब उ़लमा

1 ......المعجم الاوسط،الحدیث:٣٢٥٢،ج٢،ص٢٧٠.

2 ......جامع الترمذی،ابواب المناقب،باب مناقب مُعَاذبن جبل......الخ،الحدیث:٣٧٩١،ص٢٠٤١.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होंगे तो मुआज़ बिन जबल उन में नुमायां मक़ामो मर्तबे पर फ़ाइज़ होंगे।"(1)

《771-772》.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(बरोज़े क़ियामत) मुआज़ बिन जबल उ़लमा के इमाम और उन में नुमायां मक़ामो मर्तबे पर फ़ाइज़ होंगे।"(2)

《773-774》.....हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़जफ़ा या अबुल अ़ज्मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि किसी ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "काश आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम से, अपने बा'द होने वाले ख़लीफ़ा के बारे में अ़ह्द ले लेते।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पाता तो उन्हें ख़लीफ़ा बनाता फिर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से इरशाद फ़रमाता कि "तू ने मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उम्मत पर किस को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया ?" तो मैं अ़र्ज़ करता : मैं ने तेरे नबी व तेरे बन्दए ख़ास मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "बरोज़े क़ियामत उ़लमा के सामने मुआज़ बिन जबल की हैसिय्यत एक गुरौह की मानिन्द होगी।"(3)

《775》.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "4 आदमियों से क़ुरआन सीखो ! (1) अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (2) मुआज़ बिन जबल (3) उबय बिन का'ब और (4) अबू हुज़ैफ़ा के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम सालिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)।"(4)

《776》.....हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में 4 अश्ख़ास ने क़ुरआने मजीद जम्अ़ किया जो सब के सब अन्सारी थे : (1) हज़रते उबय बिन का'ब (2) हज़रते मुआज़ बिन जबल (3) हज़रते ज़ैद बिन साबित और (4) हज़रते अबू ज़ैद

1 ......فضائل الصحابة للامام احمدبن حنبل،باب فضائل أبی عبيدة بن الجراح،الحديث:١٢٨٧،ج٢،ص٧٤٢.

2 ......المعجم الكبير،الحديث:٤٠،ج٢٠،ص٢٩.

3 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر،الرقم٧٣٨١مُعَاذبن جَبَل،ج٥٨،ص٤٠٣،بتغيرقليل.

4 ......صحيح مسلم،كتاب فضائل الصحابة،باب من فضائل عبدالله بن مسعود وامه،الحديث:٦٣٣٤،ص١١١٠.

www.dawateislami.net

(رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) ।" रावी फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "अबू ज़ैद कौन हैं ?" उन्हों ने फ़रमाया : "अबू ज़ैद मेरे चचा हैं ।"(1)

इमाम कौन होता है ?

﴾777﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्वह बिन नौफ़ल अश्जई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक इमाम, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदार और हर बाति़ल से जुदा थे ।" किसी ने (येह ख़याल कर के कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भूल गए हैं) येह आयत तिलावत की : "اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِیْفًا" (پ۱۴،النحل:۱۲۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक इब्राहीम एक इमाम था, अल्लाह का फ़रमां बरदार सब से जुदा ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं भूला नहीं हूं । क्या तुम जानते हो कि इमाम और फ़रमां बरदार कौन होता है ?" रावी ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है ।" फ़रमाया : "इमाम वोह होता है जो लोगों को भलाई सिखाता है और "**क़ानत**" अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم के मुती़ओ़ फ़रमां बरदार को कहते हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को भलाई भी सिखाते थे और अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की इता़अ़त भी करते थे ।"(2)

﴾778﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक इमाम और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदार बन्दे थे ।" किसी ने कहा कि "इमाम और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार तो क़ुरआने पाक में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को फ़रमाया गया है ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हम ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुशाबेह होने की वज्ह से इमाम और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार कहते हैं ।" किसी ने अ़र्ज़ की : "इमाम कौन होता है ?" फ़रमाया : "इमाम उसे कहते हैं जो लोगों को भलाई सिखाए ।"(3)

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب مناقب الأنصار،باب مناقب زید بن ثابت،الحدیث:۳۸۱۰،ص۳۰۹۔

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد،مُعَاذ بن جَبَل،ج۲،ص۲۶۵۔
صفۃ الصفوۃ،الرقم۵۱:مُعَاذ بن جَبَل،ذکرثناء الصحابۃ علیہ،ج۱،ص۲۵۶۔

3 ......الطبقات الکبری لابن سعد،مُعَاذبن جَبَل،ج۲،ص۲۶۶۔

www.dawateislami.net

मर्जए सहाबा :

﴾779﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन अबी रबाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं हिम्स की मस्जिद में दाखि़ल हुवा तो वहां तक़रीबन 30 बुजु़र्ग सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن तशरीफ़ फ़रमा थे । उन में एक सुर्मगीं आंखों और चमकदार दांतों वाला ख़ूब सूरत नौजवान ख़ामोश बैठा था । जब लोगों का किसी बात में इख़्तिलाफ़ होता तो उस नौजवान की त़रफ़ रुजूअ़ करते और उस से पूछते थे । मैं ने अपने क़रीब बैठे एक शख़्स से दरयाफ़्त किया कि "येह कौन हैं ?" उस ने बताया कि "येह हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत मेरे दिल में रच बस गई और जब तक वोह लोग वहां बैठे रहे मैं भी उन के साथ बैठा रहा ।"(1)

﴾780﴿.....हज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने ग़नम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह कहते हुवे सुना कि हज़रते सय्यिदुना आ़इज़ुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की खि़लाफ़त के इब्तिदाई दौर में, मैं हज़राते सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के साथ एक मस्जिद में दाखि़ल हुवा और वहां एक मजलिस में बैठ गया । उस में तक़रीबन 30 से ज़ियादा अफ़राद अह़ादीस की तकरार कर रहे थे । उस ह़ल्के़ में एक ख़ूब सूरत, पुख़्ता गन्दुमी रंग वाला, शीरीं मक़ाल नौजवान भी बैठा हुवा था जो ह़ाज़िरीन में सब से जवां उ़म्र मा'लूम होता था । जब किसी ह़दीस में लोगों का इख़्तिलाफ़ होता तो वोह उस नौजवान की त़रफ़ रुजूअ़ करते और वोह उन्हें तसल्ली बख़्श जवाब देता और लोग जब तक उस से न पूछते वोह कोई ह़दीस बयान न करता ।" मैं ने पूछा : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! तुम कौन हो ?" उस ने कहा : मेरा नाम मुआ़ज़ बिन जबल है ।"(2)

---

1 ......المسندللامام احمد بن حنبل،حديث معاذبن جبل،الحديث:٢٢١٤١،ج٨،ص٢٥١۔
الطبقات الكبرى لابن سعد،الرقم٢٠٣ مُعَاذبن جَبَل،ج٣،ص٤٤٢.

2 ......البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار،مسندمُعَاذبن جَبَل،الحديث:٢٦٧٢،ج٧،ص١١٦۔
الطبقات الكبرىٰ لابن سعد،الرقم٢٠٣ مُعَاذبن جَبَل،ج٣،ص٤٤٠.

www.dawateislami.net

﴾781﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना या'कूब बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बह़रिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ह़िम्स की मस्जिद में दाख़िल हुवा तो वहां घुंगरियाले बालों वाले एक नौजवान को बैठे देखा, जिस के इर्द गिर्द लोग जम्अ़ थे। वोह बात करता तो उस के मुंह से नूर और मोती झड़ते मा'लूम होते। मैं ने पूछा : "येह कौन है ?" लोगों ने बताया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं।"(1)

﴾782﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शह्‌र बिन ह़ौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मौजूदगी में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن जब आपस में गुफ़्त्गू करते तो उन की इ़ल्मी जलालत व रो'ब की वज्ह से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن उन्हें देखते रहते।"(2)

﴾783﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ूब सूरत, फ़य्याज़ और अपने ख़ानदान के सब से बेहतर नौजवान थे। उन से जो मांगा जाता ज़रूर अ़त़ा फ़रमाते। यहां तक कि मक़रूज़ हो गए और क़र्ज़ उन के माल व अस्बाब से बढ़ गया। चुनान्चे, उन्हों ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की, कि "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन क़र्ज़ ख़्वाहों से रिआ़यत करने का फ़रमाएं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से बात की लेकिन क़र्ज़ ख़्वाहों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बात को अहम्मिय्यत न दी। ह़ालांकि अगर किसी के कहने पर किसी का कोई क़र्ज़ छोड़ा जाता तो रसूले दो जहान, सरवरे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशाद पर उन का क़र्ज़ छोड़ा जाता। चुनान्चे, ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का माल फ़रोख़्त फ़रमा दिया और उस से ह़ासिल होने वाली रक़म क़र्ज़ ख़्वाहों के दरमियान तक़्सीम फ़रमा दी जिस की वज्ह से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास कुछ न रहा। फिर जब उन्हों ने ह़ज किया तो ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें यमन भेजा ताकि वोह कमी पूरी कर सकें।"

रावी फ़रमाते हैं कि (तक़ाज़ए क़र्ज़ के सबब) सब से पहले जिस शख़्स पर अपने माल में तसर्रुफ़ करने पर पाबन्दी आ़इद की गई वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द

1 ......صفة الصفوة،الرقم١٥ مُعَاذ بن جَبَل،ج١،ص٢٥٣

2 ......صفة الصفوة،الرقم١٥ مُعَاذ بن جَبَل،ج١،ص٢٥٦

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में यमन से वापस लौटे ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़र्ज़ ख़्वाह चूंकि यहूदी थे इस लिये उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कोई रिआ़यत न की ।"

﴾784﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि जब हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया तो लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लिया उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से यमन में थे । पस अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज के क़ाफ़िले का अमीर बना कर भेजा । चुनान्चे, मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में उन की मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस ह़ाल में हुई कि उन के हमराह कुछ ग़ुलाम भी थे । उन्हों ने अ़र्ज़ की : "अहले यमन ने येह ग़ुलाम मुझे और येह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हदिय्या किये हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं आप को मश्वरा देता हूं कि आप अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चले जाएं ।"

रावी फ़रमाते हैं कि दूसरे दिन जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ इब्ने ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं ने रात ख़्वाब में देखा कि मैं आग की त़रफ़ जा रहा हूं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे उस से रोक रहे हैं । लिहाज़ा मुझे आप की इत्तिबाअ़ के सिवा कोई चारा नहीं ।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ुलामों को ले कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और अ़र्ज़ की : "येह ग़ुलाम अहले यमन ने मुझे और येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बत़ौरे हदिय्या दिये हैं ।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं आप का हदिय्या आप के सिपुर्द करता हूं ।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले गए और ग़ुलामों को अपने

1......المعجم الکبیر،الحدیث:٤٠،ج٢٠،ص٣٠تا٣٢،"حجز"بدلہ"تجر".

www.dawateislami.net

पीछे नमाज़ पढ़ते देखा तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम किस के लिये नमाज़ पढ़ रहे हो ?" बोले : हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये नमाज़ पढ़ रहे हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जाओ ! मैं तुम सब को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद करता हूं।"(1)

फ़ितनों की ख़बर :

﴾785﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی हज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक तुम्हारे बा'द फ़ितने होंगे, उन में माल की कसरत होगी, कुरआने करीम के रास्ते खुल जाएंगे यहां तक कि मोमिन व मुनाफ़िक़, छोटा व बड़ा, सुर्ख़ व सियाह सब इसे हासिल करेंगे। फिर अन क़रीब एक ऐसा ज़माना आएगा कि कोई कहने वाला कहेगा कि "क्या बात है लोग मेरी पैरवी नहीं करते हालांकि मैं उन को कुरआन पढ़ कर सुनाता हूं ? मेरा ख़याल है कि येह लोग उस वक़्त मेरी इत्तिबाअ़ करेंगे जब मैं उन के सामने कोई बिदअ़त गढ़ कर पेश करूंगा। (ख़बरदार) तुम उस की घड़ी हुई बिदअ़त से ज़रूर बच कर रहना क्यूंकि वोह सरा सर गुमराही है और मैं तुम्हें आ़लिम की गुमराही से डराता हूं कि कभी शैत़ान आ़लिम की ज़बान से गुमराही वाली बात कहलवा देता है और कभी मुनाफ़िक़ भी ह़क़ बयान कर देता है। बहर ह़ाल तुम ह़क़ क़बूल कर लेना क्यूंकि इत्तिबाए़ ह़क़ में नूरानिय्यत है।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! हमें किस त़रह़ पता चलेगा कि आ़लिम गुमराही वाली बात कह रहा है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह ऐसी बात बयान करेगा जिस का तुम इन्कार करोगे और कहोगे कि "येह उस ने क्या बात कही है ?" बहर ह़ाल येह चीज़ तुम्हें उ़लमा के बयान कर्दा ह़क़ पर अ़मल करने से न रोके क्यूंकि हो सकता है वोह अपनी ग़लत़ी से रुजूअ़ कर ले और ईमान व अ़मल का मक़ामो मर्तबा क़ियामत के दिन खुलेगा। अलबत्ता ! जो इन को पाने की कोशिश करता है वोह इन्हें पा लेता है।"(2)

﴾786﴿.....हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उ़मैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुसाहिबों में से थे बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी किसी मजलिस में वा'ज़ करने तशरीफ़ लाते तो फ़रमाते : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ह़ाकिम

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب إن مُعَاذاً (كان أمة قانتاًلله)، الحديث: ٥٢٣٩، ج٤، ص٣٠٩.

2 ......سنن ابى داود، كتاب السنة، باب من دعالى السنة، الحديث: ٤٦١١، ص١٥٦٢، مفهومًا.

www.dawateislami.net

और इन्साफ़ फ़रमाने वाला है। उस का नाम बरकत वाला है। शक करने वालों के लिये हलाकत है।" चुनान्चे, एक रोज़ आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "बेशक तुम्हारे बा'द फ़ितने हैं। उन में माल की कसरत होगी। कुरआने हकीम के रास्ते खुल जाएंगे यहां तक कि मोमिन व मुनाफ़िक़, मर्द व औरत, छोटा बड़ा, आज़ाद व गुलाम हर कोई इसे हासिल कर लेगा। फिर अन क़रीब एक ज़माना ऐसा आएगा कि कोई कहने वाला कहेगा : "क्या बात है लोग मेरी इत्तिबाअ़ नहीं करते हालांकि मैं उन्हें कुरआन सुनाता हूं? मेरा ख़याल है कि येह मेरी इत्तिबाअ़ उस वक़्त करेंगे जब मैं कुरआन छोड़ कर कोई बिदअ़त घड़ कर उन के सामने पेश करूंगा।" (ख़बरदार!) तुम उस की घड़ी हुई बिदअ़त से बच कर रहना क्यूंकि वोह सरा सर गुमराही है और मैं तुम्हें आ़लिम की गुमराही से डराता हूं बेशक शैतान कभी उस की ज़बान से गुमराही वाली बात कहलवा देता है और कभी मुनाफ़िक़ भी हक़ बात कह देता है।" हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उ़मैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عزوجل आप पर रहम फ़रमाए! मुझे कैसे मा'लूम होगा कि आ़लिम गुमराही वाली बात कह रहा है और मुनाफ़िक़ हक़ बात बयान कर रहा है?" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं!" तुम आ़लिम की उन बातों से बचो जिन के बारे में अहले इ़ल्म कहें कि "येह उस ने क्या कहा है? और आ़लिम की ग़लती तुम्हें उस के बयान कर्दा हक़ को क़बूल करने से न रोके। क्यूंकि हो सकता है कि जब वोह हक़ सुने तो अपनी ग़लती से रुजूअ़ कर के हक़ का इत्तिबाअ़ कर ले, बेशक इत्तिबाए़ हक़ में नूरानिय्यत है।"(1)

ए'तिदाल का दर्स :

﴾787﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलमा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से मरवी है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ تعالٰی عنہ से अ़र्ज़ की : "मुझे कोई इ़ल्म की बात सिखाइये।" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "क्या तुम मेरी इता़अ़त करोगे?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं आप की इता़अ़त पर ह़रीस हूं।" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "रोज़ा रखो और इफ़्तार भी करो, रात में क़ियाम करो और आराम भी करो, कस्बे हलाल के लिये कोशिश करो और गुनाह से भी बचो, हालते इस्लाम में ही मरो और मज़लूम की बद दुआ़ से बचो।"(2)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب من دعاالی السنۃ،الحدیث:٤٦١١،ص١٥٦٢.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،أخبارمُعَاذ بن جَبَل، الحدیث:١٠١٠،ص٢٠٠.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुनाजात :

《788》.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौर बिन यज़ीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब तहज्जुद की नमाज़ से फ़रागत पाते तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं मुनाजात करते : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आंखें सो रही हैं और सितारे छुप गए हैं जब कि तू ज़िन्दा और दूसरों को ज़िन्दा रखने वाला है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जन्नत के मुआ़मले में मेरी त़लब सुस्त है और जहन्नम की आग से मेरा भागना ज़ईफ़ है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने पास से ऐसी हिदायत अ़त़ा फ़रमा जो आख़िरत में भी मेरे काम आए। बेशक तू अपने वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।"(1)

बेटे को नसीह़त :

《789》.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साह़िब ज़ादे से फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! जब तुम नमाज़ पढ़ो तो रुख़्सत होने वाले की त़रह़ नमाज़ पढ़ो (या'नी इसे अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ ख़याल करो) और इस गुमान में न रहना कि तुम्हें दूसरी नमाज़ का मौक़अ़ मिलेगा। ऐ मेरे बेटे ! मोमिन दो नेकियों के दरमियान वफ़ात पाता है एक वोह नेकी जिसे वोह आगे भेज चुका और दूसरी वोह जो अपने पीछे छोड़ी (या'नी सदक़ए जारिय्या)।"(2)

《790》.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن से रिवायत है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा उस के साथ उस के दोस्त भी थे जो उसे सलामे रुख़्सत कर के जा रहे थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें दो बातों की नसीह़त करता हूं। अगर तुम इन की ह़िफ़ाज़त करोगे तो मह़फ़ूज़ रहोगे : (1) तुम्हें दुन्या से जो ह़िस्सा मिलना है उस की फ़िक्र मत करना (2) तुम्हें अपनी आख़िरत के ह़िस्से की फ़िक्र करने की ज़ियादा ह़ाजत है। लिहाज़ा आख़िरत के ह़िस्से को दुन्या के ह़िस्से पर तरजीह़ दो यहां तक कि इस का इन्तिज़ाम कर लो। इस के बा'द तुम जहां कहीं भी जाओगे वोह तुम्हारे साथ साथ रहेगा।"(3)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٤٨،ج٢٠،ص٣٤.

2 ......الزھدللامام احمدحنبل،أخبارمُعَاذبن جَبَل،الحدیث:١٠٠٧،ص١٩٩.

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٤٩،ج٢٠،ص٣٥.

www.dawateislami.net

इल्मे दीन की महब्बत ने रुला दिया :

﴾791﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में हाज़िर हो कर गिर्या व ज़ारी करने लगा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस से रोने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया। उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस क़राबत दारी की वज्ह से नहीं रो रहा जो मेरे और आप के दरमियान है और न ही मेरे रोने का बाइस मुझे आप की त़रफ़ से मिलने वाली दुन्या है ताहम मुझे इस बात का ख़ौफ़ रुला रहा है कि मैं जो आप से इल्म ह़ासिल करता था अब उस का सिलसिला मुन्क़त़अ़ हो जाएगा।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मत रो ! बेशक जो शख़्स इल्म व ईमान का इरादा रखता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस त़रह़ इल्म अ़त़ा फ़रमाता है जिस त़रह़ हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अ़त़ा फ़रमाया था हालांकि उस वक़्त इल्म ह़ासिल करने और ईमान के नूर से अपने क़ल्ब को चमकाने का कोई ज़ाहिरी ज़रीआ़ मौजूद नहीं था।"(1)

इन्साफ़ की उ़म्दा व ला जवाब मिसाल :

﴾792﴿.....हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की दो बीवियां थीं। जिस दिन एक की बारी होती उस दिन दूसरी के घर में वुज़ू तक न फ़रमाते थे। जब मुल्के शाम में किसी मरज़ में मुब्तला हो कर दोनों इन्तिक़ाल कर गईं तो चूंकि उस वक़्त सब लोग अपने अपने मुआ़मलात में मसरूफ़ थे इस लिये दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया और क़ब्र में उतारते वक़्त भी आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़ुरआ़ डाला कि पहले किस को क़ब्र में रखा जाए।"(2)

﴾793﴿.....हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की दो बीवियां थीं जब बारी के मुत़ाबिक़ किसी एक के पास तशरीफ़ फ़रमा होते तो इस दौरान दूसरी के घर से पानी तक नोश न फ़रमाते थे।"(3)

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٢٢٨، ج٢٠، ص١١٥، مفهومًا.

2 ......صفة الصفوة، الرقم١٥ مُعَاذبن جَبَل، ذكرنبذه من ورعه، ج١، ص٢٥٥.

3 ......الزهدللامام احمدبن حنبل، أخبارمُعَاذبن جَبَل، الحديث:١٠٢٣، ص٢٠٢.

www.dawateislami.net

ज़िक्रुल्लाह जिहाद से अफ़्ज़ल है

﴾794﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से बढ़ कर बन्दे को अ़ज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाली कोई चीज़ नहीं।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "क्या राहे खुदा में तल्वार चलाना भी नहीं ?" येह बात लोगों ने तीन बार कही तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "हां येह भी नहीं ! मगर येह कि राहे खुदा में लड़ते लड़ते उस की तल्वार टूट जाए।"(1)

﴾795﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बह़रिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से बढ़ कर बन्दे को अ़ज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाला कोई अ़मल नहीं।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! (येह हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की कुन्यत है) क्या राहे खुदा में जिहाद करना भी नहीं ?" फ़रमाया : "नहीं, मगर येह कि लड़ते लड़ते तल्वार टूट जाए क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया है :

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ (پ۲۱،العنكبوت:۴۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा।"(2)

﴾796﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं सुब्ह़ से रात तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहूं येह अ़मल मुझे उस से ज़ियादा मह़बूब है कि मैं उ़म्दा घोड़े पर सुवार हो कर सुब्ह़ से रात तक राहे खुदा में जिहाद करूं।"(3)

तर्के सुन्नत गुमराही का सबब :

﴾797﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बह़रिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ह़िम्स की मस्जिद में दाख़िल हुवा तो हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़रमाते हुवे सुना कि "जिसे येह पसन्द हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होते वक़्त उसे कोई ख़ौफ़ न हो तो उसे चाहिये कि जब अज़ान दी जाए तो नमाज़ के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो जाए क्यूंकि बा जमाअ़त

---

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل،أخبار مُعَاذ بن جَبَل،الحديث:۱۰۰۸،ص۱۹۹.

2 ......الزهد للامام احمد حنبل،أخبار مُعَاذ بن جَبَل،الحديث:۱۰۲۵،ص۲۰۲.

3 ......شعب الايمان للبيهقي،باب في محبة الله/فصل في ذكر أخبار وردت في ذكر الله،الحديث:۶۷۵،ج۱،ص۴۴۹.

www.dawateislami.net

नमाज़ अदा करना सुनने हुदा में से है और येह उन सुन्नतों में से हैं जिन्हें हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे लिये जारी फ़रमाया और कोई शख़्स येह न कहे कि मेरे घर में जाए नमाज़ है मैं घर में ही नमाज़ पढ़ लूंगा। क्यूंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के तारिक कहलाओगे और अगर तुम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को तर्क कर दिया तो गुमराह हो जाओगे।"(1)

﴾798﴿.....हज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन हिलाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हमराह चल रहे थे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हम से फ़रमाया : "बैठो थोड़ी देर ईमान की बातें कर लें।"(2)

﴾799﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "तुम ऐसे लोगों के पास बैठते हो जो लाज़िमी तौर पर बातों में लग जाते हैं। लिहाज़ा जब उन्हें ग़फ़लत में देखो तो फ़ौरन अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ।"

हज़रते सय्यिदुना वलीद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِیْد फ़रमाते हैं : जब येह हदीस हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन जाबिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास ज़िक्र की गई तो उन्हों ने कहा : "जी हां ! मुझे अबू तल्हा हकीम बिन दीनार ने बयान किया कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِیْن फ़रमाया करते थे कि "मक़्बूल दुआ की निशानी येह है कि जब तुम लोगों को ग़फ़लत में देखो तो फ़ौरन अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ।"(3)

﴾800﴿.....हज़रते सय्यिदुना ताऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हमारे अलाक़े में तशरीफ़ लाए तो हमारे कुछ बुज़ुर्गों ने उन से दरख़्वास्त की, कि "अगर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इजाज़त दें तो हम पथ्थरों और लकड़ियों का बन्दोबस्त कर दें ताकि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये मस्जिद बना दी जाए।" हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे ख़ौफ़ है कि बरोज़े क़ियामत इन्हें पीठ पर उठाने का मुकल्लफ़ न बना दिया जाऊं।"(4)

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب المساجدومواضع الصلاة، باب صلاة الجماعة من سنن الهدى، الحديث:١٤٨٨، ص٧٧٩، راوى عبدالله بن مسعود، بتغيرٍ.

2 ......صحيح البخارى، كتاب الإيمان، باب قول النبى بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ، ص٢۔ صفة الصفوة، الرقم١٠٥ مُعَاذبن جَبَل، ذكرنبذه من مواعظه و كلامه، ج١، ص٢٥٧.

3 ......الزهدللامام احمدبن حنبل، أخبارمُعَاذبن جَبَل، الحديث:١٠٢٤، ص٢٠٢.

4 ......الزهد لهنادبن السرى، باب معيشة النبى، الحديث:٧٢٥، ج٢، ص٣٧٦.

www.dawateislami.net

फ़िक्रे आख़िरत पर मब्नी बयान :

﴾801﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून औदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हमारे दरमियान खड़े हो कर फ़रमाया : "ऐ क़बीलए "औद" वालो ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद हूं। तुम्हें इस बात का यक़ीनी इल्म होना चाहिये कि एक दिन हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होना है, इस के बा'द जन्नत में जाना होगा या फिर जहन्नम ठिकाना होगा और वहां हमेशा ठहरना है इस से आगे कुछ न होगा और हम हमेशा उन जिस्मों में रहेंगे जिन्हें कभी मौत नहीं आएगी।"[(1)]

﴾802﴿.....हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन यज़ीद बिन जाबिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَادِر से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "तुम जितना चाहो इल्म हासिल करो लेकिन उस पर अ़मल भी करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हरगिज़ इल्म पर अज्र अ़ता न फ़रमाएगा जब तक उस पर अ़मल न करोगे।[(2)]

﴾803﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम इल्म हासिल करना चाहते हो तो जितना चाहो हासिल करो लेकिन उस पर अ़मल भी करो क्यूंकि जब तक तुम इल्म पर अ़मल न करोगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हरगिज़ तुम्हें उस से नफ़्अ़ अ़ता न फ़रमाएगा।"[(3)]

औ़रतों का फ़ितना :

﴾804-805﴿.....हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "तुम्हें ख़स्ताहा़ली के फ़ितने में मुब्तला किया गया तो तुम ने इस पर सब्र किया और अ़न क़रीब तुम ख़ुशहा़ली के फ़ितने में मुब्तला किये जाओगे और मुझे तुम पर सब से ज़ियादा औ़रतों के फ़ितने का ख़ौफ़ है, जब वोह सोने और चांदी के कंगन पहनेंगी और शाम के नर्म व नाज़ुक कपड़े और यमन की चादरें ज़ेबे तन करेंगी तो मालदारों को थका देंगी और ग़रीबों को उस चीज़ का मुकल्लफ़ बनाएंगी जिस की वोह ताक़त नहीं रखते।"[(4)]

---

1 ......المستدرك، كتاب الإيمان، باب يذبح الموت على الصراط، الحديث: ٢٨٩، ج١، ص٢٦٧.

2 ......الزهدلابن المبارك، باب من طلب العلم لعرض فى الدنيا، الحديث: ٦٢، ص٢١.

3 ......الكامل فى ضعفاء الرجال لابن عدى، الرقم ٢٦٤ بكربن خُنَيس كوفى، ج٢، ص١٨٩، بدون: إن شئتم.

4 ......الزهدلابن المبارك، باب ماجاء فى ذنب التنعم فى الدنيا، الحديث: ٧٨٥، ص٢٧١.

www.dawateislami.net

नफ़रत के अस्बाब :

﴾806﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नज़्र हारिसी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़रमाया : "3 बातें ऐसी हैं कि जो इन का आ़दी होता है उसे लोगों की नफ़रत व ना पसन्दीदगी का सामना करना पड़ता है : (1) बिग़ैर किसी अ़जीब बात के हंसते रहना (2) बिला ज़रूरत सोए रहना और (3) बिग़ैर भूक के खाना खाना।"[1]

﴾807﴿.....हज़रते सय्यिदुना मालिक दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه ने एक थैली में 400 दीनार डाल कर गुलाम को दिये और फ़रमाया : "इन्हें हज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه के पास ले जाओ फिर कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह उन्हें कहां सर्फ़ करते हैं।" चुनान्चे, गुलाम वोह थैली ले कर अमीनुल उम्मत हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़रमाया है कि येह दीनार अपनी किसी ज़रूरत में इस्ति'माल कर लें।" उन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन पर रह़्म फ़रमाए।" फिर अपनी लौंडी को बुला कर फ़रमाया : "येह 7 दीनार फ़ुलां को, येह 5 फ़ुलां को और येह 5 फ़ुलां को दे आओ।" यहां तक कि सब के सब सदक़ा कर दिये। गुलाम ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारी सूरते ह़ाल बयान कर दी।

फिर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه ने इतने ही दीनार एक और थैली में डाल कर गुलाम के ह़वाले किये और फ़रमाया : "येह हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه के पास ले जाओ और कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं?" गुलाम ने थैली ली और हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه फ़रमाते हैं इस रक़म से अपनी कोई ह़ाजत पूरी कर लें।" उन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه पर रह़्म फ़रमाए।" फिर अपनी लौंडी को बुला कर फ़रमाया : "इतने दिरहम फ़ुलां के घर और इतने फ़ुलां के घर पहुंचा दो।" इसी अस्ना में आप

---

1 .....الزهد للامام احمد بن حنبل، أخبار مُعَاذ بن جَبَل، الحديث:١٠٢٢، ص٢٠٢.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा को इस बात का इल्म हुवा तो अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं, हमें भी अ़ता फ़रमाएं।" उस वक़्त थैली में सिर्फ़ 2 दीनार बाक़ी बचे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह थैली दीनारों समेत अपनी अहलिय्या की त़रफ़ उछाल दी। ग़ुलाम अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ सुनाया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुवे और फ़रमाया : "बेशक तमाम सह़ाबा आपस में भाई-भाई हैं।"(1)

अमीरुल मोमिनीन को नसीह़त :

﴾808﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सूक़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन अबी हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया तो उन्हों ने मुझे एक काग़ज़ निकाल कर दिखाया जिस पर लिखा था कि येह ख़त़ अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ व मुआ़ज़ बिन जबल की त़रफ़ से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ है।

اَلسَّلَامُ عَلَیْک ! ह़म्दो सना के बा'द ! हम दोनों आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ करते हैं कि "जो मुआ़मला (या'नी ख़िलाफ़त) आप के सिपुर्द किया गया है वोह अहम तरीन है। आप को इस उम्मत के सुर्ख़ व सियाह की ज़िम्मेदारी सोंपी गई है। आप के पास मुअ़ज़्ज़ज़ व ह़क़ीर, दुश्मन व दोस्त फ़ैसले करवाने आएंगे और अ़द्लो इन्साफ़ हर एक का ह़क़ है। ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! ग़ौर कर लें कि उस वक़्त आप की क्या कैफ़िय्यत होगी ? हम आप को उस दिन से डराते हैं जिस दिन लोगों के चेहरे झुक जाएंगे। दिल कांप उठेंगे और तमाम हुज्जतें ख़त्म हो जाएंगी। सिर्फ़ एक बादशाहे ह़क़ीक़ी अल्लाह रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत अपनी त़ाक़त व क़ुदरत के साथ ग़ालिब होगी और मख़्लूक़ उस के सामने ह़क़ीर होगी। उस की रह़मत की उम्मीद और अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करती होगी और हम आपस में गुफ़्तगू करते हैं कि आख़िरी ज़माने में इस उम्मत का ह़ाल ऐसा हो जाएगा कि लोग ज़ाहिरी त़ौर पर तो एक दूसरे के भाई बनेंगे जब कि दिली त़ौर पर दुश्मन होंगे। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि येह ख़त़ आप को हमारी त़रफ़ से वोह बात पहुंचाए जो हमारे दिलों में नहीं। हम ने मह़ज़ आप की ख़ैर ख़्वाही के लिये येह ख़त़ लिखा है। وَالسَّلَام عَلَیْک

1......الزھدللامام احمدبن حنبل،أخبارالحسن بن ابی الحسن،الحدیث:۱۵۶۲،ص۲۸۳،بتغیر.

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस ख़त़ का जवाब यूं दिया : येह तह़रीर उ़मर बिन ख़त़्त़ाब की त़रफ़ से ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रफ़ है।

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا : ह़म्दो सना के बा'द ! मुझे आप का ख़त़ मिला, जिस में आप ने ज़िक्र किया है कि "मेरा मुआ़मला सख़्त तर है और मुझे इस उम्मत के सुर्ख़ व सियाह की विलायत सोंपी गई है। मेरे सामने शरीफ़ व ज़लील, दुश्मन व दोस्त आएंगे। बेशक हर शख़्स का अ़द्ल में ह़िस्सा है।" आप ने लिखा है कि "ऐ उ़मर ! उस वक़्त तुम्हारी क्या ह़ालत होगी ?" बेशक उ़मर को इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ और मा'सिय्यत से बचने की क़ुव्वत देने वाला सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है और आप ने लिखा है कि "आप मुझे उस मुआ़मले से डराते हैं जिस से साबिक़ा उम्मतें डराई जाती रहीं।" पहले ही रात और दिन के बदलने ने लोगों की अमवात के साथ हर दूर को क़रीब, हर नए को पुराना और हर आने वाले को ह़ाज़िर कर दिया है यहां तक कि लोग अपने ठिकाने जन्नत या दोज़ख़ की त़रफ़ चले गए। आप ने इस बात का भी इज़्हार किया है कि "आख़िरी ज़माने में इस उम्मत का येह ह़ाल होगा कि लोग ब ज़ाहिर भाई-भाई जब कि दिली त़ौर पर एक दूसरे के दुश्मन होंगे।" लेकिन आप तो ऐसे नहीं और न ही येह वोह ज़माना है क्यूंकि इस ज़माने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रग़बत और उस का ख़ौफ़ ज़ाहिर है, लोग इस्लाहे़ दुन्या के लिये एक दूसरे की त़रफ़ रग़बत करते हैं और आख़िर में तह़रीर किया कि "आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि मैं येह ख़त़ पढ़ कर वोह मफ़्हूम लूं जो आप के दिलों में नहीं है जब कि आप ने तो ख़ैर ख़्वाही के लिये लिखा है।" तुम दोनों ने सच कहा है मुझे आइन्दा भी तुम्हारे ख़त़ का इन्तिज़ार रहेगा, मैं आप ह़ज़रात (की ख़ैर ख़्वाही) से बे नियाज़ नहीं हूं।"(1) وَالسَّلَامُ عَلَیْکُمَا

इ़ल्म के फ़ज़ाइलो बरकात :

﴾809﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इ़ल्म ह़ासिल करो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इ़ल्म ह़ासिल करना ख़शिय्यत, इसे तलाश करना इ़बादत, इस की तकरार करना तस्बीह़ और इस की जुस्त्जू करना जिहाद है। जाहिलों को इ़ल्म सिखाना सदक़ा और इसे इस

(1)......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عمربن الخطاب، الحدیث:۱۰، ج۸، ص۱۴۸۔
المعجم الکبیر، الحدیث:۴۵، ج۲۰، ص۳۲۔

www.dawateislami.net

के अह्ल तक पहुंचाना नेकी है क्यूंकि येह ह़लाल व ह़राम का शुऊ़र देता, अहले जन्नत को रौशन दलील और घबराहट में उन्सिय्यत देता है। सफ़र में हम नशीन और तन्हाई का साथी है। तंगदस्ती व ख़ुशह़ाली में रहनुमाई करता और दुश्मनों के मुक़ाबले में हथयार है। अ़ज़ीम लोगों के हां इ़ल्म की हैसिय्यत ज़ीनत की सी है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म ही की बदौलत क़ौमों को रिफ़्अ़त व बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता और उन्हें भलाई में लोगों का मुक़्तदा व पेश्वा बना देता है। अहले इ़ल्म के नक़्शे क़दम पर चला जाता, उन के अफ़्आ़ल की पैरवी की जाती और उन की राए पर सरे तस्लीम ख़म किया जाता है। फ़िरिश्ते उन की दोस्ती में रग़बत रखते और उन्हें अपने परों से ढांप लेते हैं। हर ख़ुश्को तर यहां तक कि समन्दर में मछलियां और पानी के दीगर जानवर, दरिन्दे और चौपाए सब उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं। इ़ल्म जहालत की तारीकी से नजात देता, दिलों को जिला बख़्शता और जहालत के अन्धेरों में आंखों को रौशनी अ़त़ा करता है। इस के ज़रीए़ इन्सान नेक लोगों की मनाज़िल तक रसाई पाता और दुन्या व आख़िरत में बुलन्द मक़ाम तक जा पहुंचता है। इ़ल्म में ग़ौरो फ़िक्र करने का अज्र रोज़ा रखने के बराबर और इसे पढ़ना पढ़ाना नवाफ़िल के बराबर है। इ़ल्म ही सिलए रेह़्मी का पैग़ाम देता और ह़लालो ह़राम की पहचान कराता है। इ़ल्म तमाम अ़मल करने वालों का सरदार और अ़मल इस का पैरूकार है। येह ऐसी ने'मत है जो ख़ुश नसीबों को अ़त़ा की जाती और बद बख़्तों को इस से मह़रूम रखा जाता है।"(1)

मरह़बा ऐ मौत ! मरह़बा :

﴾810﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन क़ैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "देखो ! क्या सुब्ह़ हो चुकी है ?" अ़र्ज़ की गई : "अभी सुब्ह़ नहीं हुई।" कुछ देर बा'द फिर फ़रमाया : "देखो ! क्या सुब्ह़ हो चुकी है ?" अ़र्ज़ की गई : "अभी सुब्ह़ नहीं हुई।" फिर कुछ देर बा'द किसी ने आ कर ख़बर दी की "सुब्ह़ हो चुकी है।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ऐसी रात से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं जिस की सुब्ह़ आग की त़रफ़ ले जाने वाली हो। मरह़बा ! ऐ मौत ! मरह़बा ! मौत एक ऐसा मुलाक़ाती है जो आख़िर में आया है। ऐसा दोस्त है जो फ़ाक़े की ह़ालत में आया है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं दुन्या में तुझ से डरता था और आज तुझ से उम्मीदें वाबस्ता किये हूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने दुन्या की मह़ब्बत को दिल में बसाया न लम्बी उ़म्र का अरमान रखा कि इस दुन्या में नहरें जारी करूं और बाग़ात लगाऊं लेकिन

1 ......مختصر جامع بیان العلم وفضلہ لابن عبد البر، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث:٤٠٥،ص٥٣.

www.dawateislami.net

सख़्त गर्म दिनों की प्यास, सख़्ती वाली साअ़तें, सफ़र में उ़लमा से मुलाक़ात और ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ल्क़ों की त़लब दिल में आज भी बाक़ी है।"[1]

ताऊ़न अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है :

﴾811﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि मुल्के शाम में ताऊ़न[2] की वबा फैली तो लोगों ने कहना शुरूअ़ कर दिया कि येह बिग़ैर पानी के तूफ़ान है। येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और ख़ित़ाब करते हुवे फ़रमाया : "मुझे तुम्हारी बातें पहुंची हैं ह़ालांकि येह तो तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ और तुम से पहले नेक लोगों की वफ़ात का सबब है। लेकिन वोह इस बीमारी के बजाए इस बात से ज़ियादा डरते थे कि तुम में से कोई शख़्स अपने घर में इस ह़ाल में सुब्ह़ करे कि उसे इतनी भी ख़बर न हो कि वोह मोमिन है या मुनाफ़िक़ और वोह बच्चों की ह़ुक्मरानी से ख़ौफ़ज़दा थे।"[3]

औलाद के लिये ताऊ़न की दुआ़ :

﴾812﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते सय्यिदुना शुर्ह़बील बिन ह़सना और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم चारों बुज़ुर्गों पर एक ही दिन ताऊ़न का ह़म्ला हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ है। नीज़ तुम से क़ब्ल नेक लोग इसी बीमारी के सबब फ़ौत हुवे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुआ़ज़ की औलाद को इस रह़मत से वाफ़िर हिस्सा अ़त़ा फ़रमा[4]।" चुनान्चे, अभी शाम भी न हुई थी कि आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना

1.....الزھدللامام احمدبن حنبل،أخبارمُعاذبن جَبَل، الحدیث:۱۰۱۱،ص۲۰۰،بتغیر.

2.....मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं "ताऊ़न" त़ा'न से बना है ब मा'ना नेज़ा मारना, चूंकि इस बीमारी में मरीज़ को फोड़े या ज़ख़्म से ऐसा मह़सूस होता है जैसे उसे कोई नेज़े मार रहा है, सूइयां चुभो रहा है इस लिये इसे ताऊ़न कहा जाता है येह मश्हूर वबाई बीमारी है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 413)

3.....الزھدللامام احمدبن حنبل،أخبارمُعاذبن جَبَل، الحدیث:۱۰۲۱،ص۲۰۲.

4.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपनी औलाद के लिये ताऊ़न की दुआ़ करना दर ह़क़ीक़त उन के लिये शहादत व रह़मत की दुआ़ करना है क्यूंकि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे शहादत फ़रमाया है। जैसा कि मिश्कातुल मसाबीह़ में बुख़ारी व मुस्लिम के ह़वाले से फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नक़्ल है : ताऊ़न हर मुसलमान की शहादत है। एक और रिवायत का ख़ुलासा है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे मुसलमानों के लिये रह़मत बनाया है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 413)

www.dawateislami.net

अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कि जिन के नाम से आप ने अपनी कुन्यत रखी और उन से आप को बहुत मह़ब्बत थी त़ाऊ़न के मरज़ में मुब्तला हो गए। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद से लौटे तो अपने बेटे को सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तला पा कर दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या ह़ाल है ?" बेटे ने जवाब में येह आयते करीमा तिलावत की :

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۶۰﴾
(پ۳،ال عمران:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ सुनने वाले ! येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तो शक वालों में न होना।*

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ तुम मुझे सब्र करने वाला ही पाओगे।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रात भर ठहरे रहे और सुब्ह़ के वक़्त बेटे को दफ़्न किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर त़ाऊ़न का ह़म्ला हुवा और नज़्अ़ की तकालीफ़ शिद्दत इख़्तियार कर गईं तो जब कुछ इफ़ाक़ा होता तो अ़र्ज़ करते : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे जितनी भी तक्लीफ़ आ ले लेकिन तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! बेशक तू जानता है कि मेरा दिल तेरी मह़ब्बत से लबरेज़ है।"(1)

सफ़रे यमन के वक़्त नसीह़तें :

﴾813﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! जाओ अपनी सुवारी तय्यार करो फिर मेरे पास आ जाना मैं तुम्हें यमन भेजना चाहता हूं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सुवारी तय्यार की और मस्जिद के दरवाज़े पर आ कर खड़ा हो गया यहां तक कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और मेरा हाथ पकड़ कर मेरे साथ चलते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने, सच्ची बात कहने, वा'दा पूरा करने, अमानत अदा करने, ख़ियानत से बचने, यतीम पर रह़म करने, पड़ोसी का ख़याल रखने, गुस्से पर क़ाबू पाने, दूसरों के लिये नर्मी इख़्तियार करने, सलाम आ़म करने, गुफ़्तगू में नर्मी अपनाने, ईमान पर साबित क़दम रहने, क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करने, आख़िरत से मह़ब्बत करने, ह़िसाबो किताब से डरने, लम्बी उम्मीदों से बचने और अच्छे आ'माल करने की वसिय्यत करता और मुसलमान को गाली देने, सच्चे को झूटा या झूटे को सच्चा साबित करने और आ़दिल ह़ुक्मरान की ना फ़रमानी करने से मन्अ़ करता हूं। ऐ मुआ़ज़ ! हर शजरो ह़जर के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र

1 ......البحرالزخارالمعروف بمسند البزار،مسندمُعَاذبن جَبَل،الحديث:۲۶۷۱،ج۷،ص۱۱۴.

www.dawateislami.net

करते रहना और जब कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो तौबा करना पोशीदा गुनाह की पोशीदा और अ़लानिय्या की अ़लानिय्या।"[1]

《814》.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को यमन भेजने का इरादा फ़रमाया तो उस वक़्त ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवारी पर थे और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के साथ पैदल चलते हुवे उन्हें नसीह़त फ़रमा रहे थे कि "ऐ मुआ़ज़ ! मैं तुम्हें इस त़रह़ नसीह़त करता हूं जिस त़रह़ एक ह़क़ीक़ी भाई नसीह़त करता है। मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की नसीह़त करता हूं।" इस के बा'द मज़कूरए बाला ह़दीस की त़रह़ बयान किया। अलबत्ता इस में इतना ज़ाइद कि "मरीज़ की इयादत करना। बेवाओं और कमज़ोरों की ज़रूरिय्यात को जल्द पूरा करना। ग़रीबों और मिस्कीनों के साथ उठना बैठना। लोगों को अपनी त़रफ़ से इन्साफ़ फ़राहम करना। हमेशा ह़क़ बात कहना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करना।"[2]

《815》.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन मेरा हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम से मह़ब्बत करता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता हूं।" फिर हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! मैं तुम्हें नसीह़त करता हूं कि हर नमाज़ के बा'द येह दुआ़ पढ़ना मत भूलना : اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने ज़िक्र, शुक्र और हु़स्ने इ़बादत पर मेरी मदद फ़रमा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुनाबिह़ी को येह वसिय्यत की, इन्हों ने ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान को, इन्हों ने ह़ज़रते उ़क़्बा को, इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना हैवत को, इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान मुक़्री को, इन्हों ने ह़ज़रते बिशर बिन मूसा को, इन्हों ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अह़मद बिन ह़सन को, इन्हों ने मुझे (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی को) येह

1......الزہدالکبیرللبیہقی،باب الورع و التقوی،الحدیث:٩٥٦،ص٣٤٧،مختصراً.

2......کتاب الثقات لابن حبان،السیرۃ النبویۃ،السنۃ التاسعۃ من الھجرۃ،ج١،ص١٤٧،بدون الأخ الشقیق.

www.dawateislami.net

वसिय्यत फ़रमाई और मैं तुम्हें इस की वसिय्यत करता हूं (कि हर नमाज़ के बा'द मज़्कूरा दुआ पढ़ना मत भूलना) ।(1)

﴾816﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे नबुव्वत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ मुआज़ ! तुम ने सुब्ह किस हाल में की ?" अ़र्ज़ की : "मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान रखते हुवे सुब्ह की है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर क़ौल का एक तस्दीक़ करने वाला और हर हक़ की एक हक़ीक़त होती है और तुम्हारी कही हुई बात की क्या तस्दीक़ है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने जब भी सुब्ह की तो येह गुमान किया कि शाम नहीं देख सकूंगा और जब भी शाम की तो येह ख़याल किया कि सुब्ह नहीं देख सकूंगा। जो भी क़दम उठाया येह सोच कर उठाया कि इस के बा'द दूसरा क़दम नहीं उठा सकूंगा और गोया मैं (क़ियामत का येह मन्ज़र) देख रहा हूं कि हर वोह उम्मत घुटनों के बल गिरी हुई है जिसे उन के नामए आ'माल की तरफ़ बुलाया जा रहा है और उन के साथ उन की तरफ़ भेजे जाने वाले नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) हैं और वोह बुत भी हैं जिन्हें वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर पूजते थे और गोया मैं जहन्नमियों की सज़ा और अहले जन्नत के सवाब को देख रहा हूं।" इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने जान लिया पस इन उमूर की पाबन्दी रखना।"(2)

﴾817﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुख़ैमिरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब यमन से वापस तशरीफ़ लाए तो मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने अपने बा'द लोगों को किस हाल में छोड़ा है ?" अ़र्ज़ की : "मैं ने उन्हें इस हाल में छोड़ा है कि उन का मक़्सद सिर्फ़ चौपायों वाला है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस वक़्त तुम्हारी क्या हालत होगी जब तुम ऐसे लोगों में रह जाओगे जो उन चीज़ों का इल्म रखते होंगे जिन से येह लोग जाहिल हैं मगर उन (इल्म रखने वालों) का मक़्सद भी इन जैसा ही होगा।"(3)

---

1 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم و اللیلۃ، الحدیث:۹۹۳۷، ج۶، ص۳۲.

2 ......کتاب الضعفاء للعقیلی، باب العین، الرقم۸۶۶، ج۲، ص۶۹۱.

3 ......کنزالعمال، کتاب العلم، قسم الاقوال، الحدیث:۲۸۹۶۷، ج۱۰، ص۸۱.

www.dawateislami.net

बद तरीन लोग :

﴾818﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा उस वक़्त आप त़वाफ़ में मश्ग़ूल थे। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे लोगों में से सब से बुरे शख़्स के बारे में बताइये।" इरशाद फ़रमाया : "मुझ से भलाई के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करो बुराई के मुतअ़ल्लिक़ मत पूछो, बद तरीन लोग बुरे उ़लमा हैं।"(1)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ता'ज़ियती मक्तूब :

﴾819-821﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे त़ाऊ़न की वबा में मुब्तला हो (कर इन्तिक़ाल फ़रमा) गए तो उन्हें बहुत सदमा हुवा। जब येह बात हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मा'लूम हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ येह ख़त़ लिखा : بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ येह ख़त़ मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ से मुआ़ज़ बिन जबल की त़रफ़ है।

اَلسَّلَامُ عَلَیْک ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान करता हूं, जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। اَمَّا بَعْد **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए और सब्र की तौफ़ीक़ बख़्शे। हमें और तुम्हें अपना शुक्र गुज़ार बन्दा बनाए, हमारी जानें, हमारे अहलो इ़याल, हमारे अमवाल और औलाद सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ाकर्दा और हमारे पास उस की त़रफ़ से आ़रियत हैं। जो वोह हमें एक मुद्दते मुक़र्ररा तक अ़त़ा फ़रमाता है कि हम उन से नफ़्अ़ उठाएं और उस मुक़र्ररा मुद्दत के बा'द वोह हम से वापस ले लेता है। लिहाज़ा हम पर फ़र्ज़ है कि जब हमें कोई ने'मत मिले तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करें और जब वोह हम से ले ली जाए तो उस पर सब्र करें। ऐ मुआ़ज़ ! तुम्हारा बेटा भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा की हुई एक ने'मत थी जो उस की त़रफ़ से तुम्हारे पास आ़रियत थी जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें मसर्रत व शादमानी अ़त़ा फ़रमाई और फिर तुम्हें इस के बदले अ़ज़ीम अज्रो सवाब अ़त़ा फ़रमा कर उसे वापस ले लिया। अगर सब्र करोगे तो तुम्हारे लिये रह़मत, हिदायत और सवाब होगा। ऐ मुआ़ज़ ! तुम में 2 ख़स्लतें हरगिज़

---

1 ......البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار،مسندمُعَاذبن جَبَل،الحديث:٢٦٤٩،ج٧،ص٩٣،مفهومًا.

www.dawateislami.net

जम्अ़ न होने पाएं कि इन की वज्ह से तुम्हारा अज्र ज़ाएअ़ हो जाएगा और फिर तुम्हें अपने अज्रो सवाब के खो देने पर नदामत होगी। अगर तुम अपनी मुसीबत को इस की वज्ह से हाथ आने वाले अज्रो सवाब पर पेश करोगे तो जान लोगे कि इतने अ़ज़ीम सवाब के मुक़ाबले में तुम्हारी मुसीबत तो बहुत छोटी है। तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के वा'दे के मुत़ाबिक़ अज्र पाओगे और अपनी मुसीबत का सदमा भूल जाओगे।" गोया ऐसे ही लिखा था। وَالسَّلَام[1]

मज़्कूरा रिवायत पर मुसन्निफ़ का तबसेरा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : "येह तीनों रिवायतें ज़ईफ़ हैं क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे की वफ़ात हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी फ़रमाने के 2 साल बा'द हुई। अलबत्ता बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने इन को ख़ुत़ूत़ लिखे हैं और रावी ने वह्म के सबब इन की निस्बत रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ कर दी है। ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जैसे जलीलुल क़द्र और आ'लम सह़ाबी के बारे में क्यूंकर कहा जा सकता है कि उन्हों ने बे सब्री की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी न रहे। लिहाज़ा इस में सह़ीह़ रिवायत वोही है जो ह़ारिस बिन उ़मैरह और अबू जुरशी ने रिवायत की है, इस में इन्हों ने बेटे की वफ़ात पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना और सब्रो इस्तिक़ामत का दामन थामे रहना बयान किया है और फिर येह कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में यक़ीनी त़ौर पर येह नहीं कहा जा सकता कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका में सफ़रे यमन के इ़लावा कभी हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से दूर रहे हों और यमन से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वापसी सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द हुई थी और मुह़म्मद बिन सईद और मजाशअ़ उस पाए के रावी नहीं है कि जिन की रिवायाते मुफ़रिदात पर ए'तिमाद किया जाए।"

﴾822﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें यमन की त़रफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : "दीन में मुख़्लिस रहना, थोड़ा अ़मल भी किफ़ायत करेगा।"[2]

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:٣٢٤، ج٢٠، ص١٥٥، مفهوماً.

2 ......المستدرك، كتاب الرقاق، الحديث:٧٩١٤، ج٥، ص٤٣٥.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हिजरत में सबक़त ले जाने वालों में से हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर बिन हिज़्यम जुमही رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिहूर अंगेज़ व फ़ितना गर दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार की, दुन्या के त़लबगारों को ह़क़ारत की निगाह से देखते थे। नेकियों की तरग़ीब दिलाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डराने के मुआ़मले में साबिक़ीन के त़रीक़ए कार पर गामज़न रहे। हुकूमत व सल्त़नत ह़ासिल होने के बा वुजूद दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार करते हुवे अपनी ज़िम्मेदारी को इन्तिहाई जां फ़िशानी व अमानत दारी से निभाते रहे।

उ़लमाए तसव्वुफ़ के नज़्दीक : सब्र पर क़ाइम रहते हुवे मुश्किल ह़ालात का डट कर मुक़ाबला करने और बेजा गुमानों की तह़क़ीक़ में न पड़ने का नाम **तसव्वुफ़** है।

घर अम्न का गहवारा कैसे बना ?

﴾823﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़त़िय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शाम की गवर्नरी से मा'ज़ूल किया तो उन की जगह हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवर्नर बना कर वहां भेजा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बीवी जो क़बीलए क़ुरैश से तअ़ल्लुक़ रखती थी, को साथ ले कर मुल्के शाम रवाना हो गए। वहां कुछ ही दिनों बा'द तंगदस्ती ने आ लिया। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक हज़ार दीनार उन्हें भेजे। हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीनार ले कर अपनी ज़ौजा के पास गए और फ़रमाया : "येह हमें अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भेजे हैं।" ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "अगर आप चाहें तो इन में से बा'ज़ से घर का राशन ख़रीद लें और जो बचें वोह आइन्दा के लिये संभाल कर रख लें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर सूरत न बताऊं ? वोह येह कि हम येह माल किसी ताजिर को दे देते हैं जो हमारे लिये तिजारत करे और हम इस का नफ़्अ़ खाते रहें और हमारे सरमाए की ज़िम्मेदारी भी उसी पर होगी।" ज़ौजा ने कहा : "येह तो बहुत अच्छा है।"

चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ खाने पीने का सामान, 2 ऊंट, 2 गुलाम ख़रीदे फिर लोगों की ज़रूरिय्यात का सामान गुलामों के ज़रीए ऊंटों पर रखवा कर मिस्कीनों और ह़ाजत मन्दों

www.dawateislami.net

में तक़्सीम फ़रमा दिया। कुछ दिन गुज़रने के बा'द ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "फुलां फुलां सामान ख़त्म हो गया है आप उस ताजिर के पास जाएं और ह़ासिल होने वाले नफ़्अ़ से सामान ख़रीद लाएं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे कोई जवाब न दिया। ज़ौजा ने फिर कहा लेकिन अब की बार भी कोई जवाब न पा कर उस ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सताना शुरूअ़ कर दिया जिस की वज्ह से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सिर्फ़ रात को घर में तशरीफ़ लाते और सारा दिन घर से बाहर गुज़ार देते। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर वालों में से एक आदमी था जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ आप के घर आया जाया करता था एक दिन उस ने उन की ज़ौजा से कहा कि "आप क्यूं उन्हें तक्लीफ़ देती हैं वोह तो सारा माल सदक़ा कर चुके हैं ?" येह सुन कर वोह, माल के ख़त्म होने पर अफ़्सोस करने और रोने लगीं। एक दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ घर तशरीफ़ लाए और ज़ौजा से फ़रमाया : "आराम से बैठी रहो ! मेरे चन्द दोस्त कुछ अ़र्से पहले मुझ से जुदा हो गए हैं अगर मुझे दुन्या और जो कुछ इस में है सब मिल जाए तब भी मैं उन के त़रीक़े से दूर नहीं हटूंगा। अगर कोई जन्नती हूर आस्माने दुन्या से झांक ले तो तमाम अहले ज़मीन को रौशन कर दे और उस के चेहरे का नूर चांद सूरज की रौशनी पर ग़ालिब आ जाए और जो दूपट्टा वोह ओढ़ती है वोह दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर है। लिहाज़ा उन हूरों की ख़ात़िर तुझे छोड़ना तो मेरे लिये आसान है लेकिन तेरी ख़ात़िर मैं उन्हें नहीं छोड़ सकता। येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा नर्म दिल और राज़ी हो गईं।"(1)

अहले ह़िम्स की चार शिकायात :

﴾824﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़िम्स का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया। जब अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िम्स तशरीफ़ लाए तो अहले ह़िम्स से फ़रमाया : "तुम ने अपने गवर्नर को कैसा पाया ?" उन्हों ने अपने गवर्नर की शिकायतें कीं जिस की वज्ह से ह़िम्स वालों को छोटे कूफ़ी कहा जाने लगा। उन्हों ने कहा : "हमें इन से 4 शिकायात हैं। एक येह कि येह दिन चढ़े हमारे पास आते हैं।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह तो बहुत बड़ी शिकायत है। इस के इ़लावा क्या शिकायत है ?" बोले : "येह

---

1 ......صفۃ الصفوۃ،الرقم٨٣سعیدبن عامربن حِذْیَم،ج١،ص٣٣٦۔
الجھاد لابن المبارک ،الحدیث:٢٤،ص٤٠ .

www.dawateislami.net

रात को किसी की बात नहीं सुनते।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह भी बड़ी शिकायत है और क्या है ?" बोले : "येह महीने में एक दिन घर में ही रहते हैं, हमारे पास नहीं आते।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह भी बड़ी शिकायत है और क्या शिकायत है ?" उन्हों ने कहा : "कभी कभी इन्हें बेहोशी का ऐसा दौरा पड़ता है जिस की वज्ह से येह मरने के क़रीब हो जाते हैं।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले ह़िम्स और उन के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक जगह जम्अ़ फ़रमाया फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आज इस मुआ़मले में मेरा फ़ैसला ग़लत़ न हो।" दुआ़ के बा'द अहले ह़िम्स से फ़रमाया : "तुम्हें इन से क्या शिकायत है ?" उन्हों ने कहा : "येह दिन चढ़े हमारे पास आते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस बात का इज़्हार मुझे पसन्द नहीं लेकिन मजबूरन बताए देता हूं कि मेरे घर में कोई ख़ादिम नहीं है इस लिये मैं ख़ुद ही आटा गूंधता हूं फिर इस के ख़मीरा होने का इन्तिज़ार करता हूं फिर रोटी पका कर खाना खाता और वुज़ू कर के इन के पास आ जाता हूं।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से पूछा : "और क्या शिकायत है ?" बोले : "येह रात को किसी की बात नहीं सुनते।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पूछने पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अगर्चे येह बताना मुझे पसन्द नहीं लेकिन मजबूरन बताए देता हूं कि मैं ने दिन लोगों (के मुआ़मलात) के लिये और रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये ख़ास कर रखी है।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़ीद शिकायत के बारे में पूछा : तो लोगों ने कहा : "येह महीने में एक दिन हमारे पास नहीं आते।" इस की वज्ह दरयाफ़्त करने पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "कपड़े धोने के लिये मेरे पास कोई ख़ादिम नहीं है और मेरे पास पहनने के लिये सिर्फ़ एक ही जोड़ा है जब वोह मैला हो जाता है तो उसे ख़ुद ही धोता हूं फिर उस के सूखने का इन्तिज़ार करता हूं जब सूख जाता है तो उसे रगड़ कर नर्म करता हूं फिर पहन कर शाम को इन के पास आता हूं।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "और क्या शिकायत है ?" अहले ह़िम्स ने कहा : "कभी कभी इन पर रंजो ग़म की ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी होती है कि येह बेहोश हो जाते हैं।" इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ह़ज़रते ख़ुबैब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के वक़्त मैं भी मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में मौजूद था क़ुरैश ने पहले तो उन के जिस्म का गोश्त जगह जगह से काटा फिर उन्हें सूली पर लटका दिया और पूछा : "क्या तुम येह पसन्द करते हो कि

www.dawateislami.net

तुम्हारी जगह मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हों ?" तो उन्हों ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तो येह भी पसन्द नहीं कि मैं अपने अहलो इयाल में होऊं और मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कांटा भी चुभे" (फिर फ़र्ते मह़ब्बत से) बा आवाज़े बुलन्द पुकारा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! "पस जब भी मुझे वोह दिन याद आता और येह ख़याल आता है कि मैं ने इस ह़ालत में उन की मदद नहीं की क्यूंकि मैं उस वक़्त मुशरिक था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान नहीं लाया था तो मैं येह गुमान करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे इस गुनाह को कभी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाएगा। बस येह सोचते ही मुझ पर बेहोशी त़ारी हो जाती है।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सब सुना तो फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरी फ़िरासत को ग़लत़ नहीं होने दिया।" फिर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के पास एक हज़ार दीनार भेजे और फ़रमाया : "इन से अपनी ह़ाजात को पूरा कर लो।" उन की ज़ौजा ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें आप के काम काज करने से बे नियाज़ कर दिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ौजा से फ़रमाया : "क्या तुम येह पसन्द नहीं करती कि हम येह दीनार उसे दे दें जो हमें सख़्त ज़रूरत के वक़्त लौटा दे ?" ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "ठीक है।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर वालों में से एक क़ाबिले ए'तिमाद शख़्स को बुलाया और दीनारों को बहुत सी थैलियों में डाल कर फ़रमाया : "येह दीनार फ़ुलां ख़ानदान की बेवाओं, फ़ुलां ख़ानदान के यतीमों, फ़ुलां ख़ानदान के मिस्कीनों और फ़ुलां ख़ानदान के मुसीबत ज़दों को दे आओ।" थोड़े से दीनार बच गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़ौजा से फ़रमाया : "येह अपनी ज़रूरिय्यात में ख़र्च कर लो।" फिर अपने कामों में मश्ग़ूल हो गए। कुछ दिनों बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "आप हमारे लिये कोई ख़ादिम क्यूं नहीं ख़रीद लाते ?" और माल के बारे में भी पूछा। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह माल तुम्हें (आख़िरत में) सख़्त ज़रूरत के वक़्त मिल जाएगा।"(1)

बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला :

﴾825﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन साबित़ जुम्ही عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बीलए बनू जुम्ह़ के एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर बिन ह़िज़्यम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर फ़रमाया : "मैं आप को

(1) ......صفة الصفوة، الرقم ٨٣ سعيد بن عامر بن حِذْيَم، ج ١، ص ٣٣٧.

www.dawateislami.net

फ़ुलां फ़ुलां अ़लाक़े का गवर्नर बनाना चाहता हूं ।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मुझे इस आज़्माइश में न डालिये ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा तुम ने इमारत का वज़्न मेरे सर डाल दिया और मुझे तन्हा छोड़ दिया ।" फिर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या मैं आप के लिये कोई वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दूं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इतना अ़त़ा फ़रमाया है कि इस से कम मुझे किफ़ायत करता है मैं इस से ज़ियादा नहीं चाहता ।" रावी बयान करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो वज़ीफ़ा मिलता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर का राशन ख़रीदने के बा'द बक़िय्या सदक़ा कर देते तो ज़ौजा पूछती : "बक़िय्या रक़म कहां है ?" फ़रमाते : "मैं ने क़र्ज़ दे दिया है ।" कुछ लोगों ने उन के पास आ कर कहा : "आप के घर वालों और सुसराल वालों का भी आप पर ह़क़ है ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं इन के हुक़ूक़ अदा करने पर किसी को तरजीह़ नहीं देता और न ह़ूरे ऐ़न की त़लब में किसी इन्सान की रिज़ा का मुतलाशी हूं। अगर जन्नत की एक ह़ूर दुन्या की त़रफ़ झांक ले तो सारी ज़मीन आफ़्ताब की त़रह़ चमकने लगे और मैं जन्नत में सब से पहले दाख़िल होने वाले गुरौह से पीछे नहीं रहना चाहता । मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम लोगों को ह़िसाब के लिये जम्अ़ फ़रमाएगा तो ग़रीब मुसलमान जन्नत की त़रफ़ ऐसे तेज़ी से जाएंगे जैसे कबूतर पर फैला कर अपने घोंसले की त़रफ़ उतरता है। उन से कहा जाएगा : "ठहरो ! पहले ह़िसाब दो ।" तो वोह कहेंगे : "हमारे पास तो कुछ भी नहीं जिस का ह़िसाब हो ।" उन का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मेरे बन्दे सच कहते हैं ।" फिर उन के लिये जन्नत का दरवाज़ा खुल जाएगा और वोह दूसरे लोगों से 70 साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।"

येह अल्फ़ाज़ ह़ज़रते जरीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत के हैं जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा सग़ीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَبِیْر की रिवायत में इस त़रह़ है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़बर मिली कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुश्किलात का सामना है यहां तक कि उन के घर में आग भी नहीं जलती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़ कुछ माल भेजा उन्हों ने वोह सारा माल मुख़्तलिफ़ थैलियों में डाला और आस पास के

www.dawateislami.net

पड़ोसियों में सदक़ा कर दिया और फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना है कि "अगर कोई हूर अपनी एक उंगली ज़ाहिर कर दे तो हर जानदार उस की ख़ुश्बू पाए।" तो क्या मैं तुम्हारी ख़ातिर उन को छोड़ दूं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ दुन्या की औरतो ! तुम इस बात के ज़ियादा लाइक़ हो कि मैं तुम्हें उन हूरों की ख़ातिर छोड़ दूं न कि उन्हें तुम्हारी ख़ातिर।"(1)

हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

हिजरत में सब्क़त ले जाने वालों में हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अह्द की हिफ़ाज़त करते, वा'दा पूरा करते थे। बहुत ज़हीन थे और मिज़ाज में क़दरे सख़्ती थी। बेहतरीन गवर्नर और रिआया पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को "نَسِيْجٌ وَّحْدَهٗ" या'नी सिफ़ाते महमूदा में लासानी व बे नज़ीर कहा जाता है।

हिम्स के गवर्नर का तक़र्रुर :

﴾826﴿.....हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे हिम्स का गवर्नर बना कर भेजा, एक साल गुज़र गया लेकिन मेरी कोई ख़बर न आई तो अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कातिब से फ़रमाया : "उमैर की तरफ़ ख़त लिखो कि जैसे ही येह ख़त तुम्हें मिले फ़ौरन मेरे पास चले आओ और वोह सारा माल भी ले आओ जो तुम ने मुसलमानों के माले ग़नीमत से जम्अ़ कर रखा है।" ख़त पढ़ते ही मैं ने थैले में अपना ज़ादे राह, प्याला और चमड़े का एक बरतन रखा, लाठी ली और हिम्स से पैदल सफ़र तै कर के मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا आ पहुंचा।

रावी बयान करते हैं कि जब आप तशरीफ़ लाए तो आप का रंग बदला हुवा, चेहरा गुबार आलूद और बाल लम्बे हो चुके थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "आप मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं कि मैं सिह्हत मन्द

---

(1) ......صفة الصفوة،الرقم٨٣سعيدبن عامربن حِذْيَم،ج١،ص٣٣٥۔
المعجم الكبير،الحديث:٥٥٠٨/٥٥١٠/٥٥١١،ج٦،ص٥٨

www.dawateislami.net

और पाक खून वाला हूं मेरे साथ मेरी येह दुन्या है जिसे यहां तक खींच लाया हूं।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "आप के साथ क्या है ?" और येह गुमान किया कि येह अपने साथ माल लाए होंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास मेरा एक थैला है इस में मेरा ज़ादे राह एक प्याला है जिस में, मैं खाता हूं और इसी के ज़रीए़ अपना सर और कपड़े धोता हूं और एक चमड़े का बरतन है जिस में वुज़ू करने और पीने का पानी रखता हूं इस के इलावा एक लाठी है जिस पर सहारा लेता हूं और अगर कोई दुश्मन सामने आ जाए तो इसी से मुक़ाबला करता हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी येह मताअ़ ही मेरी दुन्या है।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "आप वहां से पैदल सफ़र कर के आए हैं ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "क्या वहां ऐसा कोई नहीं था जो आप को सुवारी के लिये जानवर देता ?" अ़र्ज़ की : "न उन्हों ने ऐसा किया और न मैं ने उन से इस का मुत़ालबा किया।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह मुसलमान कितने बुरे हैं जिन के पास से तुम आए हो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरिये उस ने ग़ीबत करने से मन्अ़ फ़रमाया है और मैं ने वहां के मुसलमानों को सुब्ह़ की नमाज़ अदा करते देखा है।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें कहां भेजा था ? और तुम ने क्या किया है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "आप क्या पूछना चाहते हैं ?" फ़रमाया : "سُبْحٰنَ اللّٰہ ! (येह बत़ौरे तअ़ज्जुब के कहा जाता है)।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "अगर मुझे इस बात का डर न होता कि मेरे न बताने से आप को ग़म होगा तो मैं न बताता। आप ने जिस शहर में मुझे भेजा मैं ने वहां पहुंच कर वहां के नेक लोगों को इकठ्ठा किया और उन्हें मुसलमानों से माले ग़नीमत जम्अ़ करने की ज़िम्मेदारी सोंपी जब वोह माल जम्अ़ कर लिया गया तो मैं ने सारे का सारा सह़ीह़ मसरफ़ पर ख़र्च कर दिया अगर इस में अमीरुल मोमिनीन का कोई ह़िस्सा बनता तो मैं ज़रूर आप के पास लाता।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम हमारे पास कुछ नहीं लाए ?" अ़र्ज़ की : "हां ! मैं कुछ नहीं लाया।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उ़मैर बिन सा'द के लिये गवर्नरी का नया अ़ह्द नामा लिख दो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मुझे येह ओ़ह्दा न तो आप की त़रफ़ से क़बूल है और न आप के बा'द किसी और से क़बूल करूंगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस के फ़ित्ने से नहीं बच सकता बल्कि बच नहीं

www.dawateislami.net

सका क्यूंकि एक दिन मैं ने (इस ओ़ह्दे के सबब) एक नसरानी से कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे रुस्वा करे।" ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! मैं इस मुआ़मले में आप की वज्ह से मुब्तला हुवा और मेरा सब से बुरा दिन वोह था जिस दिन मैं गवर्नर बनाया गया था।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जाने की इजाज़त त़लब की और इजाज़त मिलने पर अपने घर तशरीफ़ ले गए जो मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से चन्द मील के फ़ासिले पर वाके़अ़ था। उन के चले जाने के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मुझे अन्देशा है कि उन्हों ने हमारे साथ ख़ियानत की है।"

चुनान्चे, इस ख़याल से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ारिस नामी एक शख़्स को 100 दीनार दे कर भेजा और फ़रमाया : "उ़मैर बिन सा'द के हां जा कर बत़ौरे मेहमान क़ियाम करो अगर उन के घर में मालो दौलत की फ़िरावानी देखो तो लौट आना और तंगी देखो तो येह दीनार दे आना।" जब ह़ारिस ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास पहुंचा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक दीवार से टेक लगाए अपनी क़मीस को जूओं से साफ़ कर रहे हैं। ह़ारिस ने सलाम अ़र्ज़ किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाब देने के बा'द फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! हमारे हां रुक जाओ।" ह़ारिस सुवारी से उतर कर उन के हां ठहर गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "कहां से आए हो ?" कहा : "मदीने से।" फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को किस ह़ाल में छोड़ा है ?" अ़र्ज़ की : "अच्छे ह़ाल में छोड़ा है।" पूछा : "मुसलमानों को किस ह़ाल में छोड़ा ?" अ़र्ज़ की : "वोह भी अच्छे ह़ाल में हैं।" फिर पूछा : "क्या अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शरई ह़ुदूद नाफ़िज़ करते हैं ?" अ़र्ज़ की : "हां ! यहां तक कि उन्हों ने अपने बेटे को किसी क़बीह़ फ़े'ल की वज्ह से कोड़े लगाए जिस की तक्लीफ़ की शिद्दत उन के बेटे से बरदाश्त न हो सकी और उन का इन्तिक़ाल हो गया।"(1) येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उ़मर की मदद फ़रमा ! मैं उन के बारे में जानता हूं कि वोह तुझ से बहुत मह़ब्बत करते हैं।"

1.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साहिबज़ादे की त़रफ़ कारे बद की निस्बत ग़लत़ है जैसा कि फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मजमउ़ल अन्हार के ह़वाले से फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साहिब ज़ादे जिन का नाम अ़ब्दुर्रह़मान औसत़ और कुन्यत अबू शह़मा है (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) उन की जानिब शराब पीने और ज़िना करने की निस्बत ग़लत़ है। सह़ीह़ येह है कि उन्हों ने नबीज़ पी थी जिस के सबब नशा हो गया था तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन पर ह़द क़ाइम फ़रमाई। फिर वोह बीमार हो कर इन्तिक़ाल फ़रमा गए। (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 2, स. 710)

www.dawateislami.net

रावी बयान करते हैं कि ह़ारिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के हां 3 दिन क़ियाम किया । उन के पास सिर्फ़ जव की एक रोटी होती जो वोह ह़ारिस को खिला देते और खुद भूके रहते । यहां तक कि जब फ़ाक़ा बहुत ज़ियादा हो गया तो उन्हों ने ह़ारिस से फ़रमाया : "हम पर फ़ाक़े आ गए हैं अगर मुनासिब समझो तो कहीं और चले जाओ ।" ह़ारिस ने वोह दीनार निकाल कर दिये और अ़र्ज़ की : "अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने येह आप के लिये भेजे हैं इन से अपनी ज़रूरिय्यात पूरी कर लें ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने बुलन्द आवाज़ से कहा : "मुझे इन की ह़ाजत नहीं ।" और वोह दीनार वापस लौटा दिये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजा ने वोह दीनार रख लेने का मश्वरा देते हुवे कहा कि "अगर ज़रूरत न पड़ी तो किसी मुनासिब जगह पर ख़र्च फ़रमा दीजियेगा ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इन्हें रखने के लिये भी मेरे पास कोई चीज़ नहीं है ।" ज़ौजा ने अपनी क़मीस का नीचे वाला ह़िस्सा फाड़ कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उस में दीनार रख लिये फिर घर से बाहर जा कर वोह सब के सब शुहदा और फ़ुक़रा की औलादों में बांट आए ।" जब वापस लौटे तो ह़ारिस ने ख़याल किया कि मुझे भी इन में से कुछ अ़त़ा करेंगे लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه तो बिल्कुल ख़ाली हाथ थे और ह़ारिस से फ़रमाया कि "अमीरुल मोमिनीन को मेरा सलाम अ़र्ज़ कीजियेगा ।" जब ह़ारिस अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में पहुंचा तो उन्हों ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने क्या देखा ?" अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه मैं ने उन्हें सख़्त मुश्किल ह़ालात में देखा है ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने दीनारों के बारे में दरयाफ़्त किया तो अ़र्ज़ की : "मुझे नहीं मा'लूम कि उन्हों ने उन का क्या किया ।" फिर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को ख़त़ लिखा कि "जैसे ही आप मेरा ख़त़ पढ़ें फ़ौरन मेरे पास चले आएं ।"

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो उन्हों ने दीनारों के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "मेरे दिल ने जो चाहा मैं ने वोही किया आप इन के मुतअ़ल्लिक़ क्यूं पूछ रहे हैं ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें क़सम देता हूं मुझे ज़रूर बताओ कि तुम ने वोह कहां सर्फ़ किये हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه

www.dawateislami.net

ने अ़र्ज़ की : "मैं उन्हें अपने लिये आगे भेज चुका हूं।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए !" फिर उन्हें एक वस्क़ ग़ल्ला और दो कपड़े देने का हुक्म दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह कहते हुवे ग़ल्ला लेने से इन्कार कर दिया कि "मुझे इस की ज़रूरत नहीं क्यूंकि मेरे घर में दो साअ़ ग़ल्ला मौजूद है जब वोह ख़त्म होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़ीद रिज़्क़ अ़ता फ़रमा देगा और कपड़े इस निय्यत से ले लिये कि उम्मे फ़ुलां के पास कपड़े नहीं हैं उसे दे दूंगा।" फिर वोह कपड़े ले कर अपने घर लौट आए और कुछ ही अ़र्से बा'द उन का इन्तिक़ाल हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो।

जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के इन्तिक़ाल की ख़बर मिली तो उन्हें बहुत सदमा हुवा और बहुत से लोगों के हमराह जन्नतुल बक़ीअ़ तशरीफ़ ले गए और अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : "तुम में से हर शख़्स अपनी ख़्वाहिश व तमन्ना का इज़्हार करे।" एक ने कहा : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं चाहता हूं कि मेरे पास बहुत सा माल हो और मैं उस के ज़रीए़ बहुत से ग़ुलाम ख़रीद कर रिज़ाए इलाही के लिये आज़ाद कर दूं।" दूसरे ने कहा : "काश ! मुझे इतनी जिस्मानी त़ाक़त मिल जाए कि मैं आबे ज़मज़म के डोल निकाल निकाल कर ह़ाजियों को पिलाता रहूं।" फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरी तमन्ना तो येह है कि मेरे पास उ़मैर बिन सा'द जैसा शख़्स होता जिस से मैं मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ कामों पर मदद लेता।"(1)

एक ग़लत़ अ़क़ीदे की तरदीद :

﴾827﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हमारा फ़िलिस्त़ीन में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर जाना हुवा। उन्हें "نَسِیْجٌ وَّحْدَہٗ" या'नी सिफ़ाते मह़मूदा में लासानी व बे नज़ीर के नाम से पुकारा जाता था येह उस वक़्त की बात है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर में वाक़ेअ़ एक बड़ी दुकान पर थे और घर में पानी का एक हौज़ भी था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ुलाम से फ़रमाया : "घोड़ों को हौज़ पर लाओ।" ग़ुलाम घोड़े ले कर आया तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "फ़ुलां घोड़ी कहां है ?" ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "उसे ख़ारिश है जिस की वज्ह से उस के बदन से ख़ून बह रहा है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

1 ......المعجم الكبير،الحديث:١٠٩،ج١٥-١٧،ص٥١تا٥٣.

www.dawateislami.net

"उसे भी पानी पिलाने के लिये हौज़ पर लाओ।" गुलाम ने अ़र्ज़ की : "उस की वज्ह से दूसरे घोड़ों को भी ख़ारिश लग जाएगी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उसे ले आओ क्यूंकि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना है कि "न बीमारी का उड़ कर लगना है न परन्दा न उल्लू[1]। तुम्हारा क्या खयाल है कि एक ऊंट सह़रा में होता है उस के सीने के उभार या पेट के नर्म हिस्से पर ख़ारिश का नुक्ता ज़ाहिर होता है जो पहले नहीं था तो उस को पहले किस ने बीमारी लगाई ?[2]

मुसन्निफ़े किताब का तबसेरा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस के इलावा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कोई ह़दीस हमारे इ़ल्म में नहीं है।"

1.....ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस के तह़त फ़रमाते हैं : "अहले अ़रब का अ़क़ीदा था कि बीमारियों में अ़क्ल व होश है जो बीमार के पास बैठे उसे भी उस मरीज़ की बीमारी लग जाती है वोह पास बैठने वाले को जानती पहचानती है यहां इसी अ़क़ीदे की तरदीद है मौजूदा ह़कीम डॉक्टर सात बीमारियों को मुतअ़द्दी मानते हैं। जुज़ाम, ख़ारिश, चैचक, मोती जहरा, मुंह की या बग़ल की बू, आशोबे चश्म, वबाई बीमारियां इस ह़दीस में इन सब वहमों को दफ़्अ़ फ़रमाया गया है। (مرقات و اشعه) इस मा'ना से मरज़ का उड़ कर लगना बाति़ल है मगर येह हो सकता है कि किसी बीमार के पास की हवा मुतअ़फ़्फ़िन हो और जिस के जिस्म में इस बीमारी का माद्दा हो वोह इस तअ़फ़्फ़ुन से असर ले कर बीमार हो जावे इस मा'ना से तअ़द्दी हो सकती है इस बिना पर फ़रमाया गया कि जुज़ामी से भागो लिहाज़ा येह ह़दीस उन, अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं ग़रज़ येह कि उ़दवा या तअ़द्दी और चीज़ है किसी बीमार के पास बैठने से बीमार हो जाना कुछ और चीज़ है। अहले अ़रब का ख़याल था कि मय्यित की गली हड्डियां उल्लू बन कर आ जाती हैं और उल्लू जहां बोल जावे वहां वीराना हो जाता है। येह अ़क़ीदा ग़लत़ है बा'ज़ लोग कहते हैं कि जिस मक़्तूल का बदला न लिया जावे उस की रूह़ उल्लू की शक्ल में आ कर लोगों से कहती है اُسْقُوْ،اُسْقُوْ मुझे पानी पिलाओ। येह सब बाति़ल ख़यालात हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 256)

2.....المسندلابی یعلی الموصلی،مسندعمیربن سعد،الحدیث:۱۵۷۷،ج۲،ص۱۰۰.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हिजरत में सब्क़त ले जाने वाले सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पेचीदा व मुश्किल मसाइल का जवाब भी इन्तिहाई आसान अन्दाज़ में इरशाद फ़रमा देते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत से सरशार और सय्यिदुल मुर्सलीन (या'नी मुसलमानों के सरदार) के लक़ब से मश्हूर थे।

सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ामो मर्तबा

सब से ज़ियादा अ़ज़मत वाली आयत :

﴾828﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रबाह़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया : "ऐ अबू मुन्ज़िर ! (येह हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) तुम्हारे नज़्दीक कुरआने पाक की सब से ज़ियादा अ़ज़मत वाली आयत कौन सी है ?" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं।" फिर फ़रमाया : "ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हारे नज़्दीक कुरआने पाक की सब से ज़ियादा अ़ज़मत वाली आयत कौन सी है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "सब से ज़ियादा अ़ज़मत वाली आयत : اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ (या'नी आयतुल कुरसी) है।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सीने पर हाथ मार कर फ़रमाया : "ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो।"(1)

महब्बते इलाही :

﴾829﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें कुरआन सुनाऊं।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा नाम ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तिलावत करने का हुक्म दिया है ?" इरशाद फ़रमाया : "हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारा नाम ले कर हुक्म फ़रमाया है।" रावी कहते हैं : "येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रोना शुरूअ़ कर दिया।"(2)

---

1 ......صحیح مسلم،کتاب فضائل القرآن،باب فضل سورۃ الکھف وآیۃ الکرسی،الحدیث:۱۸۸۵،ص۸۰۵.

2 ......صحیح مسلم،باب اِستِحباب قراءۃ القرآن......الخ،الحدیث:۱۸۶۴/۱۸۶۵،ص۸۰۳.

www.dawateislami.net

《830》.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "मुझे हुक्म हुवा है कि मैं तुम्हें कुरआन सिखाऊं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने मेरा नाम याद फ़रमाया है ?" इरशाद फ़रमाया : "हां।" फिर येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾

(پ۱۱،یونس:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।[1]

《831》.....अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : "मुझे हुक्मे इलाही हुवा है कि मैं तुम्हें कुरआने ह़कीम की कोई सूरत सुनाऊं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने मेरा नाम लिया गया है ?" इरशाद फ़रमाया : "हां।" रावी कहते हैं : "मैं ने उन से कहा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस से बहुत ख़ुशी हुई होगी !" तो उन्हों ने फ़रमाया : क्यूं नहीं। जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾

(پ۱۱،یونس:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।[2]

《832》.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "मुझे तुम को कुरआन सुनाने का हुक्म दिया गया है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया हूं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर इस्लाम क़बूल किया है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ही इल्म ह़ासिल किया है।" हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ۲۱۱۹۴، ج۸، ص۲۳.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ۲۱۱۹۵ـ المستدرك، الحديث: ۵۳۷۶، ج۴، ص۳۵۸.

www.dawateislami.net

येही इरशाद फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां मेरा ज़िक्र किया गया है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''हां ! तेरा नामो नसब आ़लमे बाला में ज़िक्र किया गया है।'' येह सुन कर मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर तिलावत फ़रमाएं।''(1)

﴾833﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन आ़मिर मर्वज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से और उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से कुरआने पाक पढ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : ''हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''मुझे कहा गया है कि मैं तुम्हारे सामने कुरआने पाक की तिलावत करूं।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वहां मेरा ज़िक्र किया गया है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''हां।'' येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रो पड़े। रावी कहते हैं : ''मैं नहीं जानता कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़ुशी के मारे रोए या हैबत व जलाल की वज्ह से।''(2)

﴾834﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस मेरे सीने पर मार कर फ़रमाया : ''मैं तुम्हें शक और तक्ज़ीब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह में देता हूं।'' फ़रमाते हैं : ''येह सुन कर मैं पसीने से शराबोर हो गया और मैं ने मह़सूस किया गोया कि मैं ख़ौफ़ व घबराहट की ह़ालत में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ देख रहा हूं।''(3)

﴾835﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन उ़बाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की ज़ियारत की ग़रज़ से मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हुवा। मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मिलने का शौक़ बहुत ज़ियादा था। चुनान्चे, मैं मस्जिद की पहली सफ़ में जा खड़ा हुवा। ह़ज़रते

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٥٣٩،ج١،ص٢٠٠.

2 ......السنن الكبرىٰ للنسائى،كتاب فضائل القرآن،باب ذكر قراء القرآن،الحديث:٧٩٩٨،ج٥،ص٨.

3 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حديث سُلَيمان بن صُرَد،الحديث:٢١٢١٠،ج٨،ص٢٦۔

صحيح مسلم،كتاب فضائل القرآن،الحديث:١٩٠٤،ص٨٠٦،مفهومًا.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए, नमाज़ पढ़ाई और फिर ह़दीस बयान फ़रमाने लगे। मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात पर तवज्जोह देते लोगों की गर्दनें आप की त़रफ़ इतनी दराज़ होती देखीं कि किसी चीज़ की त़रफ़ इतनी दराज़ होती नहीं देखीं। मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते सुना कि "रब्बे का'बा की क़सम ! हुकमा व उमरा हलाक हो गए।" येह बात तीन बार कही फिर फ़रमाया : "वोह खुद भी हलाक हुवे और दूसरों को भी हलाक किया बहर ह़ाल मुझे इन पर नहीं बल्कि उन पर अफ़्सोस है जिन्हों ने मुसलमानों को हलाक किया।"(1)

﴾836﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन उ़बाद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में मस्जिद की पहली सफ़ में था कि एक शख़्स ने मुझे पीछे से पकड़ कर खींचा और खुद मेरी जगह खड़ा हो गया। सलाम फेर कर जब वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे रन्ज न दे ! हमें मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार से येह ताकीद है।" फिर क़िब्ला रू हो कर फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! उमरा व सलात़ीन हलाक हो गए।" येह बात तीन बार कही फिर फ़रमाया : "मुझे इन पर नहीं बल्कि उन लोगों पर अफ़्सोस है जिन्हों ने लोगों को गुमराह किया।"(2)

ख़शिय्यते इलाही से रोने की फ़ज़ीलत :

﴾837﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया रफ़ीअ़ बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सिरात़े मुस्तक़ीम और सुन्नते मुस्त़फ़ा पर क़ाइम रहने को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि जो भी बन्दा सिरात़े मुस्तक़ीम और सुन्नते रसूल पर गामज़न रहता है और ज़िक्रुल्लाह करते वक़्त उस की आंखें ख़ौफ़े खुदा से आंसू बहाती हैं उसे आग नहीं छू सकती और जो बन्दा सिरात़े मुस्तक़ीम और सुन्नते मुस्त़फ़ा पर क़ाइम रहते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है और ख़ौफ़ से उस का बदन कांपने लगता है तो ऐसे शख़्स की मिसाल उस दरख़्त जैसी है जिस के पत्ते खुश्क हो चुके हों और तेज़ हवा के झोंकों से झड़ जाते हों तो जिस त़रह़ उस दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं इसी त़रह़ उस शख़्स के गुनाह झड़ जाते हैं। राहे खुदा और सुन्नते मुस्त़फ़ा में मियाना रवी इख़्तियार करना उन के ख़िलाफ़ मेह़नत व कोशिश

1 ......مسندابی داؤدالطیالسی،احادیث اُبَی بن کَعب،الحدیث:۵۵۵،ص ۷۵.

2 ......سنن النسائی،کتاب الامامۃ،باب من یلی الامام ثم الذی یلیه،الحدیث:۸۰۹،ص ۲۱۳۹.

www.dawateislami.net

करने से बेहतर है। लिहाज़ा तुम अपने आ'माल का जाइज़ा लो ख़्वाह वोह मियाना रवी से हों या मेह़नत व कोशिश से, बहर ह़ाल वोह अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के त़रीक़े और उन की सुन्नत के मुत़ाबिक़ होने चाहियें।"(1)

﴾838﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه से मरवी है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه से नसीह़त की दरख़्वास्त की तो उन्हों ने फ़रमाया : "कुरआने करीम को अपना इमाम व पेश्वा बना लो और इस के क़ाज़ी व ह़ाकिम होने (या'नी इस के फ़ैसलों और अह़काम) पर राज़ी रहो क्यूंकि येही वोह चीज़ है जिसे तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम में अपना जा नशीन मुक़र्रर फ़रमाया है। येह ऐसा शफ़ीअ़ है जिस की शफ़ाअ़त मक़्बूल है और ऐसा शाहिद है जिस पर कोई इल्ज़ाम नहीं। इस में तुम्हारा और तुम से पहले की उम्मतों का बयान है। येह किताब तुम्हारे दरमियान ह़ाकिम है। इस में तुम्हारे और तुम से बा'द वालों के अह़वाल भी बयान किये गए हैं।"(2)

﴾839﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه ने इस आयत के बारे में : قُلۡ هُوَ الۡقَادِرُ عَلٰۤی اَنۡ یَّبۡعَثَ عَلَیۡکُمۡ عَذَابًا مِّنۡ فَوۡقِکُمۡ (پ۷، الانعام: ٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से। फ़रमाया : "इस में अ़ज़ाब से 4 चीज़ें मुराद हैं जो सब की सब अ़ज़ाबे इलाही हैं और इन सब का वाक़ेअ़ होना यक़ीनी त़ौर पर साबित है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के 25 साल बा'द 2 चीज़ें तो वाक़ेअ़ हो चुकी हैं इन में एक येह कि लोग मुख़्तलिफ़ गुरौहों में बट गए जब कि दूसरी चीज़ लोगों के दरमियान झगड़ों का आ़म होना है और 2 चीज़ों का वुक़ूअ़ अभी बाक़ी है और यक़ीनन वोह ज़रूर वाक़ेअ़ होंगी ज़मीन में धंसना और आस्मान से पथ्थर बरसना।"(3)

﴾840﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़रमाया : "जो बन्दा रिज़ाए इलाही के लिये किसी चीज़ को तर्क कर देता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बदले उस से बेहतर चीज़ उसे अ़त़ा फ़रमाता है जिस का उसे

(1)......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب ما قالوا فی البکاء من خشیة اللّٰہ، الحدیث:٥، ج٨، ص٢٩٧۔
الزھد لابن المبارک، ماروا ہ نعیم بن حماد فی نسختہ زائدا، باب فی لزوم السنة، الحدیث:٨٧، ص٢١.

(2)......سیر اعلام النبلاء، الرقم٨٧ اُبَیُّ بن کَعب بن قَیس، ج٣، ص٢٤٥.

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی العالیة الریاحی، الحدیث:٢١٢٨٥، ج٨، ص٤٦.

www.dawateislami.net

गुमान तक नहीं होता और जो किसी को ह़क़ीर और मा'मूली जान कर बे एह़तियात़ी से उस में हाथ डालता है और ग़लत़ त़रीक़े से उसे ह़ासिल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी सख़्ती व तंगी में मुब्तला फ़रमाता है जिस का उसे ख़याल तक नहीं होता।"(1)

﴾841﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में हम मुत्तह़िद थे लेकिन बा'द में हमारे दरमियान इत्तिह़ाद न रहा।"(2)

﴾842﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तय बिन ज़मरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में हम मुत्तह़िद थे लेकिन अब इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ नहीं रहा।"

दुन्या की मिसाल :

﴾843﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "सुनो ! दुन्या की मिसाल इब्ने आदम के खाने की त़रह़ है जिस का ज़ाइक़ा नमक और मसाले से बनता है।"(3)

﴾844﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक दुन्या की मिसाल इब्ने आदम के खाने से बयान की गई है तो तुम देखो कि वोह नमक मसालह़े वाला खाना आदमी के पेट से क्या बन के निकलता है और येह मा'लूम है कि खाना क्या बन जाता है।"(4)

---

1 ......الزھدلھنادبن السری،باب الورع،الحدیث:۹۳۷،ج۲،ص۴۶۶.

2 ......سنن ابن ماجه،ابواب الجنائز،باب ذکر وفاته ودفنه صلی اللّٰه علیه وسلم،الحدیث:۱۶۳۳،ص۲۵۷۴.

3 ......مسندابی داودالطیالسی،احادیث اُبَیِّ بن کَعْب،الحدیث:۵۴۸،ص۷۴.

4 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۵۳۱،ج۱،ص۱۹۸.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इरशादात

मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत :

﴾845﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मुर्रह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुन्ज़िर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! कुरआने करीम की एक आयत ने मुझे बहुत ग़मज़दा कर दिया है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "वोह कौन सी आयत है जिस ने तुम्हें ग़मगीन कर दिया है ?" उस ने कहा : वोह येह आयते मुबारका है :

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ (پ٥،النساء:١٢٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बन्दए मोमिन को जब कोई मुसीबत पहुंचती है और वोह इस पर सब्र करता है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि उस पर कोई गुनाह न होगा।"(1)

﴾846﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़तय رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दराज़ क़द थे और उन के सीने पर खजूर के पुराने दरख़्त की त़रह़ बहुत ज़ियादा बाल थे। (जिन से उन का सित्र छुपा हुवा था) जब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से लग़ज़िश सरज़द हुई तो वोह सब बाल झड़ गए जिस की वज्ह से आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जन्नत में भागने लगे कि अचानक एक दरख़्त में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सर उलझ गया, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से फ़रमाया : "मुझे छोड़ दे।" दरख़्त ने अ़र्ज़ की : "आप को छोड़ने का मुझे हुक्म नहीं है।" इतने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ आदम ! क्या तू मुझ से भाग रहा है ?" अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तुझ से ह़या आ रही है।"(2)

मोमिन के ख़साइल व फ़ज़ाइल :

﴾847﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मोमिन में येह 4 ख़स्लतें होती हैं : (1) मुसीबत में मुब्तला

---

1 ......الزهدلهنادبن السری،باب الصبرعلی البلاء،الحدیث:٣٩٧،ج١،ص٢٣٥.

2 ......المستدرك،کتاب التفسیر،البقرة،باب خلق الله آدمعَلَیْہِ السَّلَام......الخ،الحدیث:٣٠٩٢،ج٢،ص٦٥٠،بتغیر.

www.dawateislami.net

होता है तो सब्र करता है। (2) ने'मत पाता है तो शुक्र अदा करता है। (3) बात करता है तो सच बोलता है। (4) फ़ैसला करता है तो इन्साफ़ करता है। चुनान्चे, वोह नूर की 5 चीज़ों में उलट पुलट होता रहता है जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ (پ۱۸،النور:۳۵) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** नूर पर नूर है।

लिहाज़ा मोमिन का कलाम नूर, इल्म नूर, उस के निकलने और दाख़िल होने का मक़ाम नूर और क़ियामत के दिन उसे नूर ही की त़रफ़ फिरना है। जब कि काफ़िर इन 5 ज़ुल्मतों में भटकता है। चुनान्चे, उस का कलाम ज़ुल्मत, अ़मल ज़ुल्मत, उस के दाख़िल होने और निकलने की जगह ज़ुल्मत और उसे क़ियामत के दिन तारीकियों की त़रफ़ ही पलटना है।''(1)

सोने का पहाड़ :

﴾848﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह क़ल्अ़ए ह़स्सान के साए में खड़ा था, उस वक़्त लोग फ़्रूटमन्डी में ख़रीदो फ़रोख़्त में मश्ग़ूल थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''देख रहे हो लोग दुन्या की त़लब में किस त़रह़ मसरूफ़ हैं ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' फिर फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना कि ''अ़न क़रीब दरयाए फ़ुरात सोने का एक पहाड़ ज़ाहिर करेगा लोग जूंही उस के बारे में सुनेंगे फ़ौरन उस की त़रफ़ दौड़ेंगे वहां के लोग कहेंगे कि अगर हम इन का रास्ता खुला छोड़ दें तो येह सोने का सारा पहाड़ ले जाएंगे और इस में से कुछ भी न छोड़ेंगे। बस फिर इस पर लोगों में क़त्ले आ़म शुरूअ़ हो जाएगा और हर 100 में से 99 आदमी मारे जाएंगे।''(2)

---

1 ......تفسیرالطبری،سورۃ النور،تحت الآیۃ۳۵،الحدیث:۲۶۱۰۳،ج۹،ص۳۲۳۔
المستدرک،کتاب التفسیر،سورۃ النور،باب أحوال أنوارالمؤمنین و......الخ،الحدیث:۳۵۶۲،ج۳،ص۱۶۴۔

2 ......صحیح مسلم کتاب الفتن،باب لا تقوم الساعۃ......الخ،الحدیث:۷۲۷۶،ص۱۱۷۹۔
المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث عبداللّٰہ بن الحارث،الحدیث:۲۱۳۱۹،ج۸،ص۵۶۔
سیراعلام النبلاء،الرقم۸۷ أُبَیّ بن کَعب،ج۳،ص۲۴۵۔

www.dawateislami.net

बुख़ार की फ़ज़ीलत :

﴾849﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की, कि "बुख़ार का अज्रो सवाब क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "जब तक बुख़ार में मुब्तला शख़्स के पाउं लड़खड़ाते रहते हैं और वोह पसीने में शराबोर रहता है उसे नेकियां मिलती रहती हैं।" येह सुन कर मैं ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से ऐसे बुख़ार का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी राह में जिहाद करने, तेरे घर का ह़ज करने और नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिदे नबवी में जाने से रुकावट न बने।" रावी कहते हैं : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ़ ऐसी मक़्बूल हुई कि इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हर वक़्त बुख़ार ही रहता था।"(1)

रियाकारी की तबाहकारी :

﴾850﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस उम्मत को बुलन्दिये रुत्बा, नुसरत व मदद और ग़लबा व कुदरत की खुश ख़बरी दो और जो शख़्स कोई दीनी काम दुन्या के हुसूल के लिये करेगा उसे आख़िरत में इस का कोई अज्र नहीं दिया जाएगा।"(2)

﴾851﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब एक चौथाई रात गुज़र जाती तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करो, थर थराने वाली, उस के पीछे आने वाली आ रही है और मौत अपनी तमाम तर तकालीफ़ को साथ लिये आ रही है।" येह बात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीन मरतबा फ़रमाया करते थे।"(3)

﴾852﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें वोह कलिमात न सिखाऊं जो मुझे जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने सिखाए हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।" इरशाद फ़रमाया : इस त़रह़ कहो :

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٥٤٠،ج١،ص٢٠٠.

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حديث ابى العالية الرياحى،الحديث:٢١٢٨١،ج٨،ص٤٥.

3 ......المستدرك،كتاب التفسير،الأحزاب،باب أكثرواعلىّ الصلاة فى يوم الجمعة،الحديث:٣٦٣١،ج٣،ص١٩٨۔
جامع الترمذى،ابو اب صفةالقيامة،باب فى الترغيب فى ذكر الله......الخ،الحديث:٢٤٥٧،ص١٨٩٩.

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطَایَایَ وَعَمْدِیْ وَھَزْلِیْ وَجِدِّیْ وَلَاتَحْرِمْنِیْ مِنْ بَرَکَۃِ مَا اَعْطَیْتَنِیْ وَلَا تُفْتِنِّیْ فِیْمَا حَرَّمْتَنِیْ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो गुनाह मैं ने भूल कर या जान बूझ कर, मज़ाक़ में या सन्जीदा रह कर किये सब मुआफ़ फ़रमा और मुझे अपनी ने'मतों की बरकात से महरूम न फ़रमा और अपनी ह़राम कर्दा चीज़ों के फ़ित्नों से बचा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

मुहाजिरीन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस बिन ह़ज़्ज़ार अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा अ़मल मुअ़ल्लिम, ख़ुश इल्ह़ान क़ारिये क़ुरआन थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैदाने घुड़ दौड़ के शह सुवार थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अह़काम व मसाइल के बड़े आ़लिम थे। मह़ब्बत व मुशाहदे की वादियों में सरगर्दां रहते, तारीक रातों में ख़ुश इल्ह़ानी के साथ क़ियाम में क़ुरआने मजीद की तिलावत फ़रमाते और त़वील दिनों में गर्मी की शिद्दत के बा वुजूद रोज़े रखा करते थे।

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : सरगर्दां दिल की हर पसमुर्दगी को दाइमी इ़ज़्ज़त की चरागाहों में इ़ज़्ज़त बख़्शने का नाम **तसव्वुफ़** है।"

﴾853﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यमन भेजा और येह हुक्म इरशाद फ़रमाया कि वहां लोगों को क़ुरआने करीम की ता'लीम दें।"(2)

﴾854﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रजा उ़त़ारिदी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा की उस मस्जिद में हमारे पास तशरीफ़ लाते और हमारे साथ ह़ल्क़ों में तशरीफ़ फ़रमा होते थे। गोया मैं इस वक़्त भी उन्हें मुलाह़ज़ा कर रहा हूं कि 2 सफ़ेद चादरों में मल्बूस मुझे क़ुरआने मजीद पढ़ा रहे हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही मैं ने क़ुरआने पाक की येह सूरत याद की है। येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयत तिलावत की :

---

1 ......المعجم الاوسط،الحدیث:۷۱۱۰،ج۵،ص۲۱۴.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث ابی موسی الاشعری،الحدیث:۱۹۵۶۱،ج۷،ص۱۳۴.

www.dawateislami.net

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ(۱) (پ ۳۰،العلق:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया।*

हज़रते सय्यिदुना अबू रजा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعُلٰی फ़रमाते हैं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सब से पहले येही सूरत नाज़िल हुई।"(1)

﴾855﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू आमिर ख़र्राज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तुम्हारे पास भेजा है ताकि मैं तुम्हें कुरआन सिखाऊं और तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा बताऊं और तुम्हारे त़ौर त़रीक़े सुथरे करूं।"(2)

﴾856﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुर्रा को जम्अ़ किया और फ़रमाया : "जिन्हें पूरा कुरआने मजीद याद है सिर्फ़ वोह मेरे पास आएं।" रावी बयान करते हैं : "हम तक़रीबन 300 कुर्रा उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो उन्हों ने हमे नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : "तुम लोग इस शहर के कुर्रा हो कहीं ज़ियादा मुद्दत गुज़रने की वज्ह से अहले किताब की त़रह़ तुम्हारे दिल सख़्त न हो जाएं। बेशक एक सूरत नाज़िल की गई थी जिसे हम शिद्दत व त़वालत में सूरए बराअत से तश्बीह देते थे। मुझे उस में से येह एक बात याद है कि अगर इब्ने आदम के लिये सोने की दो वादियां हों तो वोह फिर भी तीसरी की तलाश में रहता है और इब्ने आदम का पेट तो सिर्फ़ (क़ब्र की) मिट्टी ही भर सकती है। इसी त़रह़ एक और सूरत नाज़िल हुई थी जिसे हम मुसब्बह़ात(3) या'नी जो सूरतें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ से शुरूअ़ होती हैं उन से मुशाबेह क़रार देते थे। मुझे इस में से येह बात

---

1 ......المستدرک،کتاب التفسیر،باب اول ﴿ اقرأ باسم ربك الذی خلق﴾،الحدیث:۲۹۲۷،ج۲،ص۵۹۲،بتغیر.

2 ......سنن الدارمی،المقدمة،باب البلاغ عن رسول اللّٰه ﷺ وتعلیم السنن،الحدیث:۵۶۰،ج۱،ص۱۴۹.

3 .....ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मुसब्बह़ात की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "या'नी जिन सूरतों के अव्वल में سَبَّحَ या يُسَبِّحُ या سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ या سُبْحٰنَ है येह सूरतें कुल सात हैं सूरए असरा, ह़दीद, ह़श्र, सफ़, जुमुअ़ह, तग़ाबुन, आ'ला। मिर्क़ात।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 247)

www.dawateislami.net

याद है कि ऐ ईमान वालो ! जो तुम ख़ुद नहीं करते वोह दूसरों को क्यूं कहते हो तुम्हारी गर्दनों में शहादत लिख दी जाएगी फिर क़ियामत के दिन तुम से इस के बारे में सुवाल होगा।"(1)

अ़ज़मते क़ुरआन :

﴾857﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू किनाना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन लोगों को जम्अ़ किया जो क़ुरआने पाक पढ़ चुके थे उन की ता'दाद तक़रीबन 300 थी। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन के सामने क़ुरआने मजीद की अ़ज़मत बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "बेशक येह क़ुरआने मजीद तुम्हारे लिये अज्रो सवाब का ज़रीआ़ है लेकिन येह तुम पर बोझ भी बन सकता है। इस लिये तुम क़ुरआने मजीद की इत्तिबाअ़ करो। इसे अपना ताबेअ़ न बनाओ। क्यूंकि जो क़ुरआने मजीद की इत्तिबाअ़ करता है क़ुरआने पाक उसे जन्नत के बाग़ात में पहुंचा देता है और जो क़ुरआने मजीद को अपना ताबेअ़ बनाता है क़ुरआने पाक उसे गुद्दी के बल जहन्नम में धकेल देता है।"(2)

﴾858﴿.....हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बुलन्द आवाज़ से क़ुरआने मजीद पढ़ते सुना तो इरशाद फ़रमाया : "इसे आले दावूद की ख़ुश आवाज़ी से हिस्सा मिला है।" हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं : येह बात मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बताई तो उन्हों ने कहा : "जब से आप ने मुझे हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह बात बताई है तब से आप मेरे दोस्त हैं।"(3)

﴾859﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि एक रात सरकारे नामदार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی موسٰی، الحدیث:۱۱، ج۸، ص۲۰۴۔
صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو أن لابن آدم وادیین لابتغی ثالثا، الحدیث:۲۴۱۹، ص۸۴۳.

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی موسٰی، الحدیث:۹، ج۸، ص۲۰۴۔
فضائل القرآن للفریابی، باب فی فضل القرآن وقراءته، الحدیث:۱۹، ص۲۱.

3 ......سنن النسائی، کتاب الافتتاح، باب تزیین القرآن بالصوت، الحدیث:۱۰۲۲، ص۲۱۵۳۔
المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث بریدۃ الاسلمی، الحدیث:۲۳۰۱۳/۲۳۰۹۵، ج۹، ص۱۰ تا۲۹.

www.dawateislami.net

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर के पास से गुज़रे। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने घर में क़ुरआने मजीद की तिलावत कर रहे थे। दोनों ह़ज़रात उन की क़िराअत सुनने के लिये वहां ठहर गए, फिर कुछ देर बा'द घर तशरीफ़ ले गए। सुब्ह़ जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ अबू मूसा ! गुज़श्ता रात मैं तुम्हारे घर के पास से गुज़रा, मेरे साथ आ़इशा भी थीं उस वक़्त तुम अपने घर में क़ुरआने मजीद की तिलावत कर रहे थे, हम दोनों तुम्हारी क़िराअत सुनने के लिये ठहर गए।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी का इ़ल्म होता तो मैं और ज़ियादा ख़ूब सूरत आवाज़ से तिलावत करता।''(1)

﴾860﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अबू मूसा को आले दावूद की ख़ुश आवाज़ी से ह़िस्सा दिया गया है।''(2)

﴾861﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से फ़रमाया करते : ''हमें हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुनाओ।'' तो वोह क़ुरआने मजीद की तिलावत करते।(3)

﴾862﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हमें सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ाते थे। उन की आवाज़ इतनी सुरीली और दिलकश थी कि सितार और झांझ (एक क़िस्म के बाजे) की आवाज़ भी ऐसी न थी।(4)

﴾863﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : हम चन्द अफ़राद एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ किसी सफ़र पर थे, रात हम ने ह़र्स के

---

1 ......مسندابی یعلی الموصلی،حدیث ابی موسیٰ الاَشْعَرِی،الحدیث:۷۲۴۲،ج۶،ص۲۲۱.

2 ......کتاب الضعفاء للعقیلی،باب السین،الرقم۵۷۶،سعیدبن زربی،ج۲،ص۴۶۸.

3 ......المصنف لعبد الرزاق،کتاب الصلاۃ،باب حسن الصوت،الحدیث:۴۱۹۲،ج۲،ص۳۲۱.

4 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد،الرقم۳۶۷ابوموسیٰ الاَشْعَرِی،ج۴، ص ۸۱۔

الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب،الرقم۱۴۶۹عبد الرحمن بن ملّ،ج۲،ص۳۹۵.

www.dawateislami.net

बाग़ में पड़ाव किया। वहां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने लगे। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुस्ने आवाज़ व हुस्ने क़िराअत को बयान करते हुवे फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौराने तिलावत जिस मज़्मून पर से गुज़र होता उसे तिलावत करने के बा'द कहते : اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَ مِنْکَ السَّلَامُ وَ اَنْتَ الْمُؤْمِنُ تُحِبُّ الْمُؤْمِنَ وَاَنْتَ الْمُھَیْمِنُ تُحِبُّ الْمُھَیْمِنَ وَاَنْتَ الصَّادِقُ تُحِبُّ الصَّادِقَ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू सलामती वाला है और सलामती तेरी ही त़रफ़ से है, तू अम्न देता और मोमिन से मह़ब्बत करता है। तू निगहबान है और निगहबान को पसन्द करता है। तू सच्चा है और सच्चे से मह़ब्बत करता है।''[1]

﴾864﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम एक सफ़र में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थे। एक मक़ाम पर उन्हों ने लोगों को आपस में बातें करते सुना फिर अचानक एक आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : ''ऐ अनस ! मुझे क्या हो गया है ? आओ ! हम अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं। क्या बई़द उन में से कोई झूटा इल्ज़ाम लगा रहा हो।'' फिर फ़रमाया : ''ऐ अनस ! किस चीज़ ने लोगों को आख़िरत की त़लब से बे रग़बत कर दिया है और किस चीज़ ने उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त से रोक रखा है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''ख़्वाहिशात और शैत़ान ने उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर रखा है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ब ख़ुदा ! ऐसा नहीं है बल्कि उन की ग़फ़्लत की वज्ह येह है कि दुन्या जल्द सोंप दी गई है और आख़िरत को मुअख़्ख़र रखा गया है। अगर येह लोग आख़िरत के मुआ़मलात का मुशाहदा कर लेते तो दुन्या की त़रफ़ माइल हो कर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते।''[2]

﴾865﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा बिन अबू मूसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! अगर तुम हमें हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में देखते तो बारिश की वज्ह से हमारे लिबास की बू को भेड़ियों की बू की मिस्ल ख़याल करते।''[3]

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی موسٰی، الحدیث:٤، ج٨، ص٢٠٣.
2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، باب أخبار عبد اللّٰہ بن عمر، الحدیث:١٠٩٩، ص٢١٥.
3 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب لبس الصوف، الحدیث:٣٥٦٢، ص٢٦٩١.

www.dawateislami.net

﴾866﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "एक मरतबा हज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़बर मिली कि कुछ लोगों को जुमुआ की हाज़िरी से येह बात रोके हुवे है कि इन को इस क़दर लिबास मुयस्सर नहीं है जिसे पहन कर वोह जुमुआ की नमाज़ में हाज़िर हो सकें। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जुब्बा (इसे चोग़ा भी कहते हैं। या'नी : बिग़ैर आस्तीनों के ऐसा लिबास जो ऊपर से पहना जाता है) पहन कर तशरीफ़ लाए और लोगों को नमाज़ पढ़ाई।"(1)

﴾867﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "70 अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रौहा से सख़्रह तक बर्हना पा, जुब्बा पहने हुवे सफ़र किया।"(2)

﴾868﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "एक मरतबा हम हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक ग़ज़्वे के लिये निकले, हम 6 आदमी थे जो एक दूसरे के पीछे थे। बहुत ज़ियादा चलने की वज्ह से हमारे पाउं ज़ख़्मी हो गए थे। जिस की वज्ह से मेरे पाउं के नाख़ुन निकल गए। चुनान्चे, हम हिफ़ाज़त की ग़रज़ से पाउं पर कपड़ों के टुकड़े लपेटते थे। इसी वज्ह से इस को ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ कहा जाता है क्यूंकि हम ने अपने पाउं पर कपड़ों के टुकड़े बांध रखे थे।" हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह बात बयान करने के बा'द फ़रमाया : "मैं तुम्हें येह बात बयान नहीं करना चाहता था।" गोया वोह अपने किसी अ़मल को ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करते थे और आख़िर में फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की जज़ा देने वाला है।"(3)

ग़ैबी आवाज़ :

﴾869﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : एक मरतबा हम किसी जंग में शिर्कत के लिये समन्दरी सफ़र पर थे, हवा बहुत ख़ुश गवार थी और हमारा बादबान (या'नी कश्ती की रफ़्तार तेज़ करने और उस का रुख़

1 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ٣٦٧ ابو موسیٰ الاَشْعَرِی، ج٤، ص٨٤، بدون "فصلی بالناس".

2 ......مسند ابی یعلی الموصلی، حدیث ابی موسیٰ الاَشْعَرِی، الحدیث: ٧٢٣٤، ج٦، ص٢١٩.

3 ......صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب غزوة ذات الرقاع، الحدیث: ٤٦٩٩، ص١٠٠٤.

www.dawateislami.net

मोड़ने के लिये लगाया जाने वाला कपड़ा) बुलन्द था, हम ने किसी को येह निदा देते सुना कि "ऐ कश्ती वालो ! ठहरो ! मैं तुम्हें एक ख़बर सुनाता हूं।" हत्ता कि उस ने पै दर पै 7 मरतबा येह आवाज़ लगाई। तो मैं ने कश्ती के अगले किनारे पर खड़े हो कर पुकारा : "तुम कौन हो और कहां हो ? क्या तुम नहीं देख रहे कि हम किस ह़ालत में हैं और रुकने की ताक़त नहीं रखते ?" जवाबन आवाज़ आई कि "क्या मैं ऐसे फ़ैसले के बारे में न बताऊं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मे ले रखा है ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ! बताओ।" उस ने कहा : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़ैसला कर लिया है कि जो शख़्स सख़्त गर्मी के दिन अपने आप को मेरी रिज़ा के लिये प्यासा रखेगा तो मुझ पर ह़क़ है कि उसे क़ियामत के दिन सैराब करूं।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ऐसे शदीद गर्मी के दिन की तलाश में रहते थे कि जिस में गर्मी की वज्ह से इन्सान की जान निकलती हो और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ास उस दिन भी रोज़ा रखते।"(1)

पैकरे शर्मो ह़या :

﴾870﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मिज्लज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या की वज्ह से बहुत ज़ियादा तारीक जगह में ग़ुस्ल करता हूं और सीधा खड़ा होने से पहले कपड़े पहन लेता हूं।"(2)

﴾871﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान इस दुन्या में ज़िन्दा रह कर सिर्फ़ किसी परेशान कुन आफ़त व मुसीबत या किसी फ़ित्ने का इन्तिज़ार करता है।"(3)

माल का वबाल :

﴾872﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "दिरहमो दीनार ने तुम से पहले लोगों को हलाक कर दिया और येह तुम्हें भी हलाकत में डाल देंगे।"(4)

---

1 ......موسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب الهواتف،الحدیث:۱۳،ج۲،ص۴۳۹.

2 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،أخبارعبدالله بن عمر،الحدیث:۱۱۰۰،ص۲۱۵.

3 ......الزهدلابن المبارك،باب التحضیض علی طاعة الله،الحدیث:۵،ص۳.

4 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزهد،کلام ابی موسٰی،الحدیث:۱،ج۸،ص۲۰۳.

www.dawateislami.net

﴾873﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ुनैम बिन क़ैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "दिल को इस के बार बार उलटने पलटने की वज्ह से क़ल्ब का नाम दिया गया है और दिल की मिसाल उस पर की त़रह़ है जो किसी खुले मैदान में पड़ा हो (और हवा उसे इधर उधर फेंक रही हो।)"(1)

रोने का अ़ज़ाब :

﴾874﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़सामा बिन ज़ुहैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा बसरा में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हमें ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! रोया करो और अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत बना लिया करो क्यूंकि (ना फ़रमानियों के सबब जहन्नम में जाने वाले) जहन्नमी इतना रोएंगे कि रोते रोते उन के आंसू ख़त्म हो जाएंगे। बिल आख़िर वोह ख़ून के आंसू रोना शुरूअ़ कर देंगे और इस क़दर आंसू बहाएंगे कि अगर उन के आंसूओं में कश्तियां छोड़ी जाएं तो चलने लगें।"(2)

﴾875﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "बेशक जहन्नमी जहन्नम में इस क़दर रोएंगे कि अगर उन के आंसूओं में कश्तियां चलाई जाएं तो चलने लगें और आंसू ख़त्म हो जाने के बा'द ख़ून के आंसू रोएंगे और उन की ऐसी ह़ालत होगी कि उसे याद कर के रोना चाहिये।"(3)

﴾876﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान रिक़ाशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझ से फ़रमाया : "तुम्हारी आंख क्यूं सूजी हुई है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक मरतबा लश्कर के किसी आदमी की लौंडी पर मेरी निगाह पड़ी तो मैं ने एक नज़र उसे देख लिया। जब मुझे ख़याल आया तो मैं ने इस आंख पर एक त़मांचा दे मारा जिस की वज्ह से मेरी येह आंख सूज गई और इस की येह ह़ालत हो गई जिसे आप मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।"

---

1 ......مسندابن الجعد،شعبة عن سعیدبن إیاس الجریری،الحدیث:١٤٥٠،ص٢١٩.

2 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،أخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:١١٠٣،ص٢١٥.

3 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب ذکر النار،ماذکرفیماأعدلأھل النار وشدّته،الحدیث:١٥،ج٨،ص٩٤.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करो ! तुम ने अपनी आंख पर ज़ुल्म किया है क्यूंकि पहली बार नज़र पड़ जाना मुआ़फ़ है जब कि दोबारा देखना जाइज़ नहीं।"(1)

﴾877﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ब्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَنَّان से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "बेशक क़ियामत के दिन सूरज लोगों के सरों पर रह कर आग बरसा रहा होगा और उन के आ'माल उन के लिये साए का ज़रीआ़ बनेंगे या धूप ही में जलने देंगे।"(2)

ख़ुदाए सत्तार की शाने सत्तारी :

﴾878﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन एक बन्दे को लाया जाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और लोगों के दरमियान पर्दा हाइल फ़रमा देगा फिर वोह बन्दा भलाई देख कर कहेगा : "नेकियां क़बूल कर ली गईं।" और बुराइयां देखेगा तो कहेगा : "बुराइयां मुआ़फ़ कर दी गईं।" लिहाज़ा बन्दा भलाई व बुराई से बे नियाज़ हो कर सजदे में गिर जाएगा। उसे देख कर सारी मख़्लूक़ पुकार उठेगी : "ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने कभी कोई बुराई नहीं की।"(3)

नेक व बद का अन्जाम :

﴾879﴿.....हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : जब मोमिन की रूह क़ब्ज़ की जाती है तो वोह मुश्क से भी ज़ियादा ख़ुश्बूदार होती है। रूह क़ब्ज़ करने वाले फ़िरिश्ते उसे ले कर आस्मानों की त़रफ़ चढ़ते हैं तो आस्मान से पहले उन्हें कुछ और फ़िरिश्ते मिलते हैं। वोह पूछते हैं : "येह तुम्हारे साथ कौन है ?" वोह कहते हैं : "येह फ़ुलां है।" और उस के अच्छे आ'माल का तज़्किरा करते हैं। फ़िरिश्ते कहते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तुम पर और जो तुम्हारे साथ है उस पर सलामती हो।" उस के लिये आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं और उस का चेहरा चमक उठता है। फिर वोह अपने परवर दगार

1 ......كتاب الثقات لابن حبان، كتاب التابعين، باب العين، الرقم ٣١١٣ عتبة بن غزوان، ج٢، ص٤٠٧.
2 ......المصنف لابن ابی شيبة، كتاب الزهد، كلام ابی موسیٰ، الحديث: ٣، ج٨، ص٢٠٣.
3 ......البعث والنشور للبيهقی، باب قول الله تعالیٰ: إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ......الآية، الحديث: ٥٢، ج١، ص٥٥.

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस तरह हाज़िर होता है कि उस का चेहरा सूरज की तरह रौशन होता है। फिर एक दूसरे बन्दे की रूह निकाली जाती है। वोह मुर्दार से भी ज़ियादा बदबू दार होती है। रूह क़ब्ज़ करने वाले फ़िरिश्ते उसे आस्मान की तरफ़ ले जाते हैं आस्मान तक पहुंचने से पहले उन्हें कुछ और फ़िरिश्ते मिलते हैं। वोह पूछते हैं : "येह तुम्हारे साथ कौन है ?" वोह जवाब देते हैं : "येह फ़ुलां है।" और उस के बुरे आ'माल का ज़िक्र करते हैं। फ़िरिश्ते कहते हैं : "इसे वापस ले जाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया।" इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ (پ۸،الاعراف:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो।" (1)

क़ब्र की दो हालतें :

﴾880﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़रज़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ब वक़्ते वफ़ात अपने बेटों को बुला कर फ़रमाया : "जाओ ! क़ब्र खोदो ! उसे कुशादा और गहरा रखना।" कुछ देर बा'द उन्हों ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "हम ने क़ब्र खोद दी है और उसे ख़ूब कुशादा और गहरा रखा है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! क़ब्र 2 ठिकानों (या'नी जन्नत का बाग़ या जहन्नम के गढ़े) में से एक ज़रूर बनेगी या तो मेरी क़ब्र मुझ पर कुशादा कर दी जाएगी यहां तक कि हर तरफ़ से 40-40 गज़ तक वसीअ़ हो जाएगी। फिर मेरे लिये जन्नत का एक दरवाज़ा खोला जाएगा। मैं उस में अपनी बीवियां, महल्लात और जो इ़ज़्ज़त व करामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये तय्यार की है उस का नज़्ज़ारा करूंगा। फिर मैं अपने ठिकाने की तरफ़ इस तरह जाऊंगा जिस तरह दुन्या में अपने घर की तरफ़ आता हूं और फिर दोबारा उठाए जाने तक मुझे जन्नत की हवाएं व ख़ुश्बूएं पहुंचती रहेंगी। लेकिन अगर मेरा ठिकाना दूसरा (या'नी जहन्नम का गढ़ा) हुवा हम इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं तो मेरी क़ब्र मुझ पर तंग कर दी जाएगी ह़त्ता कि नेज़े की निचली नोक से भी ज़ियादा तंग हो जाएगी। फिर मेरे लिये जहन्नम का दरवाज़ा खोल दिया जाएगा।

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی موسٰی، الحدیث:۵،ج۸، ص۲۰۳.

www.dawateislami.net

मैं उस में ज़न्जीरों, तौक़ों और रस्सियों को देखूंगा। फिर मैं जहन्नम में अपने ठिकाने की त़रफ़ इस त़रह़ जाऊंगा जिस त़रह़ दुन्या में अपने घर की त़रफ़ लौटता हूं और फिर दोबारा उठाए जाने तक मुझे उस की तपिश और गर्मी पहुंचती रहेगी।"(1)

रोटी वाला इ़बादत गुज़ार :

﴾881﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो अपने बेटों से फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटो ! रोटी वाले को याद करो ! येह एक आदमी था जो एक झोंपड़ी में इ़बादत किया करता था।" रावी कहते हैं मेरा ख़याल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया था कि "वोह 70 साल तक इ़बादत करता रहा। हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन झोंपड़ी से बाहर आता था। इसी त़रह़ एक बार जब वोह अपनी झोंपड़ी से निकला तो शैत़ान ने उसे एक अ़ौरत के फ़ितने में मुब्तला कर दिया, वोह आ़बिद 7 दिन या 7 रातें उस अ़ौरत के साथ रहा। फिर एक दम उस की आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हटा और वोह तौबा करता हुवा वहां से निकला। अब वोह क़दम क़दम पर सजदे करता नवाफ़िल पढ़ता और यूं चलते चलते एक रात उस ने एक चबूतरे पर पनाह ली। वहां पहले ही 12 मिस्कीन रहते थे। चूंकि येह बहुत थक चुका था इस लिये इस ने 2 आदमियों के दरमियान जगह पा कर अपने आप को उन के दरमियान गिरा दिया। वहां एक राहिब रहता था जो इन 12 मिस्कीनों को हर रात रोटियां भेजता था और हर मिस्कीन को एक रोटी मिलती। ह़स्बे मा'मूल आज भी रोटियां देने वाला आया और उस ने सब को एक एक रोटी देना शुरूअ़ की, जब वोह उस तौबा करने वाले के पास से गुज़रा तो उसे भी उन मसाकीन में शामिल समझ कर एक रोटी दे दी। जिस की वज्ह से एक मिस्कीन रोटी से मह़रूम रह गया तो उस ने रोटियों वाले से कहा : क्या बात है तुम ने मेरे ह़िस्से की रोटी मुझे नहीं दी ? तुम मुझ से बे परवाह क्यूं हो गए हो ? रोटी वाले ने कहा : "तेरा ख़याल है कि मैं ने तुम्हारे ह़िस्से की रोटी तुम से रोक ली है ? इन से पूछो कहीं मैं ने किसी को दो रोटियां तो नहीं दे दीं ? सब ने कहा : नहीं। तो उस रोटी वाले ने कहा : तू समझता है कि मैं ने तुम्हारी रोटी रोक रखी है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज रात मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूंगा। उस इ़बादत गुज़ार ताइब ने जब येह देखा तो उसे उस मिस्कीन पर तरस आया और उस ने ली हुई रोटी उस को दे दी और ख़ुद भूका रहा और सुब्ह़ तक भूक की ताब न ला कर वफ़ात पा गया।"

---

1 ......صفة الصفوة،الرقم۰٦ابوموسٰی الاَشْعَرِی،ج۱،ص۲۸٦۔
تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر،الرقم۳٤٦۱عبداللّٰہ بن قیس المعروف ابو موسیٰ الاَشْعَرِی،ج۳۲،ص۹۸.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "उस के 70 सालों का वज़्न 7 रातों से किया गया तो वोह 7 रातें ग़ालिब आ गईं फिर उन 7 रातों का उस एक रोटी से वज़्न किया गया जो उस ने मिस्कीन को दे दी थी तो वोह रोटी उन 7 रातों पर ग़ालिब आ गई (और उस को बख़्श दिया गया)।" इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटो ! उस रोटी वाले को याद रखना।"(1)

दिल की मिसाल :

﴾882﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू कब्शा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दिल के उलटने पलटने की वज्ह से इसे क़ल्ब कहा जाता है और दिल की मिसाल उस पर जैसी है जो ख़ाली ज़मीन में किसी दरख़्त के साथ मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका) हो और हवा उसे कभी उलटा कर देती है और कभी सीधा।"(2)

दुगना अज्रो सवाब :

﴾883﴿.....हज़रते सय्यिदुना अज़्हर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिम्स में यूह़न्ना के गिर्जा में नमाज़ अदा की फिर गिर्जा से बाहर तशरीफ़ लाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारे इस ज़माने में जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल करता है उस को एक अज्र मिलता है और तुम्हारे बा'द जल्द एक ज़माना ऐसा आएगा कि उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल करने वाले को 2 अज्र मिलेंगे।"(3)

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू या'ला शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ुज़ूल बातों से इजतिनाब करते। बा मा'ना व बा मुराद ऐसा सह्ल कलाम करते जो बा आसानी समझ लिया जाता। वर्अ़ व तक़्वा, गिर्या व ज़ारी और आ़जिज़ी व इन्किसारी जैसी उ़म्दा सिफ़ात से मुत्तसिफ़ थे।

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب ذکررحمۃ اللّٰہ،ما ذکر فی سعۃ رحمۃ اللّٰہ،الحدیث:۱۴،ج۸،ص۱۰۷.

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد،کلام ابی موسٰی،الحدیث:۷،ج۸،ص۲۰۴.

3 ......الأوسط لابن المنذر، کتاب طھارات الأبدان والثیاب،باب ذکرالصلاۃ......الخ،الحدیث:۷۵۲،ج۳،ص۲۴.

www.dawateislami.net

जहन्नम का ख़ौफ़ :

﴾884﴿.....हज़रते सय्यिदुना असद बिन वदाआ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ जब सोने के लिये बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो नींद न आने की वज्ह से करवटें बदलते रहते और बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करते : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जहन्नम के ख़ौफ़ ने मेरी नींदें उड़ा दी हैं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ बिस्तर से उठते और सुब्ह तक इ़बादत में मसरूफ़ रहते।"(1)

आख़िरत के बेटे बनो :

﴾885﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन माहक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "तुम लोगों ने भलाई और बुराई के सिर्फ़ अस्बाब ही देखे हैं। सारी ख़ूबियां अपने किनारों समेत जन्नत में हैं और सारी बुराइयां किनारों समेत जहन्नम में हैं। दुन्या, मौजूदा सामान है(2) जिस से नेक व बद सब खाते हैं और आख़िरत एक सच्चा वा'दा है जिस में क़ुदरत वाला बादशाह फ़ैसला फ़रमाएगा। इन दोनों में से हर एक के बच्चे हैं।(3) लिहाज़ा तुम आख़िरत के बेटे बनो न कि दुन्या के।"

साहिबे इ़ल्मो हिल्म :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "बा'ज़ लोगों को इ़ल्म अ़ता किया जाता है लेकिन उन्हें हिल्म नहीं दिया जाता बल्कि हज़रते अबू या'ला शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को इ़ल्म भी अ़ता किया गया है और हिल्म से भी नवाज़ा गया है।"(4)

1.....صفۃ الصفوۃ،الرقم۱۰۳ شدادبن اوس،ج۱،ص۳۶۰.

2.....ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : "क़ुरआने मजीद में दुन्या को मताअ़ फ़रमाया गया है, ह़दीस शरीफ़ में अ़र्ज़, लेकिन दोनों के मा'ना हैं सामान, चूंकि दुन्या को छोड़ कर इन्सान चला जाता है, दूसरे आ कर इसे बरतते हैं इस लिये इसे मताअ़ या अ़र्ज़ करते हैं, ज़मीन ने सब को खा लिया, ज़मीन को किसी ने न खाया, ह़ाज़िर ब मा'ना नक़्द, या'नी उधार का मुक़ाबिल दुन्यावी काम करो, तो ज़िन्दगी में इस का नफ़्अ़ नुक़्सान मिल जाता है, मगर आख़िरत के काम की जज़ा व सज़ा बा'दे क़ियामत, येह बड़ा ही उधार है जो बरज़ख़ व क़ियामत गुज़ार कर वुसूल होता है।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 47)

3.....यहां बच्चों से मुराद ताबेअ़, मह़कूम, ज़ेरे फ़रमान लोग हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 45)

4.....صفۃ الصفوۃ،الرقم۱۰۳ شدادبن اوس،ج۱،ص۳۶۰۔
المعجم الکبیر،الحدیث:۷۱۵۸،ج۷،ص۲۸۸،بتغیر.

www.dawateislami.net

﴾886﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "ऐ लोगो ! दुन्या मौजूदा सामान है जिस से नेक व बद सब खाते हैं और आख़िरत एक सच्चा वा'दा है जिस में क़ुदरत वाला बादशाह फ़ैसला फ़रमाएगा। उस दिन सच को सच और झूट को झूट कर दिखाएगा। लिहाज़ा तुम आख़िरत की औलाद बनो न कि दुन्या की क्यूंकि हर बच्चा अपनी मां के पीछे होता है।"(1)

﴾887﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबिक़ा रिवायत की मिस्ल रिवायत बयान की। अलबत्ता ! इस में इतना ज़ाइद है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़बरदार ! तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो, अ़मल किया करो और जान लो कि तुम अपने आ'माल पर पेश किये जाओगे और तुम्हें ज़रूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होना है। तो जो ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो ज़र्रा(2) भर बुराई करे उसे देखेगा।"(3)

फ़क़ीहुल उम्मत :

﴾888﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद ग़ौसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हर उम्मत का एक फ़क़ीह होता है और इस उम्मत के फ़क़ीह ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"(4)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۷۱۵۸،ج۷،ص۲۸۸.

2 .....ज़र्रे से मुराद या तो रैत का ज़र्रा है, या छोटी च्यूंटी, इस "فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ ۝ وَ مَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ ۝" (پ۳۰، الزلزال:۷،۸) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।" आयते करीमा की तह़क़ीक़ येह है कि "مَن" से मुराद या तो सिर्फ़ मुसलमान हैं, और ख़ैर से मुराद वोह नेकी है जो ज़ब्त़ न हो चुकी हो, और शर से मुराद वोह गुनाह है जो मुआ़फ़ न हो चुका हो। और देखने से मुराद है इस की सज़ा व जज़ा भुगतना, या'नी ऐ मुसलमान तुझ को ज़र्रा भर नेकी की जज़ा और ज़र्रा भर गुनाह की सज़ा मिलेगी। बशर्ते कि नेकी ज़ब्त़ न हुई हो, गुनाह मुआ़फ़ न हुवा हो, या "مَن" से मुराद हर इन्सान है मोमिन हो या काफ़िर और देखने से मुराद है अपने आ'माल को आंख से देख लेना, सज़ा जज़ा हो या न हो या'नी हर इन्सान अपने हर अ़मल को अपनी आंखों से देखेगा कि मोमिन को उस के गुनाह दिखा कर मुआ़फ़ किये जाएंगे काफ़िर को उस की नेकियां दिखा कर ज़ब्त़ की जाएं। लिहाज़ा येह आयत न मुआ़फ़ी की आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ है, न ज़ब्त़िये आ'माल की आयात के ख़िलाफ़। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 47)

3 ......السنن الکبریٰ للبیہقی،کتاب الجمعة،الحدیث:۵۸۰۸،ج۳،ص۳۰۶.

4 ......صفة الصفوة،الرقم۱۰۳ شدادبن اوس،ج۱،ص۳۶۰.

www.dawateislami.net

कभी फ़ुज़ूल बात नहीं की :

《889》.....ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی से रिवायत है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने एक रफ़ीक़ से फ़रमाया : "दस्तर ख़्वान लाओ, उस से थोड़ा जी बहला लें।" रफ़ीक़ ने अ़र्ज़ की : "मैं जब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत में हूं कभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस त़रह़ की बात नहीं सुनी।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा होने के बा'द कभी कोई बे मक़्सद बात मेरी ज़बान से नहीं निकली और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आइन्दा भी कोई फ़ुज़ूल बात मेरी ज़बान से नहीं निकलेगी।"(1)

एक जामेअ़ दुआ :

《890》.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मूसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दस्तर ख़्वान लाओ उस से थोड़ा दिल बहला लें।" रावी कहते हैं : लोगों ने इस बात पर उन का मुवाख़ज़ा किया और किसी ने कहा : "अबू या'ला (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को देखो ! येह कैसी बात करते हैं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ मेरे भतीजो ! जब से मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर बैअ़त की है इस के सिवा कभी कोई बे मक़्सद व फ़ुज़ूल बात अपनी ज़बान से नहीं निकाली। आएं मैं आप को एक ह़दीस सुनाता हूं। फ़ुज़ूल बातों को छोड़ो और इस से बेहतर बात (या'नी रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिखाई हुई दुआ) ले लो :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْاَلُکَ التَّثَبُّتَ فِی الْاَمْرِ وَنَسْاَلُکَ عَزِیْمَۃَ الرُّشْدِ وَنَسْاَلُکَ
شُکْرَنِعْمَتِکَ وَحُسْنَ عِبَادَتِکَ وَنَسْاَلُکَ قَلْبًاسَلِیْمًاوَلِسَانًاصَادِقًاوَنَسْاَلُکَ خَیْرَمَاتَعْلَمُ وَنَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّمَا تَعْلَمُ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से हर काम में साबित क़दमी, हिदायत में पुख़्तगी, शुक्रे ने'मत, ह़ुस्ने इ़बादत, क़ल्बे सलीम और सच्ची ज़बान का सुवाल करते हैं और हर उस ख़ैर व भलाई का सुवाल करते हैं जिसे तू जानता है और हर उस बुराई व शर से तेरी पनाह मांगते हैं जिसे तू जानता है। (फिर फ़रमाया :) पस इस दुआ को याद कर लो और फ़ुज़ूल बात पर ध्यान न दो।"(2)

---

1 ......صفة الصفوة،الرقم۱۰۳،شدادبن اوس،ج۱،ص۳٦۰.

2 ......جامع الترمذی،کتاب الدعوات،باب منه دعاء:اللّٰهم إنی أسألك......الخ،الحديث:۳٤۰۷،ص۲۰۰۲، بتغير.

www.dawateislami.net

﴾891﴿.....हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अ़तिय्या رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक जगह पड़ाव डाला और फ़रमाया : "दस्तर ख़्वान लाओ ताकि हम उस से दिल बहला लें।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू या'ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप ने येह कैसी बात कर दी ?" लोगों को येह बात ना गवार गुज़री तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं जब से इस्लाम लाया हूं कभी कोई फ़ुज़ूल बात नहीं की सिर्फ़ येह कलिमा ज़बान से निकल गया तुम इसे छोड़ दो और इस बात को याद कर लो जो मैं तुम से कहने लगा हूं और वोह येह कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "लोग सोना व चांदी जम्अ़ करने लगें तो तुम इन कलिमात को पढ़ कर ज़ख़ीरा कर लो : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِیْمَۃَ عَلَی الرُّشْدِ या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से हर काम में साबित क़दमी और हिदायत में पुख़्तगी का सुवाल करता हूं।" इस के बा'द साबिक़ा रिवायत में ज़िक्र कर्दा दुआ़ बयान की। अलबत्ता ! इस में इतना ज़ाइद है : وَاَسْتَغْفِرُکَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْب या'नी : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने उन गुनाहों की बख़्शिश का सुवाल करता हूं जिन्हें तू जानता है। बेशक तू ग़ैबों को ख़ूब जानने वाला है।"(1)

﴾892﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह मुस्लिम बिन मिश्कम رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह निकले "मर्जु सुफ़्फ़र" के मक़ाम पर हम ने पड़ाव डाला तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "दस्तर ख़्वान लाओ ताकि हम उस से दिल बहला लें।" किसी ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू या'ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप ने येह कैसी बात कर दी ?" गोया लोग आप की वोह बात याद करने लगे तो फ़रमाया : तुम इसे छोड़ दो और इस बात को याद कर लो जो मैं तुम से कहने लगा हूं और वोह येह कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "लोग सोना चांदी जम्अ़ करने लगें तो तुम इन कलिमात को पढ़ कर ज़ख़ीरा कर लो : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से हर काम में साबित क़दमी का सुवाल करता हूं।" इस के बा'द साबिक़ा रिवायत की मिस्ल ह़दीस बयान की।"(2)

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث شدادبن اوس،الحدیث:۱۷۱۱۳،ج۶،ص۷۶.

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب الرقائق،باب الادعیة،الحدیث:۹۳۱،ج۲،ص۱۴۳.

www.dawateislami.net

﴾893﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ शद्दाद ! जब तुम लोगों को सोना चांदी जम्अ़ करते पाओ तो तुम इन कलिमात का ज़ख़ीरा कर लेना (या'नी इन का विर्द करना) :

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِیْمَۃَ عَلَی الرُّشْدِ وَاَسْاَلُکَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِکَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِکَ

"या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से हर काम में साबित क़दमी और रुश्दो हिदायत में पुख़्तगी का सुवाल करता हूं और तुझ से तेरी रह़मत के अस्बाब और तेरी मग़फ़िरत के अ़ज़ाइम का सुवाल करता हूं।" इस के बा'द साबिक़ा रिवायत की मिस्ल बयान किया।"(1)

﴾894﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में इस त़रह़ दुआ़ किया करते : اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ "या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से हर काम में साबित क़दमी का सुवाल करता हूं।" इस के बा'द साबिक़ा रिवायत की मिस्ल बयान किया।(2)

﴾895﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह शोऐ़सी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजाहिदीन के हमराह निकले, कुछ लोगों ने उन्हें दस्तर ख़्वान पर आने की दा'वत दी तो उन्हों ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर बैअ़त करने से पहले की मेरी आ़दत है कि खाना खाने से पहले येह मा'लूम करता हूं कि खाना कहां से आया है। लेकिन अब मेरे पास एक तोह़फ़ा है और वोह येह कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "जब तुम लोगों को सोना चांदी जम्अ़ करते देखो तो येह कलिमात कहो :

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِوَعَزِیْمَۃَ الرُّشْدِ وَاَسْاَلُکَ شُکْرَ نِعْمَتِکَ وَحُسْنَ عِبَادَتِکَ وَاَسْاَلُکَ قَلْبًا تَقِیًّا وَّ لِسَانًا صَادِقًا نَقِیًّا

"या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तमाम कामों में साबित क़दमी, हिदायत में पुख़्तगी, शुक्रे ने'मत, हुस्ने इ़बादत, मुत्तक़ी दिल और साफ़ सुथरी व सच्ची ज़बान का सुवाल करता हूं।"(3)

अ़क़्लमन्द व बे वुक़ूफ़ की पहचान :

﴾896-897﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۷۱۳۵،ج۷،ص۲۷۹.

2 ......جامع الترمذی،کتاب الدعوات،باب منه دعاء:اللّٰھم إنی أسألك الثبات فی الأمر،الحدیث:۳۴۰۷،ص۲۰۰۲.

3 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث شدادبن اوس،الحدیث:۱۷۱۱۳،ج۶،ص۷۶،بتغیر.

www.dawateislami.net

को मग़लूब कर दे और मौत के बा'द के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ वोह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के पीछे लगा दे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर आरज़ू रखे[1]।"[2]

इमाम ज़ोहरी की रिवायत :

﴾898﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى को एक दिन लोगों से येह फ़रमाते हुवे सुना कि "बैठो ! मैं तुम्हें ह़दीस सुनाता हूं।" इस से पहले मैं ने इन्हें कभी लोगों से येह कहते नहीं सुना था। बहर ह़ाल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَدِيع ने ख़बर दी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाया : "बेशक मुझे तुम पर सब से ज़ियादा रियाकारी और ख़ुफ़्या शहवत का ख़ौफ़ है।"[3]

ह़दीस याद आने पर अश्क बारी :

﴾899﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन नुसय्य رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे पास से गुज़रे तो मेरा हाथ थाम कर मुझे अपने साथ घर ले गए और घर बैठ कर रोने लगे यहां तक कि उन्हें रोता देख कर मेरी आंखें भी अश्क बार हो गईं। जब उन्हें कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो मुझ से फ़रमाया : "तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गिर्या व ज़ारी करते देखा तो मैं भी रोने लगा।" फिर उन्हों ने अपने रोने का सबब बयान करते हुवे फ़रमाया : मुझे एक ह़दीस याद आ गई थी जो मैं ने हुज़ूर

1.....इस फ़रमाने आ़ली में "आ़जिज़" से मुराद बे वुक़ूफ़ है "كَيِّس" का मुक़ाबिल। नफ़्से अम्मारा से दबा हुवा या'नी वोह बे वुक़ूफ़ है जो काम करे दोज़ख़ के और उम्मीद करे जन्नत की ! कहा करे कि अल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीम है, बाजरा बोए और उम्मीद करे गेहूं काटने की ! कहा करे कि अल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीम है काटते वक़्त उसे गन्दुम बना देगा इस का नाम उम्मीद नहीं रब तआ़ला फ़रमाता है : مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۙ (پ۳۰،الانفطار:۶)
"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से।" और फ़रमाता है :
اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓىٕكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ (پ۲،البقرة:۲۱۸)
"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने अल्लाह के लिये अपने घर बार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े वोह रह़मते इलाही के उम्मीदवार हैं।" जब बो कर गन्दुम काटने की आस लगाना शैत़ानी धोका और नफ़्सानी वस्वसा है। ख़्वाजा ह़सन बसरी (عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى) फ़रमाते हैं कि "बा'ज़ लोगों को झूटी उम्मीद ने सीधे राह नेक आ'माल से हटा दिया है जैसे झूटी बात गुनाह है ऐसे ही झूटी आस भी गुनाह है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 103)

2.....جامع الترمذی،ابواب صفة القيامة،باب حديث الكيس من......الخ،الحديث:۲۴۵۹،ص۱۸۹۹.

3.....الزهدلابن المبارك،باب فضل ذكر الله،الحديث:۱۱۱۴،ص۳۹۳.

www.dawateislami.net

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी थी वोह येह कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा शिर्क और ख़ुफ़्या शहवत का ख़ौफ़ है।" रावी कहते हैं : मैं ने कहा : "इन दो में एक की त़रफ़ तो कोई रास्ता नहीं।" उन्हों ने फ़रमाया : "मैं ने भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येही अ़र्ज़ किया था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे इन दोनों का ख़ौफ़ है।" फिर इरशाद फ़रमाया : "बेशक लोग सूरज, चांद और बुतों की पूजा नहीं करेंगे लेकिन वोह ग़ैरुल्लाह के लिये अ़मल करेंगे।"[1]

शिर्के ख़फ़ी और ख़ुफ़्या शहवत :

﴾900﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन नुसय्य رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हें रोता पा कर सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया : मुझे उस ह़दीस ने रुला दिया जो मैं ने हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपनी उम्मत पर शिर्क और ख़ुफ़्या शहवत का ख़ौफ़ है। ख़ुफ़्या शहवत येह है कि आदमी सुब्ह़ रोज़े की ह़ालत में करेगा लेकिन जब नफ़्स को मरग़ूब चीज़ उस के सामने आएगी तो वोह उस में पड़ जाएगा और रोज़ा छोड़ देगा[2] और शिर्क (ख़फ़ी) येह है कि लोग न पथ्थरों को पूजेंगे न बुतों को लेकिन दिखलावे के लिये अ़मल करेंगे।"[3]

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الزهد،باب الرياء و السمعة،الحديث:٤٢٠٥،ص٢٧٣٢،بتغير.

2 .....इस त़रह़ कि उस ने रोज़ा रख लिया होगा कोई अच्छे खाने की दा'वत आ गई या किसी ने शरबत सोडा पेश किया तो उस खाने, शरबत की वज्ह से रोज़ा तोड़ दिया या रोज़े की निय्यत थी कि आज रोज़ा रखूंगा मगर येह चीज़ें देखीं इरादा बदल दिया। मह़ज़ नफ़्सानी लज़्ज़त व ख़्वाहिश के लिये कि ऐसा मज़ेदार खाना कौन छोड़े लिहाज़ा येह ह़दीस उस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात से पूछा कि खाना है ? अ़र्ज़ किया गया : हां ! फ़रमाया : लाओ हम ने तो आज रोज़ा रख लिया था फिर खाना मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया कि येह इफ़्तार फ़रमा लेना ख़्वाहिशे नफ़्स के लिये न था बल्कि हुक्मे शरई बयान करने के लिये था कि नफ़्ल रोज़ा रख कर तोड़ देना जाइज़ है अगर्चे क़ज़ा वाजिब होगी ह़ज़रते सय्यिदुना उम्मे हानी को हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अपना पस ख़ुर्दा (बचा हुवा) पानी दिया आप ने पी कर पूछा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरा रोज़ा था फ़रमाया कोई ह़रज नहीं वोह रोज़ा तोड़ देना हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के तबर्रुक से बरकत ह़ासिल करने के लिये था न कि नफ़्सानी ख़्वाहिश से लिहाज़ा अह़ादीस समझ कर पढ़ना ज़रूरी है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 142)

3 ......المعجم الكبير،الحديث:٧١٤٥،ج٧،ص٢٨٤.

www.dawateislami.net

शिर्के ख़फ़ी पर इल्मी मुकालमा :

﴾901﴿.....हज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन ग़नम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को फ़रमाते हुवे सुना कि जब मैं और हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ जाबिया की जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवे तो हमारी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से हुई, हम वहां बैठे हुवे थे कि हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस और हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) भी तशरीफ़ ले आए और हमारे दरमियान बैठ गए। फिर हज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मुझे तुम पर सब से ज़ियादा उस चीज़ का ख़ौफ़ है जो मैं ने रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी या'नी शिर्क और ख़ुफ़्या शहवत।" हज़रते सय्यिदुना उ़बादा और हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आप की मग़फ़िरत फ़रमाए ! क्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें येह ह़दीस नहीं बयान फ़रमाई कि शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि जज़ीरए अ़रब में उस की पूजा की जाए और रही ख़ुफ़्या शहवत की बात तो हम उसे पहचान चुके हैं और वोह दुन्या और औ़रतों की ख़्वाहिशात हैं। लेकिन ऐ शद्दाद ! येह कौन सा शिर्क है जिस का आप हम पर ख़ौफ़ फ़रमा रहे हैं ?" हज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "उस शख़्स के बारे में आप का क्या ख़याल है जो किसी के लिये नमाज़ पढ़े, रोज़ा रखे और सदक़ा करे ?" क्या आप समझते हैं कि उस ने शिर्क किया ?" उन्हों ने फ़रमाया : "हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो किसी को दिखाने के लिये सदक़ा करे, नमाज़ पढ़े या रोज़ा रखे तो उस ने शिर्क किया।[1]" फिर हज़रते सय्यिदुना औ़फ़

1.....शिर्क दो क़िस्म का है : शिर्के जली, शिर्के ख़फ़ी। शिर्के जली तो खुल्लम खुल्ला शिर्क व बुत परस्ती करना है शिर्के ख़फ़ी रियाकारी है या यूं कहो कि शिर्के ए'तिक़ादी तो खुला हुवा शिर्क है और शिर्के अ़मली रियाकारी है। सूफ़िया फ़रमाते हैं : "كُلُّ مَاصَدَّكَ عَنِ اللّٰهِ فَهُوَ صَنَمُكَ" जो तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से रोके वोह ही तुम्हारा बुत है। नफ़्से अम्मारा भी बुत है इसी ह़दीस से मा'लूम हुवा कि रोज़े में भी रियाकारी हो सकती है हां रोज़े में रिया ख़ालिस नहीं हो सकती। इसी लिये इरशाद है "اَلصَّوْمُ لِیْ وَ اَنَا اَجْزِیْ بِهٖ" बा'ज़ लोग रोज़ा रख कर लोगों के सामने बहुत कुल्लियां करते सर पर पानी डालते रहते हैं कहते फिरते हैं हाए रोज़ा बहुत लगा है बड़ी प्यास लगी है वग़ैरा वग़ैरा येह भी रोज़े की रिया है और इस ह़दीस में दाख़िल है। ख़याल रहे ! कि रिया की दो क़िस्में हैं एक रिया अस्ल अ़मल में दूसरी रिया वस्फ़े अ़मल में, अस्ल अ़मल में रिया येह है कि कोई देखे तो येह नमाज़ पढ़ ले न देखे तो नमाज़ पढ़े ही नहीं। वस्फ़े अ़मल में रिया येह है कि लोगों के सामने नमाज़ ख़ूब अच्छी तरह पढ़े तन्हाई में मा'मूली तरह। पहली रिया बहुत बुरी दूसरी रिया पहली से कम।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 141)

www.dawateislami.net

बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के उस अ़मल को नहीं देखता जिसे वोह इख़्लास के साथ महज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये बजा लाता है तो वोह उस के इख़्लास वाले अ़मल को क़बूल फ़रमा ले और रियाकारी वाले अ़मल को रद फ़रमा दे।"

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जिसे मेरा शरीक ठहराया जाए मैं उस के लिये बेहतरीन तक़्सीम फ़रमाता हूं। पस जो किसी को मेरा शरीक ठहराता है तो उस का जिस्म, उस का अ़मल और उस का क़लील व कसीर उसी के लिये है जिस को उस ने शरीक ठहराया, मैं उस से बे नियाज़ हूं[1]।"[2]

﴾902﴿.....हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन रबीअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَدِیْع फ़रमाते हैं एक दिन हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे साथ बाज़ार तशरीफ़ ले गए। बाज़ार से वापस आए तो लेट गए। फिर कपड़ों से ख़ुद को छुपा कर ज़ारो ज़ार रोते और बार बार कहते कि "मैं अजनबी हूं इस्लाम से दूर नहीं रहूंगा।" जब उन की येह कैफ़िय्यत दूर हुई तो मैं ने अ़र्ज़ की, कि "मैं ने पहले कभी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ऐसे करते नहीं देखा ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मुझे तुम पर शिर्क और ख़ुफ़्या शहवत का ख़ौफ़ है।" मैं ने कहा : "क्या हमारे मुसलमान होने के बा वुजूद भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हम पर शिर्क का ख़ौफ़ है ?" फ़रमाया : "ऐ महमूद ! तेरी मां तुझ पर रोए ! क्या शिर्क बस इतना ही है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ कोई दूसरा मा'बूद माना जाए।"[3]

दो अम्न और दो ख़ौफ़ :

﴾903﴿.....हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक तौबा से गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं और नेकियां गुनाहों को मिटा देती हैं और जब बन्दा ख़ुशहाली में

1.....या'नी दुन्या वाले अपने हिस्सेदारों शरीकों से राज़ी व ख़ुश होते हैं क्यूंकि वोह अकेले अपना काम नहीं कर सकते मगर मैं शरीकों से पाक बे नियाज़ हूं मुझे किसी शरीक की ज़रूरत नहीं। शुरका से मुराद दुन्या के शरीक हैं जो आपस में एक दूसरे के हिस्सेदार होते हैं लिहाज़ा हदीस बिल्कुल वाज़ेह है। बा'ज़ शारेहीन ने फ़रमाया कि यहां रूए सुख़न मुशरिकीन से है और मा'ना येह हैं कि तुम लोगों ने जिन चीज़ों को मेरा शरीक ठहराया है मैं उन से बे नियाज़ भी हूं बेज़ार भी, बे नियाज़ को शरीक की क्या ज़रूरत है ? (मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 128)

2.....المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث شدادبن اوس،الحدیث:۱۷۱٤۰،ج٦،ص۸۱.

3.....تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر،الرقم۲۷۰۸شدادبن اوس بن ثابت الانصاری،ج۲۲،ص٤۱٤،بتغیر.

www.dawateislami.net

अपने रब عَزَّوَجَلَّ को याद करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज़माइश व मुसीबत से उसे नजात अ़ता फ़रमाता है। इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के लिये कभी दो अम्न जम्अ़ नहीं करता और न ही उस पर दो ख़ौफ़ जम्अ़ करता हूं। अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहा तो जिस दिन मैं बन्दों को जम्अ़ करूंगा वोह मुझ से ख़ौफ़ज़दा होगा लेकिन अगर वोह दुन्या में मुझ से डरता रहा तो जिस दिन मैं बन्दों को जम्अ़ करूंगा उस दिन उसे जन्नत में दाख़िल कर के अम्न बख़्शूंगा और उस का अम्न हमेशा बर क़रार रहेगा कभी ख़त्म नहीं होगा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुहाजिरीन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसीबतों, आफ़तों, फ़ितनों, ऐ़बों और दिलों के ह़ालात से बा ख़बर रहते। बुराई के बारे में दरयाफ़्त करते फिर इस से इजतिनाब करते। ख़ैर व भलाई में ग़ौरो फ़िक्र करते फिर इसे बजा लाते। फ़क़्रो फ़ाक़ा में सुकून पाते, तौबा व नदामत की त़रफ़ माइल रहते और अहले ज़माना की इ़ज़्ज़त व इस्लाह़ में पेश पेश रहते थे।

उ़लमाए तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कारीगरी को देखने, रुकावटों के बा वुजूद ह़ाल से मुवाफ़क़त रखने का नाम **तसव्वुफ़** है।"

फ़ितनों का सैलाब

दिल दो क़िस्म के हो जाएंगे :

﴾904﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना रिबई बिन ख़िराश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह से वापस लौटे तो बयान किया कि हम अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि उन्हों ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम में से किसी ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से समन्दर की त़रह

---

1 ......الزهد لابن المبارك،باب ماجاء فی الخشوع والخوف،الحديث:١٥٧،ص٥٠،مختصرًا۔
جامع الاحاديث للسيوطی،الهمزة مع النون،الحديث:٥٠٠٧،ج١،ص٢٢٤.

www.dawateislami.net

मौजज़न होने वाले फ़ितनों से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस सुनी है ?" सब सहाबा ख़ामोश रहे और मैं समझ गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुराद मैं हूं। चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मैं ने सुनी है।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे बाप पर रह़्म फ़रमाए ! तुम ने ज़रूर सुनी होगी।" फिर मैं ने ह़दीस बयान की, कि "दिलों पर इस त़रह़ फ़ितने छा जाएंगे जिस त़रह़ कटी हुई खेती। जो इन फ़ितनों से नफ़रत करेगा उस के दिल पर सफ़ेद नुक्ता लगा दिया जाएगा और जो इन्हें पसन्द करेगा उस के दिल पर सियाह धब्बा लगा दिया जाएगा ह़त्ता कि लोगों के दिल दो क़िस्म के हो जाएंगे एक सफ़ेद संगे मर मर की त़रह़, जब तक ज़मीनो आस्मान क़ाइम हैं उस दिल को कोई फ़ितना नुक़्सान न पहुंचा सकेगा और दूसरा काला, राख की त़रह़ जैसे ओंधा कूज़ा उस का एक पहलू झुका होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْمَجِیْد फ़रमाते हैं : "पहलू झुका होने से मुराद येह है कि वोह न तो किसी भलाई को पहचाने, न किसी बुराई को बुरा जाने सिवा उस ख़्वाहिश के जो उस के मन को भाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया कि "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन फ़ितनों के दरमियान एक बन्द दरवाज़ा है जो अ़न क़रीब तोड़ दिया जाएगा।" उन्हों ने फ़रमाया : "तेरा बाप न रहे ! क्या वोह तोड़ दिया जाएगा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "अगर वोह खोला जाता तो हो सकता था कि दोबारा लौटाया जाता।" मैं ने कहा : "नहीं ! बल्कि उसे तोड़ दिया जाएगा।" और मैं ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया कि "वोह दरवाज़ा एक मर्द है जिसे शहीद किया जाएगा या वोह वफ़ात पाएगा। येह एक साफ़ बात है, कोई मुग़ालत़ा नहीं।(1)

अमानत उठ जाएगी :

﴾905﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें दो बातें बयान फ़रमाईं, उन में से एक को तो मैं देख चुका हूं और दूसरी के इन्तिज़ार में हूं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें बताया कि अमानत लोगों के दिलों की गहराई में उतारी गई है। फिर लोगों

1 ......صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب رفع الأمانة والإيمان......الخ، الحديث:٣٦٩، ص٧٠٢۔
المسندللامام احمدبن حنبل، حديث حذيفة بن اليمان، الحديث:٢٣٥٠٠، ج٩، ص١١٦.

www.dawateislami.net

ने क़ुरआन और सुन्नत को सीखा। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें उस अमानत के उठ जाने की ख़बर देते हुवे फ़रमाया कि "आदमी सोएगा तो उस के दिल में एक सियाह धब्बा लगा दिया जाएगा जिस का असर आबले की त़रह़ होगा कि जैसे तुम अपने पाउं पर चिंगारी डालो तो उस से छाला बन जाता है तुम उसे फूला हुवा देखते हो जब कि उस में कुछ नहीं होता। फिर लोगों में कोई अमीन न रहेगा और इन पर ज़रूर एक ऐसा ज़माना आएगा कि एक शख़्स के बारे में कहा जाएगा वोह कितना ख़ुश त़ब्अ़ और कितना ज़बरदस्त आ़लिम है ह़ालांकि उस के दिल में जव के दाने बराबर भी ईमान नहीं होगा।"(1)

गूंगे बहरे फ़ितने :

﴾906﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नस्र बिन आ़सिम लैसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं क़बीलए बनू लैस की एक जमाअ़त के हमराह यशकरी के पास आया फिर मैं कूफ़ा में आया और कूफ़ा की जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो देखा कि मस्जिद में एक ह़ल्क़ा लगा हुवा है उन की कैफ़िय्यत येह है कि गोया उन के सर काट दिये गए हैं और वोह सब एक शख़्स की बातों की त़रफ़ कान लगाए ग़ौर से सुन रहे हैं। मैं भी उन लोगों के पास खड़ा हो गया और पूछा : "येह शख़्स कौन है?" बताया गया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" मैं ने उन के क़रीब हो कर सुना तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमा रहे थे कि लोग तो ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ैर के मुतअ़ल्लिक़ पूछा करते थे जब कि मैं शर के बारे में सुवाल करता था क्यूंकि मुझे मा'लूम था कि भलाई मुझ से सबक़त नहीं ले जा सकती। चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या इस ख़ैर के बा'द कोई शर होगा?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ हुज़ैफ़ा ! क़ुरआन सीखो और इस की इत्तिबाअ़ करो।" येह बात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 मरतबा इरशाद फ़रमाई। मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या इस ख़ैर के बा'द कोई बुराई होगी?" इरशाद फ़रमाया : "एक फ़ितना और शर है।" और अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में है कि फ़रमाया : "धुवें पर सुल्ह़।" मैं ने अ़र्ज़ की : "धुवें पर सुल्ह़ क्या चीज़ है?" इरशाद फ़रमाया : "लोगों के दिल उस त़रफ़ नहीं लौटेंगे जिस पर थे।" इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फिर गूंगे, बहरे फ़ितने रूनुमा होंगे, उन की त़रफ़ बुलाने

1 ......مسند ابی داؤد الطیالسی، احادیث حذیفۃ بن الیمان، الحدیث: ٤٢٤، ص٥٧.

www.dawateislami.net

वाले सरासर गुमराह होंगे (या फ़रमाया : उस की त़रफ़ बुलाने वाले जहन्नमी होंगे ।) तो तुम्हारा किसी दरख़्त की टहनी को अपने दांतों के साथ मज़बूती से पकड़ लेना उन में से किसी की पैरवी करने से बेहतर है ।''(1)

फ़ितने के वक़्त क्या करें :

﴿907﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि लोग हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ैर के बारे में पूछते थे जब कि मैं शर के बारे में पूछा करता था इस डर से कि कहीं इस में मुब्तला न हो जाऊं । चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम जहालत और शर में थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें इस ख़ैर की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया तो क्या इस ख़ैर के बा'द कोई शर है ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''हां ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : तो क्या उस शर के बा'द भी ख़ैर होगी ?'' इरशाद फ़रमाया : ''हां ! फिर ख़ैर होगी लेकिन उस में कदूरत होगी ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''कदूरत से क्या मुराद है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''लोग मेरी सुन्नत के ख़िलाफ़ चलेंगे और मेरे त़रीक़े के इलावा त़रीक़ा इख़्तियार करेंगे । उन में बा'ज़ बातें अच्छी होंगी बा'ज़ बुरी । मैं ने अ़र्ज़ की : ''क्या उस ख़ैर के बा'द भी कोई बुराई आएगी ?'' इरशाद फ़रमाया : ''हां ! जहन्नम के दरवाज़े पर कुछ लोग होंगे जो जहन्नम की त़रफ़ बुलाएंगे जो उन की बात मानेगा उसे जहन्नम में डाल देंगे ।'' मैं ने पूछा : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मैं उस ज़माने को पाऊं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे क्या हुक्म फ़रमाते हैं ?'' फ़रमाया : ''मुसलमानों की जमाअ़त और उन के इमाम को पकड़े रहना ।'' अ़र्ज़ की : ''अगर मुसलमानों की कोई जमाअ़त हो न कोई इमाम तो फिर क्या हुक्म है ?'' फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन से अलग रहना । अगर्चे मौत आने तक तुम्हें दरख़्त की जड़ें चबाना पड़ें ।''(2)

फ़ितनों में मुब्तला होने की पहचान :

﴿908﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''बेशक दिलों पर फ़ितने छा जाएंगे । जो इन्हें अच्छा समझेगा

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الفتن، باب ذکر الفتن وملاحم، الحدیث:٤٢٤٦، ص١٥٣١.
مسندابی داؤدالطیالسی، احادیث حذیفۃ بن الیمان، الحدیث:٤٤٢، ص٥٩
2 ......صحیح مسلم، کتاب الإمارۃ، باب وجوب ملازمۃ جماعۃ المسلمین......الخ، الحدیث:٤٧٨٤، ص١٠٠٩.

www.dawateislami.net

उस के दिल पर सियाह धब्बा लगा दिया जाएगा और जो उन से नफ़रत करेगा उस के दिल पर सफ़ेद नुक्ता लगा दिया जाएगा। पस तुम में से जो येह चाहता है कि उसे मा'लूम हो जाए कि वोह फ़ितनों में मुब्तला है या नहीं ? तो वोह ग़ौर करे कि अगर जिसे वोह पहले ह़लाल समझता था अब ह़राम जानने लगा है या जिसे ह़राम जानता था अब ह़लाल समझने लगा है तो बिलाशुबा वोह फ़ितनों में मुब्तला है।"(1)

गुनाहों की नुहूसत :

﴾909﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है। जब दोबारा गुनाह करता है तो एक और नुक्ता लगा दिया जाता है। यहां तक कि (मुसलसल गुनाहों का इर्तिकाब करने की वज्ह से) उस का दिल ख़ाकी रंग की बकरी की त़रह़ हो जाता है।"(2)

﴾910﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! बेशक एक आदमी सुब्ह़ को उठेगा तो अपनी आंखों से देख रहा होगा लेकिन शाम के वक़्त उसे आंखों के गोशों से कुछ नज़र नहीं आएगा।"(3)

फ़ितनों के आने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ :

﴾911﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "फ़ितने तुम पर छांवें (या'नी पथ्थरों के छोटे छोटे टुकड़े) बरसाते आएंगे। फिर गर्म पथ्थर बरसाएंगे। इस के बा'द सियाह तारीक अन्धेरे की त़रह़ तुम पर छा जाएंगे।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الفتن،باب من كره الخروج......الخ،الحديث:٢٣٥،ج٨،ص٦٢٨۔
صحيح،مسلم،كتاب الايمان،باب رفع الامانة......الخ،الحديث:٣٦٩،ص٧٠٢.

2 ......شعب الإيمان للبيهقی،باب فی معالجة كل ذنب بالتوبة،الحديث:٧٢٠٥،ج٥،ص٤٤١،بتغير.

3 ......المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الفتن،باب من كره......الخ،الحديث:٣٩،ج٨،ص٥٩٨،مفهومًا.

4 ......المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الفتن،الحديث:٢٤،ج٨،ص٥٩٦۔
المستدرك،كتاب الفتن والملاحم،باب ذكر خروج المهدی،الحديث:٨٤٨٣،ج٥،ص٦٥٨.

www.dawateislami.net

﴾912﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू तुफ़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "तुम पर तीन फ़ितने आएंगे इस के बा'द चौथा फ़ितना दज्जाल की तरफ़ हांक कर ले जाएगा । एक वोह फ़ितना जिस में तुम पर गर्म पथ्थर बरसाए जाएंगे । दूसरा वोह फ़ितना जिस में छोटे छोटे पथ्थर बरसाए जाएंगे । तीसरा वोह फ़ितना जो सियाह अन्धेरा है जो समन्दर की तरह जोश मारेगा और चौथा फ़ितना दज्जाल की तरफ़ हांक कर ले जाएगा ।"(1)

फ़ितनों से बचो !

﴾913﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्मारा बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! फ़ितनों से बचो ! कोई उन के क़रीब न जाए । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो फ़ितनों में पड़ेगा वोह उसे इस तरह तेहस नेहस कर देंगे जिस तरह सैलाब खेती व सब्ज़े को तेहस नेहस कर देता है । बिलाशुबा फ़ितने मुश्तबा हो कर आएंगे । यहां तक कि जाहिल कहेंगे येह तो शुबे में डाल रहा है और उन की हक़ीक़त उस वक़्त खुलेगी जब वोह पीठ फेर कर जाएंगे । चुनान्चे, जब तुम इन फ़ितनों को देखो तो अपने घरों में बैठे रहो । अपनी तल्वारों को तोड़ डालो और अपनी कमानों के टुकड़े टुकड़े कर दो ।"(2)

﴾914﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "बेशक फ़ितने वक़्फ़े वक़्फ़े से आएंगे और यकायक भी । पस जो इन वक़्फ़ों के दरमियान मर सकता हो ज़रूर मर जाए । वक़्फ़े से मुराद तल्वार को नियाम में डाल लेना है ।"(3)

﴾915﴿.....हज़रते सय्यिदुना हम्माम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि जिस में सिर्फ़ वोह शख़्स नजात पाएगा जो डूबने वाले की दुआ़ जैसी दुआ़ करेगा ।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفتن، باب من کرہ الخروج فی الفتنة و تعوذ عنها، الحدیث:٢٤، ج٨، ص٥٩٦.

2 ......المستدرك، کتاب الفتن و الملاحم، باب إياك و الفتن لايشخص لها أحد، الحدیث:٨٤٣٤، ج٥، ص٦٣٨ـ
جامع معمربن راشد مع المصنف لعبدالرزاق، کتاب الجامع، باب الفتن، الحدیث:٢٠٩٠٦، ج١٠، ص٣٠٨.

3 ......المستدرك، کتاب الفتن و الملاحم، باب ذكر فتنة الدجال، الحدیث:٨٣٨٢، ج٥، ص٦١٨، بتغيرٍ.

4 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفتن، الحدیث:٣٧/٣٨، ج٨، ص٥٩٨.

www.dawateislami.net

﴾916﴿.....हज़रते सय्यिदुना हब्बा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अर्ज़ की : "फ़ितने का ज़माना आ चुका है लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो अहादीस इस बारे में सुनी हैं मुझे सुनाएं।" हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या यक़ीन या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब तुम्हारे पास नहीं आई ?"

फ़ितना अ़क़्ल को बिगाड़ देता है :

﴾917﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "फ़ितना शराब से ज़ियादा लोगों की अ़क़्लों को बिगाड़ देता है।"(1)

फ़ितने का वबाल किस पर ?

﴾918﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते सुना कि "फ़ितने का वबाल तीन आदमियों के सर है। एक अ़क़्लमन्द ज़हीन जिस के सामने जो चीज़ भी सर उठाती है वोह तल्वार के साथ उस का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर देता है। दूसरा ख़त़ीब जो अपने ख़िताब से लोगों को फ़ितने की त़रफ़ बुलाता है और तीसरा सरदार है। पहले दो को तो फ़ितना मुंह के बल गिरा देगा जब कि सरदार को बरअंगेख़्ता करता रहेगा यहां तक कि जो कुछ उस के पास होगा सब तबाहो बरबाद हो जाएगा।"(2)

ज़िन्दों में मुर्दा कौन ?

﴾919﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू तुफ़ैल رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते सुना कि "ऐ लोगो ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे ? लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ैर के बारे में पूछते थे और मैं शर के बारे में सुवाल करता था। क्या तुम मुझ से ज़िन्दों में मुर्दा के बारे में सुवाल नहीं करोगे ?" फिर फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया तो उन्हों ने लोगों को

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الفتن، باب من کرہ الخروج فی الفتنۃ وتعوذ عنھا، الحدیث:۲۳۷، ج۸، ص۶۲۸.

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الفتن، باب من کرہ الخروج......الخ، الحدیث:۲۷، ج۸، ص۵۹۶، مفھومًا.

www.dawateislami.net

गुमराही से हिदायत और कुफ़्र से ईमान की त़रफ़ बुलाया। पस जिस ने दा'वत क़बूल करनी थी उस ने की। जो शख़्स पहले मुर्दा था वोह क़बूले ह़क़ की वज्ह से ज़िन्दा हो गया और जो पहले ज़िन्दा था वोह मुर्दा हो गया। अब सिलसिलए नबुव्वत ख़त्म हो गया। चुनान्चे, नबुव्वत के तौर त़रीक़े पर ख़िलाफ़त क़ाइम हुई फिर ज़ुल्म व ज़ियादती वाली बादशाहत क़ाइम हुई। पस बा'ज़ लोग अपने दिल, हाथ और ज़बान से उस बादशाहत का इन्कार करेंगे और येह वोह होंगे जो ह़क़ को मुकम्मल करने वाले होंगे और बा'ज़ लोग ऐसे होंगे जो दिल और ज़बान से तो इस का इन्कार करेंगे लेकिन हाथों को इस के इन्कार से रोके रखेंगे। ला मुह़ाला ऐसे लोग ह़क़ के एक शो'बे को तर्क कर देंगे और बा'ज़ लोग दिल से तो बादशाहत का इन्कार करेंगे लेकिन हाथ और ज़बान को इस के इन्कार से रोके रखेंगे ला मुह़ाला ऐसे लोग ह़क़ के दो शो'बों को तर्क करेंगे और लोगों में से बा'ज़ वोह हैं कि जो ऐसी बादशाहत का दिल और ज़बान से इन्कार नहीं करते। पस ऐसे लोग ज़िन्दों में मुर्दा हैं।"(1)

﴾920﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुल्फ़ुलह जो'फ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं चाहूं तो तुम्हें अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की हज़ार बातें ऐसी बताऊं कि तुम उन की वज्ह से मुझ से मह़ब्बत करने, मेरी इत्तिबाअ़ करने और मेरी तस्दीक़ करने लगो और अगर चाहूं तो हज़ार बातें ऐसी बताऊं कि जिन की वज्ह से तुम मुझ से बुग़्ज़ व नफ़रत करने, मुझ से दूर भागने और मुझे झुटलाने लगो।"(2)

﴾921﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं चाहूं तो तुम्हें एक हज़ार ऐसी बातें सुना सकता हूं जिन्हें सुन कर तुम मेरी तस्दीक़ करो, मेरी इत्तिबाअ़ करो और मेरी मदद करने लगो और अगर चाहूं तो एक हज़ार ऐसी बातें भी सुना सकता हूं जिन्हें सुन कर तुम मुझे झुटलाओ, मुझ से दूर भागो और मुझे गालियां देने लगो ह़ालांकि वोह बातें अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की त़रफ़ से सच्ची हैं।"(3)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث حذيفة بن اليمان، الحديث:۲۳۴۹۲، ج۹، ص۱۱۴۔
المصنف لابن ابی شيبة، کتاب الفتن، باب من کره الخروج......الخ، الحديث:۱۲۳، ج۸، ص۶۶۷، مختصراً.

2 ......المعجم الكبير، الحديث:۳۰۰۵، ج۳، ص۱۶۳، بتغير. 3 ......المرجع السابق، مختصراً.

www.dawateislami.net

﴾922﴿.....हज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं एक क़ौम के रहनुमा को जानता हूं कि वोह खुद तो जन्नत में जाएगा लेकिन उस के पैरूकार जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे।" रावी कहते हैं : "हम ने अ़र्ज़ की : "क्या येह वोह तो नहीं है जिस के बारे में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हमें बताया है ?" फ़रमाया : "तुम्हें क्या मा'लूम कि उस से पहले कितने गुज़र गए हैं।"

﴾923﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़रमाते सुना कि "गोया मैं एक सुवार को देख रहा हूं जो तुम्हारे दरमियान इक़ामत इख़्तियार करता है और दा'वा करता है कि सारी ज़मीन हमारी और सारे अमवाल हमारे हैं। वोह बेवाओं, मिस्कीनों और उस माल के दरमियान हाइल है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के आबाओ अज्दाद को अ़ता फ़रमाया।"

दिल चार क़िस्म के होते हैं :

﴾924﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू बख़्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "दिल चार क़िस्म के हैं : एक वोह जो पर्दों में लिपटा हुवा है। येह काफ़िर का दिल है। दूसरा वोह जो उल्टा झुका हुवा है। येह मुनाफ़िक़ का दिल है। तीसरा वोह जो साफ़ सुथरा है। जिस में एक रौशन चराग़ है। येह मोमिन का दिल है और चौथा वोह जिस में निफ़ाक़ व ईमान दोनों हैं। ईमान की मिसाल उस दरख़्त की सी है जिसे पाकीज़ा पानी परवान चढ़ाता है और निफ़ाक़ की मिसाल उस ज़ख़्म की सी है जिस में पीप व ख़ून भरा होता है। पस उन में से जो दूसरे पर ग़लबा पा ले वोही ग़ालिब हो जाता है।"(1)

﴾925﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़बान की तेज़ी की शिकायत की तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम (दिन में) कितनी बार इस्तिग़फ़ार करते हो ? बेशक मैं तो हर रोज़ 100 बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करता हूं।"(2)

﴾926﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि "घर वालों पर मेरी ज़बान तेज़ हो जाती है और मैं डरता हूं कि

❶......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفتن، باب من کرہ الخروج......الخ، الحدیث:۲۸۷، ج۸، ص۶۳۷.

❷......السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلة، باب مایقول من......الخ، الحدیث:۱۰۲۸۴، ج۶، ص۱۱۷.

www.dawateislami.net

कहीं येह मुझे जहन्नम में न ले जाए।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम (दिन में) कितनी बार इस्तिग़्फ़ार करते हो ? बेशक मैं रोज़ाना 100 बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करता हूं।"(1)

फ़क़्रो फ़ाक़ा आंखों की ठन्डक :

﴾927﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अबैज़ मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मेरी आंखों को ज़ियादा ठन्डक उन अय्याम में पहुंचती है जिन में मेरे घर लौटने पर घर वाले फ़ाक़े की शिकायत करते हैं।"(2)

﴾928﴿.....हज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन क़सीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَكِيْم से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मेरी आंखों को सब से ज़ियादा ठन्डक उस वक़्त पहुंचती है जब घर वाले मुझ से फ़क़्रो फ़ाक़ा की शिकायत कर रहे हों और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दए मोमिन की दुन्या से इस त़रह़ हिफ़ाज़त फ़रमाता है जिस त़रह़ मरीज़ के घर वाले मरीज़ को खाने से परहेज़ करवाते हैं।"(3)

﴾929﴿.....हज़रते सय्यिदुना साइद बिन सा'द बिन हुज़ैफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि मेरी आंखों को सब से ज़ियादा ठन्डक उस दिन पहुंचती है और मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब वोह दिन है कि जिस दिन मैं घर आऊं और अपने घर वालों के पास खाने की कोई चीज़ न पाऊं और वोह मुझे कहें कि तुम थोड़े बहुत पर भी क़ुदरत नहीं रखते हो (कि कमा सको) येह इस लिये कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "जितना परहेज़ मरीज़ के घर वाले मरीज़ को खाने से करवाते हैं। इस से बढ़ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दए मोमिन की दुन्या से हिफ़ाज़त फ़रमाता है और जिस क़दर एक बाप अपनी औलाद को ख़ैरिय्यत से रखना चाहता है इस से भी कहीं ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दए मोमिन को आज़माइश में रखना चाहता है।"(4)

---

1 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم و اللیلۃ، باب مایقول من......الخ، الحدیث:١٠٢٨٥، ج٦، ص١١٧.

2 ......شعب الإیمان للبیھقی، باب فی الصبرعلی المصائب، الحدیث:١٠١٢١، ج٧، ص٢٣١.

3 ......الزھدلھنادبن السری، باب ماجاء فی الفقر، الحدیث:٥٩٣، ج١، ص٣٢٦.

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٣٠٠٤، ج٣، ص١٦٢.

www.dawateislami.net

﴾930﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "जब हम दुन्या में मुब्तला हो जाएंगे तो आप हमें किस हालत में देखना पसन्द करेंगे ?" उन्हों ने फ़रमाया : "हम ऐसा ज़माना नहीं पाएंगे ।" हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "हज़रते सा'द (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) को उन के गुमान के मुताबिक़ और मुझे मेरे गुमान के मुताबिक़ दुन्या अ़ता की गई ।"(1)

सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आजिज़ी व इन्किसारी :

﴾931﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सीरीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब मदाइन तशरीफ़ लाए तो दराज़ गोश के पालान पर सुवार थे और हाथ में एक रोटी और एक बोटी थी जिसे आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दराज़ गोश पर बैठे बैठे तनावुल फ़रमा रहे थे ।"(2)

﴾932﴿.....येह रिवायत भी साबिक़ा रिवायत ही की त़रह़ है । अलबत्ता इस के रावी हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन मुसर्रिफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं और इस में इतना ज़ाइद है कि "हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने पाउं एक त़रफ़ किये हुवे थे ।"(3)

ख़ुशामद से बचो :

﴾933﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़मारा बिन अ़ब्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! फ़ितनों की जगहों से बचो ।" किसी ने पूछा : 'ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ! फ़ितनों की जगहें कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "उमरा के दरवाज़े । क्यूंकि जब तुम में से कोई किसी अमीर के पास जाता है तो वोह उस की झूटी बात में भी तस्दीक़ करता है और उस की वोह ख़ूबियां बयान करता है जो उस में नहीं होतीं (या'नी ख़ुशामद करता है) ।"(4)

---

1 ......الزهدلهنادبن السری،باب معیشة أصحاب النبی،الحدیث:۷۷۲،ج۲،ص۳۹۷.

2 ......الزهدلهنادبن السری،باب التواضع،الحدیث:۸۰۹،ج۲،ص۴۵۱.

3 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الجهاد،باب فی امام السریة یأمرهم......الخ،الحدیث:۱۱،ج۷،ص۷۳۷.

4 ......جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق،کتاب الجامع،باب ابواب السلطان،الحدیث:۲۹۸۰۹،ج۱۰،ص۲۸۰.

www.dawateislami.net

﴾934﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और अ़र्ज़ की : "मेरे लिये दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमा दीजिये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के लिये दुआ़ न फ़रमाई और फ़रमाया : "अगर मैं इस गुनाहगार के लिये दुआ़ कर देता तो येह कहता फिरता कि हुज़ैफ़ा ने मेरे लिये मग़फ़िरत की दुआ़ की है।" फिर (कुछ देर बा'द) उस से फ़रमाया : "क्या तू इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हुज़ैफ़ा के साथ रखे। फिर दुआ़ फ़रमाई : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे हुज़ैफ़ा के साथ रखना।"(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल :

﴾935﴿.....हज़रते सय्यिदुना रिबई बिन ख़िराश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी वफ़ात के वक़्त कहने लगे : "कितने दिन मौत मेरे पास आई लेकिन मुझे उस में तरद्दुद न हुवा जब कि आज मुख़्तलिफ़ ख़यालात दिल पर गुज़र रहे हैं न मा'लूम किस ख़याल पर मेरी मौत वाक़ेअ़ होगी।"(2)

﴾936﴿.....हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि कोई शख़्स हो जो मेरे माल का ख़याल रखे फिर मैं दरवाज़ा बन्द कर लूं और मेरे पास कोई न आए यहां तक कि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जा मिलूं।"(3)

﴾937﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस हालत में अपने बन्दे को देखना चाहता है उस में पसन्दीदा तरीन हालत येह है कि बन्दा अपने चेहरे को मिट्टी से आलूदा किये हुवे हो।"(4)

﴾938﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे इस उम्मत पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ इस बात का है कि वोह

1......الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم۲۳۲۵ابراھیم النخعی،ج۶ ،ص۲۸۴،مختصرًا.

2......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزھد،کلام حذیفة،الحدیث:۱۰،ج۸،ص۲۰۱ .

3......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزھد،کلام حذیفة،الحدیث:۵،ج۸،ص۲۰۱،بتغیر.

4......الزھدللامام احمدبن حنبل،أخبارحذیفة بن الیمان،الحدیث:۱۰۰۵،ص۱۹۹،بتغیر.

www.dawateislami.net

अपनी राए को अपने इल्म पर तरजीह देंगे और गुमराह हो जाएंगे और उन्हें अपनी गुमराही का शुऊर न होगा।"(1)

﴾939﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि "तुम में बेहतरीन लोग वोह नहीं जो आख़िरत की ख़ातिर दुन्या को तर्क कर दें या दुन्या की ख़ातिर आख़िरत को नज़र अन्दाज़ कर दें बल्कि बेहतरीन लोग वोह हैं जो दोनों से ज़रूरत के मुताबिक़ हिस्सा लें।"(2)

मक़ामे महमूद :

﴾940﴿.....हज़रते सय्यिदुना सिला बिन ज़ुफ़र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : सब लोग एक वसीअ़ मैदान में जम्अ़ किये जाएंगे। वहां किसी को बात करने की जुरअत न होगी। चुनान्चे, सब से पहले हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाया जाएगा। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं हाज़िर हूं। सारी भलाई तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में है और बुराई तेरी त़रफ़ से नहीं।(3) जिसे तू ने चाहा हिदायत दी। तेरा बन्दा तेरी बारगाह में हाज़िर है। मेरा तअ़ल्लुक़ तेरे साथ है और मुझे तुझी से ग़रज़ है। तेरे सिवा नजात व पनाह की कोई जगह नहीं। तू बरकत वाला और बुलन्द रुत्बे वाला है। ऐ रब्बे का'बा ! तेरी ज़ात पाक है।" हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : क़ुरआने करीम की इस आयते करीमा में इसी त़रफ़ इशारा है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

عَسٰۤی اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾
(پ۱۵،بنی اسرائیل:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी ह़म्द करें। (4)

---

1 .....الزھدلھنادبن السری،باب الورع،الحدیث:۹۳۵،ج۲،ص۴۶۵.

2 .....فردوس الأخبارللدیلمی،باب اللام،الحدیث:۵۲۹۰،ج۲،ص۲۱۲،مفھومًا،راوی انس بن مالک.

3 .....अगर्चे हर ख़ैर व शर का ख़ालिक़ अल्लाह तआ़ला ही है लेकिन उस बारगाह का अदब येह है कि ख़ैर को उस की त़रफ़ मन्सूब किया जाए और शर को अपनी त़रफ़, जिस त़रह हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का क़ौल है : وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ ﴿ۙ۸۰﴾ (پ۱۹،الشعرآء:۸۰) "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मैं बीमार होऊं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है।" बीमारी को अपनी त़रफ़ मन्सूब किया और शिफ़ा को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़।

4 .....مسندابی داؤدالطیالسی،احادیث حذیفۃ بن الیمان،الحدیث:۴۱۴،ص۵۵۔
البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار،مسندحذیفۃ بن الیمان،الحدیث:۲۹۲۶،ج۷،ص۳۲۹.

www.dawateislami.net

﴾941﴿.....हज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किसी ने पूछा : "क्या बनी इस्राईल ने एक ही दिन में अपने दीन को छोड़ दिया था ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि जब उन्हें किसी काम के बजा लाने का हुक्म दिया जाता तो वोह उसे तर्क कर देते और जब किसी काम से रोका जाता तो उसे कर गुज़रते थे यहां तक कि आहिस्ता आहिस्ता अपने दीन से इस त़रह़ निकल गए जिस त़रह़ आदमी अपनी क़मीस से निकल जाता है ।"(1)

"اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر" तर्क करने का वबाल

﴾942﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सीदान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो उस पर जो हमारे त़रीक़े पर न हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते रहो वरना तुम एक दूसरे को क़त्ल करने लगोगे और तुम्हारे बुरे तुम्हारे नेकों पर ग़ालिब आ जाएंगे और वोह नेक लोगों को क़त्ल कर देंगे। यहां तक कि कोई एक भी बाक़ी न बचेगा जो नेकी का हुक्म करे और बुराई से मन्अ़ करे। फिर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगोगे लेकिन वोह तुम पर नाराज़ होने की वज्ह से तुम्हारी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाएगा।"(2)

﴾943﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू रुक़ाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं अपने आक़ा के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गया उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमा रहे थे कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में कोई शख़्स ऐसी बात कह देता था जिस से वोह मुनाफ़िक़ हो जाता था और अब मैं तुम से एक ही मजलिस में 4-4 मरतबा वोह बात सुनता हूं। तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते रहो और दूसरों को नेकी की तरग़ीब दिलाते रहो वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा देगा और बद तरीन लोग तुम पर हुक्मरानी करने लगेंगे। फिर तुम्हारे नेक लोग दुआ़ करेंगे लेकिन उन की दुआ़ क़बूल न की जाएगी।"(3)

---

1 ......السنة لابی بکر بن الخلال،باب مناکحة المرجئة،الحدیث:۱۳۳۲،ج۳،ص۳۹۵.

2 ......موسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب الامربالمعروف......الخ،الحدیث:۱۶،ج۲،ص۱۹۸،بدون"واللّٰہ، بینکم".

3 ......المسندللامام احمدبن حنبل،الحدیث:۲۳۳۷۲،ج۹،ص۸۷.

www.dawateislami.net

﴾944﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ब्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब भी कोई क़ौम एक दूसरे पर ला'न ता'न करने में मुब्तला होती है तो उन पर बात (या'नी अ़ज़ाब व सज़ा) साबित हो जाती है ।"(1)

﴾945﴿.....हज़रते सय्यिदुना नज़्ज़ाल बिन सबरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह एक घर में जम्अ़ थे कि हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मुझे आप के बारे में कैसी ख़बर पहुंची है ?" उन्हों ने कहा : "मैं ने क्या कहा है ?" हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "तुम सब से ज़ियादा सच्चे और नेक हो ।" रावी फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले गए तो मैं ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! जो बात आप की त़रफ़ मन्सूब है क्या वाक़ेई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह बात नहीं कही ?" फ़रमाया : "हां ! क्यूं नहीं ! लेकिन मैं दीन के बा'ज़ मुआ़मलात में तोरिया(2) करता हूं इस डर से कि कहीं सारा दीन न जाता रहे ।"(3)

﴾946﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि उस वक़्त तुम में बेहतरीन शख़्स वोह होगा जो "اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر" नहीं करेगा ।"(4)

---

(1)......جامع معمر بن راشد مع المصنف لعبدالرزاق، کتاب الجامع، باب اللعن، الحدیث:۱۹۷۰٤، ج۱۰، ص۳۰.

(2).....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 160 पर है : "तोरिया या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर उस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं, ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है। तोरिया की मिसाल येह है कि तुम ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है : मैं ने खाना खा लिया। इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि उस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है। (मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं) एह़याए ह़क़ के लिये तोरिया जाइज़ है।" (मुलख़्ख़सन)

(3)......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الجهاد، باب ما قالوا فی......الخ، الحدیث:۱۵، ج۷، ص٦٤٣، بتغیر.

(4)......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفتن، باب من کره الخروج فی......الخ، الحدیث:۲٤۱، ج۸، ص٦۲۹.

www.dawateislami.net

﴾947﴿.....हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन अबी साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मोमिन से मुख़्लिस रहो और काफ़िर से (ब इजाज़ते शरई) राहो रस्म रखो[1] और अपने दीन को ऐबदार न करो।"

﴾948﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू शा'सा मुहारिबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "निफ़ाक़ जाता रहा, अब ईमान है या कुफ़्र[2]।"[3]

﴾949﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस दौर के मुनाफ़िक़ीन ज़मानए रिसालत के मुनाफ़िक़ीन से बदतर हैं क्यूंकि वोह अपना निफ़ाक़ छुपाते थे जब कि येह अपना निफ़ाक़ ज़ाहिर करते हैं।"[4]

﴾950﴿.....हज़रते सय्यिदुना शमिर बिन अ़तिय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स से फ़रमाया : "क्या लोगों में बदतरीन शख़्स को क़त्ल करना तुम्हें खुश करता है ?" उस ने कहा : "जी हां।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "फिर तो तुम इस से भी ज़ियादा बदतर हो।"[5]

1.....कुफ़्फ़ार के साथ हुस्ने सुलूक, कुफ़्र और कुफ़्र पर मदद व इआ़नत के इलावा दीगर मुआ़मलात में हो सकता है मसलन मुशरिक पड़ोसी के साथ हक़्क़े पड़ोस की अदाएगी और काफ़िर बाप की ग़ैर कुफ़्रिय्या मुआमलात में इताअ़त वग़ैरा, वगरना कुफ़्फ़ार से मुवालात (या'नी मेल जोल) नाजाइज़ व हराम है, चुनान्चे, सय्यिदी आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "क़ुरआने अ़ज़ीम ने ब कसरत आयतों में तमाम कुफ़्फ़ार से मुवालात (या'नी मेल जोल, बाहमी इत्तिहाद, आपस की दोस्ती) क़त्अ़न हराम फ़रमाई, मजूस (आग के पुजारी) हों ख़्वाह यहूदो नसारा (यहूदी व ईसाई) हों, ख़्वाह हुनूद (हिन्दू) और सब से बदतर मुरतद्दाने उ़नूद (दीने हक़ से बग़ावत करने वाले मुर्तद्दीन) (फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 273), हां ! दुन्यवी मुआ़मलात मसलन ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा (अपनी शराइत़ के साथ) जिस से दीन पर ज़रर (नुक़्सान) न हो मुर्तद्दीन के इलावा किसी से ममनूअ़ नहीं (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 331 मुलख़्ख़सन) मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ (मुख़र्रजा) के मज़्कूरा मक़ामात का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

2.....या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में वक़्ती मस्लहतों के मा तह्त मुनाफ़िक़ों को क़त्ल न किया गया। अगर्चे उन से अ़लामाते कुफ़्र ज़ाहिर हुईं ताकि कुफ़्फ़ार हमारी ख़ानाजंगी से फ़ाइदा न उठाएं उस ज़माने में तीन क़िस्म के लोग माने गए काफ़िर, मोमिन और मुनाफ़िक़, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द निफ़ाक़ कोई चीज़ नहीं, या कुफ़्र है या इस्लाम। अगर किसी से अ़लामाते कुफ़्र देखी गईं क़त्ल किया जाएगा, खुला काफ़िर भी क़त्ल होगा, छुपा भी क्यूंकि वोह मुर्तद है।
(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 81)

3.....صحیح البخاری، کتاب الفتن، باب اذا قال عند قوم شیئًا......الخ، الحدیث:٧١١٤، ص٥٩٣، مفهومًا.

4.....مسندابی داؤدالطیالسی، احادیث حذیفة بن الیمان، الحدیث:٤١٠، ص٥٥.

5.....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفتن، باب من کره الخروج فی......الخ، الحدیث:٢٨٦، ج٨، ص٦٣٧.

www.dawateislami.net

﴾951﴿.....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन हुज़ैफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़रमाते हुवे सुना कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने एक बालिश्त भी जमाअ़त से अ़लाहिदगी इख़्तियार की उस ने इस्लाम को छोड़ दिया[1] ।"[2]

﴾952﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन हम्माम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ क़ारियों के गुरौह ! सीधे रास्ते पर गामज़न रहो क्यूंकि अगर सीधे रास्ते पर चलते रहे तो बहुत आगे निकल जाओगे लेकिन अगर दाएं बाएं हो गए तो दूर की गुमराही में जा गिरोगे ।"[3]

﴾953﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "तुम पर ज़रूर ऐसे हुक्मरान भी होंगे कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उन में से किसी का मक़ाम जव के छिलके के बराबर भी न होगा ।"[4]

आख़िरत की तय्यारी का दर्स :

﴾954﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं जुमुआ़ की नमाज़ के लिये अपने वालिद के हमराह मदाइन गया । जामेअ़ मस्जिद हम से तीन मील

1.....या'नी जो एक साअ़त के लिये अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ीदे से अलग हुवा किसी मा'मूली अ़क़ीदे में भी उन का मुख़ालिफ़ हुवा तो आइन्दा उस के इस्लाम का ख़त़रा है, जैसे बकरी वोही मह़फ़ूज़ रहती है जो मीख़ से बंधी रहे । मालिक की क़ैद से आज़ाद हो जाना बकरी की हलाकत है, मुसलमानों की जमाअ़त नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रस्सी है जिस में हर सुन्नी बंधा हुवा है येह न समझो कि फ़र्ज़ का इन्कार ही ख़त़रनाक है कभी मुस्तह़ब्बात का इन्कार भी हलाकत का बाइस बन जाता है, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने सिर्फ़ ऊंट के गोश्त से बचना चाहा था कि रब तआ़ला ने फ़रमाया : يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِی السِّلْمِ كَآفَّةً۪ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّیْطٰنِؕ (پ۲،البقرۃ:۲۰۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! इस्लाम में पूरे दाख़िल हो और शैत़ान के क़दमों पर न चलो । तफ़्सीरे कबीर में इस का शाने नुज़ूल येह बयान किया गया है कि "अहले किताब में से हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) और उन के अस्ह़ाब हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के बा'द शरीअ़ते मूसवी (या'नी हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शरीअ़त) के बा'ज़ अह़काम पर क़ाइम रहे । हफ़्ते के दिन की ता'ज़ीम करते इस रोज़ शिकार से इजतिनाब लाज़िम जानते और ऊंट के दूध और गोश्त से परहेज़ करते और येह ख़याल करते कि येह चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह़ हैं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 177 التفسیر الکبیر،البقرہ،تحت الآیۃ:۲۰۸)

2.....المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الفتن،باب من کرہ الخروج فی......الخ،الحدیث:۳۶،ج۸،ص۵۹۷،مفهومًا.

3.....البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار،مسندحذیفۃ بن الیمان،الحدیث:۲۹۵۶،ج۷،ص۳۵۸.

4.....مسندابن الجعد،شریك عن سماك،الحدیث:۲۳۳۴،ص۳۳۹.

www.dawateislami.net

के फ़ासिले पर थी । इन दिनों ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदाइन के गवर्नर थे । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे, ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : "क़ियामत क़रीब आ चुकी और चांद शक़ हो गया । हां ! हां ! चांद दो टुकड़े हो चुका है और दुन्या जुदाई का ए'लान कर चुकी है । आज दौड़ का मैदान है और कल दौड़ का मुक़ाबला होगा ।" रावी कहते हैं : "मैं ने अपने वालिद से "दौड़ के मुक़ाबले" का मत़लब दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि इस से जन्नत की त़रफ़ सबक़त ले जाना मुराद है ।"(1)

जन्नत से मह़रूमी :

﴾955﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना कुरदूस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदाइन में ख़ुत़बा देते हुवे फ़रमाया : ऐ लोगो ! अपने गुलामों की आमदनी में अच्छी त़रह़ ग़ौर किया करो, ह़लाल हो तो इस्ति'माल करो वरना क़बूल न करो । क्यूंकि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना है कि "ह़राम से पलने वाला जिस्म जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ।"(2)

आ़लिम की निशानी और झूटे की पहचान :

﴾956﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम आ़मिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि "आदमी के आ़लिम होने के लिये इतनी बात काफ़ी है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरे और उस के झूटा होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि वोह कहे : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता हूं और फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाए ।"(3)

ह़राम की नुह़ूसत :

﴾957﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक अह़मरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुवे सुना कि "शराब बेचने वाला शराब पीने वाले की त़रह़ है और ख़िन्ज़ीरों की देख भाल करने वाला ख़िन्ज़ीर खाने वाले की त़रह़ है ।" अपने ख़ादिमों को देखो कि वोह कहां से कमा कर लाते हैं । क्यूंकि ह़राम से परवरिश पाने वाला कोई जिस्म जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ।"(4)

---

1 ......المستدرك، كتاب اهوال، باب خطبة حذيفه، الحديث:٨٨٣٦، ج٥، ص٨٣٤.

2 ......المصنف لعبدالرزاق، كتاب الاشربة، باب ما يقال فى الشراب، الحديث:١٧٣٨٥، ج٩، ص١٥٠، مفهومًا.

3 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام حذيفة، الحديث:٢، ج٨، ص٢٠٠.

4 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، أخبار حذيفة بن اليمان، الحديث:١٠٠٤، ص١٩٩.

www.dawateislami.net

न ख़ुशूअ़ रहेगा न नमाज़ों का जज़्बा :

﴾958﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भतीजे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز फ़रमाते हैं : मैं 45 साल से ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुन रहा हूं कि "दीन में से सब से पहले ख़ुशूअ़ जाता रहेगा और सब से आख़िर में लोगों में नमाज़ में सुस्ती ज़ाहिर होगी।"(1)

मुनाफ़िक़ कौन है ?

﴾959﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुनाफ़िक़ के बारे में पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुनाफ़िक़ वोह है जो इस्लाम की ता'रीफ़ तो करे लेकिन इस पर अ़मल पैरा न हो।"(2)

सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के वाक़िआ़त :

﴾960﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मरज़ुल मौत में वहां मौजूद एक शख़्स ने बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर आज का दिन मेरे लिये दुन्या का आख़िरी और आख़िरत का पहला दिन न होता तो मैं कोई बात न करता। (फिर अ़र्ज़ की :) ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू जानता है कि मैं ग़ुरबत व नादारी को मालदारी पर, ज़िल्लत को इ़ज़्ज़त पर और मौत को ज़िन्दगी पर तरजीह देता हूं। ह़बीब फ़क़्र की ह़ालत में आया है। जो पशेमान होगा वोह कामयाब नहीं होगा।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया।"(3)

﴾961﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने फ़रमाया : "ह़बीब फ़क़्र की ह़ालत में

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام حذیفة، الحدیث:۱۱، ج۸، ص۲۰۲.

2 ......المرجع السابق، کتاب الفتن، باب من کرہ الخروج فی......الخ، الحدیث:۳۰۷، ص۶٤۰.

3 ......موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، الحدیث:۳۵۵، ج۵، ص۳۸۳، مفھومًا.

www.dawateislami.net

आया है। जो पशेमान होगा वोह कामयाब नहीं होगा। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाता हूं जिस ने मुझे फ़ितने के फैलने और इस में मुब्तला होने से पहले ही अपने पास बुला लिया।"(1)

क़ीमती कफ़न ख़रीदने से मनअ़ फ़रमा दिया :

﴾962﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मरज़ुल मौत ने शिद्दत इख़्तियार की तो क़बीलए "बनू अ़ब्स" के कुछ लोग उन के पास ह़ाज़िर हुवे और मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन रबीअ़ अ़ब्सी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने बताया कि जब हम ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे उस वक़्त आप मदाइन में थे और आधी रात का वक़्त था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हम से वक़्त दरयाफ़्त फ़रमाया तो हम ने आधी रात या रात का आख़िरी पहर बताया तो उन्हों ने फ़रमाया : "मैं ऐसी सुब्ह़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं जो दोज़ख़ की त़रफ़ ले जाने वाली हो।" फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम अपने साथ कफ़न लाए हो ?" हम ने कहा : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "मेरे कफ़न में ग़ुलू न करना(2)। क्यूंकि अगर तुम्हारे रफ़ीक़ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ख़ैर व भलाई है तो यक़ीनन इस का कफ़न इस से बेहतर कपड़ों से बदल दिया जाएगा वरना येह कफ़न भी छीन लिया जाएगा।"(3)

﴾963﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का कफ़न लाया गया उस वक़्त वोह मेरे साथ टेक लगाए हुवे थे। फिर एक नया कफ़न

1.....موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، الحدیث:۱۳۰، ج۵، ص۳۳۵.

2.....जैसा कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कफ़न में ग़ुलू न करो क्यूंकि येह बहुत जल्द ख़राब हो जाता है" इस की शर्ह़ में आ़रिफ़ बिल्लाह, शैख़े मुह़क़्क़िक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस शरीफ़ का मक़्सद येह है कि कफ़न में इसराफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची की मुमानअ़त है।"

(اشعۃ اللمعات، کتاب الجنائز، ج۱، ص۷۱۸)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" सफ़ह़ा 818 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ई़दैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मैके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये। ह़दीस में है : "मुर्दों को अच्छा कफ़न दो कि वोह बाहम मुलाक़ात करते और अच्छे कफ़न से तफ़ाख़ुर करते या'नी ख़ुश होते हैं।" सफ़ेद कफ़न बेहतर है कि नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने मुर्दे सफ़ेद कपड़ों में कफ़नाओ।" (ردالمحتار، کتاب الصلوۃ، باب صلوۃ الجنازۃ، ج۳، ص۱۱۲۔ غنیۃ المتملی، ص۵۸۱-۵۸۲۔ جامع الترمذی، ابواب الجنائز، الحدیث:۹۹۶، ج۲، ص۳۰۱)

3.....الادب المفرد للبخاری، باب العبادۃ جوف اللیل، الحدیث:۵۰۴، ص۱۴۳، مفہومًا.

www.dawateislami.net

लाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम इस कफ़न का क्या करोगे अगर तुम्हारा रफ़ीक़ नेक है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के कफ़न को अच्छे कफ़न से बदल देगा और अगर सालेह़ नहीं है तो येह कपड़े क़ियामत तक के लिये क़ब्र के एक कोने में फेंक दिये जाएंगे।"(1)

300 दिरहम का कफ़न :

﴾964﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सिलह बिन ज़ुफ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़न लेने भेजा तो हम 300 दिरहम में उ़म्दा चादरों का एक कफ़न ख़रीद कर ले आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो कफ़न मेरे लिये ख़रीद कर लाए हो वोह मुझे दिखाओ।" हम ने दिखाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे क़बूल न करते हुवे फ़रमाया : "मेरे कफ़न के लिये तो दो सफ़ेद चादरें ही काफ़ी हैं जिन के साथ क़मीस न हो, क्यूंकि उन्हें भी मुझ पर नहीं रहने दिया जाएगा इस लिये कि या तो उन्हें इन से बेहतर चादरों में तब्दील कर दिया जाएगा या बदतर कपड़ों में बदल दिया जाएगा।" रावी फ़रमाते हैं : "फिर हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दो सफ़ेद चादरें ख़रीद लाए।"(2)

﴾965﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सिलह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सब्र की आ़दत बना लो ! अ़न क़रीब तुम पर एक मुसीबत आने वाली है। अलबत्ता ! तुम पर इस से ज़ियादा सख़्त मुसीबत नहीं आएगी जो हमें सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में पेश आई थी।"(3)

शिद्दते हिसाब :

﴾966﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ख़िराश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "एक ह़िसाब क़ब्र में होना है और एक क़ियामत के दिन। जो क़ियामत के दिन ह़िसाब में मुब्तला हुवा वोह अ़ज़ाब में फंस जाएगा।"(4)

---

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب وصية حذيفة بن اليمان، الحديث: ٥٦٨١، ج٤، ص٤٦٥، مفهومًا.

2 ......المعجم الكبير، الحديث: ٣٠٠٧، ج٣، ص١٦٣، مفهومًا.

3 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند حذيفة بن اليمان، الحديث: ٢٩٢٠، ج٧، ص٣٢٢.

4 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام حذيفة، الحديث: ٧، ج٨، ص٢٠١.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले, ताक़तवर नौजवान, मुतवाज़ेअ़ क़ारी और रोज़ेदार व इबादत गुज़ार सहाबी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हक़ गो और बा अ़मल थे। नीज़ बातिल से मुन्हरिफ़, लड़ाई झगड़े से कोसों दूर रहते थे। मिस्कीनों को खाना खिलाते, सलाम को फैलाते और पाकीज़ा गुफ़्तगू फ़रमाते थे।

अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक : "उ़म्दा अख़्लाक़ अपनाने और शरई अह़काम के आगे सरे तस्लीम ख़म करने का नाम **तसव्वुफ़** है।"

﴾967﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मेरे बारे में बताया गया कि मैं कहता हूं : "मैं सारी ज़िन्दगी दिन को रोज़ा रखूंगा और तमाम रात नवाफ़िल पढ़ा करूंगा।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मुझ से) इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम ने येह बात कही है कि मैं सारी ज़िन्दगी दिन को रोज़ा रखूंगा और तमाम रात नवाफ़िल पढ़ा करूंगा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! जी हां ! मैं ने येह बात कही है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम इस की ताक़त नहीं रखते।"(1)

﴾968﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ! मुझे ख़बर मिली है कि तुम रात में क़ियाम करने और दिन को रोज़ा रखने की मशक़्क़त उठाते हो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मैं ऐसा ही करता हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे लिये येही काफ़ी है कि हफ़्ते में 3 रोज़े रख लिया करो।" (फ़रमाते हैं :) मैं ने सख़्ती चाही तो मुझ पर सख़्ती की गई। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस की ताक़त रखता हूं।"

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب صوم الدھر، الحدیث:۱۹۷۶، ص۱۵۴۔
صحیح البخاری، کتاب أحادیث الأنبیاء، الحدیث:۳۴۱۸، ص۲۷۸۔

www.dawateislami.net

तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक तुम्हारी आंखों का भी तुम पर ह़क़ है। तुम्हारे मेहमानों का भी तुम पर ह़क़ है और तुम्हारे घरवालों का भी तुम पर ह़क़ है।"(1)

जज़्बए इबादत व शौक़े तिलावत :

﴾969﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से पूछा कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप के पास क्यूं तशरीफ़ लाए थे और क्या फ़रमाया था ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बताया कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ! मुझे इस बात की ख़बर मिली है कि तुम रात को क़ियाम करने और दिन को रोज़ा रखने की मशक़्क़त उठाते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेशक मैं ऐसा करता हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे लिये इतना काफ़ी है कि हर महीने में 3 रोज़े रखो जब तुम ऐसा करोगे तो गोया तुम ने हमेशा रोज़े रखे।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मैं ने सख़्ती चाही तो मुझ पर सख़्ती की गई। फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं इस से ज़ियादा की कुव्वत रखता हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक पसन्दीदा रोज़े ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रोज़े हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं : "अब मुझे बुढ़ापे और कमज़ोरी ने आ लिया है। काश ! मैं अपने माल और घरवालों को बत़ौरे तावान दे कर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रुख़्सत या'नी हर महीने 3 रोज़े रखना क़बूल कर लेता।"(2)

﴾970﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "मुझे ख़बर मिली है कि तुम बिगै़र नाग़ा किये रोज़ा रखते हो और बिगै़र आराम किये रात को नमाज़ पढ़ते हो। हफ़्ते में दो रोज़े रख लिया करो येह काफ़ी हैं।" फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "या

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسند عبداللّٰه بن عمروبن العاص،الحديث:٦٨٩٥،ج٢،ص٦٤١۔
سنن النسائی، کتاب الصیام،باب صوم یوم......الخ،الحدیث:٢٣٩٣،ص٢٢٤١.

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندعبداللّٰه عمروبن العاص،الحديث:٦٨٩٥،ج٢،ص٦٤١،مفهومًا.

www.dawateislami.net

रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस से ज़ियादा की ताक़त रखता हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फिर तुम्हारे लिये हज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रह़ रोज़े रखना काफ़ी हैं और येह रोज़ों का उ़म्दा त़रीक़ा है कि तुम एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन नाग़ा करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं इस से ज़ियादा की ताक़त रखता हूं।" तो इरशाद फ़रमाया : "शायद तुम इसी ह़ालत में बुढ़ापे को पहुंच जाओ और कमज़ोर हो जाओगे।"(1)

﴾971﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ह़कीम बिन सफ़्वान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : "मैं ने क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ कर लिया था और एक ही रात में पूरा पढ़ लिया करता था तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे अन्देशा है कि तुम्हारी उ़म्र ज़ियादा होगी तो तुम क़ुरआने मजीद की तिलावत से उक्ता जाओगे। लिहाज़ा महीने में एक बार क़ुरआने मजीद ख़त्म किया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे अपनी ताक़त व क़ुव्वत और जवानी से भरपूर फ़ाइदा उठाने दीजिये।" इरशाद फ़रमाया : "तो फिर 20 दिन में ख़त्म कर लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अपनी ताक़त व क़ुव्वत और जवानी से भरपूर फ़ाइदा उठाने दीजिये।" इरशाद फ़रमाया : "फिर हफ़्ते में एक बार ख़त्म कर लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे अपनी ताक़त व क़ुव्वत और जवानी से भरपूर फ़ाइदा उठाने दीजिये।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमा दिया।"(2)

﴾972﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन राफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बुढ़ापे को पहुंचे और क़ुरआने मजीद की क़िराअत दुश्वार मह़सूस होने लगी तो फ़रमाया : "जब मैं ने क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ किया तो ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "मैं ने क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ कर लिया है। अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये इस को पढ़ने की मिक़्दार मुक़र्रर फ़रमा

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ عمرو بن العاص، ج۲، الحدیث: ۶۸۹۳/۶۸۹۵، ص۶۴۱ مفہومًا.

2 ......سنن ابن ماجہ، ابواب اقامۃ الصلوات، باب فی کم یستحب یختم القرآن، الحدیث: ۱۳۴۶، ص۲۵۰۶۔
المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۶۸۹۰، ج۲، ص۶۳۹.

www.dawateislami.net

दीजिये।" इरशाद फ़रमाया : "महीने भर में पूरा कुरआने मजीद पढ़ लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से ज़ियादा की ताक़त रखता हूं।" फ़रमाया : "तो फिर महीने में 2 मरतबा पढ़ लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से भी ज़ियादा की ताक़त रखता हूं।" फ़रमाया : "तो फिर महीने में 3 मरतबा पढ़ लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से भी ज़ियादा की इस्तिताअ़त रखता हूं।" फ़रमाया : "तो फिर 6 दिन में पढ़ लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से भी ज़ियादा की कुव्वत रखता हूं।" फ़रमाया : "तो फिर 3 दिन में पढ़ लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से भी ज़ियादा की ताक़त रखता हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जलाल में आ कर फ़रमाया : "जाओ और पढ़ो।"(1)

﴾973﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "मेरे वालिद ने एक कुरैशी औ़रत के साथ मेरा निकाह़ कर दिया। जब वोह औ़रत मेरे पास आई तो चूंकि मुझ में नमाज़ व रोजे़ की बे पनाह कुव्वत थी इस लिये मैं नमाज़ रोजे़ में मसरूफ़ रहा और उस से शादी के बा'द के मुआ़मलात न किये। चुनान्चे, मेरे वालिद हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी बहू के पास तशरीफ़ लाए और उस से पूछा कि "तुम ने अपने शोहर को कैसा पाया ?" उस ने कहा : "तमाम मर्दों (यहां रावी को शक है) या येह कहा : तमाम शोहरों से बेहतर पाया वोह एक ऐसा शख़्स है कि उस ने न हमारे पहलू को तलाशा और न हमारे बिस्तर के क़रीब आया।" येह सुन कर मेरे वालिद ने मुझे सरज़निश (या'नी मलामत) करते हुवे फ़रमाया : "मैं ने कुरैश की उ़म्दा ह़सब वाली औ़रत से तुम्हारा निकाह़ कराया फिर औ़रतों ने इसे तुझ तक पहुंचाया और तुम ने ऐसा बरताव किया ?" फिर मेरे वालिद ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में मेरी शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलवाया, मैं ह़ाज़िर हुवा तो इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम दिन को रोज़ा रखते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या रात को इ़बादत करते हो ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" इरशाद फ़रमाया : "लेकिन मैं रोज़ा भी रखता हूं और इफ़्तार (या'नी नाग़ा) भी करता हूं। रात में नमाज़ भी पढ़ता हूं और आराम भी करता हूं और मैं औ़रतों के पास भी जाता हूं। तो जिस ने मेरी सुन्नत से रूगर्दानी

1......صحیح مسلم،کتاب الصیام،باب النھی عن صوم الدھرلمن......الخ،الحدیث:۲۷۳۰،ص۸٦٤،مفھومًا۔
سنن ابن ماجه،ابواب اقامة الصلوات،باب فی کم یستحب یختم القرآن،الحدیث:۱۳٤٦،ص۲۵۰٦،مختصرًا۔

www.dawateislami.net

की वोह मुझ से नहीं (या'नी मेरे त़रीके़ पर नहीं) ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर महीने एक मरतबा कु़रआने मजीद पढ़ा करो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं ।" इरशाद फ़रमाया : "तो हर 10 दिन में एक बार पढ़ लिया करो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से भी ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं ।" फ़रमाया : "तो हर 3 दिन में एक बार पढ़ लिया करो ।" फिर इरशाद फ़रमाया : "हर महीने 3 रोज़े रखा करो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं इस से ज़ियादा की इस्तित़ाअ़त रखता हूं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ों की ता'दाद बढ़ाते रहे यहां तक कि आख़िर में इरशाद फ़रमाया : "एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन न रखो कि येह सब से अफ़्ज़ल रोज़े हैं और येह मेरे भाई ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रोज़े हैं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में इतना ज़ाइद है कि फिर हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक हर इ़बादत गुज़ार के लिये एक तेज़ी और शिद्दत होती है और हर तेज़ी के बा'द सुस्ती व कमज़ोरी होती है जो सुन्नत या बिदअ़त के मुवाफ़िक़ होती है । पस जिस की कमज़ोरी सुन्नत के मुवाफ़िक़ हुई उस ने हिदायत पाई और जिस की बिदअ़त के मुवाफ़िक़ हुई वोह हलाक हो गया ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब ज़ईफ़ और उ़म्र रसीदा हो गए तो भी कई कई दिनों तक लगातार रोज़े रखते । फिर नाग़ा करते ताकि अपने अन्दर कु़व्वत जम्अ़ कर लें और इसी त़रह़ कभी अपने वज़ाइफ़ को बढ़ा देते तो कभी इन में कमी कर देते । अलबत्ता ! मुक़र्ररा ता'दाद को 3 या 7 दिनों में ज़रूर पुरा कर लेते और फ़रमाया करते कि "हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दी हुई रुख़्सत को क़बूल कर लेना मुझे इस बात से ज़ियादा मह़बूब है कि इस मुक़र्ररा ता'दाद में कमी बेशी करूं । लेकिन जिस ह़ालत पर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा हुवा हूं इस का ख़िलाफ़ करना मुझे पसन्द नहीं ।"(1)

ख़्वाब में इ़ल्म की बिशारत :

﴾974﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वाहिब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : मैं ने एक मरतबा ख़्वाब में देखा कि मेरी एक उंगली में घी और दूसरी में शहद है और मैं इन दोनों उंगलियों को चाट रहा हूं । सुब्ह़ मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث:٦٤٨٧، ج٢، ص٥٤٩.

www.dawateislami.net

"तुम 2 किताबों तौरात और क़ुरआने मजीद का इल्म ह़ासिल करोगे।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों किताबों का इल्म ह़ासिल किया।"(1)

﴾975﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान हुबुली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को फ़रमाते सुना कि "इस ज़माने में किसी नेकी को बजा लाना मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में इस से दुगना अ़मल करने से ज़ियादा मह़बूब है। क्यूंकि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में हमें आख़िरत की फ़िक्र रहती थी, दुन्या का कुछ ग़म न था जब कि आज दुन्या ने हमें अपनी त़रफ़ माइल कर लिया है।"(2)

अफ़्ज़ल अ़मल :

﴾976﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "इस्लाम का कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारा लोगों को खाना खिलाना और हर जानने और न जानने वाले को सलाम करना।"(3)

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल :

﴾977﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो, सलाम आ़म करो और खाना खिलाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"(4)

﴾978﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : "मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक ऐसी मजलिस इख़्तियार की, कि इस जैसी मजलिस न इस से पहले इख़्तियार की न इस के बा'द, इस मजलिस के बारे में मुझे अपने आप पर इतना रश्क आता है कि इस के इ़लावा किसी और मजलिस में शरीक होने पर इतना रश्क नहीं आता।"(5)

---

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندعبداللّٰہ بن عمروبن العاص،الحدیث:۷۰۸۸،ج۲،ص۶۸۷.

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۴۳،ج۱۳۔۱۴،ص۱۶.

3 ......صحیح البخاری،کتاب الإیمان،باب إطعام الطعام من الإسلام،الحدیث:۱۲،ص۳.

4 ......سنن الدارمی،کتاب الأطعمة،باب فی إطعام الطعام،الحدیث:۲۰۸۱،ج۲،ص۱۴۸.

5 ......مسندالحارث،کتاب التفسیر،باب النھی عن الجدال بالقرآن،الحدیث:۷۳۵،ج۲،ص۷۴۰۔
سنن ابن ماجه،کتاب السنة،باب فی القدر،الحدیث:۸۵،ص۲۴۸۲

www.dawateislami.net

अदाए रसूल :

﴾979﴿.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन शुऐब رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वालिद फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया। जब हम का'बए मुबारका की पिछली जानिब आए तो मैं ने उन से दरयाफ़्त किया : "क्या आप तअव्वुज़ नहीं पढ़ते ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मैं दोज़ख़ की आग से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं।" फिर आगे चल दिये, हजरे अस्वद का बोसा लिया फिर उस के और बाबे का'बा के दरमियान खड़े हो कर सीना और चेहरा उस पर रखा और कलाइयां बिछा दीं फिर फ़रमाया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस तरह करते हुवे देखा है।"(1)

3 बुराइयां और 3 भलाइयां :

﴾980﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन शुफ़य رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हम हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की ख़िदमत में हाज़िर थे कि वहां एक बछड़ा आया। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जो शख़्स इस पर सुवार हो कर तुम्हारी तरफ़ आया है मैं उसे जानता हूं।" जब वोह सुवार आ कर बैठ गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस से फ़रमाया : "हमें 3 भलाइयां और 3 बुराइयों के बारे में बताओ।" उस ने कहा : "हां ! 3 भलाइयां येह हैं : सच्ची ज़बान, परहेज़गार दिल और नेक बीवी और 3 बुराइयां येह हैं : झूटी ज़बान, ना फ़रमान दिल और बुरी बीवी।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "बेशक मैं येह चीज़ें तुम्हें बयान कर चुका हूं।"(2)

﴾981﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुर्रहमान हुबुली عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को फ़रमाते सुना कि "मुझे क़ियामत के दिन 10 मिस्कीनों में से दसवां होना 10 मालदारों में से दसवां होने से ज़ियादा महबूब है क्यूंकि उस दिन ज़ियादा मालदार कम तोशे वाले होंगे सिवाए उस शख़्स के जो दाएं बाएं (या'नी ब कसरत) सदक़ा करे।"(3)

1 ......سنن ابی داؤد، کتاب المناسک، باب الملتزم، الحدیث: ۱۸۹۹، ص ۱۳۶۳.
2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم ۹۸۸ تبیع بن عامر، ج ۱۱، ص ۳۲.
3 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم ۳۴۳۴ عبداللّٰه بن عمرو بن العاص، ج ۳۱، ص ۲۶۶

www.dawateislami.net

बद कलाम पर जन्नत हराम है :

﴾982﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान हुबुली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को फ़रमाते हुवे सुना कि "हर बद ज़बान पर जन्नत में दाख़िला ह़राम है।"(1)

मुसलमान को पानी पिलाने की फ़ज़ीलत :

﴾983﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन हिलाल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "जो किसी मुसलमान को एक घूंट पानी पिलाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतनी मसाफ़त दूर फ़रमा देता है जितनी मसाफ़त तै करते करते घोड़ा थक जाता है।"(2)

﴾984﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन हिलाल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "बे मक़्सद काम को तर्क कर दो, फ़ुज़ूल बातों से बचो और अपनी ज़बान की इस त़रह ह़िफ़ाज़त करो जिस त़रह सोने चांदी की ह़िफ़ाज़त करते हो।"(3)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ना पसन्द बन्दे :

﴾985﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने हुबैरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल होने वाले सह़ीफ़े में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ में 3 बन्दों को पसन्द नहीं फ़रमाता : एक वोह जो दो दोस्तों के दरमियान फूट (या'नी जुदाई) डालता है।

---

1 ......موسوعةلابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، باب ذم الفُحش والبذاء، الحدیث:۳۲۵، ج۷، ص۲۰٤.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۳۵، ج۱۳-۱٤، ص۳۹، مفهومًا.

3 ......موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، باب حفظ اللسان وفضل الصمت، الحدیث:۲٤، ج۷، ص٤٤.

www.dawateislami.net

दूसरा वोह जो ता'वीज़ात ले कर चलता है[1] और तीसरा वोह जो किसी बे ऐब को ऐब लगाने और आर दिलाने की जुस्तजू में रहता है।''[2]

बुराई का गढ़ा :

﴾986﴿.....हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : ''तौरात शरीफ़ में लिखा है कि ''जिस ने किसी क़िस्म की नाजाइज़ तिजारत की उस ने ना फ़रमानी की और जो अपने किसी रफ़ीक़ के लिये बुराई का गढ़ा खोदेगा ख़ुद उस में जा गिरेगा।''[3]

﴾987﴿.....हज़रते सय्यिदुना शराह़ील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَكِيْل फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को फ़रमाते सुना कि ''बेशक शैतान निचली ज़मीन में बंधा हुवा है जब वोह ह़रकत करता है तो ज़मीन पर मौजूद हर शर दो या ज़ियादा हिस्सों में बट जाता है।''[4]

1.....इस से मुराद वोह ता'वीज़ात हैं जो नाजाइज़ व कुफ़्रिय्या अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों जब कि ऐसे ता'वीज़ात इस्ति'माल करना जाइज़ है जो आयाते क़ुरआनिय्या, अस्माए इलाहिय्या या दुआ़ओं पर मुश्तमिल हों। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم येह रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि : ''हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपने बालिग़ बच्चों को सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाते :

بِسْمِ اللّٰهِ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَحْضُرُوْنَ

(या'नी : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कामिल कलिमात की पनाह लेता हूं उस के ग़ज़ब से, उस के अ़ज़ाब से, उस के बन्दों के शर और शयातीन के वस्वसों और उन की हाज़िरी से।) और उन में से जो ना बालिग़ होते और याद न कर सकते तो मज़कूरा कलिमात लिख कर उन का ता'वीज़ बच्चों के गले में डाल देते।'' (مسند احمد،مسند عبداللّٰہ بن عمرو، الحدیث: ٦٧٠٨،ج٢، ص٦٠٠)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब ''बहारे शरीअ़त'' हिस्सा 16 सफ़हा 294 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा हज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''गले में ता'वीज़ लटकाना जाइज़ है जब कि वोह ता'वीज़ जाइज़ हो या'नी आयाते क़ुरआनिय्या या अस्माए इलाहिय्या या अदइय्या (या'नी दुआ़ओं) से ता'वीज़ किया गया हो और बा'ज़ ह़दीसों में जो मुमानअ़त आई है इस से मुराद वोह ता'वीज़ात हैं जो नाजाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों, जो ज़मानए जाहिलिय्यत में किये जाते थे। इसी त़रह़ ता'वीज़ात और आयात व अह़ादीस व अदइय्या रिकाबी में लिख कर मरीज़ को ब निय्यते शिफ़ा पिलाना भी जाइज़ है। जुनुब (या'नी जिस पर जिमाअ़, एह़तिलाम या शहवत के साथ मनी ख़ारिज होने के सबब ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया हो) व ह़ाइज़ व नुफ़सा भी ता'वीज़ात को गले में पहन सकते हैं, बाज़ू पर बांध सकते हैं जब कि ता'वीज़ात ग़िलाफ़ में हों।''

2.....الجامع فی الحدیث:لابن وھب،باب الإخاء فی اللّٰہ،الحدیث:٢١٧،ج١،ص٢٢٣.

3.....کتاب روضۃ العقلاء ونزھۃ الفضلاء،ذکر الزجر عن التجسس وسوء الظن،ص١٢٨.

4.....تفسیر القرطبی،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ١٦٨،الجزء الثانی،ج١،ص١٦٠.

www.dawateislami.net

﴾988﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "अगर तुम वोह जान लो जो मैं जानता हूं तो कम हंसो और ज़ियादा रोओ और अगर तुम इ़ल्म का ह़क़ जान लो तो इस क़दर चीख़ो कि तुम्हारी आवाज़ ख़त्म हो जाए और इतना त़वील सजदा करो कि तुम्हारी कमर टूट जाए।"(1)

आग की आवाज़ :

﴾989﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी इमरान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमें येह ख़बर मिली है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने एक मरतबा आग की आवाज़ सुनी तो फ़ौरन बोले : "और मैं ?" किसी ने अ़र्ज़ की : "ऐ इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ! येह क्या है ?" फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! येह दुन्या की आग इस बात से पनाह मांग रही है कि इसे दोबारा दोज़ख़ की आग में दाख़िल किया जाए।"(2)

सब्र की तल्क़ीन :

﴾990﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान हुबुली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से अ़र्ज़ की : "क्या हम फ़ुक़रा मुहाजिरीन में से नहीं हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम्हारी बीवी है जिस के पास तुम जाते हो ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास रहने का मकान है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "फिर तुम फ़ुक़रा मुहाजिरीन में से नहीं हो, अब अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें अ़त़ा कर दें और अगर चाहो तो तुम्हारा मुआ़मला बादशाह के सामने पेश कर दें ?" उस ने अ़र्ज़ की : "हम सब्र करेंगे और किसी चीज़ का सुवाल नहीं करेंगे।"(3)

सब्र का उख़रवी इनआ़म :

﴾991﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कसीर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِیر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़ुक़रा से फ़रमाया : मैदाने मह़शर में एक निदा लगाई जाएगी कि "इस उम्मत के फ़ुक़रा व मसाकीन कहां हैं ?" येह निदा सुन कर तुम लोगों में नुमायां हो जाओगे

---

1 ......الزهدلو كيع،باب قلة الضحك،الحديث:١٨،ج١،ص٢٤.

2 ......موسوعةلابن ابی الدنيا،كتاب صفة النار،الحديث:١٥٠،ج٦،ص٤٣١.

3 ......صحيح مسلم،كتاب الزهد،باب الدنيا سجن للمؤمن و جنة للكافر،الحديث:٧٤٦٢/٧٤٦٣،ص١١٩٤،بتغير.

www.dawateislami.net

तो फ़िरिश्ते पूछेंगे कि "तुम्हारे पास क्या है ?" तो तुम (फ़िरिश्तों के बजाए) बारगाहे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ करोगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ने हमें आज़्माइशों में मुब्तला किया तो हम ने सब्र किया और तू बेहतर जानता है और तू ने माल व बादशाही दूसरों को अ़ता फ़रमाई ।" पस फ़रमाया जाएगा : "तुम ने सच कहा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) फ़रमाते हैं : "इस के बा'द फ़ुक़रा व मसाकीन एक ज़माने पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे जब कि मालदारों पर हिसाबो किताब की शिद्दत बाक़ी रहेगी ।"(1)

रूहों को रिज़्क़ दिया जाता है :

﴿992﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने फ़रमाया कि "जन्नत लिपटी हुई है । सूरज के किनारों से बंधी हुई है । हर साल एक मरतबा फैलती है और मोमिनीन की अरवाह़ चिड़यों की मानिन्द सब्ज़ परन्दों के पेटों में होती हैं । एक दूसरे को पहचानती हैं और उन्हें जन्नत के फलों से रिज़्क़ दिया जाता है ।"(2)

गिर्या व ज़ारी :

﴿993﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन अ़ता رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा ने उन्हें बताया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी फ़रमाते थे और मैं उन के लिये सुर्मा तय्यार करती थी ।"रावी बयान करते हैं कि "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़ा बन्द कर के इस क़दर रोते थे कि आंखों से सफ़ेद मेल आने लगता और मेरी अम्मीजान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھَا उन के लिये सुर्मा बनाया करती थीं ।"(3)

﴿994﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बाबाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं अ़र्फ़े के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़रम में ख़ैमा नस्ब फ़रमा रखा है । मैं ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया :

1 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزهد،الحدیث:٣،ج٨،ص١٨٨ .
2 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الجنة،باب ماذکرفی الجنة ومافیهاأعدلأهلها،الحدیث:٢٥،ج٨،ص٧٠ .
3 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزهد،ما قالوافی البکاء......الخ،الحدیث:١٨،ج٨،ص٢٩٩،مفهومًا .

www.dawateislami.net

"इस लिये ताकि मेरी नमाज़ ह़रम में अदा हो और जब अपने घर वालों के पास जाऊं तो हि़ल[1] में रहूं ।"[2]

फ़ज्र के वक़्त ख़ुसूसी रह़मत का नुज़ूल :

﴾995-996﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन नाफ़ेअ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رضی اللہ تعالٰی عنہما) नमाज़े फ़ज्र के बा'द एक शख़्स के पास से गुज़रे वोह सो रहा था । आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उसे पाउं से ह़रकत दी तो वोह बेदार हो गया फिर उसे फ़रमाया : "क्या तुझे मा'लूम नहीं कि इस वक़्त अल्लाह عزوجل अपने बन्दों की त़रफ़ ख़ास तवज्जोह फ़रमाता है और इन में से बा'ज़ को अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है ।"[3]

ज़ाइद पानी मत बेचो :

﴾997﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رضی اللہ تعالٰی عنہ के दादा से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رضی اللہ تعالٰی عنہما) के एक ख़ादिम ने बचा हुवा पानी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के चचा को 20 हज़ार में बेच दिया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "बचे हुवे पानी को मत बेचो कि इसे बेचना मन्अ़ है[4] ।[5]

अल्लाह عزوجل के नाम पर देने की फ़ज़ीलत :

﴾998﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब बिन आ़सिम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رضی اللہ تعالٰی عنہما) ने फ़रमाया : "जिस से अल्लाह عزوجل के नाम पर कुछ मांगा गया और उस ने दे दिया तो उस के नामए आ'माल में 70 नेकियां लिखी जाती हैं ।"[6]

1.....मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के चारों त़रफ़ मीलों तक इस की ह़ुदूद है और येह ज़मीन ह़ुरमत व तक़द्दुस की वज्ह से "ह़रम" कहलाती है हर जानिब इस की ह़ुदूद पर निशान लगे हैं । ह़ुदूदे ह़रम से बाहर मीक़ात तक की ज़मीन को "हि़ल" कहते हैं ।
(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 41, 42)

2.....مجمع الزوائد،کتاب الصلاۃ،باب عددالوتر،الحدیث:٣٤٥٣،ج٢،ص٥٠٣.

3.....مجمع الزوائد،باب فی النوم بعدالصبح،الحدیث:١٧٩١،ج٢،ص٦٩.

4.....पानी की ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल जानने के लिये बहारे शरीअ़त हि़स्सा 17 से "**शुर्ब का बयान**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये । (**इल्मिय्या**)

5.....المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب البیوع والاقضیۃ،باب فی بیع الماء وشرائہ،الحدیث:٨،ج٥،ص١١٠.

6.....المرجع السابق،کتاب الزکاۃ،الحدیث:١،ج٣،ص١١٦.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की सख़ावत :

﴾999﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे हुकूमत में ह़ज किया और बसरी क़ुर्रा की एक जमाअ़त में शामिल मुन्तसिर बिन ह़ारिस ज़ब्बी मेरे साथ था। वोह सब लोग कहने लगे कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम उस वक़्त तक वापस नहीं लौटेंगे जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी सह़ाबी से मुलाक़ात कर के उन से अह़ादीस न सुन लें।" चुनान्चे, हम लोगों से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के बारे में पूछते रहे यहां तक कि किसी ने हमें बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की निचली जानिब ठहरे हुवे हैं। हम उन से मुलाक़ात के लिये उन की त़रफ़ चल दिये। अचानक हम ने एक अ़ज़ीम लश्कर देखा जो कूच कर रहा था उस में 300 ऊंट थे जिन में से 100 सुवारी के लिये और 200 बार बरदारी (या'नी साज़ो सामान उठाने) के लिये थे। हम ने लोगों से पूछा : "येह भारी लश्कर किस का है ?" उन्हों ने बताया : "येह लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का है।" हम ने पूछा : "क्या येह सब का सब इन्ही का है ?" फिर हम आपस में बातें करने लगे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में सब से ज़ियादा आ़जिज़ी व इन्किसारी करने वाले हैं। इतने में लोगों ने बताया कि "इन में 100 ऊंट उन के दोस्तों के लिये हैं और 200 ऊंट मेहमानों के लिये हैं जो मुख़्तलिफ़ शहरों से उन के पास ह़ाज़िर होते हैं।" येह सुन कर हमें बड़ा तअ़ज्जुब हुवा तो लोगों ने कहा : "येह तअ़ज्जुब की बात नहीं है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक मालदार आदमी हैं और हर आने वाले मेहमान को ज़ादे राह देना ज़रूरी समझते हैं।" हम ने कहा : "हमें उन तक पहुंचा दो।" तो उन्हों ने हमें बताया कि "वोह मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ फ़रमा हैं।" हम उन की तलाश में मस्जिदे ह़राम गए तो उन्हें का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के पीछे बैठे पाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पस्त क़द थे और उस वक़्त आशोबे चश्म के मरज़ में मुब्तला थे, दो चादरें ओढ़ रखी थीं, सर पर इमामा सजाया हुवा था जब कि बदने मुबारक पर क़मीस न थी और जूते अपनी बाईं जानिब रखे हुवे थे।"[1]

---

1 ......المستدرك، كتاب الفتن و الملاحم، باب مكالمة ابن عمرو......الخ، الحديث: ٨٦٦٢، ج٥، ص٧٤٢، بتغيرقليل.

www.dawateislami.net

जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ दो रिवायात :

﴾1000﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुख़ारिक़ ज़ुहैर अ़ब्सी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अफ़्ज़ल तरीन शहीद के बारे में न बताऊं कि जिस का मक़ामो मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बहुत बुलन्द होगा ? जब शुहदा सफ़ बस्ता दुश्मन के मुक़ाबले के लिये निकलते और उस का सामना करते हैं तो वोह दाएं बाएं मुतवज्जेह नहीं होता मगर तल्वार अपने कन्धे पर रखे होता है और अ़र्ज़ करता है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं आज गुज़रे हुवे दिनों में अपने आ'माल के मुक़ाबले में तुझे इख़्तियार करता हूं।" फिर वोह क़त्ल हो जाता है पस येह उन शुहदा में से है जो जन्नत के बालाख़ानों में जाएंगे और जहां चाहेंगे उठें बैठेंगे।"(1)

﴾1001﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबी अ़म्र शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی से मरवी है कि एक मरतबा अहले यमन का एक क़ाफ़िला ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)के पास से गुज़रा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस आदमी के बारे में क्या फ़रमाते हैं जिस ने इस्लाम क़बूल किया तो अच्छे अन्दाज़ से, हिजरत की तो वोह भी अह़सन त़रीक़े से, जिहाद किया तो वोह भी अच्छे अन्दाज़ पर। फिर अपने वालिदैन की ख़िदमत में यमन लौट आया और उन के साथ एह़सान व भलाई वाला मुआ़मला करता रहा ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम्हारा इस के बारे में क्या ख़याल है।" उस ने कहा : "ऐसा शख़्स मैदाने जिहाद से भागने वाला है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि ऐसा शख़्स जन्नती है। हां ! मैं तुम्हें बताता हूं कि कौन मैदाने जिहाद से भागने वाला है। सुनो ! वोह शख़्स जिस ने इस्लाम क़बूल किया तो अच्छे अन्दाज़ से, हिजरत की तो वोह भी अह़सन त़रीक़े से, जिहाद किया तो वोह भी अच्छे अन्दाज़ पर। फिर उस ने कुंवें वाली ज़मीन का क़स्द किया और उसे उस के जिज़्ये व मह़सूल के इ़वज़ ख़रीद लिया और आबाद करने में लग कर जिहाद तर्क कर दिया। येह है वोह शख़्स जो मैदाने जिहाद से भागने वाला है।"(2)

---

1 ......الجہاد لابن المبارک، الحدیث:۴۹، ص۵۳، "انی اخترتک" بدلہ "انی اجزیک".

2 ......الأموال لابن زنجویہ، کتاب فتوح الأرضین وسننہا واحکامہا، باب فی شراء أرض العنوۃ......الخ، الحدیث:۲۵۷، ج۱، ص۲۷۷ بتغیر.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अमारत व मरातिब से बे रग़बती और नेकी व अच्छाई में रग़बत रखते। इन्तिहाई इबादत गुज़ार बल्कि तहज्जुद गुज़ार और सुन्नते रसूल पर सख़्ती से अ़मल करते थे। मसाजिद और पथरीली ज़मीन पर पड़ाव डाल लेते। अक्सर मुशाहदात में डूबे रहते। अपने आप को दुन्या में मुसाफ़िर व अजनबी शुमार करते। पेश आने वाले हर मुआ़मले को क़रीब समझते और कसरत से तौबा व इस्तिग़फ़ार किया करते थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "सरकशी से दूर रहने और बुलन्द दरजात में रग़बत रखने का नाम **तसव्वुफ़** है।"

﴾1002﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का'बतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हुवे तो मैं ने सुना कि आप सजदे की ह़ालत में कह रहे हैं : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मुझे इस दुन्या पर क़ुरैश से मुज़ाह़मत करने से सिर्फ़ तेरे ख़ौफ़ ने रोका है।"[1]

﴾1003﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास आया और कहा कि "आप अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लख़्ते जिगर और ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी हैं।" मज़ीद कुछ मनाक़िब बयान करने के बा'द कहा कि "आप को इस मुआ़मले (या'नी तल्वार ले कर मैदान में निकलने) से किस चीज़ ने रोक रखा है?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मुझे इस बात ने रोक रखा है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमान का ख़ून बहाना ह़राम ठहराया है।" उस ने कहा : बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह भी इरशाद फ़रमाया है :

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِؕ (پ۲،البقرة:۱۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो।

---

1 المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب ذكر اجل فضائل ابن عمر، الحديث: ٦٤٢٩، ج٤، ص٧٢٧.

www.dawateislami.net

तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक हम ने ऐसा किया है, क्यूंकि हम ने मुशरिकीन से क़िताल किया है यहां तक कि सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत होने लगी और अब तुम लड़ना चाहते हो यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और की पूजा होने लगे।"(1)

हज्जाज बिन यूसुफ़ को जवाब :

﴾1004﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुत़इम बिन मिक़दाम सन्आनी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से रिवायत है कि एक मरतबा हज्जाज बिन यूसुफ़ ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को ख़त़ लिखा कि "मुझे ख़बर मिली है कि तुम ख़लीफ़ा बनना चाहते हो ह़ालांकि कलाम से आ़जिज़, बख़ील और ग़यूर शख़्स ख़िलाफ़त का अह्ल नहीं हो सकता।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में लिखा कि "तुम ने जो ख़िलाफ़त का तज़किरा किया है कि "मैं इस की ख़्वाहिश रखता हूं" तो सुन लो ! मुझे इस की बिल्कुल तमन्ना नहीं और न ही मेरे दिल में कभी इस का ख़याल गुज़रा और रही बात कलाम से आ़जिज़ होने, बख़ील व ग़ैरत मन्द होने की तो सुन ! बेशक जो शख़्स कुरआने ह़कीम का ह़ाफ़िज़ हो वोह कलाम से आ़जिज़ नहीं हो सकता और जो अपने माल की ज़कात अदा करता है वोह बख़ील नहीं हो सकता और रहा मुआ़मला ग़ैरत का तो मैं ने जिस मुआ़मले में ग़ैरत की उस की ज़ियादा ह़क़दार मेरी औलाद है कि वोह मेरे इ़लावा किसी दूसरे को इस में शरीक ठहराए।(2)

﴾1005﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि जब लोगों के दरमियान फ़ितने का मुआ़मला शिद्दत इख़्तियार कर गया तो लोग हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुन्नास, इब्ने सय्यिदिन्नास हैं और लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ख़ुश हैं। बाहर तशरीफ़ लाइये ताकि हम आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दस्ते अक़्दस पर बैअ़त करें।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं चाहता कि मेरी वज्ह से किसी ज़ी रूह़ का पछने लगने की जगह के बराबर भी ख़ून बहाया जाए।" फिर लोगों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को डराया और क़त्ल की धमकी दी लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर भी इन्कार पर मुसिर रहे।" हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:١٣٠٤٦،ج١٢،ص٢٠٢.

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:١٣٠٤٨،ج١٢،ص٢٠٢.

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! लोग उन के पाए सबात (साबित क़दमी) में ज़र्रा बराबर भी लग़्ज़िश पैदा न कर सके यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया।"(1)

﴾1006﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री और हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जिन दिनों उन्हें ख़लीफ़ा नामज़द करने के लिये ह़कम बनाया गया था तशरीफ़ लाए तो हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ख़िलाफ़त का सह़ीह़ ह़क़दार हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के सिवा किसी को नहीं समझता।" फिर हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से कहा कि "हम बैअ़त तो आप के हाथ पर करना चाहते हैं लेकिन क्या आप कसीर माल ले कर उस आदमी के लिये ख़िलाफ़त छोड़ देंगे जो आप से ज़ियादा इस का ह़रीस है ?" येह बात सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ कर मजलिस से खड़े हो गए तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिबास को एक किनारे से पकड़ कर कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! अ़म्र बिन आ़स के कहने का मक़्सद तो येह है कि आप माले कसीर ले कर इस बात पर राज़ी हो जाएं कि हम आप के हाथ पर बैअ़त करें ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अ़म्र ! तुम पर अफ़्सोस है।" हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने कहा : "मैं तो आप की आज़्माइश कर रहा था।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : " नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस (या'नी ख़लीफ़ा बनने) पर कुछ नहीं लूंगा और न किसी और को लेने दूंगा और न ही तमाम मुसलमानों की रिज़ामन्दी के बिग़ैर इसे क़बूल करूंगा।"(2)

﴾1007﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि पहले फ़ितने में लोगों ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से दरख़्वास्त की, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बाहर निकलें और लोगों से क़िताल करें। उन्हों ने फ़रमाया : "मैं क़िताल कर चुका हूं जब ह़जरे अस्वद और बाबे का'बा के दरमियान बुत रखे हुवे थे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सर ज़मीने अ़रब को बुतों की गन्दगी से पाक फ़रमा दिया और मुझे येह बात ना पसन्द है कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने वालों से क़िताल करूं।" लोगों ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप की

(1)......فضائل الصحابة للامام احمدبن حنبل،فضائل عبدالله بن عمر،الحديث:١٧٠٢،ج٢،ص٨٩٥،مفهومًا.

(2)......تاريخ دمشق لابن عساكر،الرقم٣٤٢١عبدالله بن عمربن الخطاب،ج٣١،ص١٨٤،بتغيرقليل.

www.dawateislami.net

राए येह नहीं, बल्कि आप तो चाहते हैं कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن एक दूसरे को शहीद करते रहें यहां तक कि आप के सिवा कोई ज़िन्दा न रहे फिर कहा जाए कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर के अमीरुल मोमिनीन होने पर इन की बैअ़त कर लो।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे दिल में बिल्कुल येह बात नहीं है बल्कि जब तुम حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ،حَیَّ عَلَی الْفَلَاح की सदा लगाओगे, मैं नमाज़े बा जमाअ़त में तुम्हारे साथ ह़ाज़िर होऊंगा और जब तुम में इन्तिशार हो जाएगा मैं तुम्हें इकठ्ठा नहीं करूंगा और जब तुम में इत्तिफ़ाक़ होगा, मैं तुम्हारे दरमियान इन्तिशार नहीं फैलाऊंगा।''(1)

सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र में :

﴾1008﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''बेशक नौजवानाने क़ुरैश में सब से ज़ियादा अपने नफ़्स को दुन्या की रा'नाइयों से क़ाबू में रखने वाले ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।''(2)

सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र में :

﴾1009﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के इलावा किसी ऐसे शख़्स को नहीं देखा कि जिसे दुन्या की रंगीनियों ने अपनी त़रफ़ माइल न किया हो या वोह ख़ुद माइल न हुवा हो।''(3)

सदक़ात व ख़ैरात के वाक़िआ़त

﴾1010﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को अपने माल में जो चीज़ सब से ज़ियादा प्यारी होती उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये सदक़ा कर देते। ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलामों को इस बात का इ़ल्म हुवा तो वोह अक्सर बन संवर कर मस्जिद में पड़े रहते। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपने किसी गुलाम को इस अच्छी हालत में मुलाह़ज़ा फ़रमाते तो उसे आज़ाद कर देते। रुफ़क़ा ने अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस त़रह येह आप को धोका देते हैं।'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : ''जो हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये धोका देगा हम भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से धोका खाते रहेंगे।''

---

1 ......تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم ۳٤۲۱عبداللہ بن عمربن الخطاب،ج۳۱،ص۱۹۰.
2 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد،الرقم۲۰٤عبداللہ بن عمربن الخطاب،ج٤،ص۱۰۷.
3 ......فضائل الصحابۃ للامام احمدبن حنبل،فضائل عبداللہ بن عمر،الحدیث:۱٦۹۹،ج۲،ص۸۹٤.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक मरतबा शाम के वक़्त हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को एक उ़म्दा ऊंट पर सुवार आते देखा जिसे आप ने कसीर माल के इ़वज़ ख़रीदा था। जब ऊंट की चाल आप के दिल को भाई तो ऊंट को बिठाया फिर नीचे उतर कर फ़रमाया : "ऐ नाफ़ेअ़ ! इस की लगाम और कजावा वग़ैरा उतार लो और इसे बना संवार कर कुरबानी के ऊंटों में दाख़िल कर दो।"(1)

मनपसन्द ऊंटनी ख़ैरात कर दी :

﴾1011﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपनी ऊंटनी पर सुवार किसी सफ़र पर थे कि वोह ऊंटनी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल को भा गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऊंटनी को बिठाया जब वोह बैठ गई तो फ़रमाया : "ऐ नाफ़ेअ़ ! इस से कजावा उतार लो।" हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं उन का इरादा समझ गया। लिहाज़ा मैं ने कजावा उतार लिया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "एक नज़र देखो ! क्या हमारे जानवरों में कोई इस से अच्छी सुवारी भी है (कि उसे सदक़ा किया जाए) ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं आप को क़सम दे कर कहता हूं कि इसे बेच दें और इस से हासिल होने वाली रक़म से और ख़रीद लें।" फ़रमाया : "इसे आज़ाद कर दो और इस के गले में क़िलादा (या'नी हार) लटका कर इसे कुरबानी के जानवरों में शामिल करो।" (हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब भी अपने मालो अस्बाब में से कोई चीज़ अच्छी लगती तो उसे सदक़ा कर के आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लेते।(2)

पसन्दीदा लौंडी आज़ाद कर दी :

﴾1012﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उ़स्मान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अपनी रुमैसा नामी लौंडी आज़ाद कर दी (इस का वाक़िआ़ यूं है कि) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

---

❶......الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم۴۰۲ عبداللّٰہ بن عمر،ج۴،ص۱۲۵۔

❷......تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم۳۴۲۱ عبداللّٰہ بن عمربن الخطاب،ج۳۱،ص۱۳۳۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।*

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ

(پ٤،ال عمران:٩٢)

फिर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ रुमैसा ! मैं दुन्या में तुझे सब से ज़ियादा चाहता हूं, जाओ ! मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद करता हूं।"(1)

﴿1013﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد से मरवी है कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।*

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ

(پ٤،ال عمران:٩٢)

तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने अपनी कनीज़ को बुलाया और उसे आज़ाद कर दिया।"(2)

30 हज़ार दिरहम का सदक़ा :

﴿1014﴾.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को अपने माल में से जो चीज़ भी पसन्द आती उसे राहे ख़ुदा में सदक़ा कर देते। ह़त्ता कि बा'ज़ औक़ात तो 30-30 हज़ार दिरहम एक ही मजलिस में सदक़ा कर देते। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़मिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَافِر ने दो मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को 30 हज़ार दिरहम भिजवाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ नाफ़ेअ़ ! मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं इब्ने आ़मिर के दराहिम मुझे आज़माइश में न डाल दें। लिहाज़ा जाओ ! तुम आज़ाद हो।" और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़र या माहे रमज़ान के इ़लावा पूरा पूरा महीना मुसलसल गोश्त न खाते थे। नीज़ बा'ज़ औक़ात पूरा महीना गोश्त की एक बोटी तक न चख पाते थे।(3)

1.....تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم۳۴۲۱عبداللّٰہ بن عمربن الخطاب،ج۳۱،ص۱۳۷.

2.....الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷۸،ص۲۱۰،بتغیر.

3.....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۳۰۴۵،ج۱۲،ص۲۰۲۔

الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبار عبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۶۸،ص۲۰۹.

www.dawateislami.net

﴾1015﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "बा'ज़ औक़ात हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक ही मजलिस में 30 हज़ार दिरहम राहे खुदा में ख़र्च फ़रमा दिया करते। फिर उन पर ऐसा महीना भी आता कि गोश्त की एक बोटी तक न चख पाते थे।"(1)

﴾1016﴿.....हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि "एक मरतबा एक मजलिस में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास कहीं से 22 हज़ार दीनार (सोने के सिक्के) आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह तमाम दीनार मजलिस बरख़ास्त करने से पहले ही लोगों में तक़्सीम फ़रमा दिये।"(2)

एक हज़ार गुलाम आज़ाद फ़रमाए :

﴾1017﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अपनी ज़िन्दगी में एक हज़ार या इस से ज़ाइद गुलाम आज़ाद फ़रमाए।"(3)

﴾1018﴿.....हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन मुहम्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को उन के गुलाम हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बदले में 10 हज़ार या एक हज़ार दीनार की पेशकश की गई तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप किस चीज़ का इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं। इसे बेच क्यूं नहीं देते ?" फ़रमाया : "क्या वोह उन दीनारों से बेहतर नहीं। मैं उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद करता हूं।"(4)

100 ऊंटनियों का वक़्फ़ :

﴾1019﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अपनी कुछ ज़मीन 200 ऊंटनियों के बदले फ़रोख़्त की फिर उन में से 100 ऊंटनियां राहे खुदा के मुसाफ़िरों पर वक़्फ़ फ़रमा दीं और उन पर येह शर्त़ रखी कि वोह उन को वादिये क़ुरा उ़बूर करने से पहले फ़रोख़्त नहीं करेंगे।"(5)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۳۰۴۵،ج۱۲،ص۲۰۲.

2 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۶۲،ص۲۰۹.

3 ......صفۃ الصفوۃ،الرقم۶۲عبداللّٰہ بن عمربن الخطاب،ج۱،ص۲۹۲.

4 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷۹،ص۲۱۱۔
کتاب الثقات لابن حبان،کتاب التابعین،باب النون،الرقم۰۶۱۶۴ نافع مولی عبد اللّٰہ بن عمرالخطاب،ج۳،ص۸۴.

5 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷۵،ص۲۱۰.

www.dawateislami.net

एक साल में एक लाख दिरहम सदक़ा :

﴾1020﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रफ़ एक लाख दिरहम भेजे। अभी साल भी नहीं गुज़रा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास उन में से एक दिरहम भी न बचा (या'नी तमाम के तमाम राहे खुदा में सदक़ा कर दिये।)"(1)

एक रात में 10 हज़ार दिरहम की ख़ैरात :

﴾1021﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब बिन वाइल रासिबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं : एक मरतबा मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا हाज़िर हुवा तो मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के एक पड़ोसी ने बताया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से 4 हज़ार दिरहम आए हैं और एक दूसरे आदमी की त़रफ़ से भी इतने ही दिरहम आए हैं और एक शख़्स ने 2 हज़ार दिरहम और एक उ़म्दा चादर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में भेजी है। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बाज़ार में तशरीफ़ लाए और खोटे दिरहम के बदले में अपनी सुवारी के लिये चारा ख़रीदा। मैं ने उन्हें पहचान लिया फिर मैं ने उन की अहलिय्या के पास आ कर कहा कि "मैं आप से कुछ पूछना चाहता हूं और मैं येह पसन्द करता हूं कि आप मुझ से सच बयान करें।" मैं ने पूछा : "क्या अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से 4 हज़ार दिरहम, एक दूसरे आदमी की त़रफ़ से 4 हज़ार दिरहम और एक शख़्स के पास से 2 हज़ार दिरहम और एक चादर नहीं आई थी?" जवाब मिला : "क्यूं नहीं ! यक़ीनन येह सब कुछ आया था।" मैं ने कहा कि "मैं ने तो उन्हें खोटे दिरहम के इवज़ चारा ख़रीदते देखा है।" तो उन की अहलिय्या ने बताया कि "उन्हों ने तो वोह सब माल रात ही को लोगों में तक़्सीम कर दिया था और चादर अपने कन्धे पर डाल कर चल दिये और इसे वापस लौटा कर घर आ गए।"

तो मैं ने लोगों से कहा : "ऐ ताजिरों के गुरौह ! तुम दुन्या का क्या करोगे जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास गुज़श्ता रात 10 हज़ार दिरहम आए थे

---

1 ......صفة الصفوة،الرقم٦٢عبداللّٰه بن عمربن الخطاب،ج١،ص٢٩٢.

www.dawateislami.net

और उन्हों ने रातों रात वोह सब ख़ैरात कर दिये और आज सुब्ह़ अपनी सुवारी के लिये खोटे दिरहम के इवज़् चारा ख़रीदा है।"(1)

﴾1022﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رضی اللہ تعالی عنہ बयान करते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رضی اللہ تعالی عنہما) बीमार हो गए तो मैं आप رضی اللہ تعالی عنہ के लिये एक दिरहम के अंगूर ख़रीद कर लाया। इतने में एक मिस्कीन आ गया। तो आप رضی اللہ تعالی عنہ ने फ़रमाया : "येह ख़ोशा उसे दे दो।" मैं ने उठा कर उसे दे दिया तो एक शख़्स उस के पीछे गया और वोह अंगूर का ख़ोशा मिस्कीन से एक दिरहम में ख़रीद कर आप رضی اللہ تعالی عنہ के पास ले आया। इतने में फिर वोही मिस्कीन आ गया उस ने सुवाल किया तो आप رضی اللہ تعالی عنہ ने ख़ोशा उसे देने का कहा। चुनान्चे, वोह उस मिस्कीन को दे दिया गया तो फिर वोह शख़्स मिस्कीन के पीछे गया और वोह ख़ोशा उस से एक दिरहम के इवज़् ख़रीद कर आप رضی اللہ تعالی عنہ के पास ले आया लेकिन वोह मिस्कीन फिर सुवाल करने आ गया आप رضی اللہ تعالی عنہ ने अब की बार भी वोह ख़ोशा उसे दे देने का हुक्म दिया तो फिर वोह शख़्स उस के पीछे गया और मिस्कीन से एक दिरहम के बदले ख़ोशा ख़रीद लिया। अब की बार फिर उस मिस्कीन ने लौट कर सुवाल करने का इरादा किया तो उस शख़्स ने उसे रोक दिया। (रावी बयान करते हैं) अगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رضی اللہ تعالی عنہما) को इस बात का इ़ल्म हो जाता तो आप رضی اللہ تعالی عنہ वोह अंगूर कभी न चखते।"(2)

﴾1023﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رضی اللہ تعالی عنہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رضی اللہ تعالی عنہما) को बीमारी की ह़ालत में अंगूर खाने की ख़्वाहिश हुई तो मैं उन के लिये एक दिरहम में अंगूरों का एक ख़ोशा ख़रीद लाया। मैं ने वोह अंगूर उन के हाथ में रखे ही थे कि एक साइल ने दरवाज़े पर खड़े हो कर सुवाल कर दिया। आप رضی اللہ تعالی عنہ ने वोह अंगूर साइल को देने का कहा तो मैं ने अ़र्ज़ की : "इस में से कुछ तो तनावुल फ़रमा लीजिये, थोड़े से तो चख लीजिये।" फ़रमाया : "नहीं, येह उसे दे दो।" तो मैं ने वोह साइल को दे दिये।"

फिर मैं ने साइल से वोह अंगूर एक दिरहम के बदले ख़रीद लिये और आप رضی اللہ تعالی عنہ की ख़िदमत में ले आया। अभी हाथ में रखे ही थे कि वोह साइल फिर आ गया। आप رضی اللہ تعالی عنہ ने फ़रमाया : "येह उसे दे दो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप इस में से कुछ चख लीजिये।" फ़रमाया :

1.....تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم۳۴۲۱عبداللہ بن عمربن الخطاب، ج۳۱،ص۱۴۰.

2.....المعجم الکبیر، الحدیث:۱۳۰۶۷، ج۱۲، ص۲۰۶.

www.dawateislami.net

"नहीं, येह उसे दे दो।" मैं ने वोह ख़ोशा उसे दे दिया। वोह साइल इसी त़रह़ लौट कर आता रहा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे अंगूर देने का हुक्म फ़रमाते रहे। बिल आख़िर तीसरी या चौथी बार मैं ने उस से कहा : "तेरा नास हो ! तुझे शर्म नहीं आती ?" फिर मैं उस से एक दिरहम के इ़वज़ अंगूरों का वोह ख़ोशा ख़रीद कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास लाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे तनावुल फ़रमा लिया।"(1)

﴾1024﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन अबी हिलाल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने मक़ामे जुहफ़ा में पड़ाव किया। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ बीमार थे, आप ने मछली खाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, रुफ़क़ा ने तलाश किया लेकिन सिर्फ़ एक ही मछली दस्तयाब हो सकी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते अबी उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मछली पका कर ख़िदमत में पेश कर दी। इतने में एक मिस्कीन इन के पास आ कर खड़ा हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "मछली उठा लो।" येह देख कर ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस मछली ने तो हमें थका दिया है और साइल को देने के लिये हमारे पास दूसरा खाना भी मौजूद था वोह उसे दे देते।" फ़रमाया : "लेकिन अ़ब्दुल्लाह को तो येह मछली पसन्द थी (और पसन्दीदा चीज़ का सदक़ा अफ़्ज़ल है)।"(2)

﴾1025-1026﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को बीमारी की ह़ालत में मछली खाने की ख़्वाहिश हुई। जब मछली पका कर पेश की गई तो एक साइल आ गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह मछली साइल को दे दो।" ज़ौजा ने कहा : "हम उसे दिरहम दे देते हैं। वोह साइल के लिये मछली से ज़ियादा फ़ाइदे मन्द हैं। आप अपनी ख़्वाहिश की तक्मील कीजिये।" फ़रमाया : "अब मेरी ख़्वाहिश येही है जो मैं कह रहा हूं।"(3)

मसाकीन से महब्बत :

﴾1027﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ज़ौजा को किसी ने इ़ताब करते हुवे कहा :

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، اخبار عبد الله بن عمر، الحديث: ١٠٥٢، ص ٢٠٧.

2 ......تاريخ دمشق لابن عساكر، الرقم ٣٤٢١ عبد الله بن عمر بن الخطاب، ج ٣١، ص ١٤٣.

3 ......الزهد لهناد بن السرى، باب الطعام فى الله، الحديث: ٦٣٥، ج ١، ص ٣٤٣.

www.dawateislami.net

"तुम इस ज़ईफ़ुल उ़म्र के साथ नर्म बरताव क्यूं नहीं करती ?" उन्हों ने कहा : मैं क्या करूं ? इन के लिये खाना बनाती हूं तो येह किसी और को खाने पर बुला लेते हैं। जब मस्जिद जाते हैं तो मैं रास्ते में बैठे हुवे मिस्कीनों को खाना भेज कर खिला देती हूं और उन को कहलवाती हूं कि इन के रास्ते में न बैठा करो। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर आते हैं तो फ़रमाते हैं कि "फ़ुलां को खाना भिजवा देना, फ़ुलां को खाना भिजवा देना।" तो मैं उन की त़रफ़ खाना भेजती हूं और उन को कहलवाती हूं कि "अगर इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तुम्हें बुलाएं तो मत आना।" (फिर जब वोह उन के बुलाने पर न आते तो) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : "तुम चाहते हो कि मैं आज की रात खाना न खाऊं ?" चुनान्चे, उस रात खाना तनावुल नहीं फ़रमाते।(1)

﴾1028﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हमेशा मिस्कीनों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फ़रमाते थे ह़त्ता कि इस की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म में कमज़ोरी पैदा हो गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा (कमज़ोरी दूर करने के लिये) खजूरों का शीरा तय्यार कर के खाने के साथ आप को पिलाया करती थीं।

कभी सैर हो कर खाना नहीं खाया :

﴾1029﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं कि अगर खाना ज़ियादा होता और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) किसी खाने वाले को पा लेते तो खुद सैर हो कर न खाते। चुनान्चे, एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَدِیْع इन की इ़यादत को ह़ाज़िर हुवे तो इन के जिस्म की नक़ाहत व कमज़ोरी देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा : "तुम इन का ख़याल रखा करो ! इन के लिये उ़म्दा खाना बनाया करो ! हो सकता है इन की जिस्मानी त़ाक़त लौट आए।" ज़ौजा ने जवाब दिया : "हम ऐसा करते हैं लेकिन वोह अपने बा'ज़ घरवालों और जो इन के पास आता है उसे अपने साथ खाने में शरीक कर लेते हैं। लिहाज़ा आप ही इन से इस बारे में बात करें।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَدِیْع ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अगर आप उ़म्दा खाना इस्ति'माल करें तो मुमकिन है कि आप की सिह़ह़त बह़ाल हो जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "मेरी उ़म्र के 80 साल बीत

1 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۲۰ ٤ عبداللّٰہ بن عمر بن الخطاب، ج ٤، ص ۱۲۵ .

www.dawateislami.net

चुके हैं और मैं ने इस दौरान एक मरतबा भी पेट भर कर खाना नहीं खाया।" या फ़रमाया : "सिवाए एक बार के कभी भी पेट भर कर खाना नहीं खाया और अब तुम चाहते हो कि मैं पेट भर कर खाऊं जब कि मेरी उ़म्र सिर्फ़ इतनी बाक़ी रह गई है जितनी दराज़ गोश की प्यास होती है।"(1)

﴾1030﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم फ़रमाते हैं : मैं अपने वालिद के साथ था कि अचानक एक आदमी गुज़रा। उस ने मेरे वालिद से कहा : "एक दिन मैं ने आप को मक़ामे जर्फ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के साथ बात चीत करते देखा था। मुझे बताइये कि आप उस वक़्त उन से क्या कह रहे थे ?" वालिद साह़िब ने फ़रमाया : मैं ने उन से येह अ़र्ज़ की थी : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप का जिस्म नह़ीफ़ व कमज़ोर हो गया है और आप को अब बुढ़ापा आ रहा है और आप के हम नशीं आप के ह़क़ व शरफ़ से ना वाक़िफ़ हैं। लिहाज़ा अपने घरवालों को हुक्म दें कि जब आप उन के पास जाएं तो वोह उ़म्दा खाना बनाएं और अच्छा सुलूक करें (ताकि आप तन्दुरुस्त व तवाना हो जाएं)।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझ पर अफ़्सोस है ! मैं ने 11, 12, 13, और 14 सालों से कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया तो अब येह क्यूं कर हो सकता है जब कि मेरी उ़म्र सिर्फ़ दराज़ गोश की प्यास जितनी बाक़ी रह गई है।"(2)

﴾1031﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने फ़रमाया : "मैं जब से इस्लाम लाया हूं कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया।"(3)

यतीमों पर शफ़्क़त :

﴾1032﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन ह़फ़्स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) जब भी खाना तनावुल फ़रमाते तो आप के दस्तर ख़्वान पर कोई यतीम ज़रूर मौजूद होता।"(4)

﴾1033﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) जब भी दोपहर या शाम का खाना तनावुल फ़रमाते तो अपने अड़ोस

---

1 ......جامع معمر بن راشد مع المصنف لعبد الرزاق، باب زھد الصحابة، الحديث: ٢٠٧٩٦، ج١٠، ص٢٧٦.

2 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، اخبار عبد الله بن عمر، الحديث: ١٠٨١، ص٢١١.

3 ......المعجم الكبير، الحديث: ١٣٠٤٤، ج١٢، ص٢٠٢.

4 ......الادب المفرد للبخارى، باب فضل من يعول يتيمًا بين ابويه، الحديث: ١٣٦، ص٥٨.

www.dawateislami.net

पड़ोस के यतीमों को ज़रूर बुला लेते। एक दिन जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोपहर का खाना तनावुल फ़रमाने लगे तो हस्बे मा'मूल यतीम को बुलवाया लेकिन कोई न आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये सत्तू कूटे जाते थे जिन्हें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोपहर के खाने के बा'द नोश फ़रमाते थे। चुनान्चे, खाने से फ़रागत के बा'द अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह सत्तू पीने के लिये उठाए ही थे कि एक यतीम आ पहुंचा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह सत्तू उसे देते हुवे फ़रमाया : "लो मैं नहीं समझता कि तुम ने धोका खाया है।"(1)

साइल को ख़ाली न फेरते :

﴾1034﴿.....हज़रते सय्यिदुना अफ़्लह बिन कसीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) किसी साइल को ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे हत्ता कि मज्ज़ूम (या'नी कोढ़ वाले) को भी अपने साथ एक ही बरतन में खाना खिलाते अगर्चे उस की उंगलियों से ख़ून टपक रहा होता।"(2)

﴾1035﴿.....हज़रते सय्यिदुना उबैदुल्लाह बिन मुग़ीरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते सय्यिदुना उबैदुल्लाह बिन अदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی इराक़ से आप की ख़िदमत में हाज़िर हुवे, सलाम किया फिर अ़र्ज़ की : "मैं आप के लिये एक तोहफ़ा लाया हूं।" हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम क्या तोहफ़ा लाए हो ?" अ़र्ज़ की : "जवारिश।" फ़रमाया : "जवारिश क्या है ?" अ़र्ज़ की : "खाना हज़्म करने वाली एक दवा है।" फ़रमाया : "मैं ने 40 साल से पेट भर कर खाना नहीं खाया तो मैं इसे क्या करूंगा ?"

﴾1036﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن से मरवी है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से अ़र्ज़ की : "मैं आप के लिये जवारिश बना दूं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : "जवारिश क्या है ?" उस ने बताया : "येह एक दवाई है जो बद हज़्मी के लिये बहुत मुफ़ीद है।" फ़रमाया : "मैं ने तो 4 महीने से पेट भर कर खाना ही नहीं

---

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللہ بن عمر،الحدیث:۱۰۵۱،ص۲۰۷.

2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم ۳۴۲۱عبداللہ بن عمربن الخطاب،ج۳۱،ص۱۴۵،"صحنہ"بدلہ"صحفتہ".

www.dawateislami.net

खाया मुझे इस की क्या ज़रूरत मेरी ज़िन्दगी उन लोगों (या'नी सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के साथ गुज़री है जो एक मरतबा पेट भर कर खाते और दूसरी बार भूके रहा करते।"[1]

﴾1037﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास कुब्बर नामी एक चीज़ लाई गई। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हम इस का क्या करेंगे ?" लाने वाले ने कहा : "येह आप को खाना हज़्म करने में मदद देगी।" फ़रमाया : "मैं तो महीने भर में एक दो मरतबा ही पेट भर कर खाना खाता हूं।"[2]

﴾1038﴿.....हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि एक मरतबा नज्दा हरवरी के कुछ लोग हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ऊंटों के पास से गुज़रे और उन्हें हांक कर साथ ले गए। ऊंटों का चरवाहा आप के पास आया और कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने ऊंटों के सवाब ही की उम्मीद रखिये।" दरयाफ़्त फ़रमाया : "उन्हें क्या हुवा ?" चरवाहे ने बताया : "नज्दा हरवरी के कुछ लोगों का गुज़र उन के पास से हुवा तो वोह उन्हें हांक कर साथ ले गए।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह ऊंटों को ले गए तो तुम्हें कैसे छोड़ गए ?" चरवाहे ने अ़र्ज़ की : "वोह मुझे भी अपने साथ ले गए थे लेकिन मैं उन से भाग निकला हूं।" फ़रमाया : "उन्हें छोड़ कर मेरे पास आने पर तुम्हें किस चीज़ ने आमादा किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "आप मुझे उन से ज़ियादा महबूब हैं।" फ़रमाया : "तुझे उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! क्या मैं वाक़ेई तुझे उन से ज़ियादा महबूब हूं ?" चरवाहे ने क़सम उठा कर इक़रार किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ऊंटों के साथ तुझे भी सवाब का ज़रीआ़ समझता हूं।" और येह कह कर उसे आज़ाद कर दिया। फिर कुछ अ़र्से बा'द एक आदमी आया और उस ने ऊंटनी का नाम ले कर कहा कि "फ़ुलां ऊंटनी जो आप को पसन्द थी वोह बाज़ार में बिकने आई है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरी चादर दो।" चादर कन्धों पर डाली खड़े हुवे फिर बैठ गए और चादर कन्धों से उतार कर फ़रमाने लगे : "मैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के सवाब की उम्मीद लगाए हुवे हूं। फिर क्यूं इस की ख़्वाहिश करूं ?"[3]

---

1 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبدالله بن عمر،الحديث:١٠٥٠،ص٢٠٧.

2 ......المرجع السابق،الحديث:١٠٦٠،ص٢٠٨،"له الكبر"بدله"له الكبل".

3 ......الزهدلابی داود،اخبارعبدالله بن عمر،الحديث:٣٠٣،ج١،ص٣٢٨.

www.dawateislami.net

﴾1039﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अपने एक ग़ुलाम को मुकातब बनाया और किताबत की रक़म क़िस्त़वार मुक़र्रर फ़रमाई। चुनान्चे, जब पहली क़िस्त़ की अदाएगी का वक़्त आया तो ग़ुलाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रक़म ले आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''येह रक़म कहां से लाए हो ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''कुछ कमा कर और कुछ लोगों से मांग कर।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तो क्या तुम लोगों का मैल कुचैल ला कर मुझे खिलाना चाहते हो ?'' जाओ मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद करता हूं और जो रक़म लाए हो उसे भी ले जाओ।''(1)

﴾1040﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के एक साह़िबज़ादे ने उन से तहबन्द मांगा और अ़र्ज़ की, कि ''मेरा तहबन्द फट गया है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तहबन्द काट कर दोबारा सी लो फिर इसी को पहन लो।'' लेकिन उन्हों ने ऐसा करना ना पसन्द जाना तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तुझ पर अफ़्सोस है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर और उन लोगों से न होना जो अपना रिज़्क़ दुन्या में ही अपने पेटों में भर लेते और अपने जिस्मों पर पहन लेते हैं।''(2)

﴾1041﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के घर मेरा जाना हुवा तो मैं ने देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर मेरी उस चादर जितनी भी क़ीमती कोई चीज़ न थी।''(3)

﴾1042﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से बढ़ कर किसी शख़्स को हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा के साथ मुशाबहत रखने वाला नहीं पाया जो धारीदार चादरों में दफ़्न कर दिये गए।''(4)

﴾1043﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मुझे बताया गया कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जुह़फ़ा के मक़ाम

1 ......السنن الکبریٰ للبیھقی، کتاب المکاتب، باب من کرہ اخذھا......الخ، الحدیث:۲۱۶۶۶، ج۱۰، ص۵۵۲، مفھومًا.
2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ما قالوافی البکاء من خشیۃ اللّٰہ، الحدیث:۱۰۱، ج۸، ص۳۱۰، مفھومًا.
3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل، اخبارعبداللّٰہ بن عمر، الحدیث:۱۰۵۳، ص۲۰۷.
4 ......المرجع السابق، الحدیث:۱۰۸۰، ص۲۱۱.

www.dawateislami.net

पर उतरे तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़मिर बिन कुरैज़ ने अपने नानबाई से कहा कि "इन की ख़िदमत में खाना पेश करो।" वोह एक प्याला लाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इसे रख दो।" फिर वोह दूसरा बरतन लाया और पहला बरतन उठाना चाहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या हुवा ?" अ़र्ज़ की : "मैं येह बरतन उठाना चाहता हूं।" फ़रमाया : "इसे यहीं रहने दो और दूसरे बरतन में जो खाना लाए हो उसे भी इसी में उंडेल दो।" चुनान्चे, वोह जब भी दूसरा बरतन लाता उस का खाना पहले में डाल देता। रावी कहते हैं : कुछ देर बा'द नानबाई ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر से जा कर कहा कि "इस आ'राबी (या'नी देहात के रहने वाले) को बहुत भूक लगी है।" तो उन्हों ने उसे बताया कि येह तुम्हारे सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।"(1)

गुलामों पर शफ़्क़त :

﴾1044﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی बयान करते हैं कि मेरे आक़ा ने मुझे कहा कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के साथ जाओ और उन की ख़िदमत करो।" चुनान्चे, मैं उन के साथ हो लिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी किसी पानी के चश्मे के पास पड़ाव डालते तो वहां के रहने वालों को भी अपने साथ खाने में शरीक कर लेते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बड़े बच्चे आते और खाना खाते लेकिन एक शख़्स दो या तीन लुक़्मे ही खाता। पस जब आप मक़ामे जुह़्फ़ा पर उतरे तो अहले जुह़्फ़ा और एक उ़र्यां बदन सियाह फ़ाम गुलाम आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस गुलाम को अपने पास बुलाया तो गुलाम ने अ़र्ज़ की : "आप के इर्द गिर्द लोग बैठे हैं और मैं अपने बैठने के लिये जगह नहीं पाता।" रावी फ़रमाते हैं : "मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक जानिब सरक गए और गुलाम को अपने सीने से लगा लिया।"

﴾1045﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ज़्आ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को खुरदुरा लिबास पहने देखा तो अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं आप के लिये ख़ुरासान का बना हुवा एक नर्म लिबास लाया हूं। आप इसे ज़ेबे तन फ़रमा लेंगे तो मुझे ख़ुशी होगी क्यूंकि आप ने खुरदुरा लिबास पहन रखा है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار عبداللّٰہ بن عمر، الحدیث:۱۰۸۲، ص۲۱۱، "جاف اعرابی" بدلہ "کوفی اعرابی".

www.dawateislami.net

"मुझे दिखाओ, मैं देखूं तो कैसा लिबास है !" फिर वोह लिबास अपने हाथों में लिया तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या येह रेशमी है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं ! बल्कि ऊनी है।" फ़रमाया : "मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं येह लिबास पहन कर मैं शैख़ी व फ़ख़्र में मुब्तला न हो जाऊं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता।"(1)

कैसा लिबास पहनूं ?

﴾1046﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन अबी या'फ़ूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر के वालिद ने उन्हें बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से एक शख़्स ने पूछा कि "मैं कैसे कपड़े पहनूं ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐसे कि बे वुक़ूफ़ लोग तुम्हें उस लिबास में देख कर ह़क़ीर न जानें और अ़क़्लमन्द लोग तुम्हें मलामत न करें।" अ़र्ज़ की : "ऐसा लिबास कौन सा है ?" फ़रमाया : "जिस की क़ीमत 5 से 20 दिरहम तक हो(2)।"(3)

﴾1047﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुबैश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को दो मआ़फ़िरिय्या कपड़े (यमन के एक मआ़फ़िर नामी क़बीले में तय्यार कर्दा लिबास) पहने देखा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तहबन्द निस्फ़ पिन्डली तक था(4)।"(5)

1.....الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷۱،ص۲۱۰.

2.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 52 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "न निहायत आ'ला दरजे के हों न बहुत घटया, बल्कि मुतवस्सित़ (या'नी दरमियाना) क़िस्म के हों कि जिस त़रह़ बहुत आ'ला दरजे के कपड़ों से नुमूद होती है, बहुत घटया कपड़े पहनने से भी नुमाइश होती है। लोगों की नज़्रें उठती हैं, समझते हैं कि येह कोई साह़िबे कमाल और तारिकुद्दुन्या शख़्स है।"

3.....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۳۰۵۱،ج۱۲،ص۲۰۳،"الحلماء"بدلہ"الحکماء".

4.....**बहारे शरीअ़त** "ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 60 पर है "कपड़ों में इस्बाल या'नी इतना नीचा कुर्ता, जुब्बा, पाजामा, तहबन्द पहनना कि टख़्ने छुप जाएं ममनूअ़ है, येह कपड़े आधी पिन्डली से ले कर टख़्ने तक हों या'नी टख़्ने न छुपने पाएं।" (الفتاوی الھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع فی اللبس،ج۵،ص۳۳۳) मगर पाजामा या तहबन्द बहुत ऊंचा पहनना आज कल वहाबियों का त़रीक़ा है, लिहाज़ा इतना ऊंचा भी न पहने कि देखने वाला वहाबी समझे।

इस ज़माने में बा'ज़ लोगों ने पाजामे बहुत नीचे पहनने शुरूअ़ कर दिये हैं कि टख़्ने तो क्या एड़ियां भी छुप जाती हैं, ह़दीस में इस की बहुत सख़्त मुमानअ़त आई है, यहां तक कि इरशाद फ़रमाया : "टख़्ने से जो नीचा हो, वोह जहन्नम में है।" (صحیح البخاری،کتاب اللباس،الحدیث:۵۷۸۷،ص۴۹۴)

5.....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۳۰۴۹،ج۱۲،ص۲۰۳.

www.dawateislami.net

﴾1048﴿.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस दुन्या से तशरीफ़ ले जाने के बा'द मैं ने कभी कोई मकान बनवाया न ही कोई बाग़ लगवाया।"(1)

﴾1049﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) का एक घर था जिसे आप छोड़ चुके थे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब भी उस के क़रीब से गुज़रते तो आंखें बन्द फ़रमा लेते। न उस की त़रफ़ कभी नज़र उठा कर देखा और न ही उस में कभी दाख़िल हुवे।"(2)

﴾1050﴿.....हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : मेरे लड़कपन की बात है जब कि अभी मेरी शादी भी नहीं हुई थी और मैं (उन दिनों) ज़मानए नबवी में मस्जिद में सोया करता था उस वक़्त जब कोई शख़्स ख़्वाब देखता तो अगले दिन हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ करता था। मेरे दिल में भी तमन्ना पैदा हुई कि मैं कोई ख़्वाब देखूं जिसे हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बयान करूं। चुनान्चे, एक रात मैं ने ख़्वाब में देखा कि दो फ़िरिश्ते मुझे पकड़ कर जहन्नम की त़रफ़ ले जा रहे हैं। मैं ने देखा कि वोह पेचदार कुंवें की त़रह़ थी और कुंवें की त़रह़ उस के दो सुतून भी थे। जब मैं ने उस में चन्द ऐसे लोगों को देखा जिन्हें मैं पहचानता था तो मैं "اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ النَّار، اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ النَّار" (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं जहन्नम से। मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं जहन्नम से) कह कर जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगने लगा। वहां मौजूद एक और फ़िरिश्ते ने मुझ से कहा : "डरो मत।"

जब येह ख़्वाब मैं ने अपनी बहन ह़फ़्सा को बताया और उन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनाया तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ब्दुल्लाह अच्छा आदमी है। काश ! वोह रात के कुछ हिस्से में नमाज़ पढ़ा करे।" रावी बयान करते हैं कि इस के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रात को बहुत कम आराम फ़रमाने लगे।"(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی البناء، الحدیث:۶۳۰۳، ص۵۳۰.

2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم۳۴۲۱عبداللّٰہ بن عمربن الخطاب، ج۳۱، ص۱۲۵.

3 ......صحیح البخاری، کتاب الفضائل اصحاب النبی، باب مناقب عبداللّٰہ بن عمر۔۔الخ، الحدیث:۳۷۳۸، ص۳۰۵.

www.dawateislami.net

इबादत के वाक़िआत

जमाअ़त छूटने पर रात भर इबादत :

﴾1051﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رضی اللہ تعالٰی عنہما) जब कभी (किसी उ़ज़्र के सबब) इशा की जमाअ़त में ह़ाज़िर न हो पाते तो सारी रात इबादत में गुज़ार देते।" ह़ज़रते बिशर बिन मूसा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "आप رضی اللہ تعالٰی عنہ सारी रात इबादत किया करते थे।"(1)

﴾1052﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رضی اللہ تعالٰی عنہما) सारी रात नमाज़ में मसरूफ़ रहते। फिर फ़रमाते : "ऐ नाफ़ेअ़ ! क्या सह़र का वक़्त हो चुका है ?" मैं अ़र्ज़ करता : "नहीं।" तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ दोबारा नमाज़ में मसरूफ़ हो जाते। कुछ देर बा'द फिर पूछते : "ऐ नाफ़ेअ़ ! क्या सह़र का वक़्त हो चुका है ?" मैं अ़र्ज़ करता : "जी हां ! सह़र हो चुकी है।" तो फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बैठ जाते और इस्तिग़फ़ार व दुआ़ में मश्ग़ूल हो जाते यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता।"(2)

﴾1053﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رضی اللہ تعالٰی عنہما) रात को जब भी बेदार होते नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते।(3)

सूरए इख़्लास का सवाब :

﴾1054﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ग़ालिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رضی اللہ تعالٰی عنہما) मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में हमारे हां क़ियाम पज़ीर थे। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ नमाज़े तहज्जुद अदा फ़रमाया करते थे। एक रात तुलूए़ फ़ज्र से कुछ पहले मुझे फ़रमाया : "ऐ अबू ग़ालिब ! क्या तुम उठ कर नमाज़ नहीं पढ़ोगे ? काश ! तुम तिहाई कुरआने पाक की तिलावत कर लेते।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अब तो वक़्त बहुत थोड़ा रह गया है। सुब्ह़ तुलूअ़ होने के क़रीब है। इतने कम वक़्त में मेरे

1 ......المصنف لعبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب فضل الصلاۃ فی جماعۃ، الحدیث: ۲۰۲۰، ج۱، ص۳۹۰، مفھومًا.
2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۰۴۳، ج۱۲، ص۲۰۱.
3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابن عمر، الحدیث: ۱۹، ج۸، ص۱۷۶.

www.dawateislami.net

लिये तिहाई कुरआने पाक पढ़ना क्यूं कर मुमकिन होगा ?" फ़रमाया : "सूरए इख़्लास (या'नी قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ) तिहाई कुरआन के बराबर है।"(1)

ज़ोहर ता अ़स्र इबादत :

﴾1055﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ज़ोहर से अ़स्र तक इबादत में मसरूफ़ रहते थे।"(2)

﴾1056﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रह़ किसी को नमाज़ पढ़ते और उन से ज़ियादा किसी को अपना चेहरा, हथेलियां और (क़ियाम में) पाउं क़िब्ला रू करते नहीं देखा।"(3)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआएं :

﴾1057﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पहलू में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी। जब आप सजदे में गए तो मैं ने सुना कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ कर रहे थे :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْکَ اَحَبَّ شَیْءٍ اِلَیَّ وَاَخْشٰی شَیْءٍ عِنْدِیْ "या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी सब से ज़ियादा महब्बत और अपना सब से ज़ियादा ख़ौफ़ अ़ता फ़रमा।" मैं ने उन्हें सजदों में येह दुआ़ करते भी सुना है : رَبِّ بِمَاۤ اَنۡعَمۡتَ عَلَیَّ فَلَنۡ اَکُوۡنَ ظَہِیۡرًا لِّلۡمُجۡرِمِیۡنَ "या'नी : ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तेरे फ़ज़्लो इन्आ़म से मैं मुजरिमों का हरगिज़ मददगार न बनूं।" और आ़जिज़ी करते हुवे फ़रमाया : "इस्लाम लाने के बा'द मैं ने जो भी नमाज़ पढ़ी, इस उम्मीद पर पढ़ी कि वोह मेरे गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाए।"(4)

---

1 .....الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:١٠٥٤،ص٢٠٧.

2 .....الزھدللاما م احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:١٠٧٢،ص٢١٠.

3 .....المصنف لعبدالرزاق،کتاب الصلاۃ،باب السجود،الحدیث:٢٩٤١،ج٢،ص١١٣.

4 .....المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الصلاۃ،باب فیما یفتح بہ الصلاۃ،الحدیث:٢١،ج١،ص٢٦٣۔
کتاب الدعاء،باب ما ذکرعن ابن عمرمن قولہ،الحدیث:٤،ج٧،ص٨٧.

www.dawateislami.net

सुब्ह की दुआ :

﴾1058﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सबरह رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) सुब्ह के वक़्त यूं दुआ़ करते :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنْ اَعْظَمِ عِبَادِکَ عِنْدَکَ نَصِیْبًافِیْ کُلِّ

خَیْرٍ تَقْسِمُہُ الْغَدَاۃَ وَنُوْرًا تَھْدِیْ بِہٖ وَرَحْمَۃً تَنْشُرُھَا وَرِزْقًا تَبْسُطُہٗ وَضَرًّا تَکْشِفُہٗ وَبَلَاءً تَرْفَعُہٗ وَفِتْنَۃً تَصْرِفُھَا

“या’नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने अ़ज़ीम बन्दों में से बना दे, हर उस ख़ैरो भलाई का हिस्सा अ़ता फ़रमा कर जिसे तू सुब्ह अपने बन्दों में तक़्सीम फ़रमाता है और नूरे हिदायत, वसीअ़ रह़मत और कसीर रिज़्क़ अ़ता फ़रमा, तंगी दूर फ़रमा, पेश आने वाले मसाइब को टाल दे और फ़ितनों से नजात अ़ता फ़रमा।”(1)

﴾1059﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि “जिस दिन हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का विसाल हुवा उस दिन रूए ज़मीन पर कोई ऐसा शख़्स नहीं था जो उन जैसा अ़मल ले कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलता।”(2)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा

तिलावत करते करते रोने लगे :

﴾1060﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अबू बुज़्ह رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से सुनने वाले एक शख़्स ने मुझे येह बात बयान की, कि एक मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन की तिलावत शुरूअ़ की और जब इस आयते मुबारका पर पहुंचे :

یَوْمَ یَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ؕ﴿۶﴾
(پ۳۰،المطففین:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

तो रोने लगे ह़त्ता कि ज़मीन पर गिर गए और इस के बा’द क़िराअत न कर सके।(3)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۳۰۷۹،ج۱۲،ص۲۰۸.
2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم۳۴۲۱عبداللہ عمر،ج۳۱،ص۱۱۳.
3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللہ بن عمر،الحدیث:۱۰۶۹،ص۲۰۹.

www.dawateislami.net

﴾1061﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जब भी सूरए बक़रह के आख़िर से दो आयतें :

وَ اِنۡ تُبۡدُوۡا مَا فِیۡۤ اَنۡفُسِکُمۡ اَوۡ تُخۡفُوۡہُ یُحَاسِبۡکُمۡ بِہِ اللّٰہُ ؕ فَیَغۡفِرُ لِمَنۡ یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰہُ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۲۸۴﴾ اٰمَنَ الرَّسُوۡلُ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡہِ مِنۡ رَّبِّہٖ وَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ کُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَ مَلٰٓئِکَتِہٖ وَ کُتُبِہٖ وَ رُسُلِہٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَیۡنَ اَحَدٍ مِّنۡ رُّسُلِہٖ ۟ وَ قَالُوۡا سَمِعۡنَا وَ اَطَعۡنَا ٭۫ غُفۡرَانَکَ رَبَّنَا وَ اِلَیۡکَ الۡمَصِیۡرُ ﴿۲۸۵﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۸۴۔۲۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ **अल्लाह** तुम से इस का ह़िसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है। रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते हुवे कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अ़र्ज़ की, कि हम ने सुना और माना तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है। तिलावत फ़रमाते तो रोने लगते। फिर फ़रमाते : "बेशक येह ह़िसाब बहुत सख़्त है।"(1)

﴾1062﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) नमाज़ में जब कोई ऐसी आयत तिलावत फ़रमाते जिस में दोज़ख़ का ज़िक्र होता तो ठहर जाते। फिर दुआ़ मांगते और उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते(2)।"(3)

﴾1063﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन माहिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَالِک फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को ह़ज़रते उ़बैद बिन उ़मैर के पास देखा वोह कुछ बयान कर रहे थे। जब कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की आंखों से आंसू रवां थे।"(4)

रोते रोते हिचकियां बंध जातीं :

﴾1064﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जब येह आयते मुबारका :

1.....الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷۰،ص۲۰۹.

2.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 634 पर है : "आयते रह़मत पर सुवाल करना आयते अ़ज़ाब पर पनाह मांगना, मुन्फ़रिद नफ़्ल पढ़ने वाले के लिये जाइज़ है।"

3.....الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷٤،ص۲۱۰.

4.....اخبارمکۃ للفاکھی،ذکرالقصص بمکۃ......الخ،الحدیث:۱۶۲۱،ج۲،ص۳۳۸.

www.dawateislami.net

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ (پ۲۷،الحديد:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिये।*

तिलावत करते तो रोने लगते यहां तक कि रोते रोते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिचकियां बंध जातीं।(1)

इत्तिबाए सहाबा का दर्स :

﴾1065﴿.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "जो किसी की पैरवी करना चाहता हो वोह अस्लाफ़ की पैरवी करे जो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबा हैं। येही इस उम्मत के बेहतरीन लोग हैं। इन के दिल नेकी व भलाई में सब लोगों से बढ़ कर हैं। इन का इ़ल्म सब से वसीअ़ और इन में बनावट व नुमाइश न थी। येह वोह नुफ़ूसे कुदसिय्या हैं कि जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत और दीन की तब्लीग़ के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। लिहाज़ा तुम उन के अख़्लाक़ व आ़दात और उन के तौर त़रीक़ों पर चलो क्यूंकि वोह हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबा हैं। रब्बे का'बा की क़सम ! येही लोग हिदायत के सीधे रास्ते पर गामज़न थे। ऐ बन्दे ! मह़ज़ अपने बदन की ह़द तक दुन्या से तअ़ल्लुक़ क़ाइम कर और अपने दिलो दिमाग़ को इस से दूर रख क्यूंकि तेरी नजात का दारो मदार तेरे अ़मल पर है। लिहाज़ा तू अभी से मौत की तय्यारी कर ताकि तेरा अन्जाम और ख़ातिमा अच्छा हो।"

﴾1066﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुद्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र, हज़रते सय्यिदुना अबू सईद, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और दीगर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का ज़माना पाया है। इन हज़रात की राए येह थी कि "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के सिवा उन में से कोई भी इस हालत पर क़ाइम नहीं रहे जिस ह़ालत पर हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा हुवे थे।"(2)

---

1 ......المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الزهد،كلام عبدالله بن عمر،الحديث:۲۱،ج۸،ص۱۷۶.

2 ......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب كان ابن عمر خيرهذه الامة،الحديث:۶۴۳۱،ج۴،ص۷۲۷.

www.dawateislami.net

हासिद और मुतकब्बिर आलिम नहीं हो सकता :

﴾1067﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि "वोह शख़्स आलिम नहीं हो सकता जो अपने बडों से हसद करता हो, छोटों को हक़ीर समझता हो और इल्म को दुन्या के हुसूल का ज़रीआ बनाता हो।"(1)

﴾1068﴿.....हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबू जा'द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "कोई बन्दा उस वक़्त तक हक़ीक़ते ईमान तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि लोग दीन पर उस की इस्तिक़ामत देख कर उसे बे वुक़ूफ़ न समझें।"(2)

मश्वरा करने की तरग़ीब :

﴾1069﴿.....हज़रते सय्यिदुना सलीत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "अच्छे कामों में एक दूसरे से मश्वरा किया करो लेकिन बुराई में मश्वरा न किया करो।"(3)

﴾1070﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का फ़रमान है : "इन्सान दुन्या की कोई भी ने'मत पाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उस के दरजात में कमी आ जाती है। अगर्चे वोह बारगाहे इलाही में कितना ही शरफ़ो इज़्ज़त रखता हो।"(4)

﴾1071﴿.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन मैमून رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि किसी ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को बताया कि हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वफ़ात पा गए हैं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर रह्म फ़रमाए।" किसी ने कहा : "ऐ अबू अब्दुर्रहमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! उन्हों ने एक लाख (दिरहम या दीनार) छोड़े हैं।" फ़रमाया : "लेकिन एक लाख ने तो उन्हें नहीं छोड़ा (या'नी उन का तो हिसाब होगा)।"(5)

﴾1072﴿.....हज़रते सय्यिदुना आसिम अहवल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने एक शख़्स को येह कहते सुना कि "दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार करने वाले और आख़िरत में रग़बत रखने वाले कहां गए?"

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد،کلام ابن عمر،الحدیث:۳،ج۸،ص۱۷٤،بدون"بمکان".

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد،کلام ابن عمر،الحدیث:٤،ج۸،ص۱۷٥ .

3 ......المرجع السابق،الحدیث:۱٦،ص۱۷٦ . 4 ......المرجع السابق،الحدیث:۲،ص۱۷٤ .

5 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۵۱٤۹،ج۵،ص۲۲٤

www.dawateislami.net

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के मज़ाराते मुबारका दिखाए और फ़रमाया : "क्या तुम इन लोगों के बारे में सुवाल कर रहे हो ?"(1)

शराब से नफ़रत :

﴾1073﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन हुबैब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "अगर मेरी उंगली शराब में पड़ जाए तो इसे अपने हाथ के साथ रखना मुझे गवारा नहीं होगा।"(2)

﴾1074﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "तांबे के बरतन का खोलता हुवा जला देने वाला पानी पीना मुझे मिट्टी के घड़े में बनाई गई (नशा आवर) नबीज़(3) पीने से ज़ियादा पसन्द है।"(4)

﴾1075﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد से मरवी है कि जिसे शराब पीने और ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने पर मजबूर किया गया हो उस के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : "अगर वोह शराब पिये न ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाए ह़त्ता कि उसे क़त्ल कर दिया जाए तो उस ने ख़ैर व भलाई(5) को पा लिया और और अगर वोह शराब पी ले और ख़िन्ज़ीर का गोश्त खा ले तो वोह मा'ज़ूर है (या'नी उस पर कोई गुनाह नहीं)।"

---

1 ......شعب الإيمان للبيهقى، باب فى الزهد وقصر الامل، الحديث: ١٠٥٢٠، ج٧، ص٣٤٣.

2 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الاشربة، باب فى الخمر وماجاء فيها، الحديث:٦، ج٥، ص٥٠٩، مفهومًا.

3 .....ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "नबीज़ उ़मूमन खजूर के शरबत (ज़ुलाल) को कहते हैं कि रात को किशमिश या खजूरें पानी में भिगो दी जाती हैं। सुब्ह़ को वोह पानी निथार कर पिया जाता है इसे नबीज़ कहते हैं। येह बहुत ही मुक़व्वी और ज़ूदे हज़्म होता है। येह ह़लाल है ब शर्ते कि ख़ुदशा को न पहुंचे अगर बहुत रोज़ तक रखा रहे तो झाग छोड़ देता है और नशा आवर है। अब ह़राम हो जाता है कि फ़रमाया गया كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 90)

4 ......موسوعة لابن ابى الدنيا، كتاب ذم المسكر، الحديث:٢٩، ج٥، ص ٢٦٠، بدون "قداغلى".

5 .....مَعَاذَ اللّٰہ शराब पीने या ख़ून पीने या मुर्दार का गोश्त खाने या सुअर का गोश्त खाने पर इकराह किया गया, अगर वोह इकराह ग़ैर मुलजी है या'नी जस व ज़र्ब (या'नी क़ैदो मार पीट) की धमकी है तो इन चीज़ों का खाना पीना जाइज़ नहीं है, अलबत्ता शराब पीने में इस सूरत में ह़द नहीं मारी जाएगी कि शुबे से ह़द साक़ित़ हो जाती है और अगर वोह इकराह मुलजी है या'नी क़त्ल या क़त़ए उ़ज़्व की धमकी है तो इन कामों का करना जाइज़ बल्कि फ़र्ज़ है। अगर सब्र किया इन कामों को नहीं किया और मार डाला गया तो गुनहगार हुवा कि शरअ़ ने इन सूरतों में उस के लिये येह चीज़ें जाइज़ की थीं जिस त़रह़ भूक की शिद्दत और इज़्त़िरार की ह़ालत में येह चीज़ें मुबाह़ हैं। हां अगर उस को येह बात मा'लूम न थी कि इस ह़ालत में इन चीज़ों का इस्ति'माल शरअ़न जाइज़ है और ना वाक़िफ़ी की वज्ह से इस्ति'माल न किया और क़त्ल कर दिया गया तो गुनाह नहीं। यूंहीं अगर इस्ति'माल न करने से कुफ़्फ़ार को ग़ैज़ो ग़ज़ब में डालना मक़्सूद हो तो गुनाह नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 15)

www.dawateislami.net

ज़बान की हिफ़ाज़त का दर्स :

﴾1076﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "इन्सान के आ'ज़ा में सब से ज़ियादा ज़बान इस बात की हक़दार है कि इसे (फुज़ूल बातों से) पाक रखा जाए।"(1)

किसी पर ला'नत नहीं भेजते थे :

﴾1077﴿.....हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने कभी किसी ख़ादिम पर ला'नत नहीं की। अलबत्ता एक ख़ादिम पर ला'नत की थी लेकिन फिर उसे आज़ाद फ़रमा दिया।"

इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपनी ख़ादिमा पर ला'नत करने लगे तो कहा : اَللّٰھُمَّ اَلْعِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर लाअ़। या'नी लफ़्ज़े ला'नत ज़बान पर पूरा न लाए और फ़रमाया : "मुझे येह कलिमा (या'नी ला'नत) कहना पसन्द नहीं।"(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी :

﴾1078﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "एक मरतबा एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को خَیْرُ النَّاس اَوِابْنِ خَیْرُ النَّاس के अल्क़ाबात से पुकारा या'नी : "ऐ तमाम लोगों से बेहतर या ऐ तमाम लोगों से बेहतर के साहिबज़ादे !" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "न मैं लोगों में से बेहतर हूं और न लोगों में से बेहतर का बेटा हूं। हां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक बन्दा हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत की उम्मीद और उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ रखता हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम आदमी के साथ इस तरह करते रहते हो यहां तक कि उसे हलाकत तक पहुंचा देते हो।"(3)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الادب،باب فی کف اللسان،الحدیث:۷،ج۶،ص۲۳۷۔

2 ......جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق،باب اللعن،الحدیث:۱۹۷۰۲/۱۹۷۰۳،ج۱۰، ص۳۰۔

3 ......جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق،باب المدح،الحدیث:۲۰۶۹۰،ج۱۰،ص۲۵۰۔
المدخل الی السنن الکبری للبیھقی،باب ما یکرہ لاھل العلم......الخ،الحدیث:۵۴۱،ص۳۳۴۔

www.dawateislami.net

हज के वाक़िआत

﴾1079﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ तल्बिया पढ़ते थे और इस में अपनी त़रफ़ से कुछ इज़ाफ़ा करते हुवे यूं कहते थे :

"لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ، لَبَّیْکَ وَسَعْدَیْکَ، لَبَّیْکَ وَالْخَیْرُ فِیْ یَدَیْکَ، لَبَّیْکَ وَالرَّغْبَاءُ اِلَیْکَ وَالْعَمَلُ"

तर्जमा : मैं ह़ाज़िर हूं, मैं ह़ाज़िर हूं, मैं ह़ाज़िर हूं और इबादत के लिये तय्यार हूं। मैं ह़ाज़िर हूं और भलाई तेरे इख़्तियार में है। मैं ह़ाज़िर हूं और तेरी त़रफ़ ही रग़बत है और तेरे ही लिये अ़मल करता हूं।"(1)

﴾1080﴿.....हज़रते सय्यिदुना वबरह बिन अ़ब्दुर्रहमान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के साथ सफ़रे ह़ज पर था। मैं ने उन्हें यूं तल्बिया पढ़ते सुना :

لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ وَالرَّغْبَاءُ اِلَیْکَ وَالْعَمَلُ

तर्जमा : मैं ह़ाज़िर हूं, मैं ह़ाज़िर हूं। तेरी त़रफ़ ही रग़बत है और तेरे ही लिये अ़मल करता हूं।"(2)

मुक़द्दस मक़ामात पर मांगी हुई दुआ :

﴾1081﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) (सअ़्य करते हुवे जब) सफ़ा पर चढ़ते तो यूं दुआ मांगते :

"اَللّٰھُمَّ اعْصِمْنِیْ بِدِیْنِکَ وَطَوَاعِیَتِکَ وَطَوَاعِیَۃِ رَسُوْلِکَ، اَللّٰھُمَّ جَنِّبْنِیْ حُدُوْدَکَ، اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِمَّنْ یُّحِبُّکَ وَیُحِبُّ مَلَائِکَتَکَ وَیُحِبُّ رُسُلَکَ وَیُحِبُّ عِبَادَکَ الصَّالِحِیْنَ، اَللّٰھُمَّ حَبِّبْنِیْ اِلَیْکَ وَاِلٰی مَلَائِکَتِکَ وَاِلٰی رُسُلِکَ وَاِلٰی عِبَادِکَ الصَّالِحِیْنَ، اَللّٰھُمَّ یَسِّرْنِیْ لِلْیُسْرٰی وَجَنِّبْنِی الْعُسْرٰی وَاغْفِرْلِیْ فِی الْاٰخِرَۃِ وَالْاُوْلٰی وَاجْعَلْنِیْ مِنْ اَئِمَّۃِ الْمُتَّقِیْنَ، اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ قُلْتَ اُدْعُوْنِیْ اَسْتَجِبْ لَکُمْ وَاِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ، اَللّٰھُمَّ اِذْ ھَدَیْتَنِیْ لِلْاِسْلَامِ فَلَا تَنْزِعْنِیْ مِنْہُ وَلَا تَنْزِعْہُ مِنِّیْ حَتّٰی تَقْبِضَنِیْ وَاَنَا عَلَیْہِ"

---

1 .....جامع الترمذی، ابواب الحج، باب ما جاء فی التلبیۃ، الحدیث: ٨٢٦، ص ١٧٢٩.

2 .....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب التلبیۃ وصفتھا ووقتھا، الحدیث: ٢٨١٤، ص ٨٧٠، عن نافع.

www.dawateislami.net

"**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने दीन, अपनी और अपने रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताअ़त के ज़रीए़ मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी मुक़र्रर कर्दा हुदूद से तजावुज़ करने से बचा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उन लोगों में से कर दे जो तुझ से, तेरे फ़िरिश्तों से, तेरे पैग़म्बरों से और तेरे नेक बन्दों से मह़ब्बत करते हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपना, अपने फ़िरिश्तों का, अपने पैग़म्बरों का और अपने नेक बन्दों का पसन्दीदा बना दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे आसानी मुहय्या फ़रमा और तंगी व दुश्वारी दूर फ़रमा। दुन्या व आख़िरत में मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझे परहेज़गारों का इमाम बना। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा ही फ़रमान है कि "मुझ से दुआ़ करो मैं दुआ़ क़बूल करूंगा।" और बेशक तू अपने वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब कि तू ने मुझे इस्लाम की हिदायत दी है तो अब मुझे इस ने'मत से दूर न करना और न ही इस ने'मत को मुझ से दूर करना यहां तक कि तू इस्लाम पर ही मेरी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा ले।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) सफ़ा व मर्वा पर त़वील दुआ़ करते थे येह उस दुआ़ का कुछ ह़िस्सा है। और येही दुआ़ अ़रफ़ात, दो जमरों के दरमियान और त़वाफ़ के दौरान मांगा करते थे।"(1)

हजरे अस्वद का बोसा लेते तो येह पढ़ते :

﴾1082﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जब ह़जरे अस्वद का बोसा लेते तो येह पढ़ते थे : بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से जो सब से बड़ा है।"(2)

बोसए हजरे अस्वद का जज़्बा :

﴾1083﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को ह़जरे अस्वद का बोसा लेने के लिये सख़्त भीड़ का सामना करना पड़ता ह़त्ता कि बा'ज़ दफ़्आ़ नक्सीर फूट जाती फिर लौट कर ख़ून धो डालते।"(3)

---

1 ......اخبارمكة للفاكهى،باب ذكر كيف يوقف بين الصفاو......الخ،الحديث:١٤١١/١٤١٤،ج٢،ص٢٢٩-٢٣١.

2 ......المصنف لعبدالرزاق،كتاب المناسك،باب القول عنداستلامه،الحديث:٨٩٢٥،ج٥،ص٢٤،بدون"الاسود".

3 ......المصنف لعبدالرزاق،كتاب المناسك،باب الزحام على الركن،الحديث:٨٩٣٥،ج٥،ص٢٥.

www.dawateislami.net

मदीने की हाज़िरी :

﴾1084﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا हाज़िर होते तो पहले हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस पर हाज़िरी देते और मुवाजहा शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के दुरूदे पाक पढ़ते। फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे मुबारक की त़रफ़ आते और उस त़रफ़ रुख़ कर के उन के लिये दुआ़ करते। फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे मुबारक पर आते और उस त़रफ़ रुख़ कर के उन के लिये दुआ़ करते और फिर कहते : "ऐ अब्बा जान ! ऐ अब्बा जान।"(1)

﴾1085﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन जुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि दौराने त़वाफ़ मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को उन की बेटी से निकाह़ का पैग़ाम दिया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया। मैं ने (दिल में) कहा : "अगर आप राज़ी होते तो ज़रूर जवाब देते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आइन्दा इस बारे में कोई बात नहीं करूंगा।" फिर यूं हुवा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से पहले मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ कूच कर आए फिर मैं भी मदीना शरीफ़ ह़ाज़िर हो गया और मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल हुवा और रौज़ए अक़्दस पर सलातो सलाम पेश किया। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया। आप ने मुझे ख़ुश आमदीद कहा और पूछा : "कब आए हो ?" मैं ने कहा : "अभी आ रहा हूं।" फ़रमाया : "तुम ने दौराने त़वाफ़ मुझ से सौदा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह के बारे में तज़्किरा किया था मगर उस वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शाने किब्रियाई मलह़ूज़ थी, तुम मुझे उस के इलावा कहीं और भी मिल सकते थे।" मैं ने कहा : "तक़्दीर में इसी त़रह़ मुआ़मला लिखा जा चुका था।" उन्हों ने पूछा : "अब तुम्हारी क्या राए है ?" मैं ने कहा : "मेरी राए वोही है जो पहले थी।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दोनों साहिबज़ादों ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम व ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को बुलाया और अपनी साहिबज़ादी से मेरा निकाह़ कर दिया।"(2)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الجنائز، باب من کان یاتی قبر النبی ،فیسلم، الحدیث:١، ج٣، ص٢٢٢، بتغیر.

2 ......اخبار مکة للفاکهی، الحدیث:٣٣٩/٣٤٠، ج١، ص٢٠٤۔

الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم٤٠٢ عبداللہ بن عمر بن الخطاب، ج٤، ص١٢٦۔

www.dawateislami.net

मैं तो मग़्फ़िरत चाहता हूं :

﴾1086﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी ज़िनाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा ह़जर के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) जम्अ़ हुवे, तो इन्हों ने कहा : चलो आज सब अपनी अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार करें। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने कहा : "मुझे तो ख़िलाफ़त की तमन्ना है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने कहा : "मैं चाहता हूं कि मुझ से इ़ल्म ह़ासिल किया जाए।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : "मेरी आरज़ू है कि मैं इ़राक़ का गवर्नर बनूं और इस बात की ख़्वाहिश है कि आ़इशा बिन्ते त़लह़ा और सकीना बिन्ते हुसैन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) से मेरा निकाह़ हो।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने कहा : "मैं तो मग़्फ़िरत चाहता हूं।" रावी फ़रमाते हैं : "इन सब की मुरादें पूरी हुईं और यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी मग़्फ़िरत याफ़्ता हैं।"(1)

﴾1087﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़माने में जारी एक "मा'रिके" के वक़्त किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से कहा : "क्या आप इन के साथ भी नमाज़ पढ़ लेंगे और उन के साथ भी जब कि वोह एक दूसरे के क़त्ल के दरपे हैं?" फ़रमाया जो : "حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ" और "حَیَّ عَلَی الْفَلَاح" कहेगा मैं उसे जवाब दूंगा (या'नी जा कर नमाज़ अदा करूंगा) और जो मुझे किसी मुसलमान के क़त्ल और उस का माल लूटने की दा'वत देगा मैं उस की बात क़बूल नहीं करूंगा।"(2)

﴾1088﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "फ़ितने में हमारी मिसाल उन लोगों की त़रह़ है जो सीधी राह पर चल रहे हों और उस से वाक़िफ़ भी हों। फिर इस दौरान उन पर बादल व सख़्त तारीकी छा गई तो उन में से बा'ज़ दाईं और बा'ज़ बाईं त़रफ़ हो गए और रास्ता भूल गए जब कि हम बादल व तारीकी में जहां थे वहीं ठहर गए यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बादल दूर

---

1 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم۴۶۸۷عروۃ بن الزُّبَیر، ج۴۰، ص۲۶۷.

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم۴۰۲عبداللّٰہ بن عمر بن الخطاب، ج۴، ص۱۲۷.

www.dawateislami.net

कर दिये और तारीकी को ख़त्म फ़रमा दिया । फिर हम ने अपना पहला रास्ता देखा और उसे पहचान कर दोबारा उसी पर चल दिये । येह क़ुरैश के कुछ नौजवान हैं जो सल्तनत और दुन्या के हुसूल की ख़ातिर एक दूसरे से लड़ रहे हैं और जिस दुन्या की ख़ातिर येह एक दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं मुझे उस में से अपने लिये इन पुराने जूतों के बाक़ी रहने की भी परवाह नहीं ।"(1)

इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और इत्तिबाए सुन्नत का जज़्बा :

﴾1089﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "अगर तुम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करते देख लेते तो कहते कि येह तो दीवाने हैं ।"(2)

लोग दीवाना समझते :

﴾1090﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम अह़वल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل एक आदमी से रिवायत करते हैं कि जब कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को देखता तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने की वज्ह से दीवाना समझता ।"(3)

﴾1091﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के रास्ते में अपनी सुवारी के जानवर को सर से पकड़ कर (इधर उधर) चलाते और फ़रमाते शायद मेरी सुवारी के क़दम भी उस जगह लग जाएं जहां हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी के क़दम लगे हैं ।"(4)

﴾1092﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जिस त़रह़ ऊंटनी अपने गुमशुदा बच्चे की तलाश में जंगल में मारे मारे फिरती है ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस से भी ज़ियादा अपने वालिद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नक़्शे क़दम पर चलते थे ।"(5)

---

1 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد،الرقم٤٠٢عبداللّٰہ بن عمر بن الخطاب،ج٤،ص١٢٩،مفھومًا.

2 ......المستدرك،کتاب معرفۃ الصحابۃ،باب اتباع ابن عمر آثار النبی ﷺ،الحدیث:٦٤٣٦،ج٤،ص٧٢٩.

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد،باب کلام ابن عمر،الحدیث:٧،ج٨،ص١٧٥.

4 ......المرجع السابق،الحدیث:٢٢،ج٨،ص١٧٧.

5 ......صفۃ الصفوۃ،الرقم٦٢عبداللّٰہ بن عمر بن الخطاب،ج١،ص٢٩٠.

www.dawateislami.net

फ़क़त् सलाम करने बाज़ार जाते :

﴾1093﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन अबी का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास जाता तो वोह मुझे साथ ले कर बाज़ार की त़रफ़ चल पड़ते। जब हम बाज़ार पहुंच जाते तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जिस रद्दी फ़रोश, दुकानदार और मिस्कीन या किसी शख़्स के पास से गुज़रते तो सब को सलाम करते। ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं (एक दिन जब वोह बाज़ार जाने लगे तो) : "मैं ने पूछा : "आप बाज़ार जा कर क्या करेंगे ? वहां न तो ख़रीदारी के लिये रुकते हैं, न सामान के मुतअ़ल्लिक़ कुछ पूछते हैं, न भाव करते हैं और न बाज़ार की किसी मजलिस में बैठते हैं। मेरी तो गुज़ारिश येह है कि यहीं हमारे पास तशरीफ़ रखें, हम बातें करेंगे।" फ़रमाया : "ऐ बड़े पेट वाले ! (ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पेट बड़ा था) हम सिर्फ़ सलाम की ग़रज़ से जाते हैं। हम जिस से मिलते हैं उसे सलाम कहते हैं।"(1)

﴾1094﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) (इसी त़रह़ छुपा कर अ़मल करते कि) जब तक अपनी किसी नेकी को बयान न कर देते या इसे अ़लल ए'लान न करते उस वक़्त तक किसी को ख़बर न होती थी।"(2)

उ़म्र, अ़क़्ल और जिस्म में कमी

﴾1095﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सा'दान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने मुझ से कहा : "ऐ अबुल ग़ाज़ी ! ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ौम में कितना अ़र्सा ठहरे ?" मैं ने कहा : "साढ़े नौ सौ साल।" उन्हों ने फ़रमाया : "बेशक उस वक़्त से लोगों की उ़म्रें, अज्साम और अ़क़्लें घटती जा रही हैं (या'नी अब उ़म्र, अ़क़्ल और क़द में कमी आ गई है)।"(3)

---

1 ......الموطاللامام مالك، كتاب السلام، باب جامع السلام، الحديث:١٨٤٤، ج٢، ص٤٤٤.
2 ......الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم٥٦ عمربن الخطاب، ج٣، ص٢٢١.
3 ......مسندابن الجعد، الحكم مجاهد، الحديث:٢٤٧، ص٥٥.

www.dawateislami.net

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ईमान :

﴾1096﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से किसी ने पूछा : "क्या हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن हंसा करते थे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जी हां ! हालांकि ईमान उन के दिलों में पहाड़ों से भी ज़ियादा क़वी और मज़बूत था[1] ।"[2]

वुज़ू और नमाज़ में कमी करने वाले :

﴾1097﴿.....हज़रते सय्यिदुना आदम बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "बेशक बरोज़े क़ियामत कुछ लोगों को बुलाया जाएगा जो कमी करने वाले होंगे ।" किसी ने अ़र्ज़ की : "कमी करने वालों से मुराद कौन लोग हैं ?" फ़रमाया : "वुज़ू और नमाज़ कामिल तौर पर न बजा लाने वाले ।"[3]

﴾1098﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने एक शख़्स के हां बतौरे मेहमान क़ियाम फ़रमाया । जब तीन दिन गुज़र गए तो फ़रमाया : "ऐ नाफ़ेअ़ ! अब हम पर हमारे माल से ख़र्च करो ।"[4][5]

1.....हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं : "जवाब का मक़्सद येह है हंसना हराम नहीं, हलाल है। वोह हज़रात वोह हंसी न हंसते थे जो दिल को मुर्दा कर दे या'नी हर वक़्त हंसता रहना बल्कि वोह हंसी हंसते थे जो दिल को शगुफ़्ता रखे और सामने वाले को भी शगुफ़्ता बना दे उन हज़रात के दिल ईमान से भरे हुवे थे साथ ही वोह हज़रात शगुफ़्ता दिल भी थे उन के पास बैठने वाले भी ख़ुश हो जाते थे ।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 404)

2.....جامع معمر بن راشد مع المصنف لعبد الرزاق،باب الامام راع،الحديث:٢٠٨٣٧،ج١٠،ص٢٨٦.

3.....المصنف لابن ابی شيبة،كتاب الطهارات،باب من قال لاتقبل صلاة إلا بطهور،الحديث:٥،ج١،ص١٥.

4.....المعجم الكبير،الحديث:١٣٠٧٥،ج١٢،ص٢٠٨،بتغير.

5.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़्हा 34 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा हज़रते **मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस लिये फ़रमाया कि हदीस में आया : सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में अबू शुरैह का'बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है, वोह मेहमान का इकराम करे, एक दिन रात उस का जाइज़ा है (या'नी एक दिन उस की पूरी ख़ातिरदारी करे, अपने मक़्दूर भर उस के लिये तकल्लुफ़ का खाना तय्यार कराए) और ज़ियाफ़त तीन दिन है (या'नी एक दिन के बा'द मा हज़र पेश करे) और तीन दिन के बा'द सदक़ा है। मेहमान के लिये येह हलाल नहीं कि उस के यहां ठहरा रहे कि उसे हरज में डाल दे।

www.dawateislami.net

धोके में न रहना :

﴾1099﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से पूछा : "जिस त़रह لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ (या'नी इस्लाम) के बिग़ैर कोई अ़मल नफ़्अ़ नहीं देता तो क्या मुसलमान को कोई अ़मल नुक़्सान भी नहीं पहुंचा सकता ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "(नेकियों वाली) ज़िन्दगी बसर कर और धोके में न रहना (कि मुसलमान को कोई बुराई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती) ।"(1)

﴾1100﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मा'बद जुहनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से अ़र्ज़ की : "एक आदमी जो हर भलाई अपनाता है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में शक करता है (उस का अन्जाम क्या होगा) ?" फ़रमाया : "वोह ज़रूर हलाक होगा ।" मैं ने कहा : "और वोह शख़्स जो हर क़िस्म की बुराई का इरतिकाब करता है मगर इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं (उस का अन्जाम क्या होगा) ?" फ़रमाया : "(नेकियों वाली) ज़िन्दगी बसर कर और धोके में न रहना ।"(2)

﴾1101﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक क़िस्सा गो के पास से गुज़रे । लोगों ने अपने हाथ बुलन्द कर रखे थे । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन हाथों को हलाक फ़रमाए ! तुम्हारी ख़राबी हो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बुलन्द किये हुवे हाथों बल्कि तुम्हारी शह रग से भी ज़ियादा तुम्हारे क़रीब है ।(3)"

---

1 ......جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق،باب الرخص و الشدائد،الحديث:٢٠٧٢٠،ج١٠، ص٢٥٨.

2 ......شرح اصول اعتقاداهل السنة و الجماعة،باب جماع الكلام فی الايمان،الحديث:٢٠٠٢،ج٢،ص٩١٠.

3 .....जैसा कि कुरआने मजीद में है : وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْہِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ ﴿۱۶﴾ (پ٢٦، ق:١٦) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम दिल की रग से भी इस से ज़ियादा नज़्दीक हैं ।" इस के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "येह कमाले इल्म का बयान है कि हम बन्दे के ह़ाल को ख़ुद इस से ज़ियादा जानने वाले हैं । "وَرِیْد" वोह रग है जिस से ख़ून जारी हो कर बदन के हर जुज़् में पहुंचता है । येह रग गर्दन में हैं मा'ना येह हैं कि इन्सान के अज्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई चीज़ पर्दे में नहीं ।"

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 26, ق तह़्तुल आयत : 16)

www.dawateislami.net

﴾1102﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के हमराह एक जनाज़े में शरीक हुवा जब मय्यित को दफ़्न कर चुके तो किसी ने सदा लगाई : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर उठो।'' हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम तो हर शै से बुलन्द है इस लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर उठो।''(1)

﴾1103﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के हमराह था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुज़र एक खन्डर के क़रीब से हुवा तो फ़रमाया : ''(ऐ मुजाहिद !) ज़रा पूछो ! ऐ वीरान मकान ! तुझ में बसने वालों का अन्जाम क्या हुवा ?'' मैं ने कहा : ''ऐ वीरान मकान ! तेरे अन्दर रहने वाले इन्सान कहां गए ?'' तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : ''वोह दुन्या से चले गए जब कि उन के आ'माल बाक़ी रह गए।''(2)

﴾1104﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक इ़राक़ी शख़्स के पास से गुज़रे जो बेहोश पड़ा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''इसे क्या हुवा ?'' लोगों ने बताया : ''जब इस के पास क़ुरआने मजीद पढ़ा जाता है तो इस पर बेहोशी त़ारी हो जाती है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''बेशक हम भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हैं लेकिन हम तो बेहोश नहीं होते हैं।''(3)

ईमान की हलावत पाने का ज़रीआ़ :

﴾1105﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर मह़ब्बत रखो और उसी के लिये नफ़रत करो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर दोस्ती रखो और उसी के लिये दुश्मनी करो। बेशक तुम इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पा सकते हो और कोई शख़्स चाहे कितनी ही नमाज़ें पढ़े और रोज़े रखे उस वक़्त तक ईमान की ह़लावत नहीं पा सकता जब तक कि वोह ऐसा न

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الجنائز،باب فی الرجل یرفع الجنازۃ مایقول،الحدیث:۱،ج۳،ص۲۵۹.
2 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۵۹،ص۲۰۸.
3 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عمر،الحدیث:۱۰۷۷،ص۲۱۰.

www.dawateislami.net

करे और लोगों की दोस्तियां दुन्या की वज्ह से होती हैं हालांकि येह चीज़ उन्हें कोई फ़ाइदा नहीं दे सकती।" मज़ीद बयान करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से येह भी इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने उमर ! सुब्ह को शाम की बातें न करो और शाम को सुब्ह की फ़िक्र मत करो। नीज़ अपनी सिह्हत व तन्दुरुस्ती से अपनी बीमारी के लिये नफ़्अ़ हासिल करो। ज़िन्दगी से मौत के लिये फ़ाइदा उठा लो क्यूंकि तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा नाम क्या होगा (जनाब या मर्हूम) ?" फिर मेरे कन्धे को पकड़ कर फ़रमाया : "दुन्या में अजनबी या मुसाफ़िर की तरह रहो और अपने आप को अहले कुबूर में शुमार करो।"(1)

अ़क्लमन्द मुसलमान की पहचान :

﴾1106﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) रिवायत करते हैं कि एक नौजवान ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा मुसलमान सब से ज़ियादा समझदार है ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मौत को कसरत से याद करने और उस के आने से पहले उस के लिये अच्छी तय्यारी करने वाला ही सब से ज़ियादा समझदार है।"(2)

दुन्यावी इ़ज़्ज़त बाइ़से नजात नहीं :

﴾1107﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कितने ही अ़क्लमन्द ऐसे हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म को समझते हैं और लोग उन्हें ह़क़ारत की निगाह से देखते हैं जब कि वोह कल क़ियामत के दिन नजात पाएंगे और कितने ही ख़ुश ज़बान ऐसे हैं जिन्हें लोग अच्छा समझते और इ़ज़्ज़त देते हैं लेकिन कल क़ियामत में हलाकत उन का मुक़द्दर होगी।"(3)

﴾1108﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि जब नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिद ता'मीर फ़रमाई तो

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۳۵۳۷،ج۱۲،ص۳۱۸۔
جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فی قصر الامل،الحدیث:۲۳۳۳،ص۱۸۸۶۔

2 ......سنن ابن ماجه، ابواب الزھد،باب ذکر الموت و الاستعداد له،الحدیث:۴۲۵۹،ص۲۷۳۵۔
السیرۃ النبویة لابن ھشام،غزوۃ عبدالرحمٰن بن عوف الی دومة الجندل،ص۵۶۶۔

3 ......فردوس الاخبار للدیلمی،باب الکاف،الحدیث:۴۹۴۹،ج۲،ص۱۸۴"ذمیم"بدله"دمیم".

www.dawateislami.net

एक दरवाज़ा, ख़ास तौर पर औ़रतों के लिये बनवाया और फ़रमाया : "इस दरवाज़े से कोई मर्द अन्दर आए न बहार जाए।"(1)

﴾1109﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : हम पर एक ऐसा वक़्त भी था कि हम में से हर एक अपने दिरहमो दीनार का खुद से ज़ियादा ह़क़्दार अपने मुसलमान भाई को समझता था यहां तक कि येह ज़माना आ गया और बेशक मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "जब लोग दिरहमो दीनार में बुख़्ल करने लगेंगे और बत़ौरे "ईना"(2) ख़रीदो फ़रोख़्त करेंगे और (खेती बाड़ी के लिये) बेलों की दुमें पकड़ेंगे और राहे ख़ुदा में जिहाद करना तर्क कर देंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को ज़लीलो रुस्वा कर देगा फिर उन से ज़िल्लत को दूर न फ़रमाएगा यहां तक कि वोह अपने दीन (के अह़काम) पर वापस लौट आएं।"(3)

---

(1)......مسندابی داود الطیالسی،ماروی نافع عن ابن عمر،الحدیث:۱۸۲۹،ص۲۵۱.

(2).....बैए़ "ईना" क़र्ज़ पर नफ़्अ़ ह़ासिल करने का एक ह़ीला है। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 779 पर सदरुश्शरीअ़ा बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "सूद से बचने की एक सूरत बैए़ "ईना" है। इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि बैए़ "ईना" मकरूह है क्यूंकि क़र्ज़ की ख़ूबी और हुस्ने सुलूक से मह़ज़ नफ़्अ़ की ख़ात़िर बचना चाहता है और इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि अच्छी निय्यत हो तो इस में ह़रज नहीं बल्कि बैअ़ करने वाला मुस्तह़िक़्क़े सवाब है क्यूंकि वोह सूद से बचना चाहता है। मशाइख़े बल्ख़ ने फ़रमाया बैए़ "ईना" हमारे ज़माने की अक्सर बैओं से बेहतर है। बैए़ "ईना" की सूरत येह है कि एक शख़्स ने दूसरे से मसलन दस रूपे क़र्ज़ मांगे उस ने कहा मैं क़र्ज़ नहीं दूंगा, येह अलबत्ता कर सकता हूं कि येह चीज़ तुम्हारे हाथ बारह रूपे में बेचता हूं अगर तुम चाहो ख़रीद लो इसे बाज़ार में दस रूपे की बैअ़ कर देना तुम्हें दस रूपे मिल जाएंगे और काम चल जाएगा और इसी सूरत से बैए़ हुई। बाएअ़ ने ज़ियादा नफ़्अ़ ह़ासिल करने और सूद से बचने का येह ह़ीला निकाला कि दस की चीज़ बारह में बैए़ कर दी उस का काम चल गया और ख़ात़िर ख़्वाह उस को नफ़्अ़ मिल गया। बा'ज़ लोगों ने इस का येह त़रीक़ा बताया है कि तीसरे शख़्स को अपनी बैए़ में शामिल करें या'नी मुक़्रिज़ (क़र्ज़ ख़्वाह) ने क़र्ज़दार के हाथ उस को बारह में बेचा और क़ब्ज़ा दे दिया फिर क़र्ज़दार ने सालिस के हाथ दस रूपे में बेच कर क़ब्ज़ा दे दिया और उस ने मक़रूज़ के हाथ दस रूपे में बेचा और क़ब्ज़ा दे दिया और दस रूपे समन के मक़रूज़ से वुसूल कर के क़र्ज़दार को दे दिये। नतीजा येह हुवा कि क़र्ज़ मांगने वाले को दस रूपे वुसूल हो गए मगर बारह देने पड़ेंगे क्यूंकि वोह चीज़ बारह में ख़रीदी है।"

(الفتاوی الخانیة،کتاب البیع،فصل فیما یکون فراراً عن الربا،ج۱،ص۴۰۸۔فتح القدیر،کتاب الکفالة،ج۶،ص۳۲۴۔ردالمحتار،"کتاب البیوع،باب الصرف،مطلب:فی بیع العینة،ج۷،ص۵۷۶)

(3)......المسندلابی یعلی الموصلی،مسندعبداللّٰه بن عمر،الحدیث:۵۶۳۳،ج۵،ص۱۲۳"ادخل اللّٰه"بدله"بعث اللّٰه".

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا)

मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) एक ज़हीन मुअ़ल्लिम (या'नी उस्ताज़), साहिबे फ़िरासत, क़ाबिले फ़ख़्र, बदरुल उ़लमा, क़ुत़्बुल अफ़्लाक, बादशाहों की ज़रूरत, (इल्म के) बहते चश्मे, मुफ़स्सिरे कुरआन, तावीलात को बयान फ़रमाने वाले, बारीकियों के जानने वाले, उ़म्दा लिबास ज़ेबे तन करने वाले, अपने पास बैठने वाले की इ़ज़्ज़त करने वाले और लोगों को खाना खिलाने वाले थे।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "उ़म्दा अख़्लाक़ को अपनाने में सबक़त ले जाने और नफ़्स को दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात से दूर रखने का नाम **तसव्वुफ़** है।"

﴾1110﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! मैं तुम्हें ऐसी बातें न बताऊं जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें नफ़्अ़ बख़्शे ? (फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया : हुक़ूक़ुल्लाह की हिफ़ाज़त करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। हुक़ूक़ुल्लाह की हिफ़ाज़त करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अपने सामने पाओगे। फ़राख़ी व ख़ुशहाली में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करो वोह सख़्ती व शिद्दत में तुम्हें याद रखेगा। जब सुवाल करो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से करो और जब मदद मांगो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मांगो।[1] क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है क़लम उसे लिख कर ख़ुश्क हो चुका है और जो चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरा मुक़द्दर नहीं फ़रमाई वोह सब लोग मिल कर भी तुझे नहीं दे सकते और जो शै अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे मुक़द्दर में लिख दी है उसे सब लोग मिल कर भी तुझ से नहीं रोक सकते। लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये यक़ीन के साथ अ़मल करो और जान लो कि ना गवार चीज़ पर सब्र करना बहुत ज़ियादा भलाई का काम है और मदद सब्र करने से ह़ासिल होती है। वुस्अ़त व कुशादगी तंगी के साथ होती है और हर तंगी के बा'द आसानी है।"[2]

1.....हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "या'नी हर छोटी बड़ी चीज़ आ'ला अदना मदद अल्लाह तआ़ला से मांगो येह न ख़याल करो कि इतने बड़े दरबार में ऐसी अदना चीज़ क्यूं मांगूं ? दूसरे करीम मांगने से नाराज़ होते हैं अल्लाह तआ़ला न मांगने से नाराज़ होता है। ख़याल रहे ! कि मजाज़ी त़ौर पर बादशाह, हाकिम, औलियाउल्लाह, हज़रते मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ मांगना ख़ुदा तआ़ला से ही मांगना है, लिहाज़ा येह ह़दीस उन कुरआनी आयात और अहादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन में बन्दों से मांगने का ज़िक्र या हुक्म है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 117)

2.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عبّاس، الحدیث:۲۸۰۴، ج۱، ص۶۵۹.

www.dawateislami.net

मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआओं से नवाज़ा

इल्मो फ़ेहम में तरक़्क़ी की दुआ :

﴾1111﴿.....हज़रते सय्यिदुना कुरैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "एक मरतबा रात के पिछले पहर मैं हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ पढ़ने लगा तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने बराबर कर लिया । नमाज़ से फ़रागत के बा'द मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बराबर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना किसी को रवा हो सकता है जब कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाया है !" फ़रमाते हैं : "(मेरा अदब मुलाहज़ा फ़रमा कर) हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे खुदावन्दी में मेरे लिये इल्मो फ़ह्म में तरक़्क़ी की दुआ फ़रमाई ।"(1)

हिक्मत व दानाई की दुआ :

﴾1112﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मोमिन अन्सारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मश्कीज़े की त़रफ़ बढ़े । वुज़ू फ़रमाया फिर खड़े खड़े पानी नोश फ़रमाया(2) तो मैं ने इरादा कर लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी इसी त़रह़ करूंगा । चुनान्चे, मैं उठा वुज़ू किया और फिर खड़े खड़े पानी पिया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे सफ़ में खड़ा हो गया । आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने बराबर दाईं जानिब खड़े होने का इशारा फ़रमाया मगर मैं खड़ा न हुवा । नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "मेरे बराबर खड़ा होने से तुम्हें किस चीज़ ने रोका ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे दिल में जो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो जलालत की

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن عبّاس، الحدیث: ۳۰۶۱، ج۱، ص۷۰۸، بتغیر.

2 .....तीन पानी खड़े हो कर पीना मुस्तह़ब है : (1) आबे ज़मज़म (2) वुज़ू का बचा हुवा पानी और (3) बुज़ुर्गों का पस खुर्दा (जूठा) पानी । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 70 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

शम्अ़ रौशन है उस ने मुझे इस से बाज़ रखा।" येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे हिक्मत व दानाई अ़ता फ़रमा।"(1)

इल्मो हिक्मत की दुआ़ :

﴾1113﴿.....हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने सीनए अक़्दस से लगा कर मेरे लिये इल्मो हिक्मत की दुआ़ फ़रमाई।"(2)

बरकत की दुआ़

﴾1114﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के लिये येह दुआ़ फ़रमाई कि "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे बरकत अ़ता फ़रमा और इशाअ़ते दीन का ज़रीआ़ बना।"(3)

﴾1115﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर से बाहर तशरीफ़ लाए तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मिले। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबुल फ़ज़्ल ! मैं तुम्हें खुश ख़बरी न सुनाऊं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्यूं नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे ज़रीए इस अम्र की इब्तिदा फ़रमाई और तेरी औलाद के ज़रीए इस की तक्मील फ़रमाएगा।"

﴾1116﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ब्बास की औलाद में से कुछ बादशाह होंगे जो मेरी उम्मत के उमूरे ख़िलाफ़त के ज़िम्मेदार होंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के ज़रीए इस्लाम को शानो शौकत अ़ता फ़रमाएगा।"(4)

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:١١٤٦٦، ج١٢، ص٤٦، مختصرًا.

2 ......صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، باب ذكر ابن عبّاس، الحديث:٣٧٥٦، ص٣٠٦.

3 ......الكامل فى ضعفاء الرجال لابن عدى، الرقم ٦٢٨ داود بن عطاء مدنى، ج٣، ص٥٥٠.

4 ......الجامع الصغير للسيوطى، حرف اللام، الحديث:٧٧٢١، ص٤٧٢.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इल्मी मक़ाम :

﴾1117﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को कसरते इल्म की वज्ह से बह़रे बेकरां कहा जाता है।"(1)

सय्यिदुल मलाइका عَلَیْہِ السَّلَام की पेशीन गोई :

﴾1118﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : मैं बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवा। उस वक़्त सय्यिदुल मलाइका हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام भी सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर थे। उन्हों ने अ़र्ज़ की : "इब्ने अ़ब्बास इस उम्मत के बहुत बड़े आ़लिम होंगे। लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन पर ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाएं।"(2)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस और दुआ़ की बरकत :

﴾1119﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस मेरे सर पर रखा और दुआ़ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे हिक्मत व दानाई और तफ़्सीर का इल्म अ़ता फ़रमा।" फिर अपना दस्ते अन्वर मेरे सीने पर रखा तो मैं ने उस की ठन्डक अपनी पुश्त में मह़सूस की। फिर दुआ़ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस का सीना इल्मो हिक्मत का गन्जीना बना।" (रावी फ़रमाते हैं :) "इस की बरकत ऐसी हुई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कभी किसी सुवाल का जवाब देने से न घबराए और ता ह़यात उम्मत के बहुत बड़े आ़लिम रहे।(3)

﴾1120﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये ख़ैरे कसीर की दुआ़ फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : "तुम क़ुरआने करीम के कितने अच्छे तर्जुमान (या'नी तफ़्सीर बयान करने वाले) हो !"(4)

---

1 .....الطبقات الکبریٰ لابن سعد،ذکرمن جمع القرآن......الخ،ج۲،ص۲۸۰.

2 .....الشریعۃ للآجری،کتاب فضائل العبّاس بن عبدالمطلب،باب فضل عبداللّٰہ بن عبّاس،الحدیث:۱۷۰۲،ج۴،ص۴۶.

3 .....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۵۸۵،ج۱۰،ص۲۳۷.

4 .....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۱۱۰۸،ج۱۱،ص۶۷،بدون"خیر کثیر".

www.dawateislami.net

उम्मत के बड़े आ़लिम :

﴾1121﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़नफ़िया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस उम्मत के बहुत बड़े आ़लिम थे।"(1)

इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और तफ़्सीरे क़ुरआन :

﴾1122﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अस्ह़ाबे बद्र के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उन में से किसी ने कहा कि आप हमें इन के पास क्यूं लाए हैं। इन जैसे तो हमारे बेटे भी हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "येह उन में से हैं जिन्हें तुम उ़लमा कहते हो।" फ़रमाते हैं : "फिर एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन को भी बुलाया और मुझे भी। मैं समझ गया कि आप ने उन्हें मेरे मर्तबे से आगाह करने के लिये जम्अ़ फ़रमाया है। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ (پ۳۰، النصر:۱) "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह़ आए।" पूरी सूरत तिलावत फ़रमाई फिर पूछा कि "तुम इस की तफ़्सीर में क्या कहते हो ? किसी ने कहा : "इस सूरत में हमें हुक्म दिया जा रहा है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी मदद फ़रमाए और हमें फ़त्ह़ नसीब फ़रमाए तो हम उस की ह़म्द बजा लाएं और उस से मग़फ़िरत त़लब करें।" किसी ने कहा : "हम नहीं जानते।" जब कि बा'ज़ ख़ामोश रहे और कुछ जवाब न दिया। फिर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास ! क्या आप का भी येही जवाब है ?" मैं ने कहा : "नहीं।" फ़रमाया : "तो फिर तुम क्या कहते हो ?" मैं ने कहा : "इस सूरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के विसाल की ख़बर दी है। चुनान्चे, फ़रमाया : اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ (پ۳۰، النصر:۱) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह़ आए। इस में फ़त्ह़ से "फ़त्ह़े मक्का" मुराद है और येही ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल की अ़लामत है और आख़िर में इरशाद हुवा : فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾ (پ۳۰، النصر:۳) "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने

---

(1).....المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب كان ابن عبّاس يسمى البحر......الخ، الحديث:٦٣٣٨، ج٤، ص٦٩٠.

www.dawateislami.net

रब की सना करते हुवे उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस सूरत का जो मफ़हूम तुम ने बयान किया है मैं भी इस से येही समझा हूं।"(1)

﴾1123﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के एक गुरौह में तशरीफ़ फ़रमा थे वोह एक दूसरे से शबे क़द्र का तज़्किरा करने लगे। पस शबे क़द्र से मुतअ़ल्लिक़ जिस ने जो सुना था बयान कर दिया। उन सब ने उस रात के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल बयान किये। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास ! आप क्यूं ख़ामोश हैं ? बयान करें और कम उ़म्री की वज्ह से ख़ामोश मत रहें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ताक़ है और ताक़ को पसन्द फ़रमाता है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या की ज़िन्दगी को इस त़रह़ बनाया है कि वोह सात के अ़दद के गिर्द घूमती है। इन्सान की तख़्लीक़ सात चीज़ों से फ़रमाई। हमारा रिज़्क़ सात चीज़ों में रखा। हमारे ऊपर सात आस्मान बनाए और नीचे सात ज़मीनें बनाईं। सूरए फ़ातिह़ा की बार बार तिलावत की जाने वाली सात आयात नाज़िल फ़रमाईं। क़ुरआने ह़कीम में सात क़िस्म के (नसबी) रिश्तों से निकाह़ ममनूअ़ व ह़राम ठहराया। क़ुरआने करीम में विरासत को सात क़िस्म के वुरसा के लिये बयान फ़रमाया। हम सजदा भी सात आ'ज़ा पर करते हैं। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने त़वाफ़े का'बा के सात फेरे लगाए। सफ़ा व मर्वा के दरमियान सअ़्य के सात चक्कर लगाए और जमरात की रमी भी सात कंकरियों से फ़रमाई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म को बजा लाने के लिये जो उस ने अपनी किताब में फ़रमाया है। लिहाज़ा मेरा ख़याल है कि लैलतुल क़द्र भी रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी सात रातों में होती है। وَاللہُ اَعْلَم या'नी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।"

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े ह़ैरान हुवे और फ़रमाया : "इस लड़के की आ'ला सलाहिय्यतों की कोई मिसाल नहीं। इस के सिवा किसी ने इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में मेरी मुवाफ़िक़त नहीं की, कि "लैलतुल क़द्र को माहे

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ۵۲، الحدیث: ۴۲۹۴، ص ۳۵۱.

www.dawateislami.net

रमज़ान की आख़िरी 10 रातों में तलाश करो।" फिर फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की त़रह़ कौन मेरी ताईद करता है ?"[1]

इल्मे तफ़्सीर में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ाम :

﴾1124﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हुज़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی के पास गया तो उन्हों ने फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तफ़्सीरे क़ुरआन में इम्तियाज़ी मक़ाम रखते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के बारे में फ़रमाया करते थे कि "तुम इस पुख़्ता उ़म्र के जवान की सोह़बत में रहा करो कि येह बहुत सुवाल करने वाली ज़बान और बहुत समझदार दिल का मालिक है।" और फ़रमाया : "वोह हमारे इस मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवा करते थे (रावी फ़रमाते हैं : शायद येह शबे अ़र्फ़ा होता था।) और सूरए बक़रह और सूरए आले इमरान की तिलावत कर के एक एक आयत की तफ़्सीर बयान फ़रमाया करते और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कलाम की सलासतो रवानी बे मिसाल थी।"[2]

तीन बातों की नसीह़त :

﴾1125﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत करते हैं कि उन के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मैं देख रहा हूं कि अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम्हें सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के साथ अपने पास बुलाते, क़रीब बिठाते और तुम से मश्वरा भी करते हैं। पस तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और मेरी तीन बातें याद रखो : (1) अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने कभी भी तुम से ज़र्रा बराबर झूट सादिर न हो (2) कभी उन का राज़ किसी पर ज़ाहिर न करना और (3) न उन के पास किसी की ग़ीबत करना।"

---

1 ......صحیح ابن خزیمۃ،کتاب الصیام،باب الامر بالتماس لیلۃ القدر......الخ،الحدیث:۲۱۷۲،ج۳،ص۳۲۲۔
المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۶۱۸،ج۱۰،ص۲۶۴۔
صحیح البخاری،کتاب فضل لیلۃ القدر،باب تحری لیلۃ القدر فی الوتر......الخ،الحدیث:۲۰۲۱،ص۱۵۷۔

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۶۲۰،ج۱۰،ص۲۶۵۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना आमिर शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) से अर्ज़ की, कि "इन में से हर बात एक हज़ार (दिरहमो दीनार) से बढ़ कर है।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि मेरे नज़दीक इन में से हर बात की क़ीमत 10 हज़ार से बढ़ कर है।"(1)

ख़ारिजियों को मुंह तोड़ जवाबात :

﴾1126﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुमैल हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : जब ख़ारिजियों ने अहले हक़ का साथ छोड़ दिया और अलाहिदा हो गए तो मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की ख़िदमत में अर्ज़ की : "नमाज़े ज़ोहर को ठन्डा कर लें ताकि मैं उन लोगों के पास जा कर उन से बात कर सकूं।" अमीरुल मोमिनीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे तुम पर उन की तरफ़ से नुक़्सान का ख़ौफ़ है।" मैं ने अर्ज़ की : "اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ऐसा हरगिज़ नहीं होगा।"

चुनान्चे, मैं उम्दा यमनी लिबास पहन कर उन के पास गया। देखा कि वोह ऐन दोपहर के वक़्त क़ैलूला कर रहे हैं और मैं ने उन जैसी इबादत व रियाज़त करने वाले लोग नहीं देखे थे क्यूंकि (कसरते इबादत के सबब) उन के हाथ ऊंट के घुटनों की तरह सख़्त हो चुके थे और चेहरों पर सजदों के निशान नुमायां थे। मैं उन के पास पहुंचा तो उन्हों ने मुझे ख़ुश आमदीद कहते हुवे आने की वज्ह पूछी तो मैं ने कहा : "मैं तुम से एक बात करने आया हूं और वोह येह कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के ज़माने में वह्य उतरती थी और वोह इस की तावील व तफ़्सीर को बेहतर जानते हैं।" इतने में एक कहने लगा : "इन से बात मत करो।" लेकिन दूसरे बोले : "हम इन से ज़रूर बात करेंगे।" फिर मैं ने उन से कहा : "मुझे येह बताओ कि तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामाद और (बच्चों में) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सब से पहले ईमान लाने वाले पर ला'न ता'न क्यूं करते हो ? हालांकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن भी इन के साथ हैं।" उन्हों ने कहा : "हम इन पर तीन बातों की वज्ह से ता'न व तशनीअ़ करते हैं।" मैं ने वोह तीन बातें दरयाफ़्त कीं तो उन्हों ने बताया : पहली तो येह कि इन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ١٠٦١٩، ج١٠، ص٢٦٥۔
المصنف لابن ابی شیبة، كتاب الادب، باب مايؤمر به الرجل فی مجلسه، الحديث: ١، ج٦، ص١١٣۔

www.dawateislami.net

में बन्दों को हुक्म बनाया है हालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है : (پ۷ الانعام: ۵۷) اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हुक्म नहीं मगर अल्लाह का।" मैं ने कहा : "इस के इलावा और क्या है ?" उन्हों ने कहा : "(हज़रते) अ़ली ने क़िताल किया (या'नी जंग की) लेकिन फ़रीक़े मुख़ालिफ़ के बच्चों और औ़रतों को क़ैदी बनाया न ही उन के अमवाल को ग़नीमत क़रार दिया। पस अगर वोह काफ़िर हैं तो ला मुहाला उन के अमवाल हमारे लिये हलाल हैं और अगर वोह मोमिनीन हैं तो उन के ख़ून हम पर हराम हैं।" मैं ने पूछा : "इन के इलावा और कौन सी बात है ?" वोह बोले : "उन्हों ने अपने नाम से अमीरुल मोमिनीन का लक़ब मिटा दिया है। पस अगर येह अमीरुल मोमिनीन नहीं हैं तो फिर अमीरुल काफ़िरीन होंगे।" मैं ने कहा : "अगर मैं तुम्हें क़ुरआने मजीद की आयात और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशादात बयान करूं जिन पर तुम्हारा भी ईमान है तो क्या रुजूअ़ कर लोगे ?" वोह बोले : "हां !" मैं ने कहा : "तुम्हारे इस ए'तिराज़ कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन में बन्दों को हुक्म बनाया है" का जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ (پ۷، المائدة: ۹۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शिकार न मारो जब तुम एहराम में हो और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे तो इस का बदला येह है कि वैसा ही जानवर मवेशी से दे तुम में कि दो सिक़ा आदमी इस का हुक्म करें।

नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़ावन्द और बीवी के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ (پ۵، النساء: ۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम को मियां बीवी के झगड़े का ख़ौफ़ हो तो एक पंच मर्द वालों की तरफ़ से भेजो और एक पंच औ़रत वालों की तरफ़ से।

मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं कि क्या मर्दों के ख़ून व जान की हिफ़ाज़त और उन के बाहमी उमूर की इस्लाह की ख़ातिर मर्दों को हुक्म बनाना ज़ियादा बेहतर है या एक शिकार किये हुवे ख़रगोश जिस की क़ीमत चौथाई दिरहम है के बारे में मर्दों को हुक्म बनाना ज़ियादा बेहतर है ?" बोले : "मर्दों की जान की हिफ़ाज़त और इन के बाहमी उमूर की इस्लाह के लिये मर्दों को हुक्म बनाना ज़ियादा बेहतर है।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन

www.dawateislami.net

अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) ने पूछा : "क्या येह ए'तिराज़ उठ गया ?" बोले : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उठ गया।" फ़रमाया : "तुम्हारा येह ए'तिराज़ कि वोह जंग तो करते हैं लेकिन फ़रीक़े मुख़ालिफ़ के बच्चों और औ़रतों को क़ैद नहीं करते और न ही उन के अमवाल ग़नीमत के त़ौर पर तक़्सीम करते हैं ?" (तो इस का जवाब येह है कि तुम बताओ) क्या तुम अपनी मां को क़ैद करोगे और फिर तुम उस से ऐसे तअ़ल्लुक़ात ह़लाल समझोगे जिन को तुम दीगर औ़रतों से ह़लाल समझते हो ? (अगर ऐसा है) तो बिल यक़ीन तुम काफ़िर हो चुके हो और अगर तुम येह गुमान करते हो कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا तुम्हारी मां नहीं हैं तो भी बिला शक्को शुबा तुम काफ़िर और दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो गए। क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

اَلنَّبِیُّ اَوۡلٰی بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ مِنۡ اَنۡفُسِہِمۡ وَ اَزۡوَاجُہٗۤ اُمَّہٰتُہُمۡ ؕ (پ۲۱،الاحزاب:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है और इस की बीबियां उन की माएं हैं।*

पस तुम इन दो गुमराहियों में फंस रहे हो जिस को चाहो इख़्तियार करो। अब येह ए'तिराज़ भी जाता रहा ? बोले : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जाता रहा।" फ़रमाया : "अब रहा येह ए'तिराज़ कि ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم) ने अपने नाम से अमीरुल मोमिनीन का लक़ब क्यूं मिटाया ?" (तो सुनो) बेशक सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुल्ह़े हुदैबिय्या के दिन क़ुरैश को सुल्ह़ की शराइत़ लिखने की दा'वत दी और फ़रमाया : "लिखो कि येह वोह मुआ़हदा है जिसे "मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह" ने तै किया है।" क़ुरैश ने कहा : "अगर हम आप को "अल्लाह का रसूल" मानते तो आप का रास्ता क्यूं रोकते और आप से जंगो जिदाल क्यूं करते ? इस लिये सिर्फ़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिखवाएं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अल्लाह का रसूल ही हूं अगर्चे तुम मेरी तक्ज़ीब करते हो। ऐ अ़ली ! मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह के बजाए मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिख दो।" अब बताओ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से ब दरजहा अफ़्ज़ल हैं (तो जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लफ़्ज़ "रसूलुल्लाह" मिटवाने पर ए'तिराज़ नहीं तो ह़ज़रते अ़ली (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم) के लफ़्ज़ "अमीरुल मोमिनीन" मिटाने पर ए'तिराज़ क्यूं ?) फ़रमाया : "क्या इस ए'तिराज़ का भी इज़ाला हो गया ?" बोले : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हो गया।" चुनान्चे, उन में से 20 हज़ार तौबा कर के लौट आए और बक़िय्या 4 हज़ार अपनी बद दीनी पर अड़े रहे जिन्हें बा'द में क़त्ल कर दिया गया।"[1]

1 ......المصنف لعبدالرزاق، کتاب العقول،باب ماجاء فی الحروریۃ،الحدیث:۱۸۹۴۹،ج۹،ص۴۵۵ ۔

www.dawateislami.net

तीन सुवालात के जवाबात :

﴾1127﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को ख़त़ लिखा और उस में तीन चीज़ों के बारे में सुवाल किया। रावी कहते हैं : येह तीनों सुवाल रूम के बादशाह हरिक़्ल ने ब ज़रीअ़ए ख़त़ हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किये थे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़त़ मिला तो फ़रमाया : "कौन इन सुवालों के जवाब देगा ?" हाज़िरीन में से किसी ने अ़र्ज़ की : "हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इन का जवाब दे सकते हैं।" चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़ ख़त़ लिखा जिस में उन्हों ने "मुजरह, क़ौस और उस जगह के बारे में दरयाफ़्त किया जहां सिर्फ़ एक बार सूरज तुलूअ़ हुवा न इस से पहले कभी तुलूअ़ हुवा न इस के बा'द कभी तुलूअ़ होगा !" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने ख़त़ के जवाब में तह़रीर फ़रमाया : "मुजरह, एक दरवाज़ा है जो आस्मान में खुलता है। क़ौस, अहले ज़मीन के लिये तबाही से बचने की अ़लामत है और वोह जगह जहां सिर्फ़ एक मरतबा सूरज तुलूअ़ हुवा, न इस से पहले कभी तुलूअ़ हुवा था न इस के बा'द तुलूअ़ होगा तो येह वोह रास्ता है जो बनी इस्राईल के लिये समन्दर फाड़ कर बनाया गया था।"(1)

﴾1128﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : एक शख़्स मेरे पास आया और उस ने ज़मीनो आस्मान के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान "كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا" (پ۱۷،الانبیاء:۳۰) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बन्द थे तो हम ने उन्हें खोला।" की तफ़्सीर दरयाफ़्त की तो मैं ने उसे कहा : "उस शैख़ुत्तफ़्सीर (या'नी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास जाओ, उन से येह सुवाल करो। फिर मेरे पास आओ और मुझे उन के दिये हुवे जवाब से आगाह करो।" चुनान्चे, वोह शख़्स ह़िबरुल उम्मह, हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "आस्मान बन्द थे उन से बारिश नहीं होती थी और ज़मीन भी बन्द थी कि उस से सब्ज़ा नहीं उगता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आस्मानों से बारिश बरसा कर और ज़मीनों से नबातात उगा कर उन्हें खोल दिया।" वोह शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास लौटा और उन्हें वोह जवाब सुनाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۵۹۱،ج۱۰،ص۲۴۳،مفہومًا.

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : "ज़मीनो आस्मान ऐसे ही थे।" रावी बयान करते हैं कि फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "मैं कहा करता था कि "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर पर जुरअत मुझे तअ़ज्जुब में डाल देती है लेकिन अब मुझे मा'लूम हो गया है कि उन्हें कसीर इ़ल्म अ़ता किया गया है।"(1)

इ़ल्म सीखने वालों की भीड़ :

﴾1129﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की एक ऐसी मजलिस देखी कि अगर सारे क़ुरैश इस पर फ़ख़्र करें तो येह ज़रूर उन के लिये क़ाबिले फ़ख़्र है। मैं ने देखा कि लोग जम्अ़ हो रहे हैं। यहां तक कि रास्ता तंग पड़ गया और लोगों का ऐसा तांता बंधा कि कोई शख़्स उन के दरमियान से गुज़र कर इधर उधर नहीं जा सकता था। चुनान्चे, मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास ह़ाज़िर हुवा और उन्हें दरवाज़े पर लोगों के जम्अ़ होने की इत्तिलाअ़ दी। उन्हों ने फ़रमाया : "मेरे वुज़ू के लिये पानी लाओ।" वुज़ू के बा'द आप बैठ गए और मुझ से फ़रमाया : "बाहर जाओ और जो लोग जम्अ़ हैं उन से कहो कि जिसे क़ुरआने मजीद या इस के ह़ुरूफ़ या किसी और बात के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करना है वोह अन्दर आ जाए।" रावी कहते हैं : मैं ने जैसे ही लोगों को अन्दर आने की इजाज़त दी तो वोह दाख़िल होना शुरूअ़ हो गए यहां तक कि सारा घर भर गया। फिर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से जिस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया उन्हों ने उस का जवाब दिया बल्कि उन के सुवाल से कुछ ज़ियादा ही बयान किया फिर फ़रमाया : "अपने भाइयों का ख़याल करो।" चुनान्चे, वोह लोग बाहर चले गए।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : "बाहर जाओ और लोगों से कहो कि जो क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर या तावील पूछना चाहता है वोह अन्दर आ जाए।" रावी कहते हैं : मैं बाहर निकला और लोगों को अन्दर आने की इजाज़त दी तो वोह दाख़िल होने लगे यहां तक कि सारा घर भर गया। फिर लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से जो भी सुवाल किया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का जवाब दिया। बल्कि कुछ मज़ीद इ़ल्मी बातें भी बताईं। फिर उन से फ़रमाया : "तुम अपने भाइयों का ख़याल करो।" तो वोह बाहर निकल आए। फिर फ़रमाया : "जाओ और निदा करो कि जिस का सुवाल ह़राम व ह़लाल और फ़िक़्ह के मुतअ़ल्लिक़

(1) تفسیرابن ابی حاتم،سورۃ الانبیاء،تحت الآیۃ ۳۰،ج۹،ص۳۲۰۔

www.dawateislami.net

है वोह अन्दर आ जाए।" मैं ने निदा की तो लोग अन्दर दाखि़ल होने लगे यहां तक कि सारा घर भर गया। उन्हों ने जो पूछा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से बढ़ कर उन्हें जवाब दिया फिर उन लोगों से फ़रमाया : "अपने भाइयों का ख़याल करो।" चुनान्चे, वोह बाहर निकल गए। तो मुझे हुक्म दिया कि "बाहर जा कर लोगों में येह सदा लगाओ कि जो फ़राइज़ और इस जैसे दीगर मसाइल दरयाफ़्त करना चाहता है वोह अन्दर आए।" मैं ने बाहर आ कर लोगों को अन्दर आने का कहा तो वोह दाखि़ल होने लगे यहां तक कि पूरा घर भर गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के हर सुवाल का काफ़ी व शाफ़ी जवाब दिया। फिर फ़रमाया : "अपने भाइयों का ख़याल करो।" चुनान्चे, वोह चले गए। फिर मुझे इरशाद फ़रमाया कि "जाओ और कहो कि जो शख़्स अ़रबी ज़बान, अश्आ़र और नादिर कलाम के बारे में सुवाल करना चाहता है वोह अन्दर आ जाए।" चुनान्चे, लोग अन्दर दाखि़ल होना शुरूअ़ हुवे यहां तक कि घर भर गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के हर सुवाल का तसल्ली बख़्श जवाब दिया। रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि "अगर सारे क़ुरैश इस मजलिस पर फ़ख़्र करें तो येह ज़रूर उन के लिये क़ाबिले फ़ख़्र बात है। मैं ने लोगों में इन जैसा नहीं देखा।"(1)

इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की सख़ावत :

﴾1130﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने कभी कोई घर ऐसा नहीं देखा जहां ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के घर से ज़ियादा लोगों को खिलाया पिलाया जाता हो।"

﴾1131﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने कोई घर ऐसा नहीं देखा जहां ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के घर से ज़ियादा लोगों को खाना, पानी, फल फ़्रूट और इ़ल्म सीखना मुयस्सर आया हो।"

﴾1132﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबी सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने एक हज़ार दिरहम का लिबास ख़रीद कर ज़ेबे तन फ़रमाया।(2)

---

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب ذكر تبحر علم ابن عبّاس، الحديث: ٦٣٤٧، ج٤، ص٦٩٣.

2 ......فضائل الصحابة للامام احمد بن حنبل، فضائل عبدالله بن عبّاس، الحديث: ١٩١٢، ج٢، ص٩٧٢، بدون"درهم فلبسه.

www.dawateislami.net

गाली देने वाले पर नर्मी :

﴾1133﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने बुरैदा رحمۃ اللہ تعالی علیہ से मरवी है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رضی اللہ تعالی عنہما) को गाली दी तो आप رضی اللہ تعالی عنہ ने फ़रमाया। "तुम मुझे गाली दे रहे हो जब कि मुझ में तीन ख़स्लतें हैं। मैं किताबुल्लाह की एक आयत की तिलावत करता हूं तो मैं चाहता हूं कि इस आयत के बारे में जो मैं जानता हूं उसे सब जान लें और जब मैं सुनता हूं कि कोई मुसलमान हुक्मरान अ़द्लो इन्साफ़ पर मब्नी फ़ैसला करता है तो मुझे ख़ुशी होती है अगर्चे मैं कभी उस से अपना कोई फ़ैसला न करवाऊं और जब मुसलमानों के किसी शहर पर बारिश बरसने का सुनता हूं तो मुझे ख़ुशी महसूस होती है अगर्चे मेरे जानवर वहां न चरते हों।"(1)

﴾1134﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رحمۃ اللہ تعالی علیہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رضی اللہ تعالی عنہما) ने फ़रमाया : "अगर फ़िरऔ़न भी मुझे कहे कि **अल्लाह** عزوجل तुझे बरकत दे तो मैं ज़रूर कहूं कि "और तुझे भी (**अल्लाह** عزوجل हिदायत दे)।"(2)

आप رضی اللہ تعالی عنہ के इरशादात

﴾1135﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद علیہ رحمۃ اللہ الواحد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رضی اللہ تعالی عنہما) ने फ़रमाया : "अगर एक पहाड़ दूसरे पहाड़ पर ज़ुल्मो ज़ियादती करने पर उतर आए तो सर्कशी करने वाला पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो कर हमवार हो जाए।"(3)

कसरते अमवात का एक सबब :

﴾1136﴿.....हज़रते सय्यिदुना हसन बिन मुस्लिम رحمۃ اللہ تعالی علیہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رضی اللہ تعالی عنہما) ने फ़रमाया : "जिस क़ौम में ज़ुल्म ज़ाहिर होता है उस में कसरत से अमवात वाक़ेअ़ होती हैं।"(4)

बादशाह का ख़ौफ़ हो तो क्या पढ़ा जाए ?

﴾1137﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رحمۃ اللہ تعالی علیہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رضی اللہ تعالی عنہما) ने फ़रमाया : "जब तुम किसी ज़ालिम बादशाह के पास जाओ और उस के ज़ुल्म का अन्देशा हो तो तीन मरतबा येह पढ़ लिया करो :

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۶۲۱،ج۱۰،ص۲۶۶.

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الادب،باب فی الیھودی والنصرانی یدعی لہ،الحدیث:۳،ج۶،ص۱۵۰.

3 ......الادب المفرد للبخاری،باب البغی،الحدیث:۶۰۱،ص۱۶۷.

4 ......التمھیدلابن عبدالبر،یحیی بن سعیدالانصاری،تحت الحدیث:۷۵۵،ج۱۰،ص۲۶۲.

www.dawateislami.net

اَللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُ اَعَزُّمِنْ خَلْقِهٖ جَمِيْعًا،اَللّٰهُ اَعَزُّمِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ،اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَالْمُمْسِكُ لِلسَّمٰوَاتِ السَّبْعِ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّعَبْدِهٖ فُلَانٍ،وَجُنْدِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِّىْ جَارًا مِّنْ شَرِّهِمْ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَعَزَّجَارُكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَلَااِلٰهَ غَيْرُكَ.

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी सारी मख़्लूक़ पर ग़ालिब है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर भी ग़ालिब है जिस से मैं ख़ौफ़ज़दा हूं। मैं फ़ुलां बन्दे और फ़ुलां की जमाअ़त और उस के पैरूकार जिन्नो इन्स के शर से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं। जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। जो सातों आस्मानों को ज़मीन पर गिरने से रोके हुवे है मगर उसी के हुक्म से। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू उन के शर से मुझे अपनी पनाह अ़ता फ़रमा। तू जलीलुश्शान है। तेरी पनाह वाला ही ग़ालिब है। तेरा नाम बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।"(1)

मुख़्तलिफ़ अज़्कार की बरकात :

﴾1138﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह्ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "जिस ने بِسْمِ اللّٰه पढ़ी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया। जिस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। जिस ने اَللّٰهُ اَكْبَر कहा उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बड़ाई बयान की। जिस ने पढ़ा لَااِلٰهَ اِلَّااللّٰه उस ने तौह़ीद का इक़रार किया और जिस ने لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰه कहा वोह मुत़ीओ फ़रमां बरदार हुवा। येह अज़्कार इन्सान के लिये जन्नत में रौनक़ व ख़ज़ाना होंगे।"(2)

अनार की एक ख़ुसूसिय्यत :

﴾1139﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़मीद बिन जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) अनार का (एक एक) दाना तनावुल फ़रमाते। किसी ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "मुझे ख़बर मिली है कि ज़मीन में कोई भी अनार का दरख़्त ऐसा नहीं जिसे बारदार (या'नी फल के क़ाबिल) करने के लिये उस में जन्नती अनार से दाना न डाला जाता हो, हो सकता है येह वोही दाना हो।"(3)

---

1 ......المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الدعاء، باب الرجل يخاف......الخ، الحديث:٢، ج٧، ص٢٥.

2 ......كتاب الدعاء للطبرانى، باب فضل التسبيح و التحميد، الحديث:١٧٣٥، ص٤٩٣.

3 ......المعجم الكبير، الحديث:١٠٦١١، ج١٠، ص٢٦٣.

www.dawateislami.net

टिड्डी की अ़जीब हिकायत :

﴾1140﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि येह उस वक़्त की बात है जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की बीनाई जाती रही थी कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते इब्ने ह़नफ़िय्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हां नाश्ता किया तो इस दौरान हमारे दस्तरख़्वान पर एक टिड्डी आ गिरी, मैं ने उसे पकड़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रफ़ कर दिया और अ़र्ज़ की : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई ! हमारे दस्तरख़्वान पर टिड्डी गिरी है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरा नाम पुकारा, मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ह़ाज़िर हूं।" फ़रमाया : "इस टिड्डी पर सुर्यानी ज़बान में लिखा है : "बेशक मैं रब हूं। मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। मैं وحدہ لاشریک हूं। टिड्डियां मेरे लश्करों में से एक लश्कर है। इसे मैं अपने बन्दों में से जिन पर चाहूं मुसल्लत़ कर देता हूं।" या फ़रमाया : "अपने बन्दों में से जिन पर चाहूं पहुंचा देता हूं।"(1)

चन्द आयात की तफ़्सीर :

﴾1141﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करते हैं : इस आयते मुबारका,

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِیْمٍ ﴿۸۹﴾ (پ۱۹،الشعراء:۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जो अल्लाह के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर।

से मुराद इस बात की गवाही देना है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।"(2)

﴾1142-1143﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसैन बिन वाक़िद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَاجِد फ़रमाते हैं : मेरे वालिद ने मुझे बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का फ़रमान बताया कि یَعْلَمُ خَآىٕنَةَ الْاَعْیُنِ (پ۲۴،المؤمن:۱۹) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह।" से मुराद येह है कि जब तुम किसी औ़रत को देखो तो उस से

1 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی الصبرعلی المصائب،الحدیث:۱۰۱۳۱،ج۷،ص۲۳۳،بتغیر.

2 .....کتاب الدعاء للطبرانی،باب تأویل قول اللہ عزوجل﴿اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِیْمٍ﴾،الحدیث:۱۵۸۶،ص۴۵۷.

www.dawateislami.net

ख़ियानत (या'नी ज़ियादती) का इरादा करते हो या नहीं और وَمَا تُخْفِی الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾ (پ۲۴،المؤمن:۱۹) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कुछ सीनों में छुपा है।" का मत़लब येह है कि जब तुम्हें किसी औ़रत पर क़ाबू ह़ासिल हो जाए तो तुम उस से ज़िना करते हो या उसे छोड़ देते हो। मेरे वालिद साहिब फ़रमाते हैं : "इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ामोश हो गए फिर फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें इन आयात के साथ मिली हुई आयत के मुतअ़ल्लिक़ न बताऊं ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ज़रूर बताइये।" फ़रमाया : وَاللّٰهُ یَقْضِیْ بِالْحَقِّ ؕ (پ۲۴،المؤمن:۲۰) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है।" या'नी वोह नेकी का बदला नेकी से और बुराई का बुराई से देने पर क़ादिर है। इस के बा'द है : اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۲۰﴾ (پ۲۴،المؤمن:۲۰) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** ही सुनता देखता है।"(1)

﴾1144﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़बयान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने इस आयते करीमा,

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِیْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ (پ۵،النساء:۱۳۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ **अल्लाह** के लिये गवाही देते।*

की तफ़्सीर में फ़रमाया कि "दो आदमी क़ाज़ी के पास बैठ जाएं फिर क़ाज़ी किसी का लिह़ाज़ न रखे और उन में से एक को दूसरे पर पेश करे।"(2)

﴾1145﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नज़रा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : क़ियामत से पहले एक पुकारने वाला पुकारेगा : "क़ियामत क़ाइम हो गई, क़ियामत क़ाइम हो गई।" यहां तक कि हर ज़िन्दा और मुर्दा येह पुकार सुनेगा। इस के बा'द फिर एक निदा देने वाला फ़रमाएगा : لِمَنِ الْمُلْكُ الْیَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾ (پ۲۴،المؤمن:۱۶) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आज किस की बादशाही है एक **अल्लाह** सब पर ग़ालिब की।"(3)

---

1 المعجم الاوسط،الحدیث:۱۲۸۳،ج۱،ص۳۵۲۔
تفسیر الطبری،سورۃ المؤمن،تحت الآیۃ۱۹،الحدیث:۳۰۳۱۶،ج۱۱،ص۵۰.
2 المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب البیوع والاقضیۃ،باب فی الحکم یکون......الخ،الحدیث:۱،ج۵،ص۳۵۴،بتغیر.
3 المستدرک،کتاب التفسیر،تفسیر سورۃ حمٓ المؤمن،باب الحوامیم دیباج القرآن،الحدیث:۳۶۸۹،ج۳،ص۲۲۴.

www.dawateislami.net

﴾1146﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने हमें हज के दिनों में ख़ुत़बा दिया। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सूरए बक़रह की तिलावत करने और उस की तफ़्सीर बयान करने लगे। मैं कहने लगा कि मैं ने इन जैसा कलाम करते न किसी आदमी को देखा न सुना, अगर अहले फ़ारस व अहले रूम इस कलाम को सुन लें तो ज़रूर इस्लाम क़बूल कर लें।"(1)

एक गुनाह कई गुनाहों का सबब होता है :

﴾1147-1148﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "ऐ गुनाह करने वाले ! गुनाह के बुरे अन्जाम से बे ख़ौफ़ मत रह और अगर तू इसे समझे तो जो गुनाह के नतीजे में होता है वोह ज़रूर उस गुनाह से ज़ियादा बड़ा होता है। चुनान्चे, इर्तिकाबे गुनाह के वक़्त तेरा किरामन कातिबीन से ह़या न करना, उस गुनाह से बढ़ कर है जो तू करता है। तेरा हंसना जब कि तू नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे साथ कैसा मुआ़मला फ़रमाने वाला है उस गुनाह से अ़ज़ीम तर है। तेरा गुनाह करने में कामयाबी मिलने पर ख़ुश होना गुनाह करने से बढ़ कर है। तेरा गुनाह में कामयाबी न मिलने पर ग़मगीन होना उस गुनाह से बढ़ कर है जिस का तू इर्तिकाब करता है और जब तू घर में पर्दे लटकाए गुनाह में मसरूफ़ हो कि हवा से पर्दे हिलने लगें तो तू डर जाए लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो तुझे देख रहा है उस से तेरे दिल का परेशान व मुज़्त़रिब न होना उस गुनाह से अ़ज़ीम तर है जिस का तू इर्तिकाब करता है। तेरा नास हो ! क्या तुझे मा'लूम है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की किस लग़्ज़िश की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें जिस्म की बीमारी और माल के ख़त्म होने की आज़्माइश(2) में मुब्तला फ़रमाया था ? बस यही कि एक मज़्लूम

---

1 .....المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب رای ابن عبّاس جبریل فی بیت النبی، الحدیث: ٦٣٤٤، ج٤، ص٦٩٢،
"سورۃ البقرۃ" بدلہ "سورۃ النور".

2 .....ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आज़्माइश को सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते सय्यिदुना नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی यूं बयान फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआ़ला ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हर त़रह़ की ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं, ह़ुस्ने सूरत भी, कसरते औलाद भी, कसरते अमवाल भी। अल्लाह तआ़ला ने आप को इब्तिला में डाला और आप के फ़रज़न्द व औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए, तमाम जानवर जिस में हज़ारहा ऊंट, हज़ारहा बकरियां थीं सब मर गए, तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए, कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को उन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाएअ़ होने की ख़बर दी जाती थी तो आप ह़म्दे इलाही बजा लाते थे और फ़रमाते थे मेरा क्या है जिस का था........

www.dawateislami.net

मिस्कीन ने अपने ज़ुल्म को दूर करने के लिये आप عَلَيْهِ السَّلَام से मदद त़लब की थी लेकिन आप عَلَيْهِ السَّلَام उस की मदद न कर सके, न ही ज़ालिम को नेकी करने और मिस्कीन पर ज़ुल्म से बाज़ रहने की तल्क़ीन की। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आज़माइश में मुब्तला फ़रमा दिया।"(1)

तक़्दीर में झगड़ने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश :

﴾1149﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को किसी ने ख़बर दी कि बाबे बनी सह्म के पास कुछ लोग मस्अलए तक़्दीर पर झगड़ रहे हैं। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन के पास जाने के लिये उठे। अपनी लाठी ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दी। फिर अपना एक बाज़ू ह़ज़रते इकरिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के कन्धे पर और दूसरा ह़ज़रते त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के कन्धे पर रखा। जब उन के पास पहुंचे तो उन्हों ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये जगह कुशादा कर दी। ख़ुश आमदीद कहा लेकिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन के पास न बैठे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शिहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب अपनी रिवायत में बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने उन लोगों से फ़रमाया : "तुम अपना नसब बयान करो ताकि मैं तुम्हें पहचान लूं।" तो उन्हों ने अपना अपना नसब बयान किया या उन में से एक शख़्स ने उन का नसब बयान किया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ व ख़शिय्यत ने ख़ामोश कर रखा है ह़ालांकि वोह लोग गूंगे हैं न कलाम करने से आ़जिज़, वोह ऐसे उ़लमा, फ़ुसह़ा, शगुफ़्ता

......उस ने लिया जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उस का शुक्र ही अदा नहीं हो सकता मैं उस की मरज़ी पर राज़ी हूं फिर आप बीमार हुवे तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़े बदन मुबारक सब का सब ज़ख़्मों से भर गया सब लोगों ने छोड़ दिया ब जुज़ आप की बीबी साहिबा के कि वोह आप की ख़िदमत करती रहीं और येह ह़ालत सालहा साल रही आख़िरे कार कोई ऐसा सबब पेश आया कि आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की। अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उस की दुआ़ सुन ली तो हम ने दूर कर दी जो तक्लीफ़ उसे थी।" इस त़रह़ कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि आप ज़मीन में पाउं मारिये उन्हों ने पाउं मारा एक चश्मा ज़ाहिर हुवा, हुक्म दिया गया उस से ग़ुस्ल कीजिये ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं फिर आप चालीस क़दम चले फिर दोबारा ज़मीन में पाउं मारने का हुक्म हुवा फिर आप ने पाउं मारा उस से भी एक चश्मा ज़ाहिर हुवा जिस का पानी निहायत सर्द था, आप ने ब हुक्मे इलाही पिया उस से बात़िन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं और आप को आ'ला दरजे की सिह़्ह़त ह़ासिल हुई।" (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 17, अल अम्बिया, तह़्तुल आयह : 83)

1......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر،الرقم۸۴۸ایوب نبی علیه السلام،ج۱۰،ص۶۰.

www.dawateislami.net

व शीरीं कलाम और मुअ़ज़्ज़ज़ लोग हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन्आ़मात से बा ख़बर हैं। बा वुजूद इस के जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत व किब्रियाई का तज़किरा करते हैं तो उन की अ़क़्लें क़ाबू में नहीं रहतीं, दिल शिकस्ता हो जाते हैं और उन की ज़बानें गुंग हो जाती हैं। ह़त्ता कि जब वोह उस कैफ़िय्यत से इफ़ाक़ा पाते हैं तो पाकीज़ा आ'माल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ जल्दी करते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अपनी रिवायत में इतना ज़ाइद किया है कि "वोह ह़ज़रात अपने आप को ग़ाफ़िलीन में शुमार करते हैं ह़ालांकि वोह अ़क़्लमन्द त़ाक़तवर होते हैं। वोह खुद को ज़ालिमों और ख़त़ाकारों में शुमार करते हैं बा वुजूद येह कि वोह नेकूकार और गुनाहों से बेज़ार होते हैं मगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किसी क़िस्म की कसरत के ख़्वाहां नहीं होते, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये क़लील आ'माल पर राज़ी नहीं होते और न ही आ'माल के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हैं। तुम जहां कहीं भी उन से मिलोगे उन्हें ग़मगीन और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डरने वाले पाओगे।" रावी बयान करते हैं : फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) अपनी मजलिस में वापस लौट आए।"(1)

मुन्किरे तक़्दीर पर ग़ज़ब :

﴾1150﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं : "कोई तक़्दीर का मुन्किर मेरे पास हो तो मैं उस का सर फोड़ दूं।" लोगों ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लौहे मह़फ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा फ़रमाया। उस के दोनों पहलू सुर्ख़ याक़ूत के हैं। उस का क़लम नूर का है। उस की लिखाई नूर की है। उस की चौड़ाई ज़मीनो आस्मान की दरमियानी वुस्अ़त के बराबर है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर रोज़ उसे 360 मरतबा मुलाह़ज़ा फ़रमाता है। हर नज़र पर अश्या तख़्लीक़ फ़रमाता है, ज़िन्दा करता, मारता, इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाता और ज़लील करता है। अल ग़रज़ वोह जो चाहता है करता है।"(2)

तकालीफ़ कैसे दूर होती हैं ?

﴾1151﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ग़ालिब खुल्जी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) को फ़रमाते हुवे सुना : "तुम फ़राइज़ की

1 ......الزہدللامام احمدبن حنبل،زہدایوب علیہ السلام،الحدیث:۲۳۱،ص۷۹،بتغیر.

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۶۰۵،ج۱۰،ص۲۶۰.

www.dawateislami.net

अदाएगी अपने ऊपर लाज़िम कर लो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर जो अपने हुकूक़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं उन्हें अदा करो और इस पर उसी से मदद त़लब करो क्यूंकि वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे में सिद्क़े निय्यत और सवाब की त़लब देखता है तो उस की तकालीफ़ दूर फ़रमा देता है और वोह मालिक है जो चाहता है करता है।"

रिज़्क़ में कमी का एक सबब :

﴾1152﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर मोमिन व फ़ासिक़ का रिज़्क़ लिख दिया है। पस अगर वोह रिज़्क़े ह़लाल मिलने तक सब्र करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमाता है और अगर बे सब्री से काम ले और ह़राम की त़रफ़ क़दम बढ़ाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के रिज़्क़े ह़लाल में कमी फ़रमा देता है।"

﴾1153﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से इस आयते मुबारका,

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ۝۲ (پ ۲۰، العنکبوت:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़माइश न होगी ?*

की तफ़्सीर नक़्ल करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام को उस की उम्मत की त़रफ़ मबऊ़स फ़रमाता है तो वोह नबी عَلَیْہِ السَّلَام अपनी ह़याते ज़ाहिरी तक उन के दरमियान रहता है। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा लेता है तो उस की उम्मत या जो उन में से चाहता है, कहता है : "हम अपने नबी عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत और त़रीक़ए कार पर कारबन्द हैं।" फिर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें किसी आज़माइश में मुब्तला करता है तो जो शख़्स अपने नबी عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत पर साबित क़दम रहता है वोह सच्चा और जो अपने नबी عَلَیْہِ السَّلَام के त़रीक़े से फिर कर कोई दूसरा रास्ता अपना लेता है वोह झूटा है।

एक क़दरी की तौबा का अ़जीब वाक़िआ़ :

﴾1154﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "तुम से पहली उम्मत में एक शख़्स था जो तक़दीर का मुन्किर था और अपनी बीवी से बुरा सुलूक किया करता था। एक मरतबा वोह एक

www.dawateislami.net

वीराने की त़रफ़ निकला तो वहां उसे एक खोपड़ी मिली जिस पर लिखा था कि "इसे जला कर इस की ख़ाक हवा में उड़ा दी जाएगी।" उस ने वोह खोपड़ी उठाई और उसे टोकरी में रख कर अपनी बीवी के ह़वाले कर दिया। फिर बीवी के साथ अच्छा बरताव करने लगा और कुछ ही दिनों बा'द वोह किसी सफ़र पर चला गया। पीछे उस की बीवी के पास पड़ोसनें आईं और कहने लगीं : "ऐ उम्मे फ़ुलां ! अब तेरा शोहर तेरे साथ अच्छा सुलूक करने लगा है उस ने तेरे पास कोई चीज़ अमानत तो नहीं रखवाई ?" बीवी ने कहा : "हां ! येह टोकरी अमानत रखवाई है।" तो वोह औ़रतें उसे भड़काने लगीं और कहा कि "इस में तेरे शोहर की मा'शूक़ा का सर है।" येह सुन कर उस की बीवी आग बगूला हो गई। उस ने टोकरी ली। उसे खोला तो उस में वाक़ेई एक खोपड़ी निकली। पड़ोस की औ़रतों ने कहा : "ऐ उम्मे फ़ुलां ! तुम नहीं जानतीं कि तुम ने इस के साथ क्या करना है ? ऐसा करो कि इसे जला कर इस की राख हवा में उड़ा दो।" चुनान्चे, उस ने ऐसा ही किया। जब उस का शोहर सफ़र से वापस लौटा तो बीवी को ग़ैज़ो ग़ज़ब से भरपूर पा कर टोकरी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उस की बीवी ने उसे सारा वाक़िआ़ कह सुनाया तो वोह क़दरी कहने लगा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाता और तक़्दीर के ह़क़ होने का इक़रार करता हूं।" चुनान्चे, उस ने तक़्दीर के इन्कार से तौबा कर ली।

एक सालेह़ व ख़ाइफ़ नौजवान :

﴾1155﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुक़ातिल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : "तुम से पहली उम्मत में एक शख़्स था जिस ने 80 साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की फिर अचानक उस से कोई ख़त़ा सरज़द हो गई जिस की वज्ह से वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा। इसी ख़ौफ़ के आ़लम में वोह एक बयाबान में आया और उसे मुख़ात़ब कर के कहने लगा : "ऐ बयाबान ! तुझ में रैत के टीले, झाड़ियां, रेंगने वाले जानवरों की बहुत ता'दाद है, तो क्या तुझ में कोई ऐसी जगह भी है जो मुझे मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से छुपा ले ?" बयाबान ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जवाब दिया : "ऐ फ़ुलां ! मुझ में मौजूद हर दरख़्त और झाड़ी पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर है। मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे छुपा सकता हूं ?" फिर वोह आदमी समन्दर के पास आया, उसे पुकारा और कहा : "ऐ गहरे पानी और कसीर मछलियों वाले समन्दर ! बता क्या तुझ में कोई ऐसी जगह है जो मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ से छुपा ले ?" समन्दर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बोल उठा : "ऐ फ़ुलां ! मेरे अन्दर जो भी कंकरी या जानवर

www.dawateislami.net

है उस पर एक निगहबान फ़िरिश्ता मुक़र्रर है। मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किस त़रह़ छुपा सकता हूं ?'' इस के बा'द उस शख़्स ने पहाड़ों का रुख़ किया उन के पास आया और कहा : ''ऐ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होने वाले कसीर ग़ारों वाले पहाडो ! क्या तुम में कोई ऐसी जगह है जो मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ से छुपा सके ?'' पहाड़ों ने जवाब दिया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमारे अन्दर कोई कंकरी और कोई ग़ार ऐसा नहीं जिस पर एक निगहबान फ़िरिश्ता मुक़र्रर न हो तो हम तुझे कहां छुपा सकते हैं ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : ''फिर वोह शख़्स उसी जगह क़ियाम पज़ीर हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और तौबा में मसरूफ़ रहने लगा। बिल आख़िर जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने रो कर अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर के फ़ौतशुदा अरवाह़ और मेरा जिस्म फ़ौतशुदा अज्साम से मिला दे और मुझे क़ियामत के दिन न उठाना।''

﴾1156﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا जाते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की सोह़बते बा बरकत इख़्तियार की। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रास्ते में जब कहीं पड़ाव डालते तो आधी रात तक इ़बादत करते।'' आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की तिलावत के बारे में दरयाफ़्त किया तो मैं ने बताया कि ''एक मरतबा आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِیْدُ ﴿۱۹﴾ (پ۲۶،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था।*

तो आप उसे ठहर ठहर कर बार बार पढ़ने और आंसू बहाने लगे।''[1]

ज़बान की ह़िफ़ाज़त :

﴾1157﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद जुरैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि उस ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपनी ज़बान की नोक हाथ से

1 .....فضائل الصحابة للامام احمدبن حنبل،فضائل عبداللّٰه بن عبّاس،الحديث:١٨٤٠،ج٢،ص٩٥٠.

www.dawateislami.net

पकड़ कर फ़रमा रहे हैं : "तुझ पर अफ़्सोस है ! अच्छी बात कह कि इसी में तेरा फ़ाइदा है और बुरी बात से ख़ामोश रह कि इसी में तेरी सलामती है।" देखने वाले ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "मुझे ख़बर मिली है कि क़ियामत के दिन आदमी अपनी ज़बान की वज्ह से सब से ज़ियादा ख़सारा उठाएगा।"(1)

मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा :

﴾1158﴿.....हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : "मुझे किसी मुसलमान घराने की महीना भर या हफ़्ता भर या जितने दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे उतने दिन कफ़ालत करना नफ़्ली हज करने से ज़ियादा महबूब है और मैं अपने किसी मुसलमान भाई को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दानिक़ (या'नी दिरहम के छटे हिस्से) के बराबर माल हदिय्या करूं येह मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में दीनार ख़र्च करने से ज़ियादा पसन्द है।"(2)

दिरहमो दीनार बनने पर शैतान की ख़ुशी :

﴾1159﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : जब दिरहमो दीनार बनाए गए तो इब्लीस ने इन्हें पकड़ कर अपनी आंखों से लगाया और कहा : "तुम मेरे दिल की ग़िज़ा और आंखों की ठन्डक हो। मैं तुम्हारे ज़रीए लोगों को सरकश व काफ़िर बनाऊंगा और तुम्हारी वज्ह से मैं लोगों को जहन्नम में दाख़िल कराऊंगा। मैं उस आदमी से ख़ुश हूं जो दुन्या की महब्बत में मुब्तला हो कर तुम्हारी ग़ुलामी करने लगे।"(3)

﴾1160﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : (नेक व बा कमाल) लोग दुन्या से चले गए अब सिर्फ़ "नस्नास" बाक़ी रह गए हैं। किसी ने पूछा : "नस्नास" कौन हैं ? फ़रमाया : "जो नेकियों का लुबादा ओढ़े रहते हैं लेकिन हक़ीक़त में वोह नेक नहीं होते।"(4)

---

1 ......الزھد للامام احمدبن حنبل،اخبارعبداللّٰہ بن عبّاس،الحدیث:۱۰۴۷،ص۲۰۶.

2 ......صفة الصفوة،الرقم۱۱۹عبداللّٰہ بن العبّاس بن عبدالمطلب،ج۱،ص۳۸۴.

3 ......صفة الصفوة،الرقم۱۱۹عبداللّٰہ بن العبّاس بن عبدالمطلب،ج۱،ص۳۸۴.

4 ......الزھدالکبیرللبیھقی،فصل فی العزلة والخمول،الحدیث:۲۱۹،ص۱۲۳،عن ابی ھریرہ.

www.dawateislami.net

《1161》.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने फ़रमाया : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि अ़क़्लें मांद पड़ जाएंगी यहां तक कि तुम उन में कोई भी अ़क़्ल वाला न पाओगे।"

《1162》.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या आप हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मिल्लत पर हैं ?" मैं ने कहा : "नहीं ! और न ही मिल्लते उ़स्मान पर हूं बल्कि मैं तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मिल्लत पर हूं।"(1)

गिर्या व ज़ारी :

《1163》.....हज़रते सय्यिदुना अबू रजा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की येह जगह (या'नी आंसू बहने की जगह कसरते गिर्या के सबब) पुराने तस्मे की त़रह़ हो गई थी।"(2)

《1164》.....हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि मुझे बताया गया कि हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते थे : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुरुमात की ता'ज़ीम करते हुवे किसी को नहीं देखा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जब भी उन्हें याद कर के रोना चाहता हूं तो रो लेता हूं।"(3)

सफ़ेद परन्दा कफ़न में दाख़िल हो गया !

《1165》.....हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि मैं त़ाइफ़ में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के जनाज़े में शरीक था। जब उन का जनाज़ा नमाज़ के लिये रखा गया तो अचानक एक सफ़ेद परन्दा आया जो उन के कफ़न में घुस गया लोगों ने उसे तलाश किया लेकिन वोह न मिला। फिर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र पर ईंटें दुरुस्त की गईं तो हम ने एक आवाज़ सुनी लेकिन आवाज़ वाला दिखाई न दिया उस ने कहा :

---

1 ......شرح اصول اعتقاداهل السنة و الجماعة،سیاق......فی الحث علی التمسك......الخ،الحدیث:۱۳۳،ج۱،ص۹۳.

2 ......فضائل الصحابة للامام احمدبن حنبل،فضائل عبداللّٰه بن عبّاس،الحدیث:۱۸۴۳،ج۲،ص۹۵۲.

3 ......فضائل الصحابة للاما م احمدبن حنبل،فضائل عبداللّٰه بن عبّاس،الحدیث:۱۸۳۸،ص۹۵۰.

www.dawateislami.net

يٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾ وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾

(پ ۳۰،الفجر:۲۷تا۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इत़्मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।* (1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी मुहाजिरीन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ की ख़ातिर लड़ने वाले, सच बोलने वाले, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लुआ़बे दहन से घुट्टी पाने वाले, ख़ानदानी शराफ़त वाले, रात को क़ियाम करने वाले, लगातार रोज़े रखने वाले, बे मिसाल शमशीरज़न, पुख़्ता राए वाले, बहादुरों को ललकारने वाले, ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत के पैरूकार, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रफ़ीक़, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के पोते, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ा शिआ़र ज़ौजा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के भांजे मुआ़मले की गहराई तक जाने वाले और जंग में ख़ून से लत पत होने वाले हैं।

अहले तसव्वुफ़ फ़रमाते हैं : "मख़्लूक़ की कसरत पर ह़क़ को ग़ालिब कर देने का नाम **तसव्वुफ़** है।"

रह़मते आ़लम का बा बरकत ख़ून :

﴾1166﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم से रिवायत है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरबारे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवे तो देखा कि मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पछने लगवा रहे हैं। फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! येह ख़ून ले जाओ और ऐसी जगह मह़फ़ूज़ कर

---

1 ......صفة الصفوة،الرقم۱۱۹ عبدالله بن العبّاس بن عبدالمطلب،ذكروفاة ابن عبّاس،ج۱،ص۳۸٤.

www.dawateislami.net

आओ जहां कोई न देखे।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : बाहर जा कर मैं ने सारा ख़ून पी लिया[1]। जब ख़िदमते अक़्दस में लौट कर आया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! ख़ून कहां मह़फ़ूज़ किया ?" अ़र्ज़ की : "ऐसी जगह जहां कोई नहीं देख सकता।" क्यूंकि मैं समझ गया था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लोगों के मुत्तलअ़ होने का अन्देशा था। इरशाद फ़रमाया : "शायद तुम ने उसे पी लिया है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "तुम्हें ख़ून पीने का किस ने कहा था ? ख़राबी है तेरे लिये लोगों से और उन के लिये तुझ से[2]।"[3]

﴾1167﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ख़ादिम हज़रते कैसान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िरी के लिये आए तो देखा कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास एक बरतन था जिस से वोह कुछ पी रहे थे। फ़ारिग़ होने के बा'द वोह भी बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम फ़ारिग़ हो गए हो ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने इन्हें क्या हुक्म दिया था ?" इरशाद फ़रमाया : "पछने लगवाने से जो ख़ून निकला था वोह किसी मह़फ़ूज़ जगह रख आने को दिया था।" हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! इन्हों ने तो उसे

1.....सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ुज़लात (या'नी पेशाब व ख़ून वग़ैरा) त़ाहिरो त़य्यिब हैं हमारे लिये उन का खाना पीना ह़लाल है।"(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1, स. 435)

2.....''ख़राबी है तेरे लिये लोगों से।'' इस की शर्ह़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को मुह़ासरा कर के शहीद कर दिया गया और फिर सूली चढ़ाया गया येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ह़ज्जाज वग़ैरा की त़रफ़ से ख़राबी है।" और "लोगों के लिये तुझ से" इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ातिलों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल करने और का'बए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की बे ह़ुर्मती का जो बहुत बड़ा गुनाह अपने सर लिया वोह उन लोगों के लिये ख़राबी है।"
(شرح العلامۃ الزرقانی علی المواھب اللدنیۃ ج٥، ص٥٤٦)

3.....المستدرک،کتاب معرفۃ الصحابۃ،شراب ابن الزُّبیر دم النبی بعداحتجامہ،الحدیث:٦٤٠٠،ج٤،ص٧١٧.

www.dawateislami.net

पी लिया है।'' हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या वाक़ेई तुम ने उसे पी लिया है ?'' हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''जी हां !'' इरशाद फ़रमाया : ''क्यूं ?'' अ़र्ज़ की : ''मैं ने चाहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बा बरकत ख़ून मेरे पेट में चला जाए।'' तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के सर पर रखा और इरशाद फ़रमाया : ''ख़राबी है तेरे लिये लोगों से और लोगों के लिये तुझ से। तुझे दोज़ख़ की आग नहीं छूएगी मगर येह कि क़सम पूरी करने के लिये (1)।''(2)

यज़ीद पलीद की बैअ़त से खुला इन्कार :

﴾1168﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बक्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی علیھم बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़बर मिली कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم यज़ीद की बैअ़त से बचने के लिये मदीनए त़य्यिबा से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا रवाना हो गए हैं। चुनान्चे, जब हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए तो मक़ामे तनईम में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हुई। मुस्कुराते हुवे उन से उन के अक़ारिब व दोस्तों का ह़ाल दरयाफ़्त किया और जिस मुआ़मले की ख़बर मिली थी उस के बारे में कुछ न कहा। इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मुलाक़ात

1.....यहां इस फ़रमाने बारी तआ़ला की त़रफ़ इशारा है : ''وَاِنۡ مِّنۡکُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ کَانَ عَلٰی رَبِّکَ حَتۡمًا مَّقۡضِیًّا ﴿ۚ۷۱﴾'' (پ۱۶، مریم:۷۱)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो, तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।''

सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के पहले हिस्से की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''नेक हो या बद, मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी : ऐ मोमिन ! गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट (या'नी गर्मी) सर्द कर दी है। ह़सन व क़तादा (رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تعالٰی) से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात़ पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है।'' और दूसरे हिस्सए आयत के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं : ''या'नी वुरूदे जहन्नम क़ज़ाए लाज़िम है जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है।'' (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम, तह़्तुल आयह : 71)

2.....جزء ابن الغطریف،الحدیث:٦٥،ص٦٦،مختصراً.

www.dawateislami.net

हुई तो उन से यज़ीद की बैअ़त के बारे में तबादलए ख़याल किया और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर फ़रमाया कि "येह सब तुम ने ही किया है कि इन दो आदमियों को अपने साथ मिला लिया है और येह मुआ़मला तय्यार कर लिया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने कहा : "मैं किसी क़िस्म की मुख़ालफ़त के दरपे नहीं हूं। अलबत्ता एक साथ दो आदमियों के हाथ पर बैअ़त करना मुझे पसन्द नहीं। क्यूंकि अगर मैं दोनों की बैअ़त कर लूं तो फिर दोनों में से किस की इत़ाअ़त करूंगा ? अगर आप हुकूमत के अह्ल नहीं हैं तो यज़ीद की बैअ़त कर लीजिये हम भी आप के साथ उस की बैअ़त कर लेंगे।" यूं जब सब ने यज़ीद की बैअ़त से इन्कार कर दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर फ़रमाया : "याद रखो ! मुझे बहुत सारे लोगों की बातें पहुंची हैं जो क़ाबिले ग़ौर हैं और मुझे उन लोगों के बारे में मुख़्तलिफ़ अफ़्वाहें पहुंची हैं जिन्हें मैं सरासर झूट समझता हूं क्यूंकि येह लोग बात सुनने और इत़ाअ़त करने वाले हैं और जिस सुल्ह़ में पूरी उम्मत दाख़िल है येह भी उस में दाख़िल हैं।"(1)

यज़ीदे पलीद का ख़त़ फेंक दिया :

﴾1169﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि यज़ीद ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ ख़त़ लिखा कि मैं एक चांदी की कड़ी, दो सोने की बेड़ियां और एक चांदी का त़ौक़ भेज रहा हूं और मैं ने क़सम खाई है कि तुम इन चीज़ों को पहन कर ज़रूर मेरे पास आओगे। तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का ख़त़ फेंक कर फ़रमाया :

وَ لَا اَلِيْنُ لِغَيْرِ الْحَقِّ اَسْئَلُهُ   حَتّٰى يَلِيْنَ لِضَرْسِ الْمَاضِغِ الْحَجَرُ

तर्जमा : मैं नाह़क़ मुत़ालबे को पूरा करने के लिये मा'मूली सी नर्मी भी इख़्तियार नहीं करूंगा यहां तक कि चबाने वाली दाढ़ों के लिये पथ्थर नर्म हो जाएं।"(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे मिस्ल शहादत :

﴾1170﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने यज़ीद

1......اخبارمكة للفاكهي، ذكرمايقال عندوداع الكعبة......الخ، الرقم ٧١٠، ج١، ص٣٤٤، مختصرًا.

2......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب سبب قتال ابن الزُّبَيرمع يزيد، الحديث:٦٣٩٣، ج٤، ص٧١١.

www.dawateislami.net

की इत़ाअ़त करने से इन्कार करते हुवे अ़लानिय्या त़ौर पर इसे बुरा भला कहा। जब यज़ीद को इस का पता चला तो उस ने क़सम खाई कि उन्हें गिरिफ़्तार कर के त़ौक़ पहना कर मेरे दरबार में लाया जाए वरना मैं उन पर लश्कर कशी करूंगा। लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से अ़र्ज़ की, कि "हम आप के लिये चांदी का एक त़ौक़ बना देते हैं आप इसे कपड़ों के नीचे पहन लीजियेगा ताकि यज़ीद की क़सम भी पूरी हो जाए और आप के लिये सुल्ह़ का बेहतर रास्ता भी निकल आए" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम को पूरा न करे।" फिर येह शे'र पढ़ा :

وَ لَا اَلِيْـنُ لِغَيْـرِ الْحَقِّ اَسْئَـلُـهُ ۔۔۔ حَتّٰـى يَلِيْنَ لِضَرْسِ الْمَاضِغِ الْحَجَرُ

तर्जमा : मैं नाह़क़ मुत़ालबे को पूरा करने के लिये मा'मूली सी नर्मी भी इख़्तियार नहीं करूंगा यहां तक कि चबाने वाली दाढ़ों के लिये पथ्थर नर्म हो जाएं।

फिर फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे इ़ज़्ज़त वाले मुआ़मले में तल्वार का वार, ज़िल्लत वाले मुआ़मले में कोड़े की ज़र्ब से ज़ियादा मह़बूब है।" फिर लोगों को अपने हाथ पर बैअ़त करने की दा'वत दी और यज़ीद की मुख़ालफ़त का ए'लान कर दिया। उधर यज़ीद ने हुसैन बिन नुमैर किन्दी को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जंग करने के लिये भेज दिया और इस से कहा कि "ऐ गधे के बच्चे ! क़ुरैश की धोका बाज़ियों से बच कर रहना और उन के साथ सिर्फ़ नेज़ों और घोड़ों से मुक़ाबला करना (या'नी सुल्ह़ में न पड़ जाना)।" चुनान्चे, वोह मक्कए मुकर्रमा पहुंचा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने उस के साथ भरपूर जंग की और हुसैन ने (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) का'बए मुअ़ज़्ज़मा तक को जला डाला। मगर जब उसे यज़ीद पलीद के मरने की ख़बर मिली तो वोह भाग निकला। यज़ीद की मौत के बा'द मरवान बिन ह़कम ने लोगों को अपने हाथ पर बैअ़त करने का कहा। जब मरवान मर गया तो अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने अपने हाथ पर बैअ़त करने का ए'लान किया और ह़ज्जाज को एक लश्कर का अमीर मुक़र्रर कर के मक्कए मुकर्रमा रवाना किया, ह़ज्जाज मक्का पहुंचा तो जबले अबू क़ुबैस पर चढ़ कर वहां मन्जनीक़ नस्ब की और मस्जिदे ह़राम में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और उन के अस्ह़ाब पर पथ्थर बरसाए।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत का दिन त़ुलूअ़ हुवा तो उस दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सुब्ह़ सवेरे अपनी वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में आए, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा सौ बरस की

www.dawateislami.net

थीं और अभी तक उन का कोई दांत गिरा था न बीनाई में कुछ फ़र्क़ आया था। वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम्हारी जंग का क्या हुवा ?" अ़र्ज़ की : "दुश्मन फ़ुलां मक़ाम तक पहुंच चुका है।" येह कह कर मुस्कुरा दिये और कहा कि "बिलाशुबा मौत ही में राह़त व आराम है।" वालिदा ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! शायद तुम ने मेरे लिये मौत की तमन्ना की है लेकिन मुझे तो उस वक़्त तक मरना पसन्द नहीं जब तक तुम्हारा कुछ फ़ैसला न हो जाए। अगर तुम इक़्तिदार ह़ासिल कर लोगे तो इस से मेरी आंखें ठन्डी होंगी और अगर तुम क़त्ल कर दिये गए तो मैं इसे बाइसे सवाब समझूंगी (कि मेरा बेटा राहे ह़क़ में शहीद हो गया) फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अपनी वालिदा को अल वदाअ़ कहा तो वालिदा ने नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : "बेटा ! तुम क़त्ल के ख़ौफ़ से अपने दीन की कोई ख़स्लत न छोड़ना।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से निकल कर मस्जिद में दाख़िल हुवे तो लोगों ने अ़र्ज़ की, कि "हम दुश्मन से सुल्ह़ की बात चीत न कर लें ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "क्या येह सुल्ह़ का वक़्त है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर दुश्मन तुम्हें इस वक़्त का'बे के अन्दर भी पा लें तो ज़रूर ज़ब्ह़ कर डालें।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह शे'र पढ़ा :

وَلَسْتُ بِمُبْتَاعِ الْحَيَاةِ بِذِلَّةٍ ۝ وَلَا مُرْتَقٍ مِنْ خَشْيَةِ الْمَوْتِ سُلَّمَا

तर्जमा : मैं ज़िल्लतो रुस्वाई के बदले में ज़िन्दगी का ख़रीदार नहीं हूं और न ही मौत के डर से सीढ़ी पर चढ़ने वाला हूं।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने रुफ़क़ा को नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : "जिस त़रह़ तुम्हारे चेहरे ग़ुस्से से भरपूर हैं इस त़रह़ तुम्हारी तल्वारें भी ग़ुस्से से आग उगलें, किसी की तल्वार न टूटने पाए कि वोह फिर औ़रत की त़रह़ हाथों से अपना दिफ़ाअ़ करने लगे। ब ख़ुदा ! जब भी किसी लश्कर से मेरा सामना हुवा तो मैं हमेशा सफ़े अव्वल में रहा और मुझे जो भी ज़ख़्म लगा मैं ने उस का उतना ही दर्द मह़सूस किया जितना उस पर दवा लगाने से होता है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शामियों पर ह़म्ला कर दिया और आप के पास दो तल्वारें थीं। सब से पहले अस्वद नामी आदमी से मुक़ाबला हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तल्वार के एक ही वार में उस की टांग काट दी। उस ने बक्वास की : "अख़ (ग़ुस्से के वक़्त की आवाज़) ऐ ज़ानिया के बेटे ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ काली औ़रत के मर्दूद बेटे ! क्या ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़ानिया हैं ?" फिर शामियों को मस्जिद से मार भगाया। इसी त़रह़ मुसलसल उन पर ह़म्ले करते रहे और उन्हें मस्जिद से दूर भगाते

www.dawateislami.net

रहे और साथ साथ फ़रमाते रहे : "काश कोई एक शख़्स भी मेरा हम पल्ला होता तो मैं उस के लिये काफ़ी होता।" रावी बयान करते हैं कि मस्जिद की छत पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के कुछ मददगार चढ़े हुवे थे जो दुश्मनों पर ईंटें बरसा रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से एक ईंट आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर के दरमियान आ लगी जिस से सर फट गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ठहर गए और फ़रमाने लगे :

وَلَسْنَا عَلَى الْاَعْقَابِ تَدْمِي كُلُوْمُنَا　　وَلٰكِنْ عَلٰى اَقْدَامِنَا تَقْطُرُ الدَّمَا

तर्जमा : हम वोह लोग नहीं कि पीठ फेरने की वज्ह से हमारी एड़ियों पर ख़ून गिरता हो बल्कि सीना सिपर होने की वज्ह से हमारे क़दमों पर ख़ून टपकता है।

रावी बयान करते हैं कि फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो ख़ादिम येह कहते हुवे उन पर झुके कि "बन्दा अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर ह़म्ला करता है और उस से बचता है।" फिर शामियों की एक जमाअ़त ने आगे बढ़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सरे मुबारक तन से जुदा कर दिया।(1)

﴾1171﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को मस्जिदे ह़राम में शहीद किया गया उस वक़्त मैं भी वहां मौजूद था। हुवा कुछ यूं कि शामियों के लश्कर मस्जिद के दरवाज़ों से दाख़िल होना शुरूअ़ हुवे। जब कुछ लोग मस्जिद में दाख़िल होते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तने तन्हा मर्दाना वार उन पर ह़म्ला करते और उन्हें मस्जिद से निकाल देते। इसी दौरान मस्जिद की एक ईंट आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर पर आ लगी जिस के गहरे ज़ख़्मों की ताब न ला कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। उस वक़्त इन अश्आ़र की मिस्ल रज्ज़िया अश्आ़र ज़बान पर थे :

أَسْمَاءُ اِنْ قُتِلْتُ لَاتَبْكِيْنِي　　لَمْ يَبْقَ اِلَّا حَسَبِيْ وَدِيْنِي

وَصَارِمٌ لَانَتْ بِهٖ يَمِيْنِي

तर्जमा : ऐ (मेरी वालिदए माजिदा) अस्मा ! अगर मैं शहीद हो जाऊं तो मुझ पर मत रोना चूंकि सिर्फ़ मेरा ह़सब व दीन और एक तल्वार जिस पर मेरा दायां हाथ नर्म पड़ गया, बाक़ी रह जाएगी।"(2)

---

1 ......المستدرك، الحديث: ٦٣٩٤، باب ذكر قتال ابن الزُّبَير مع حصين بن نمير، الحديث: ٦٣٩٥، ص ٧١١۔
اخبار مكة للفاكهی، ذكر قتال ابن الزُّبَير ...... الخ، الحديث: ١٦٥٢/١٦٥٣/١٦٥٤، ج٢، ص ٣٥١.

2 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٣٢٩٧ عبدالله بن الزُّبَير، ج٢٨، ص ٢٢٥.

www.dawateislami.net

﴾1172﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) शामियों पर ह़म्ला आवर होते यहां तक कि उन्हें मस्जिदे ह़राम के दरवाज़ों से बाहर निकाल देते और फ़रमाते जाते : "काश ! कोई एक शख़्स भी मेरा हम पल्ला होता तो मैं उस के लिये काफ़ी होता।"

और येह रज्ज़ पढ़ते थे :

وَلَسْنَا عَلَى الْاَعْقَابِ تَدْمِیْ كُلُوْمُنَا وَلٰـكِـنْ عَـلٰـی اَقْدَامِنَا تَقْطُرُ الدِّمَا

तर्जमा : हम वोह लोग नहीं कि पीठ फेरने की वज्ह से हमारी एड़ियों पर ख़ून गिरता हो बल्कि सीना सिपर होने की वज्ह से हमारे क़दमों पर ख़ून टपकता है।(1)

पैदा होते ही बारगाहे रिसालत में हाज़िरी :

﴾1173﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा और ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते मुन्ज़िर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم बयान करते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हिजरत की। उस वक़्त वोह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ह़म्ल से थीं। जब उन की विलादत हुई तो उस वक़्त तक दूध न पिलाया जब तक हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले कर ह़ाज़िर न हुईं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपनी गोद में लिया और एक छुवारा (या'नी खुश्क खजूर) मंगवा कर उसे चबाया और उन्हें घुट्टी दी। चुनान्चे, दुन्या में आने के बा'द सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे दहन उन के पेट में दाख़िल हुवा जो छुवारे से मिला हुवा था। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब अपनी रिवायत में बयान करते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने छुवारा मंगवाया, हम ने कुछ देर तलाश कर के पेश किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे चबा कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के मुंह में डाल दिया।"(2)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الادب، باب الرخصة فی الشعر، الحدیث: ٧٤، ج٦، ص١٨٢.

2 ......المرجع السابق، کتاب المغازی، باب ما قالوافی مهاجرالنبی، الحدیث: ١٥، ج٨، ص٤٦٠۔
صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تحنیك المولود......الخ، الحدیث: ٥٦١٦، ص١٠٦٠.

www.dawateislami.net

हज्जाज व मुख़्तार सक़फ़ी के बारे में पेशीन गोई :

﴾1174﴿.....हज़रते सय्यिदुना या'ला तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی बयान करते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के तीन रोज़ बा'द मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا हाज़िर हुवा तो देखा कि अभी तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश मुबारक सूली पर थी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा लाश मुबारक के पास आईं उस वक़्त वोह इन्तिहाई ज़ई़फ़ुल उ़म्र और नाबीना थीं। उन्हों ने ह़ज्जाज से कहा : "क्या अभी तक इस शहसुवार के उतरने का वक़्त नहीं आया ?" ह़ज्जाज बोला : "येह मुनाफ़िक़ है।" हज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मुनाफ़िक़ नहीं था। बिलाशुबा येह रोज़ादार, इ़बादत गुज़ार और नेकूकार था।" ह़ज्जाज ने कहा : "ऐ बुढ़िया ! वापस चली जा ! बेशक तेरी अ़क़्ल ज़ाइल हो गई है।" हज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "नहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब से मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह बात सुनी मेरी अ़क़्ल ज़ाइल नहीं हुई है। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था कि "क़बीलए सक़ीफ़ से एक झूटा और लोगों का क़त्ले आ़म करने वाला एक शख़्स ज़ाहिर होगा।" पस झूटे शख़्स (या'नी मुख़्तार सक़फ़ी) को तो हम देख चुके हैं और रहा लोगों का क़त्ले आ़म करने वाला, पस वोह तू है।"(1)

﴾1175﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द (उन्हें सूली पर लटका दिया गया था इसी दौरान) मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के साथ उन के मुबारक लाशे के पास से गुज़रा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां ठहर गए और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए ! मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येही जानता हूं कि आप रोज़ादार, इ़बादत गुज़ार और रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी करने वाले थे और मुझे येही उम्मीद है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अ़ज़ाब में मुब्तला नहीं फ़रमाएगा।" फिर मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : मुझे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताया था कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो बुरा अ़मल करेगा उसे उस का बदला दिया जाएगा।"(2)

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۷۲/۲۰۱، ج۲۴، ص۱۰۱/۷۷۔

2 ......المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر قتال ابن الزُّبَیر......الخ، الحدیث: ۶۳۹۶، ج۴، ص۷۱۵، بتغیر۔

www.dawateislami.net

﴾1176﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को उस खजूर के दरख़्त के क़रीब किया जिस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को सूली दी गई थी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ादार और इ़बादत गुज़ार इन्सान थे ।"(1)

﴾1177﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के 100 ग़ुलाम थे । उन में से हर ग़ुलाम मुख़्तलिफ़ ज़बान में बात करता था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हर ग़ुलाम से उसी की ज़बान में गुफ़्तगू फ़रमाते थे । जब मैं आप को दुन्यवी काम में मश्ग़ूल देखता तो कहता कि इन्हें लम्ह़ा भर के लिये भी आख़िरत का ख़याल नहीं और जब उमूरे आख़िरत में मुतफ़क्किर देखता तो कहता कि इन्हें लम्ह़ा भर के लिये भी दुन्या का ख़याल नहीं ।"(2)

﴾1178﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का ज़िक्र हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस्लाम में पाकीज़ा ज़िन्दगी के मालिक और क़ुरआने पाक के क़ारी हैं । आप के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, वालिदा ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, नाना अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, फूफी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, दादी ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ख़ाला उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उन के लिये ऐसी सरतोड़ कोशिश करूंगा जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के लिये भी नहीं की थी ।"(3)

---

1 ......طبقات المحدثین باصبهان،الطبقة الاولی،عبداللّٰه بن الزُّبَیربن العوام،ج۱،ص۱۹۶.

2 ......المستدرك،کتاب معرفة الصحابة،باب کان ابن الزُّبَیریواصل سبعة ایام،الحدیث:۶۳۹۱،ج۴،ص۷۱۱.

3 ......المستدرك،کتاب معرفة الصحابة،باب کان ابن الزُّبَیریواصل سبعة ایام،الحدیث،الحدیث:۶۳۸۷،ص۷۱۰۔

صحیح البخاری،کتاب التفسیر،سورة التوبة،باب قوله﴿ثانی اثنین اذهما......الخ﴾الحدیث:۴۶۶۵/۴۶۶۶،ص۳۸۶.

www.dawateislami.net

नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का आ़लम :

﴾1179﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से ज़ियादा हुस्नो ख़ूबी से नमाज़ पढ़ते किसी को नहीं देखा।"(1)

﴾1180﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुन्किदिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया : "अगर तुम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को नमाज़ पढ़ते देखते तो ज़रूर कहते कि येह किसी दरख़्त की टहनी हैं जिसे हवा थपकी दे रही है। दौराने नमाज़ दुश्मन की मन्जनीक़ पथ्थर बरसाती। पथ्थर उन के इर्द गिर्द गिरते मगर उन्हें इस की बिल्कुल परवाह न होती।"(2)

﴾1181﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से मरवी है कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) नमाज़ में खड़े होते तो यूं लगता जैसे कोई लकड़ी है और येह बात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की वज्ह से कही जाती।"(3)

﴾1182﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) नमाज़ पढ़ते तो यूं लगता कि वोह उभरी हुई कोई चीज़ है जो ह़रकत नहीं कर रही।"(4)

मस्जिद का कबूतर :

﴾1183﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना मात़िरा महदिय्या رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهَا बयान करती हैं कि मेरी ख़ाला उम्मे जा'फ़र बिन्ते नो'मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास ह़ाज़िर हुई। सलाम के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का ज़िक्रे ख़ैर छिड़ा तो ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "उन की रातें ब कसरत क़ियाम में गुज़रतीं और दिन रोज़े में कटते थे। जिस की वज्ह से उन्हें मस्जिद का कबूतर कहा जाता था।"(5)

﴾1184﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز ने मुझ से फ़रमाया : "तुम्हारे दिल में ह़ज़रते सय्यिदुना

---

1 ......صفة الصفوة،الرقم۱۲۲عبداللّٰه بن الزُّبَير بن العوام،ج۱،ص۳۸۸.

2 ......الزهدللامام احمدبن حنبل،زهدعميربن حبيب بن حماسة،الحديث:۱۰۳۷،ص۲۰۵.

3 ......السنن الكبرى للبيهقى،كتاب الصلاة،جماع ابواب الخشوع فى الصلاة......الخ،الحديث:۳۵۲۲،ج۲،ص۳۹۸.

4 ......المصنف لعبدالرزاق،كتاب الصلاة،باب التحريك فى الصلاة،الحديث:۳۳۱۲،ج۲،ص۱۷۲.

5 ......صفة الصفوة،الرقم۱۲۲عبداللّٰه بن الزُّبَير بن العوام،ج۱،ص۳۸۹.

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की इतनी ज़ियादा महब्बत क्यूं है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अगर आप उन्हें देख लेते तो उन की मिस्ल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने वाला किसी को न पाते।''(1)

﴾1185﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मुसलसल 7 दिन तक रोज़ा रखते इस के बा वुजूद सातवें दिन हम से ज़ियादा त़ाक़तवर होते।''(2)

गुनाह बख़्शे जाते हैं :

﴾1186﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने ह़ज के मौक़अ़ पर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया। मैं भी उस ख़ुत़बे में मौजूद था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आठ ज़ुल ह़िज्जा से एक दिन क़ब्ल एह़राम की ह़ालत में हमारे पास तशरीफ़ लाए और इतने ख़ूब सूरत अन्दाज़ में तल्बिया पढ़ा कि मैं ने उस जैसा तल्बिया कभी नहीं सुना था। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की और फ़रमाया : ''बेशक तुम लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से वुफ़ूद की ह़ालत में बैतुल्लाह की त़रफ़ आए हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह अपने वुफ़ूद का इकराम करे। लिहाज़ा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ख़ैरो भलाई त़लब करने आया है तो वोह जान ले कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का त़ालिब ना मुराद नहीं लौटता। तुम अपने अक़्वाल की अफ़्आ़ल से तस्दीक़ करो क्यूंकि क़ौल का अस्ल सरचश्मा फ़े'ल है और निय्यत की इस्लाह़ करो कि दिल की निय्यत ही उस की ह़क़ीक़त है। तुम इन दिनों (या'नी अय्यामे ह़ज) में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ूब ज़िक्र करो कि इन दिनों में गुनाह बख़्शे जाते हैं। तुम लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आए हो और तुम्हारे आने का मक़्सद तिजारत करना, माल कमाना या दुन्या ह़ासिल करना नहीं है।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तल्बिया पढ़ा तो लोगों ने भी आप के साथ तल्बिया पढ़ा और मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को उस दिन से ज़ियादा किसी दिन रोते नहीं देखा।''(3)

नसीह़त नामा :

﴾1187﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन कैसान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रफ़ एक नसीह़त नामा लिख कर भेजा गया। (जिस का

---

(1) ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب كان ابن الزُّبَير يواصل سبعة ايام، الحديث: ٦٣٩٢، ج٤، ص٧١١.

(2) ......اخبار مكة للفاكهی، ذكر قتال ابن الزُّبَير بمكة......الخ، الحديث: ١٦٦٥، ج٢، ص٣٦٤.

(3) ......مجمع الزوائد، كتاب الحج، باب الخطبة قبل التروية، الحديث: ٥٥٣٥، ج٣، ص٥٥٥.

www.dawateislami.net

मज़्मून कुछ यूं था) अम्मा बा'द ! बेशक मुत्तक़ी लोगों की कुछ अ़लामात होती हैं जिन के ज़रीए वोह पहचाने जाते हैं और वोह खुद भी इन अ़लामतों से वाक़िफ़ होते हैं : (1) जिस ने मुसीबतों पर सब्र किया (2) क़ज़ाए इलाही पर राज़ी रहा (3) ने'मतों का शुक्र बजा लाया (4) और क़ुरआने मजीद के अह़कामात के आगे अपना सर झुका लिया (वोह मुत्तक़ी है) और बेशक इमाम (या'नी ह़ाकिम) की मिसाल बाज़ार जैसी है। जो चीज़ बाज़ार में बेची जाती है उसी के गाहक आते हैं। लिहाज़ा अगर ह़ाकिमे वक़्त ह़क़ को राइज करेगा तो अहले ह़क़ ही उस के पास आएंगे और अगर बातिल को अहम्मिय्यत देगा तो उस के पास अहले बातिल ही आएंगे और बातिल को रवाज मिलेगा।"[1]

﴾1188﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन कैसान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को कभी किसी सुल्त़ान वग़ैरा को उस के ख़ौफ़ से सुल्ह़ का पैग़ाम देते नहीं देखा।"

﴾1189﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन कैसान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि अहले शाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को आ़र दिलाने के लिये कहा करते थे : "ऐ ज़ातुन्निताक़ैन के बेटे !" एक बार उन की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "ऐ बेटे ! अहले शाम तुम्हें निताक़ैन के साथ आ़र दिलाते हैं। दर ह़क़ीक़त मेरे पास एक निताक़ (या'नी कमर पर बांधा जाने वाला पटका) था (हिजरत के मौक़अ़ पर) जिस के मैं ने दो हिस्से कर के एक के साथ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ादे राह और दूसरे से मश्कीज़ा बांधा था।"[2] रावी फ़रमाते हैं : "इस के बा'द जब अहले शाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को इस लफ़्ज़ से आ़र दिलाते तो आप फ़रमाते : "रब्बे का'बा की क़सम ! येह सच है और मेरे लिये फ़ख़्र का बाइ़स है।"[3]

---

1 .....الزهدلابی داود،اخبارعبداللّٰه بن الزُّبَیر،الحدیث:۳۷۶،ج۱،ص۴۱۳.

2 .....शारेहे़ बुख़ारी, फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस की शर्ह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : "(ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के) इस (अ़मल) पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुश हो कर उन को फ़रमाया : तुम ज़ातुन्निताक़ैन हो। येह ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये फ़ख़्र की बात थी जिसे ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के लश्करी बत़ौरे त़ा'न बोलते थे। आज़ाद शरीफ़ औ़रतें सिर्फ़ एक निताक़ बांधती थीं.....और ख़ादिमाएं दो दो निताक़......(और) ज़ातुन्निताक़ैन कनाया है ख़ादिमा से। इस त़रह़ येह त़ा'न हो गया।"

(नुज़हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीह़ुल बुख़ारी, जि. 5, स. 411)

3 .....صحیح البخاری،کتاب الاطعمة،باب الخُبزُ المُرَقَّق......الخ،الحدیث:۵۳۸۸،ص۴۶۵۔
طبقات المحدثین باصبهان،عبداللّٰه بن الزُّبَیربن العوام،ج۱،ص۱۹۸.

www.dawateislami.net

﴾1190﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ۠ ﴿۳۱﴾ (پ۲۳،الزمر:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे।

तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या ख़ास गुनाहों के इलावा हमारे दुन्यावी मुआ़मलात भी हम पर पेश होंगे ?'' इरशाद फ़रमाया : ''हां ! यहां तक कि हर आदमी हर हक़ वाले को उस का हक़ पहुंचा दे।''(1)

﴾1191﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ۠ ﴿۸﴾ (پ۳۰،التکاثر:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।

तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम से किन ने'मतों के बारे में पूछा जाएगा हमें तो 2 सियाह चीज़ें पानी और खजूर ही मुयस्सर हैं ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''सुनो ! अ़न क़रीब इन ने'मतों की फ़िरावानी (या'नी कसरत) होगी।''(2)

माल की हिर्स कभी ख़त्म नहीं होती :

﴾1192﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन सहल बिन सा'द अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى बयान करते हैं कि मैं ने सुना कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के मिम्बर शरीफ़ पर ख़ुत़बा देते हुवे फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर इन्सान के पास सोने की एक वादी हो तो दूसरी की तमन्ना करेगा और अगर दूसरी मिल जाए तो तीसरी का त़लबगार रहेगा और इन्सान का पेट (क़ब्र की) मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो तौबा करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।''(3)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند الزُبَیر بن العوام،الحدیث:۱۴۳۴،ج۱،ص۳۵۳.

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند الزُبَیر بن العوام،الحدیث:۱۴۰۵،ص۳۴۶.

3 ......صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب ما یتقی من فتنۃ المال،الحدیث:۶۴۳۸،ص۵۴۱۔
البحر الزخار المعروف بمسند البزار،مسند عبداللہ بن الزُبَیر،الحدیث:۲۲۲۲،ج۶،ص۱۸۱.

www.dawateislami.net

सुफ़्फ़ा वालों का बयान

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "हम ने ज़ाहिदीन व आ़बिदीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के एक गुरौह के कुछ अह़वाल और अजल व आ'लम अइम्मा सहाबए किराम के एक गुरौह के अक्वाल बयान किये हैं जो अपने मा'बूद व परवर दगार عَزَّوَجَلَّ और उस की इबादत के मुश्ताक़ थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत से सरशार थे। जिन के सर अहले मा'रिफ़त व अहले अ़मल की पेशवाई का सहरा सजा। जो दुन्या की वज्ह से फ़ितनों का शिकार होने और दुन्या की महब्बत में गुम रहने वालों पर हुज्जत बने। उन के ह़ालात व वाक़िआत ज़िक्र करने के बा'द अब हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब करते हुवे अहले सुफ़्फ़ा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की शान, उन की आ़दात व ह़ालात बयान करेंगे। नीज़ जिन के अस्माए गिरामी हम तक असानीदे मश्हूरा व शवाहिद के साथ पहुंचे उन का भी तज़्किरा करेंगे।(1)

मुख़्तसर तआ़रुफ़ :

अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن वोह मुक़द्दस व पाकीज़ा हज़रात हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या की आराइश व ज़ेबाइश पर फ़रेफ़्ता होने से मह़फ़ूज़ रखा। दुन्यवी साज़ो सामान के इम्तिह़ान में इब्तिला की वज्ह से फ़राइज़ में कोताही करने से इन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई। जिस त़रह़ मा क़ब्ल मज़्कूर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले मा'रिफ़त व ह़िक्मत का इमाम बनाया उसी त़रह़ अहले सुफ़्फ़ा को फ़ुक़रा व ग़ुरबा का पेशवा किया। इन मुक़द्दस व पाकीज़ा लोगों को अहलो इयाल की फ़िक्र दामन गीर होती न मालो दौलत की सोच। इन्हें कोई ह़ालत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करती न तिजारत और न ही येह दुन्या छूटने पर रन्जीदा व मलूल होते और वोह मह़ज़ उस चीज़ से शाद होते जो आख़िरत में नफ़्अ़ बख़्श होती। उन की सारी ख़ुशियां अपने मालिक व परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से वाबस्ता थीं और उन के सारे ग़म ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात के ज़ाएअ़ हो जाने और औरादो वज़ाइफ़ के रह जाने की वज्ह से थे। येह वोह अ़ज़ीमुश्शान मर्दाने ह़क़ थे जिन्हें ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तिजारत ग़ाफ़िल करती न ख़रीदो फ़रोख़्त। वोह फ़ानी दुन्या के छूट जाने पर ग़म उठाते न हाथ आने पर ख़ुशी मनाते। उन के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ

1.....मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ह़ज़रते अ़ल्लामा त़ाहिर फ़तनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : "अहले सुफ़्फ़ा मुहाजिरे फ़ुक़रा में से थे और जिस के लिये घर न होता वोह वहीं ठहरता, पस अहले सुफ़्फ़ा मस्जिदे नबवी (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) में एक छतदार जगह में रहते थे।"
(फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा) जि. 8, स. 64)

www.dawateislami.net

ने उन्हें दुन्यवी ने'मतों से फ़ाइदा उठाने और मालो दौलत की फ़िरावानी से बचाए रखा ताकि उन का नफ़्स बग़ावत व सरकशी में मुब्तला न हो जाए। येह लोग सोने चांदी व दीगर माले दुन्या के गुम होने पर ग़म करने से बे नियाज़ थे और ह़सब व नसब की वज्ह से ख़ुशी व ग़ुरूर का उन के हां तसव्वुर न था।

क़ुरआने करीम और अहले सुफ़्फ़ा :

﴾1193-1194﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़म्र बिन हुरैस वग़ैरा लोगों को येह कहते सुना कि जब अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा ने दुन्या की तमन्ना की तो येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ (پ۲۵،الشوری:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर अल्लाह अपने सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा पर लुत्फ़ो करम फ़रमाने और उन्हें सरकशी से बचाने के लिये दुन्या को उन से दूर रखा। चुनान्चे, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात की बजा आवरी में तंगदिली से मह़फ़ूज़ रहे और दुन्यावी मश्ग़ूलियात से बचे रहे। दुन्यावी अमवाल ने उन्हें रुस्वा किया न ही अह़वाले ज़माना से उन पर तग़य्युर की हवा चली।"

﴾1195﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि सुफ़्फ़ा वाले मिस्कीन लोग थे और ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस के पास 2 आदमियों का खाना हो वोह तीसरे को ले जाए और जिस के पास 4 का खाना हो वोह पांचवें या छटे को ले जाए।" या जिस त़रह़ फ़रमाया। फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 3 को और ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 10 अफ़राद को साथ ले गए।[2]

﴾1196﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

1 ......الزهد لابن المبارك،باب التوكل والتواضع،الحديث:٥٥٤،ص١٩٤.

2 ......صحيح البخارى،كتاب المناقب،باب علامات النبوة فى الاسلام،الحديث:٣٥٨١،ص٢٩١.

www.dawateislami.net

हाज़िर हूं।" इरशाद फ़रमाया : "सुफ़्फ़ा वालों के पास जाओ और उन्हें बुला लाओ।" हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सुफ़्फ़ा वाले इस्लाम के मेहमान थे। वोह घरवालों और माल के पास न जाते थे। जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में सदक़ा आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे अहले सुफ़्फ़ा के पास भेज देते और ख़ुद उस से थोड़ा सा भी तनावुल न फ़रमाते और जब ख़िदमते अक़्दस में हदिय्या पेश किया जाता तो अहले सुफ़्फ़ा को भी उस में शरीक कर लेते।"(1)

﴾1197﴿.....हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब कोई शख़्स सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर होता और मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में उस का कोई जान पहचान वाला होता तो वोह उस के हां क़ियाम करता और अगर कोई वाक़िफ़े कार न होता तो वोह सुफ़्फ़ा वालों के साथ ठहर जाता। फ़रमाते हैं : "मैं उन लोगों में था जो सुफ़्फ़ा वालों के हां क़ियाम करते थे। फिर मेरी एक शख़्स से जान पहचान हो गई और वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से हर रोज़ दो आदमियों के लिये एक मुद (या'नी एक सेर आधा पाव) खजूरें भेजा करता था।"(2)

﴾1198﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं अपने बेटे का अ़क़ीक़ा न करूं ?" इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! पहले इस के बाल उतरवाओ और बालों के वज़्न बराबर चांदी सुफ़्फ़ा वालों और दूसरे मिस्कीनों पर सदक़ा करो।"(3)

सुफ़्फ़ा वालों की भूक का आ़लम :

﴾1199﴿.....हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे होते तो अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب کیف کان عیش النبی......الخ،الحدیث:٦٤٥٢،ص٥٤٢.

2 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب التاریخ،باب اخبارہ......الخ،الحدیث:٦٦٤٩،ج٨،ص٢٤١.

3 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث ابی رافع،الحدیث:٢٧٢٥٣،ج١٠،ص٣٤٠.

www.dawateislami.net

कई अफ़राद भूक के बाइ़स कमज़ोरी की वज्ह से क़ियाम से आ़जिज़ आ कर गिर जाते यहां तक कि आ'राब (या'नी दिहात के रहने वाले) कहते कि "येह लोग पागल हैं !"(1)

﴾1200﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि "अहले सुफ़्फ़ा की ता'दाद 70 थी लेकिन उन में से किसी एक के पास भी चादर न थी।"(2)

﴾1201﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं सुफ़्फ़ा में था कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारी त़रफ़ अ़ज्वा खजूरें भेजीं। हम भूक की वज्ह से दो दो खजूरें इकठ्ठी खाने लगे और रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दीगर सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से फ़रमाने लगे : "मैं भी दो खजूरें उठा कर खा रहा हूं तुम भी दो दो खजूरें उठा कर खाओ।"(3)

﴾1202﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुफ़्फ़ा वालों के पास तशरीफ़ लाए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ख़ैरो भलाई के साथ।" इरशाद फ़रमाया : "आज तुम बेहतर हो (उस वक़्त से कि) जब तुम्हारे पास सुब्ह़ खाने का एक बड़ा प्याला और शाम दूसरा बड़ा प्याला लाया जाएगा और अपने घरों पर इस त़रह़ पर्दे लटकाओगे जिस त़रह़ का'बे को ग़िलाफ़ डाला जाता है।" सुफ़्फ़ा वाले अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हमें अपने दीन पर क़ाइम रहते हुवे येह ने'मतें ह़ासिल होंगी ?" फ़रमाया : "हां।" अ़र्ज़ की : "फिर तो हम उस वक़्त बेहतर होंगे क्यूंकि हम सदक़ा व ख़ैरात करेंगे और गुलामों को आज़ाद करेंगे।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि तुम आज बेहतर हो क्यूंकि जब तुम उन ने'मतों को पाओगे तो आपस में ह़सद करने लगोगे और बाहम क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने की आफ़त और बुग़्ज़ व अ़दावत में पड़ जाओगे।"(4)

﴾1203﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब ग़रीब व नादार मुसलमानों के लिये सुफ़्फ़ा (या'नी चबूतरा) बनाया गया तो मुसलमान ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उस की ता'मीर में बढ़

(1)......جامع الترمذی،ابواب الزھد، باب ما جاء فی معیشة اصحاب النبی،الحدیث:٢٣٦٨،ص١٨٨٩.

(2)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقاق،الحدیث:٦٨١،ج٢،ص٣٦،مفھومًا.

(3)......المستدرك، کتاب الاَطْعِمَة،باب النھی عن الإقُران فی التمر،الحدیث:٧٢١٤،ج٥،ص١٦٤.

(4)......الزھدلھنادبن السری،باب معیشة اصحاب النبی،الحدیث:٧٦٠،ج٢،ص٣٩٠.

www.dawateislami.net

चढ़ कर हिस्सा लेने लगे। हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुफ़्फ़ा वालों के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें पुकार कर इरशाद फ़रमाया तो उन्हों ने सलाम का जवाब दिया। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ख़ैरो भलाई के साथ।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम आज उस दिन से बेहतर हो जब तुम में से किसी के पास सुब्ह़ के वक़्त खाने का एक बड़ा प्याला लाया जाएगा और शाम के वक़्त दूसरा प्याला पेश किया जाएगा। सुब्ह़ एक लिबास पहनोगे और शाम दूसरा लिबास ज़ेबे तन करोगे और अपने घरों पर इस त़रह़ पर्दे लटकाओगे जिस त़रह़ बैतुल्लाह शरीफ़ पर ग़िलाफ़ डाला जाता है।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "उस दिन तो हम बेहतर होंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुख़्तलिफ़ ने'मतें अ़त़ा फ़रमाएगा तो हम उन ने'मतों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाएंगे।" लेकिन हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बल्कि तुम आज उस दिन से ब-दरजहा बेहतर हो।"(1)

अहले सुफ़्फ़ा की ता'दाद और ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि मुख़्तलिफ़ औक़ात और मुख़्तलिफ़ ह़ालात में सुफ़्फ़ा वालों की ता'दाद में कमी बेशी होती रहती थी। कभी तो बा'ज़ अहले सुफ़्फ़ा मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में चले जाते थे और बाहर से गुरबा व मसाकीन भी कम आते जिस की वज्ह से सुफ़्फ़ा वालों की ता'दाद में कमी आ जाती थी और कभी फ़र्दन फ़र्दन और गुरौहों की सूरत में आ कर लोग सुफ़्फ़ा पर जम्अ़ हो कर अहले सुफ़्फ़ा में शामिल हो जाते जिस की वज्ह से इन की ता'दाद बढ़ जाती थी। अलबत्ता इन के ज़ाहिरी अह़वाल और उन की बाबत मश्हूर रिवायात में से येह है कि इन पर फ़क़्रो फ़ाक़ा का ग़लबा रहता था। इस के बा वुजूद भी येह ह़ज़रात ईसार से काम लेते और अपने लिये फ़क़्रो फ़ाक़ा पसन्द करते थे। इन्हें पहनने के लिये एक से ज़ाइद कपड़े मुयस्सर आते न रंग बिरंगे खाने इन के हां पाए जाते थे। इन के बयान कर्दा अह़वाल पर आने वाली अह़ादीसे मुबारका दलालत करती हैं। चुनान्चे,

﴾1204﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं ने 70 अहले सुफ़्फ़ा को देखा कि वोह एक ही कपड़े में नमाज़ अदा करते। (या'नी तमाम के पास एक एक कपड़ा था और वोह भी)

---

(1).....الزھدلھنادبن السری،باب معیشۃ اصحاب النبی،الحدیث:۷۶۱،ص۳۹۱.

www.dawateislami.net

किसी का सिर्फ़ घुटनों तक था तो किसी का घुटनों से नीचे तक। जब कोई रुकूअ़ में जाता तो सित्रे औ़रत[1] के ज़ाहिर होने के ख़ौफ़ से अपने कपड़े पकड़ लेता।"[2]

﴾1205﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं सुफ़्फ़ा वालों में शामिल था। हम में से किसी के पास पूरा लिबास नहीं होता था, हमारा पसीना हमारे जिस्मों पर बहता हुवा गर्दो ग़ुबार के दरमियान रास्ता बना लेता।"[3]

﴾1206﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن से रिवायत करते हैं कि शाम के वक़्त शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुफ़्फ़ा वालों को दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में तक़्सीम फ़रमा देते तो कोई 1 आदमी को ले जाता, कोई 2 को और कोई 3 को। ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने 10 तक का ज़िक्र किया। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर रात 80 अफ़राद को अपने घर लाते और खाना खिलाते।"[4]

फ़ज़ाइले क़ुरआन :

﴾1207﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम सुफ़्फ़ा में थे कि ह़ुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नमाज़ के अह़काम**" सफ़ह़ा 193 और 194 पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते **अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नमाज़ की 6 शराइत़ में से दूसरी शर्त़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "(दूसरी शर्त़) सित्रे औ़रत (है, और वोह येह है कि) मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत बदन का सारा ह़िस्सा छुपा हुवा होना ज़रूरी है जब कि औ़रत के लिये इन पांच आ'ज़ा मुंह की टिकली, दोनों हथेलियां और दोनों पाउं के तल्वों के इलावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है। अलबत्ता अगर दोनों हाथ (गिट्टों तक), पाउं (टख़नों तक) मुकम्मल ज़ाहिर हों तो एक मुफ़्ता बेह क़ौल पर नमाज़ दुरुस्त है। (الدرالمختارمعہ ردالمحتار، ج۲،ص۹۳)

मदनी मश्वरा : नमाज़ की शराइत़, फ़राइज़, वाजिबात, सुनन, मुस्तह़ब्बात और मसाइल आसान अन्दाज़ में सीखने के लिये क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मज़्कूरा बाला किताब "**नमाज़ के अह़काम**" का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है। (**इल्मिय्या**)

2.....الزھدللامام احمدبن حنبل،الحدیث:۳۲، ص۳۱.

3.....المعجم الکبیر،الحدیث:۱۷۰، ج۲۲، ص۷۰، مفہومًا.

4.....المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الادب، باب ما ذکر فی الشح، الحدیث:۱۶، ج۶، ص۲۵۵.

www.dawateislami.net

और इरशाद फ़रमाया : "तुम में का कौन चाहता है कि सुब्ह बुत्हान या अ़क़ीक़[1] जाए फिर किसी गुनाह (चोरी या ग़सब वग़ैरा) का इरतिकाब किये बिग़ैर या रिश्ता तोड़े बिग़ैर दो बड़े कोहान वाली ऊंटनियां लेता आए ?" हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम सभी येह चाहते हैं।[2] आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तो क्यूं नहीं तुम में से कोई मस्जिद जाता और किताबुल्लाह की दो आयतों की ता'लीम देता या उन्हें पढ़ता। येह दो आयतें उस के लिये दो बड़े कोहान वाली ऊंटनियों से बेहतर होंगी और तीन आयतें उस के लिये तीन ऊंटनियों से बेहतर और चार आयतें उस के लिये चार ऊंटनियों से बेहतर होंगी। इसी त़रह जितनी आयतें सिखाए या पढ़े उतनी ऊंटनियों और ऊंटों से बेहतर होंगी[3] ।"[4]

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "येह ह़दीस वाज़ेह़ त़ौर पर बयान करती है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहले सुफ़्फ़ा को दुन्या की तमन्ना की त़रफ़ उभारने वाले अ़वारिज़ और इस की त़रफ़ मुतवज्जेह होने वाले अ़वामिल से उस चीज़ की त़रफ़ फेर देते जो उन के ह़ाल के ज़ियादा मुनासिब व बेहतर होती या'नी उन्हें हमा वक़्त ज़िक्रो फ़िक्र और उस चीज़ में मसरूफ़ रखते जिस से उन्हें यक़ीन के अन्वार व मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होते और हलाकतों और ख़त़रात से उन की ह़िफ़ाज़त रहती और इस त़रह़ वोह ह़ज़रात अपनी उम्मीदों से राह़त भी पा लेते थे।

1.....ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "**अ़क़ीक़** मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से दो तीन मील पर एक बाज़ार है जहां जानवर ज़ियादा फ़रोख़्त होते हैं। **बुत्हान** मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا का एक वसीअ़ जंगल है।

2.....ख़याल रहे कि वोह ह़ज़रात अगर्चे तारिके दुन्या थे मगर दीन के लिये दुन्या ह़ासिल करने को बहुत अफ़्ज़ल जानते थे। दुन्या अगर दीन के लिये हो तो ऐन दीन है और अगर त़ीन (मिट्टी गारे) के लिये हो तो दुन्या है, या'नी दनी (घटया) चीज़, लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि वोह लोग तो मुह़िब्बे दुन्या न थे फिर येह जवाब क्यूं दिया ?"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 218)

3.....या'नी पांच आयात पांच ऊंटों से अफ़्ज़ल और छे या सात आयतें इस क़दर ऊंटों से अफ़्ज़ल, अ़रब में अबल मुत़लक़न ऊंट को कहते हैं नर हो या मादा और जमल नर ऊंट को नाक़ा मादा को जैसे इन्सान या आदमी मुत़लक़न इन्सान को कहते हैं और रजल मर्द को, अमरात औ़रत को। ख़याल रहे कि यहां आयत से मुराद आयत सीखना या इस की ता'लीम में मश्ग़ूल रहना है या'नी एक आयत सीखना एक ऊंटनी की मिल्किय्यत से बेहतर है, लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि आयते क़ुरआनी तो तमाम दुन्या से बेहतर है एक ऊंट का ज़िक्र क्यूं हुवा ? या येह तफ़्सील उन अहले अ़रब को समझाने के लिये है जिन्हें ऊंट बहुत मरग़ूब है जैसे मीठी नींद सोने वालों को समझाने के लिये फ़ज्र की अज़ान में कहते हैं "اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم" इस नींद से बेहतर है ह़ालांकि नमाज़ तो सारी दुन्या से बेहतर है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 218)

4......صحیح مسلم،کتاب فضائل القرآن،باب فضل قراءۃ القرآن فی الصلاۃ وتعلمه،الحدیث:۱۸۷۲، ص ۸۰٤۔
المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث عقبة بن عامر الجهنی،الحدیث:۱۷٤۱۳،ج٦،ص ۱٤۰۔

www.dawateislami.net

﴾1208﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ''एक दिन ह़ज़रते अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुफ़्फ़ा के पास आए तो देखा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े खड़े सुफ़्फ़ा वालों को पढ़ा रहे हैं जब कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भूक की वज्ह से पेट पर पथ्थर बांध रखा था ताकि कमर सीधी रहे।''(1)

अहले सुफ़्फ़ा क़ुरआने करीम को सीखने और समझने में मश्ग़ूल रहते और वोह इस बात के मुश्ताक़ होते कि उन्हें दीने इस्लाम की नई बात मिल जाए या साबिक़ा दोहरा ली जाए और इस बात पर येह रिवायात गवाह हैं। चुनान्चे,

﴾1209﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि हम मुसलमानों में सब से ग़रीब थे। एक आदमी हमें क़ुरआन सुना रहा था और हमारे लिये दुआ़ कर रहा था। मेरा ख़याल है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी को सह़ीह़ त़रह़ देख न पाए थे क्यूंकि ना मुकम्मल लिबास होने की वज्ह से वोह एक दूसरे से ख़ुद को छुपाते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हाथ से ह़ल्क़ा बनाने का इशारा फ़रमाया तो सब हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द ह़ल्क़ा बना कर बैठ गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम क्या कर रहे थे?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''येह आदमी हमें क़ुरआन सुना रहा था और हमारे लिये दुआ़ कर रहा था।'' इरशाद फ़रमाया : ''उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ तुम कर रहे थे।'' फिर इरशाद फ़रमाया : ''तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरी उम्मत में वोह लोग शामिल किये जिन के साथ मुझे बैठने का हुक्म दिया गया।'' फिर फ़रमाया : ''ग़रीब मुसलमानों को कामयाबी की बिशारत हो कि वोह क़ियामत के दिन अमीरों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। येह फ़ुक़रा जन्नत में ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे होंगे जब कि मालदारों का अभी ह़िसाबो किताब हो रहा होगा।''(2)

﴾1210﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक गुरौह में बैठे ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल थे कि वहां से हुज़ूर नबिय्ये

❶......المعجم الكبير،الحديث:٢٨٤،ج٢٥،ص١١٤.

❷......سنن ابى داود،كتاب العلم،باب فى القصص،الحديث:٣٦٦٦،ص١٤٩٤-

تركة النبى لحمادبن اسحاق،الحديث:٤٣،ص٤٤.

www.dawateislami.net

मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा तो सब ख़ामोश हो गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम क्या कह रहे थे ?" अ़र्ज़ की :"हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कर रहे थे।" इरशाद फ़रमाया : "ज़िक्र करो मैं ने तुम पर रह़मत नाज़िल होते देखी तो चाहा कि मैं भी तुम्हारे साथ शरीक हो जाऊं।" फिर फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोगों को शामिल फ़रमाया जिन के पास मुझे बैठने का हुक्म दिया गया।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانِی फ़रमाते हैं : "सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और क़ियामत तक उन की पैरवी करने वाले जिन्हों ने फ़क़्रो फ़ाक़ा को अपनाया वोह दीन की एक अ़लामत हैं। उन की सदाक़त के अ़लम बुलन्द हैं। उन के दिल ह़क़ तआ़ला के मुशाहदे से आबाद हैं और वोह ही उन का गवाह और उन का कारसाज़ है। हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के कफ़ील और मेज़बान थे। और जो शख़्स दुन्या और उस के पुर फ़रेब माल से मुंह मोड़ने, आख़िरत और उस की ने'मतों से रिश्ता जोड़ने, कमज़ोर व ना पाईदार चीज़ों से अपने आप को रोकने, रंगीन दुन्या की ग़ाफ़िल कर देने वाली आसाइशों से दूर भागने, हमेशा रहने वाले अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत का मुशाहदा करने और आने वाली राह़तों या'नी हमेशा रहने वाली आख़िरत, उस की तरो ताज़गी, दाइमी शुकूनो रौनक़, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात और उस की चाश्नी और दीदारे इलाही और उस की लज़्ज़त पाने का ख़्वाहिश मन्द है उस पर लाज़िम है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये जो फ़क़्र पसन्द फ़रमाया उस पर राज़ी रहे। जिन कामों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे रोका उन से बाज़ रहे, जो उसे पसन्द है उस में कोशिश करे। अपने दिली ख़यालात की कड़ी निगरानी करे ताकि उस का शुमार पाकीज़ा लोगों में हो और उस का ह़श्र ग़ुरबा व मसाकीन के साथ हो और उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब व बर्गुज़ीदा बन्दों का क़ुर्ब नसीब हो। अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लमह़ात को ग़नीमत समझे। लोगों से बिला ज़रूरत मिलने जुलने से एह़तिराज़ करे। नाह़क़ और बाति़ल लोगों से मुसालह़त कर के अपना वक़्त बरबाद न करे और अपने तमाम अह़वाल में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी में रहते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये कोशां रहे। चुनान्चे,

(1) المستدرک،کتاب العلم،باب الرحمة تنزل علی جماعة یذکرون اللّٰه،الحدیث:۴۲۷،ج۱،ص۳۲۶۔
سنن ابی داؤد،کتاب العلم،باب فی القصص،الحدیث:۳۶۶۶،ص۱۴۹۴.

www.dawateislami.net

﴾1211﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم जब किसी को परेशानी में मुब्तला देखते तो उसे नमाज़ पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाते।"(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : अहले सुफ़्फ़ा ने सुफ़्फ़ा को अपना ठिकाना बनाया और बाति़नी आराइशों से अपने आप को पाक किया। अग़्यार से किनारा कश रहे। शादमानियों और ख़ुशियों से मह़फ़ूज़ रहे। नेकों के त़रीक़े पर साबित क़दम रहे। लिहाज़ा उन्हें दाइमी ने'मतों के बाग़ों में उतारा गया और उन्हें ख़ालिस तस्नीम से सैराब किया गया।

﴾1212﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ وَمِزَاجُهٗ مِنۡ تَسۡنِيۡمٍ ۙ (پ ۳۰، المطففین:۲۷) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की मिलौनी तस्नीम से है।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि "तस्नीम अहले जन्नत की आ'ला तरीन शराब है जो मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही को ख़ालिस मिलेगी जब कि दीगर को तस्नीम की आमेज़िश की हुई शराब मिलेगी।"(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "अहले सुफ़्फ़ा मुख़्तलिफ़ क़बाइल व अ़लाक़ों के नेक लोग थे। उन्हों ने अन्वार का लुबादा ओढ़ा। अज़्कार से अपने दिलों को पाकीज़ा किया। उन के आ'ज़ा ने राहत पाई और उन के बाति़नी असरार मुनव्वर हो गए। चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी रिज़ा उन के शामिले ह़ाल कर दी थी इस लिये उन्हों ने धोका और लह्वो ला'ब में मश्ग़ूल होने वालों से ए'राज़ किया। वोह ज़ाइल व ख़त्म होने वाली और नुक़्सान देह दुन्या से सुल्ह़ करने वालों से दूर रहे। ह़ासिद दुश्मन से मुसालह़त करने से बाज़ रहे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात जिस ने उन की ह़िमायत की उस के दामने रह़मत को हर ह़ाल में थामे रखा। अल ग़रज़ दुन्या से बिल्कुल क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी इख़्तियार की। दुन्यावी मल्बूसात में से फटे पुराने कपड़े पहने। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी की त़रफ़ मुतवज्जेह न हुवे। उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व मह़ब्बत पर भरोसा किया। इसी वज्ह से फ़िरिश्तों ने भी उन की ज़ियारत व दोस्ती में रग़बत की और हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को भी उन के साथ गुफ़्तगू करने और मिल बैठने का हुक्म दिया गया। चुनान्चे,

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی،باب فی الصلوات......الخ،الحدیث:۳۱۸۳،ج۳،ص۱۵۴.

2 ......الزہدللامام احمدبن حنبل،الحدیث:۱۳۸،ص۶۰.

www.dawateislami.net

﴾1213﴿.....हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस आयते मुबारका :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗؕ (پ۷،الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते ।*

का शाने नुज़ूल मन्क़ूल है कि अक़रअ़ बिन ह़ाबिस तैमी और उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आए । उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते बिलाल, हज़रते अ़म्मार, हज़रते सुहैब और चन्द दीगर ग़रीब सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के हमराह तशरीफ़ फ़रमा थे । उन्हों ने उन ग़ुरबा को बैठे देखा तो उन्हें ह़क़ीर जानते हुवे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़लाहि़दा मुलाक़ात के लिये कहा कि "हम ख़ास वक़्त चाहते हैं ताकि अ़रबों को हमारा मक़ाम मा'लूम हो । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास अ़रब के क़ासिद आते हैं तो हमें शर्म मह़सूस होती है कि वोह लोग हमें इन ग़ुलामों के साथ बैठा देखें । जब हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आएं तो इन लोगों को हटा दिया कीजिये और जब हम चले जाएं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इख़्तियार है ।" येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां येह मुमकिन है ।" उन्हों ने कहा : "तो अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस मज़्मून की एक तह़रीर लिख दें तो ज़ियादा मुनासिब है ।" हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस तह़रीर के लिये काग़ज़ मंगवाया और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखने के लिये त़लब फ़रमाया । हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हम लोग एक गोशे में सब्र किये बैठे थे । अभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखवाना ही चाहते थे कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام येह हुक्मे रब्बानी ले कर ह़ाज़िर हो गए :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗؕ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴿۵۲﴾ (پ۷،الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है ।*

www.dawateislami.net

इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अक़रअ़ बिन हाबिस तैमी और उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी के बारे में फ़रमाया :

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ (پ۷،الانعام:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और यूंही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मोह़ताज मुसलमानों को देख कर कहें क्या येह हैं जिन पर अल्लाह ने एह़सान किया हम में से क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को ?*

और इस के बा'द फ़रमाया :

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ (پ۷،الانعام:۵٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब तुम्हारे ह़ुज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''जब येह आयात नाज़िल हुई तो ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने काग़ज़ एक त़रफ़ रख दिया और हमें अपने पास बुलाया, हम पास गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम पर सलाम हो।'' फिर हम ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इतने क़रीब हो कर बैठते कि आप के ज़ानू से हमारे ज़ानू मिल जाते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मा'मूल था कि हमारे पास तशरीफ़ फ़रमा रहते और जब जाने का इरादा करते तो हमारे उठने का इन्तिज़ार किये बिग़ैर उठ कर तशरीफ़ ले जाते तो इस के मुतअ़ल्लिक़ येह आयात नाज़िल हुई :

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ (پ۱۵،الكهف:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ो शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे ?*

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "आप की आंखें उन फ़ुक़रा मोमिनीन को छोड़ कर अशराफ़े क़ुरैश पर न पड़ें कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अशराफ़े क़ुरैश को अपने पास बिठाएं।"

मज़ीद फ़रमाया :

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ (پ۱۵،الکھف:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया।*

वोह जिन के दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिये वोह अक़रअ़ बिन हाबिस तैमी और उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी हैं और "فُرُطًا" से मुराद उन की हलाकत है। इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ और وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا से उन की मिसाल बयान फ़रमाई। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "फिर हमारी ह़ालत येह थी कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान बैठे रहते जब तक हम न उठते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी न उठते। फिर हम उठ कर चले जाते जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहीं तशरीफ़ फ़रमा होते।"(1)

﴾1214﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक मरतबा मुअल्लफ़तुल क़ुलूब (या'नी जिन के दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए) में से अक़रअ़ बिन हाबिस तैमी और उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी और कुछ और लोग बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में आए और कहा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बेशक आप मस्जिद में तशरीफ़ रखें लेकिन हमारे लिये उन लोगों और उन के जुब्बों की बू से अ़लाह़िदा हो कर तशरीफ़ फ़रमा हों ताकि हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत में बैठ सकें और आप से कुछ इल्म ह़ासिल करें।" ("उन लोगों" से इन की मुराद ह़ज़रते अबू ज़र, ह़ज़रते सलमान और दीगर फ़ुक़रा सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن थे जो ऊनी जुब्बे पहनते थे। जिन के इलावा उन के पास कोई दूसरा लिबास न था) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب الزهد، باب مجالسة الفقراء،الحديث:٤١٢٧،ص٢٧٢٨ـ
المعجم الكبير،الحديث:٣٦٩٣،ج٤،ص٧٥تا٧٧.

www.dawateislami.net

وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَ لَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَ اصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ وَ كَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ فَلْیُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ

(پ۱۵، الکھف:۲۷تا۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब तुम्हें वह्य हुई उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं और हरगिज़ तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्हो शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हद से गुज़र गया और फ़रमा दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे बेशक हम ने ज़ालिमों के लिये वोह आग तय्यार कर रखी है जिस की दीवारें उन्हें घेर लेंगी।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आग से डराया। जब येह आयात नाज़िल हुई तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे और सुफ़्फ़ा वालों को तलाश करने लगे ह़त्ता कि उन्हें मस्जिद की पिछली जानिब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल पाया तो फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे उस वक़्त तक वफ़ात नहीं दी जब तक मुझे अपनी उम्मत के कुछ लोगों के साथ अपनी जान को मानूस रखने (या'नी उन के पास बैठने) का हुक्म न दे दिया। लिहाज़ा मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ ही है।"(1)

﴾1215﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि येह आयत हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 6 सहाबा के बारे में नाज़िल हुई जिन में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। हम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो क़रीब तर हो कर बैठते थे। क़ुरैश ने हमें देख कर अ़र्ज़ की : "आप हमारे इलावा इन लोगों को अपने क़रीब बिठाते हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ इरादा फ़रमाया ही था कि येह आयत नाज़िल हुई :

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث:۱۰۴۹۴، ج۷، ص۳۳۶.

www.dawateislami.net

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۲﴾ (پ۷،الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है।*(1)

﴾1216﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम 6 अफ़राद हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि मुशरिकीन ने अ़र्ज़ की : "इन लोगों को अपने से दूर कीजिये क्यूंकि येह इस इस त़रह़ हैं (या'नी उन्हें ह़क़ीर जाना)।" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "वोह 6 अफ़राद थे या'नी मैं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا), क़बीलए हुज़ैल के एक फ़र्द और दो आदमी और थे जिन के नाम मुझे याद नहीं रहे। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल में वोह बात आई जो रब عَزَّوَجَلَّ ने चाही। पस कुछ इरादा फ़रमाया ही था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह हुक्म नाज़िल फ़रमाया :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۲﴾ (پ۷،الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है।*(2)

﴾1217﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि क़ुरैश का एक गुरौह सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से गुज़रा। उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ज़रते सुहैब, ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते ख़ब्बाब, ह़ज़रते अ़म्मार और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से चन्द दीगर नादार मुसलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم मौजूद थे। क़ुरैश ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप अपनी क़ौम से उन लोगों पर राज़ी हो गए ? क्या हम उन लोगों के ताबेअ़ हो गए ? क्या येह वोह लोग हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ज़्लो एह़सान किया

1 ......تفسیر الطبری،الانعام،تحت الآیۃ۵۲،الحدیث:۱۳۲۶۶،ج۵،ص۲۰۰.

2 ......صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب فی فضل سعدبن ابی وقاص،الحدیث:۲۴۱۱،ص۱۱۰۳.

www.dawateislami.net

है ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें अपने से दूर कीजिये। हो सकता है कि उन के दूर करने से हम आप की इत्तिबाअ़ करें।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "इस पर येह आयात नाज़िल हुई :

وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ اَنْ یُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَیْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِیٌّ وَّ لَا شَفِیْعٌ لَّعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ(۵۱) وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ(۵۲) (پ۷،الانعام:۵۱،۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें ख़ौफ़ हो कि अपने रब की त़रफ़ यूं उठाए जाएंगे कि **अल्लाह** के सिवा न उन का कोई ह़िमायती हो न कोई सिफ़ारिशी इस उम्मीद पर कि वोह परहेज़गार हो जाएं और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है।* (1)

﴾1218﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़इज़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अबू सुफ़्यान, ह़ज़रते सलमान, ह़ज़रते सुहैब और ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के पास से गुज़रे(2) तो उन ह़ज़रात ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तल्वारें अभी तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन की गर्दन में अपनी जगह पर नहीं गुज़रीं ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम क़ुरैश के मुअ़ज़्ज़ज़ व सरदार के बारे में ऐसा कहते हो ?" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस बात की इत्तिलाअ़ दी तो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! शायद ! तुम ने उन्हें नाराज़ कर दिया है। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम ने उन्हें नाराज़ कर दिया तो तुम ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर दिया(3)।"

1.....البحرالزخارالمعروف بمسندالبزار،مسندعبداللّٰہ بن مسعود،الحدیث:۲۰۴۱،ج۵،ص۴۰۹.

2.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "येह वाक़िआ़ सुल्ह़े हुदैबिय्या के बा'द और फ़त्ह़े मक्का से पहले का है जब के अबू सुफ़्यान मुसलमान नहीं हुवे थे मगर सुल्ह़ हो जाने की वज्ह से मदीनए मुनव्वरा आया जाया करते थे क्यूंकि वहां उन की दुख़्तर ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा थीं।
(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 522)

3.....या'नी ऐ अबू बक्र निय्यत तुम्हारी बिल्कुल दुरुस्त है मगर इस में एक काफ़िर की ह़िमायत की महक आ रही है मुमकिन है कि इस वज्ह से उन ह़ज़रात के दिल को सदमा पहुंचा हो इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला और ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी मसाकीन व ग़ुरबा ख़ुसूसन मसाकीन सह़ाबा की रिज़ा ख़ुशनूदी में है उस की नाराज़ी उन ह़ज़रात की नाराज़ी में है। शे'र

دِلاَ خُوش بَاش کَاں سُلطانِ دِیں رَا ٭ بَدَرْوِیْشَاں وَمَسْکِیْنَاں سَرِے ہَسْت

www.dawateislami.net

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी वक़्त उन ह़ज़रात के पास आए और कहा : "ऐ मेरे भाइयो ! शायद मैं ने तुम्हें नाराज़ कर दिया है ?" वोह बोले : "नहीं ऐ अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ !(1) یَغْفِرُ اللّٰہُ لَکَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए।"(2)

﴾1219﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस इल्म से बा'ज़ क़ौमों को बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाता और उन्हें मुक़्तदा व पेश्वा बनाता है। लोग नेकी में उन की पैरवी करते। उन के नक़्शे क़दम पर चलते और उन के आ'माल को मश्अ़ले राह बनाते हैं। फ़िरिश्ते उन की दोस्ती में रग़बत रखते और उन्हें अपने परों से ढांप लेते हैं।"(3)

﴾1220﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम जानते हो कि जन्नत में सब से पहले कौन दाख़िल होगा ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" फ़रमाया : "जन्नत में सब से पहले फ़ुक़रा मुहाजिरीन सह़ाबा दाख़िल होंगे जिन के ज़रीए़ ना पसन्दीदा ह़ालात से बचाव किया गया। उन में से कोई वफ़ात पाता है तो उस के अरमान उस के दिल में होते हैं। उन्हें अपने अरमान पूरे करने के अस्बाब मुहय्या नहीं होते। (उस वक़्त) फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे फ़िरिश्ते हैं। तेरे आस्मानों में बसते हैं। तू उन को हम से पहले जन्नत में दाख़िल न फ़रमा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "येह मेरे वोह बन्दे हैं जिन्हों ने किसी को मेरा शरीक नहीं ठहराया। उन के ज़रीए़ ना पसन्दीदा ह़ालात से बचाव किया गया। उन में से कोई वफ़ात पाता तो उस के अरमान उस के दिल में होते थे क्यूंकि उन्हें अपने अरमान पूरे करने के अस्बाब

1.....अ़रब में इज़्हारे ख़ुशी के लिये कहते हैं वोह ही मुहावरा यहां इस्ति'माल हुवा है रब फ़रमाता है : عَفَا اللّٰہُ عَنْکَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَہُمْ
(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 523)

2.....صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب من فضائل سلمان وبلال وصہیب،الحدیث:۶۴۱۲،ص۱۱۱۸۔
المعجم الکبیر،الحدیث:۲۸،ج۱۸،ص۱۸.

3.....الفردوس بماثور الخطاب،باب الیاء،الحدیث:۸۱۲۴،ج۵،ص۲۶۰.

www.dawateislami.net

मुहय्या नहीं होते थे।'' येह सुन कर फ़िरिश्ते हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला, तो आख़िरत का घर क्या ही ख़ूब मिला !''(1)

﴾1221﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने इस आयत : اُولٰٓئِكَ یُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا (پ۱۹،الفرقان:۷۵) ''**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का।'' की तफ़्सीर करते हुवे फ़रमाया : ''बालाख़ाने से मुराद जन्नत है और येह बदला है उस का जो उन्हों ने दुन्या में फ़क़्रो फ़ाक़ा पर सब्र किया।''(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''मैं ने मुतअख़्ख़िरीन में एक आ़लिम को देखा कि उन्हों ने अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के नामों को ज़िक्र करने और उन्हें हुरूफ़े तहज्जी की तरतीब के मुत़ाबिक़ जम्अ़ करने में बहुत ज़ियादा तलाश व जुस्तजू की है और जिन फ़ुक़रा मुहाजिरीन का ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं उन्हों ने उन को भी सुफ़्फ़ा वालों में शामिल कर दिया। अलबत्ता मुझे मेरे बा'ज़ दोस्तों ने कहा कि मैं भी उन की किताब की पैरवी करूं हालांकि उन की किताब में ऐसे कई अफ़राद का ज़िक्र भी मौजूद है जिन के अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा होने का ख़ाली वह्म है क्यूंकि मदीने में एक जमाअ़त अहले क़ुब्बा के नाम से मश्हूर हुई थी लेकिन उन्हों ने उन की निस्बत भी अहले सुफ़्फ़ा की त़रफ़ कर दी और येह बा'ज़ नाक़िलैन की ख़त़ा है इसे हम اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस के मक़ाम पर पहुंच कर वाज़ेह़ करेंगे। अब हम अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के तज़्किरे की इब्तिदा करते हैं।''

हज़रते सय्यिदुना औस बिन औस सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना औस बिन औस सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नामे नामी इस्मे गिरामी में एक क़ौल औस बिन हुज़ैफ़ा का मिलता है। इन की निस्बत अहले सुफ़्फ़ा की त़रफ़ वह्म की वज्ह से की गई है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बीलए बनू सक़ीफ़ के एक वफ़्द के साथ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी हयाते त़य्यिबा के आख़िर में अपने इत्तिहादियों के साथ मदीनए त़य्यिबा आए थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ बनू

1......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندعبداللہ بن عمروبن العاص،الحدیث:۶۵۸۱،ج۲،ص۵۷۲،بتغیرقلیلٍ.

2......موسوعۃ لابن ابی الدنیا،کتاب الصبر،الحدیث:۲۸،ج۴،ص۲۶،بدون"فی دارالدنیا".

www.dawateislami.net

मालिक से था। उन्हें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुब्बा में ठहराया था न कि सुफ़्फ़ा में। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत सी अहादीस रिवायत की हैं। अलबत्ता अहले सुफ़्फ़ा के बारे में आप से कोई बात मन्कूल नहीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चन्द मरविय्यात येह हैं :

﴾1222﴿.....हज़रते सय्यिदुना औस बिन औस सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के एक ख़ैमे में थे कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो एक शख़्स आया। उस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कान में कुछ कहा जिस का हमें इल्म न हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जाओ ! उन से कहो कि वोह उसे क़त्ल कर डालें।" फिर फ़रमाया : "शायद वोह لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की गवाही देता हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "तो फिर जा कर उन से कहो कि वोह उसे छोड़ दें क्यूंकि मुझे लोगों से जिहाद करने का हुक्म दिया गया है ताकि वोह لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की गवाही दें। पस जब वोह इस बात की गवाही दे दें तो उन के ख़ून, उन के अमवाल मुझ पर ह़राम हैं सिवाए किसी इस्लामी ह़क़ के और उन का ह़िसाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे है।" ह़ज़रते सय्यिदुना शुअ़्बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी ह़दीस में बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं कुब्बे की निचली जानिब बैठा हुवा था।"(1)

﴾1223﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन औस सक़फ़ी अपने दादा ह़ज़रते सय्यिदुना औस बिन हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हम बनू सक़ीफ़ के वफ़्द के हमराह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे। मुआ़हदे वाले तो ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शुअ़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां ठहर गए और बनू मालिक को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने कुब्बे (या'नी ख़ैमा) में ठहराया। पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास इ़शा की नमाज़ के बा'द तशरीफ़ लाते और हम से गुफ़्तगू फ़रमाते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर क़ुरैश का शिक्वा करते और फ़रमाते : "हम मक्का में बे यारो मददगार और कमज़ोर थे फिर जब हम मदीना आए तो हम ने क़ौमे क़ुरैश से इन्साफ़ लिया।"(2)

---

(1)......المعجم الكبير،الحديث:٥٩٢/٥٩٣،ج١،ص٢١٨-٢١٧.

(2)......مسندابی داود الطيالسی،حديث اوس بن حذيفة الثقفی،الحديث:١١٠٨،ص١٥١.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन हारिसा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो हज़रते सय्यिदुना हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हैं इन्हें भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते अस्मा व हज़रते हिन्द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़िदमत गुज़ारों में देखा है। येह अक्सर दरवाज़े पर हाज़िर रहते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मसरूफ़ रहा करते।" बा'ज़ मुतअख़्ख़िरीन ने कहा है कि "येह अहले सुफ़्फ़ा ही में से हैं।"

﴾1224﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बग़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सा'द वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की एक किताब में पढ़ा कि हज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन हारिसा बिन सईद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बाद बिन सा'द बिन आ़मिर बिन सा'लिबा बिन मालिक बिन अफ़्सा हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी हैं और अहले सुफ़्फ़ा में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात 60 हिजरी को बसरा में हुई और 80 साल की उ़म्र पाई।"(1)

आ़शूरे के रोज़े की अहम्मिय्यत :

﴾1225﴿.....हज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे भेजा और इरशाद फ़रमाया : "अपनी क़ौम को जा कर हुक्म दो कि वोह आज का रोज़ा रखें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर मैं उन्हें खाना खाता पाऊं तो क्या इरशादे आ़ली सुनाऊं ?" इरशाद फ़रमाया : "फिर वोह अपना बक़िया दिन रोज़े से रहें (या'नी शाम तक कुछ न खाएं)"। और येह आ़शूरा (या'नी दस मुहर्रम) का दिन था।"(2)

हज़रते सय्यिदुना अग़र्र मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अग़र्र मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हवाले से बिग़ैर किसी अस्नाद के अहले सुफ़्फ़ा में शुमार किया गया है।

1......الطبقات الكبرى لابن سعد،الرقم٥١٥اسماء بن حارثة،ج٤،ص٢٤٠،بدون"بصرة".

2......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب هندبن حارثة الاسلمي،الحديث:٦٣١١،ج٤،ص٦٨٠.

www.dawateislami.net

हर रोज़ 100 बार इस्तिग़फ़ार :

﴾1226﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अग़र्र मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيُغَانُ عَلٰى قَلْبِى حَتّٰى اَسْتَغْفِرَ اللّٰهَ مِائَةَ مَرَّةٍ या'नी मेरे दिल पर पर्दा आता रहता है ह़त्ता कि मैं 100 बार इस्तिग़फ़ार करता हूं।[(1)],[(2)]

﴾1227﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने जुहैना क़बीले के अग़र्र नामी एक शख़्स को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले से ह़दीस बयान करते सुना कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि ''ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो। देखो ! मैं दिन में 100 बार तौबा करता हूं।''[(3)]

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी अहले सुफ़्फ़ा में होता है। हम उन का तज़्किरा पहले कर चुके हैं। जिन को राहे ख़ुदा में सब से पहले सताया गया येह उन में से हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ाज़िन थे।

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ''इस पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ शारेह़ीन ने बहुत ख़ामह फ़रसाई की है। बा'ज़ के नज़्दीक इस से मुराद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की दुन्या में मशग़ूलिय्यत है, बा'ज़ ने फ़रमाया कि इस से सोना मुराद है, बा'ज़ के ख़याल में इस से मुराद इजतिहादी ख़त़ाएं हैं, मगर ह़क़ येह है कि यहां ''غين'' से मुराद अपनी उम्मत के गुनाहों को देख कर ग़म फ़रमाना है और इस्तिग़फ़ार से मुराद उन गुनहगारों के लिये इस्तिग़फ़ार करना है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ता क़ियामत अपनी उम्मत के सारे ह़ालात पर मुत्त़लअ़ हैं, उन गुनाहों को देखते हैं, दिल को सदमा होता है, इस सदमे के जोश में उन्हें दुआ़एं देते हैं (लम्आ़त, मिर्क़ात, अशिअ़्आ़ वग़ैरा) इस की ताईद क़ुरआने करीम की इस आयत से होती है ''عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ'' ऐ मुसलमानो ! तुम्हारी तक्लीफ़ें उन पर गिरां हैं।

शे'र

बद हंसें तुम उन की ख़ात़िर   रात भर रोओ करा हो
बद करें हर दम बुराई   तुम कहो उन का भला हो

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 353)

2.....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث الاغر المزنی، الحدیث:١٧٨٦٦، ج٦، ص٢٥٧.

3.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب استحباب الاستغفار والاستکثار منه، الحدیث:٦٨٥٩، ص١١٤٧، بتغیر.

www.dawateislami.net

सर्दी गर्मी में बदल गई :

﴾1228﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताया कि मैं ने एक सख़्त सर्द रात में फ़ज्र की अज़ान कही लेकिन मस्जिद में कोई न आया कुछ देर बा'द मैं ने फिर अज़ान दी मगर अब की बार भी कोई न आया। जब शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "लोगों को क्या हुवा ?" मैं ने अ़र्ज़ की :"सख़्त सर्दी ने लोगों को मस्जिद में आने से रोक रखा है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों से सर्दी को दूर फ़रमा।" ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं गवाही देता हूं कि (सर्दी ऐसी दूर हुई कि) मैं ने लोगों को सुब्ह़ के वक़्त गर्मी की वज्ह से पंखा झलते हुवे देखा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से मन्क़ूल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अहले सुफ़्फ़ा में से हैं लेकिन इस बात की सनद मज़्कूर नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उहुद और इस के इलावा दीगर ग़ज़्वात में भी शरीक हुवे और जंगे तुस्तर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पाकीज़ा दिल के मालिक, ख़ुश इल्ह़ानी से पढ़े जाने वाले अश्आ़र की त़रफ़ मैलान रखते। तरन्नुम से लुत़्फ़ पाते थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बहादुर सिपह सालार व शह सुवार थे।

﴾1229﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कितने ही बिखरे बालों वाले, फटे पुराने कपड़ों वाले जिन की परवाह नहीं की जाती (लेकिन उन की शान येह है कि) अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाता है। बरा बिन मालिक भी इन्ही

(1)......كتاب الضعفاء للعقيلى،الرقم١٣٠،ايوب بن سيار الزهرى ابو سنان،ج١،ص١٢٩۔
المعجم الكبير،الحديث:١٠٦٦،ج١،ص٣٥١.

www.dawateislami.net

में से हैं।" चुनान्चे, जब मा'रिकए तुस्तर के दिन मुसलमानों को आ़रिज़ी हज़ीमत उठानी पड़ी तो इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "ऐ बरा ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाइये ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे क़सम देता हूं कि तू हमें इस मा'रिके में फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमा और मुझे अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मिला।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हो गए।"(1)

﴾1230﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ूब सूरत आवाज़ के मालिक थे और सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में रज्ज़िया अश्आ़र पढ़ा करते थे। एक मरतबा एक सफ़र के दौरान शाने रिसालत में रज्ज़िया अश्आ़र पढ़ रहे थे कि औ़रतों के क़रीब से गुज़र हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन शीशियों का ख़याल करो। इन शीशियों का ख़याल करो।"(2)

﴾1231﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पुश्त के बल लेट कर कुछ पढ़ने लगे तो मैं ने उन से कहा : "ऐ भाई ! सीधे हो कर बैठ जाइये ! तो उन्हों ने कहा : "क्या आप येह समझ रहे हैं कि मैं अपने बिस्तर पर मर जाऊंगा ! ह़ालांकि मैं ने तने तन्हा 100 मुशरिकीन को मौत के घाट उतारा है और जो दूसरों के साथ मिल कर मारे वोह इन के इ़लावा हैं !"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से सुफ़्फ़ा वालों में

---

(1) جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب البراء بن مالك، الحديث: ٣٨٥٤، ص٢٠٤٧۔
الاحاديث المختارة، مُصْعَب بن سُلَيم عن انس، الحديث: ٢٦٥٩، ج٧، ص٢١٧.

(2) المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب كراهة التغني عندالنساء، الحديث: ٥٣٢٤، ج٤، ص٣٤٠.

(3) جامع معمربن راشدمع المصنف لعبدالرزاق، كتاب الجامع، باب الغناء و الدف، الحديث: ١٩٩١٢، ج١٠، ص٧٢.

www.dawateislami.net

शुमार किया गया है। हम इन का तज़्किरा पहले कर चुके हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़नाअ़त पसन्द, पाक दामन, वफ़ादार और ज़रीफ़ुत्तबअ़ इन्सान थे।

यहूदी आ़लिम, बारगाहे रिसालत में :

﴿1232﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्मा रह़बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं बारगाहे नबवी में ह़ाज़िर था कि यहूदियों का एक आ़लिम आया और कहने लगा : "मैं आप से कुछ पूछने आया हूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पूछो।" उस ने कहा : "जिस दिन (या'नी क़ियामत के दिन) ज़मीन दूसरी ज़मीन से और आस्मान बदल दिये जाएंगे उस दिन लोग कहां होंगे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पुल सिरात़ के क़रीब अन्धेरे में होंगे।" उस ने पूछा : "सब से पहले जन्नत में जाने की इजाज़त किन लोगों को ह़ासिल होगी ?" फ़रमाया : "फ़ुक़रा मुहाजिरीन को।"(1)

सब से अफ़्ज़ल माल :

﴿1233﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से अफ़्ज़ल दीनार (या'नी रूपिया) वोह है जिसे बन्दा अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करे या राहे ख़ुदा में जिहाद की सुवारी पर ख़र्च करे या जिहाद में शरीक अपने रुफ़क़ा पर ख़र्च करे।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह़्ह़ाक अन्सारी अबू ज़ैद अश्हली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है ह़ालांकि वोह अहले शजरह (या'नी दरख़्त के नीचे बैअ़त करने वालों) में से हैं। उन का अपना घर था। अन्सारी सह़ाबी थे और सुफ़्फ़ा वालों में से न थे।

---

(1) ......صحیح مسلم، کتاب الحیض، باب صفۃ مَنِیِّ الرجل و المرأۃ......الخ، الحدیث:۷۱۶/۷۱۷، ص۷۳۰.

(2) ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ علی العیال......الخ، الحدیث:۲۳۱۰، ص۸۳۵۔
المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ثوبان، الحدیث:۲۲۴۴۳، ج۸، ص۳۲۳.

www.dawateislami.net

मुसलमान पर कुफ़्र की तोहमत उस के क़त्ल की त़रह है :

《1234》.....ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया कि मैं ने दरख़्त के नीचे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त का शरफ़ पाया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुसलमान पर कुफ़्र की तोहमत लगाना उसे क़त्ल करने की त़रह है[1]।"[2]

《1235》.....ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो इस्लाम के सिवा किसी दीन पर झूटी क़सम खाए[3] तो वोह ऐसा ही है जैसा कहे[4]।"[5]

﴿تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه﴾

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "क्यूंकि कुफ़्र इरतिदादे क़त्ल के अस्बाब से हैं किसी को बिला वज्ह काफ़िर या मुर्तद कहना गोया उसे लाइक़े क़त्ल कहना है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5 स. 196)

2.....صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب غزوة الحدیبیة،الحدیث:٤١٧١،ص٣٤٢۔
کتاب الادب،باب ما یُنهی مِنَ السِّبَاب و اللَّعن،الحدیث:٦٠٤٧،ص٥١١.

3.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "मसलन कहे कि अगर मैं येह काम करूं तो ईसाई यहूदी हो जाऊं या इस्लाम से निकल जाऊं और फिर वोह काम न करे या कहे कि अगर मैं ने येह काम किया तो यहूदी हो जाऊं ह़ालांकि उस ने येह काम किया था।"

4.....या वोह अ़मलन यहूदी ही हो गया या इस्लाम से बरी हो गया, येह फ़रमान तशद्दुद के लिये है जैसे फ़रमाया गया कि जो अ़मदन नमाज़ छोड़े वोह काफ़िर हो गया, ऐसी क़सम में इमाम अबू ह़नीफ़ा, अह़मद व इस्ह़ाक़ के हां क़सम मुन्अ़क़िद हो जाएगी कफ़्फ़ारा वाजिब होगा और इमाम शाफ़ेई के हां कफ़्फ़ारा भी नहीं सिर्फ़ गुनाह है कि येह क़सम नहीं सिर्फ़ झूट है, येह इख़्तिलाफ़ जब है जब कि अल्फ़ाज़ आइन्दा के मुतअ़ल्लिक़ बोले मसलन कहे कि अगर मैं फ़ुलां से कलाम करूं तो यहूदी हो जाऊं या इस्लाम से बरी हो जाऊं लेकिन अगर येह अल्फ़ाज़ गुज़श्ता के मुतअ़ल्लिक़ बोले तो किसी के हां कफ़्फ़ारा नहीं सब के हां गुनाह ही है मसलन कहे कि अगर मैं ने येह काम किया हो तो मैं यहूदी या ईसाई हूं और वाक़ेअ़ में वोह काम किया था तो गुनहगार है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 195, 196)

सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अगर इस क़सम के खाने वाले का येह ज़ेह्न बना हुवा है कि मैं वोह काम करूंगा तो वाक़ेई काफ़िर हो जाऊंगा तो ऐसी सूरत में वोह उस काम के करने की सूरत में काफ़िर हो जाएगा वरना क़सम तोड़ने पर काफ़िर तो न होगा मगर गुनहगार होगा और उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा देना वाजिब हो जाएगा।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 578, मुलख़्ख़सन)

5.....صحیح البخاری،کتاب الادب،باب من اکفراخاه بغیرتأویلٍ فهو کماقال،الحدیث:٦١٠٥،ص٥١٥،بتغیرٍ.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन वदीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन वदीआ़ अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा की तरफ़ मन्सूब किया गया है ह़ालांकि वोह कूफ़ा में रिहाइश पज़ीर हुवे न कि सुफ़्फ़ा में और उन से येह ह़दीस मरवी है।

﴾1236﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन वदीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक गोह लाई गई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह भी एक उम्मत थी जिसे मस्ख़ कर दिया गया[1]।"[2] وَاللہُ اَعْلَم

ह़ज़रते सय्यिदुना सक़ीफ़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना सक़ीफ़ बिन अ़म्र बिन सुमैत़ असदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जो बनू उमय्या के ह़लीफ़ थे उन्हें ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात़ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में शामिल किया गया है और येह ग़ज़्वए ख़ैबर में शहीद हुवे।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दुब बिन जुनादा अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दुब बिन जुनादा अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। हम उन के ह़ालात में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहादुरी, चौथे नम्बर पर क़बूले इस्लाम और हिजरत करने के बा'द मस्जिदे नबवी علٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही में मुक़ीम होना बयान कर चुके हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मिसाली इ़बादत गुज़ार थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'ज़ औक़ात अहले सुफ़्फ़ा के पास तशरीफ़ लाते और उन से गुफ़्तगू करते जिस की वज्ह से इन्हें अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है।

1.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "इस में येह एह़तिमाल है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान इस बात का इ़ल्म होने से पहले का हो कि जिन की शक्लें मस्ख़ कर दी जाती थीं वोह तीन दिन से ज़ियादा ज़िन्दा नहीं रहते थे या मह़ज़ मस्ख़ शुदा उम्मतों से मुशाबहत बयान करने के लिये कहा हो (न येह कि येह इसी उम्मत में से है)।" (سنن النسائی بشرح السیوطی، کتاب الصید و الذبائح، الضب، ج٤، جز٧، ص١٩٩)

2.....سنن النسائی، کتاب الصید و الذبائح، باب الضب، الحدیث: ٤٣٢٧، ص ٢٣٧٠.

www.dawateislami.net

﴾1237﴿.....हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رحمۃاللہ تعالی علیہا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मसरूफ़ रहते। फ़राग़त पाते तो मस्जिद में आ जाते और यहीं लेट जाते गोया मस्जिद ही उन का घर था। एक रात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो उन्हें मस्जिद के फ़र्श पर सोते हुवे पाया तो पाउं मुबारक से उन्हें हिलाया ह़त्ता कि वोह बेदार हो गए और सीधे हो कर बैठ गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "मस्जिद में क्यूं सो रहे हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "आक़ा ! मैं कहां सोऊं ? मेरा इस के सिवा कोई घर नहीं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी (कुछ देर) उन के पास तशरीफ़ फ़रमा हो गए।"(1)

लेटने का शैत़ानी त़रीक़ा :

﴾1238﴿.....हज़रते सय्यिदुना नुऐ़म मुजमर अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं भी सुफ़्फ़ा वालों में था। शाम के वक़्त सुफ़्फ़ा वाले हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरवाज़े पर ह़ाज़िर हो जाते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर शख़्स को सुफ़्फ़ा वालों में से एक एक आदमी को खाना खिलाने के लिये साथ ले जाने का फ़रमाते ह़त्ता कि कमो बेश 10 सुफ़्फ़ा वाले बाक़ी रह जाते। फिर दरबारे रिसालत में रात का खाना ह़ाज़िर किया जाता तो हम भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ खाने में शरीक हो जाते। खाने से फ़राग़त पाते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते : "मस्जिद में सो जाओ।" हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं मुंह के बल लेटा सो रहा था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे तो अपने पाउं मुबारक से मुझे हिलाया और फ़रमाया : "ऐ जुन्दुब ! येह लेटने का कौन सा त़रीक़ा है ? इस त़रह़ तो शैत़ान सोता है।"(2)

---

1 ......المسندللاما م احمدبن حنبل،حدیث اسماء ابنة یزید،الحدیث:۲۷۶۵۹،ج۱۰،ص۴۴۰،مفهومًا.

2 ......تفسیرالقرطبی،البقرۃ،تحت الایۃ۲۷۳،الجزء الثالث،ج۲،ص۲۵۷۔
سنن ابن ماجه،ابواب الادب،باب النهی عن الاضطجاع علی الوجه،الحدیث:۳۷۲۴،ص۲۶۹۹،بتغیرٍ

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना जरहद बिन ख़ुवैलिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना जरहद बिन ख़ुवैलिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र भी सुफ़्फ़ा वालों में किया गया है। बा'ज़ ने कहा कि येह इब्ने रिज़ाख़ अस्लमी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर सुफ़्फ़ा पर रहते नीज़ सुल्हे हुदैबिय्या में भी शरीक थे।

﴾1239﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ुरआ बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन जरहद رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जरहद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ फ़रमा थे जब कि मेरी रान बर्हना थी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि रान सित्र है(1)।"(2)

हज़रते सय्यिदुना जुऐ़ल बिन सुराक़ा ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना जुऐ़ल बिन सुराक़ा ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में शुमार किया गया है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुफ़्फ़ा में रिहाइश पज़ीर थे।

﴾1240﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इब्राहीम बिन ह़ारिस तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने उ़यैना और अक़्रअ़ को 100-100 ऊंट अ़त़ा फ़रमाए लेकिन ह़ज़रते जुऐ़ल बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुछ अ़त़ा नहीं फ़रमाया ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जुऐ़ल बिन सुराक़ा, उ़यैना व अक़्रअ़ जैसे रूए ज़मीन भर के आदमियों से बेहतर है उन लोगों को मैं ने तालीफ़े क़ल्ब के लिये अ़त़ा किया है ताकि वोह इस्लाम ले आएं जब कि जुऐ़ल को इस्लाम के सिपुर्द कर दिया है।"(3)

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "येह सुवाल ज़ज्र का है या'नी येह मस्अला जानना ज़रूरियाते दीन से है क्या तुम ने अब तक इतना ज़रूरी मस्अला भी न सीखा कि मर्द की रान सित्रे औ़रत है इसी ह़दीस की बिना पर इमाम अबू ह़नीफ़ा व शाफ़ेई व अह़मद बिन ह़म्बल मर्द की रान को सित्र मानते हैं, इमाम मालिक के हां सित्र नहीं लिहाज़ा रान खोल कर नमाज़ दुरुस्त नहीं मगर ख़याल रहे ! कि येह इख़्तिलाफ़ मर्द की रान में है औ़रत की रान को सब सित्र मानते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 18)

2.....سنن ابی داود، کتاب الحَمَّام، باب النھی عن التَعَرِّی، الحدیث: ٤٠١٤، ص١٥١٧ .

3.....الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ١٤٤١ جُعیل بن سُراقۃ الضَمری، ج٤، ص١٨٦ .

www.dawateislami.net

﴾1241﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "जुऐ़ल" के बारे में तुम्हारी क्या राए है? मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह एक मिस्कीन आदमी हैं और येह बात उन की शक्ल से ज़ाहिर होती है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "और फ़ुलां शख़्स के बारे में क्या राए रखते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह लोगों के सरदारों में से एक सरदार है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जुऐ़ल उस जैसे रूए ज़मीन भर के आदमियों से बेहतर है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फ़ुलां आदमी भी तो इस त़रह़ है लेकिन आप जुऐ़ल के साथ ऐसा बरताव नहीं फ़रमाते जैसा उस के साथ फ़रमाते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह अपनी क़ौम का सरदार है और मैं उसे तालीफ़े क़ल्ब के लिये नवाज़ता हूं (या'नी उस के साथ ऐसा बरताव इस लिये करता हूं ताकि वोह इस्लाम ले आए)।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना जारिया बिन हुमैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

बा'ज़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जारिया बिन हुमैल बिन नुश्बा बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इमाम दारे क़ुत़्नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی के ह़वाले से सुफ़्फ़ा वालों में ज़िक्र किया है और इब्ने जरीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر से मन्क़ूल है कि "उन्हें सह़ाबिय्यत का शरफ़ ह़ासिल है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत अ़र्सा अहले सुफ़्फ़ा के साथ रहे इसी वज्ह से इन्हें अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा और उन के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीन में से हैं। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें हिजरत व नुसरत के दरमियान इख़्तियार दिया तो उन्हों ने नुसरत को पसन्द किया। वोह अन्सार के ह़लीफ़ थे। चुनान्चे, उन्हें अहले सुफ़्फ़ा में शुमार किया गया। हम ने त़बक़ए ऊला में उन के अह़वाल बयान कर दिये हैं।(3)

---

1 ......الجامع لابن وهب،باب النسب،الحديث:٣٢،ج١،ص٣٤.

2 ......الطبقات الكبرىٰ لابن سعد،الرقم٤٦٦ جارية بن حُمَيْل،ج٤،ص٢١١.

3 ......المعجم الكبير،الحديث:٣٠١١،ج٣،ص١٦٤.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रूनुमा होने वाले फ़ितनों और आफ़तों से आगाह थे। इल्मो इबादत में हमातन मश्ग़ूल और दुन्या से किनारा कश रहते। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ग़ज़्वए अहज़ाब की रात तन्हा जासूसी के लिये भेजा। जब वोह अपने सफ़र से लौटे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ठन्डी हवा और सर्दी से बचाने के लिये उन्हें कपड़ों पर पहना जाने वाला अपना बिग़ैर आस्तीनों का चोग़ा पहनाया।

ग़ुलामों पर शफ़्क़त :

﴾1242﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बार हम हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हम ग़ज़्वए अहज़ाब की एक सख़्त आंधी और सर्दी वाली रात शाहे मौजूदात, सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कोई है जो मेरे पास क़ौमे (कुफ़्फ़ार) की ख़बर लाए और उसे क़ियामत में मेरी रफ़ाक़त हासिल हो ?" लोग ख़ामोश रहे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी मरतबा, फिर तीसरी मरतबा फ़रमाया (लेकिन सख़्त आंधी व सर्दी की वज्ह से ख़ामोश रहे) फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ हुज़ैफ़ा ! मेरे पास क़ुरैश की ख़बर लाओ।" चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम ले कर फ़रमा दिया तो अब जाना ही था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "मेरे पास क़ौमे (कुफ़्फ़ार) की ख़बर लाओ और उन्हें मेरे ख़िलाफ़ ग़ुस्सा न दिलाना।" हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं चला तो ऐसे लगा जैसे मैं हम्माम में चल रहा हूं (या'नी सर्दी बिल्कुल महसूस न होती थी) हत्ता कि मैं क़ुरैश के पास पहुंच गया फिर जब वहां से वापस पल्टा तो मुझे यूं महसूस हो रहा था जैसे मैं किसी हम्माम में चल रहा हूं। बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो कर सब हालात की ख़बर दी। जब मैं फ़ारिग़ हुवा तो मुझे सर्दी लगने लगी। पस हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना ज़ाइद कम्बल जिसे ओढ़ कर नमाज़ अदा फ़रमाते मुझे ओढ़ा दिया तो मैं सुब्ह तक चैन की नींद सोया रहा। सुब्ह मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत सोने वाले अब उठ जाओ।"(1)

1......صحیح مسلم،کتاب الجهاد،باب غزحدیث:٤٦٤٠،ص٩٩٧،بتغیرقلیل.

www.dawateislami.net

﴾1243﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में सुफ़्फ़ा में मौजूद थे कि इतने में हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़ान देने का इरादा किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! ठहरो।" फिर हम से इरशाद फ़रमाया : "खाना खा लो।" हम ने खाना खाया, फिर फ़रमाया : "पानी पी लो।" हम ने पानी भी पी लिया फिर हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिये अज़ान देने खड़े हुवे।" रावी हज़रते सय्यिदुना जरीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر फ़रमाते हैं : "यहां खाने से सह़री का खाना मुराद है।"(1)

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू सरीह़ा हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैअ़ते रिज़्वान में शरीक हुवे थे।

क़ियामत की 10 बड़ी निशानियां :

﴾1244﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि हम क़ियामत का तज़्किरा कर रहे थे तो इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत उस वक़्त तक न आएगी जब तक दस निशानियां ज़ाहिर न हो जाएं : (1) धुवां (2) दज्जाल (3) जानवर (4) आफ़्ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना (5) तीन धंसने, एक धंसना मशरिक़ में (6) दूसरा मग़रिब में (7) तीसरा जज़ीरए अ़रब में (8) याजूज व माजूज का ज़ाहिर होना (9) वोह आग जो (मुल्के यमन के मश्हूर शहर) अ़द्न के बीच से निकलेगी लोगों को मह़शर की त़रफ़ हांक देगी(2)।(3)

---

1 ......اخبار اصبہان، باب العین، من اسمہ علی، الحدیث:۸۹ وۃ الاحزاب، ال ۱۰۴، ج۶، ص ۵۰

2 .....इस ह़दीसे पाक में मज़्कूर क़ियामत की निशानियों के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 116 ता 129 का मुत़ालआ़ कीजिये। नीज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 276 (मत़्बूआ़ ज़ियाउल क़ुरआन) से इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ का मुत़ालआ़ इन्तिहाई मुफ़ीद है। **इल्मिय्या**

3 ......مسند ابی داود الطیالسی، حذیفۃ بن اسید الغفاری، الحدیث:۱۰۶۷، ص۱۴۳۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं कि मेरा ख़याल है कि रावी ने हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नुज़ूल का भी ज़िक्र किया।

कु़रआने हकीम और अहले बैत :

﴾1245-1246﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं तुम्हारा पेश रू हूं और तुम हौज़ पर आओगे। पस जब तुम मेरे पास आओगे तो मैं तुम से दो भारी चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करूंगा तो तुम ग़ौर करो कि मेरे बा'द उन दोनों के बारे में मेरे कैसे जा नशीन रहे हो। सब से ज़ियादा भारी चीज़ **किताबुल्लाह** है। इस की रस्सी का एक किनारा ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ के दस्ते क़ुदरत में और दूसरा तुम्हारे हाथों में है। लिहाज़ा किताबुल्लाह को मज़बूती से थामे रखो और गुमराह न होना और न ही इसे बदलना। और दूसरी चीज़ मेरी **इत्रत** या'नी **अहले बैत** हैं। बेशक मुझे मेहरबान व ख़बरदार परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने ख़बर दी है कि येह दोनों उस वक़्त तक हरगिज़ जुदा नहीं होंगे जब तक मेरे हौज़ पर न आएंगे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन ज़ैद अन्सारी अज़्दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बीलए बनी नज्जार के एक फ़र्द हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी अहले सुफ़्फ़ा में किया गया है और येह इश्तिबाह की वज्ह से है क्यूंकि दर ह़क़ीक़त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार अहले उ़क़्बा में होता है।

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٣٠٥٢/٢٦٧٨،ج٣،ص١٨٠/٦٥.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस्तिक़ामत व शहादत :

हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने क़ैद कर लिया और कहने लगा : "क्या तुम गवाही देते हो कि मुहम्मद, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं ?" हज़रते सय्यिदुना हबीब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "हां ! मैं इस बात की गवाही देता हूं।" फिर उस ने कहा कि "क्या तुम इस बात की गवाही नहीं देते हो कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं !" तो मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का ज़िक्रे ख़ैर :

हज़रते सय्यिदुना हबीब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना नुसैबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं। इन का शुमार भी अहले उ़क्बा में होता है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में मुसलमानों के साथ मुसैलिमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जिहाद में शरीक हुईं। जिस में वोह बद बख़्त वासिले जहन्नम हुवा और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا मदीनए तृय्यिबा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا इस हालत में वापस आईं कि जिस्मे अक़्दस पर नेज़ों और तल्वारों के बे शुमार ज़ख़्म थे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना हारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना हारिसा बिन नो'मान अन्सारी नज्जारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान नसाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है ह़ालांकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले बद्र में से हैं। नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार 80 जां निसार सहाबा में होता है जिन्हों ने जंगे हुनैन में साबित क़दमी का मुज़ाहरा किया और मैदाने कारज़ार से राहे फ़िरार इख़्तियार नहीं की। आख़िरी उ़म्र में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीनाई जाती रही थी।

मां से हुस्ने सुलूक का सिला :

﴾1247﴿.....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،شروط البيعة فى العقبة الاخيرة،اسماء من شهد العقبة،ص ١٨٥.

www.dawateislami.net

एक रात मैं सोया तो मैं ने अपने आप को जन्नत में पाया। मैं ने एक क़ारी की आवाज़ सुनी तो पूछा : "येह कौन है ?" फ़िरिश्तों ने कहा : "येह ह़ारिसा बिन नो'मान हैं।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह भलाई व एह़सान ही का सिला है। येह भलाई व एह़सान ही का सिला है।" रावी फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सब लोगों से ज़ियादा अपनी वालिदा के साथ भलाई व ह़ुस्ने सुलूक से पेश आते थे।"(1)

सदक़ा बुरी मौत से बचाता है :

﴾1248﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि बीनाई चली जाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ुजरे के दरवाज़े से अपनी नमाज़ की जगह तक एक रस्सी बांध रखी थी और अपने पास खजूरों से भरी एक टोकरी रख लेते थे। जब कोई साइल आता और सलाम करता तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه टोकरी से कुछ खजूरें लेते फिर रस्सी के ज़रीए साइल के पास आते और उसे खजूरें अ़त़ा फ़रमाते। आप के घर वाले अ़र्ज़ करते कि हम इस काम में आप को किफ़ायत करेंगे लेकिन आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते कि मैं ने ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना है कि "मिस्कीन को कोई चीज़ देना (या'नी सदक़ा करना) बुरी मौत से बचाता है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाज़िम बिन ह़र्मला رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाज़िम बिन ह़र्मला अस्लमी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के ह़वाले से अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा की त़रफ़ मन्सूब किया गया है।

जन्नत का ख़ज़ाना :

﴾1249﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाज़िम बिन ह़र्मला رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से गुज़रा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलाया। मैं ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ ह़ाज़िम لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم कसरत के साथ पढ़ा करो क्यूंकि येह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।"(3)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث: ۲۵۳۹۲، ج۹، ص۵۱۸.

2 ......المعجم الكبير، الحديث: ۳۲۲۸، ج۳، ص۲۲۸.

3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الادب، باب ما جاء في ﴿لاحول ولاقوة الا بالله﴾، الحديث: ۳۸۲٦، ص۲۷۰٤.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन अबी आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन अबी आमिर राहिब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा मुहम्मद बिन मुसन्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हवाले से अहले सुफ़्फ़ा की तरफ़ मन्सूब किया गया है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **"ग़सीलुल मलाइका"** (या'नी जिन्हें फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया) के लक़ब से भी याद किये जाते हैं।

"ग़सीलुल मलाइका" कहने की वज्ह :

﴿1250﴾.....हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन लबीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد से मरवी है कि जंगे उहुद में क़बीलए बनी अम्र बिन औफ़ के हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन अबी आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अबू सुफ़्यान का आमना सामना हुवा (उस वक़्त अबू सुफ़्यान ईमान नहीं लाए थे) और शद्दाद बिन अस्वद ने जिसे "इब्ने शऊब" कहा जाता है हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू सुफ़्यान पर ग़ालिब आते देखा तो उन्हें शहीद कर दिया। जंग ख़त्म हुई तो हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे रफ़ीक़ या'नी हन्ज़ला को फ़िरिश्ते गुस्ल दे रहे हैं। ज़रा उन के घरवालों से उन के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त तो करो।" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहलिय्या से पूछा गया तो उन्हों ने बताया कि "येह हालते जनाबत में थे कि ए'लाने जिहाद सुनते ही उठ कर चल दिये।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसी वज्ह से फ़िरिश्तों ने इन्हें गुस्ल दिया है।"[1]

---

1 ......السیرة النبویة لابن ہشام،غزوة اُحد،شان عاصم بن ثابت،ص ٣٢٩۔
المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب ذكر شهادة حنظلة......الخ،الحديث: ٤٩٧٠،ج٤،ص ٢١٢.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन अम्र अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हवाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है लेकिन येह वह्म है क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना हज्जाज अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दर हक़ीक़त अबू हज्जाज, हज्जाज बिन मालिक बिन हज्जाज हैं और हज्जाज बिन अम्र माज़िनी अन्सारी हैं और इन्हें किसी ने भी अहले सुफ़्फ़ा में शुमार नहीं किया। इन की सनद से एक येह रिवायत मिलती है। चुनान्चे,

﴾1251﴿.....हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "जिस शख़्स का पाउं टूट जाए या लंगड़ा हो जाए तो वोह एह़राम खोल दे और उस पर दूसरा हज वाजिब है[1]।"[2]

हज़रते सय्यिदुना हकम बिन उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना हकम बिन उमैर सुमाली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी अहले सुफ़्फ़ा में होता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ मुल्के शाम से है।

दीन में नाक़िस कौन ?

﴾1252﴿.....सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना हकम बिन उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या में मेहमान बन कर रहो और मसाजिद को अपने घर बनाओ और अपने दिलों को रिक़्क़त की आदत

1.....या'नी जिस ने एहरामे हज बांध लिया हो, फिर उस के पाउं की हड्डी टूट जाए या हड्डी तो न टूटे, लंग पैदा हो जाए जिस से वोह आगे सफ़र और अरकाने हज अदा न कर सके तो वोह अपना एहराम खोल दे और वहां से लौट जाए या ठहर जाए, हदी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा भेज दे, और तारीख़े ज़ब्ह़ पर एहराम खोल दे, साले आइन्दा क़ज़ा करे। इस से दो मस्अले साबित हुवे **एक येह** कि एह़सार सिर्फ़ दुश्मन ही से नहीं होता बल्कि बीमारी वग़ैरा से भी हो जाता है। **दूसरे येह** कि नफ़्ली इबादत शुरूअ़ कर देने से फ़र्ज़ हो जाती है, अगर पूरी न हो सके तो उस की क़ज़ा लाज़िम है, क्यूंकि यहां हज मुत़लक़ फ़रमाया गया, फ़र्ज़ी हो या नफ़्ली। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 199)

मदनी मश्वरा : एह़सार के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल, स. 1194 ता 1198 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये ! **इल्मिय्या**

2.....سنن ابن ماجه،ابواب المناسك،باب المُحْصِر،الحديث:٣٠٧٧،ص٢٦٦٤.

www.dawateislami.net

डालो और फ़िक्रे आख़िरत और रोने की कसरत करो और अपनी ख़्वाहिशात के पीछे न पड़ो। तुम ऐसी इमारतें बनाते हो जिन में तुम्हें रहना नहीं। इतना माल इकठ्ठा करते हो जितना तुम ने खाना नहीं और ऐसी उम्मीद बांधते हो जिन्हें तुम ने पाना नहीं।" मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "आदमी के दीन के नाक़िस होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि उस की ख़त़ाएं ज़ियादा और ह़िल्म कम हो और वोह ऐसी बात कहे जिस की ह़क़ीक़त कम हो, रातें मुर्दारों की त़रह़ गुज़रें तो दिन बेकारों की त़रह़ बसर हों। बहुत सुस्त, लालची, कन्जूस और आसूदा ज़िन्दगी गुज़ारने की फ़िक्र में गिरिफ़्तार हो।"(1)

कामिल हया :

﴾1253﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पूरी ह़या करो, सर और उस में मह़फ़ूज़ चीज़ों, पेट और उस के अन्दर की चीज़ों की ह़िफ़ाज़त करो, मौत और गल जाने को याद रखो, जो ऐसा करेगा उस की जज़ा जन्नतुल मावा है(2)।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़र्मला बिन इयास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़र्मला बिन इयास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी ह़ुज़ैफ़ा बिन ख़य्यात़ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में शुमार किया गया है। बा'ज़ ने कहा : "आप का नाम ह़र्मला बिन अ़ब्दुल्लाह अ़म्बरी है।"

﴾1254﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़र्मला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं अपने क़बीले के हमराह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा, जब मैं वापस होने लगा तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे नसीह़त इरशाद फ़रमाइये।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......فردوس الاخبارللدیلمی،باب الکاف،الحدیث:٤٧٤٤/٤٨٩٧،ج٢،ص١٦٦/١٧٩.

2 .....या'नी सिर्फ़ ज़ाहिरी नेकियां कर लेना और ज़बान से ह़या का इक़रार करना पूरी ह़या नहीं बल्कि ज़ाहिरी और बात़िनी आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना ह़या है, चुनान्चे, सर को ग़ैरे ख़ुदा के सजदे से बचाए, अन्दरूने दिमाग़ को रिया और तकब्बुर से बचाए, ज़बान आंख और कान को नाजाइज़ बोलने देखने सुनने से बचाए, येह सर की ह़िफ़ाज़त हुई, पेट को ह़राम कामों से, शर्मगाह को ज़िना से, दिल को बुरी ख़्वाहिशों से मह़फ़ूज़ रखे, येह पेट की ह़िफ़ाज़त है, ह़क़ येह है कि येह ने'मतें रब की अ़त़ा और जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ा से नसीब हो सकती हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 440)

3 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٣١٩٢،ج٣،ص٢١٩.

www.dawateislami.net

"ऐ ह़र्मला ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और जब तुम किसी मजलिस में बैठो फिर वहां से उठो तो अहले मजलिस की जो बातें तुम्हें भली लगें उन पर अ़मल करो और जो बुरी लगें उन पर अ़मल करने से गुरेज़ करो ।"(1)

﴾1255﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़र्मला बिन इयास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवा तो वहीं ठहरा रहा यहां तक कि मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते ह़क़ को समझ लिया । फिर जब दरबारे नूरबार से वापस होने लगा तो ख़िदमते सरापा अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब मेरे लिये क्या हुक्म है ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ ह़र्मला ! भलाई बजा लाओ और बुराई के दाग़ से अपने दामन को बचाओ ।" फ़रमाते हैं : "फिर मैं वहां से रुख़्सत हुवा तो कुछ देर बा'द ख़याल आया कि दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर मज़ीद नसीह़त की इल्तिजा करूं ।" चुनान्चे, मैं दोबारा नसीह़त का मुल्तजी हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ ह़र्मला ! बुराई से बचो । नेकी पर गामज़न रहो और लोगों की जिन बातों का सुनना तुम्हें ख़ुश गवार मा'लूम हो उन से जुदा हो कर उन पर अ़मल करो और जिन बातों का सुनना तुम्हें ना गवार लगे उन से जुदा हो कर उन पर अ़मल न करो ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन इस्ह़ाक़ ह़ज़्रमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की रिवायत में इतना ज़ाइद है कि "जब मैं वहां से निकला तो समझा कि इन दो बातों या'नी नेकी करने और बुराई से बाज़ रहने में तमाम उमूर शामिल हैं ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना कुरदूस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है । वरना आप मुहाजिरीन के त़बक़ए साबिक़ीने अव्वलीन में से हैं । हम पहले इन के अह़वाल बयान कर चुके हैं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को राहे ख़ुदा में बहुत सताया गया । ग़ज़्वए बद्र व दीगर ग़ज़्वात में शरीक हुवे ।

1 .....مسند ابی داود الطیالسی، حرملۃ العنبری، الحدیث:۱۲۰۷، ص۱۶۷ .

2 ......الادب المفرد للبخاری، باب اھل المعروف فی الدنیا اھل المعروف فی الآخرۃ، الحدیث:۲۲۲، ص۷۸، بتغیر.

www.dawateislami.net

﴾1256﴿.....हज़रते सय्यिदुना तारिक़ बिन शिहाब عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَھَّاب से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का शुमार मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن में होता है। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ इस्लाम के उन जां निसारों में से हैं जिन्हें राहे ख़ुदा में बहुत सताया गया।"(1)

﴾1257﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना कुरदूस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को फ़रमाते सुना कि "हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ छटे नम्बर पर इस्लाम लाए। यूं उन्हें इस्लाम से छटा हिस्सा मिला।"(2)

﴾1258﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू लैला किन्दी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उन से फ़रमाया : "क़रीब हो जाइये ! मैं आप के सिवा इस मजलिस का ज़ियादा हक़दार किसी को नहीं समझता।" फिर हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को अपनी पीठ पर उन ज़ख़्मों के निशानात दिखाने लगे जो मुशरिकीन की तकालीफ़ से पहुंचे थे।"(3)

﴾1259﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी हाज़िम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बयान करते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की इयादत की ग़रज़ से उन के पास गए। उस वक़्त उन्हें सात जगह से दाग़ा गया था। तो उन्हों ने फ़रमाया : "हमारे दोस्त दुन्या से चले गए और दुन्या ने उन को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाया जब कि हमारे हाथ इतना माल आया जिस का मस्रफ़ हम ने मिट्टी ही को पाया।" हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन हाज़िम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि कुछ अ़र्से बा'द हम फिर उन की इयादत के लिये गए तो उन्हें दीवार ता'मीर करने में मसरूफ़ पाया। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "मोमिन को हर ख़र्च में सवाब मिलता है सिवाए मिट्टी में ख़र्च करने (या'नी बिला ज़रूरत इमारत बनाने) के और अगर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें मौत की दुआ़ करने से मन्अ़ न फ़रमाते तो मैं ज़रूर मरने की दुआ़ करता।"(4)

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب المغازی، باب اسلام ابی بکر، الحدیث:٨، ج٨، ص٤٤٨.

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب المغازی، باب اسلام ابی بکر، الحدیث:٩، ص٤٤٩.

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضائل خبّاب، الحدیث:١٥٣، ص٢٤٨٦، بدون "اری".

4 ......صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب تمنی المریض الموت، الحدیث:٥٦٧٢، ص٤٨٦.

www.dawateislami.net

उम्मत के हक़ में तीन दुआएं :

﴾1260﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने एक रात हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते सितूदा सिफ़ात को बड़े ग़ौर से देखा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ अदा करने लगे यहां तक कि जब सुब्ह़ तुलूअ़ हुई तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज रात मैं ने आप को ऐसी नमाज़ पढ़ते देखा कि इस त़रह़ नमाज़ पढ़ते पहले कभी नहीं देखा।" इरशाद फ़रमाया : "हां ! येह शौक़ व ख़ौफ़ की नमाज़ थी। मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से तीन चीज़ों का सुवाल किया तो उस ने मुझे दो चीज़ें अ़त़ा फ़रमा दीं और एक से रोक दिया। मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि वोह हमें दूसरी उम्मतों की त़रह़ अ़ज़ाब में मुब्तला कर के हलाक न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी येह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली। फिर मैं ने सुवाल किया कि हम पर दुश्मन को मुसल्लत़ न फ़रमाए जो हमें हलाक कर दे तो येह सुवाल भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पूरा कर दिया और तीसरा सुवाल मैं ने येह किया कि मेरी उम्मत गुरौहों में न बटे तो परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे येह सुवाल करने से रोक दिया।"(1)

﴾1261﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन जा'दा رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि कुछ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए। पस उन्हों ने कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप को बिशारत हो कि आप ह़ौज़े कौसर पर हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐसा क्यूं कर हो सकेगा जब कि येह सब से निचला घर है और वोह सब से ऊंचा मक़ाम और हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें इरशाद फ़रमाया था कि "तुम्हें दुन्यवी माल इतना ही काफ़ी है जितना मुसाफ़िर का ज़ादे राह होता है।"(2)

---

(1)......المعجم الكبير،الحديث:٣٦٢١،ج٤،ص٥٧.

(2)......المصنف لابن ابى شيبة،كتاب الزهد،باب ما ذكر عن نبينافى الزهد،الحديث:٨،ج٨،ص١٢٥.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाफ़िज़ अबू त़ालिब और मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ बिन यसार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمَا के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में शुमार किया गया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीने अव्वलीन में से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहलिय्या ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते ड़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की थी। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़्वए बद्र में शरीक हुवे अवाइले इस्लाम में मदीनए त़य्यिबा زَادَہَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में वफ़ात पाई। इन की वफ़ात के बा'द रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ बख़्शा।

﴾1262﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब इन की बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बेवा हो गईं। उन के शोहर ह़ज़रते ख़ुनैस बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो बदरी सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से हैं, मदीनए मुनव्वरा زَادَہَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में इन्तिक़ाल फ़रमा गए तो मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई मैं ने उन से कहा : "अगर आप चाहें तो मैं अपनी बेटी ह़फ़्सा का निकाह़ आप से कर देता हूं।" लेकिन उन्हों ने कोई जवाब न दिया।

फ़रमाते हैं : मैं कुछ दिन इन्तिज़ार करता रहा फिर ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़फ़्सा के निकाह़ का पैग़ाम भेजा तो मैं ने उन का निकाह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कर दिया। इस के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से मिले तो फ़रमाया : "शायद आप को येह बात ना गवार गुज़री होगी कि जब आप ने मुझ से अपनी बेटी ह़फ़्सा के निकाह़ की ख़्वाहिश की तो मैं ने कोई जवाब न दिया ?" मैं ने कहा : "जी हां।" तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे निकाह़ की पेशकश की थी तो मेरे जवाब न देने की वज्ह सिर्फ़ येह थी कि मैं ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़फ़्सा का ज़िक्र करते सुना था और मैं येह राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकता था और अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़फ़्सा से निकाह़ न फ़रमाते तो मैं ख़ुद उन से निकाह़ कर लेता।"(1)

---

1 ......سنن النسائی، کتاب النکاح، باب عرض الرجل ابنتہ علی من یرضی، الحدیث: ۳۲۵۰، ص۲۲۹۸.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुहम्मद बिन जरीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر के हवाले से सुफ़्फ़ा वालों में ज़िक्र किया है। हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस मश्हूर घर के मालिक थे कि जिस में हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से हिजरत कर के मदीनए तय्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पहुंचने पर क़ियाम पज़ीर हुवे थे। यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिद और हुजरा बनाया और वोह घर आज भी मदीनए तय्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में मौजूद है। हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुफ़्फ़ा में क़ियाम की हाजत न थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार अहले उ़क़्बा में होता है न कि अहले सुफ़्फ़ा में। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुस्तुन्तीनिय्या में फ़ौत हुवे और इस की फ़सील (या'नी दीवार) के पास दफ़्न किये गए।

﴾1263﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बैअ़ते अ़क़बा में शरीक होने वालों में से एक हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं।"(1)

मुत्तक़ी व ग़ैरे मुत्तक़ी की इबादत में फ़र्क़ :

﴾1264﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक दो आदमी मस्जिद को जाते और नमाज़ पढ़ते हैं। फिर उन में से एक वापस लौटता है तो उस की नमाज़ उहुद पहाड़ से भी ज़ियादा वज़्नी होती है जब कि दूसरा लौटता है तो उस की नमाज़ एक ज़र्रे के बराबर भी नहीं होती।" हज़रते सय्यिदुना अबू हुमैद साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह क्यूं कर होता है?" इरशाद फ़रमाया : "जब वोह आदमी दूसरे से ज़ियादा उ़म्दा अ़क़्ल वाला हो।" उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : येह क्यूं कर होता है?" इरशाद फ़रमाया : "जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा अश्या से ज़ियादा बचता और नेकी की तरफ़ सब्क़त ले जाने में ज़ियादा हिर्स रखता हो अगर्चे नफ़्ली इबादात में दूसरे से कमतर हो।"(2)

---

1 .....السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،اَسماء من شَھِدَالعُقُبَۃ،ص ۱۸۱،ان ابن اسحاق.

2 .....مسندالحارث،کتاب الادب،باب ماجاء فی العقل،الحدیث: ۸۲۱،ج۲،ص ۸۰۵.

www.dawateislami.net

मुख़्तसर और जामेअ़ नसीहत :

﴾1265﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि एक शख़्स दरबारे रिसालत علٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में ह़ाज़िर हो कर मुख़्तसर नसीह़त का त़लबगार हुवा तो सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो इसे आख़िरी नमाज़ समझ कर पढ़ो और ऐसी बात न कहो जिस से तुम्हें मा'ज़िरत करनी पड़े और लोगों के माल से बिल्कुल मायूस हो जाओ।"(1)

70 हज़ार का बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला :

﴾1266﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे दो बातों में इख़्तियार दिया कि 70 हज़ार आदमी बिग़ैर ह़िसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएं या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने पास से लप भर(2) जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप के लिये लप भरेगा ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्दर तशरीफ़ ले गए फिर तक्बीर (या'नी اَللّٰہُ اَکْبَر) कहते हुवे बाहर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये इज़ाफ़ा फ़रमा दिया है कि "हर हज़ार के साथ 70 हज़ार और होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लप भर जन्नत में भी दाख़िल फ़रमाएगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रहम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरयाफ़्त किया : "ऐ अबू अय्यूब ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की लप के बारे में आप का क्या ख़याल है उसे तो लोग अपने मूंहों से खा लेंगे ?" फ़रमाया : "इस में न पड़ो मैं तुम्हें हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लप के बारे में बताता हूं जैसा कि मुझे गुमान बल्कि यक़ीन है। आप

---

1 ......سنن ابن ماجة، ابواب الزھد، باب الحکمة، الحدیث: ٤١٧١، ص ٢٧٣٠.

2 .....लप से मुराद है बे अन्दाज़ा क्यूंकि जब किसी को बिग़ैर गिने बिग़ैर तोले नापे देना होता है तो वहां लप भर भर कर देते हैं या कहो कि येह ह़दीस मुतशाबहात में से है वरना रब तआ़ला मुठ्ठी और लप से पाक है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 393)

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लप येह है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो इस बात की गवाही दे कि "(ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !) तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तू यकता है तेरा कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तेरे बन्दे व रसूल हैं।" फिर उस का दिल उस की ज़बान की तस्दीक़ भी करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक असदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अह़मद बिन सुलैमान मर्वज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा की त़रफ़ मन्सूब किया गया है।

ग़ैबी आवाज़ ने इस्लाम की दा'वत दी :

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक असदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बदरी सह़ाबी हैं। एक बार उन्हें अब्रकुल इराक़ में रात हो गई वहां उन्हें एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी।

وَيْحَكَ عُذْ بِاللهِ ذِى الْجَلَالِ وَالْمَجْدِ وَالْبَقَاءِ وَالْاَفْضَالِ

وَاقْرَءِ الْاٰيَاتِ مِنَ الْاَنْفَالِ وَوَحِّدِ اللّٰهَ وَلَا تُبَالِى

तर्जमा : (1).....तुझ पर अफ़्सोस ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांग जो अ़ज़मत व जलालत और बक़ा व फ़ज़्ल वाला है।

(2)......और सूरए अन्फ़ाल की तिलावत कर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को एक मान और बे फ़िक्र हो जा।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की त़रफ़ चल दिये। वहां पहुंचे तो उस वक़्त हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाते हुवे सुना। पस आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्लाम क़बूल कर लिया और आप का शुमार बदरी सहाबा में होता है।(2)

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٣٨٨٢،ج٤،ص١٢٧۔
المسندللامام احمدبن حنبل،حديث ابی ايوب الانصاری،الحديث:٢٣٥٦٤،ج٩،ص١٣٢.

2 ......المعجم الكبير،الحديث:٤١٦٥،ج٤،ص٢١٠،بتغير.

www.dawateislami.net

पाइंचे टख़्नों से नीचे लटकाना ममनूअ़ है :

﴾1267﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया : "तुम कितने अच्छे हो अगर तुम में दो ख़स्लतें न होतीं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह दो ख़स्लतें कौन सी हैं ? नुक़्सान पहुंचाने को तो एक ख़स्लत भी काफ़ी है फिर वोह दो कौन सी हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तहबन्द लटकाना और बाल बढ़ाना ।"(1) रावी कहते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन अपना तहबन्द ऊपर कर लिया और बाल भी छोटे करवा दिये ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन औस त़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबुल ह़सन अ़ली बिन उ़मर दारे क़ुत़्नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा की त़रफ़ मन्सूब किया गया है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार मुहाजिरीन में होता है ।

निगाहे मुस्त़फ़ा का कमाल और सह़ाबी की सादगी :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह सह़ाबी हैं कि जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें बताया कि "मेरे लिये "ह़ीरा" के दरमियान जितने ह़िजाबात थे सब उठा दिये गए तो मैं ने शैमा बिन्ते बुक़ैला को सियाह चादर ओढ़े एक त़ाक़तवर ख़च्चर पर सुवार

1.....तहबन्द या पाजामे वग़ैरा को टख़्ने से नीचे लटकाने से मुतअ़ल्लिक़ ह़ाशिया इसी किताब के सफ़ह़ा 531 पर मुलाह़ज़ा कीजिये । और रहा लम्बे बाल रखना तो इस के मुतअ़ल्लिक़ सदरुश्शरीआ़, बदरुत़्त़रीक़ा, **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मर्द को येह जाइज़ नहीं कि औ़रतों की त़रह़ बाल बढ़ाए, बा'ज़ सूफ़ी बनने वाले लम्बी लम्बी लटें बढ़ा लेते हैं जो उन के सीने पर सांप की त़रह़ लहराती हैं और बा'ज़ चोटियां गूंदते हैं या जोड़े बना लेते हैं येह सब नाजाइज़ काम और ख़िलाफ़े शरअ़ हैं ।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 230)

और मुजद्दिदे आ'ज़म सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लम्बे बालों के मुतअ़ल्लिक़ पूछे गए एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : "(बाल) निस्फ़ कान से कन्धों तक बढ़ाना शरअ़न जाइज़ है और इस से ज़ियादा बढ़ाना मर्द को ह़राम है ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 605)

2.....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث خریم بن فاتك، الحدیث: ۱۸۹۲۱، ج۶، ص۴۸۴۔
المعجم الکبیر، الحدیث: ۴۱۵۶/۴۱۵۹، ج۴، ص۲۰۷.

www.dawateislami.net

देखा।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर हम ने ''ह़ीरा'' को फ़त्ह़ कर लिया और शैमा को इसी ह़ालत में पाया तो क्या मैं उसे ले लूं ?'' इरशाद फ़रमाया : ''हां वोह तुझे मिलेगी।'' फिर (ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी के ज़माने में) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ लश्कर में मिल गए। मुजाहिदीन ने मुसैलिमा कज़्ज़ाब को वासिले जहन्नम किया, फिर ''अल्त़फ़'' का रुख़ किया यहां तक कि ''ह़ीरा'' में दाख़िल हो गए। तो सब से पहले उन्हें शैमा बिन्ते बुक़ैला त़ाक़तवर ख़च्चर पर इसी त़रह़ सुवार मिली जिस त़रह़ ह़ुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया था। चुनान्चे, उसे देखते ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की त़रफ़ लपक गए और उस पर अपनी मिल्किय्यत का दा'वा करने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा व ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने इस बात की गवाही दी तो अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शैमा उन के ह़वाले कर दी। फिर शैमा का भाई अ़ब्दुल मसीह़ उन के पास आया और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहने लगा : ''शैमा मुझे बेच दो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक हज़ार से कम नहीं लूंगा।'' अ़ब्दुल मसीह़ ने एक हज़ार दिये और कहा अगर आप इस के एक लाख मांगते तो मैं एक लाख दे देता।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं तो समझता था कि माल एक हज़ार से ज़ियादा नहीं होता।''(1)

ना'त सुनना सुन्नत है :

﴾1268﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हिजरत कर के ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस तशरीफ़ लाए थे। मैं ने इस्लाम क़बूल कर लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे अक़्दस में अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया कि ''मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ करना चाहता हूं।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई और दुआ़ से भी नवाज़ा कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप के दांत सह़ीह़ व सालिम रखे।''(2)

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٤١٦٨،ج٤،ص٢١٣.

2 ......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب انشادالعبّاس فی مدح النبی بحضرته،الحديث:٥٤٦٨،ج٤،ص٣٩١.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन यसाफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान ख़ुबैब बिन यसाफ़ बिन उ़तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह नैशापुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबी दावूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बदरी सह़ाबी होना मन्क़ूल है।

﴾1269﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं और मेरी क़ौम का एक शख़्स ऐसे वक़्त में बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ग़ज़्वे में शिर्कत का इरादा फ़रमा रहे थे। हम उस वक़्त तक मुसलमान तो न हुवे थे लेकिन (आपस में) कहने लगे कि "हमें शर्म आनी चाहिये कि हमारी क़ौम तो जिहाद में ह़िस्सा ले और हम उन का साथ न दें।" ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम दोनों इस्लाम क़बूल कर चुके हो ?" हम ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" तो इरशाद फ़रमाया : "हम मुशरिकीन से मदद ह़ासिल नहीं करते।" ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "फिर हम इस्लाम ले आए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह जिहाद में शरीक हुवे। दौराने जंग एक शख़्स ने मुझे ज़ख़्म लगा दिया तो मैं ने उसे क़त्ल कर डाला और बा'द को मैं ने उस की बेटी से शादी कर ली तो वोह कहा करती थी : "मैं ऐसे शख़्स को गुम न करूं जिस ने तुम्हें येह ज़ख़्म लगाया।" और मैं उस से कहता था : "तू ऐसे शख़्स को गुम न कर जिस ने तुम्हारे बाप को जल्द जहन्नम में पहुंचाया।"[1]

हज़रते सय्यिदुना दुकैन बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना दुकैन बिन सईद मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी अहले सुफ़्फ़ा में होता है और एक क़ौल के मुताबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़सअ़मी हैं। कूफ़ा में रहते थे। 400 आदमियों की जमाअ़त के हमराह बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवे और खाना त़लब किया। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब को खाना खिलाया और उन के ज़ादे राह का एहतिमाम फ़रमाया।

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث جد خُبَیب، الحدیث:۱۵۷۶۳، ج۵، ص۳۴۵.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना दुकैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सुफ़्फ़ा को अपना मस्कन बनाने और वहां ठहरने की कोई रिवायत मेरे इ़ल्म में नहीं।"

एक मो'जिज़े का बयान :

﴾1270﴿.....हज़रते सय्यिदुना दुकैन बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम 400 सुवार बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवे और खाना त़लब किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! जाओ उन्हें खाना खिलाओ और कुछ ज़ादे राह अ़त़ा करो।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे पास सिर्फ़ कुछ साअ़ खजूरें हैं जो मुझे और मेरे अहलो इ़याल को ब मुश्किल किफ़ायत करेंगी।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "सुनो और इत़ाअ़त करो।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "हम ने हुक्म सुना और इत़ाअ़त की।" येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चल पड़े यहां तक कि एक कमरे के पास पहुंचे। उस की चाबी निकाली और दरवाज़ा खोल दिया। लोगों से कहने लगे : "अन्दर दाखि़ल हो जाओ।" मैं सब से आखि़र में अन्दर दाखि़ल हुवा। कुछ खजूरें लीं फिर देखा तो खजूरों का एक बड़ा ढेर अभी बाक़ी था।"(1)

हज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "येह ह़दीस सह़ीह़ है। इसे हज़रते इस्माईल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل से बहुत लोगों ने रिवायत किया है और येह (या'नी खजूरों का बढ़ जाना) हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा है।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हज़रते अ़ली बिन मदीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। हम पीछे मुहाजिरीने साबिक़ीन में इन का ज़िक्र कर चुके हैं।

1......المعجم الكبير،الحديث:٤٢٠٧،ج٤،ص٢٢٨،بتغير.

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से ज़ुल बिजादैन कैसे हुवे ?

जु़ल बिजादैन नाम का सबब कुछ यूं हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने चचा की कफ़ालत में थे। वोह आप की परवरिश करता रहा लेकिन जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल किया तो उस ने हर चीज़ वापस ले ली। इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम छोड़ने से इन्कार कर दिया। वालिदा ने उन्हें एक बड़ी ऊनी चादर दी। आप ने उस चादर के दो हिस्से कर लिये। एक का तहबन्द बना लिया और दूसरा हिस्सा ऊपर ओढ़ लिया। फिर बारगाहे नबुव्वत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाम दरयाफ़्त फ़रमाया। अ़र्ज़ की : ''अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा।'' इरशाद फ़रमाया : ''नहीं ! बल्कि तुम्हारा नाम अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन (या'नी दो चादरों वाला) है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गज़्वए तबूक में शहीद हुवे। हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस इन की क़ब्र में उतरे और अपने रहमत भरे हाथों से इन्हें क़ब्र में उतारा।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा रिफ़ाआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा रिफ़ाआ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह नैशापुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा की त़रफ़ मन्सूब किया गया है। एक क़ौल येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम बशीर बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर है और क़बीलए बनू अ़म्र बिन औ़फ़ से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना रिफ़ाआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गज़्वए बद्र में शरीक हुवे और माले ग़नीमत से हिस्सा भी पाया।

जुमुआ़ की अ़ज़मतों का बयान :

﴾1271﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बेशक जुमुअ़तुल मुबारक का दिन तमाम दिनों का सरदार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ईदुल अज़्हा व ईदुल फ़ित्र के दिनों से भी ज़ियादा अ़ज़मत वाला है। इस दिन में पांच ख़स्लतें हैं : (1) इस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया (2) इसी दिन इन्हें ज़मीन पर उतारा (3) इसी दिन इन्हें वफ़ात दी (4) इस दिन में एक घड़ी ऐसी आती है जिस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़राम के सिवा जो मांगता है उसे दिया जाता है और (5) तमाम मुक़र्रब

(1) ......موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الاولیاء، الحدیث:۷۷، ج۲، ص۴۰۸، مفهومًا.

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते, आस्मान, ज़मीन, पहाड़, हवा और दरया सब जुमुआ़ की अ़ज़मत से डरते हैं कि क़ियामत न क़ाइम हो जाए।"(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू रुज़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी ह़दीसे पाक की बिना पर हज़रते सय्यिदुना अबू रुज़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है।

ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत :

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले सुफ़्फ़ा में से एक शख़्स जिस की कुन्यत अबू रुज़ैन थी से फ़रमाया : "ऐ अबू रुज़ैन ! जब तुम तन्हाई में हो तो अपनी ज़बान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रखो क्यूंकि जब तक तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहोगे गोया नमाज़ में रहोगे, अगर तुम लोगों के सामने ज़िक्र करो तो येह लोगों के दरमियान नमाज़ की त़रह़ है और अगर तुम तन्हाई में ज़िक्र करो तो येह तन्हाई में नमाज़ की त़रह़ है। ऐ अबू रुज़ैन ! जब लोग रात के क़ियाम और दिन के रोज़े की सुऊ़बत (या'नी मशक़्क़त) बरदाश्त कर रहे हों तो तुम मुसलमानों के लिये ख़ैर ख़्वाही व नसीह़त की मशक़्क़त बरदाश्त करो। ऐ अबू रुज़ैन ! जब लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने में मसरूफ़ हों और तुम चाहो कि तुम्हारे लिये भी उन की मिस्ल अज्रो सवाब हो तो तुम मस्जिद को लाज़िम पकड़ लो इस में अज़ान दो और अज़ान पर उजरत मत लो।"(2)(3)

---

(1) ......سنن ابن ماجه،ابواب اقامة الصلوات،باب فی فضل الجمعة،الحديث:١٠٨٤،ص٢٥٤٠.

(2) ......الاصابة فی تمیز الصحابة،الرقم ٩٨٩٨ابورزين آخر،ج٧،ص١١٦۔
الفردوس بمأثورالخطاب،باب الياء،الحديث:٨٤٣٧،ج٥،ص٣٦٠.

(3) .....सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अस्ल येह है कि त़ाअ़त व इबादात पर उजरत लेना देना (सिवाए ता'लीमे क़ुरआन व उ़लूमे दीन व अज़ान व इक़ामत वग़ैरहा मा'दूदे चन्द अश्या कि जिन पर इजारा करना मुतअख़्ख़िरीन ने बिना चारी व मजबूरी ब नज़रे ह़ाले ज़माना जाइज़ रखा) मुत़लक़न ह़राम है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 19, स. 486) ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان एक ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि अज़ान पर उजरत लेना जाइज़ है मगर न लेना बेहतर है इस लिये हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने यहां उजरत को ह़राम नहीं कहा बल्कि फ़रमाया ढूंड कर कोई, लिल्लाह (या'नी फ़ी सबीलिल्लाह) अज़ान देने वाला रखो। ख़याल रहे कि उस ज़माने में दीनी ख़िदमात पर उजरत लेना अगर ममनूअ़ भी थी तो उस वक़्त के लिह़ाज़ से थी अब ममनूअ़ नहीं वरना सारे दीनी काम बन्द हो जाएंगे, देखो सिवा उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के बाक़ी तमाम ख़ुलफ़ा ने ख़िलाफ़त पर उजरत ली ह़ालांकि ख़िलाफ़त इमामते कुब्रा है नीज़ उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपने ज़माने में ग़ाज़ियों और हुक्काम की तनख़्वाहें मुक़र्रर कीं ह़ालांकि जिहाद भी इबादत है और ह़ाकिमे इस्लाम बनना भी।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 417)

www.dawateislami.net

सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों की दुआ़ हासिल करने का अ़मल :

﴾1272﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रुज़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "क्या तुम्हें इस दीन की अस्ल न बता दूं जिस से तुम दुन्या व आख़िरत की भलाई पा लो (तो सुनो !) ज़िक्र वालों की मजलिस इख़्तियार करो[1] और जब तुम तन्हाई में हो तो जहां तक हो सके अपनी ज़बान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से हिलाते रहो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत रखो और उसी के लिये दुश्मनी रखो। ऐ अबू रुज़ैन ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जब कोई शख़्स अपने घर से मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिये निकलता है तो 70 हज़ार फ़िरिश्ते उस के साथ हो लेते हैं। वोह सब उस के लिये दुआ़ करते हैं और कहते हैं कि "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस ने तेरी ख़ाति़र (रिश्तए मह़ब्बत) जोड़ा है तू इसे जोड़ दे (या'नी इस का अपने से रिश्तए इताअ़त जोड़ कर अपना ख़ास बन्दा बना ले)।" लिहाज़ा अगर अपने जिस्म को इस में मश्ग़ूल कर सको तो ज़रूर करो।"[2]

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस के तह़त फ़रमाते हैं : "इस से मुराद उ़लमाए दीन औलियाए कामिलीन सालिह़ीन वासिलीन की मजलिसें हैं क्यूंकि येह मजलिसें जन्नत के बाग़ात हैं जैसा कि दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है। येह मजलिसें ख़्वाह मद्रसे हों या दर्से क़ुरआनो ह़दीस की मजलिसें या ह़ज़राते सूफ़ियाए किराम की ज़िक्र की मह़फ़िलें, येह फ़रमान बहुत जामेअ़ है जिस मजलिस में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इश्क़ और ताअ़ते रसूल का शौक़ पैदा हो वोह मजलिस इकसीर है। سُبْحٰنَ اللّٰہ इन्सान की दो ही ह़ालतें होती हैं ख़ल्वत, जल्वत इस फ़रमाने आ़ली में दोनों की इस्लाह़ फ़रमा दी गई जल्वत हो तो अल्लाह वालों की सोह़बत में ख़ल्वत हो तो अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में, बा'ज़ मशाइख़ ने इस फ़रमाने आ़ली से दलील पकड़ी कि ज़िक्रे ख़फ़ी अफ़्ज़ल है ज़िक्रे जली से, बा'ज़ ने फ़रमाया कि ज़िक्रे लिसानी (ज़बान से ज़िक्र करना) अफ़्ज़ल है ज़िक्रे जनानी (दिल से ज़िक्र करने) या पासे अन्फ़ास (सांस के साथ ज़िक्रुल्लाह करने), से क्यूंकि यहां ज़बान हिलाने का हु़क्म दिया मगर इन्सान भी मुख़्तलिफ़ हैं ह़ालात भी मुख़्तलिफ़, बा'ज़ ह़ालात में ज़िक्रे जली अफ़्ज़ल बा'ज़ वक़्त ज़िक्रे ख़फ़ी अफ़्ज़ल। कौन कह सकता है कि अज़ान और ह़ज का तल्बिय्या, नमाज़े जहर की क़िराअत आहिस्ता कही जाएं और कौन कह सकता है कि नमाज़े तहज्जुद और नमाज़े ख़फ़ी क़िराअत जहर से की जावे। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि "ज़िक्र वोह बेहतर है कि ज़ाकिर ज़िक्र में फ़ना हो और मज़्कूर से बाक़ी हो "وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِیْتَ" सब कुछ भूल कर अपने से भी ग़ाफ़िल हो कर रब को याद करो।" कुछ आगे फ़रमाते हैं : "बा'ज़ ह़ज़रात जब किसी मक़्बूल बन्दे से मुलाक़ात के लिये जाते हैं तो बा वुज़ू और ज़िक्रे इलाही करते जाते हैं यहां (साहिबे) मिर्क़ात ने ब रिवायत अबू या'ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (उम्मुल मोमिनीन) ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि "ऐसा ख़फ़ी ज़िक्र, जली ज़िक्र से सत्तर दरजा अफ़्ज़ल है।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 603)

2.....شعب الایمان للبیهقی،باب فی مقاربة وموادة اهل الدین،الحدیث:۹۰۲٤،ج٦،ص٤٩٢.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हवाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसैलिमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जिहाद करते हुवे शहादत की सआ़दत से बहरामन्द हुवे। आप बदरी सहा़बी हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू अ़ब्दुर्रह़मान है।

दो भाइयों का शौक़े शहादत :

﴾1273﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ज़्वए उहुद के दिन अपने भाई हज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "मेरी ज़िरह आप ले लें। उन्हों ने कहा : "जिस त़रह़ आप शहादत के मुतमन्नी हैं मुझे भी शहादत की ख़्वाहिश है।" चुनान्चे, दोनों ने ज़िरह को छोड़ दिया।[1]

﴾1274﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : मैं एक सांप पर ह़म्ला कर रहा था ताकि उसे मार डालूं इतने में ह़ज़रते अबू लुबाबा या ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने मुझे देख लिया और उसे मारने से रोक दिया और फ़रमाया : "रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने घरवाले सांपों को मारने से मन्अ़ फ़रमाया है[2]।"[3]

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कुछ अह़वाल पहले बयान कर चुके हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक शरीफ़ व मुसाफ़िर इन्सान थे।

﴾1275﴿.....हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब राहे ख़ुदा में मोमिन का दिल कपकपाता है

1.....المعجم الاوسط، الحديث: ٥٣٠٠، ج٤، ص٨٦.

2.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी जो सांप घरों में रहते हैं बसते हैं। किसी को तक्लीफ़ नहीं देते वोह जिन्नात हैं सांप नहीं। येह हुक्म या तो मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के लिये है या आ़म मकानों के लिये।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 666)

3.....صحيح مسلم، كتاب السلام، باب قتل الحيات وغيرها، الحديث: ٥٨٢٥/٥٨٢٦، ص١٠٧٤.

www.dawateislami.net

तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ खजूर के दरख़्त से गुच्छे गिरते हैं।''(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करने की फ़ज़ीलत :

﴾1276﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं अपनी बिअ़्सत से क़ियामत तक हर दो ऐसे शख़्सों का शफ़ीअ़ हूं जो मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दूसरे से महब्बत करते हैं।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है और इस पर इस बात से इस्तिद्लाल किया गया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह आयते मुबारका हमारे ह़क़ में नाज़िल हुई :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ (پ۷،الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम।*

हम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र मुहाजिरीने साबिक़ीन में कर दिया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू इस्ह़ाक़ है और आप का विसाल मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में ''अ़क़ीक़'' के मक़ाम पर हुवा।

﴾1277﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की : ''लोगों में सख़्त आज़माइश किन की होती है?'' हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की फिर दरजा ब दरजा नेक लोगों की। यहां तक कि बन्दा अपनी दीनदारी के मुत़ाबिक़ आज़माइश में मुब्तला होता है। ऐसा होता रहेगा ह़त्ता कि वोह ज़मीन पर बे गुनाह हो कर चलेगा।''(3)

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۶۰۸۶،ج۶،ص۲۳۵.

2 ......فردوس الاخبارللدیلمی،باب الالف،الحدیث:۱۳۰،ج۱،ص۴۵،"لکل رجلین"بدلہ"لکل اخوین".

3 ......جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فی الصبرعلی البلاء،الحدیث:۲۳۹۸،ص۱۸۹۲،بتغیر۔

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दे :

﴾1278﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बताया कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ परहेज़गार, (मख़्लूक़ से) बे नियाज़ और गोशा नशीन बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर बिन जुज़ैम जमह़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इमाम वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में कोई घर होना मा'लूम नहीं। हम उन के ह़ालात, दुन्या से बे रग़बती और फ़क़्र को इख़्तियार करना वग़ैरा मुहाजिरीन के तज़किरे में बयान कर चुके हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद क़त्त़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में शुमार किया गया है। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने उन्हें इस शर्त़ पर आज़ाद किया था कि जब तक ज़िन्दा रहेंगे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करते रहेंगे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 10 साल तक हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत का शरफ़ पाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले सुफ़्फ़ा से मैल जोल और बे पनाह मह़ब्बत व उल्फ़त रखते थे।

ज़िन्दगी भर सोह़बते सरकार की ख़्वाहिश :

﴾1279﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ख़रीदा और फिर इस शर्त़ पर आज़ाद कर दिया कि जब तक ज़िन्दा रहूं

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزھد، باب الدنیا سجن للمؤمن و جنۃ للکافر، الحدیث:۷۴۳۲، ص۱۱۹۲.

2 ......الطبقات الکبرٰی لابن سعد، الرقم ۴۴۸ سعید بن عامر بن حِذْیَم، ج۴، ص۲۰۳.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करूं। मैं ने कहा : "मुझे भी येही पसन्द है कि ज़िन्दगी भर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त में रहूं।"(1)

तेरे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही :

﴾1280﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जमहान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उन का नाम दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें अपना नाम बताता हूं मेरा नाम मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "सफ़ीना" रखा है।" मैं ने पूछा : "क्यूं ?" तो फ़रमाया : "हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के हमराह एक मुहिम पर रवाना हुवे। दौराने सफ़र सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के सामान का बोझ उन्हें भारी लगने लगा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इरशाद फ़रमाया : "चादर बिछाओ।" मैं ने अपनी चादर बिछा दी। फिर सब ने अपना सामान उस में रख दिया और उठा कर मेरे ऊपर लाद दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उठाओ तुम सफ़ीना (या'नी कश्ती) हो।" फ़रमाते हैं : "बस उस दिन से येह ह़ाल है कि मैं 1 या 2 या 5 या 6 ऊंटों का बोझ उठा लूं तो वोह मुझे भारी नहीं लगता !"(2)

गुलामे मुस्त़फ़ा की जानवर भी ता'ज़ीम करते हैं :

﴾1281﴿.....प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं समन्दर में कश्ती पर सुवार था तो वोह टूट गई। फिर मैं एक तख़्ते पर सुवार हो गया तो समन्दर की मौजों ने मुझे ऐसी झाड़ी में ला छोड़ा जहां एक शेर था। मैं ने शेर से कहा : "ऐ अबू ह़ारिस ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलाम सफ़ीना हूं।" येह सुनते ही शेर ने अपना सर झुका लिया और अपने पहलू या कन्धे से मेरी रहनुमाई करने लगा। मैं उस के पीछे चलने लगा यहां

1 ......سنن ابن ماجه،ابواب العتق،باب من اعتق عبداو اشترط خدمته،الحديث:٢٥٢٦،ص٢٦٢٨۔
المستدرك،كتاب العتق،باب العتق على شرط،الحديث:٢٩٠٣،ج٢،ص٥٨٢،مفهومًا.

2 ......المستدرك،كتاب معرفة الصحابة،باب ذكر سفينة،الحديث:٦٦٠٧،ج٤،ص٧٩٤.

www.dawateislami.net

तक कि उस ने मुझे एक रास्ते तक पहुंचा दिया। जब उस ने मुझे रास्ते पर पहुंचा दिया तो दहाड़ कर चल दिया, गोया कि वोह मुझे रुख़्सत करने के लिये अल वदाअ़ कह रहा है।"(1)

आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दा'वत से लौट आए :

﴾1282﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने एक शख़्स को मेहमान बनाया और उस के लिये खाना तय्यार करवाया (ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) से अ़र्ज़ की : "क्यूं न हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी मदऊ़ कर लें कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी हमारे साथ खाना तनावुल फ़रमाएं।" चुनान्चे, उन के अ़र्ज़ करने पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और अपने दोनों मुबारक हाथ दरवाज़े की चौखटों पर रखे तो घर के एक कोने में मुनक़्क़श पर्दा(2) मुलाह़ज़ा फ़रमाया। पस आप वापस हो गए।" (سنن ابی داود،الحدیث:۳۷۵۵،ص۱۵۰۰) फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अमीरुल

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٦٤٣٢،ج٧،ص٨٠،بتغیر.

2 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि येह पर्दा नक़्शीन था और इस पर जानदारों की तसावीर थीं, इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ न लाए, इस से मा'लूम हुवा कि अगर दा'वत में कोई ममनूअ़ काम हो तो न जाए, मगर येह ग़लत़ है। अगर नाजाइज़ पर्दा होता तो सरकारे आ़ली (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मन्अ़ फ़रमाते बल्कि दस्ते अक़्दस से फाड़ देते। पर्दा सादा था, जाइज़ था मगर दुन्यावी तकल्लुफ़ और ज़ाहिरी टीपटॉप अहले नबुव्वत के लाइक़ न थी इस लिये मन्अ़ तो न फ़रमाया, अ़मलन ना पसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमा दिया ताकि आइन्दा जनाबे ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) अपना घर नेक आ'माल से ही आरास्ता रखें। ज़ीनते दुन्या, नुक़्साने आख़िरत का ज़रीआ़ बन सकती है।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 78)

और जहां तक किसी दा'वत में शिर्कत का सुन्नत होना है तो इस के मुतअ़ल्लिक़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़ह़ा 35 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "दा'वत में जाना उस वक़्त सुन्नत है जब मा'लूम हो कि वहां गाना बजाना, लह्वो ला'ब नहीं है और अगर मा'लूम है कि येह ख़ुराफ़ात वहां हैं तो न जाए। जाने के बा'द मा'लूम हुवा कि यहां लग़्वियात हैं, अगर वहीं येह चीज़ें हों तो वापस आए और अगर मकान के दूसरे हिस्से में हैं जिस जगह खाना खिलाया जाता है वहां नहीं हैं तो वहां बैठ सकता है और खा सकता है, फिर अगर येह शख़्स उन लोगों को रोक सकता है तो रोक दे और अगर इस की क़ुदरत उसे न हो तो सब्र करे। येह इस सूरत में है कि येह शख़्स मज़हबी पेशवा न हो और अगर मुक़्तदा व पेशवा हो, मसलन उ़लमा व मशाइख़, येह अगर न रोक सकते हों तो वहां से चले आएं न वहां बैठें न खाना खाएं और पहले ही से येह मा'लूम हो कि वहां येह चीज़ें हैं तो मुक़्तदा हो या न हो किसी को जाना जाइज़ नहीं अगर्चे ख़ास उस हिस्सए मकान में येह चीज़ें न हों बल्कि दूसरे हिस्से में हों।"

(الھدایۃ،کتاب الکراھیۃ،فصل فی الاکل والشرب،ج٢،ص٣٦٥۔الدرالمختار،کتاب الحظر والاباحۃ،ج٩،ص٥٧٤)

www.dawateislami.net

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم) से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मा'लूम कीजिये कि क्यूं वापस हो गए ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم) ने वापसी का सबब दरयाफ़्त किया तो इरशाद फ़रमाया : "मेरे लिये और किसी नबी के लिये लाइक़ नहीं कि वोह मुनक़्क़श घर में दाख़िल हो।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद सा'द बिन मालिक ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू उ़बैद क़ासिम बिन सलाम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। नीज़ सब्रो फ़क्र और सुवाल से इजतिनाब करने की वज्ह से इन के अह़वाल तक़रीबन अहले सुफ़्फ़ा से मिलते जुलते हैं अगर्चे ह़क़ीक़त में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्सार में से हैं।"

सब्र की अहम्मिय्यत का बयान :

﴾1283﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि आप के घरवालों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़ाक़े की शिकायत की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार की त़रफ़ चल दिये ताकि घरवालों के लिये कुछ मांग लाएं। जब दरबारे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवे तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "ऐ लोगो ! अब वोह वक़्त आ पहुंचा है कि तुम सुवाल करने से बचो। जो सुवाल से बचना चाहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बचाएगा और जो मुस्तग़्नी होना चाहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुस्तग़्नी कर देगा। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! सब्र से ज़ियादा वसीअ़ तर ने'मत किसी को अ़त़ा नहीं की गई और अगर तुम मुझ से सुवाल करने से न रुके तो मैं जो पाऊंगा तुम्हें अ़त़ा करूंगा।"(2)

﴾1284﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "जो सब्र करना चाहेगा

1 ......المستدرك، كتاب النكاح، باب الدعاء لمن افادجارية او امراة او دابة، الحديث: ٢٨١٢، ج٢، ص٥٤٣، مفهومًا.

2 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الزكاة، باب المسألة والأخذ......الخ، الحديث: ٣٣٩٠، ج٥، ص١٦٩.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे सब्र देगा और जो मुस्तग़नी होना चाहेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मुस्तग़नी कर देगा और जो हम से मांगेगा हम उसे अ़ता करेंगे और सब्र से बढ़ कर वसीअ़ तर ने'मत किसी को अ़ता नहीं की गई।"(1)

मुसीबत ह़स्बे फ़ज़ीलत आती है :

﴾1285﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "लोगों में सख़्त मुसीबत वाले कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام)" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर कौन ?" इरशाद फ़रमाया : "नेक लोग। उन में से किसी को इस क़दर फ़क्र में मुब्तला किया जाता है कि वोह अपने पास सिर्फ़ खजूर या इस जैसी किसी और शै के सिवा कुछ नहीं पाता और किसी पर जूओं की ऐसी आज़्माइश डाली जाती है कि वोह अपने जिस्म से जूएं उठा उठा कर फेंकता रहता है और येह वोह लोग हैं जिन्हें फ़राख़ी व ख़ुशह़ाली से ज़ियादा आज़्माइश पर ख़ुशी ह़ासिल होती है।"(2)

﴾1286﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे से राज़ी होता है तो ऐसी 7 नेकियों से (फ़िरिश्तों वग़ैरा के ज़रीए) उस की ता'रीफ़ बयान फ़रमाता है जो अभी उस ने नहीं की होतीं और जब वोह किसी से नाराज़ होता है तो ऐसे 7 गुनाहों से उस की बुराई बयान फ़रमाता है जो अभी उस ने नहीं किये होते।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। हम पहले बयान कर चुके हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे यमामा में शहीद हुवे। इस जंग में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले दाएं हाथ में झन्डा पकड़ा जब दायां हाथ कट गया तो बाएं हाथ में थाम लिया। फिर जब येह भी कट गया तो अपनी गर्दन से पकड़े रखा और अपनी शहादत तक येह आयते मुबारका तिलावत करते रहे :

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب الاستعفاف عن المسألۃ، الحدیث:۱۴۶۹، ص۱۱۶۔
المعجم الاوسط، الحدیث:۹۰۴۶، ج۶، ص۳۵۴، بتغیر۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۹۰۴۷، ج۶، ص۳۵۵۔
سنن ابن ماجہ، ابواب الفتن، باب الصبر علی البلاء، الحدیث:۴۰۲۴، ص۲۷۱۹۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث:۱۱۳۳۸، ج۴، ص۷۷۔

www.dawateislami.net

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ (پ۴،ال عمران:۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुहम्मद तो एक रसूल हैं उन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे ?

ख़ुश इल्हान क़ारिये क़ुरआन :

﴾1287﴿.....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि एक रात मुझे अपने सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर होने में कुछ ताख़ीर हो गई। जब मैं हाज़िर हुई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ताख़ीर का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में एक शख़्स कुरआने मजीद की तिलावत कर रहा था मैं वोह सुनने में मसरूफ़ हो गई थी और उस जैसी तिलावत मैं ने कभी नहीं सुनी।'' चुनान्चे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे मैं भी आप के पीछे चल दी तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जानती हो येह कौन हैं ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' इरशाद फ़रमाया : ''येह अबू हुज़ैफ़ा के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम सालिम हैं।'' फिर फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मेरी उम्मत में ऐसा शख़्स पैदा फ़रमाया है।''(1)

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद अश्जई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद अश्जई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मन्क़ूल है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी सुफ़्फ़ा में रहे हैं लेकिन वहां से कूफ़ा मुन्तक़िल हो गए और फिर हमेशा के लिये वहीं मुक़ीम हो गए।

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की अफ़्ज़लिय्यत :

﴾1288﴿.....हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़े मौत ने शिद्दत इख़्तियार की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़शी तारी हो गई। जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो इरशाद फ़रमाया : ''बिलाल से कहो अज़ान दे और अबू बक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाए।'' रावी फ़रमाते हैं : आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फिर

(1) سنن ابن ماجة،ابواب اقامة الصلوات،باب فی حسن الصوت بالقرآن،الحدیث:۱۳۳۸،ص۲۵۰۶.

www.dawateislami.net

ग़शी त़ारी हो गई (जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा) तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने अ़र्ज़ की : "मेरे वालिद (ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) बहुत रक़ीक़ुल क़ल्ब (या'नी नर्म दिल) हैं, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी और को हुक्म फ़रमाते तो अच्छा होता।" इरशाद फ़रमाया : "तुम ह़ज़रते यूसुफ़ (عَلَیۡہِ السَّلَام) को घेरे में लेने वालियों की मिस्ल हो[1] बिलाल से कहो अज़ान दें और अबू बक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं[2]।"[3]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....शारेहे़ बुख़ारी, फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "इस से मुराद तन्हा ज़ुलैख़ा हैं। कभी ऐसा होता है कि किसी मस्लेह़त की बिना पर जम्अ़ बोलते हैं और मुराद वाह़िद होता है।" कुछ आगे इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते ज़ुलैख़ा के क़िस्से और इस क़िस्से में क़दरे मुश्तरक (या'नी एक जैसी बात) येह है कि ज़ुलैख़ा ने मिस्री औ़रतों को ज़ियाफ़त के बहाने बुलाया था और मक़्सूद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام का जल्वा दिखाना और अपना उ़ज़्र ज़ाहिर करना था। ज़ाहिर में ज़ियाफ़त किया और दिल में कुछ और था। इसी त़रह़ ह़ज़रते सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا) ने कहलाया तो येह था कि अबू बक्र रक़ीक़ुल क़ल्ब हैं, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को मुसल्ला पर न देखेंगे तो ज़ब्त़ न कर सकेंगे, रोने लगेंगे और नमाज़ न पढ़ा सकेंगे और दिल में येह था कि लोग कहीं ह़ज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की इमामत की वज्ह से बदफ़ाली न ले लें।" जैसा कि बुख़ारी ही में है कि "मुझे बार बार अ़र्ज़ पर इस ख़याल ने उभारा कि जो शख़्स हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जगह नमाज़ पढ़ाएगा उसे लोग पसन्द नहीं करेंगे। इस से लोग फ़ाले बद लेंगे या'नी येह खड़ा हुवा और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का विसाल हो गया। इस लिये मैं चाहती थी कि नमाज़ कोई और पढ़ाए।" ज़ाहिर कुछ किया और दिल में कुछ और था। येह भी हो सकता है कि मुराद येह हो कि जैसे मिस्र की औ़रतें ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام को उन की मरज़ी के ख़िलाफ़ अ़मल करने को कहती थीं वैसे तुम मुझ से मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़ हुक्म सादिर कराना चाहती हो। या येह कि मिस्र की उन औ़रतों की त़रह़ तुम भी अपनी बात मनवाना चाहती हो। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि अगर मरीज़ मस्जिद न जा सके तो उस पर जमाअ़त वाजिब नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीह़ बुख़ारी, जि. 2, स. 336)

2.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस के तह़त नक़्ल फ़रमाते हैं : "आप ने 17 नमाज़ें पढ़ाई हैं। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुवे **एक** येह कि बा'दे अम्बिया अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हैं क्यूंकि इमाम अफ़्ज़ल ही को बनाया जाता है। **दूसरे** येह कि बा'दे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़िलाफ़त के आप ही मुस्तह़िक़ हैं क्यूंकि येह इमामते सुग़रा इमामते कुब्रा की दलील है। गोया हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़मली त़ौर पर आप को अपना ख़लीफ़ा बना दिया। ख़िलाफ़त सिर्फ़ क़ौल से ही नहीं हुवा करती, इसी लिये तमाम सह़ाबा ख़ुसूसन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे दीन का इमाम बना दिया तो हम ने उन्हें इस दुन्या का इमाम बना लिया। **तीसरे** येह कि इमामत का मुस्तह़िक़ पहले आ़लिम है, फिर क़ारी। **चौथे** येह कि अबू बक्र सिद्दीक़ तमाम सह़ाबा में बड़े आ़लिम हैं।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 210)

3.....سنن ابن ماجه،ابواب اقامة الصلوات،باب ماجاء فی صلاة رسول اللّٰه فی مرضه،الحدیث:١٢٣٤،ص٢٥٤٩.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ क़बीलए बनू सा'लिबा बिन अ़म्र बिन औ़फ़ की शाख़ औस से है। बदरी सहाबी हैं और उन तव्वाबीन में शामिल हैं जिन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई :

تَوَلَّوْا وَّ اَعْیُنُهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ
(پ۱۰،التوبۃ:۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *यूं वापस जाएं कि उन की आंखों से आंसू उबलते हों।*

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान :

﴾1289﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि येह आयते मुबारका हज़रते सालिम बिन उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई जो क़बीलए बनू अ़म्र बिन अ़म्र बिन सा'लिबा बिन ज़ैद से तअ़ल्लुक़ रखते हैं।

وَّلَا عَلَى الَّذِیْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ
قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَیْهِ۪
تَوَلَّوْا وَّ اَعْیُنُهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ
(پ۱۰،التوبۃ:۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और न उन पर जो तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों कि तुम उन्हें सुवारी अ़ता फ़रमाओ तुम से येह जवाब पाएं कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस पर तुम्हें सुवार करूं इस पर यूं वापस जाएं कि उन की आंखों से आंसू उबलते हों।"* (1)

हज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है।

अहले मदीना की शाने अ़ज़मत निशान :

﴾1290﴿.....अबुल ह़ारिस बिन ख़ज़रज के हमक़ौम हज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो ज़ुल्म

---

(1) ......السیرۃ النبویۃ لابن ہشام،غزوۃ تبوک فی رجب سنۃ تسع،ص۵۱۵،عن ابن اِسحاق.

www.dawateislami.net

करते हुवे अहले मदीना को डराएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ख़ौफ़ में मुब्तला फ़रमाएगा और उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का न तो फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।"(1)

हज़रते सय्यिदुना शुक़रान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه

सरकारे दो जहान, रहमते आलमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना शुक़रान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद सादिक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के हवाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है।

﴾1291﴿.....हज़रते सय्यिदुना शुक़रान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ैबर की जानिब दराज़ गोश पर सुवार तशरीफ़ ले जाते हुवे देखा।"(2)

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन उसैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन उसैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। इस बात को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के पड़पोते अम्र बिन क़ैज़ी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللہِ الْقَوِی अपने दादा आमिर बिन शद्दाद बिन उसैद के हवाले से रिवायत करते हैं कि हज़रते शद्दाद बिन उसैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें सुफ़्फ़ा में ठहराया।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه की एक ख़ुसूसिय्यत :

﴾1292﴿.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन क़ैज़ी बिन आमिर बिन शद्दाद बिन उसैद सुलमी मदनी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मेरे वालिद ने मुझे मेरे परदादा हज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में बताया कि वोह बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवे और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ पर हिजरत की बैअ़त की। फिर कुछ अ़र्से बा'द बीमार हो गए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ शद्दाद ! क्या हुवा ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बीमार हूं। काश ! मैं चन्द बार बुत़ह़ान का पानी पी लूं (तो सिह़ह़त याब हो

---

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،حديث السائب بن خلادابی سهلة،الحديث:١٦٥٦٥،ج٥،ص٥٦٥.

2 ......المعجم الاوسط،الحديث:٢٧٦١،ج٢،ص١٢٩.

www.dawateislami.net

जाऊं)।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें किस चीज़ ने उस से बाज़ रखा है ?" अ़र्ज़ की : "बैअ़ते हिजरत ने।" इरशाद फ़रमाया : "जाओ ! तुम जहां कहीं भी रहो साहिबे हिजरत ही हो।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। हम साबिक़ीने अव्वलीन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अह़वाल बयान कर चुके हैं।

दो नबियों عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ :

﴾1293﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ फ़रमाया करते थे :

اَللّٰهُمَّ لَسْتَ بِاِلٰهٍ اِسْتَحْدَثْنَاهُ، وَلَا بِرَبٍّ اِبْتَدَعْنَاهُ، وَلَا كَانَ لَنَا قَبْلَكَ مِنْ اِلٰهٍ نَّلْجَأُ اِلَيْهِ وَ نَدَعُكَ، وَلَا اَعَانَكَ عَلٰى خَلْقِنَا اَحَدٌ فَنُشْرِكَهُ فِيْكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ऐसा मा'बूद व परवर दगार नहीं जिसे हम ने खुद बनाया हो और न तुझ से पहले हमारा कोई मा'बूद था कि हम उस की पनाह ले लें और तुझे छोड़ दें और हमारी तख़्लीक़ में तेरा कोई मददगार नहीं कि हम उसे तेरा शरीक ठहराएं। तेरी ज़ात बा बरकत है और तू बुलन्द शान का मालिक है।" ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी इसी त़रह़ दुआ़ किया करते थे।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन बैज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन बैज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ क़बीलए बनू फ़िहर से है। बदरी सहाबी हैं। हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें एक सरिय्या (या'नी जंग) में भी रवाना फ़रमाया था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "येह आयते मुक़द्दसा इन्ही के बारे में नाज़िल हुई :

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ٧١٠٩، ج٧، ص٢٧١، "مرات" بدله "البرأت".

2 ......المعجم الكبير، الحديث: ٧٣٠٠، ج٨، ص٣٤.

www.dawateislami.net

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ (پ۲،البقرۃ:۲۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने अल्लाह के लिये अपने घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े वोह रह़मते इलाही के उम्मीदवार हैं। (1)

ह़ज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा बिन क़ैस ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप मदीनए मुनव्वरा زَادَہَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में मुक़ीम थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल सुफ़्फ़ा में हुवा।

पेट के बल लेटना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं :

﴾1294﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन तिख़्फ़ा बिन क़ैस ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं जो अहले सुफ़्फ़ा में से थे कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को हुक्म दिया (कि वोह सुफ़्फ़ा वालों को खाना खिलाएं)। चुनान्चे, कोई सह़ाबी अहले सुफ़्फ़ा में से एक आदमी को अपने हमराह ले गया, कोई दो को अपने साथ ले गया ह़त्ता कि हम पांच बाक़ी रह गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें अपने साथ चलने का हुक्म फ़रमाया। हम साथ चल दिये और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास पहुंचे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! हमें कुछ खिलाओ, पिलाओ।" उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जशीशा (या'नी दलिया जिस में गोश्त या खजूर को पकाया जाए) बना कर लाईं। हम ने उसे खाया फिर तीतर के बराबर ह़ैसा (या'नी खजूर, पनीर और घी मिला कर बनाया हुवा खाना) लाईं। हम ने वोह भी खा लिया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! हमें पिलाओ।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दूध का एक छोटा बरतन ले आईं। हम ने दूध पी लिया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इरशाद फ़रमाया : "अगर चाहो तो यहीं आराम करो और चाहो तो मस्जिद में चले जाओ।" हम ने अ़र्ज़ की : "हम मस्जिद चले जाते हैं।"

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدرالكبرى......الخ،ص٢٩٥۔
السنن الكبرى للبيهقي،كتاب السير،باب قسمة الغنيمة فى دارالحرب،الحديث:١٧٩٨٩،ج٩،ص٩٩.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं मस्जिद में पेट के बल सो रहा था कि अचानक किसी ने मुझे अपने पाउं से हिला कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस तरह लेटने से नाराज़ होता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने देखा तो वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना तलहा बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना तलहा बिन अ़म्र बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले सुफ़्फ़ा में इक़ामत इख़्तियार की फिर बसरा तशरीफ़ ले गए और मुस्तक़िल वहीं रहने लगे।

माल की फ़िरावानी की ख़बर :

﴾1295﴿.....हज़रते सय्यिदुना तलहा बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब कोई शख़्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर होता और मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में उस का कोई वाक़िफ़े कार होता तो उस के हां ठहरता। वरना अस्हाबे सुफ़्फ़ा के पास क़ियाम करता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं भी सुफ़्फ़ा वालों के पास ठहरता था फिर मेरी एक शख़्स से दोस्ती हो गई। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ से हर दो अफ़राद के लिये हमें रोज़ाना एक मुद खजूरें मिलती थीं। एक दिन रहमत वाले आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो हम में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! खजूरों ने हमारे पेट जला दिये हैं। नीज़ हमारी चादरें फट चुकी हैं।" येह सुन कर मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना बयान करने के बा'द लोगों की तरफ़ से पहुंचने वाली शिकायात को बयान किया फिर फ़रमाया : "बिला शुबा मैं और मेरे रफ़ीक़ (या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) 10 से ज़ियादा दिन इस हालत में रहे कि हमारे पास खाने को पीलू के दरख़्त के फल के सिवा कुछ न था। फिर हम अपने अन्सारी भाइयों के पास आए उन का बड़ा खाना खजूर था। उन्हों ने हमारी मदद की। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं तुम्हारे लिये गोश्त व रोटी पाता तो तुम्हें ज़रूर खिलाता। अलबत्ता तुम एक ज़माना ऐसा पाओगे कि का'बए

1 ......سنن ابی داؤد، کتاب الادب، الحدیث: ۵۰۴۰، ص۱۵۹۱ ۔ المعجم الکبیر، الحدیث: ۸۲۲۷، ج۸، ص۳۲۸.

www.dawateislami.net

मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के पर्दों की त़रह़ (क़ीमती) लिबास पहनोगे और सुब्ह़–शाम तुम्हारे सामने नित नए खानों से लबरैज़ प्याले पेश किये जाएंगे।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ावी दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ावी दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नज़रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है।

﴾1296﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ावी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا हाज़िर हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक महीने तक क़ियाम किया। मुझे बुख़ार ने आ लिया। जिस की वज्ह से मैं कमज़ोर हो गया। ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''वोह दौसी नौजवान कहां है ?'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''वोह बुख़ार में मुब्तला मस्जिद के कोने में हैं।'' चुनान्चे, प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और भलाई की नसीह़त फ़रमाई।''(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यह़्या बिन मुई़न عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के ह़वाले से अहले सुफ़्फ़ा में ज़िक्र किया गया है और हम मुहाजिरीने साबिक़ीन में इन के बा'ज़ अह़वाल व अक़्वाल बयान कर चुके हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आसारो नुसूस की इत्तिबाअ़ के साथ साथ अह़ादीस और ख़ास बातों के बयान करने में सरदार हैं। आप का शुमार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में होता है जो तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ रहे और ऐसे सह़ाबए किराम येह बात जानते थे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वसीले के ए'तिबार से सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब हैं।

---

1 ......المعجم الکبیر،الحدیث:٨١٦٠،ج٨،ص٣١٠۔
شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزھد وقصر الامل،الحدیث:١٠٣٢٥،ج٧،ص٢٨٤.
2 ......الآحاد والمثانی لابن ابی عاصم،الطفاوی،الحدیث:٢٧٥٢،ج٥،ص٢٢٣.

www.dawateislami.net

अच्छाई और बुराई का मदार :

﴾1297﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों के दिलों पर नज़र फ़रमाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना मह़बूब बनाया । उन्हें अपनी मख़्लूक़ की हिदायत के लिये मबऊ़स फ़रमाया । अपनी रिसालत का ताज उन के सर सजाया और अपने इ़ल्म से उन का इन्तिख़ाब फ़रमाया । फिर दोबारा अपने बन्दों के दिलों पर नज़र फ़रमाई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये जां निसार दोस्तों का इन्तिख़ाब फ़रमाया और उन्हें अपने दीन का मददगार और अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वज़ीर बनाया । पस जिसे मुसलमान अच्छा समझें वोह (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक भी) अच्छा है और जिसे मुसलमान बुरा जानें वोह बुरा है ।"(1)

इ़ल्म की अहम्मिय्यत :

﴾1298﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान तो दो ही हैं : आ़लिमे दीन और त़ालिबे इ़ल्म और इन के इ़लावा किसी में भलाई नहीं ।"(2)

हर क़दम के बारे में सुवाल होगा :

﴾1299﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान जो भी क़दम उठाता है उस के बारे में सुवाल होगा कि किस काम के इरादे से उठाया ?"(3)

त़लबे इ़ल्म में नौ दिन का सफ़र :

﴾1300﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि हम हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िर थे कि एक सुवार आया और उस ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने अपनी सुवारी बिठा दी । फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

1 ......مسندابی داؤدالطیالسی،ماسندعبد اللہ بن مسعود،الحدیث:٢٤٦،ص٣٣،بدون"الی خلقه".
2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:١٠٤٦١،ج١٠،ص٢٠١.
3 ......فردوس الاخبارللدیلمی،باب المیم،الحدیث:٦٤٥٥،ج٢،ص٣١٦.

www.dawateislami.net

मैं 9 दिन सफ़र कर के आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा हूं। मेरी सुवारी कमज़ोर हो चुकी है। मैं रातों को बेदार और दिन को भूका रहा हूं। सिर्फ़ इस लिये कि आप से उन दो ख़स्लतों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करूं जिन्हों ने मुझे जगाए रखा।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार फ़रमाने पर उस ने अपना नाम ''ज़ैदुल ख़ैल'' बताया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''नहीं ! बल्कि तुम ''ज़ैदुल ख़ैर'' हो। अब सुवाल करो (और याद रखो !) बहुत सी फ़ुज़ूल चीज़ों के बारे में भी सुवाल किया जाता है।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जिस आदमी के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाता है उस की क्या अ़लामत है और जिस के साथ भलाई का इरादा नहीं फ़रमाता उस की क्या निशानी है ?'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम ने सुब्ह़ किस ह़ालत में की ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने सुब्ह़ इस ह़ालत में की, कि मुझे भलाई, भलाई वालों और भलाई पर अ़मल करने वालों से मह़ब्बत थी और अगर मैं ख़ुद किसी नेकी को बजा लाऊं तो उस का अज्रो सवाब पाने का यक़ीन रखता हूं और अगर मुझ से कोई नेक काम छूट जाता है तो मेरे दिल में उसे करने का शौक़ होता है।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''येह उस शख़्स की अ़लामत है जिस के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाता है और उस की अ़लामत जिस के साथ वोह भलाई का इरादा नहीं फ़रमाता येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये उस का उलट कर दे और तुझे उस के लिये तय्यार भी कर दे तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को तेरी कुछ परवाह नहीं कि तू जिस वादी में चाहे हलाक हो।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के नाम में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल मिलते हैं। चुनान्चे, बा'ज़ ने ''**अ़ब्दुश्शम्स**'' ज़िक्र किया। बा'ज़ ''अ़ब्दुर्रह़मान बिन सख़्र दौसी'' बयान करते हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सुफ़्फ़ा वालों में सब से ज़ियादा मश्हूरो मा'रूफ़ हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात में एक त़वील मुद्दत तक सुफ़्फ़ा को अपना मस्कन बनाए रखा और सुफ़्फ़ा छोड़ कर कहीं नहीं

(1)......المعجم الكبير، الحديث: ١٠٤٦٤، ج١٠، ص٢٠٢۔
الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم ٢٦٠ بشير مولی بنی هاشم، ج٢، ص١٨٣.

www.dawateislami.net

गए। इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुफ़्फ़ा में मुस्तक़िल रहने वाले और कुछ अ़र्से के लिये सुफ़्फ़ा में ठहरने वाले तमाम ह़ज़रात से ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे। जब प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुफ़्फ़ा वालों को खाने के लिये इकठ्ठा करना चाहते तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजते थे क्यूंकि आप तमाम अहले सुफ़्फ़ा से वाक़िफ़ और उन के मनाज़िल व मरातिब से भी बा ख़बर थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मश्हूर फ़ुक़रा व मसाकीन में से एक हैं। शदीद फ़क़्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में भी सब्र पर क़ाइम रहे जिस की बदौलत दाइमी साए के ह़क़दार क़रार पाए। यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरख़्त लगाने, नहरें जारी करने जैसे बखेड़ों की त़रफ़ रुख़ न करते। नीज़ ताजिरों और मालदारों से मिलने जुलने से परहेज़ करते। आ़रिज़ी व फ़ानी दुन्यावी आराइशों से किनारा कश रहते। मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के इन्आ़मात से नफ़्अ़ उठाने के मुन्तज़िर रहते। नर्म व मुलाइम और रेशमी लिबास पहनने से गुरेज़ करते। जिस की बदौलत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा और ह़िक्मतो दानिशमन्दी से बड़ा ह़िस्सा पाया।

इस्लाम के मेहमान :

﴾1301﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! मैं भूक की वज्ह से पेट के बल लेट जाता था और भूक की शिद्दत के बाइ़स पेट पर पथ्थर बांधा करता था। एक दिन मैं लोगों की आ़म गुज़रगाह पर बैठ गया तो मेरे पास से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गुज़रे। मैं ने उन से क़ुरआने करीम की एक आयत के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया और मेरे सुवाल करने का मक़्सद येह था कि वोह मुझे खाना खिलाते लेकिन वोह जवाब दे कर चले गए और ऐसा न किया। फिर मेरे पास से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गुज़रे तो मैं ने उन से भी एक आयत के बारे में सुवाल किया और सुवाल करने का मक़्सद येह था कि वोह मुझे खाना खिलाते लेकिन वोह भी जवाब दे कर चले गए और कुछ न किया। इस के बा'द रह़मत वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे दिल की ख़्वाहिश और चेहरे की ह़ालत जान गए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा !" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ह़ाज़िर हूं।" फ़रमाया : आओ।"

www.dawateislami.net

चुनान्चे, मैं पीछे पीछे चल दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्दर दाख़िल हुवे मैंने इजाज़त त़लब की तो मुझे इजाज़त मिल गई। चुनान्चे, मैं भी अन्दर चला गया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक प्याले में दूध मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह दूध कहां से आया ?" घरवालों ने बताया : "येह फ़ुलां औ़रत या मर्द ने आप के लिये हदिय्या भेजा है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा !" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ह़ाज़िर हूं।" फ़रमाया : "सुफ़्फ़ा वालों को बुला लाओ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सुफ़्फ़ा वाले इस्लाम के मेहमान थे। वोह अहलो इ़याल के पास जाते न माल कमाते थे। जब सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास सदक़ा आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुफ़्फ़ा वालों के पास भेज देते और ख़ुद उस में से कुछ तनावुल न फ़रमाते और जब हदिय्या वग़ैरा आता तो ख़ुद भी उस में से तनावुल फ़रमाते और सुफ़्फ़ा वालों को भी अपने साथ शरीक फ़रमा लेते।"(1)

﴾1302﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं भी सुफ़्फ़ा के उन 70 अफ़राद में शामिल था जिन में से किसी के पास भी चादर न थी। सिर्फ़ तहबन्द था या कम्बल (मोटी ऊनी चादर) जिसे वोह अपनी गर्दन में बांधे रहते थे (या'नी गर्दन में बांध कर लटका देते थे। किसी के आधी पिन्डली तक पहुंचता और किसी के टख़्नों तक)।"(2)

सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भूक का ज़िक्र :

﴾1303﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से था। एक दिन मैं ने रोज़ा रखा। शाम के वक़्त पेट में तक्लीफ़ का एह़सास हुवा तो मैं क़ज़ाए ह़ाजत के लिये चला गया। जब वापस आया तो सुफ़्फ़ा वाले अपना खाना खा चुके थे। क़ुरैश के मालदार लोग सुफ़्फ़ा वालों के पास खाना भेजा करते थे। मैं ने दरयाफ़्त किया कि "आज खाना किस के हां से आया था ?" एक शख़्स ने बताया : "अमीरुल

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی......الخ، الحدیث:٦٤٥٢، ص٥٤٢۔
جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب قصة اصحاب الصفة، الحدیث:٢٤٧٧، ص١٩٠١۔

(2) ......صحیح ابن خزیمة، کتاب الصلاة، باب عقد الازار علی......الخ، الحدیث:٧٦٤، ج١، ص٣٧٥۔
صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب نوم الرجال فی المسجد، الحدیث:٤٤٢، ص٣٧۔

www.dawateislami.net

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से।" मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के बा'द तस्बीह़ात पढ़ने में मसरूफ़ थे। मैं इन्तिज़ार करने लगा। जब फ़ारिग़ हुवे तो मैं ने क़रीब हो कर अ़र्ज़ की : "मुझे कुछ पढ़ा दीजिये।" और मेरा मक़्सद येह था कि मुझे कुछ खाना खिला दें। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे सूरए आले इमरान की आयात पढ़ाने लगे। फिर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर पहुंचे तो मुझे दरवाज़े पर छोड़ कर खुद अन्दर चले गए। काफ़ी देर हो गई लेकिन वापस तशरीफ़ न लाए। मैं ने सोचा शायद कपड़े तब्दील फ़रमा रहे हों। फिर मेरे लिये घरवालों को खाने का हुक्म दिया होगा लेकिन मैं ने वहां ऐसा कुछ न पाया। जब बहुत ज़ियादा देर हो गई तो मैं वहां से उठ कर चल दिया। रास्ते में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! आज तुम्हारे मुंह की बू बहुत तेज़ है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज मैं ने रोज़ा रखा था और अभी तक इफ़्त़ार नहीं किया और न ही मेरे पास कुछ है जिस से रोज़ा इफ़्त़ार करूं।" रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने साथ चलने का फ़रमाया। मैं साथ साथ चलता रहा यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर पहुंच गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सियाह फ़ाम लौंडी को बुलाया और इरशाद फ़रमाया : "वोह प्याला हमारे पास ले आओ।" लौंडी ने प्याला पेश कर दिया। मैं ने देखा उस में खाने का कुछ असर बाक़ी था। मुझे ऐसे लगा जैसे उस में किसी ने जव खाए हों। प्याले के किनारों पर कुछ खाना बाक़ी बचा रह गया था जो बहुत क़लील था। मैं ने बिस्मिल्लाह पढ़ी उसे इकठ्ठा किया और खा लिया ह़त्ता कि शिकम सैर हो गया।"(1)

﴾1304﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं मिम्बरे रसूल और हुजरए आ़इशा के दरमियान बेहोश हो कर गिर जाता था और लोग मुझे पागल समझते थे ह़ालांकि मैं पागल नहीं था बल्कि मेरी येह ह़ालत भूक की वज्ह से होती थी।"(2)

---

1 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر،الرقم ۸۸۹۵ابو ھریرۃ الدوسی،ج٦٧،ص٣٢١ .

2 ......صحیح البخاری،کتاب الاعتصام،باب ما ذکر النبی و حض......الخ،الحدیث:٧٣٢٤،ص٦١٠،بتغیر.

www.dawateislami.net

अहादीस याद करने का शौक़ :

﴾1305﴿.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू सलमह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम येह कहते हो कि अबू हुरैरा, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ह़दीसें रिवायत करता है जब कि मुहाजिरीन व अन्सार अबू हुरैरा की त़रह़ अह़ादीस रिवायत नहीं करते।" (दर अस्ल बात येह है) कि मेरे मुहाजिरीन भाई तिजारत में मश्ग़ूल रहते थे और मेरे अन्सार भाई अपने माल में। जब कि मैं सुफ़्फ़ा के मिस्कीनों में से एक मिस्कीन था। जब सैर हो जाता तो हमेशा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में रहता। जब मुहाजिरीन व अन्सार ग़ाइब होते तो मैं बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर होता और जब वोह अह़ादीस भूल जाते तो मैं याद रखता।"[1]

ख़ुशहाली में ख़स्ताहाली की याद :

﴾1306﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن बयान करते हैं कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ केसरी रंग में रंगे हुवे "कतान" के दो कपड़े ज़ेबे तन किये हुवे थे। उन से नाक साफ़ करते हुवे फ़रमाया : "भला अबू हुरैरा को देखो "कतान"[2] से नाक साफ़ कर रहा है ह़ालांकि एक वक़्त था कि मैं मिम्बरे रसूल और हुजरए आइशा के दरमियान बेहोश हो कर गिर जाता फिर कोई राहगीर आता और मुझे दीवाना समझ कर मेरे सीने पर बैठ जाता तो मैं उस से कहता : "मैं दीवाना नहीं हूं। भूक ने मेरी येह ह़ालत बना रखी है।"[3]

﴾1307﴿.....हज़रते सय्यिदुना मक़्बुरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "लोग कहते हैं कि अबू हुरैरा बहुत अह़ादीस बयान करता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भूक के बाइस सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर पड़ा रहता। ह़त्ता कि मैं ख़मीरी रोटी खाता न रेशमी लिबास पहनता और न ही ग़ुलाम और लौंडी मेरी ख़िदमत करते। मैं भूक की वज्ह से अपने पेट पर छोटे

1.....صحیح البخاری،کتاب البیوع،باب ماجاء فی قول اللّٰہ فاذا قضیت الصلاۃ......الآیۃ،الحدیث:۲۰۴۷،ص۱۶۰۔
صحیح البخاری،کتاب المزارعۃ،باب ماجاء فی الغرس،حدیث:۲۳۵۰،ص۱۸۴۔

2.....एक क़िस्म का बारीक कपड़ा जिस की निस्बत मश्हूर है कि चांदनी रात में टुकड़े टुकड़े हो जाता है।

3.....الزھدللامام احمدبن حنبل،الحدیث:۱۷۱،ص۶۷۔

www.dawateislami.net

छोटे पथ्थर बांध लेता और किसी आदमी से कुरआने करीम की कोई आयत पूछता हालांकि वोह मुझे भी मा'लूम होती। उस का मक़्सद येह होता कि वोह मुझे खाना खिला दे।"(1)

﴾1308﴿.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : जब मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो रास्ते में येह शे'र पढ़ता हुवा आया :

يَا لَيْلَةً مِنْ طُولِهَا وَعَنَائِهَا　　　عَلٰى اَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتِ

तर्जमा : ग़म की शब दराज़ थी मसाइब का दौर दौरा था सद शुक्र कि कुफ़्र के घर से नजात मिली।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "रास्ते में मेरा गुलाम भाग गया। जब मैं बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िर हुवा तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बैअ़त की। मैं अभी हाज़िरे ख़िदमत ही था कि मेरा भागा हुवा गुलाम आ गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! येह तेरा गुलाम है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है और यूं मैं ने उसे आज़ाद कर दिया।"(2)

﴾1309﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ह़य्यान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ने यतीमी की हालत में परवरिश पाई। मिस्कीनी की हालत में हिजरत की और मैं ग़ज़्वान की बेटी का सिर्फ़ खाने पर मुलाज़िम था (या'नी उजरत में सिर्फ़ खाना मिलता था)। उन की सुवारी के साथ पैदल चलता। जब वोह सुवार होते तो मैं उस वक़्त हुदी ख़्वानी कर के उन के जानवरों को चलाता और जब वोह किसी मक़ाम पर उतरते तो उन के लिये लकड़ियां जम्अ़ करता। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने इस दीन को मज़्बूत बनाया और अबू हुरैरा को इमाम।"(3)

﴾1310﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू यूनुस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई और सलाम फेरने के बा'द बुलन्द आवाज़ से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने दीन को मज़्बूत बनाया और अबू हुरैरा को इमाम जब कि पहले वोह ग़ज़्वान की बेटी का खाने और सुवारी के इवज़ मुलाज़िम था।"(4)

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب جَعْفَربن ابی طالب، الحديث: ٣٧٠٨، ص٣٠٣، بتغير.
2 ......صحيح البخاری، كتاب العتق، باب اذا قال لعبده هو للّٰه ونوى العتق والاشهادبالعتق، الحديث: ٢٥٣١، ص١٩٩.
3 ......سنن ابن ماجه، ابواب الرهون، باب اجارة الاجيرعلى طعام بطنه، الحديث: ٢٤٤٥، ص٢٦٢٣.
4 ......سيراعلام النبلاء، الرقم٢٢٢ ابوهريرة، ج٤، ص١٩٤.

www.dawateislami.net

﴾1311﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुज़ारिब बिन ह़ज़्न رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक रात सफ़र पर था कि मैं ने एक शख़्स को तक्बीर कहते सुना तो सुवारी के साथ उस तक जा पहुंचा। मैं ने आवाज़ दी : "येह तक्बीर कहने वाला शख़्स कौन है ?" जवाब मिला : "अबू हुरैरा।" मैं ने फिर दरयाफ़्त किया : "येह तक्बीर कैसी है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर रहा हूं।" मैं ने पूछा : "किस बात पर शुक्र अदा कर रहे हैं ?" फ़रमाया : "मैं पहले ग़ज़वान की बेटी बर्रा का खाने पर नौकर था। उन के साथ पैदल चलता था। जब वोह सुवार होते मैं जानवरों को चलाता और जब वोह किसी मक़ाम पर ठहरते तो मैं उन की ख़िदमत करता था। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उस से शादी करा दी और इस वक़्त वोह मेरी बीवी है। अब ह़ालत येह है कि जब लोग सुवार होते हैं मैं भी सुवार हो जाता हूं और जब किसी जगह क़ियाम करते हैं तो मेरी ख़िदमत की जाती है।"(1)

﴾1312﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हमारा एक आज़ाद कर्दा गुलाम था जो हमेशा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ रहता था। जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उसे सलाम करते तो फ़रमाते : "तुम पर सलामती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें हों, तू हमेशा जल्द बाज़ रहे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे माल में इज़ाफ़ा फ़रमाए और मैं माल की वज्ह से तुम पर नाराज़ नहीं हूं।"

बेटी को सोना न पहनने की नसीह़त :

﴾1313﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी बेटी से फ़रमाते थे : "सोना न पहनो कि मुझे तुम पर दोज़ख़ की आग के शो'लों का ख़ौफ़ है।"(2)

﴾1314﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपनी बेटी से फ़रमाते सुना : "ऐ बेटी ! तू (सोना न पहनने पर आ़र दिलाने वाली अपनी सहेलियों से) कहा कर कि मेरे वालिद मुझे सोने के ज़ेवरात से मुज़य्यन करने से इजतिनाब करते हैं क्यूंकि वोह मुझ पर आग के शो'लों से डरते हैं।"(3)

---

1 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب اخبارہ......الخ،الحدیث:۷۱۰۶،ج۹،ص۱۴۰.

2 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،فضل ابی ھریرۃ،الحدیث:۸۳۳،ص۱۷۶.

3 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر،الرقم۸۸۹۵ابی ھریرۃ الدوسی،ج۶۷،ص۳۶۹،بتغیر.

www.dawateislami.net

﴾1315﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِيْع से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह कूड़ा करकट तुम्हारी दुन्या व आख़िरत की तबाही का सबब है।"(1)

गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया :

﴾1316﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बुलाया ताकि किसी अ़लाक़े का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाएं लेकिन मैं ने गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया तो अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या आप गवर्नरी को ना पसन्द जानते हैं ? ह़ालांकि आप से बेहतर शख़्स ने इस का मुत़ालबा किया था।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "किस ने मुत़ालबा किया था ?" फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी के बेटे थे। जब कि मैं अबू हुरैरा, उमय्या की औलाद हूं। मुझे 2 और 3 बातों का ख़ौफ़ है।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम ने 5 क्यूं नहीं कहा ?" अ़र्ज़ की : "मैं बिग़ैर इ़ल्म के कोई बात कहने और बिग़ैर अ़द्लो इन्साफ़ के फ़ैसला करने, पीठ पर कोड़े मारे जाने, माल छीने जाने और बे इ़ज़्ज़त किये जाने से डरता हूं।"(2)

बे मिसाल ह़ाफ़िज़ा :

﴾1317﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक दिन नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुफ़्त्गू करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जो अपना कपड़ा फैलाएगा यहां तक कि मैं अपनी गुफ़्त्गू ख़त्म कर लूं फिर वोह कपड़ा समेट ले तो उसे मेरे इरशादात याद हो जाएंगे।" चुनान्चे, मैं ने अपनी चादर फैला दी ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी गुफ़्त्गू मुकम्मल फ़रमाई तो मैं ने उसे समेट कर अपने सीने से लगा लिया। पस इस के बा'द से मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई इरशाद नहीं भूला।"(3)

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الزھد وقصر الامل، الحدیث:۱۰۶۸۷، ج۷، ص۳۸۶.

2 ......جامع معمر بن راشد مع المصنف لعبد الرزاق، باب الامام راع، الحدیث:۲۰۸۲۵، ج۱۰، ص۲۸۴.

3 ......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب ماجاء فی قول اللّٰہ: فاذا قضیت الصلوٰۃ......الایۃ، الحدیث:۲۰۴۷، ص۱۶۰.

www.dawateislami.net

﴾1318﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "तुम मुझ से वोह ग़नीमतें क्यूं नहीं त़लब करते जो तुम्हारे रुफ़क़ा त़लब करते हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप से सुवाल करता हूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे उस इ़ल्म से कुछ अ़त़ा फ़रमा दीजिये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अ़त़ा फ़रमाया है।" चुनान्चे, मैं ने अपनी पुश्त से चादर उतार कर अपने और मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान बिछा दी और उसे इस क़दर ग़ौर से देखने लगा गोया मैं उस पर चलती किसी जूं को देख रहा हूं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से गुफ़्तगू फ़रमाई जिसे मैं ने मह़फ़ूज़ कर लिया। फिर इरशाद फ़रमाया : "चादर समेट कर अपने सीने से लगा लो।" इस के बा'द से मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशादाते मुबारका में से एक ह़र्फ़ भी नहीं भूला।"(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इ़ल्मे ह़दीस :

﴾1319﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते सुना कि "लोग कहते हैं : ऐ अबू हुरैरा ! आप इतनी कसरत से अह़ादीस क्यूं बयान करते हैं ?" उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर मैं वोह तमाम अह़ादीस जो मैं ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हैं तुम्हें सुना दूं तो तुम लोग मुझे ठीकरियों से मारने लगो फिर तुम मेरा सामना न कर सकोगे। (2)

﴾1320﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर अ़ब्दुल्लाह रूमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से 5 थैलों की मिक़्दार अह़ादीस याद की हैं जिन में से सिर्फ़ 2 थैलों की मिक़्दार अह़ादीस तुम्हारे सामने बयान की हैं।" अगर मैं तीसरी थैली की मिक़्दार भी बयान कर दूं तो तुम मुझे संगसार कर दो।"(3)

---

1 ......سیراعلام النبلاء،الرقم۲۲۲ابوھریرۃ،ج۴،ص۱۸۵ .

2 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکرمن جمع القرآن علی عھد رسول اللّٰہ،ابو ھریرۃ،ج۲،ص۲۷۸ .

3 ......المستدرک،کتاب معرفۃ الصحابۃ،باب کان ابوھریرۃاحفظ......الخ،الحدیث:۶۲۱۸،ج۴،ص۶۵۰،مفھومًا .

www.dawateislami.net

ठन्डी ग़नीमत :

﴾1321﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ठन्डी ग़नीमत के बारे में न बताऊं ?" लोगों ने पूछा : "ऐ अबू हुरैरा ! वोह क्या है ?" फ़रमाया : "सर्दियों में रोज़े रखना।"(1)

हर महीने तीन रोज़े :

﴾1322﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं सात रोज़ तक हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मेहमान रहा। मैं ने पूछा : "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप किस त़रह़ रोज़े रखते हैं या आप के रोज़े कैसे होते हैं ?" फ़रमाया : "मैं हर महीने के आग़ाज़ में तीन रोज़े रखता हूं और अगर कोई आ़रिज़ा पेश आ जाता है तो महीने के आख़िर में तीन रोज़े रख लेता हूं।"(2)

सारा साल रोज़ों का सवाब :

﴾1323﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सफ़र पर थे। जब क़ाफ़िले वालों ने एक मक़ाम पर पड़ाव किया तो दस्तर ख़्वान बिछाया। फिर एक शख़्स को हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाने के लिये भेजा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त नमाज़ में मसरूफ़ थे। बा'दे नमाज़ पैग़ाम मिलने पर फ़रमाया : "मैं रोज़े से हूं।" और जब लोग खाने से फ़ारिग़ होने के क़रीब थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आ कर खाना शुरूअ़ कर दिया। लोग उस शख़्स को घूरने लगे जो उन्हें खाने के लिये बुलाने गया था। उस ने कहा : "तुम मुझे क्यूं घूर रहे हो ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन्हों ने मुझे बताया था कि मैं रोज़े से हूं।" हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह सच कहता है। बेशक मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "माहे रमज़ान के रोज़े और हर माह तीन रोज़े रखना सारा साल रोज़े रखने की त़रह़ है।" और चूंकि मैं इस महीने के शुरूअ़ में तीन रोज़े रख चुका हूं पस अब मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ताकर्दा तख़्फ़ीफ़ में खा रहा हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से अज्र रोज़ेदार का पा रहा हूं।"(3)

---

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل،زھدابی ھریرۃ،الحدیث:۹۸۶،ص۱۹۷.

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندابی ھریرۃ،الحدیث:۸۶۴۱،ج۳،ص۲۶۸،بتغیرٍ.

3 ......مسندابی داؤدالطیالسی،ابوعثمان النھدی عن ابی ھریرۃ،الحدیث:۲۳۹۳،ص ۳۵۱،مفھومًا.

www.dawateislami.net

﴾1324﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुतवक्किल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के रुफ़क़ा रोज़ा रखते तो मस्जिद में बैठ जाते और कहते : ''हम अपने रोज़े को पाक कर रहे हैं।''(1)

नफ़्ल रोज़े की निय्यत :

﴾1325﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि बाज़ार जाते। जब घर आते तो पूछते : ''क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है ?'' अगर वोह नफ़ी में जवाब देते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : ''मैं रोज़े से हूं(2)।''(3)

﴾1326﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्क़द सबख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ त़वाफ़ के दौरान फ़रमा रहे थे : ''मैं अपने पेट की वज्ह से हलाक हो जाऊंगा क्यूंकि जब मैं इसे भरता हूं तो मुझे सांस नहीं लेने देता और अगर भूका रखता हूं तो मुझे बुरा भला कहता है।''(4)

﴾1327﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सात रोज़ तक मेहमान रहा। इस दौरान वोह, उन का ख़ादिम और उन की ज़ौजा बारी बारी रात को जागते (या'नी एक सोता तो दूसरा इ़बादत करता)।''(5)

---

(1).....الزھدلھنادبن السری،باب الغیبة للصائم،الحدیث:۱۲۰۷،ج۲،ص۷۳،''قعدوا''بدله''جلسوا''.

(2).....इस से मा'लूम हुवा कि नफ़्ली रोज़े की निय्यत ज़ह़्वए कुब्रा या'नी निस्फ़ुन्नहारे शरई से पहले पहले हो सकती है रात से होना ज़रूरी नहीं है। जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 967 पर मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''अदाए रोज़ए रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब से ज़ह़्वए कुब्रा तक है, इस वक़्त में जब निय्यत कर ले, येह रोज़े हो जाएंगे।'' (الدرالمختاروردالمحتار،کتاب الصوم،ج۳،ص ۳۹۳) नीज़ कुछ आगे लिखते हैं : ''दिन में निय्यत करे तो ज़रूर है कि येह निय्यत करे कि ''**मैं सुब्ह़े सादिक़ से रोज़ादार हूं**'' और अगर येह निय्यत है कि ''**अब से रोज़ादार हूं, सुब्ह़ से नहीं**'' तो रोज़ा न हुवा।'' (الدرالمختار،کتاب الصوم،ج۳، ص ۳۹٤)

(3).....السنن الکبریٰ للبیهقی،کتاب الصیام،باب المتطوع یدخل فی الصوم......الخ،الحدیث:۷۹۱۸،ج٤،ص۳٤۲.

(4).....الزھدللامام احمدبن حنبل،زھدابی ھریرة،الحدیث:۹۹۳،ص۱۹۷،''سبنی'' بدله''انصبنی''.

(5).....صحیح البخاری،کتاب الاطعمة، باب ٤٠،الحدیث:٥٤٤١،ص٤٦٩،بتغیر.

www.dawateislami.net

रोज़ाना बारह हज़ार बार इस्तिग़फ़ार :

﴾1328﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं हर रोज़ 12 हज़ार बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूं और येह मेरे दीन के ह़िसाब से है।" या रावी ने कहा कि "इन के दीन के ह़िसाब से है।"

हज़ार गिरहों वाला धागा :

﴾1329﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन मुहर्रज़ अपने दादा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में फ़रमाते हैं कि "उन के पास हज़ार गिरहें लगा हुवा एक धागा था जिस पर तस्बीह़ (या'नी سُبْحٰنَ الله) पढ़े बिग़ैर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه नहीं सोते थे।"(1)

ब वक़्ते वफ़ात रोने की वज्ह :

﴾1330﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन बिशर बिन ह़जल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने मरज़े विसाल में गिर्या कुनां हुवे तो किसी ने पूछा : "आप क्यूं रोते हैं ?" फ़रमाया : "मैं तुम्हारी इस दुन्या छूटने पर नहीं बल्कि अपने सफ़र के त़वील और ज़ादे राह के क़लील होने की वज्ह से अश्क बहा रहा हूं। मैं सुब्ह़ ऐसी दुश्वार गुज़ार घाटी पर गामज़न होऊंगा जो जन्नत में पहुंचाएगी या जहन्नम में उतारेगी और मैं नहीं जानता कि मेरा ठिकाना इन दोनों में से कहां होगा।"(2)

मस्जिद में नक़्शो निगार :

﴾1331﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जब तुम मसाजिद में नक़्शो निगार करने और मसाहिफ़ को मुज़य्यन व

---

1 ......صفة الصفوة،الرقم۹۷ابوھریرة،ج۱،ص۳۵۱.

2 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد،الرقم۵۲۰ابوھریرة،ج٤،ص۲۵۳۔

الزھدلابن المبارک مع ماروا ہ نعیم بن حماد فی نسخته زائدا،باب فی ذکرالموت،الحدیث:١٥٤،ص۳۸.

www.dawateislami.net

आरास्ता करने लगोगे तो हलाकत तुम्हारा मुक़द्दर बन जाएगी[1]।[2]

मौत एक खुली नसीहत है :

﴾1332﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मा'मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी जनाज़े के क़रीब से गुज़रते तो फ़रमाते : "तुम शाम को चले गए और हम सुब्ह़ को आने वाले हैं।" या फ़रमाते : "तुम सुब्ह़ को चल दिये हम शाम को आने वाले हैं। मौत

1.....येह उस वक़्त है जब मह़्ज़ तफ़ाख़ुर के त़ौर पर बिग़ैर किसी फ़ाइदे के मसाजिद में नक़्शो निगार किया जाए अलबत्ता बत़ौरे ता'ज़ीम मसाजिद को आरास्ता करना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तह़सन है इसी त़रह़ कुरआने ह़कीम को आरास्ता करना भी जाइज़ व मन्दूब है। चुनान्चे, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या में एक मक़ाम पर कुछ यूं रक़म त़राज़ हैं : "وَمَنۡ یُّعَظِّمۡ شَعَآئِرَ اللّٰہِ فَاِنَّہَا مِنۡ تَقۡوَی الۡقُلُوۡبِ ﴿۳۲﴾ (پ۱۷،الحج:۳۲) जो इलाही निशानियों की ता'ज़ीम करे तो वोह दिलों की परहेज़गारी से है। وقال اللّٰہ تبارک وتعالٰی : وَمَنۡ یُّعَظِّمۡ حُرُمٰتِ اللّٰہِ فَہُوَ خَیۡرٌ لَّہٗ عِنۡدَ رَبِّہٖ ؕ (پ۱۷،الحج:۳۰) जो इलाही आदाब की चीज़ों की ता'ज़ीम करे तो उस के लिये उस के रब के यहां बेहतरी है। इस की नज़ीर मुस्ह़फ़ शरीफ़ का मुत़ल्ला व मुज़ह्हब करना है कि अगर्चे सलफ़ में न था, जाइज़ व मुस्तह़ब है कि दलीले ता'ज़ीम व अदब है। दुर्रे मुख़्तार में है : मुस्ह़फ़ शरीफ़ मुत़ल्ला व मुज़ह्हब करना जाइज़ है क्यूंकि इस में इस की ता'ज़ीम है जैसा कि मस्जिद को मुनक़्क़श करने में। यूं ही मसाजिद की आराइश इन की दीवारों पर सोने चांदी के नक़्शो निगार की सद्रे अव्वल में न थे, बल्कि ह़दीस में था : "तुम मस्जिदों को आराइश करोगे जैसे यहूदो नसारा ने आराइश की।" मगर अब ज़ाहिरी तुज़्को एह़तिशाम ही क़ुलूबे आ़म्मा पर असरे ता'ज़ीम पैदा करता है लिहाज़ा अइम्मए दीन ने हुक्मे जवाज़ दिया। तबयीनुल ह़क़ाइक़ में है : गच और सोने के पानी से मस्जिद में नक़्श बनाना मकरूह नहीं है। रद्दुल मुह़तार में है : इस का क़ौल, जैसा कि मस्जिद की आराइश में, या'नी मेह़राब के इलावा, या'नी गच और सोने के पानी से। यूंही मस्जिदों के लिये कंगूरे बनाना कि मसाजिद के इम्तियाज़ और दूर से उन पर इत्तिलाअ़ का सबब हैं, अगर्चे सद्रे अव्वल में न थे। बल्कि ह़दीस शरीफ़ में इरशाद हुवा था : मस्जिदें मुन्डी बनाओ। दूसरी ह़दीस में है : या'नी मस्जिदें मुन्डी बनाओ उन में कंगूरे न रखो, और अपने शहर ऊंचे कंगूरे दार बनाओ। मगर अब बिलांकीर मुसलमानों में राइज है। और जिसे मुसलमान अच्छा समझें वोह ख़ुदा के यहां भी अच्छा है। इमाम इब्ने मुनीर शर्ह़े जामेए़ सह़ीह़ में फ़रमाते हैं : "या'नी ह़दीस से मुस्तम्बत़ किया गया है कि मस्जिदों की आराइश मकरूह है कि नमाज़ी का ख़याल बटेगा या इस लिये कि माल बेजा ख़र्च होगा, हां अगर ता'ज़ीमे मस्जिद के त़ौर पर आराइश वाक़ेअ़ हो और ख़र्च बैतुल माल से न हो तो कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, और अगर कोई शख़्स वसिय्यत कर जाए कि उस के माल से मस्जिद की गचकारी और उस में सुर्ख़ व ज़र्द रंग करें तो वसिय्यत नाफ़िज़ होगी कि लोगों में जैसी नई नई बातें पैदा होती गईं वैसे ही उन के लिये फ़तवे नए हुवे कि अब मुसलमानों, काफ़िरों सब ने अपने घरों की गचकारी और आराइश शुरूअ़ कर दी अगर हम इन बुलन्द इमारतों के दरमियान जो मुस्लिमीन तो मुस्लिमीन काफ़िरों की भी होंगी कच्ची ईंट और नीची दीवारों की मस्जिदें बनाएं तो निगाहों में उन की बे वुक़्अ़ती होगी।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 491)

2......سنن سعیدبن منصور،فضائل القرآن،الحدیث:۱۶۵،ج۲،ص۴۸۶،"زوقتم"بدلہ"زخرفتم"۔
الزھدلابن المبارک،باب ماجاء فی ذنب التنعم فی الدنیا،الحدیث:۷۹۷،ص۲۷۵،عن ابی الدرداء.

www.dawateislami.net

एक खुली नसीहत है और गफ़्लत जल्द आती है। अगले जा रहे हैं और बा'द वाले अभी ज़िन्दा हैं। कुछ समझ नहीं आता।"(1)

ख़ुत्बए अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ :

﴾1333﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद मदीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में मिम्बरे रसूल पर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जगह से एक ज़ीना नीचे खड़े हुवे और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने अबू हुरैरा को हिदायत बख़्शी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने अबू हुरैरा को कुरआने मजीद के उ़लूम से नवाज़ा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्तफ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए अबू हुरैरा पर एह़सान फ़रमाया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे उ़म्दा खिलाया और उ़म्दा पहनाया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने गज़्वान की बेटी से मेरी शादी कराई ह़ालांकि पहले मैं खाने के इवज़ उस का मुलाज़िम था। अब वोह मुझे सुवार करती है जैसे पहले मैं उसे सुवार करता था।" इस के बा'द फ़रमाया : "हलाकत है अ़रबों के लिये उस शर और बुराई से जो क़रीब आ चुकी है। हलाकत है उन के लिये लड़कों की हुक्मरानी से क्यूंकि वोह अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ फ़ैसला करेंगे और मह़ज़ गुस्से की बिना पर लोगों को क़त्ल करेंगे। ऐ बनी फ़र्रूख़ (या'नी अहले फ़ारस और अ़जमी लोगो) ! तुम्हारे लिये ख़ुश ख़बरी है ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर दीन सुरय्या में भी होता तब भी तुम में से कुछ लोग ज़रूर उसे ह़ासिल कर लेते।"(2)

15 खजूरों पर 2 दिन गुज़ारा :

﴾1334﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ियाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे पास 15 खजूरें थीं, मैं ने 5 खजूरों से रोज़ा इफ़्तार किया, 5 से सहरी की और बाक़ी 5 इफ़्तारी के लिये बचा रखीं।"

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) ......المصنف لعبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب القول اذا رأیت الجنازة، الحدیث: ٦٦٩٠، ج٣، ص٣٦٠.

(2) ......الزھد للامام احمدبن حنبل، اخبارمعاذ بن جبل، الحدیث: ١٠١٤، ص٢٠٠.

www.dawateislami.net

लौंडी को आज़ाद फ़रमा दिया :

﴾1335﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मुतवक्किल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक ह़ब्शिया लौंडी थी। उस ने अपनी ह़रकतों से लोगों को तंग कर रखा था। एक दिन हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पर डंडा उठाया और फ़रमाया : "अगर क़िसास (या'नी बदला देना) न होता तो मैं तुझे मार मार कर बेहोश कर देता लेकिन अब मैं तुझे उसे फ़रोख़्त कर दूंगा जो मुझे तेरी पूरी क़ीमत देगा। जा तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है।"(1)

मौत ख़ालिस सोने से भी ज़ियादा मह़बूब होगी :

﴾1336﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हो गए तो मैं उन की इ़यादत के लिये गया और वहां येह दुआ़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अबू हुरैरा को शिफ़ा अ़ता फ़रमा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस दुआ़ को क़बूल न फ़रमा।" फिर फ़रमाया : "ऐ अबू सलमह ! लोगों पर एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि मौत उन्हें ख़ालिस सोने से ज़ियादा पसन्द होगी।"(2)

छे चीज़ों के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना :

﴾1337﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब तुम 6 चीज़ें देख लो तो अगर तुम्हारी जान तुम्हारे क़ब्ज़े में हो तो उसे छोड़ दो। इसी वज्ह से मैं मौत की तमन्ना करता हूं इस ख़ौफ़ से कि कहीं उन चीज़ों का ज़माना न पा लूं जब बे वुक़ूफ़ हुक्मरान हों फ़ैसले बिकने लगें जानें मह़फ़ूज़ न रहें रिश्ते काटे जाएं, क़ौम के मुहाफ़िज़ क़ौम के लुटेरे बन जाएं और लोग क़ुरआने मजीद, गा कर पढ़ने लगें।"(3)

---

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد ابی هريرة، الحديث: ٩٩٠، ص ١٩٧، "قد غمتم" بدله "قد عمتهم".

2 ......الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٥٢٠ ابو هريرة، ج ٤، ص ٢٥٢.

3 ......الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٥٢٠ ابو هريرة، ج ٤، ص ٢٥١، مختصرًا۔
المصنف لعبد الرزاق، كتاب الصلاة، باب حسن الصوت، الحديث: ٤١٩٧، ج ٢، ص ٣٢٢، مختصرًا۔
تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٨٨٩٥ ابو هريرة، ج ٦٧، ص ٣٧٩.

www.dawateislami.net

अपना काम ख़ुद करते :

﴾1338﴿.....हज़रते सय्यिदुना सा'लबा बिन अबी मालिक कुरज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बाज़ार गए और लकड़ियों का गठ्ठा उठा लाए। चूंकि उन दिनों आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मरवान के नाइब थे। फ़रमाने लगे : "ऐ इब्ने अबी मालिक! अमीर के लिये रास्ता कुशादा करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "इस काम में आप को किफ़ायत करने वाले (आप के बच्चे और ग़ुलाम) मौजूद हैं (तो फिर क्यूं इतनी तक्लीफ़ उठाते हैं)।" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दोबारा येही फ़रमाया : "अमीर के लिये रास्ता कुशादा करो उस के सर पर लकड़ियों का गठ्ठा है।"(1)

घर के बाहर क्या लिखवाऊं ?

﴾1339﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि एक शख़्स ने मदीनए तय्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِيۡمًا में घर बनवाया। घर की ता'मीर मुकम्मल होने के बा'द एक दिन वोह अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा था कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का वहां से गुज़र हुवा तो उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! ज़रा ठहर जाइये ! और मुझे येह बताइये कि मैं घर के दरवाज़े पर क्या लिखवाऊं ?" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "लिखवाओ घर वीरान होने के लिये होते हैं। औलाद फ़ौत होने के लिये और माल वुरसा के लिये जम्अ़ किया जाता है।" उस वक़्त वहां एक आ'राबी (या'नी देहात का रहने वाला) भी मौजूद था। उस ने कहा : "शैख़ ! तुम ने कितनी बुरी बात कही है !" घर के मालिक ने आ'राबी से कहा : "तेरी हलाकत हो ! येह नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबी हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं।"(2)

---

1 ......الزهدلابی داؤد،من اخبارابی هريرة،الحديث:٢٨٤،ج١،ص٣٠٧.

2 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر،الرقم٨٨٩٥ابوهريرة،ج٦٧،ص٣٧٤.

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	मुहाजिरीन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن	सफ़्हा नम्बर
1	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	83
2	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	100
3	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	130
4	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم)	141
5	ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	177
6	ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	180
7	ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	186
8	ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	190
9	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	194
10	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	199
11	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	202
12	ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर दारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	210
13	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	213
14	ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	214
15	ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	217
16	ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	220
17	ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	224
18	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ	231

www.dawateislami.net

19	ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	237
20	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	239
21	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	243
22	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	269
23	ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	276
24	ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	284
25	ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	291
26	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	301
27	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	324
28	ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	326
29	ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)	334
30	ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	336
31	ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	340
32	ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	345
33	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	346
34	ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	348
35	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	386
36	ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	416
37	ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	439
38	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	444

www.dawateislami.net

39	हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	450
40	हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	459
41	हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	470
42	हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	480
43	हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)	501
44	हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)	515
45	हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)	552
46	हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)	577
	अस्हा़बे सुफ्फ़ा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن	
47	हज़रते सय्यिदुना औस बिन औस सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	608
48	हज़रते सय्यिदुना अस्मा बिन हा़रिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	610
49	हज़रते सय्यिदुना अग़र्र मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	610
50	हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	611
51	हज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	612
52	हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	613
53	हज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह्हा़क رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	614
54	हज़रते सय्यिदुना साबित बिन वदीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	616
55	हज़रते सय्यिदुना सक़ीफ़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	616
56	हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	616
57	हज़रते सय्यिदुना जरहद बिन ख़ुवैलिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	618

www.dawateislami.net

58	हज़रते सय्यिदुना जुऐल बिन सुराक़ा ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	618
59	हज़रते सय्यिदुना जारिया बिन हुमैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	619
60	हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	619
61	हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	621
62	हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	622
63	हज़रते सय्यिदुना हारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	623
64	हज़रते सय्यिदुना हाज़िम बिन हर्मला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	624
65	हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन अबी आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	624
66	हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	625
67	हज़रते सय्यिदुना हकम बिन उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	626
68	हज़रते सय्यिदुना हर्मला बिन इयास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	627
69	हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	628
70	हज़रते सय्यिदुना खुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	631
71	हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	632
72	हज़रते सय्यिदुना खुरैम बिन फ़ातिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	634
73	हज़रते सय्यिदुना खुरैम बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	635
74	हज़रते सय्यिदुना खुबैब बिन यसाफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	637
75	हज़रते सय्यिदुना दुकैन बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	637
76	हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	638
77	हज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा रिफ़ाआ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	639

www.dawateislami.net

78	हज़रते सय्यिदुना अबू रुज़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	640
79	हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	642
80	हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	642
81	हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	643
82	हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	644
83	हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	644
84	हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक (अबू सईद ख़ुदरी) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	647
85	हज़रते सय्यिदुना सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	648
86	हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	649
87	हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	651
88	हज़रते सय्यिदुना साइब बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	651
89	हज़रते सय्यिदुना शुक़रान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	652
90	हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	652
91	हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	653
92	हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन बैज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	653
93	हज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	654
94	हज़रते सय्यिदुना त़लहा बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	655
95	हज़रते सय्यिदुना तुफ़ावी दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	656
96	हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	656
97	हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	658

www.dawateislami.net

मुबल्लिग़ीन के लिये फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
(1) ख़ौफ़े ख़ुदा का बयान		हाफ़िज़े क़ुरआन को कैसा होना चाहिये ?	253
हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ का ख़ौफ़े ख़ुदा	124	शैतान को भगाने का क़ुरआनी नुस्ख़ा	254
मैं येह पसन्द करूंगा कि मिट्टी हो जाऊं	139	क़ुरआने करीम को अपना इमाम व पेश्वा बना लो	454
पुल सिरात़ से गुज़रने का ख़ौफ़	232	अ़ज़मते क़ुरआन	461
हिसाबो किताब का ख़ौफ़	258	फ़ज़ाइले क़ुरआन	596
ख़ौफ़े ख़ुदा की एक झलक	259	क़ुरआने हकीम और अहले बैत	622
एक चादर के हिसाब का डर	312	ख़ुश इल्हान क़ारिये क़ुरआन	649
काश मैं दरख़्त होता !	313	**(3) फ़िक्रे आख़िरत का बयान**	
हिसाब की शिद्दत का ख़ौफ़	387	सिद्दीक़े अक्बर की फ़िक्रे आख़िरत	86
सब से ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा करने वाली बात	395	हिसाबे आख़िरत का ख़ौफ़	123
क़ब्रो हश्र का ख़ौफ़	398	सफ़रे आख़िरत की तय्यारी का दर्स	260
ख़शिय्यते इलाही से रोने की फ़ज़ीलत	453	दुन्या की ख़ातिर आख़िरत को नुक़्सान न पहुंचाओ	267
जहन्नम का ख़ौफ़	471	फ़िक्रे आख़िरत	314
2 अम्न और 2 ख़ौफ़	479	हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी का नसीहत भरा बयान	315
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर का ख़ौफ़े ख़ुदा	535	हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा की फ़िक्रे आख़िरत	386
(2) क़ुरआन		बुख़ार में भी फ़िक्रे आख़िरत	408
सिद्दीक़े अक्बर की क़ुरआन फ़ेहमी	86	मेहमानों को दर्से आख़िरत	408
अ़लिय्युल मुर्तज़ा और हिफ़ाज़ते क़ुरआन	147	फ़िक्रे आख़िरत पर मब्नी बयान	428
आंखों के बजाए दिल रोता है	198	आख़िरत के बेटे बनो	471

www.dawateislami.net

आख़िरत की तय्यारी का दर्स	496	मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत	456
(4) राहे ख़ुदा में माल और जान ख़र्च करने का बयान		मोमिन में 4 ख़स्लतें	457
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा	89	सब्र की तल्क़ीन	510
राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना	135	सब्र का उख़रवी इन्आम	510
राहे ख़ुदा में 300 ऊंट पेश किये	136	सब्र की अहम्मिय्यत का बयान	647
राहे ख़ुदा में 70 ज़ख़्म खाए	177	मुसीबत हस्बे फ़ज़ीलत आती है	648
दुन्या व दौलत से बे रग़बती	183	(6) दुन्या की मज़म्मत का बयान	
बन्दे का दिल	262	दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी	55
राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरों की तकालीफ़	277	दुन्या के बारे में नसीहत	93
आग का अंगारा	311	दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लो	120
हर माल में 3 हिस्सेदार हैं	312	शेरे ख़ुदा ﷺ की दुन्या से बे रग़बती	155
30 हज़ार दिरहम का सदक़ा	520	दुन्या की मज़म्मत	155
एक साल में एक लाख दिरहम सदक़ा	522	निगाहे अ़ली में दुन्या की हक़ीक़त	156
एक रात में 10 हज़ार दिरहम की ख़ैरात	522	दुन्या व दौलत से बे रग़बती	183
राहे ख़ुदा में मोमिन का दिल	643	ख़ुशहाली के फ़ितने का ख़ौफ़ ज़ियादा है	188
(5) सब्र का बयान		दुन्या की ख़ातिर आख़िरत को नुक़्सान न पहुंचाओ	267
सब्रो शुक्र इख़्तियार करो	122	दुन्या से नफ़रत	307
उस्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ के सब्र का बयान	133	हक़ीक़ते दुन्या को बे निक़ाब करने वाला बयान	324
चेहरे का रंग बदलता रहा	134	दुन्या की महब्बत का वबाल	343
2 फ़ज़ीलतें	135	माले दुन्या ने रुला दिया	364
सब्र, यक़ीन, जिहाद और अ़द्ल के शो'बे	158	दुन्या की मिसाल	455

www.dawateislami.net

दुन्यावी इज़्ज़त बाइसे नजात नहीं	550
(7) हया का बयान	
सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की हया	92
उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ की शर्मो हया	131
हया में मज़ीद इज़ाफ़ा	139
बे हयाई की आफ़ात	379
हज़रते सय्यिदुना आदम علیٰ نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام की हया	456
पैकरे शर्मो हया	465
कामिल हया	627
(8) इनफ़िरादी कोशिश का बयान	
इनफ़िरादी कोशिश का दिलनशीन अन्दाज़	353
ख़त़ के ज़रीए़ इनफ़िरादी कोशिश	380
नमाज़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश	382
दोस्त पर इनफ़िरादी कोशिश	399
तक़्दीर में झगड़ने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश	570
(9) इ़ल्म और उ़लमा का बयान	
सय्यिदुना अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ का इ़ल्म, हिक्मत और दानाई	145
आ़लिम, त़ालिबे इ़ल्म और जाहिल	166
इब्ने मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ का इ़ल्मी मक़ाम	251
इ़ल्म कसरते रिवायत से नहीं ह़ासिल होता	255
आ़लिम और जाहिल दोनों के लिये हलाकत ?	255

जाहिल व बे अ़मल के लिये हलाकत	390
आ़लिम की निशानी	391
आ़लिम व जाहिल की इ़बादत में फ़र्क़	391
भलाई किस में है ?	392
ज़िन्दगी को पसन्द करने की वज्ह	392
दीन सीखने और सिखाने वाला अज्र में बराबर हैं	393
इ़ल्म के ए'तिबार से लोगों की अक़्साम	393
हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ की नसीह़त	393
तक़्वा बिग़ैर इ़ल्म और इ़ल्म बिग़ैर अ़मल के कामिल नहीं	394
उ़लमा की ना पसन्दीदगी से बचो	410
इ़ल्मे दीन की मह़ब्बत ने रुला दिया	425
इ़ल्म के फ़ज़ाइलो बरकात	431
साहिबे इ़ल्म व ह़िल्म	471
फ़क़ीहुल उम्मत	472
ख़्वाब में इ़ल्म की बिशारत	505
ह़ासिद और मुतकब्बिर आ़लिम नहीं हो सकता	537
इ़ल्मो फ़ेहम में तरक़्क़ी की दुआ़	553
ह़िक्मत व दानाई की दुआ़	553
इ़ल्मो ह़िक्मत की दुआ़	554
अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ का इ़ल्मी मक़ाम	555
उम्मत के बड़े आ़लिम	556

www.dawateislami.net

इब्ने अ़ब्बास और तफ़्सीरे कुरआन	556	3 बातों की नसीह़त	558
इल्मे तफ़्सीर में आप ﷺ का मक़ाम	558	बादशाह का ख़ौफ़ हो तो क्या पढ़ा जाए ?	565
ख़ारिजियों को मुंह तोड़ जवाबात	559	6 चीज़ों के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना	672
3 सुवालात के जवाबात	562	**(11) ह़िकायात**	
इल्म सीखने वालों की भीड़	563	फ़ारूके़ आ'ज़म ﷺ की शुजाअ़त व बहादुरी	101
सुफ़्फ़ा वालों की भूक का आ़लम	593	फ़ारूके़ आ'ज़म ﷺ के इस्लाम लाने की इब्तिदा	103
अहले सुफ़्फ़ा की ता'दाद और ह़ालात	595	फ़ारूक़ का लक़ब कैसे मिला ?	103
इल्म की अहम्मिय्यत	657	मक्का की गलियां गूंज उठीं	105
त़लबे इल्म में 9 दिन का सफ़र	657	मुशरिकीन को शिकस्त	107
ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा ﷺ का इल्मे ह़दीस	666	छोटी बड़ी आस्तीनों वाली क़मीस	112
(10) मुतफ़र्रिक़ात		रिआ़या की ख़बर गीरी	116
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सफ़ीर	80	फ़ारूके़ आ'ज़म ﷺ का जन्नत में मह़ल	127
3 चीज़ें	122	शुक्राने में एक गुलाम आज़ाद	138
4 शो'बे (सब्र, यक़ीन, जिहाद और अ़द्ल)	158	ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم के मह़बूब	141
मौत इन्सान की मुह़ाफ़िज़ है	160	तस्बीहे़ फ़ात़िमा के फ़ज़ाइल	150
(41) सुन्हरे फ़रामीने आ़लीशान	268	कस्बे ह़लाल के लिये मेहनत व मज़दूरी	154
27 सुवालात व जवाबात	316	मोहर लगा हुवा सत्तू का थैला	170
भलाई किस में है ?	392	सय्यिदुना त़लह़ा ﷺ की सख़ावत	179
बुरे कामों से ह़िफ़ाज़त की दुआ़	405	जिस्म पर ज़ख़्मों के निशान	182
बुख़ार की फ़ज़ीलत	458	एक टुकड़े पर गुज़ारा	187
शिर्के ख़फ़ी पर इल्मी मुकालमा	478	झूटी औरत अन्धी हो कर मर गई	191

www.dawateislami.net

इस्लामी भाइयों से इज़्हारे हमदर्दी	203	सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ عنہ ने निकाह़ कर लिया	372
तब्लीगे़ दीन के लिये कोशिशें	210	सलाम भी हदिय्या है	373
शहद की मख्खियों के ज़रीए़ हिफ़ाज़त	217	दुश्मन से दरगुज़र	389
बेहतरीन क़ैदी और ग़ैबी रिज़्क़	220	तन्हाई में गुनाह करने की दुन्यावी सज़ा	397
नजाशी के दरबार में ए'लाने ह़क़	224	प्याले वाला वाक़िआ़	411
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया	232	अल्लाह عزوجل की पाकी बोलने वाली हन्डिया	411
ग़ैबों पर ख़बरदार आक़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم	236	इन्साफ़ की उ़म्दा व ला जवाब मिसाल	425
मुझे जन्नत की ख़ुश्बू आ रही है	237	तमाम सह़ाबा आपस में भाई–भाई हैं	430
70 क़ुर्रा सह़ाबा رضی اللہ تعالیٰ عنہم की शहादत	241	घर अम्न का गहवारा कैसे बना ?	439
सय्यिदुना बिलाल رضی اللہ تعالیٰ عنہ की इस्तिक़ामत	284	अहले ह़िम्स की 4 शिकायात	440
नफ़्अ़ बख़्श तिजारत	292	ह़िम्स के गवर्नर का तक़र्रुर	444
खाने में ह़ैरत अंगेज़ बरकत	296	ह़ज़रते सय्यिदुना आदम علی نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام की ह़या	456
3 बरस तक नमाज़ पढ़ी	302	ग़ैबी आवाज़	464
इज़्हारे इस्लाम का वाक़िआ़	303	रोटी वाला इ़बादत गुज़ार	469
दुन्या से नफ़रत	307	300 दिरहम का कफ़न	500
ह़ज़रते अबू ज़र رضی اللہ عنہ का विसाले पुर मलाल	323	सुन्नत से रू गर्दानी	504
सरकार صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم के मेहमान	328	सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र की सख़ावत	513
अमीरे लश्कर से मुआ़फ़ी मंगवाई	333	ख़िलाफ़त का सह़ीह़ ह़क़दार	517
सुन्नते निकाह़ में शरीअ़त की पासदारी	348	मन पसन्द ऊंटनी ख़ैरात कर दी	519
कुफ़्फ़ार से जंग में सुन्नत त़रीक़ा	354	पसन्दीदा लौंडी आज़ाद कर दी	519
मज़हबे ह़क़ की तलाश	356	एक रात में 10 हज़ार दिरहम की ख़ैरात	522

www.dawateislami.net

मछली खाने की ख़्वाहिश	524	मस्जिद ही उन का घर था	617
यतीमों पर शफ़्क़त	526	गुलामों पर शफ़्क़त	620
सवाब की उम्मीद	528	मोमिन को हर ख़र्च में सवाब मिलता है	629
मदीने की हाज़िरी	543	हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا का निकाह	631
मैं तो मग़्फ़िरत चाहता हूं	544	निगाहे मुस्तफ़ा का कमाल और सहाबी की सादगी	635
फ़क़त सलाम करने बाज़ार जाते	546	मुसलमान होते ही जिहाद में हिस्सा लिया	637
मदनी आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने दुआओं से नवाज़ा	553	सुनो और इताअ़त करो	638
ख़ारिजियों को मुंह तोड़ जवाबात	559	हज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رضی اللہ عنہ और शेर	645
3 सुवालात के जवाबात	562	आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم दा'वत से लौट आए	646
इल्म सीखने वालों की भीड़	563	पेट के बल लेटना अल्लाह عزوجل को	
टिड्डी की अ़जीब हिकायत	566	पसन्द नहीं	654
एक क़दरी की तौबा का अ़जीब वाक़िआ़	572	तलबे इल्म में 9 दिन का सफ़र	657
एक सालेह़ व ख़ाइफ़ नौजवान	573	इस्लाम के मेहमान	659
सफ़ेद परन्दा कफ़न में दाख़िल हो गया	576	सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ की भूक का ज़िक्र	660
रह़मते आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का बा बरकत ख़ून	577	गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया	665
अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہ की बे मिस्ल शहादत	580	सारा साल रोज़ों का सवाब	667
आयते मुबारका का शाने नुज़ूल	601	लौंडी को आज़ाद फ़रमा दिया	672
सर्दी गर्मी में बदल गई	612	घर के बाहर क्या लिखवाऊं ?	673

www.dawateislami.net

مآخذومراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن لاہور
کنزالایمان فی ترجمۃِ القرآن	اعلیٰحضرت امام احمد رضاخان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن لاہور
تفسیر ابن ابی حاتم	امام عبد الرحمٰن بن ابی حاتم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۷ ھ	المکتبۃ الشاملۃ
تفسیرالطبری	امام ابو جعفرمحمد بن جریرطبری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
تفسیر القرطبی	امام ابوعبد اللہ محمد بن احمدانصاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر ابن کثیر	امام حافظ عماد الدین ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
تفسیرخزائن العرفان	مفتی نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن لاہور
تفسیر نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی لاہور
تفسیرنعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن لاہور
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار السلام ریاض
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار السلام ریاض
جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار السلام ریاض
سننِ ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار السلام ریاض
سننِ نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار السلام ریاض
سننِ ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار السلام ریاض
صحیح ابن خزیمہ	امام ابوبکرمحمد بن خزیمہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی ۱۴۱۲ھ
صحیح ابن حبان	علاء الدین علی بن بلبان فارسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۳۹ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
کتاب المراسیل لابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	ملتان پاکستان
الزھد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	المکتبۃ الشاملہ
مسند ابی داؤد الطیالسی	امام ابو داؤدطیالسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۰۴ھ	دار المعرفۃ ۱۴۱۷ھ
مسند الحارث	حارث بن ابی اسامہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۲ھ	المکتبۃالشاملۃ
المسند	ابو یعلی احمدموصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ

www.dawateislami.net

المسند	امام احمد بن حنبل رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲٤۱ھ	دارالفکر بیروت ۱٤۱٤ھ
الزھد	امام احمد بن حنبل رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲٤۱ھ	دارالغدجدید ۱٤۲٦ھ
الورع	امام احمد بن حنبل رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲٤۱ھ	المکتبة الالفیه
فردوس الاخبار	حافظ شھرویه بن شھر دارد یلمی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت ۱٤۱۸ھ
البحرالزخا رالمعروف بمسندالبزا ر	امام ابو بکر احمد بن عمرو بزا ر رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبة العلوم والحکم ۱٤۲٤ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمدطبرانی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۳٦۰ھ	داراحیاء التراث ۱٤۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمدطبرانی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۳٦۰ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲۰ھ
مسندالشامیین	حافظ سلیمان بن احمدطبرانی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۳٦۰ھ	المکتبة الالفیه
موسوعه لابن ابی الدنیا	حافظ ابی بکر عبداللّٰه ابن ابی الدنیارحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲۸۱ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲٦ھ
مکارم الاخلاق	حافظ ابی بکر عبداللّٰه ابن ابی الدنیارحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲۸۱ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲۳ھ
سنن الدارمی	امام عبداللّٰه بن عبدالرحمن رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲۵۵ھ	دارالکتب ا لعربی ۱٤۰۷ھ
المستد رک	امام محمد بن عبد اللّٰه حاکم رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ٤۰۵ھ	دارالمعرفة بیروت ۱٤۱۸ھ
السنن الکبرٰی للنسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۱۱ھ
السنن الکبرٰی للبیھقی	اماماحمد بن الحسین بیھقی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ٤۵۸ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲٤ھ
دلائل النبوۃ للبیھقی	اماماحمد بن الحسین بیھقی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ٤۵۸ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲ ھ
شعب الایمان للبیھقی	اماماحمد بن الحسین بیھقی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ٤۵۸ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲۱ھ
الزھد الکبیر للبیھقی	اماماحمد بن الحسین بیھقی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ٤۵۸ھ	موسؤالکتب الثقافیة ۱٤۱۷ھ
البعث والنشور	اماماحمد بن الحسین بیھقی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ٤۵۸ھ	المکتبة الشامله
دلائل النبوۃ	اسماعیل بن محمد التیمی اصبھانی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۵۳۵ھ	المکتبة الالفیه
کتاب العظمه	ابومحمدعبداللّٰه بن محمد اصبھانی رحمة الله علیه متوفّٰی ۵۳۵ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۱٤ھ
مؤطا امام مالک	امام مالک بن انس رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۱۷۹ھ	دارالمعرفة بیروت ۱٤۱۸ھ
المصنف	امام عبداللّٰه بن محمد بن ابی شیبةرحمة اللّٰه علیه ۲۳۵ھ	دارالفکر بیروت ۱٤۱٤ھ
المصنف	امام عبد الرزاق صنعانی رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۱٤ھ
التاریخ الکبیر	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمة اللّٰه علیه متوفّٰی ۲۵٦ھ	دارالحدیث پاکستان

www.dawateislami.net

التاریخ الصغیر	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵٦ھ	المکتبۃ الالفیہ
الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵٦ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲۲ھ
الشمائل المحمدیۃ	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	داراحیاء التراث العربی
الأوسط لابن المنذر	علامہ ابوبکرمحمدبن ابراھیم بن المنذ ررحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۱۸ھ	المکتبۃ الشاملہ
کتاب السنن	ابوعثمان سعید بن منصورخراسانی رحمہ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۲۷ھ	المکتبۃ الالفیہ
اخبارمکہ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسحاق فاکہی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۸۵ھ	دارخضربیروت ۱٤۱۹ھ
السنۃ لابی عاصم	امام ابو بکر احمد بن عمرو رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۸۷ھ	دار ابن حزم ۱٤۲٤ھ
المطالب العالیہ	امام احمد بن الحجرعسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲٤ھ
تاریخ بغداد	امام ابو بکر احمد بن خطیب بغدادی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤٦۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۱۷ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد اللّٰہ جرجانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳٦۵ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۱۸ھ
کتاب الثقات	امام ابوحاتم محمد بن حبان تمیمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۵٤ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲۲ھ
حلیۃ الاولیاء	امام الحافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۱۸ھ
الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابو عمر یوسف عبداللّٰہ بن عبدالبرقرطبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤٦۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲۲ھ
فتح الباری	امام احمدبن حجرعسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲ھ
الاصابہ فی تمییزالصحابہ	امام احمدبن حجرعسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۱۵ھ
المغنی لابن قدامہ	ابو محمد عبداللّٰہ بن احمد قدامۃ حنبلی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٦۲۰ ھ	مکتبہ ھجر ۱٤۱۲ھ
سیراعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمدذھبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷٤۸ھ	دار الفکر بیروت ۱٤۱۷ھ
کتاب الزھد	امام عبد اللّٰہ بن مبارک مروزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الجھاد	امام عبد اللّٰہ بن مبارک مروزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	المکتبۃ الالفیہ
السیرۃ النبویۃ	ابو محمد عبدالملک بن ھشام رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۱۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲۲ھ
الجامع الصغیر	ابوبکربن عبدالرحمن جلال الدین سیوطی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱٤۲۵ھ
جامع الاحادیث	ابوبکربن عبدالرحمن جلال الدین سیوطی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت ۱٤۱٤ھ
تاریخ الخلفاء	ابوبکربن عبدالرحمن جلال الدین سیوطی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	کراچی پاکستان
تاریخ مدینہ دمشق	حافظ امام ابن عساکررحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱٤۱۵ھ

www.dawateislami.net

كتاب الجامع	امام الحافظ معمر بن راشد ازدی رحمة الله علیه متوفّٰی ١٥١ھ	دارالکتب العلمية١٤٢١ھ
الجامع	عبدالله بن وهب بن مسلم مصری قرشی رحمة الله علیه متوفّٰی ١٩٧ھ	المکتبة الشامله
الاموال	حمید بن مخلد المعروف بابن زنجویه رحمة الله علیه متوفّٰی ٢٥١ھ	المکتبة الشامله
روضة العقلاء ونزهة الفضلاء	امام ابو حاتم محمدبن حبان تمیمی رحمة الله علیه متوفّٰی ٣٥٤ھ	المکتبة الشامله
صفة الصّفوة	امام ابو الفَرَج بن جوزی رحمة الله علیه متوفّٰی ٥٩٧ھ	دارالکتب العلميه١٤٢٣ھ
القصاص والمذكرين	امام ابو الفَرَج بن جوزی رحمة الله علیه متوفّٰی ٥٩٧ھ	المکتبةالشاملة
الطبقات الكبرىٰ	محمد بن سعد بن منيع هاشمی بصری رحمة الله علیه متوفّٰی ٢٣٠ھ	دارالکتب العلمية١٤١٨ھ
كنز العمال	علامة علاء الدين على متقى هندی رحمة الله علیه متوفّٰی ٩٧٥ھ	دارالکتب العلمية١٤١٩ھ
التمهيد	امام يوسف بن عبد اللّٰه محمد بن عبد البر رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٦٣ھ	دارالکتب العلمية١٤١٩ھ
الترغيب فى فضائل الاعمال	امام عمربن احمد المعروف بابن شاهين رحمة الله علیه متوفّٰی ٣٨٥ھ	المکتبةالشاملة
مجمع الزوائد	انورالدين على بن ابى بكرهيثمى رحمة الله علیه متوفّٰی ٨٠٧ھ	دارالفكربيروت١٤٢٠ھ
ميزان الاعتدال	امام شمس الدين محمد بن احمدذهبی رحمة الله علیه متوفّٰی ٧٤٨ھ	دار الفكربيروت١٤٢٠ھ
سنن سعيدبن منصور	سعدبن عبدالله بن عبدالعزيزآل حميد رحمة الله علیه متوفّٰی ٢٢٧ھ	دارالصميعى١٤٢٠ھ
فضائل الصحابة	امام احمد بن حنبل رحمة الله علیه متوفّٰی ٢٤١ھ	المکتبة الالفيه
معرفة الصحابه	امام الحافظ ابو نعيم اصفهانی رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٣٠ ھ	دارالکتب العلميه١٤٢٢ھ
فضائل الخلفاء الراشدين	حافظ امام ابو نعيم اصفهانی رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٣٠ھ	المکتبةالشامله
المصاحف	ابوبكر عبدالله بن سليمان بن اشعث رحمة الله علیه متوفّٰی ٣١٦ھ	المکتبةالشامله
المحدث الفاصل	حسن بن عبدالرحمن رامهرمزی رحمة الله علیه متوفّٰی ٣٦٠ ھ	المکتبة الالفيه
السنن الوارة فى الفتن	ابوعمروعثمان بن سعيدمقرئ رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٤٤ ھ	المکتبة الالفيه
مسند ابن الجعد	على بن جعدجوهری بغدادی رحمة الله علیه متوفّٰی ٢٣٠ھ	المکتبة الالفيه
مسندحميدى	علامه عبدالله بن زبيرابوبكرحميدى رحمة الله علیه متوفّٰی ٢١٩ھ	المکتبة الالفيه
الزهد لوكيع	ابو سفيان وكيع بن الجراح رحمة الله علیه متوفّٰی ٢٢٩ھ	المکتبةالشامله
فوائدابى على الصواف	علامه ابوعلى محمدبن احمد صواف رحمة الله علیه متوفّٰی ٣٥٩ھ	المکتبةالشامله
الرسالة القشيرية	امام ابو القاسم عبدالكريم قشيرى رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٦٥ھ	دارالکتب العلمية١٤١٨ھ

www.dawateislami.net

الآحادوالمثانی	ابوبکراحمد بن عمروبن ضحاك شيبانی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ٢٨٧ھ	المكتبة الالفية
معجم الاسامی شيوخ ابی بکر	....	المكتبةالشاملة
الزهد للمعافی	ابومسعودالمعافی بن عمران موصلی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ١٤٨ يا ١٨٥ھ	المكتبةالشاملة
كتاب الضعفاء للعقيلی	محمد بن عمروبن موسىٰ بن حمادعقيلی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ٣٢٢ھ	دارالصميعی ١٤٢٠ ھ
الزهد لهناد	هناد بن سری كوفی رحمة اللّٰه عليهمتوفّٰی ٢٤٣ھ	المكتبة الالفية
شرح اصول عقائد	ابو القاسم هبة اللّٰه ابن الحسن بن منصوررحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ٤١٨ھ	دارالبصيرة مصر
كرامات اولياء	هبة اللّٰه بن حسن طبری لالكائی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ٤١٨ ھ	المكتبة الالفيه
مختصرجامع بيان العلم وفضله	ابوعمريوسف بن عبدالبرقرطبی اندلسی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ٣٢٢ھ	دارالخيربيروت ١٤١٣ھ
شرح العلامة الزرقانی	امام محمدبن عبدالباقی زرقانیرحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ١١٢٢ھ	دارالكتب العلمية ١٤١٧ھ
رجال حول الرسول	علامه خالد محمد خالد	المكتبة الشامله
امالی ابن سمعون	علامه ابن سمعون	المكتبة الشامله
نزهة القاری	حضرت علامه شريف الحق امجدی رحمة اللّٰه عليه متو فّٰی ١٤٢١ھ	فريد بك اسٹال ١٤٢١ھ
مراۃ المناجيح	حكيم الامت مفتی احمد يار خان نعيمی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ١٣٩١ھ	ضياء القرآن لاهور
فتاوی رضويه	اعلیحضرت امام احمد رضاخان رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ١٣٤٠ھ	رضافائونڈيشن ١٤١٢ھ
الفتاوی الهنديه	علامه نظام الدين رحمة الله عليه متوفّٰی ١١٦١ه وعلمائے هند	كوئٹه پاكستان ١٤٠٣ھ
بهارشريعت	صدرالشريعه مفتی امجد علی اعظمی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ١٣٧٦ھ	ضياء القرآن لاهور
خطبات محرم	فقيه ملت مفتی جلال الدين امجدی رحمة اللّٰه عليه متوفّٰی ١٤٢٢ھ	شبير برادرزلاهور ١٩٨٩ء
فيضان سنت	اميراهلِسنت حضرت علّامه مولانامحمدالياس عطّارقادری مدظله العالی	مكتبة المدينة كراچی
نمازكے احكام	اميراهلِسنت حضرت علّامه مولانامحمدالياس عطّارقادری مدظله العالی	مكتبة المدينة كراچی
رفيق الحرمين	اميراهلِسنت حضرت علّامه مولانامحمدالياس عطّارقادری مدظله العالی	مكتبة المدينة كراچی
لسان العرب	جمال الدين محمدبن مكرم ابن منظورافريقی مصری متوفّٰی ٩١١ھ	مؤسسة الاعلمی ١٤٢٦ھ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा 202 कुतुबो रसाइल मअ़ अ़न क़रीब आने वाली 13 कुतुबो रसाइल

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत﴿

उर्दू कुतुब

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

03....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْقِ) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

07....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हिस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

08....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

09....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

10....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

11....औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

12....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

13....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

14....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

15....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

अ़रबी कुतुब

16, 17, 18, 19, 20.....جَدُّ الْمُمْتَارِعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول و الثانى و الثالث و الرابع و الخامس) (कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)

21.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़ह़ात : 458)

22.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74)

23..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

24.... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : 93)

25.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِي (कुल सफ़ह़ात : 46)

26.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़ह़ात : 77)

27.....اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़ह़ात : 70)

28.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़ह़ात : 60)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01.... جَدُّ الْمُمْتَارِعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار(المجلدالسادس)

02.....औलाद के हुक़ूक़ की तफ़्सील (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد)

www.dawateislami.net

﴾शो'बए तराजिमे कुतुब﴿

01.....मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِی حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه) (कुल सफ़्हात : 112)

02.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़्हात : 28)

03.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़्हात : 142)

04.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़्हात : 54)

05.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِی ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़्हात : 743)

06.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 853)

07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَامِ اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़्हात : 46)

08....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़्हात : 98)

09.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़्हात : 144)

10..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़्हात : 696)

11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़्हात : 85)

12.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़्हात : 102)

13.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम, हिस्सए अव्वल) (कुल सफ़्हात : 412)

14.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम, हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़्हात : 413)

15.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़्हात : 641)

16....हिकायतें और नसीहतें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़्हात : 649)

17....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़्हात : 122)

18....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़्हात : 102)

19....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़्हात : 300)

20....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن) (कुल सफ़्हात : 63)

21....शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़्हात : 36)

22....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ) (कुल सफ़्हात : 122)

23....बेटे को नसीहत (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़्हात : 64)

24....اَلدَّعْوَةُ اِلَی الْفِكْر (कुल सफ़्हात : 148)

25..... क़ूतुल क़ुलूब (जिल्द 1 मुकम्मल)

26.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द 2)

www.dawateislami.net

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشیۃضیاء الاصباح (कुल सफ़्हात : 241)
02....نصاب النحو (कुल सफ़्हात : 288)
03....الاربعین النوویۃ فی الأحادیث النبویۃ (कुल सफ़्हात : 155)
04....نصاب التجوید (कुल सफ़्हात : 79)
05....اتقان الفراسۃ شرح دیوان الحماسہ (कुल सफ़्हात : 325)
06....تعریفاتِ نحویۃ (कुल सफ़्हात : 45)
07....اصول الشاشی مع احسن الحواشی (कुल सफ़्हात : 299)
08....شرح مئۃ عامل (कुल सफ़्हात : 44)
09....نورالایضاح مع حاشیۃالنورو الضیاء (कुल सफ़्हात : 392)
10....نصاب المنطق (कुल सफ़्हात : 168)
11....شرح العقائدمع حاشیۃجمع الفرائد (कुल सफ़्हात : 384)
12....نصاب الصرف (कुल सफ़्हात : 343)
13....الفرح الکامل علی شرح مئۃ عامل (कुल सफ़्हात : 158)
14....خاصیات ابواب (कुल सफ़्हात : 141)
15....عنایۃ النحو فی شرح ہدایۃ النحو (कुल सफ़्हात : 280)
16....المحادثۃ العربیۃ (कुल सफ़्हात : 101)
17....صرف بھائی مع حاشیۃ صرف بنائی (कुल सफ़्हात : 55)
18....نصاب اصولِ حدیث (कुल सफ़्हात : 95)
19....دروس البلاغۃ مع شموس البراعۃ (कुल सफ़्हात : 241)
20....تلخیص اصول الشاشی (कुल सफ़्हात : 144)
21....مقدمۃالشیخ مع التحفۃالمرضیۃ (कुल सफ़्हात : 119)
22....نحو میرمع حاشیۃ نحو منیر (कुल सफ़्हात : 203)
23....نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر (कुल सफ़्हात : 175)

अन क़रीब आने वाली कुतुब

01....انوارالحدیث (मअ़ तख़रीज व तह़क़ीक़)
02....قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی
03....نصاب الادب

«शो'बए तख़रीज»

01....सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़्हात : 274)
02....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)
03....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़्हात : 1360)
04....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)
05....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़्हात : 1304)
06....इल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 244)
07....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ (कुल सफ़्हात : 59)
08....सवानहे करबला (कुल सफ़्हात : 192)
09....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 422)
10....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़्हात : 112)
11....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 244)
12....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)
13....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां ह़िस्सा, कुल सफ़्हात 312)

www.dawateislami.net

14....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़ह़ात : 246)
15....अच्छे माह़ोल की बरकतें (कुल सफ़ह़ात : 56)
16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)
17....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़ह़ात : 1332)
18....आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)
19 ता 25....फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
26....ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)
27....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़ह़ात : 207)
28....अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़ह़ात : 78)
29....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़ह़ात : 133)
30....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़ह़ात : 875)
31....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़ह़ात : 346)
32....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़ह़ात : 249)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....मा'मूलाते अबरार
02....जवाहिरुल ह़दीस

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

01....ग़ौसे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)
02....तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)
03....40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم (कुल सफ़ह़ात : 87)
04....बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)
05....रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)
06....नूर का खिलौना (कुल सफ़ह़ात : 32)
07....आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिशें (कुल सफ़ह़ात : 49)
08....फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)
09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़ह़ात : 48)
13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़ह़ात : 150)
15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
16....तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

www.dawateislami.net

20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चेहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
25....तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
28....निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
29....फ़ैज़ाने इह्याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
30.... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)
31....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
33....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

01....सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
02....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
03....मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
04....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
05....इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, ह़िस्सा दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
06....गुमशुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
07....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
08....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
09....दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
10....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)
11....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
12....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
13....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़हात : 86)
14....कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
15....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़हात : 275)

www.dawateislami.net

16....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत (कुल सफ़हात : 48)
17....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
18....पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
19....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
20....दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
21....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
22....मैं ने मदनी बुर्क़अ् क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
23....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
24....तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़हात : 48)
25....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
26....मुख़ालफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
27....क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
28....तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2) (कुल सफ़हात : 49)
29....हैरत अंगेज़ हादिसा (कुल सफ़हात : 32)
30...तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त़ 3) (कुल सफ़हात : 49)
31....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
32....चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
33....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
34....मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
35....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
36....अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
37....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)
38....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
39....इग़वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
40....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
41....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
42....सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
43....ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
44....फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
45....नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

46....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
47....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
48....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
49....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
50....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
51....आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
52....बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)

अ़न क़रीब आने वाले रसाइल

01....V.C.D की मदनी बहारें (क़िस्त् 3)(रिक्षा ड्राईवर कैसे मुसलमान हुवा ?)
02....औलियाए किराम के बारे में सुवाल जवाब
03....दा'वते इस्लामी इस्लाहे़ उम्मत की तह़रीक

....ह़दीसे क़ुदसी....

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ऐ इब्ने आदम !

तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत पर यक़ीन रखता है फिर भी ख़ुश होता है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जो हि़साबो किताब पर यक़ीन रखता है फिर भी माल जम्अ़ करने में मसरूफ़ है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जो क़ब्र पर यक़ीन रखने के बा वुजूद हंसता है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जिसे आख़िरत पर यक़ीन है फिर भी पुर सुकून है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या (की ह़क़ीक़त को जानता) और उस के ज़वाल पर यक़ीन रखता है फिर भी उस पर मुत़्मइन है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जो गुफ़्त्गू तो आ़लिमों जैसी करता है लेकिन उस का दिल जाहिलों जैसा है।

.....तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो पानी के ज़रीए़ पाकी को ह़ासिल करता है मगर उस का दिल आलूदा है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जो लोगों के उ़यूब तलाश करने में तो मसरूफ़ रहता है लेकिन अपने उ़यूब से ग़ाफ़िल है।

.....तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो जानता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे हर अ़मल से बा ख़बर है फिर भी उस की ना फ़रमानी करता है।

.....तअ़ज्जुब है उस पर जो जानता है कि इसे अकेले मरना, अकेले क़ब्र में दाख़िल होना और अकेले ही हि़साब देना है फिर भी लोगों से उन्सिय्यत रखता है।

(ऐ इब्ने आदाम ! सुन !) मैं ही मा'बूदे ह़क़ीक़ी हूं और मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं। (مجموعة رسائل الامام الغزالی،المواعظ فی الاحادیث القدسیة،ص ٥٦٥)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी

उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी

उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

दिन भर का शुक्र अदा करने वाले कलिमात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स ब वक़्ते सुब्ह़ येह कलिमात कहे तो उस ने आज के दिन का और जो शाम के वक़्त कहे तो उस ने आज की रात का शुक्र अदा किया ।

اَللّٰھُمَّ مَا اَصْبَحَ بِیْ مِنْ نِّعْمَۃٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِکَ فَمِنْکَ وَحْدَکَ، لَاشَرِیْکَ لَکَ، فَلَکَ الْحَمْدُ، وَلَکَ الشُّکْرُ

شعب الایمان حدیث 4368

याद रहे ! मज़कूरा दुआइया कलिमात में शाम को ''اَصْبَحَ'' की जगह ''اَمْسٰی'' कहिये ।
आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक ''सुब्ह़'' है और
दोपहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक ''शाम'' है ।
(शुक्र के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ 122 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''शुक्र के फ़ज़ाइल'' पढ़ लीजिये)

MC 1286
ISBN 978-969-579-646-7
0101051

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net